अत्यंत सरल सुगम हिन्दी होनेके कारण मुसलमान भाई भी उर्दू वा फारसी अनुवादों (तर्जुमों) की अपेक्षा इससे अच्छीतरह समझसकेंगे।

अनुवादोंके प्रकाशनमें अनुवादकों (मुतरज्जिमों) ने अपनेअपने मतका पक्ष लेकर अनुवाद कियाहै यानी शिया, सुन्नी, ईसाइयों आदि ने अपने २ मतके पक्षके अनुसार अपने २ अनुवाद प्रकाशित कियेहैं अतएव पक्षपात होनेके कारण एकका अनुवाद दूसरा नहीं मानता परन्तु हमारा यह अनुवाद बिलकुल निष्पक्षहै। इसमें किसी मत का किसी प्रकार से पक्ष नहीं लिया गया और अच्छे भावों से न्याय के अनुसार अनुवाद किया गया है इसलिये अवश्य सर्व माननीय है।

किन्हीं २ का विचार है कि कुरान हिन्दी में होनेके कारण कहीं ऐसा न हो कि भारतधर्म मानने वालों के विचार मुसलमानी मजहब की ओर लगकर कहीं मुसलमान न होजावें। इसका उत्तर यह है कि एक सर्व कालीन सर्व देशीय और सर्वोपयोगी धर्म होताहै और एक धर्म देश काल और पात्र के अनुसार होता है। अतः यह कुरान का धर्म अरब देशके लिये और उन मनुष्योंके लिये जो इस योग्यथे और उस कालकेलियेथा जिस समयकहागयाथा। क्योंकि मौलवियोंका कथनहै कि बहुतसी आयतें मनसूख होगईहैं। इससे सिद्ध है कि उनका अमल एक मुख्यकाल केही लिये था सब कालके लिये नहीं। तथा जहांपर कुरानमें रूह (आत्मा) की बाबत प्रश्न पूछागया है कि आत्मा क्याहै तो कुरानमें साफ़ जवाब मिलाहै कि तुमको अभी थोड़ाही इल्म दिया जाता है। इससे सिद्ध है कि अरब देश के लिये तथा वैसे लोगों के लिये जो उस समय थे और उसी काल के लिये जैसा धर्म उचित समझा गया वैसा बतलाया गया। जबकि अरब वासियों को थोड़ा ही इल्म दियागया और रूह (आत्मा) का इल्म नहीं दिया गया तो यह मानना पड़ेगा कि किसी को रूह का भी इल्म दिया गया। अतएव जिनको रूह का इल्म मिला वह उन मनुष्यों से जो रूह के योग्य नहीं समझे गये अवश्य विशेष विशेषिता रखते हैं। चूंकि भारतधर्म में आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान तथा जहांतक विद्या और ज्ञान की पहुंच होसक्ती है सब विद्यमान है अतः यह धर्म सर्वदेशीय सर्व

कालीन और सर्वोपयोगी है। अतएव भारत धर्म मानने वालों के विचार ऐसे नहीं हैं कि अन्य विचार आकर दबाले इस हेतु हिन्दी कुरान से उनको कदापि हानि नहीं पहुँच सकती।

जब से हिन्दी कुरान के सम्पादन का कार्य हमने लिया तभी से हम इस कार्य में ऐसे दत्त चित्त हुए कि इसको जहांतक हो सका शीघ्र समाप्त करने की प्रत्येक चेष्टा करते रहे। चूंकि बाल्यावस्था से हमको पुस्तकों से अधिक प्रेम है यहां तक कि जो कुछ द्रव्य खाने का घर से मिलता था उसकी भी पुस्तकें खरीद करलाते और उनको पढ़ते थे। किसी मित्र मण्डली में बैठना तथा निरर्थक बातोंमें अपने समय को व्यतीत करने का स्वभाव हमारा हुआ ही नहीं। इस कारण विद्या और ज्ञान में हम आगे बढ़ते गये परन्तु किसी शारीरिक विनोद में न लगनेके कारण साथही शारीरिक निर्बलताभी बढ़ती गई। यहां तक कि इस कुरानके छपने में परिश्रम के कारण हमको ऐसा भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि हमारा शरीर क्षय रोग से ग्रसित होजावे और यह कार्य फिर भी अधूरा पड़ा रहजावे। अस्तु हमारी अस्वास्थ्यता इस कार्य में विलम्ब होने की हेतू हुई। दूसरा विलम्ब का कारण यह हुआ कि जिस प्रेसमें यह पुस्तक छपी है उसने लिखित प्रतिज्ञा की थी कि अप्रैल सन् १९१३ तक समस्त पुस्तक छापकर देदी जावेगी—वह मई १९१४ में भी नहीं छाप सका। इससे हम प्रेसके वश में पड़गये इस कारण बहुत विलम्ब हो गया। अतएव इस विलम्ब से हमारे भारतवासी ही नहीं किन्तु अमेरिका अफ्रिका में रहनेवाले भारत सतान भी अति आतुर हो रहेथे परन्तु प्रेस हमारा न होने के कारण हम शीघ्रता करना चाहते हुए भी कुछ नहीं करसके थे। पाठकगण इस अपराध को क्षमा करेंगे—इस वर्षके आयव्यय के लेखे (बजट) में हमने अपने कार्यलय को प्रेस खोलने की आज्ञा देदी है। भविष्य में पुस्तकें शीघ्र निकलेंगी—पाठकों को प्रतीक्षा न करने पड़ेगी।

इस अनुवाद में सबसे कठिनाई हमको उठानी पड़ी वह भाषा का विषय है। यानी न्याय दृष्टिसे सर्व साधारणके लिये ऐसी भाषा

होना चाहिये जिसे सर्व साधारण एक बारके पढ़ते ही समझ सके। वह भाषा न मौलवियों की क्लिष्ट अर्बी फारसी मयी उर्दू और न पण्डितों की क्लिष्ट संस्कृत मयी भाषा है। जहां पर एक क्लिष्ट भाषा के शब्दोंही को सर्व साधारण की भाषा समझा गयाहै वहां पर बड़ी भूलहुई है। एक समय भाषाओंके सम्बन्धमें हमसे आगरा युक्त प्रदेश के बोर्ड आफ रेविन्यू के भूतपूर्व सेक्रेटरी मिस्टर पी० हेरिसन से वार्त्तालाप हुई थी। उस समय हमने दिखलाया था कि बोर्ड सर्क्यूलरकी भाषा सर्व साधारणकी भाषा होनी चाहिये नकि ऐसी भाषा जिसे ऊंचे मौलवी वा ऊंचे पण्डित ही समझ सकें और उनको बोर्ड सर्क्यूलर के एक भाग का अनुवाद भी नमूना स्वरूप दिखलाया गयाथा। यहां पर हमारे लिखने का यह प्रयोजन है कि सर्व साधारण की भाषा ऐसी भाषा है जिस में संस्कृत अर्बी फारसी के सहज २ शब्द मिले हैं। अतएव हमने ऐसीही हिन्दी मे सबके समझने योग्य अनुवाद किया है, यद्यपि इस आवृत्ति में भाषा के कुछ दोष अवश्य होंगे द्वितीय आवृत्ति में उनके संशोधन करने की चेष्टा की जायगी।

ब्राह्मणों ने राज्य पाट तथा संसार के सब भोगों को त्यागकर संसार का जो जो उपकार किया वा जो जो उपकार अब भी कर रहे है वह जगत से छिपा नहीं। उपकार गुण विशिष्ट होने ही से जगत उनको शिर नवाता है। यद्यपि मुसलमानी मतके माननेवालोंने सम्बारके हि० कारी भारतवर्षके अनेक गृन्थों (ऋषि, मुनि ब्राह्मणों की आत्माओं) को जलाकर उनसे हम्माम गरम किये। इसके बदले में उन्हीं ऋषि ब्राह्मण की संतान यह ब्राह्मण अपने जाति गुणके अनुसार उल्टी मुसलमानी साहित्य की रक्षाके निमित्त संसार में कुरानका सबसे पहिला हिन्दी अनुवाद यह हिन्दी कुरान प्रकाशित करता है शायद मुसलमान ब्राह्मणों का यह अहसान मानें। शर्म

रघुनाथप्रसाद मिश्र
शारदाभवन छिपैटी इटावा.

——:※:——

विषय सूची।

पाठको ! कृपाकर पुस्तक के अन्त में दिये हुये शुद्धाशुद्ध के अनुसार शुद्धकर पुस्तक पढ़िये ।

निवेदन

कुरान पढ़ने से पहिले "कुरान आदर्श" मंगाइये— इसका विज्ञापन पुस्तक के अन्त में पढ़िये ॥

——:o.——

हिन्दी क़ुरान.

सूरे फातिहा—(अध्याय मङ्गलाचरण)

यह सूरत (अध्याय) मक्के में उतरी; इसमें ७ आयतें हैं।

शुरूअ अल्लाह के नामसे जो निहायत रहमवाला (दयावान) मिहर्वान है (१) हर तरह की तारीफ़ (प्रशंसा) खुदाही को है जो सब संसार का पालनकर्त्ता है (२) निहायत दयावान मिहर्वान है। (३) न्याय के दिन (क़यामत, महा प्रलय) का मालिक (४) हे खुदा! हम तेरीही पूजा करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं। (५) हमको सीधी राह दिखला। (६) उन लोगों की राह जिन पर तू ने कृपा की, न उनको जिन पर तू गुस्सा हुआ और न भटके हुओं की। (७) (रुकू १)

पहिला पारा—सूरे बक़र.
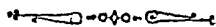
सूरे बक़र मदीने में उतरी इसमें २८६ आयतें और ४० रुकू हैं।

शुरूअ अल्लाह के नाम से जो निहायत दयावान मिहर्वान है। अलिफ़—लाम—मीम (१) यह वह पुस्तक है जिसमे कुछभी सन्देह नहीं कि विश्वास (ईमान) लाने वालो को राह बताता है। (२) जो अनदेखे पर ईमान (विश्वास) लाते और नमाज़ (स्तुति) पढ़ते और जो कुछ हमने उनको देरक्खा है उसमे से खुदा की राह (ईश्वरीय निमित्त) मे भी खर्च करते हैं। (३) और (हे पैग़म्बर!) जो किताब तुम पर उतरी और जो तुमसे पहिले उतरी उनको

मानते और क़यामत (प्रलय) का भी विश्वास रखते हैं। (४) यही लोग अपने पालनकर्त्ता की सीधी राह पर हैं और यही मन माने फल पावेंगे (५) जिन लोगों ने इन्कार किया तुम उनको डराओ या न डराओ वह न मानेंगे। (६) उनके दिलों पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मुहर लगादी है और उनकी आंखों पर पर्दा है और उनके लिये बड़ी सज़ा (दण्ड) है। (७) (रुकू २) और लोगों में कुछ ऐसे हैं जो कहदेते हैं कि हम अल्लाह पर और क़यामत (प्रलय) पर विश्वास (ईमान) लाये हालांकि वह ईमान नहीं लाये। (८) अल्लाह को और उन लोगों को जो ईमान लाचुके हैं धोखा देते हैं मगर नहीं जानते कि वह अपने आप को धोखा देते हैं (९) उनके दिलों में इन्कारी का रोग था-अब अल्लाह ने उनका रोग बढ़ा दिया और उनके झूठ बोलने को सज़ा में दुखदाई दण्ड होना है (१०) और जब उन से कहा जाता है कि देश में विद्रोह (फसाद) मत फैलाओ कहते हैं हम तो मेल जोल कराने वाले हैं (११) और यही लोग विद्रोही (फिसादी) हैं परन्तु नहीं समझते (१२) और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह लोग ईमान लाये हैं तुम भी ईमान लाओ तो कहते हैं क्या हम भी ईमान लेआवें जिसतरह मूर्ख ईमान लाये हैं। सुनो जी! यही लोग मूर्ख हैं परन्तु नहीं जानते (१३) और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाचुके हैं तो कहते हैं हम ईमान लाचुके हैं और जब एकान्त में अपने शैतान[1] से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो सिर्फ (मुसलमानों से) ठट्टा करते हैं (१४) अल्लाह उनसे हँसी करता है और उनको ढील देता है। वे इस सर-कशी में भटकते रहेंगे (१५) यही हैं वह लोग जिन्हों ने हिदायत (शिक्षा) के बदले भटकना मोल ले सो न तो इनका व्योपारही लाभ-

---

१:-जो दूसरों पर ज़ुल्म (अत्याचार) करे वह शैतान है॥

कारी हुआ न सच्चे मार्ग परही ठहरे (क़ायम) रहे (१६) इनकी कहावत उस आदमी कीसी है जिसने आग जलाई फिर जब उसके आस पास की चीज़ें जगमगा उठीं तो अल्लाहने उनकी रोशनी (आंखें) छीनली और उनको अन्धेरे में छोड़ दिया कि उनको कुछ नहीं सूझता (१७) वहरे गूंगे अन्धे कि वह सच्चे मार्ग पर नहीं आसक्ते (१८) यह उनको ऐसी मिसाल (दृष्टांत) है कि आकाश से जल वरसे उसमें अन्धेरा और गर्ज और विजली हो और मरने के डर से कड़क के मारे अंगुलियां कानों में ठूंसलेते हैं और अल्लाह इन्कार करनेवालों को घेरे हुये है। (१६) क़रीव है कि विजली उनकी निगाहों को झपका दे, जब उनके आगे विजली चमकी तो उसमें चले और जब उनपर अन्धेरा छागया तो खड़े रहगये, अगर अल्लाह चाहे तो उनके सुनने और देखने की शक्तियां छीनले; निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर शक्ति (कुव्वत) रखनेवाला है। (२०) (रुकू २) लोगो! अपने पालनकर्त्ता को पूजा करो जिसने तुम को और उन लोगों को जो तुम से पहिले हो गुज़रे हैं पैदा किया आश्चर्य नहीं तुम (भी) संयमी (परहेज़गार) वनजाओ (२१) जिसने तुम्हारे लिये पृथ्वी (ज़मीन) का फर्श वनाया और आकाश की छत और आकाश से पानी वर्षा कर उससे तुम्हारे खाने के फल पैदा किये; पस किसी को अल्लाह के समान मत वनाओ और तुम तो जानते हो (२२) और वह तो हमने अपने वन्दे (मोहम्मद) पर (क़ुरान) उतारा है अगर तुम को उसमें सन्देह (शक) हो तो तुम उसके मानिन्द (उसी शक्ल की) एक सूरत वनालाओ और सच्चे हो तो अपने हिमायतियो को वुलाओ। (२३) पस अगर (इतनी वात भी) न करसको और कदापि (हर्गिज़) न करसकोगे तो (नरक की) आग से डरो जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और वह इन्कार करनेवालों (का-

फिरों) के लिये तय्यार है। (२४)+ और जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने अच्छे काम किये उनको मंगल समाचार (खुश खबरी) सुनादो कि उनके लिये बैकुण्ठ के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी जब उनको उनमें का कोई फल (मेवा) खाने को दियाजायगा तो कहेंगे; यह तो हम को पहिलेही मिलचुका है और उनको एकही सूरत के फल (मेवे) मिला करेंगे और वहां उनके लिये बीबियां पाक साफ़ होंगी और वह उनमें सदैव रहेंगे (२५) अल्लाह किसी मिसाल (उदाहरण) के बयान करने में नहीं झेपता (चाहे वह मिसाल) मच्छर की हो या उससे भी बढ़कर हो सो जो लोग ईमान लाचुके हैं वह तो विश्वास रखते हैं कि यह उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से ठीक है और जो इन्कारी हैं वह कहते हैं कि इस मिसाल के बयान करने में खुदा को कौन सी ग़रज़ थी ऐसी ही मिसाल से खुदा बहुतेरों को भटकाता और ऐसी ही मिसाल से बहुतेरों को हिदायत (शिक्षा) देता है, लेकिन पापियों को भटकाता है। (२६) जो पक्का किये पीछे खुदा का अहद (प्रतिज्ञा) तोड़ देते और जिन (सम्बन्धों) के जोड़े रखने को खुदा ने कहाहै उनको काटते और देश में विद्रोह (फसाद) फैलाते हैं यही लोग हानि (नुक़सान) उठावेंगे। (२७) (लोगो !) क्योंकर तुम खुदा का इन्कार कर-सक्ते हो और तुम बेजान थे तो उसने तुममें जान डाली फिर (वही) तुमको मारता फिर (वही) तुमको जिलायेगा फिर उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (२८) वही है जिसने तुम्हारे लिये धरती की चीज़ें पैदा कीं फिर आकाश की तरफ़ ध्यान दिया तो सात आकाश हमवार (समधरातल) बनादिये और वह हर चीज़ से जानकार है। (२९) (८ रुकू ४) जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने फ़िरिश्तों से कहा

---

२४ + फ़इल्लम तफ़अलू वलन तफ़अलू फ़त्तकुन्नारल्लती वक़ूदो हन्नासो वल हिजारह ओइद्दत लिलकाफ़रीन (२४)

"मैं ज़मीन मे नायब बनाना चाहता हूं" (तो फ़िरिश्ते बोले) क्या तू ज़मीन मे ऐसे मनुष्य को (नायब) बनाता है जो उसमें विद्रोह (फ़िसाद) और खून बहाये ? हम स्तुति वन्दना के साथ तेरी पवित्रता बयान करते है। (खुदाने) कहा मैं जानता हूं, तुम नही जानते (३०) और आदम को सब चीज़ों के नाम बता दिये फिर उन चीज़ों को फ़िरिश्तो के सामने पेश करके कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हम को इन चीज़ों के नाम बताओ। (३१) बोले तू पाक है, जो तूने हम को बता दिया है उसके सिवा हम को कुछ मालूम नहीं सचमुच तूही जानने वाला सुधार का पहिंचानने वाला है। (३२) (तब खुदाने) हुक्म दिया कि हे आदम ! तुम फ़िरिश्तों को इनके नाम बतादो: फिर जब आदम ने फ़िरिश्तो को उन (चीज़ों) के नाम बतादिये तो (खुदा ने फ़िरिश्तों से) कहा क्यो हमने तुम से नहीं कहा था कि आकाश की और धरती की सब छिपी चीज़ें हमें मालूम हैं। (३३) और जब हमने फ़िरिश्तों से कहा कि आदम की आज्ञा करो (हुक्म बजाओ) शैतान[1] को छोड़ कर (सबके सब) झुक पड़े। इबलीस[2] ने न माना और शेखी में आगया और उदूल हुक्मी (अवज्ञा) कर बैठा। (३४) और हमने कहा हे आदम ! तुम और तुम्हारी स्त्री बैकुण्ठ में बसो और उसमें जहां कहीं से तुम्हारा जी चाहे बेखटके खाओ मगर इस पेड़ (दरख्त) के पास मत फटकना (ऐसा करोगे) तो अपराधी होजाओगे। (३५) पस शैतानने उनको बहकाया और उनको निकलवा छोड़ा और हमने हुक्म दिया कि तुम उतर जाओ तुम एक के दुश्मन एक और ज़मीन में तुम्हारे लिये एक वक्त तक ठिकाना और (जीवन काटने का)

---

१ जो अपने ऊपर आप ज़ुल्म करे वह "इबलीस" (२) और जो दूसरों पर ज़ुल्म करै वह शैतान है॥

साज व सामान है। (३६) फिर आदम ने अपने पालनकर्त्ता से कुछ बातें सीखलीं और खुदा ने उसकी तोबा मानली बेशक वह बड़ाही क्षमा करने वाला मिहर्बान है (३७) हमने हुक्म दिया कि तुम सब यहां से उतर जाओ। हमारी तरफ़ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुँचेगी तो जो हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न तो डर होगा और न वह उदासीन होगे (३८) जो लोग इनकारी होंगे और हमारी आयतों को झुठलायंगे वही नरकगामी होंगे वह सदैव नरक वास करेंगे (३६) (रुकू–५) हेबनी इस्राईल (हे याकूब के बेटो) मेरे अहसानों को याद करो जो हम तुम पर करचुके हैं और तुम उस प्रतिज्ञा को पूरा करो जो हम से की है हम उस प्रतिज्ञा को पूरा करेंगे जो (हमने) तुमसे की है और हमही से डरतेरहो (४०) और क़ुरानजो हमने उताराहै उसे मानलो (और वह) उस किताब (तौरात) की तसदीक़ करता है जो तुम्हारे पास है और सबसे पहले इस्के इनकारी (निषेधक) न बनो और हमारी आयतों के बदले में थोड़ी क़ीमत (यानी संसारिक लाभ) प्राप्त मत करो और हमहीं से डरते रहो (४१) और सच को झूंठ के साथ गड्डमगड्ड मत करो और जान बूझ कर यथार्थ बात को मत छिपायो (४२) और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात[१] दिया करो और जो लोग (नमाज़ में) झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो (४३) क्या तुम लोगों से भलाई करने को कहते हो और अपनी खबर नहीं लेते हालांकि तुम किताब पढ़ते रहते हो क्या तुम नहीं समझते? (४४) और संतोष और नमाज़ का सहारा पकड़ो और निस्सन्देह नमाज़ कठिन काम है मगर उन पर नहीं जो तुझसे डरते हैं (४५) (और) जो यह ख्याल रखते हैं कि वह अपने पालनकर्ता से मिलने

---

१ चालीसवां हिस्सा आमदनी का जो खुदा की राह पर मुसलमान लोग सालाना देते हैं॥

वाले और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं (४६) (रुकू–६) हे याकूब के बेटो ! हमारे वह अहसानों को याद करो जो हम तुम पर करचुके हैं और इस बात को भी कि हमने तुम को संसार के लोगों पर प्रधानता दी थी (४७) और उस दिन से डरो कि कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम न आये और न उसकी तरफ़ से (किसी की) सिफ़ारिश क़बूल हो और न उससे कुछ बदला लिया जावे और न लोगों को कुछ सहायता (मदद) पहुँचे (४८) और (उस वक्त को याद करो) जब हम तुमको फिरऔन[१] के लोगों से छुट-वाया जो तुम को बुरे कष्ट देते थे कि तुम्हारे बेटों को हलाल करते और तुम्हारी स्त्रियां (यानी बेटियों) को (अपनी सेवा के लिये) जीवित रहने देते इस में तुम्हारे पालनकर्त्ता से बड़ी जांच थी (४९) और (वह वक्त भी याद करो) जब हमने तुम्हारी वजह से नदी को फाड़ दिया फिर तुमको बचाया और फिरऔन के लोगों को तुम्हारे देखते डुबोदिया (५०) और (वह वक्त भी याद करो) जब हम ने मूसा से चालीस रातों (यानी एक चिल्ला) की प्रतिज्ञा की फिर उनके पीछे (पूजन के लिये) बछड़ा बना लिया और तुम ज़ुल्मकर रहे थे (५१) फिर इसके बाद भी हमने तुम को क्षमा किया शायद तुम अहसान मानो (धन्यवाद दो) (५२) और (वह समय भी याद करो) जब हमने मूसा को किताब (तौरेत) और क़ानून फ़ैसिल (न्याय निर्णय यानी शरीयत) दी शायद (कदाचित्) तुम हिदायत (शिक्षा) पाओ (५३) और (वह समय भी याद करो) जब मूसाने अपनी जाति से कहा कि तुमने बछड़े को पूजा करने से अपने ऊपर ज़ुल्म (अत्याचार) किया तो (अब) अपने सृष्टिकर्ता के स्थानमे तोबा करो और अपने आप को मारडालो तुम्हारे पैदा करने-वाले के सामने तुम्हारे लिये यही उत्तम है फिर खुदाने तुम्हारी तोबा क़बूल

१ यह मूसा के वक्त में मिश्र के बादशाह का खिताब था ॥

करलो बेशक वह बड़ा तोबा क़बूल करनेवाला मिहर्बान है। (५४) और (वह समय याद करो) जब तुमने (यानी तुम्हारे बड़ों ने मूसा से) कहा था कि हे मूसा जब तक हम खुदा को प्रत्यक्ष न (सामने) देखलें हम तो किसी तरह तुम्हारा विश्वास करने वाले नही हैं इस पर तुम को बिजली ने आदबोचा और तुम देखते रहे। (५५) फिर तुम्हारे मरे पीछे हमने तुम को जिला उठाया कि कदाचित तुम कृतज्ञ हो (शुक्र करो) (५६) और हमने तुम पर मेघ (बादल) की छाया की और तुम पर मन[1] और सलवा[2] भी उतारा और हमने जो तुम को पवित्र भोजन दिये हैं खाओ और इन लोगों ने हमारा तो कुछ नही बिगाड़ा लेकिन अपनाही खोते रहे। (५७) और (वह समय याद करो) जब हमने तुमको आज्ञा दी कि इस गांव में जाओ और उस में जहां चाहो निश्चिन्त होकर खाओ और द्वारे माथा नवाते हुए दाखिल होना और मुँह से हित्ततुन (पाप दूर हो) कहते जाना तो हम तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे और जो हमारी आज्ञा भली भांति पालन करेंगे उनको ऊपर से बदला देंगे (५८) तो जो लोग अन्यायी थे दुआएं जो उनको बताई गई थी उसको बदल कर दूसरी बोलने लगे तो हमने उन अन्यायियो (शरीरो) पर उनकी नाफ़र्मानी (अवज्ञाओ)की सज़ाएं आस्मान से उतारी (५९) (रुकू सात) और (वह घटना भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिये पानी की प्रार्थना की तो हमने फर्माया कि (हे मूसा) अपनी लाठी पत्थर पर मारो (लाठी का मारना था) कि पत्थर से बारह चश्मे (सोता) फूट निकले (और) सब लोगो ने अपना घाट मालूम कर लिया (और आम आज्ञा होगई कि) अल्लाह की (दीहुई) रोज़ी खाओ और पिओ और देश में विद्रोह (फिसाद) न फैलाते फिरो (६०) और (वह वक्त भी याद करो) जब तुमने

---

१ मीठी चीज़ जो रात में पत्तों पर जम जाती है।
२ बटेर कैसी चिड़िया का मांस ॥

(मूसा से) कहा कि हे मूसा हम से तो एक खाने पर नहीं रहा जाता तो आप हमारे लिये अपने पालनकर्त्ता से स्तुति (दुआ) कीजिये कि जमीन से जो चीज़े उगती हैं यानी तरकारी ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज (मन सल्वा के बजाय) हमारे लिये पैदा करे (मूसा ने) कहा कि जो चीज़ उत्तम है क्या तुम उस्के बदले मे ऐसी चीज़ लेना चाहते हो जो घटिया है (अच्छा तो) किसी शहर में उतर पड़ो कि जो मांगते हो (वहां) तुम को मिलेगा और उन पर अपमान (ज़िल्लत) और दीनता (ग़रीबी) डाल दी गई है और खुदा के ग़ज़ब (कोप) में आगये यह इस लिये कि वह अल्लाह की आज्ञाओं (हुक्मो) से इन्कार करते और पैग़म्बरों को व्यर्थ मारडाला करते थे (और भी) यह इसलिये कि वे हुक्म के न माननेवाले सरकश (अवज्ञाकारी) थे (६१) (रुकू-८) निस्सन्देह मुसल्मान[1] यहूदी[2] ईसाई[3] और साबी[4] इन मे से जो लोग अल्लाह पर और प्रलयकाल पर ईमान लाये और अच्छे काम करते रहे तो उन को उनका फल उनके पालनकर्त्ता के यहां मिलेगा और उनपर न डर होगा और न वह उदासीन होंगे (६२) हे याकूब के बेटो ! (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुम से (तौरात की तामील का) इक़रार (प्रतिज्ञा) लिया और तूर (पहाड़) को उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया (और फर्माया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुम को दी है इस्को मज़बूती से पकड़े रहो और जो उस में (लिखा) है उस्को याद रक्खो कदाचित (शायद) तुम उससे डरो (६३) फिर उस्के बाद तुम फिर गये तो अगर तुम पर खुदा की कृपा और

---

(१) कुरान के मानने वाले मुसल्मान कहलाते हैं ॥

(२) तौरात के माननेवाले यहूदी कहलाते हैं ॥

(३) इंजील के माननेवाले ईसाई कहलाते हैं ॥

(४) सच्ची बात सब किसी का मानने वाले साबी कहलाते हैं

उस्की दया न होती तो तुम घाटे में आगये होते (६४) और उन लोगों को जो तुम जानही चुके हो जिन्हों ने तुम में से हफ्ते के दिन (शनीचर) में ज़ियादती की तो हमने उनसे कहा बन्दर बन जाओ (कि जहां जाओ) धुतकारे जाओ (६५) पस हमने इस घटना को उन लोगों के लिये जो इस वक़्त मौजूद थे और उन लोगों के लिये जो इसके बाद आने वाले थे (उनके लिये) डर और परहेज़गारों के लिये शिक्षा बनाई (६६) और (वह वक्त याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा अल्लाह तुम से फ़र्माता है कि एक गाय हलाल करो वह कहनेलगे क्या तुम हमसे हँसी करते हो ? (मूसा ने) कहा खुदा मुझको अपनी पनाह (शरण) में रक्खे कि मैं ऐसा नादान न बनूं (६७) वह बोले अपने पालनकर्त्ता से हमारे लिये दरख्वास्त करो कि हमको भली भांति समझा दे कि वह (गाय) कैसी हो (मूसाने) कहा खुदा फर्माता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया दोनो में बीच की रास, पस तुमको जो हुक्म दिया गया है (उस्की तामील) करो (६८) वह बोले अपने पालनकर्त्ता से हमारे लिये प्रार्थना करो कि हमको अच्छी तरह समझा दे कि उस्का रंग कैसा हो (मूसाने) कहा खुदा फर्माता है कि वह गाय ज़र्द (पीली) उस्का रङ्ग खूब गहरा हो कि देखनेवालों को भली लगे (६९) वह बोले कि अपने पालनकर्त्ता से हमारे लिये पूछो कि हम को अच्छी तरह समझा दे कि वह (और) क्या (गुण रखती) हो हम को तो इस रंग को बहुतेरी गायें एकही तरह की दिखाई देती हैं कौनसी लें कौनसी न लें और (अबके बार) खुदाने चाहा तो हम जरूर (उसका) ठीक पता लगालेंगे (७०) (मूसाने) कहा

❋ इससे आवागमन सिद्ध होता है—याने कर्मवश एक योनि से दूसरी योनि में जाना अर्थात् कर्मवश मनुष्य योनि से बन्दर योनि में डालेगये यही आवागमन है ॥

खुदा फ़र्माता है वह गाय न तो कमेरी हो कि ज़मीन जातती हो और न खेतों को पानी देती हो सही सालिम (एक रंग) उस में किसी तरह का दाग़ (धब्बा) न हो वह बोले (हां) अब तुम ठीक (पता) लाये ग़रज़ उन्होंने गाय हलाल की और उनसे उम्मेद न थी कि करेंगे *(७१) (रुकू-८)(और हे याकूब के बेटो) जब तुमने

---

*नोटः—यहां पर आयत नम्बर ६७ से ७३ तक पढ़ने से यह मालूम होता है कि हज़रत मूसा ने गाय को हलाल कराकर उसके टुकड़े से मरे को जिलाने का चमत्कार दिखलाया है ताकि लोग उनकी बात माने इससे ज़ाहिर है कि जिस मनुष्य में गाय के टुकड़े से मरे आदमी को जिलाने की सामर्थ है वह उस आदमी को जिलाने के लिये यदि किसी जानवर को हलाल करादे और मरे को जिलादे तो करसक्ता है अन्यथा नहीं इससे गाय को हलाल करने की आज्ञा नहीं पाईजाती।

दूसरे अगर कोई पूछे कि गाय को क्यों हज़रत मूसा ने हलाल कराया और किसी जानवर के टुकड़े से क्यों नहीं चमत्कार दिखलाया ? इसका उत्तर यह है कि मूसा के जाति के लोग फिरऔन के देश से गहने (ज़ेवर) मांग लेगये परंतु वे लोग जिनसे ज़ेवर लेगये थे मारेगये और मूसा तूर पर तौरेत लेनेगये। सांवरी के कहने से सब यह मांगा हुआ ज़ेवर इकट्ठा करलियागया इस ज़ेवर का सांवरीने एक बछड़ा बनाया जिसकी आवाज़ भी बछड़े कीसी थी पस इसकी बोली का चमत्कार देखकर मूसा की जाति के लोग कहनेलगे यही हमारा खुदा और यही मूसा का खुदा है (देखो सिपारा १६ रुकू १२ व १३ व नवां सिपारा रुकू ७ व पहिला सिपारा आयत नं० (५१) निदान जब मूसा की जाति के लोग तन मन धनसे बछड़े की पूजा में लगगये तो मूसा ने इसका रोकना मुनासिब समझा क्योंकि बिना इसके बन्द किये मूसा अपने मतलब को नहीं पूरा कर

एक शख्स को मारडाला और उस (के बारे में) झगड़ने लगे और जो तुम छिपाते थे अल्लाह को उसका भेद खोलना मन्ज़ूर था (७२) पस हमने कहा कि गाय का कोई टुकड़ा मुर्दे (का लाश) को छुवादो इसी तरह (प्रलय में) अल्लाह मुर्दों को जिलायेगा और तुम को अपनी (क़ुदरत का) चमत्कार दिखाता है ताकि तुम समझो (७३) फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त होगये कि गोया वह पत्थर हैं बल्कि (उनसे भी कठोर और पत्थरों में बाज़े ऐसे भी हैं कि उनसे नहरें फूट निकलती हैं और बाज़ पत्थर ऐसे भी हैं जो फट जाते हैं और उनसे पानी झरता है और बाज़ पत्थर ऐसे भी हैं जो अल्लाह के डर से गिरपड़ते हैं और जो कुछ तुम कर रहे, हो अल्लाह उससे भूला हुआ नहीं (७४) (मुसलमानो !) क्या तुम को आशा है कि (यहूद) तुम्हारी बात मान लेंगे और उनका हाल यह है कि उन में कुछ लोग ऐसे भी होचुके हैं कि खुदा का क़लाम (शब्द) सुनते थे फिर उसके समझे पीछे देख भालकर उसको कुछ का

सफ़ा ११ का फुट नोटः—

सकते थे लिहाज़ा मूसा ने इस पूजा को उठाने के लिये इसके बानी सांवरी को हकीर (तुच्छ) होने की सज़ा दी दूसरी ओर गाय को हलाल करा दिया जिससे गो पूजा (यानी बछड़े की पूजा) उठ जावे, ऊपरी बातों से यह सिद्ध होगया कि हज़रत मूसा ने चमत्कार दिखाने और गो पूजा उठानेही की नियत से यह काम किया है और कोई मतलब इससे नहीं पाया जाता ॥

उपरोक्त हज़रत मूसा का गाय को हलाल कराने का वृत्तान्त तौरेत में जो हज़रत मूसा पर उतरी कहीं नहीं लिखा इसलिये इतिहासिक लोगों को इस वृत्तान्त की सत्यता पर सन्देह होता है— यानी सन्देह यह उठता है कि जब हज़रत मूसा ने यह चमत्कार दिखलाया तो कोई कारण नहीं कि तौरेत में क्यों नहीं लिखागया—

कुछ कर देते थे (७५) और जब ईमानवालों से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान लाचुके हैं और जब अकेले में एक दूसरे के पास होते हैं तो कहते हैं कि जो कुछ (तोरात) में खुदा ने तुम पर खोली है क्या तुम मुसलमानो को उसकी खबर किये देते हो कि तुम्हारे पालनकर्त्ता के सामने उसी बात की सनद पकड़ कर तुमसे झगड़े तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते (७६) (परंतु) क्या इन मनुष्यों को यह बात मालूम नहीं कि जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं अल्लाह जानता है (७७) और बाज़ उनमें अनपढ़ हैं जो बरबराने के सिवाय किताब को नहीं समझते और वह फ़क्त खाली तुक्के चलाया करते हैं (७८) पस शोक है उन लोगों पर जो अपने हाथ से तो किताब लिखें फिर कहे कि यह खुदा के यहां से (उतरी) है ताकि उसके ज़रिए से थोड़े से दाम (यानी संसारिक लाभ) हासिल करें पस अफसोस है उनपर कि उन्हों ने अपने हाथों लिखा और अफसोस (शोक) है उनपर कि वह ऐसी कमाई करते हैं (७९) और कहते हैं कि गिन्ती के चन्दरोज़ के सिवाय (नरक की) आग हमको छुएगा नहीं (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो क्या तुमने अल्लाह से कोई प्रतिज्ञा लेली है और अल्लाह अपने प्रतिज्ञा के विरुद्ध नहीं करेगा या अनसमझे अल्लाह पर झूठ बोलते हो (८०) सच्ची बात तो यह है कि जिसने बुराई पल्ले बांधी और अपने पाप के फेर में आगया तो ऐसे ही लोग नरकगामी हैं कि वह सदैव नरकही में रहेंगे (८१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये ऐसे ही लोग वैकुण्ठ वासी हैं कि वह हमेशा वैकुण्ठही में रहेंगे (८२) (रुकू-१०) और (वह वक्त याद करो) जब हमने याकूब के बेटों से पक्का प्रतिज्ञा ली कि खुदा के सिवा किसी की पूजा नहीं करेंगे और माता पिता के साथ सलूक करते रहेंगे और रिश्तेदारों

(सम्बन्धियों) और अनाथों और दीन दुखियों के साथ (भी) और लोगों से अच्छी तरह नम्रता पूर्वक बात करेंगे और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहेंगे फिर तुम में से थोड़े आदमियों के सिवा फिर बैठे और तुम लोग फिर जानेवाले हो (८३) और (वह वक़्त यादकरो) जब हमने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली कि परस्पर रक्त स्रोत (खूरेज़ी) न करना और न अपने शहरों से अपने लोगों को देश निकाला करना फिर तुमने प्रतिज्ञा की और तुम प्रतिज्ञा करते हो (८४) फिर वही तुम हो कि अपनों को मारते और अपने में से भी कुछ लोगों के मुकाबिले में व्यर्थ (नाहक़) और ज़बरदस्ती एक एक दूसरे के सहायक बनकर उनको उनके शहरों से देश निकाला देते हो और वही लोग अगर क़ैद होकर तुम्हारे पास आवें तो तुम क़ीमत देकर फिर उनको छुड़ा लेते हो हालांकि उनका निकाल देनाही तुमको मुनासिब न था तो क्या किताब की कुछ बातों को मानते हो और कुछ को नहीं मानते तो जो लोग तुम मेसे ऐसा करें इसके सिवा उनका और क्या फल (बदला) होसक्ता है कि दुनियां की ज़िन्दगी में निन्दा तौहीन (हिक़ारत) और प्रलय के दिन (नरक के) बड़ोही कठिन सज़ा की तरफ लौटा दिये जायें और जो कुछ भी तुमलोग करते हो अल्लाह उससे बेखबर नहीं है (८५) यही हैं जिन्होने प्रलय के बदले संसार की ज़िन्दगी मोललो सो न तो (क़यामत के दिन) उनकी सज़ाही हल्की काजायगी और न उनको मददही पहुँचैगी (८६) [ग्यारहवां-रुकू]-और निस्सन्देह हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उनके बाद क्रमसे रसूल (संदेशिया) भेजे और मरियम के बेटे ईसा को (भी) हमने खुले चमत्कार दिये और पवित्र आत्मा (यानी जिब्रील) से उनकी मदद की तो जब जब तुम्हारे पास कोई रसूल (दूत संदेशिया) तुम्हारी इच्छाओं के

खिलाफ़ कोई हिदायत लेकर आया तुम ने घमण्ड दिखलाया फिर बाज़ को तुमने झुठलाया और बाज़को मारडालने लगे (८७) और कहते हैं हमारे दिल पर पर्दापड़ा है बल्कि इनको इन्कार करने के कारण से खुदाने इनको फटकार दिया है पस थोड़ेही ईमान लाते हैं (८८) और जब खुदाकी तरफ़ से इनके पास किताब (क़ुरान) आई जो उनकी किताब (तौरात) को तसदीक़ (प्रमाणिक) करता है और इससे पहिले काफिरों के मुकाबिले में अपनी जय की दुआएं मांगा करते थे तो जब वह चीज़ जिस्को जाने पहिचाने हुए थे आ मौजूद हुई तो उससे इन्कार करने लगे पस इन्कारियो (काफिरो) पर खुदा की फटकार पड़े (८६) क्याही बुरा प्रतिफल है जिस्के बदले इन लोगों ने अपनी जानो को खरीद किया खुदा अपने बन्दों (भक्तों) में से जिस पर चाहे अपनी कृपा से (ईश्वरीय संदेशा) भेजे । सरकशी (अब) से खुदा की उतारी हुई किताब से इन्कार करनेलगे इसलिये कोप पर कोप में आगए और इन्कारियों के लिये अपमान (ज़िल्लत) की सज़ा है। (६०) और जब इन से कहा जाता है कि (क़ुरान) जो खुदा ने उतारा है उसे मानो। तो कहते हैं कि हम उसी को मानते हैं जो हम पर उतरी है और उस्के अतिरिक्त (दूसरी किताब) को नहीं मानते हालांकि यह (क़ुरान) सच्चा है (और) जो (किताब) उनके पास है उस्की तसदीक़ भी करता है (हे पैग़म्बर इनसे यह तो) पूछो कि भला अगर तुम ईमानवाले होते तो पहिले अल्लाह के पैगम्बरों को क्यों मारडाला करते थे (६१) और तुम्हारे पास मूसा खुले निशान लेकर आया इसपर भी तुमने उनके (तौरात लेने तूर पहाड़ पर गये) पीछे बछड़े (पूजने के लिये) ले बैठे और (ऐसा करनेसे) तुम (अपनीही) हानि कर रहे थे (६२) और (वह वक्त याद करो) जब हमने तुम

से पक्की प्रतिज्ञा ली और तूर (पहाड़) उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया और हुक्म दिया कि यह किताब (तौरात) जो हमने तुमको दी है इसको मज़बूती से पकडे रहो (जो कुछ उसमें लिखा है उसको) सुनो और पल्ले बांधो (इसके उत्तर में) उन लोगों ने कहा कि हमने सुना तो सही लेकिन मानतेनहीं और उनके इन्कारी के कारण बछुड़ा उनके दिलमें समाया हुआथा (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर तुम ईमानवाले हो तो तुम्हारा ईमान तुमको बुरी बात सिखला रहा है (९३) (हे पैग़म्बर उनसे) कहो कि अगर खुदा के यहां परलोक वास (आक़बत का घर) खासकर तुम्हारेही लिये है दूसरे लोगों के लिये नहीं अगर तुम सच्चे हो तो मौत को मांगो (९४) और वह अपने पिछले कर्मों के कारण मौत की आशा कभी नहीं करसक्ते और खुदा अन्यायियों को खूब जानता है (९५) और तू उन्हें और सब आदमियों से (संसारी जीवन के लिये) ज़ियादा (अधिक) ललची पावेगा और मुशरकों[1] में से भी प्रत्येक (हरएक) हज़ार वर्ष का जीवन चाहता है और इतना जीना कुछ उसे सज़ा से न बचावेगा खुदा देखता है जो कुछ वह करते हैं (९६) (रुकू १२) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि जो शख़्स जिब्रील (फ़िरश्ते) का दुश्मन है यह (क़ुरान) उसीने खुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल में डाला है उन (किताबों) की भी तसदीक़ करता है जो इससे पहिले मौजूद हैं और ईमान-वालों के लिये मंगल समाचार (खुशखबरी) है (९७) जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फ़िरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाईल (फ़िरिश्ते) का

---

१ खुदा से उसकी जाति में उसकी सिफ्तों में उसकी इबादत में दूसरे को शरीक़ करने वाले मुशरिक कहलाते हैं इसकी धातु शिर्क जिसके मानी साझे करने के हैं ॥

अल्लाह भी ऐसे विधर्मियो (काफिरों) का दुश्मन है (९८) (हे पैग़म्बर) हमने तुम्हारे पास आयतें भेजी हैं और हुक्म न मानने-वालों के सिवाय और कोई उनका इन्कारी न होगा (९९) जब कभी कोई प्रतिज्ञा करलेते हैं तो इनमें का कोई न कोई फरीक़ उस प्रतिज्ञा (अहद) को फेंक देता है बल्कि इनमें के अक्सर ईमान नहीं रखते। (१००) और जब इनके पास खुदा की तरफ़ से रसूल आये (और वह) उस किताब (तौरात) कीजो इन (यहूद) के पास है तसदीक़ (प्रमाणिक) करते हैं तो किताब वालों से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब (तौरात) को (जिसमें इन रसूल की पेशगोई भी है ऐसा) पीठ पीछे फेंका कि गोया वह जानते न थे। (१०१) और उन (ढकोसलों) के पीछे पड गये जिनको सुले-मान के राज्यकाल में शयातीन पढ़ा करते थे हालांकि सुलेमान तो काफ़िर न था बल्कि शयातीन काफ़िर थे कि वह लोगों को जादू सिखाया करते थे। जो बाबिल (शहर) में हारूत और मारूत फि-रिश्तों पर उतरा था। और वह किसी को न बताते थे जब तक उससे न कह देते थे कि हम तो जांचते हैं तू काफिर न हो। इस पर भी उनसे ऐसी बातें सीखते जिनके कारण से स्त्री पुरुष में जुदाई पड़जावे। हालांकि वे बग़ैर हुक्म खुदा वह अपनी इन बातों से किसी को नुक़सान नहीं पहुंचा सक्ते। ग़रज़ यह लोग ऐसी बातें सीखते हैं जिनसे इन्हें नुक़सान है फायदा नहीं। अगर्चि जानचुके थे कि जो शख़्स इन बातों का खरीदार हुआ वह प्रलय में अभागा है और निस्सन्देह बुरा है जिस्के बदले इन्हों ने अपनी जानों को बेचा हा शोक ! इनको समझ होती। (१०२) और अगर यह ईमान लाते और परहेज़गार बनते तो खुदा के पास से अच्छा फल मिलता अगर इनको समझ होती। (१०३) [तेरहवां रुकू]—हे मुसलमानो ! (पैग़म्बर के साथ बातों) हमारे चरवाहे कहकर खिताब (सम्बोधन)

न किया करो बल्कि (उन ज़ुरना) देख हमारी तरफ़ कहा करो और सुनते (रहो) इन्कारियों के लिये दुखदाई सज़ा है (१०४) किताब वालों और मुशरकीन में से जो लोग इन्कारी हैं इस बात से खुश नही हैं कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम पर भलाई उतारी जाय और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिये खास करलेता है और अल्लाह बड़ा दयावान है। (१०५) (हे पैग़म्बर) हम कोई आयत मन्सूख़ करदें या बुद्धि से उसको उतारदें तो उससे अच्छी या वैसेही पहुँचा देते हैं-(हे पैग़म्बर) क्या तुमको मालूम नही कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है (१०६) क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान ज़मीन का राज्य उसी अल्लाह का है और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई दोस्त मददगार नही है। (१०७) (मुसलमानो !) क्या तुम यह चाहते हो कि जिसतरह पहिले मूसा से प्रश्न किये गये थे तुम भी अपने रसूल से प्रश्न करो और जो ईमान के बदले इन्कार करे तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) (मुसलमानो) अक्सर किताब के मानने वाले बावजूद कि उन पर सचाई ज़ाहिर हो चुकी है (फिरभी) अपने दिली ईर्षा की वजह से चाहते हैं तुम्हारे ईमान लाये पीछे फिर तुम को काफ़िर बनावें तो क्षमा करो और दर गुज़र करो यहां तककि खुदा अपनी आज्ञा जारी करे बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१०९) और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और जो कुछ भलाई अपने लिये पहले से भेज दोगे उसको खुदा के यहां पावोगे बेशक अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो देख रहा है। (११०) और (यहूद) कहते हैं कि यहूद और ईसाई के सिवाय बैकुंठ मे कोई नही जाने पावेगा यह उनके (अपने) ख्याली बातें हैं (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो (१११) बल्कि सच्ची बात तो यह है कि जिसने खुदा के आगे

माथा टेका और अच्छे काम किये तो उसके लिये उसको फल उसके पालनकर्ता से मिलैगा और ऐसे लोगों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (११२) (रुकू-१४) और यहूद कहते हैं ईसाइयों का मजहब कुछ नहीं और ईसाई कहते हैं यहूद का मजहब कुछ नहीं हालांकि वह (दोनों दल) किताब के पढ़ने वाले हैं इसी तरह इन्हीं कैसी बातें वह (मुशरकीन अरब) भी कहा करतेहैं जो नहीं जानते। तो जिस बात में यह लोग झगड़ रहे हैं क़यामत के दिन अल्लाह इन में उसका फैसला करदेगा *(११३) और उससे बढ़कर जालिम (अत्याचारी) कौन है जो अल्लाह को मसजिदों में खुदा का नाम लिये जाने को मना करे और मसजिदों के उजाड़ने में कोशिश करे यह लोग खुद इस योग्य नहीं कि मसजिदों में आने पावें मगर डरते हुये आते हैं इनके लिये दुनियां में बदनामी (अपयश) और प्रलय (क़यामत) में बड़ी सज़ा है। (११४) अल्लाहही का पूर्व और पश्चिम है तो जहां कहीं मुंह करलो उधरही अल्लाह का सामना है बेशक अल्लाह गुंजाइश वाला जानता है। (११५) और कहते हैं कि खुदा संतान रखता है हालांकि वह पाक है बल्कि जो कुछ आस्मान और ज़मीन में है उसी का है और सब उसके आधीन हैं। (११६) वह आस्मान और ज़मीन का बनाने वाला है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसके लिये फर्मा देता है कि हो और वह होजाता है (११७) और जो नहीं जानते। कहते हैं कि खुदा हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती इसी तरह जो लोग इनसे पहिले हो गये हैं इन्हीं कैसी बातें वह भी कहा करते थे। इनके दिल एकही तरह के हैं जो लोग यक़ीन रखते हैं उनको तो हम निशानियां साफ़ तौर पर दिखा चुके (११८) (हे पैग़म्बर) हमने तुमको सच्ची बात देकर मंगल

---

* मुसलमान भी ऐसाही कहते हैं तो मुसलमानों में क्या विशेषता॥

समाचार देने वाला और डरानेवाला भेजा है और तुमसे नरक वासियों की कुछ पूंछ पांछ नहीं होगी (११६) और (हे पैग़म्बर!) न तो यहूदी ही तुम से कभी रज़ामंद होंगे और न ईसाई ही (तुम से राज़ी होंगे) तावक्ते कि तुम उन्ही का मजहब अख्तियार करो (हे पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है और (हे पैगम्बर) अगर तुम इसके बाद कि तुम्हारे पास इल्म (यानी क़ुरान) आचुका है उनकी ख्वाहिशों पर चलो तो तुम को खुदा के कोप से (बचानेवाला) न कोई दोस्त और न कोई मददगार (१२०) जिन लोगों को हमने क़ुरान दिया है वह उसको पढ़ते रहते हैं जैसा उसके पढ़ने का हक़ है यही उसपर ईमान लाते हैं और जो इससे इन्कार रखते है तो वही लोग घाटे मे हैं (१२१) (रुकू१५) हे याकूब के बेटो ! हमारे उन अहसानोको याद करो जो हमने तुमपर किये हैं और यह कि हमने तुम को सब संसार के लोगो पर प्रधानता दी (१२२) और उस दिन (की सज़ा) से डरो कि कोई शख्स किसी शख्स के कुछ काम न आयेगा और न उस (की तरफ़) से कोई बदला क़बूल कियाजाय और न सिफ़ारिश उसको फ़ायदा दे और न लोगों को मदद पहुँचे । (१२३) और (हे पैग़म्बर !) (याकूबके बेटो को वह वक्त याद दिलायो) जब इब्राहीम को उसके पालनकर्त्ता ने चन्दबातों में जांचको (अजमायाथा) और उन्होंने उनको पूरा कर दिखाया तो खुदा ने रज़ामन्द होकर कहा था कि हमने तुमको लोगो का इमाम (यानी पेशवा) बनाया (इब्राहीम ने) अर्ज़ किया और मेरी सतान मेंसे भी । (किसीको बना) कहा (हो मगर) हमारे इक़रार में वह दाखिल नहीं जो सचाई पर न होंगे (१२४) और (हे पैग़म्बर) (याकूब के बेटो को वह वक्त भी याद दिलाओ) जब हमने काबे के घर को लोगो का रुजू होना और अमन की जगह ठहराया और कहो (लोगों को हुक्म भेजो) कि इब्राहीम की जगह

को नमाज़ की जगह बनाओ और हमने इब्राहीम और इस्माईल से फ़र्माया कि हमारे घर को परिक्रमा करने वालों और मजाविरों (पण्डों) और रुकू[1] (और) सिजदा करने (माथा नवाने) वालों के लिये पाक साफ़ रक्खो (१२५) और (हे पैग़म्बर इनको वह वक़्त भी याद दिलाओ) जब इब्राहीमने दुआ मांगी कि हे मेरे पालन कर्त्ता! इस (शहर) को अमनका शहर बना और इसके रहनेवालों में से जो अल्लाह और प्रलय कालपर ईमान लावे उनको फल फलैरी खाने को दे (अल्लाह ने) फ़र्माया कि जो (अल्लाह और प्रलय-काल का) इन्कारी होगा उसको भी चन्दरोज के लिये (चीजों से) फ़ायदा उठाने देंगे फिर उसको मजबूर करके नरक की सज़ा में लेजाकर दाख़िल करेंगे और यह बुरा ठिकाना है। (१२६) और (हे पैग़म्बर! याकूब के बेटों को वह वक्त भी याद दिलाओ) जब इब्राहीम और (उनके साथ) ईस्माईल (दोनों) काबे के घर की नींवे (बुनियादें) उठा रहे थे (और दुआयें मांगते जाते थे) कि हे हमारे पालनकर्त्ता हमसे क़बूल कर बेशक तूही सुननेवाला जानने वाला है। (१२७) और हे हमारे पालनकर्त्ता! हमको अपना आज्ञा-कारी बना और हमारी ज़ात में से एक गिरोह (पैदा कर) जो तेरा आज्ञाकारी हो और हमको हमारी पूजा की रीतियां (हज्ज करना) बता और हमारे अपराध क्षमाकर बेशक तूही बड़ा क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१२८) और हे हमारे पालनकर्त्ता इन (मक्के वालों) में इन्हीं में से एक पैग़म्बर भेज कि इनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाये और इनको किताब (आस्मानी) और (अक़्ल की बातें) सिखादे और इन को सँभाले। बेशकतूही ज़बरदस्त हुक्म

---

(१) रुकू—घुटनों पर हाथ लगाकर झुके हुए खड़े होने को रुकू कहते हैं यह हालत नमाज़ में होती है।

वाला है (१२९) [सोलहवां रुकू] और कौन है जो इब्राहीम के तरीक़े से मुंह फेरे। मगर वही जिसकी बुद्धि भ्रष्ट होगई हो और बेशक हमने उनको दुनियां में चुनलिया था और क़यामत (प्रलयकाल) में (भी) वह भलों में होंगे (१३०) जब इब्राहीम को उनके पालनकर्ता ने कहा कि आज्ञा उठाओ (तो जवाब में) प्रार्थना की कि मैं सब संसार के पालनकर्ता का आज्ञाकारी (हुक्मी) हुआ (१३१) और इसकी (बाबत) इब्राहीम अपने बेटों को वसीयत करगये और याकूब (ने कहा) हे बेटो अल्लाह ने इसदीन को तुम्हारे लिये पसंद फ़रमाया है पस तुम मुसलमान ही मरना (१३२) (हे यहूद!) क्या तुम मौजूद थे जब याकूब के सामने मौत आखड़ी हुई उसवक्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे पीछे किसको पूजा करोगे उन्होंने जवाब दिया कि आपके पूजितों की और आपके बड़ों (यानी) इब्राहीम, इस्माईल और इसहाक़ के पूजित एक खुदा की पूजा करेंगे और हम उसीके आज्ञाकारी हैं। (१३३) (हे यहूद !) यहलोग होचुके उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको और तुमसे उनके काम की पूछ पांछ नहीं होगी । (१३४) और (यहूद और ईसाई मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो सच्चे रास्ते पर आओ (हे पैग़म्बर तुम इन लोगों से) कहो (नहीं) बल्कि हम इब्राहीम के तरीक़े पर हैं जो एक (खुदा) के होरहे थे और मुशरकीन में से न थे (१३५) (मुसलमानो ! तुम यहूद ईसाई को) जवाब दो कि हमतो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और (क़ुरान) जो हम पर उतरा और जोकि इब्राहीम[१] और इसमाईल और इसहाक़ और याकूब और याकूब की

---

(१) इब्राहीम के पिता आज़िर मूर्त्ति पूजक थे इब्राहीम के दो लड़के इस्माईल और इसहाक़ याकूब। इसहाक का पुत्र था ॥

न पर उतरे और मूसा और ईसा को जो (किताब) मिली
नपर) और जो (दूसरे) पैग़म्बरों को उनके पालनकर्ता से
ं (उसपर) हम इन पैगम्बरों मेसे किसी एक मे भी (किसी
को) जुदाई नहो समझते और हम उसी के आज्ञाकारी है।
३६) तो अगर तुम्हारी तरह यह लोग भी ईमान ले आवे
- तरह तुम ईमान लाये तो बस सच्चे रास्तेपर आगये और
मुंह फेरले (तो समझो) बस वह हठ (ज़िद) पर है ता
इनकी निस्बत खुदा तुम्हारे लिये काफ़ी होगा और वह सुनता और
जानता है (१३७) मुसल्मानो ! इन लोगों से कहो कि हमतो
अल्लाह के रग से रगे गये। और अल्लाह के रग से और किसका रग
अच्छा होगा और हमतो उसी की पूजा करते है। (१३८) (हे
पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि क्या तुम अल्लाह (के बारे) मे
हमसे झगडते हो हालांकि वही हमारा पालनकर्ता है और तुम्हारा भी
पालनकर्ता है और हमारे काम हमारे लिये और तुम्हारे काम तुम्हारे
लिये और हम निरे उसीको मानते है (१३६) या तुम कहते हो कि
इब्राहीम इसमाईल और इसहाक़ और याकूब और याकूब की
सतान (यहलोग) यहूदीथे या ईसाई थे (हे पैग़म्बर ! इनसे
कहो कि तुम बड़े जानने वाले हो या खुदा और उससे बढ़कर
ज़ालिम (अत्याचारी) कौन होगा जिसके पास खुदा की तरफ़ गवाही
हो और वह उसको छिपाये और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अ-
ल्लाह उससे वेखबर नही। (१४०) यह लोग थे कि हो गुज़रे उनका
किया उनको और तुम्हारा किया तुमको और जो कुछ वह कर गुज़रे
तुमसे उसकी पूंछ पांछ नही होगी (१४१) (रुकू–१७)

दूसरापारा—सूरे बक़र.

मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर (पहिले) थे (यानी वैतुल मुकद्दस) उससे इनके (कावाके घर की तरफ़ को) मुड़जाने का क्या कारण हुआ? (हे पैग़म्बर! तुम यह) जवाब दो कि पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही का है जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है। (१४२) और इसी तरह हमने तुमको वीच की उम्मत (गिरोह जो किसी पैग़म्बर के आधीन हो) बनाया है ताकि लोगों के मुक़ाबिले में तुम गवाह बनो और तुम्हारे मुक़ाबिले में पैग़म्बर गवाह बने। (१४३) और (हे पैग़म्बर!) जिस क़िब्ले पर तुमथे (यानी वैतुल मुक़द्दस) हमने उसको इसी मतलब से ठह-राया था ताकि हमको मालूम होजावे कि कौन २ पैग़म्बर के आधीन रहेगा और कौन उल्टा फिरेगा और यह बात अगर्चि भारीहै लेकिन उनपर नहीं जिनको अल्लाह ने हिदायत दी और खुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारा विश्वास लाना (ईमान) मेटेगा खुदा तो लोगों पर बड़ा ही कृपा रखने वाला दयालु है। (१४४) तुम्हारा मुंह का आस्मान में फिरना हम देख रहे हैं तो जो क़िब्ले तुम चाहते हो हम तुमको उसी की तरफ़ फेर देंगे। पूजनीय मसजिद (कावे) की तरफ़ को अपना मुंह फेर लिया करो और जहां कहीं हुआ करो उसी की तरफ़ को अपना मुंह करलिया करो और (हे पैग़म्बर) जिन लोगों को किताव दीगई है उनको मालूम है कि यह क़िब्ला वदलना ठीक उनके पालनकर्त्ता से है और जो कर रहे हैं खुदा उस्से वेखवर नहीं। (१४५) और (हे पैग़म्बर!) जिन लोगों को किताव दीगई है अगर तुम सब निशानियां उनके पास लेआये तो भी वह तुम्हारे क़िब्ले की मदद न करेंगे और न तुम्हीं उनके क़िब्ले की मदद करोगे और उनमें

का कोई भी दूसरे के क़िब्ले को नही मानता और तुमको जो समझ होचुकी है अगर उसके पीछे भी तुम इनकी इच्छाओं पर चले तो ऐसी दशा में बेशक तुम भी अन्यायियों में गिने जाओगे (१४६) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह जिस तरह अपने बेटों को पहिचानते हैं इन (मोहम्मद) को भी पहिचानते हैं और उनमें से कुछ लोग जानबूझ कर सच को छिपाते हैं (१४७) सच तुम्हारे पालनकर्त्ता से है तो कहीं सन्देह करने वालों में से न होजाना। (१४८) (रुकू-१८) और हर एक के लिये एक तरफ़ है जिधर को (नमाज़में) वह अपना मुँह करता है (तो दिशा भेद की परवा न करके) भलाइयों की तरफ़ लपको। तुम कही भी हो अल्लाह तुम सब को खींच बुलायेगा बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१४९) और (हे पैग़म्बर !) तुम कहीं से भी निकलो अपना मुँह इज़्ज़त वाली मसजिद की तरफ़ करलिया करो और यह तुम्हारे पालन-कर्त्ता से सच है और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से बेख़बर नहीं है। (१५०) और (हे पैग़म्बर) तुम कही से भी निकलो अपना मुँह इज़्ज़त वाली मसजिद की तरफ़ करलिया करो और जहां कहीं हुआ करो उसी की तरफ़ अपना मुँह करो ताकि ग़ैर को तुमसे झगड़ने की जगह न रहे। मगर उनमें से जो अन्यायी हैं तो तुम उनसे मत डरो और हमारा डर रक्खो और ग़रज़ यह है कि हम अपनी कृपा तुमपर पूरी करें कदाचित् तुम सीधी राह लगजाओ। (१५१) जैसा हमने तुममें तुम्हीं में से एक रसूल भेजे वह हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनाते और तुम्हारी सुधार करते और तुमको किताब और समझ (की बाते) सिखाते और तुमको ऐसी ऐसी बाते बताते जो (पहिले से) तुम जानते न थे (१५२) तो तुम हमारी यादमे लगे रहो कि मैं तुम्हें याद करूंगा और हमारा अहसान मानते रहो और नाशुक्री (कृतघ्नता) न कर

(१५३) (रुकू-१९) हे ईमानदारो ! संतोष और नमाज़ से मददलो बेशक अल्लाह संतोषियों का साथी है (१५४) और जो लोग अल्लाह की राह पर मारे जाँय उनको मरा हुआ न कहना (वह मरे नहीं) बल्कि ज़िन्दा हैं मगर तुम नहीं समझते । (१५५) और निस्संदेह हम तुमको थोड़े डरसे और भूखसे और माल और जान और पैदावार के नुक़सान से जांच करेंगे और संतोषियों को खुश खबरी सुनायेंगे । (१५६) यह लोग जब इन पर मुसीबत आपड़ती है तो बोल उठते हैं कि हम तो अल्लाही के हैं और हम उसी की तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं (१५७) यही लोग हैं जिनपर पालनकर्ता की कृपा और दया है और यही सच्चे मार्ग पर हैं (१५८) (पहाड़) सफा[१] और (पहाड़) मर्वह खुदा की निशानियों में से हैं तो जो शख़्स खाना काबे का हज्जया उमरा (तीर्थ मक्के से तीन कोस पर है) करे उसपर इन दोनों के बीचपरिक्रमा करने में कुछ दोष नहीं और जो खुशदिली से नेक काम करे तो खुदा कियेको माननेवाला और जानकार है । (१५९) वह जो हमने खुलेहुई आज्ञाओं और उपदेशों की बाते उतारी और किताब

---

(१)-२-सफा और मर्वह दो पहाड़ियों के नाम हैं लोग कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम की बीबी हज़रत हाजिराके ईस्माईल पैदा हुए उस वक़्त इनको पानी पीने को नहीं मिला तो पानी की तलाश में घबराहट से सफा और मर्वह के दर्मियान में दौड़ती फिरीं और घबड़ाकर आई कि हमारे बच्चे को कोई जंगली जानवर न खाजावे । जब यह बच्चे के पास आई तो हजरत ईस्माईल ने जो बच्चा थे छोटे लड़कों की तरह पैरों को आदतन जमीन पर मारा तो वहां चश्मा निकल आया और वह चश्मा अबतक है उसका नाम चाहे जमजमहै । मुसल्मान लोग हज्ज के वक्त इन पहाड़ों के निशानातों के बीच कुछ पढ़ते हुए हज़रत हाजिरा की यादगार में दौड़ा करते हैं ॥

से हमने साफ़ २ समझादिया इसके बाद भी तो उनको छिपाये तो यही लोग है जिनको खुदा धिक्कार देता है और धिक्कार देनेवाले उनको धिक्कार देते हैं। (१६०) मगर जिन्होंने तोबा की और (अपनी दशाको) सम्भाल लिया और (जो छिपाया था साफ़ २) बयान करदिया तो यही लोग हैं जिनको तोबा मैं मानताहूं और मैं क्षमाकरने वाला मिहर्बानहूं। (१६१) जो लोग इन्कार करते रहे और इन्कारी की ही हालत में मरगये यही है जिनपर खुदाकी और फ़िरिश्तों की और आदमियो की सबकी धिक्कार है। (१६२) वह हमेशा इसीमें रहेंगे इनकी न तो सज़ाही हल्का की जावेगी और न मुहलत ही मिलेगी। (१६३) और तुम्हारा पूजित एक खुदा है इस्के सिवा कोई पूजित नही मगर बड़ा दया करनेवाला कृपालु है (१६४) (रुकू २०) बेशक आकाश और धरती के पैदा करने मे और रात और दिन के आवागमन मे और जहाज़ों मे जो लोगो के फ़ायदे की चीज़ें समुद्र मे लेकर चलते है और मेह मे जिसको अल्लाह आकाश से बरसाता है फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को उस्के मरे पीछे फिर जिन्दा करताहै और हर क़िस्म के जानवरो मे जो खुदाने ज़मीन की सतह पर फैला रखे हैं और हवाओं के फेरने मैं जो और बादलो मे जो (खुदा के हुक्म से) आकाश और ज़मीन के बीच घिरे रहते हैं उन लोगो के लिये जो समझ रखते हैं निशानियां हैं (१६५) और लोगो मे कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह के सिवा (औरोको भी) शरीक ठहराते (और) जैसी भक्ति खुदासे रखनी चाहिये वैसी भक्ति उनसे रखते हैं और जो ईमान वालेहैं उनको बढकर खुदाकी भक्ति होती है जो बात जालिमों को सज़ा के देखने पर सूझ पड़ेगी बेशक अब वह सूझ पडती है कि हर तरह की शक्ति अल्लाही को है और यह कि अल्लाह की सज़ा भी सख़्तहै। (१६६) उसवक्त गुरू चेले चाटिय से दस्त बरदार हो जाएँगे और सज़ा देखलेगे और उनके सम्बन्ध टूट

टाट जायँगे। (१६७) और चेले बोलउठेंगे कि हा शोक हमको फिर लौट कर दुनियां में जाना मिले तो जैसे यह हमसे दस्त बरदार होगये (उसीतरह हम भी उनसे दस्त बरदार होजाँय) यों अल्लाह उनके काम उनके साम्हने लायगा कि उनका हसरत (ईर्षा) दिखाई देगी और उनको नरक से निकलना नहीं होगा। (१६८) (रुकू-२१) लोगो ज़मीन में जो चीज़ें हलाल (पवित्र) और शुद्ध हैं उनमें से खाओ और शैतान के पैर पर पैर मत रक्खो वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१६९) वह तो तुम्हें बदी और निलज्जताही को कहेगा और यह (चाहेगा) कि वे समझे बूझे खुदापर झूठ जंजाल बाँधो। (१७०) और जब इनसे कहा जाता है कि जो खुदाने उतारा है उसपर चलो तो जवाब देते हैं नहीं जी। हमतो इसीपर चलेंगे जिसपर हमने अपने बडों को पाया। भला अगर उनके बड़े कुछ भी नहीं समझते थे और न सच्चे मार्ग पर चलते थे (तौ भी ये उन्हीं की पैरवी किये चले जायँगे।) (१७१) और जो लोग काफ़िर हैं उनकी मिसाल उस शख्स कैसी है जो एक चीज़ के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है (और) वह सुननेहो नहीं तो उसका बुलाना पुकारना व्यर्थ (बेसूद) है, बहरे गूंगे अन्धे हैं सो उनको समझ नहीं। (१७२) हे ईमानदारो ! हमने जो तुमको रोजी और पाक चीज़ें देरखी हैं खाओ और अगर तुम अल्लाह ही की बन्दगी का दम भरते हो तो उसका अहसान मानो। (१७३) उसने तो बस मराहुआ (जानवर) और खून और सूअर का गोश्त और वह जानवर जिसको खुदा के सिवाय किसी और के लिये नामज़द किया जाय तुम पर हराम किया है। उदूल हुक्मी करने वाला (अवज्ञाकारी) और हदसे बढजानेवाला नहो तो उसपर पाप नहीं बेशक अल्लाह बख्शनेवाला मिहर्बान है (१७४) जो लोग उन हुक्मोंको जो खुदा ने अपनी किताब (तौरात) में उतारे छुपाते और उसके बदले थोड़ासा बदला हासिल करते हैं यह लोग और

कुछ नही मगर अपने पेटों में अंगारे भरते हैं और क़यामत के दिन खुदा इनसे बात भी तो नही करेगा और न इनको पाक करेगा और उनके लिये कष्टदायक दण्ड है। (१७५) यही लोग हैं जिन्हो ने सच्चीराह के बदले भटकना मोललो और क्षमा के बदले सज़ा पस आग मे उनका ठहरना है यह इसलिये कि किताब (तौरात) को वास्तव में खुदाहीने उतारा और जिन लोगोंने उस किताब में भेदडाला वह जिद्द से दौड़ पड़े है। (१७६) (रुकू २२) भलाई यही नही कि तुम अपना मुंह पूर्व या पश्चिम को तरफ़ करलो बल्कि भलाई तो यह है कि अल्लाह और क़यामत और फरिश्तो और (आस्मानी) किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाये और माल अल्लाह के प्रेम पर सम्बन्धियो और अनाथो और दुखिया लोगो (मुहताजों) मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दिया और ग़ुलाम वग़ैरह की क़ैद से लोगों की गर्दनो (के छुडाने) मे (दिया) और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे और जब (किसी बात का) इक़रार करलिया तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और तगी मे और तकलीफ़ और हलचल के वक्त मज़बूत रहे यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही परहेज़-गार हैं (१७७) हे ईमानदारो ! जो लोग मारेजावे उनमे तुमको (जानके) बदले (जान) का हुक्म दिया जाता है। आज़ादकेबदले आज़ाद (स्वतन्त्र) और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम औरत के बदले औरत फिर जिस (हत्यारे) को उसके भाई (बदला चाहने वाला) कोई अंश (बदला) क्षमा कर दिया जाय तो दस्तूर के बमूजिब (हत्यारे की तरफ़ से) क़त्ल हुए के वारिस को खुशी के साथ (बदला चाहनेवाले को) अदा कर देना यह (हुक्म खून बहा) तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से (तुम्हारे हक़ मे) आसानी और मिहरबान है फिर इसके बाद जो जियादती करे तो उसके लिये दुखदाई सज़ा है। (१७८) और बुद्धिमानो बदला चाहने मे तुम्हारी ज़िन्दगी है और

ताकि तुम (ख़ून बहाने से) बचे रहो। (१७९) किताब वालो ! तुमको हुक्म दिया जाता है कि जब तुम में से किसी के साम्हने मौत (काल) आ पहुंचे (और) वह कुछ माल छोड़ने वाला हो तो माता पिता और सम्बन्धियों के लिये वाजिबी तौर पर वसीयत करे जो (ख़ुदा से) डरते हैं उनपर (उनके अपना का यह एक) हक़ है। (१८०) फिर जो वसीयत के सुने पीछे उसे कुछ का कुछ करदे तो उसका पाप उन्ही लोगों पर है जो वसीयत को बदलें—बेशक अल्लाह सुनता जानता है। (१८१) और जिसको वसीयत करनेवाले की तरफ़ से (किसी ख़ास आदमी को) तरफ़-दारी या (किसी की) हक़तल्फ़ी का सन्देह हुआ हो और वह वारिसों मे मेल करादे तो (ऐसी सूरत मे वसीयत के बदलने का) उसपर कुछ पाप नहीं। बेशक अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१८२) (रुकू–२२) ईमान वालो ! जिस तरह तुम से पहिले किताब वालों पर रोज़ह रखना फ़र्ज़ (कर्तव्य) था तुम पर भी फ़र्ज़ (कर्तव्य) किया गया ताकि तुम (पापों से) बचो। (१८३) (वह भी) गिनती के चन्द्‌रोज (हैं) इस पर भी जो शख्स तुममे से बीमार हो या सफर में (हो) तो दूसरे दिनों से गिनती (पूरी करदे) और जिनको भोजन (खाना) देने की शक्ति है उन पर (एक रोज़े का) बदला एक दीन को भोजन देना है और जो शख्स अपनी खुशी से नेक काम करना चाहे तो यह उनके हक़ मे जियादह भलाई है और समझो तो रोज़ह रखना तुम्हारे हक़ मे भलाई है। (१८४) रमज़ान (रोज़ों) का महीना जिसमें खुदा की तरफ़ से क़ुरान उतरा है (और क़ुरान) लोगों को राह दिखानेवाला है और हिदायत और तमीज़ के खुले २ हुक्म मौजूद हैं तो तुम मे से जो शख्स इस महीने में मौजूद हो तो चाहिये कि इस महीने के रोज़े रक्खे और जो बीमारहो या यात्रा (सफ़र) में (हो तो दूसरे दिन।

से गिनती (पूरी करले) अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम्हारे साथ कड़ाई नहीं करना चाहता और इसलिये कि तुम (रोज़ों की) गिनती पूरी करलो और इसलिये कि अल्लाह ने जो तुमको सच्चीराह दिखादी है और इसलिये कि तुम (उसका) अहसान मानो। (१८५) और (हे पैग़म्बर) जब हमारे बन्दे (सेवक) तुमसे हमारे बारे मे पूछे तो (उनको समझा दो कि) हम (उनके) पास हैं। जब कभी कोई हमे पुकारता है तो हम (प्रत्येक) पुकारने वाले की टेर को क़बूल कर लेते हैं तो उन को चाहिये कि हमारा हुक्म माने और हम पर ईमान लावे ताकि वह सीधे राह पर चले (१८६) (मुसलमानों!) रोज़ों की रातों मे अपनी बीबियों के पास जाना तुम्हारे लिये जायज़ कर दिया गया है वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो, अल्लाह ने देखा तुम (चोरी चोरी उनके पास जाने से) अपना (दीनो) नुक़सान करते थे तो उसने तुम्हारा अपराध (क़सूर) क्षमा कर दिया और तुम्हारे अपराध से दरगुज़र की पस अब (रोज़ों से रात के वक्त) उनके साथ भोग करो (हम बिस्तर हो) और जो (नतीजा) खुदाने तुम्हारे लिये लिखरक्खा है (यानी औलाद) उस (के हासिल करने) की इच्छा करो और खाओ पीयो जब तककि (रात की) काली धारी से सुबह की सफ़ेद धारी तुमको साफ़ दिखाई देने लगे फिर रात तक रोज़ह पूरा करो और तुम मसजिद मे एकांत बैठे हो तो उन से प्रसंग (हमबिस्तरी) नहीं करना—यह अल्लाह की (बांधी हुई) हदें हैं तो उनके पास भी न फटकना इसी तरह अल्लाह अपने हुक्मोंको लोगों के लिये खोल२ कर बयान करता है ताकि वह बचें। (१८७) और आपस मे व्यर्थ (नाहक़) एक दूसरे का माल बरबाद मत करो और न माल को हाकिमों के पास (पहुँचने का) ज़रिया ढूंढो कि लोगों के माल मे

से कुछ जानबूझ कर नाहक़ हज़्म मत कर जाओ (१८८) (रुकू-२४) (हे पैग़म्बर ! लोग) तुमसे चन्द्रमा के बारे में पूछते हैं तो कहो कि चन्द्रमा से लोगों के हज्ज के वक़्त (समय) मालूम होते हैं और यह कुछ नेकी नहीं है कि घरों में उनके पिछवाड़े की तरफ़ से आओ बल्कि नेकी तो उसकी है जो परहेज़गारी करे और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपनी मुराद (अभीष्ट) को पहुँचो। (१८९) और (मुसलमानो !) जो लोग तुम से लड़ें तुम भी अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो और ज्यादती न करना अल्लाह ज्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता। (१९०) और (जो लोग तुम से लड़ते हैं) उनको जहां पावो क़त्ल करो और जहां से उन्हों ने तुमको निकाला है (यानी मक्के से) तुमभी उनको (वहां से) निकालो और फ़साद का (क़ायम रहना) खून बहाने से भी बढ़कर है और जबतक काफिर अदबवाली मस-जिद के पास तुमसे न लड़ें तुम भी उस जगह उनसे न लड़ो लेकिन अगर वह लोग तुम से लड़ें तो तुम भी उनको क़त्ल करो ऐसे काफ़िरों की यही सज़ा है। (१९१) फिर अगर मान जावें तो अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१९२) और यहां तक उनसे लड़ो कि विद्रोह (फ़िसाद) न रहे और खुदा का हुक्म चले फिर अगर (फ़िसाद से) मानजावें तो उनपर किसी तरह की ज़ियादती नहीं करनी चाहिये क्योंकि ज़ियादती (तो) जालिमों के सिवाय किसी पर (जायज़) (अत्याचार) नहीं (१९३) अदब[1] (इज्ज़त)

१-अरबवाले ज़ीक़ाद ज़िल हिज्ज मुहर्रम रजब इन चारको अदब वाले महीने समझते थे और इन महीने में सब देशमें लूट मार लड़ाई भिड़ाई सब बंद होजाती थी शोक की बात है कि अदब के महीनों मुसलमान लोग जबरदस्ती लड़ें।

वाले महीनों का बदला अदब वाले महीने और अदब की चीज़े भलाई का बदला तो जो तुमपर ज़ियादती करे तो जैसी ज़ियादती उसने तुमपर की वैसीही जियादती तुम भी उसपर करो और ज़ियादती करने में अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह उन्हींका साथी है जो (उससे) डरते हैं (१६४) और खुदा की राहमें खर्च करो अपने हाथों अपने तई जान जोखों में मत डालो और अहसान करो अल्लाह अहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (१६५) और अल्लाह के लिये हज्ज और उमरह (तीर्थ) को पूरा करो और अगर (राह में कहीं) घिर जाओ तो क़ुर्बानी करदो जैसी कुछ हो सके और जबतक क़ुर्बानी अपने ठिकाने न लगजाय अपना सिर न मुड़ाओ। और जो तुममें बीमार हो व सिरकी तरफ़ से उसे दुःख हो तो (बाल उतरवा देने को) बदला रोज़े या खैरात या क़ुर्बानी फिर जब तुम्हारी खातिर जमा (यानी उज्र रफ़ा) हो जावे तो जो कोई उमरे को हज्ज से मिलाकर फ़ायदा उठाना चाहे। (उसको) क़ुर्बानी (करनी होगी) जैसी कुछ होसके और जिसको क़ुर्बानी मुअस्सिर न हो तो तीन रोजे हज्ज के दिनों में (रखले) और जब

ऊपर आयत(१६४)में जो कहागया है वह सिर्फ़अपने बचाव और अमन क़ायम रखने के लिये है इन आयतों को लिखने की ज़रूरत यह हुई कि ग़ैर मजहबवाले मुसल्मानों को बहुत तंग करतेथे उन से बचाना ज़रूरी था जो मुसल्मान किसी मज़हब वाले पर जबरदस्ती करतेहैं या वह उनकी किसी रसूमातको जबरन रोकना चाहते हैं व रोकते हैं वह जरूर क़ुरानशरीफ़ के खिलाफ़ कररहे हैं इसीलिये बेमूजिब सज़ा समझे जावेगे ईमान दिलपर मौकूफ़ है न कि ज़ोरपर जिसने जबरदस्ती से मुसलमान किया या जो जबरदस्ती से मुसलमान करे उन सबने क़ुरानशरीफ़ के कलाम के खिलाफ़ किया और कर रहे हैं ॥

वापिस आओ तो सात रोज़े रक्खो यह पूरे दश हुए। यह (हुक्म) उसके लिये है जिसका घरबार मक्के में न हो और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि अल्लाह की सज़ा सख़्त है (१९६) (रुकू-२५) हज्ज के कई महीने मालूम हैं तो जो शख्स इन महीनों में हज्ज की ठान ले तो (अहराम[1] बांधने से आखिर तक हज्ज (के दिनो) मे विषय (ऐयाशी)की कोई बात न करे और न पाप की, न झगड़े की और भलाई का कोई सा काम करो वह खुदा को मालूम होजायगा और (हज्ज के जाने से पहिले) सफ़र खर्च (मार्गव्यय) इकट्ठा करलो। उत्तम राह खर्च परहेज़गारी है और बुद्धिमानो ! हमसे डरते रहो। (१९७) (हज्ज के वक़्त) तुम अपने पालनकर्त्ता की कृपा खोजो तो कुछ पाप नहीं। फिर जब अरफ़ात (पहाड) से परिक्रमा को चलो तो (मुक़ाम) मुज़दल्फ़ा मे ठहर कर खुदा को याद करो और उसको याद करो उस तरीक़े पर जैसा तुमको बताया है और इससे पहिले तुम भटकेहुये मे से थे। (१९८) फिर जिस जगह से लोग चलें तुमभी वहां से चलो और अल्लाह से क्षमा चाहो अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१९९) फिर जब हज्ज के कर्मों को करचुको तो जिस तरह तुम अपने बाप दादों की चर्चा मे लगजाते थे उसी तरह बल्कि उससे भी बढ़कर खुदा को याद मे लगजाओ फिर लोगो मेसे कुछ ऐसे हैं जो दुआये मांगते है कि हे

---

१ अहराम-वह कपडा जो मुसल्मान लोग हज्ज (तीर्थ) को क्रिया कर्म के लिये पहनते हैं जब तक तीर्थ यात्रा का कार्य समाप्त नहीं होता तब तक इसे पहने रहते है यह रस्म मुहम्मद साहिब के जमाने से पहले की है और ऐसा मालूम होता है कि भारतवर्ष के सनातन धर्म से यह पहिले लोगई है जैसे गया यात्रा आदि मे यहां पहिनते हैं ॥

हमारे पालनकर्त्ता ! हमको दुनियां में दे और क़यामत (प्रलय) मे उनका कुछ हिस्सा नही । (२००) और लोगों मे से कुछ ऐसे है जो दुआये मांगते है कि हे हमारे पालनकर्त्ता ! हमे दुनियां में भी बढ़ती दे और प्रलय मे भी बढ़ती दे और हम को नरक की सज़ा से बचा (२०१) यही है जिनको उनके किये का हिस्सा (यानी पुण्य मिलना) है और अल्लाह तो जल्द (सब का) हिसाब करने-वाला है । (२०२) [आधापारा] और गिनती के इन चन्द दिनो मे खुदा की याद करते रहो । फिर जो शख़्स जल्दी करे और दो दिन मे (चलखड़ा हो) उस पर (भी) कुछ पाप नही और जो देरतक ठहरा रहे उसपर (भी) कुछ पाप नही (यह रियाअत) उनके लिये है जो परहेज़गारी करे । और खुदा से डरते रहो और जाने रहो कि तुम उसी के सामने हाज़िर किये जाओगे । (२०३) और (हे पैग़म्बर !) कोई आदमी ऐसा है जिसकी बाते तुम को दुनियां की जिन्दगी मे भली मालूम होती है और वह अपनी दिली ख्वाहिशो पर खुदा को गवाह ठहराता है हालांकि वह ज़ियादह झगडालू है । (२०४) और जब लौट कर जावे तो मुल्क मे [illegible]ता फिरता है कि उसमे विद्रोह फैलावे और खेती बाड़ी को और जानो को बर्बाद (नष्ट भ्रष्ट) करे और अल्लाह फ़साद नही चाहता, (२०५) और जब उससे कहा जाय कि खुदा से डर तो शेखी उसको पाप पर आमादह करती है पस ऐसे को (बस) नरक काफी है और वह बहुतही बुरा ठिकाना है । (२०६) और लोगो मे से कुछ ऐसे हैं जो खुदा की खुशी के लिये अपनी जान दे देते है और अल्लाह दासो पर बड़ीही दया रखता है (२०७) हे मानवालो इस्लाम मे पूरे पूरे आजाओ और शैतान के पैर पर पैर न चलो । वह तुम्हारा खुला दुश्मन है । (२०८) फिर

जाओ तो जान रक्खो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (२०६) क्या यह लोग इसी की वाट देखते हैं कि अल्लाह फिरिश्तों के साथ बादलों का छाता लगाये उनके सामने आवे और जो कुछ होना है होचुके और सब काम अल्लाह ही के हवाले हैं (२१०) (रुकू २६) (हे पैग़म्बर) याकूब के बेटों से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली हुई निशानियां दी और जब कोइ शख्स खुदा की उस नियामत (पदार्थ) को बदल डाले तो खुदा की मार बड़ी सख़्त है। (२११) जो लोग इन्कारी हैं दुनियां की ज़िन्दगी उनको भली दिखाई गई है और ईमानवालों के साथ हँसी करते हैं हालां कि जो लोग परहेज़-गार हैं उनके दर्जे क़यामत के दिन उन से बढ़ चढ़ कर होवेंगे और अल्लाह जिसे चाहे बे हिसाब रोज़ी दे (२१२) (शुरू में सब) लोग एकही दीन रखते थे फिर अल्लाह ने पैग़म्बर भेजे जो खुशखबरी देते और इन्कारियों को डराते और उनकी मार्फ़त सच्ची किताबें भेज़ी ताकि जिन बातों में लोग भेद डाल रहे हैं उन बातोंका (वह किताब) फ़ैसला करदे और जिन लोगों को किताब दी गई थी वही अपने पास खुला हुक्म आये, पीछे आपस की ज़िद से उनमें भेद डालनेलगे तो वह सच्चा रास्ता जिसमें लोग भेद डाल रहे थे खुदा ने अपनी कृपा से ईमानवालों को दिखला दिया और अल्लाह जिसको चाहे सच्ची राह दिखलाये। (२१३) क्या तुम (मुसलमान) ऐसा ख्याल करते हो कि बैकुण्ठ में जाओगे ? और अभी तक तुमको उन लोगों कैसी हालत नहीं पेश आई जो तुमसे पहिलों की होचुकी है कि उनको सख्तियां और तकलीफें पहुँची और फटकारे गये यहांतक कि पैग़म्बर और ईमान वाले जो उनमें साथ थे चिल्ला उठे कि खुदा की मदद का कोई वक्त भी है। जानो खुदाकी मदद क़रीब है। (२१४) (हे पैग़म्बर) तुमसे पूछते हैं कि क्या चीज़ खर्च करें ? तो समझा दो जो माल खर्च करो (वह तुम्हारे)

माता पिता का और नजदीक के रिश्तेदारों का और अनाथों (यतीमो) व और दीनदुखियायों (मुहताज) का और वटोहियो (मुसाफिरो) का भाग (हक़) है और तुम कोई सी भलाई करोगे अल्लाह उसको जानताहै। (२१५) तुम पर जहाद (लड़ाई) का हुक्म हुआहै और वह तुमको बुरालगा है और शायद एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हकमे अच्छी हो और शायद एक चीज तुमको भली लगे और वह तुम्हारे हक़में बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते (२१६) रुक-२७-(हे पैगम्बर! मुसलमान तुमसे) अदबवाले महीना मे लड़ाई करने को बाबत पूछतेहैं तो उनको समझा दो कि अदब वाले महीने मे लड़ना बड़ा पाप है। मगर अल्लाह की राह से रोकना और खुदा को न मानना और अदबवाली मसजिद मे न जाने देना और उस मसजिद से निकाल देना अल्लाह के नजदीक मार-डालने से बढकर है और वे तो सदा तुमसे लड़तेही रहेंगे यहां तक कि इनका वश चले तो तुमको तुम्हारे दीन से फिरादे। और जो तुममे अपने दीन से फिरेगा और इन्कारी की दशामे मर जावेगा तो ऐसे लोगों का किया कराया दुनिया और क़यामतमे अकार्थ और यह नरकवासी हैं और वह हमेशा नरक मेही रहेंगे। (२१७) जो लोग ईमान लाये और उन्होने अल्लाह की राह में देश त्याग किया और जहाद भी किये। यही हैं जो खुदाकी कृपाकी आशा लगायेहैं और अल्लाह क्षमा करनेवाला दयावान है। (२१८) (हे पैगम्बर) तुमसे शराब और जुएके बारे मे पूछते हैं तो कहदो कि इन दोनों मे बड़ा पाप है और लोगों के लिये फायदे भी हैं मगर इनके फायदे से इनका पाप बढ़कर है और तुमसे पूछते हैं. (खुदा की राहमे) क्या खर्च करें तो समझा दो कि जितना ज्यादा हो। इसी तरह अल्लाह आज्ञायें तुम लोगों से खोल २ कर बयान करताहै शायद तुम ध्यान

(१) अदबवाले महीने. ज़ीकाद, जिलहिज्ज, मुहर्रम और रजबहै।

दो (२१६) और (हे पैग़म्बर यह लोग) तुमसे अनाथों के बारे में पूछते हैं तो समझा दो कि उनका सुधारना भला है और अगर उनसे मिल जुल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सम्भालने वाले से पहिचानता है और अगर खुदा चाहता तो तुमको कठिनाई में डाल देता बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (२२०) और शिर्कवाली औरतें जब तक ईमान न लावें उनसे निकाह न करो। शिर्कवाली[1] मुसलमान लौंडी शिर्कवाली बीबी से भली है अगर्चे तुमको पसन्द हो। और शिर्कवाले मर्द से निकाह न करो जबतक ईमान न लावे औरशिर्कवाला तुमको कैसाही भला लगे उससे मुसलमान ग़ुलाम भला और वे लोग (शिर्कवाले) नरक को तरफ़ बुलाते हैं। और अल्लाह अपनी मिहर्बानी से, बैकुण्ठ और बख़शिश की तरफ़ बुलाता है और अपनी आज्ञायें लोगों से खोल खोल कर बयान करता है ताकि वह होशियार रहें (२२१) (रुकू-२८) और (हे पैग़म्बर लोग) तुम से हैज़ मासिक धर्म, (रजस्वला) के बारे में पूछते हैं तो समझा दो कि वह गन्दगी है रजस्वला (हैज़) के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न होलें उनके पास न जाओ फिर जब नहा धोलें तो जिधर से अल्लाह ने तुमको बतादिया है उनके पास जाओ। बेशक अल्लाह तौबाह करने वालों को दोस्त रखता है और सफाई रखने वालों को दोस्त रखता है। (२२२) तुम्हारी बीबियां (स्त्रियां) (गोया) तुम्हारी खेतियां हैं, अपनी खेती में जिसतरह चाहो जाओ और अपने लिये आयन्दह का भी बन्दोबस्त रक्खो और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाज़िर होना है और (हे पैग़म्बर) ईमान वालों को खुशख़बरी (मङ्गल समाचार) सुनादो। (२२३)

---

१ शिर्कवाली—खुदा की जात में और गुणमें दूसरे को शरीक करने वाली।

और सलूक करने और परहेज़गारी रखने और लोगों से मिलाप कराने में खुदा की क़सम (सौगन्ध) मत खाओ अल्लाह सुनता और जानता है (२२४) तुम्हारी बुरी क़समों पर खुदा तुम को नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकड़ेगा जो तुम्हारे दिली इरादे हों और अल्लाह बख्शने वाला (और) बरदाश्त करने वाला है। (२२५) जो लोग अपनी बीवियों के पास जाने को क़सम खा बैठे उनको चार महीने की मुहलत है फिर (इसमुद्दत में)अगर मिलजावें तो अल्लाह बख्शने वाला मिहर्बान है। (२२६) और अगर तलाक़[१] को ठानले तो अल्लाह सुनता जानता है (२२७) और जिन औरतों को तलाक़ दी गई हो वह अपने आप को तीन दफ़े कपड़ों के आने तक (निकाह से) रोके रक्खे और अगर अल्लाह और क़यामत का यक़ीन रखती है तो जो कुछ भी (बच्चे की क़िस्म से) खुदा ने उनके पेट में पैदाकर रक्खा है उसका छिपाना उनको जायज़ नहीं और उनके पति उनको अच्छी तरह रखना चाहें तो, वह इस बीच में उनको वापिस लेने के ज़ियादह हक़दार हैं और जैसे (मर्दों का हक़) औरतों पर वैसेही दस्तूर के मुताबिक़ औरतों का (हक़ मर्दों पर) हां पुरुषों को स्त्रियों पर प्रधानता है और अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमत वाला है। (२२८) (रुकू-२६) तलाक़ दो दफ़े (करके होजावे) फिर दस्तूर के मुताबिक़ रखना या अच्छे बर्ताव के साथ रुख़सत करदेना और जो तुम उनको देचुके हो उसमें से तुम को कुछ भी वापिस लेना जायज़ नहीं। मगर यह कि मियां बीवी को डर हो कि खुदा ने जो हदें ठहरादी हैं उन पर क़ायम नहीं रहसकेंगे फिर अगर तुम लोगों को इस बात का डर हो कि मियां बीवी अल्लाह की हदों पर क़ायम नहीं रहसकेंगे और औरत (अपना पीछा छोड़ाने के एवज़) कुछ दे निकले तो इसमें दोनों पर कुछ

(१) औरतों को छोड़ देना वा स्त्री परित्याग॥

पाप नहीं यह अल्लाह की बांधी हुई हदें हैं तो इनसे आगे मत बढ़ो और जो अल्लाह की बांधी हुई हदों से आगे बढ़जावे तो यही लोग ज़ालिम हैं। (२२६) अब अगर औरत को (तीसरी बार) तलाक़ देदो तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न करले उसके लिये हलाल नहीं (होसक्ती) हां अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके) उसको तलाक़ देदे तो दोनो (मियां-बीबी) पर कुछ पाप नहीं कि फिर एक दूसरे से (परस्पर) प्रेम करले बशर्तेकि दोनों को आशाहो कि अल्लाहकी बांधी हुई हदों पर क़ायम रह सकेंगे और यह अल्लाह की हदें हैं जिनको उन लोगों के लिये बयान फर्माता है जो समझते हैं। (२३०) और जब तुम ने औरतों को (दो बार) तलाक़ देदो और उनकी मुद्दत पूरी होने को आई तो दस्तूर के मुताबिक़ उनको रक्खो या उनको तलाक़ देकर रुख़सत करदो और संतान के लिये उनको (अपने

नोट-तलाक़ का यह दस्तूर है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक़ देता है तो कम से कम दो आदमियों के सामने तलाक़ देता है और एक महीने के बाद दूसरी तलाक़ भी इस तरह से देता है। यहां तक तो मियां बीबी में सुलहनामा होसक्ता है। इसके एक महीनेके बाद तीसरी तलाक़ दी जाती है इस तलाक़ देने के बाद फिर मर्द उस औरत के पास नहीं जासक्ता। यह औरत ३ माह १० दिन बाद निकाह (ब्याह) करसक्ती है। दूसरे पति के साथ निकाह होजाने पर अगर दूसरा पति तलाक़ देदे तो सिर्फ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग करचुकी हो (हमबिस्तर होचुकी हो) अपने पूर्व पति के पास फिर निकाह करसक्ती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके विषय भोग न करले (यानी हमबिस्तर न होले) कदापि पूर्व पति से निकाह नहीं करसक्ती॥

को बनाके) न रखना कि (बाद को उन पर) ज़ियादती करने लगो और जो ऐसा करेगा तो अपनाही खोयेगा और अल्लाह के हुक्मों को कुछ हंसी खेल न समझो और अल्लाह ने जो तुम पर अहसान किये हैं उनको याद करो और यह कि उसने तुम पर किताब और अक़ल की बातें उतारीं जिससे वह तुमको समझाता है—और अल्लाह से डरते रहो और जान रक्खो कि अल्लाह सब को जानता है। (२३१) [रुकू ३०] और जब औरतों को तीनबार तलाक़ देदो और वह अपनी इद्दतकी मुद्दत पूरी करलें और जायज़ तौर पर आपस में (किसी से) उनकी मर्ज़ी मिलजाय तो उनको (दूसरे) शौहरों के साथ निकाह करलेने से न रोको यह नसीहत उसको की जाती है जो तुम से अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखता है यह तुम्हारे लिये बड़ी पाकीज़गी और बड़ी सफ़ाई की बात है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (२३२) और जो शख्स (बीबी को तलाक़ दिये पीछे अपनी औलाद को) पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे तो उस की खातिर मातायें अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलायें और जिसका वह बच्चा है (यानी बाप) उसपर दस्तूर के मुताबिक़ मायों को खाना कपड़ा देना लाज़िम है किसी को तकलीफ़ न दी जावे मगर वहीं तक जहांतक उसको समर्थ हो माता को उसके बच्चे की वजह से नुक्सान न पहुँचाया जाये और न उसको जिसका बच्चा है (यानी बापको) उसके बच्चे की वजहसे किसी तरह का नुक्सान (पहुँचाया जाय) और (दूध पिलाने का खाना खुराक जैसा असल बाप पर) वैसा (उसके) वारिस पर-फिर अगर (वक्त

---

(१) इद्दत उस मुद्दत को कहते हैं जिसमें औरत तलाक़ देने के बाद वा उसका शौहर मरजाने के बाद उस मियाद के अन्दर निकाह नहीं करसक्ती।

से पहिले माता पिता) दोनों अपनी मर्ज़ीसे और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहें तो उनपर कुछ पाप नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को (किसी दाया से) दूध पिलवाना चाहो तो तुमपर कुछ पाप नहीं वशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ (माओं को) देना किया था उनके हवाले करो और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३३) और तुममें जो लोग मरजायें और बीबियां छोड मरें तो (औरतों को चाहिये कि) चार महीने दश दिन अपने तईं रोके रहें फिर जब अपनी (इद्दत की) मुद्दत पूरी करले तो जायज़ तौर पर जो कुछ अपने हक़ में करें उसका तुम (मरेके वारिसों) पर कुछ पाप नहीं और तुम लोग जो कुछ करते हो अल्लाह को उस की खबर है। (२३४) और अगर तुम किसी बात की आड में औरतों को निकाह का सदेशा भेजो या अपने दिलोंमें छिपाये रक्खो तो इसमें (भी) तुम पर कुछ पाप नहीं अल्लाह को मालूम है कि तुम इनका ध्यान करोगे, मगर इनसे निकाह का ठहराव तो चुपके से भी न करना, हां जायज़, तौर पर बात कह दो। और जब तक मियाद मुक़र्रर (यानी इद्दत) समाप्त न हो जाये निकाह के बन्धनकी बात पक्की न कर बैठना और जाने रहो कि जोकुछ तुम्हारे जी में है अल्लाह जानताहै तो उससे डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह बख्शने वाला और बरदास्त करनेवाला है। (२३५) [रुकू-३१] अगर तुमने औरतों के साथ सहवास (हमबिस्तरी) न किया हो और उन का मिहर न ठहराया हो इससे पहिले उनको तलाक दे दो तो उसमें तुम पर कोई पापनहीं। हां ऐसी औरतों के साथ कुछ सलूक करो। सामर्थवाले और बे सामर्थ वाले अपनी हैसियत के लायक़ उनका खर्च करदें जैसा खर्च का दस्तूर है और भले आदमियों पर लाज़िम है। (२३६) और अगर सहवास (हमबिस्तर) होने से पहिले

और मिहर ठहराने के बाद औरतों को तलाक़ दे दो। तो जो कुछ तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिये मगर यह कि स्त्रियां छोड बैठें या (मर्द) जिसके हाथ से निकाह के क़रार का है वह (अपना हक़) छोड़दे-(यानी पूरा मिहर देने पर राज़ी हो) और अपना हक़ छोड दे तो यह परहेजगारी से ज़ियादह करीब है और अपने बीच कृपा रखना मत भूलो. जो करते हो अल्लाह उसको देख रहा है (२३७) (मुसल्मानो[1]) नमाज़ों की और बीच की नमाज़ की ताक़ीद रक्खो और अल्लाहके आगे अदबसे खड़े हुआकरो (२३८) फिर अगर तुमको डर हो तो पैदल या सवार (जैसी हालतहो) नमाज़ पढ़लो फिर जब तुम निश्चिन्त होजाओ तो जिस तरह अल्लाह ने तुमको (पैग़म्बर की मार्फ़त नमाज़ का तरीका) सिखाया जो तुम पहिले नहीं जानते थे उसी तरीक़े से अल्लाह को याद करो। (२३९) और जो लोग तुम में से मरजायें और बीवियां छोड़ मरे तो अपनी बीवियों के हक़ में एक बरस तक के बर्ताव (यानी खाना व ख़ुराक) और (घरसे) न निकालने की वसीयत कर मरें फिर अगर औरतें (खुदही घरसे) निकल खड़ी हों तो जायज़ बातों में से जो कुछ अपने हक़ में करें उसका तुमपर कुछ पाप नहीं और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (२४०) और जिन औरतों को तलाक़ दीजाय उनके साथ (मिहर के अलावह भी) दस्तूर के मुताबिक़ (जोड़े वग़ैरह से कुछ) सलूक करना परहेज़गारों को मुनासिब है। (२४१) इसी तरह अल्लाह तुम लोगों के लिये अपने हुक्मोंको खोल खोलकर बयानफ़र्माता है ताकि तुम समझो। (२४२) (रुकू-३२) (हे पैग़म्बर) क्या तुमने उन लोगों पर नज़र नहीं की जो अपने घरों से मौत के डर के मारे निकल खड़े हुए और वह हज़ारोंही थे

१-मिहर=उस क़रार को कहते हैं जो निकाह के वक्त सोहर औरत के साथ जायदाद व नक़द रुपया देने का करता है।

फ़िर खुदा ने उनको हुक्म दिया कि मरजाओ फिर (खुदा ने) उनको जिला उठाया, वेशक अल्लाह तो लोगों पर कृपालु है लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुजार (कृतज्ञ) नही होते। (२४३) और खुदा की राह में लड़ो और जानेरहो कि अल्लाह सुनता और जानता है। (२४४) कोई है जो खुदा को खुशदिल से क़र्ज़ दे कि खुदा उस के क़र्ज़ को उसके लिये कई गुना बढ़ादेगा। और अल्लाहही रक और राव बनाता है और उसी की तरफ़ तुम (सब) को लौटकर जाना है। (२४५) (हे पैग़म्बर) क्या तुमने इज़राईल के बेटों के सरदारों पर नज़र नही की कि एक समय उन्हों ने मूसा के बाद अपने पैग़म्बर (समोयील) से दरख्वास्त की थी कि हमारे लिये एक बादशाह मुक़र्रर करो कि हम (उसके सहारे से) अल्लाह की राह में जहाद करें (पैग़म्बर ने) कहा अगर तुमपर जहाद क़र्ज़ किया जाये तो तुमसे कुछ दूर नही कि तुम न लड़ो। बोले कि हम अपने घरों और बालबच्चों से तो निकाले जाचुके तो हमारे लिये अब कौनसा उज्र है कि खुदा की राह में न लड़ें फिर जब उनपर जहाद फ़र्ज किया गया तो उनमें से चन्द गिने हुओं के सिवाय बाक़ी सब फिर बैठे और अल्लाह तो अपराधियों को खूब जानता है। (२४६) और उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तालूत को तुम्हारा बादशाह नियत किया है (उसपर) कहने लगे कि उसको हमपर क्योंकर हुकूमत मिलसक्ती है हालांकि इससे तो हुकूमत के हमही जियादह हक़दार हैं कि उसको तो माल से भी कुछ ऐसी अमीरी नसीब नहीं। (पैग़म्बर ने) कहाकि अल्लाह ने तुमपर उसीको पसन्द फ़र्माया है कि इल्म और जिस्म में उसको बढ़ती दी है और अल्लाह अपना मुल्क जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुंजाइश वाला जानकार है। (२४७) उनके पैग़म्बर ने उनसे कहाकि तालूत के बादशाह होने की यह निशानी है कि वह सन्दूक जिसमें तुम्हारे

पालनकर्ता की तसल्ली (यानी तौरात) है और मूसा और हारून जो छोड़ मरे हैं उनमें की बची खुची चीजें हैं तुम्हारे पास आजांयगी (और) फ़िरिश्ते उसको उठालावेंगे-अगर तुम ईमान रखते हो तो इसी एक बात तुम्हारे लिये निशानी है। (२४८) (रुकू ३३) फिर जब तालूत फ़ौजों समेत चला तो कहा कि (रास्ते में एक नहर पड़ेगी) अल्लाह उस नहर से तुम्हारी जांच करनेवाला है तो (जो अघाकर) उसका पानी पीलेवेगा वह हमारा नहीं और जो उसको नहीं पीवेगा वह हमारा है मगर (हां) अपने हाथ से कोई एक (आध) चिल्लू भरले पस उन लोगों में से गिने हुए चन्द के सिवाय सभो ने तो उस (नहर) में से (अघाकर) पीलिया फिर जब तालूत और ईमान वाले जो उसके साथथे नहरके पार होगये तो (जिन लोगों ने तालूत का हुक्म न मानाथा) कहने लगे कि हममें तो जालूत और उसके लशकर से मुकाबिला करने का आज सामर्थ नहीं है (उसपर) वह लोग जिन को यक़ीन था कि उनको खुदा के सामने हाज़िर होना है बोल उठे अकसर अल्लाह के हुक्म से थोड़ी जमात ने बड़ी जमात पर जीत पाई है और अल्लाह संतोषियों का साथी है। (२४९) और जब जालूत और उसकी फ़ौजों के मुक़ाबिले में आये तो दुआ की कि हे हमारे पालनकर्त्ता हम को पूरा संतोष दे और हमारे पांव जमाये रख और काफ़िरों की जमात पर हमको जय दे। (२५०) उसमें फिर उन लोगों ने अल्लाह के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया और जालूत को दाऊद ने क़त्ल किया और उनको खुदा ने राज्य दिया और अक्ल और जो चाहा उनको सिखा दिया और अगर अल्लाह बाज़ लोगों के ज़रिये से बाज़ को न हटाता रहे तो मुल्क उलट पलट होजाये लेकिन अल्लाह संसार के लोगों पर दयालु है (२५१) (हे पैग़म्बर) यह अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम को सचाई से पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं और बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो। (२५२) ॥

सूरे बक़र—तीसरा पारा।
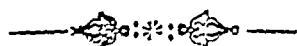
तिलकर रुसूल (यह पैग़म्बर)

इन पैग़म्बरों में से हमने किसी पर किसी को प्रधानता दी। इनमें से कोई तो ऐसे हैं जिनके साथ अल्लाहने वार्तालापकी और किसीके दर्जे ऊंचे किये और मरीयमके बेटे ईसाको हमने खुलेरचमत्कार दिये और शुद्धात्मासे उनको पुष्टिताईकी और अगर खुदा चाहता तो जो लोग उनके बाद हुए उनके पास खुले हुए निशान आये पीछे एक दूसरेसे न लड़ते लेकिन लोगोंने एक दूसरे में भेद डाला तो इनमें से कोई वह थे जो ईमान लाये और कोई वह थे जो क़ाफिर (इन्कारी) हुए और अगर खुदा चाहता (यहलोग) आपस में न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहता है करता है। (२५२) [रुकू २४] हे ईमानवालो उस दिन (प्रलय) के आने से पहिले हमारे दिये हुए में से खर्च करदो। जिसमें क्रय विक्रय (खरीद फरोख्त) न होगा न यारी होगी और न सिफ़ारिश होगी और जो इन्कारी है वहलोग अन्यायी हैं। (२५४) अल्लाह है उसके सिवा कोई पूजित नहीं। जीवित सम्भालने वाला, न उसको ऊंघआती है और न नींद जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है उसी का है। कौन है जो उसकी इजाजत के वग़ैर उसके सामने सिफ़ारिश करे। जो कुछ लोगों के सामने और पीछे है उसको मालूम है और लोग उसकी मालूमात में से किसी पर शक्तिसाली नहीं हो सकते सिवाय उसके जितनी वह चाहे उस का राज्य आकाश और जमीन में है और इन दोनों की रक्षा उसपर भारी नहीं और वह महान और सर्वोपरि है। (२५५) दीन में जबर-दस्ती नहीं, भूल और सुधार जाहिर हो चुकीहै कि जो झूठे पूजितों को न माने और अल्लाह पर ईमान लावे तो उसने मज़बूत रस्सी

पकड रक्खी है जो टूटने वाली नही और अल्लाह सुनता जानता है । (२५६) अल्लाह ईमानवालो का (मददगार) साथी है कि उनको अन्धेरो से निकाल कर रोशनी मे लाता है और जो लोग काफ़िर है उनके साथी शैतान है कि उनको रोशनी से निकाल कर अन्धेरो मे ढकेलते है यही लोग नरकवासी हैं वह हमेशा नरक ही मे रहेंगे। (२५७) (रुकू २५) (हे पैग़म्बर) क्या तुमने उस शख्स को नही देखा कि जो सिर्फ इस वजह से कि खुदा ने उसको राज्य दे रक्खा था इब्राहीम से उनके पालनकर्त्ता के बारे मे विवाद करने लगा जब इब्राहीम ने (उससे) कहा कि मेरा पालनकर्त्ता तो वह है जो जिलाता और मारता है (इसपर) वह कहने लगा कि मैं भी जिलाता और मारता हूं इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह तो सूर्य को पूर्व से निकालता है आप उसको पश्चिम से निकाले इसपर वह काफ़िर चुप रह गया और अल्लाह अन्यायियो को शिक्षा नही देता। (२५८) या जैसे वह शख्स जो एक उजडी बस्ती से होकर गुजरा इसे देखकर आश्चर्य से कहने लगा कि अल्लाह इस बस्ती को इसके उजड़े पीछे कैसे आबाद करेगा-इस पर अल्लाह ने उनको सौवर्ष तक मुर्दा रक्खा फिर उनको जिला उठाया (और) पूछा (तुम इस हालत मे) कितनी मुद्दत रहे। कहा एक दिन रहा हूंगा या एक दिनसे भी कम फर्माया (नही) बल्कि तुम सौवर्ष (इसी हालत मे) रहे। अब अपने खाने और अपने पीने की चीजो को देखो कि कोई बुसी तक नही और अपने गधे की तरफ़ (भी) नज़र करो (जिसपर तुम सवार थे) और तुम्हारे (इतने दिनो मुर्दा रखने और फिर जिला उठाने से) मतलब यह है कि हम तुम लोगो के लिये (अपनी कुदरत का) एक नमूना बनावे और हड्डियो की तरफ़ नजर करो कि हम कैसे उनको (जोड़ जाड़ कर) उनको (ढांच बना) खडा करते फिर उनपर मांस चढ़ाते हैं फिर जब उन पर (ईश्वर की शक्ति क.

यह चमत्कार) ज़ाहिर हुआ तो बोल उठे कि अब मैं विश्वास करता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्ति शाली है । (२५९) और जब इब्राहीम ने (खुदा से) निवेदन किया कि हे मेरे पालक मुझको दिखा कि तू मुर्दों को कैसे जिलाता है । खुदा ने फ़र्माया क्या तुमको इसका यक़ीन नही । अर्ज़ किया, क्यों नही । मगर मैं अपने दिलकी तसल्ली चाहताहूँ—फ़र्माया तो (अच्छा) चार परिन्द लो और उनको अपने पास मँगाओ फिर एक २ पहाड़ी पर उनका एक २ टुकडा रखदो फिर उनको बुलाओ तो वह (आप से आप) तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे और जाने रहो । अल्लाह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है (२६०) (रुकू–३५) जो लोग अपने माल खुदा की राह में खर्च करते हैं उनको (खैरात की) मिसाल उस दाने कैसी है जिससे सातबाले उगती हैं हर बाल मे सौ दाने और अल्लाह बढती देता है जिसको चाहता है और अल्लाह (बड़ी) गुंजाइश वाला जानकार है । (२६१) जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते है फिर खर्च किये पीछे (किसी तरह का) अहसान नही जताते और न तकलीफ़ देते हैं उनको उनका पुण्य उन के पालन कर्त्ता के यहां मिलैगा और न तो उन पर भय होगा और न वह उदासीन होगे (२६२) भली बात बोलना से और क्षमा करना उस पुण्यसे बहुत बढकरहै जिसके पीछे दुःख हो और अल्लाह निर्भय और सहनशालहै (२६३) हे ईमानवालो ! अपनी खैरात को अहसान जताने और नुक़सान देने से उस शख्स की तरह अकार्थ मत करो जो अपना माल लोगो के दिखावे के लिये खर्च करता है और अल्लाह और क़यामत का यक़ीन नहीं रखता तो उसको (खैरात की) मिसाल चट्टान कैसी है कि उसपर मिट्टी (पड़ी) है फिर उसपर ज़ोर का मेह बर्षा और उसको सपाट करगया उनको अपनी कमाई

१–दिखलावे के लिये दान देने वालो ॥

कुछ हाथ नहीं लगती और अल्लाह काफ़िरों को उपदेश नहीं दिया करता। (२६४) और जो लोग खुदाको खुशीके लिये और अपनी नियत साबित रखकर अपने माल खर्च करते हैं उनकी मिसाल एक बाग़ कैसी है जो ऊंचे पर (वाक़े) है उसपर जोर का मेह पड़े तो दूना फललाये और अगर उसपर ज़ोर का मेह न पडा तो (उसको) हलकी फ़ुआर (भी बस करती है) और तुम लोग जो कुछ भी करते हो अल्लाह देख रहा है। (२६५) भला तुममें से कोई भी इस बात को पसन्द करेगा कि खजूरों और अंगूरों का अपना एक बाग़ हो उसके नीचे नहरें बहरही हों। हर तरह के फल उसको वहां हासिल हों और वह बुड्ढा होजावे और उसके (छोटे २) कमज़ोर बच्चे हों अब उस बाग़ पर एक हवा का डंडूरा चले जिस में आग (भरी) हो जो उसबाग़ को जलादे इसी तरह अल्लाह (अपने) हुक्मों को खोल २ कर तुम लोगों से बयान करता है ताकि तुम विचार करो (२६६) (रुकू ३७) हे ईमानवालो (खुदा की राह में) अच्छी चीज़ों में से जो तुमने आप कमाई की हों और हमने तुम्हारे लिये जमीन से पैदा की हों खर्च करो और खराब चीज़ के देने का इरादा भी न करना कि उसमें से खर्च करने लगो हालांकि तुम उसको न लो और अल्लाह बेपरवाह गुणों का घर है। (२६७) शैतान तुम को तंगी से डराता और निर्लज्जता (बेशर्मी) की तरफ़ लगाता है और अल्लाह अपनी तरफ़ से क्षमा और कृपा का तुमको वचन देता है और अल्लाह गुंजाइशवाला और जानकार है। (२६८) जिसको चाहता है समझ देता है और जिसको समझ दी गई। बेशक उसने बड़ी दौलत पाई और शिक्षा भी वही मानते हैं जो समझदार हैं। (२६९) और जो खर्च भी तुम (खुदा की राह में) उठाओ या (उसके नामको) कोई मन्नत[1] मानो वह सब अल्लाह को

[1] मन्नत—काम पूरा होने के लिये पुण्य करने का मनमें विचार करना।

मालूम है और जो लोग (ग़ैर खुदा को मन्नत वग़ैरह मानकर खुदा का) हक़ मारते हैं (क़यामत के दिन) कोई उनका साथी न होगा (२७०) अगर दान ज़ाहिरा में दो तो वह भी अच्छा और अगर इसको छिपाओ और ज़रूरत वालों को दो तो यह तुम्हारे हक़ में और भी अच्छा है और ऐसा देना तुम्हारे पापों का कफ़ारा[१] होगा और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उससे खबरदार है (२७१) (हे पैग़म्बर) इन लोगों को सीधा मार्ग पर लाना तुम्हारे आधीन नहीं बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर लाता है और तुम लोग माल में से जो कुछ भी खर्चा करोगे सो अपने लिये और तुम तो खुदाही को खुश करने के लिये ख़र्च करते हो और माल में से जो कुछ भी (ख़ैरात के तौर पर) खर्च करोगे तुम को पूरा २ भरदिया जायगा और तुम्हारा हक़ न मारा जायगा । (२७२) उन दीनों को देना चाहिये जो अल्लाह की राह में घिरे बैठे हैं—मुल्क में किसी तरफ़ को जा नहीं सक्ते (जो शख़्स इनके हाल से) बेखबर है इनके न मांगने से इनको मालदार समझता है लेकिन तू इनकी सूरत से इनको साफ़ पहिचान लेगा कि वह लिपट कर लोगों से नहीं मांगते जो कुछ तुम लोग माल में से (खैरात के तौर पर) खर्च करोगे अल्लाह उस को जानता है। (२७३) [रुकू ३८] जो लोग रात और दिन छिपे और जाहिर अपने माल (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं तो उनको पालनकर्त्ता के यहां से बदला मिलैगा और इनको न डर होगा और न वह उदास होंगे। (२७४) जो लोग व्याज खाते हैं (क़यामत के दिन) खड़े नहीं होसकेंगे मगर उस शख़्स कासा खड़ा होना जिसको शैतान ने चपेट से ख़ब्ती (पागल) कर दिया हो यह उनके इस कहने की सज़ा है कि जैसा बेचने का मामला वैसाही व्याज का मामला है हालांकि बेचने को तो अल्लाह ने हलाल (पाक) किया है और (व्याज) सूद को हराम (नापाक

---

(१) कफ़्फ़ारा:—पापों का उतारने (हरने) वाला।

तो जिसके पास उसके पालनकर्ता की तरफ़ से नसीहत पहुंची ब्याज खाना छोडदिया जो पहिले (ले चुका है) वह उसका हुआ और उसका मामला खुदा के हवाले और जो फिर वही काम करैगा तो ऐसेही लोग नरकवासी है और वह हमेशा नरकही मे रहेंगे। (२७५) अल्लाह ब्याज को मिटाता और खैरात को बढाता है। जितने किये को न मानने वाले (नाशुक्राका) है और कहना नही मानते खुदा उनसे राज़ी नही । (२७६) जो लोग ईमान लाये और उन्होने नेक काम किये और नमाज़ पढते और जकात देते रहे उन का बदला उनके पालनकर्त्ता के यहां से मिलैगा और उन पर न डर होगा और न वह उदास होगे। (२७७) हे ईमानवालो ! अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह से डरो और जो सूद बाक़ी है छोड़ बैठो (२७८) और अगर (ऐसा) न करो तो अल्लाह और उसके रसूल से लडने के लिये होशियार होरहो और अगर तौबह करते हो तो अपनी असल रक़म (मूलधन) तुमको मिलैगी और तुम (किसीका) नुकसान न करो और न कोई तुम्हारा नुक़सान करैगा। (२७९) और अगर (कोई) तंगदस्त तुम्हारा कर्ज़दार हो तो अच्छी हालत तक की मुहलत दो और अगर समझो तो तुम्हारे हक में यह जियादा अच्छा है कि उसको (असल क़र्जा भी) छोड दो (२८०) और उसदिन से डरो जबकितुम अल्लाहकी तरफ़ लौटाये जाओगे फिर हर शख्सको उसके किये का पूरा २ बदला दिया जायगा और लोगों पर अन्याय न होगा। (२८१) (रुकू ३६) हे ईमानवालो ! जब तुम एक मियाद मुकर्रर तक उधार का लेन देन करो तो उसको लिख लिया करो और (अगर तुमको लिखना न आता हो तो) तुम्हारे दर्मियान मे कोई लिखनेवाला न्याय के साथ लिखदे और जिम्मसे लिखवाओ तो उस लिखनेवाले को चाहिये कि लिखने से इन्कार न करे जिसतरह खुदाने उसके सिखाया है (उसी

तरह) उसको भी चाहिये कि (वे उज्र) लिखदे और जिसके जिम्मे कर्ज़ निकलेगा (वह दस्तावेज़ का) मतलब बोलता जाय और अल्लाह से डरे वही उसका काम का संभालने वाला है और हक़ मेंसे किसी किस्म की काट छांट न करे जिसके ज़िम्मे कर्ज़ आयद होगा अगर वह बुद्धिहीन हो या कमज़ोर हो या खुद मतलब अदा न कर सक्ता हो तो उसका मुख्तार कार (प्रतिनिधि) न्याय के साथ दस्तावेज़ का मतलब बोलता जाय और अपने लोगों मेंसे जिन लोगों पर तुम्हारा विश्वासहो(ऐसे) दोमर्दों को गवाह करलियाकरो फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें कि उनमें से कोई एक भूल जायगी तो एक दूसरे को याद दिलायेगी और जब गवाह बुलाये जांय तो इन्कार न करें—और मामला मियादी छोटा हो या बडा उस के लिखने में सुस्ती न करो खुदा के नज़दीक बहुत ही मुन्सिफ़ाना है और गवाहों के लिये भी यही तरीक़ा बहुत ठीकहै और ज़ियादह तर विचारने के योग्य है कि तुम शक़ और शुबह न करो मगर सौदा नक़द दाम से हो जिसको तुम हाथों हाथ आपस में लिया दिया करते हो तो उसके न लिखने मे तुम पर कुछ पाप नहीं और जबकि खरीद फ़रोख्त करो तो गवाह कर लिया करो और लेखक को किसी तरह का नुकसान न पहुँचाया जाय और न गवाह को और ऐसा करो तो यह तुम्हारा पापहै और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुमको सिखाता है और अल्लाह सबकुछ जानता है। (२८२) अगर सफर में हो और तुमको कोई लिखने वाला न मिले तो गिरो (बन्धक) पर क़ब्जा रक्खो पस अगर तुम में से, एक का एक विश्वास करे तो जिसपर विश्वास किया गया है (यानी कर्ज़ लेने वाला) उसको चाहिये कर्ज़ देनेवाले की अमानत यानी क़र्ज़ को (पूरा पूरा) अदा कर दे और खुदा से जो उसके काम का बनाने वाला है डरे और गवाही को न छिपाओ और जो उसको छिपाये

गा तो वह दिलका खोटा है और जो कुछ भी तुम लोग करते हो अल्लाह को सब मालूम है (२८३) (रुकू ४०) । जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और जो तुम्हारे दिलमें है अगर उनको ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा फिर जिसको चाहे बख़्से और जिसको चाहे सज़ा दे और अल्लाह हर चीज़ पर शक्ति रखता है (२८४) पैग़म्बर (मोहम्मद) इस किताब को मानते हैं जो उनके पालनकर्त्ता की तरफ से उनपर उतरी है और पैग़म्बर के साथ और मुसल्मान भी सब अल्लाह और उसके फरिश्तो और उसकी किताबों और उसके पैग़म्बरों पर ईमानलाये हम खुदा के पैग़म्बरों में से किसी एक को जुदा नहीं समझते और बोल उठे हमने सुना और माना । हे पालनकर्त्ता तेरी देनी चाहिये और तेरीही तरफ़ लौटकर जाना है । (२८५) अल्लाह किसी शख़्सपर उसकी शक्ति से ज़ियादा बोझ नहीं डालता । जिसने अच्छे काम किये उसका बदला उसी के लिये है जिसने बुरे काम किये उनको (सज़ा भी) उसी के लिये है । हे हमारे पालनकर्त्ता अगर हम भूल जावें या चूकजावें तो हम को न पकड़ और हे हमारे पालनकर्त्ता जो लोग हम से पहिले हो गये हैं उन पर तूने बोझ डाला था वैसा बोझ हम पर न डाल और हे हमारे पालनकर्त्ता इतना बोझ जिस की हमको सामर्थ्य नहीं हमसे न उठवा और हमारे अपराधों को क्षमाकर औ हमारे पापों) को क्षमाकर और हम पर कृपाकर तूही हमारा स्वामी है । हमें काफ़िरों पर मदद दे । (२८६) ॥

——*:——

सूरे आल इमरान।

(इमरान के वंश का अध्याय)

सूरे आल इमरान मदीने में उतरी और उसकी २०० आयतें और २० रुकू हैं।

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मिहर्बान (है) (रुकू १) अलिफ, लाम, मीम, (१) अल्लाह है के सिवाय कोई पूजित नहीं। ज़िन्दा सम्भाल ने वाला (२) उसीने तुमपर यह किताब वाजिब उतारी जो उन (आसमानी किताबों) को तसदीक़ करती है जो उससे पहिले (उतर चुकी) है और उसी ने पहिले लोगों को शिक्षा के लिये तौरात और इंजील उतारी उसी ने (और चीजों को भी) उतारा (जिससे सच झूठ का) भेद (ज़ाहिर होता है) (३) जो लोग खुदा की आयतों से सुन्कर (बाग़ी) हैं बेशक उनको सख़्त सज़ा मिलैगी और अल्लाह ज़बरद-स्त बदला लेने वाला है। (४) अल्लाह से कोई चीज़ ज़मीन में और आस्मानमें छिपी नहीं (५) वही है जो माता के पेट में जैसी चाहता है तुम लोगों की सूरतें बनाता है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। ज़बरदस्त हिकमतवाला है (६) (हे पैग़म्बर) वही है जिसने तुमपर यह किताब उतारी जिसमें से बाज़ आयत पक्की है कि वह असल किताबें है और दूसरी सन्देह में डालनेवाली (कई अर्थ देनेवाली) तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वह तो क़ुरान की उन्हीं सन्देहित आयतों के पीछे पड़े रहते हैं ताकि विद्रोह पैदा करें और उनके असल मतलब का खोज लगावें हालांकि अल्लाह के सिवाय उनका असली मतलब किसी को मालूम नहीं और जो लोग इल्म में बड़ी मजबूती रखते हैं वह तो इतनाही कहकर रहजाते हैं कि

इस पर हमारा ईमान है । सब हमारे पालनकर्त्ता की तरफ से हैं और वही समझते हैं जिनको सूझ है । (७) हे हमारे पालनकर्त्ता ! हम को सीधी राह पर ला पीछे हमारे दिलों को डांवा डोल न कर और अपनी सर्कार से हम को कृपा दे कुछ सन्देह नही कि तू बडा देनेवाला है । (८) हे हमारे पालनकर्त्ता ? तू एक दिन जिस मे सन्देह नही लोगो को इकट्ठा करेहीगा । वेशक अल्लाह वादाखिलाफी नहीं किया करता । (९) [रुकू २] जो लोग काफ़िर हैं अल्लाह के यहां न तो उनके मालही कुछ काम आवेगे और न उनकी औलाद ही और यही नरक का ईन्धन हैं । (१०) (इनकी भी) फिरऔन वाले और उनसे पहिले लोगों कैसी गति होती है कि उन्हों ने आ-यतो को झूठा किया तो अल्लाह ने उनको उनके पापों के बदले धर पकडा और अल्लाह की मार सख़्त है । (११) (हे पैग़म्बर) जो लोग काफिर हैं उनसे कहदो कि कोई दिन जाता है कि तुम हारजाओगे और नरक की तरफ़ हांके जाओगे वह बुरा सामान है । (१२) इन दो गरोहो में तुम्हारे लिये निशानी होचुकी है जो एक दुसरे से गुथगये एक गिरोह तो खुदा की राह मे लड़ता था और दूसरा (गिरोह) काफिरों का था जिनको आंखो देखते मुसलमानोंका गिरोह अपने से दूना दिखलाई दे रहा था और अल्लाह अपनी मदद से जिस को चाहता है मदद देता है इसमे सदेह नही कि जो लोग सूझ रखते है उनके लिये इसमे शिक्षा है । (१३) लोगो को चाही हुई चीजों (मसलन्) बीवियों और बेटियो और सोने चांदी के बड़े २ ढेरो और अच्छे २ घोडो और चौपाओं और खेती के साथ दिल लुभाने वाली भली मालूम होती है (हालांकि) यह (तो) दुनियां की जिन्दगी के समान है और अच्छा टिकाना तो उसी अल्लाह के यहां है । (१४) (हे पैग़म्बरो इन लोगो से) कहो कि मै तुमको इनसे बहुत अच्छी चीज बताऊ वह यह कि जिन लोगो ने परहेज-

यारी अख़्तियार करो। उनके लिये उनके पालनकर्त्ता के यहां बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहरही हैं (और वह) उनमें हमेशा रहेंगे और (बाग़ों) के सिवाय सुथरी (पाक साफ़) बीबियां हैं और खुदाकी प्रसन्नता है और अल्लाह सेवकों को देखरहा है। (१५) वह लोग जो कहते हैं कि हे हमारे पालनकर्त्ता हम ईमान लाये हैं तू हम को हमारे अपराध क्षमाकर और हमको नरक की सज़ा से बचा। (१६) जो संतोषी और सत्यवक्ता और आज्ञाकारी और (खुदा की राह में) खर्च करनेवाले और आखिर रात के वक्तों में क्षमा चाहते हैं। (१७) अल्लाह इस बात की गवाही देताहै कि उसके सिवाय कोई भी पूजित नहीं और फ़िरिश्ते और इलमवाले भी गवाही देते हैं कि वही इन्साफ़ का सम्भालनेवाला है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं ज़बरदस्त हिकमत वालाहै। (१८[*]) दीन तो खुदा के नजदीक यही इस्लाम[१] है और किताबवालों ने जो मालूम होनेके बाद आपस की जिद से भेद डाला और जो शख़्स खुदाकी आयतों से इन्कारी हुआ तो अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती। (१९) (पस हे पैग़म्बर) अगर इसपर भी तुमसे बहसकरें तो कहदो कि मैंने और मेरे मददगारों ने खुदाके आगे अपना शिर झुका दिया और (हे पैग़म्बर) किताब वाले और (अरबके) जाहिलों से कहो कि तुम भी इसलाम मानते हो (या नहीं) पस अगर इस्लाम मानें तो निस्सन्देह सच्चे मार्ग पर आगये और अगर मुँह मोडें तो तेरा जिम्मा पहुँचा देना है और बस और अल्लाह सेवकों को खूब देख रहा है। (२०) (रुकू ३) जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार रखते हैं और व्यर्थ पैग़म्बरों को क़त्ल करते और उन लोगों को (भी) क़त्ल करते जो इन्साफ करने को कहते तो ऐसे लोगों को दुःखदाई सजा की खुशखबरी सुना दो, यही (२१) हैं

---

[१] मुसल्मानी मजहब ॥ [*] (१८) खुदा जब एक दीन से बँधाहो वह सबके दीनों का मालिक कैसे होसक्ता है।

जिनका सम्पूर्ण करा कराया दुनिया और प्रलय (दोनो) से अकार्थ और न कोई उनका मददगार है। (२२) (हे पैग़म्बर) क्या तुमने उन पर दृष्टि नहीं डाली। जिनको किताब में से एक हिस्सा मिला था उनको अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि (वह किताब) उनका झगडा चुका दे। इस पर भी उनमे का एक गिरोह भूल से फिर बैठा है। (२३) यह इसलियेहै कि उनका दावा है कि हम को नरक की अग्नि छुयेगी नहीं और छुयेगी भी तो बस गिनतीके थोडेही दिन और जो झूठीबाते यह करते रहेहैं उसीने इनको इन के दीन में धोखा देरक्खा है। (२४) उसदिन जिस मे कुछ भी शक नहीं कैसी गत बनेगी जब कि हम उन को जमा करेंगे और हर शख्सको। जैसा उसने किया है पूरा २ भर दिया जायगा और लोगों पर जुल्म नही होगा। (२५) (हे पैग़म्बर) तू कह कि खुदा मुल्क का मालिक है जिसको चाहे राज्यदे और जिससे चाहे राज्य छीनले और तू जिसको चाहे इज्जतदे और जिसे चाहे बर्बादी दे कुशल तेरेही हाथ में है निस्सन्देह तू हर चीज पर सर्वशक्तिमान है। (२६) तूही रातको दिन में शामिल करदे और तू दिन को रात मे शामिल करदे और तू बेजान से जानदार और जानदार से बेजान करदे और जिसको चाहे बे हिसाब रोज़ी दे। (२७) मुसल्मानों को चाहिये कि मुसल्मानोको छोडकर काफिरो को अपना मित्र न बनावें और जो ऐसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नही मगर किसी तरह पर उन से बचना चाहो तो जायज है और अल्लाह तुमको अपनी ज़ात से डराता है और अल्लाही की तरफ़ जाना है। (२८) (हे पैग़म्बरो! इन लोगों से) कहदो कि जो कुछ तुम्हारे दिलो मे है उसे छिपाओ या उसे ज़ाहिर करो वह अल्लाह को मालूम है और जो कुछ अस्मानो में और जो कुछ जमीन में है सब जानता है और अल्लाह हरचीज़ पर शक्तिसाली है। (२९) जिस दिन हर शख्स अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने

पावेगा और विनती करेगा कि मुझमें और उसमें बड़ा काल होता और अल्लाह तुमको अपने से डराता है और अल्लाह बन्दों पर बड़ो कृपा रखता है। (३०) (रुकू ४) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कह दो कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे साथी हो कि अल्लाह तुमको दोस्त रक्खे और तुमको तुम्हारे पाप क्षमाकरदे और अल्लाह क्षमा करने वाला मिहर्बानहै। (३१) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कह दो कि अल्लाह और पैग़म्बर की आज्ञा उठाओ फिर अगर न मानें तो अल्लाह हुक्म न माननेवालों को पसन्द नहीं करता (३२) अल्लाहने दुनिया जहान के लोगो पर आदम और नूह और इब्राहीम का वंश और इमरान के खानदानको चुन लिया है। (३३) (यह लोग) एक दूसरे की सन्तान (औलाद) हैं और अल्लाह सुनता जानता है। (३४) एक वक्त था कि इमरान की बीबी ने अर्ज़ किया कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरे पेट मे जो (बच्चा) है उसको मैं आज़ाद करके तेरी भेट करती हूं तू मेरी तरफ़ से क़बूल कर तू सुनता जानता है। (३५) फिर जब उन्होने बेटी जनी और अल्लाह को खूब मालूम था कि उन्हों ने किस रुतबे की (बेटी) जनी है तो कहने लगी कि हे मेरे पालनकर्त्ता मैंने तो यह लड़की जनी है और लडका लडकी की तरह नही होता और मैंने इसका नाम मरीयम रक्खा है और मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान फटकारे हुए से तेरी शरण (पनाह) में देती हूं। (३६) उनके पालनकर्त्ता ने, मरीयम को खुशी से क़बूल फर्मा लिया और उसको खूब अच्छा उठाया और ज़करीया को उनका रक्षक बनाया जब जब ज़करीया मरीयम के पास कोठरी मे जाता तो मरीयम के पास खाने को चीज़ मौजूद पाता (एक दिन ज़करिया ने) पूछा कि हे मरीयम यह तुम्हारे पास खाना कहां से आता है (मरीयम ने) कहा यह खुदा के यहां से आता है अल्लाह जिसको चाहता है बे हिसाब रोज़ी देता है। (३७

उसीदम जकरिया ने अपने पालनकर्त्ता से दुआ की (और) कहाकि हे मेरे पालनकर्त्ता अपने यहां से मुझको (भी) अच्छी औलाद दे कि तू (सबकी) दुआएं सुनता है (३८) अभी जकरिया कोठे में खड़े दुआही मांग रहा था कि उनको फिरिश्तों ने आवाज़दी कि खुदा तुमको (एक पुत्र) यहिया (के पैदा होने) की खुशखबरी देता है और वह खुदा के हुक्म से मसीह की तसदीक़ करेंगे और पेशवा होंगे और औरतों की संगत से रुकेरहेंगे और नेकों मेंसे पैग़म्बर होंगे। (३६) (जकरियाने) कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता ! मेरे कैसे लड़का होसक्ता है और मुझपर बुढ़ापा आचुका है और मेरी बीवी बांझ है (अल्लाह ने) फर्माया कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता। है (४०) (ज़करियाने) अर्ज़ किया कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरे (इतमीनान के) लिये कोई निशानी दे फ़र्माया निशान जो तुम मांगते हो यह है कि तू तीन दिन तक लोगों से बात न करसकेगा सिर्फ इशारा करैगा और सुबह और शाम अपने पालनकर्त्ता की माला फेरता रह । (४१) [रुकू ५] और जब फिरिश्तो ने कहा हे मरीयम! तुम को अल्लाह ने पसन्द किया और तुम को पाक साफ़ रक्खा और तुमको दुनियां जहान की स्त्रियों पर चुना । (४२) हे मरीयम ! अपने पालनकर्त्ता के हुक्मों को मानती रहो और शिर झुकाया करो और रुकूअ करनेवालों (नमाज़ में झुकनेवालों) के साथ रुकूअ में झुकती रहो। (४३) यह छिपी हुई खबरें हैं जो हम तुम को संदेशों के ज़रियेसे पहुँचाते हैं (हे पैग़म्बर) न तो तुम उनके पास उस वक्त थे जब वह लोग अपने क़लम (नदी में) डालरहे थे कि कौन मरीयम का पालनेवाला होगा और तुम उनके पास मौजूद न थे जबकि वह आपस में झगड़ रहे थे (४४) जब फिरश्तों ने कहा कि हे मरीयम खुदा तुम को अपने उस हुक्मकी खुशखबरी देता है उसका नाम होगा। ईसामसीह मरीयम का बेटा—दुनियां

और परलोक (दोनों) में इज्ज़त वाला और (खुदा के) नज़दीकी बन्दों में से होगा। (४५) और झूले में और बड़ी उम्र का होकर लोगों के साथ बात चीत करेगा और नेक बन्दों में से होगा (४६) वह कहने लगी कि हे पालनकर्त्ता मेरे कैसे लड़का होसक्ता है हालां कि मुझ को तो किसी मर्द ने छुआ तक नहीं (अल्लाह ने) फर्माया इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे फर्मा देता है कि हो और वह होजाता है। (४७) और खुदा ईसा को असमान की किताब और अक्ल की बातें और तौरात और इन्जील सिखा देगा और याकूब के बेटों की तरफ़ पैग़म्बर होगा मैं तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से तुम्हारे पास निशानियां लेकर आया हूं कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षीकी शक्ल बनाकर फिर उसमें फूंक मारदूं और वह खुदा के हुक्म से उडनेलगे और खुदाही के हुक्म से जन्मके अन्धों और कोढियों को भला चंगा और मुर्दों को जिन्दा करता हूं और जो कुछ तुम खाकर आओ वह और जो कुछ अपने घरों में सैंत रखा है तुमको बतादूं अगर तुममें ईमान है तो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये निशानी है (४८) और तौरात जो मेरे समय में मौजूद है मैं उसकी तसदीक़ करताहूं और एक ग़रज यह भी है कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम(नाजायज़) हैं तुम्हारे लिये हलाल (जायज) करदूं और मैं तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से निशानियां (यानी चमत्कार) लेकर तुम्हारे पास आया हूं तुम खुदा से डरो और मेरा कहा मानो (४९) बेशक अल्लाह मेरा पालनकर्त्ता और तुम्हारा पालनकर्त्ता है तो उसी की पूजा करो यही सीधी राह है। (५०) और जब ईसा ने यहूद (याकूब के बेटों) की इन्कारी देखी तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करे। हव्वारी[१] बोले कि हम अल्लाह के तरफदार हैं हम

---

(१) हव्वारी वह लोग कहलाते हैं जो हर पैगम्बर के साथ रहते हैं॥

अल्लाह पर ईमान लाये और तू गवाह हो कि हम माननेवाले हैं।
(५१) हे हमारे पालनकर्त्ता (इंजील) जो तूने उतारी है हम उस पर ईमान लाये और हमने पैग़म्बर का साथ दिया। तू हमको गवाहों में लिख रख। (५२) और यहूद ने (ईसा से) मकर किया और अल्लाहने मकर किया और अल्लाह मक्कारोंमें अच्छा मक्कारहै। (५३) (रुकू ६)
अल्लाह ने कहा हे ईसा दुनियां में तुम्हारे रहने की मुद्दत पूरी करके हम तुमको अपनी तरफ़ उठा लेंगे और काफ़िरो से तुमको पाक करेंगे और जिन लोगो ने तुम्हारी पैरवी की है उनको क़यामत के दिन तक काफ़िरो पर जबरदस्त रक्खेंगे फिर तुमको हमारी तरफ़ लौटकर आना है तो जिन बातों में तुम भेद डालते थे हम उनमें तुम्हारे दर्मियान फैसला कर देवेंगे। (५४) तो जिन्होंने (तुम्हारी पैग़म्बरी से) इन्कार किया उनको तो दुनियां और परलोक (दोनों) में बड़ी सख्त मार देवेंगे और कोई उनका साथी न होगा। (५५) और वह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये तो ख़ुदा उनको पूरा बदला देगा और अल्लाह अन्यायियोंको पसंद नहीं करता। (५६) (हे पैग़म्बर) यह जो हम तुमको पढ पढ़ कर सुना रहे हैं ख़ुदा की आयतें और जंचे तुले ज़िक्र हैं। (५७) अल्लाह के यहां जैसे आदम वैसे ईसा (कि ख़ुदाने) मिट्टी से आदम को बनाकर उसको हुक्म दिया कि हो और वह होगया। (५८) (हे पैग़म्बर) सच तो तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से है तो कहीं तुमभी शक करने वालो में से न हो जाना फिर जब तुमको हकीक़त मालूम हो चुकी उसके बाद भी तुम से उनके बारे में कोई बहस करने लगे तो कहो कि आओ हम अपने बेटो को बुलावें और तुम अपने बेटो को (बुलाओ) और हम अपनी औरतो को बुलाये और तुमभी अपनी औरतो को (बुलाओ) और हम अपने तईं और तुम अपने तईं (शरीक)

* (५३) " व मकरू व मकरल्लाह वल्लाहो ख़ैरुल माकिरीन " ।

करो फिर हम सब मिलकर खुदा के सामने गिड़गिड़ायें और झूठों पर खुदा की लानत करें।(५९) (हे पैग़म्बर) बेशक़ यही बयान सच्चा है और अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं और बेशक अल्लाह ज़बरदस्त, हिक़मत वाला है। (६०) इस पर अगर भाग खड़े हो तो अल्लाह झगड़ालुओं से खूब वाकिफ़ है । (६१) (रुकू ७) कहो कि हे किताब वालो ! आओ ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान में एकसां है कि खुदा के सिवाय किसी की पूजा न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहरावें और अल्लाह के सिवाय हम में से कोई किसी को मालिक न समझे फिर अगर मुंह न मोड़ें तो कह दो कि तुम इस बात के गवाह रहो कि हम तो मानते हैं। (६३)हे किताब वालो ! इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। तौरात और इन्जील तो उनके बाद उतरी। क्या तुम नहीं समझते(६४)सुनो जी तुम लोगोंने ऐसी बातों में झगड़ा किया जिनकी बाबत तुमको खबर थी मगर जिसकी बाबत तुमको इल्म नहीं उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (६५) इब्राहीम न यहूदी थे और न ईसाई बल्कि हमारे एक आज्ञाकारी सेवक थे और मुशरिकों (खुदा का शरीक़ करने वाले) में से न थे। (६६) लोगों में जिन्होंने इब्राहीम की पैरवी की और ये पैग़म्बर और जो ईमान लाये इनका इब्राहीम से जियादा सम्बन्ध है और अल्लाह तो ईमान लानेवालों का दोस्त है (६७) किताब वालों में से एक गरोह तो यह चाहता है कि किसी तरह तुमको भटका दे हालांकि अपने ही तईं भटकते हैं और नहीं समझते। (६८) हे किताबवालो ! अल्लाह की आयतोंसे क्यों इन्कार करते हो हालांकि तुम क़ायल हो। (६९) हे किताबवालो ! क्यों सच में झूठ को मिलाते हो और सच को छिपाते हो हालांकि तुम जानतेहो। (७०) (रुकू ८)और किताबवालों मेंसे एक गिरोह समझाता

है कि मुसलमानों पर जो किताब उतरी है अव्वल दिन उस पर ईमान लाओ और आख़िर रोज़ इन्कार कर दिया करो शायद यह भी फिरजावें । (७१) और जो तुम्हारे दीनको पैरवीकरै उसके सिवाय दूसरे का एतबार न करो कहो कि उपदेश तो वही है जो अल्लाह उपदेश देताहै जैसातुमको दियागयाहै वैसाही किसी और को दियाजाय या दूसरे लोग खुदाके यहां तुमसे झगड़ें कहो कि बड़ाई तो अल्लाह ही के हाथमे है जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ो गुन्जाइशवाला (और सब कुछ) जानता है । (७२) जिसको चाहे अपनी कृपा के लिये खासकर ले और अल्लाह की दया बडी है । (७३) और किताब वालों मे से कुछ ऐसे है कि अगर उनके पास नक़द रुपये का ढेर अमानत रखवादो तो तुम्हारे हवाले करैं और उनमें से कुछ ऐसे हैं कि एक अशर्फी उनके पास अमानत रखवा दो तो वह तुमको वापिस न दे जब तक हरवक्त (तक़ाज़े के लिये) उनपर खड़े न रहो यह इससे कि वह कहते हैं कि जाहिलों के हक़ का हम पर पाप नहीं है और जान बूझकर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं । (७४) क्यों नहीं जो शख़्स अपना इक़रार पूरा करे और बचे तो अल्लाह बचने-वालों को दोस्त रखता है । (७५) जो लोग खुदा के इक़रार और अपनी क़िस्मो के बदले थोडा बदला लेलेते हैं यही लोग हैं जिनका प्रलय मे कुछ फ़ायदा नहीं और क़यामत के दिन खुदा इनसे बात भी तो नही करेगा और न इनकी तरफ़ देखेगा और न इनको पाक करैगा और इनके लिये दुःखदाई सज़ा है । (७६) और इन्ही मे एक पन्थ है जो किताब पढ़ते वक्त अपनी जबान को मरोड़ते है ताकि तुम समझो कि वह किताब का भाग है हालांकि वह किताब का हिस्सा नहीं और कहते है कि यह अल्लाह के यहां से है हालांकि यह अल्लाह के यहां से नही और जान बूझ कर अल्लाह पर झूट बोलते है । (७७) किसी मनुष्य को मुनासिब नही कि खुदा उसको

किताब और अक़्ल और पैग़म्बरी दे–और वह लोगों से कहनेलगे कि खुदा को छोड़कर मेरे सेवक बनो, वल्कि खुदा के पूजक होकर रहो जैसे कि तुम लोग किताव पढ़ाते रहेहो और जैसे कि तुम पढ़ते रहे हो (७८) और वह तुम से नहीं कहैगा कि फिरिश्तों और पैग़म्बरों को खुदा मानो–तुमतो इस्लाम मानचुके हो और वह इसके बाद क्या तुम्हें इन्कार करनेको कहैगा (७६) [रुकू ६] और जब कि अल्लाह ने पैग़म्बरो से प्रतिज्ञा की कि हमने जो तुमको किताब और बुद्धि दी है फिर कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास आयेगा जो तुम्हारे पासहै उसको तसदीक़ करैगा तो देखो ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना फ़र्माया क्या तुमने इक़रारकर लिया ? और इन बातों पर मेरा ज़िम्मा लिया सब पैग़म्बर बोले हम इक़रार करतेहैं फ़र्माया अच्छा तो गवाह रहो और मैं तुम्हारेसाथ गवाहों मेंसे हूं । (८०) तो इस पीछे जो कोई फिर जावे तो वही लोग बे हुक्महैं (८१) क्या यह लोग अल्लाहके दीन के सिवाय किसी और दीन की तलाश में हैं हालांकि जो आस्मानों और ज़मीनमें है खुशी से या ज़ोर से उसी की तरफ़ सबको लौटकर जाना है । (८२) कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और जो किताब हमपर उतरी है उस पर और जो किताब इब्राहीम इस्माइल और इसहाक़ और याकूब और याकूब की औलाद पर उतरी उनपर और मूसा और ईसा और पैग़म्बरों को जो किताबें उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से मिली हम उन में से किसी को जुदा नहीं करते और हम उसीको मानतेहैं। (८३) और जो शख़्स इस्लामके सिवा किसी और दीनको तलाश करै तो खुदा के यहां उसका वह दीन क़बूल नहीं और वह क़यामत में नुक्सान पानेवालों मेंसे होगा (८४) खुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देनेलगा जो ईमान लाये पीछे इन्कार करनेलगे और वह इक़रार कर चुके थे कि पैग़म्बर सच्चा है और उनके पास खुले सबूत भी आचुके और अल्लाह अन्यायियों को

हिदायत नहीं दिया करता (८५) ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि इन पर ख़ुदा की और फ़िरिश्तों की और लोगों की सबकी फटकार (८६) कि उसी में हमेशा रहेंगे न तो इनसे सज़ाही हलकी की जावेगी और न उनको मुहलतही दी जावेगी। (८७) मगर जिन लोगों ने ऐसा किये पीछे तोबा की और सुधार करलिया तो अल्लाह बख़्शनेवाला मिहरबान है। (८८) जो लोग ईमानलाये पीछे फिर बैठे फिर उनको इन्कारी बढ़ती गयी तो ऐसों की तोबा किसी तरह क़बूल नहीं होगी और यही लोग भटके हुए हैं। (८९) वह जो लोग काफ़िर (इन्कारी) हुए और इन्कारी ही की हालत में मरगये उनमें का कोई शख़्स ज़मीन भरकर भी सोना बदलेमें देना चाहे तो हरगिज़ क़बूल नहीं किया जायगा। यही लोग हैं। जिनको दुःख-दाई सज़ा होगी और उनका कोई भी मददगार नहीं होगा।

चौथा पारा।

जब तक तुम अपनी प्यारी चीजों में से दान न करो भलाई हासिल न करोगे और जो तुम दान करते हो अल्लाह को मालूम है (९२) जो चीज़ याक़ूब ने अपने ऊपर हराम करली थी उसको छोड़ कर तौरात के उतरने से पहिले खाने की सब चीज़ें याक़ब के बेटों के लिये हलाल थीं कहो कि अगर तुम सच्चे होतो तौरात लेआओ और उसको पढ़ो (९३) फिर इस के बाद भी जो कोई अल्लाह पर झूठे लपट लगाये तो ऐसेही लोग अन्यायी हैं (९४) कहो कि अल्लाह ने सच फ़र्माया सो इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो एक के हो रहे थे और मुशरिकों में से न थे (९५) लोगों के लिये

जो पहिला घर ठहराया गया वह यही है जो मक्के में है। बढती वाला और दुनियां जहान के लोगों के लिये (सबब) हिदायत है (९६) इस में बहुत सी खुली हुई निशानियां हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस घर में आ दाखिल हुआ चैन मे आ गया और लोगो पर कर्तव्य है कि खुदा के लिये काबे के घर का हज्ज करे जिसको उसतक पहुँचने की शक्ति हो और जो कृतघ्नता (ना शुक्री) करे तो अल्लाह लोगों की परवा नहीं रखता। (९७) कहो कि हे किताब वालो ? खुदा के कलाम से क्यो इन्कार करते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको देखता है। (९८) कहो कि हे किताब वालो ? जान बूझकर अल्लाह के रास्ते में नुक्स निकाल २ कर ईमान लाने वालों को उस से क्यो रोकते हो और जो कुछ भी तुम कररहे हो अल्लाह उस से ग़ाफ़िल नही। (९९) मुसल्मानो ! अगर तुम किताब वालो के किसी फ़िर्के का भी कहा मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान लाये पीछे तुमको फिर काफ़िर बना छोड़ेंगे। (१००) और तुम कैसे इन्कार करने लगोगे हालांकि अल्लाह की आयतें तुमको पढ पढ़कर सुनाई जाती हैं और उसके रसूल तुम में मौजूद हैं और जो शख्स अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहे तो वह सीधे रास्ते लग गया (१०१) (रुकू ११) हे ईमान वालो ! अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का हक़ है और इस्लाम पर ही मरना (१०२) और, तुम सब मज़बूती से अल्लाह की रस्सी पकड़े रहो और आपस में फूट न डालो और अल्लाह का वह अहसान याद करो जब तुम आपस में (मक्के मदीने वाले)

आयत ९५ ९६ व ९७ मे एक खास मुकाम की इज्जत करना ठहराई गई है क्या यह बुतपरस्ती नहीं है।

दुश्मन थे फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा की और तुम उसकी कृपा से भाई होगये और तुम आग के गड्ढे के किनारे थे फिर उसने तुमको उस से बचा लिया इसी तरह अल्लाह अपनी आज्ञायें तुम से खोल खोलकर बयान करता है ताकि तुम सच्चे मार्ग पर आ जाओ। (१०३) और तुम में एक ऐसा गरोह भी होना चाहिये जो नेक कामों की तरफ़ बुलाये और अच्छे काम को कहे और बुरे कामों से मनाकरे और ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुंचेंगे (१०४) और उन कैसे न बनो जो बिछुड़ गये और अपने पास खुले २ हुक्म आये पीछे आपस में भेद डालने लगे और यही हैं जिनको बड़ी सज़ा होगी। (१०५) जिस दिन मुह सफ़ेद और काले होंगे तो जिनके मुह काले होंगे (उन से कहा जायगा) कि तुम ईमान लाये पीछे काफ़िर हो गये थे तो अपनी इन्कार की सजा में दण्ड भोगो। (१०६) और जिनके मुह सफ़ेद अल्लाह की कृपा में होंगे वह उसी में हमेशा रहेंगे। (१०७) यह अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको सच्चाई से पढ़ पढ़कर सुनाते हैं और अल्लाह दुनिया जहांन के लोगों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता। (१०८) और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और कामों की पहुँच खुदाही तक है। (१०९) (रुकू १२) तुम सब उम्मतों (गरोहों) से जो लोगों में पैदा हुई है भले हो कि भली बात का हुक्म करते और बुरी बात से मना करते और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर किताब वाले ईमान ले आते तो उनके हक़ में भला था उनमें से थोड़े ईमान लाये और उनमें अक्सर फिरे हुए है। (११०) दुःख देने के सिवाय वह हरगिज तुमको किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर तुम से लड़ेंगे तो उनको तुम से पीठ फेरतेही

बनपड़ेगी फिर उनको मदद नहीं मिलेगी। (१११) जहां देखो सख्ती उन पर सवार है मगर अल्लाह के ज़रिये से और लोगों के ज़रिये से और खुदा के ग़ज़ब (कोप) में गिरफ्तार और मुहताजी उनके पीछे पड़ी। है यह उसकी सज़ा है कि वह अल्लाह की आयतों से इन्कार रखते थे और पैग़म्बरों को व्यर्थ मार डालते थे और यह न मानने और हद्से बढ़ जाने का कारण था। (११२) किताब वाले एक से नहीं हैं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो रातों को खड़े रहकर खुदा की आयतें पढते और सिजदा (शिर झुकाते) करते हैं। (११३) अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते और अच्छे को कहते और बुरे से मना करते और अच्छे कामों में दौड़ पड़ते हैं और यही भले लोगों में है। (११४) और भलाई किसी तरह का भी करें ऐसा कदापि न होगा कि उनको उस नेकी की क़दर न की जावे और अल्लाह परहेज़गारों से खूब जानकार है। (११५) जो लोग काफ़िर हैं उनके माल और उनकी संतान अल्लाह के यहां हरगिज़ उनके कुछभी काम न आयेगी और यहीं लोग नरक-वासी हैं और यह हमेशा नरक ही में रहेंगे। (११६) दुनिया की इस जिन्दगी में जो कुछ भी यह लोग खर्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा कैसी है जिसमें पाला (बडी सर्दी) हो वह उनलोगों के खेत को जा लगे और बर्बाद कर जो अपनेही लिये ज़ुल्म करते थे और अल्लाह ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने ऊपर आ-पही ज़ुल्म किया करते थे। (११७) हे ईमान वालो! अपने लोग छोड़कर किसी को अपना भेदी मत बनाओ कि यह लोग तुम्हारी खराबी में कुछ उठा नहीं रखना चाहते हैं कि तुमको तकलीफ़ पहुँचे। दुश्मनी तो इनकी बातों से जाहिर होही चुकी है और जो इनके दिल में है वह बढ़कर है हमने तुमको पते की बातें बतादी हैं अगर तुमको बुद्धि हो। (११८) सुनो जो तुम कुछ ऐसे लोग हो

कि तुम उनसे मित्रता रखते हो और वह तुमसे प्रेम नहीं रखते और तुम खुदा की सब किताबों को मानते हो और जब तुम से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ले आये हैं और जब अकेले होते हैं तो मारे क्रोध के तुमपर अपनी उंगलियां चबाते हैं कहो कि अपने गुस्से में मरो। जो दिलों में है अल्लाह को सब मालूम है। (११९) अगर तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो उनको बुरा लगता है अगर तुमको कोई नुकसान पहुंचे तो उससे खुश होते हैं और अगर तुम संतोष करो और बचे रहो तो उनके (फ़रेब दग़ा) से तुम्हारा कुछभी बिगड़ने का नहीं क्योंकि जो कुछ भी यह कर रहे हैं अल्लाह के वश में है। (१२०) [रुकू १३] और एक वक्त वह भी था कि तुम सुबह (प्रातःकाल) अपने घर से चले मुसल्मानों को लड़ाई के मौकों पर बैठाने लगे और अल्लाह सुनता जानता है (१२१) उसी वक़्त का वाक्य है कि तुममेंसे दो गिरोहों ने साहस तोड़ देना चाहा मगर अल्लाह उनके ऊपर था और मुसलमानों को चाहिये अल्लाहहीपर भरोसा रक्खे(१२२)और जिसवक्त बदरमें अल्लाह तुम्हारी मदद करही चुका था और तुम्हारी कुछ भी हक़ीक़त न थी तो अल्लाह से डरो आश्चर्य नहीं तुम अहसान भी मानो। (१२३) जब कि तुम मुसल्मानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना काफ़ी नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता तीनहज़ार फ़िरिश्ते भेजकर तुम्हारी मदद करै। (१२४) बल्कि अगर तुम मज़बूत बने रहो और बचो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुमपर चढ़ आवें तो तुम्हारा पालनकर्त्ता पांच हज़ार फ़िरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। (१२५) और यह सहायता तो खुदा ने सिर्फ तुम्हारे खुश करने को की और इसलिये कि तुम्हारे दिल इससे संतोष पावें वर्ना सहायता तो अल्लाहही की तरफ़ से है जो बड़ा हिकमत वाला है (१२६) (और यह वादा) इसलिये कि काफ़िरों को काट डाले

या ज़लील करे कि बिना काम हुए वापिस चले जावें। (१२७) तुम्हारा तो कुछभी अधिकार नही चाहे खुदा उनपर दया करे या उनको जियाद्तियों पर नज़र करके उनको सज़ादे । (१२८) और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है जिसको चाहे क्षमा करे जिसको चाहे सज़ादे और अल्लाह बख़शनेवाला मिहरबान हे। (१२९) [रुकू १४] हे ईमान वालो ! दुगुना चौगुना ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो। अजब नहीं तुम मनमाना फल पाओ। (१३०) और नरक से डरते रहो जो काफ़िरों के लिये तय्यार है (१३१) और अल्लाह और रसूल को आज्ञा मानो अजब नही तुमपर दया की जावे। (१३२) और अपने पालनकर्त्ता को बख्शिश और बैकुण्ठ को तरफ लपको जिस (बैकुण्ठ) का फैलाव ज़मीन और आस्मान कैसा है उन परहेज़ गारो के लिये तय्यार हे। (१३३) जो खुशहाली और तंगदस्ती मे खर्च करते और क्रोधको रोकते और लोगो को क्षमा करते है और भलाई करने वाले को अल्लाह चाहता है। (१३४) और वे लोग जब कोई खुला पाप कर बैठे वा अपना नुकसान कर लेते है तो खुदा को याद करके अपने पापो की क्षमा मांगने लगते हैं और खुदा के सिवाय अपराधों को क्षमा करनेवाला कौन है और जो जान बूझ- कर उसपर ज़िद नही करते। (१३५) यही लोग हैं जिनका बदला उनके पालनकर्त्ता की तरफ से बख्शिश है और बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमे हमेशा रहेंगे और काम करने वालो के लिये भी अच्छे फलहैं। (१३६) तुमसे पहिलेभी वाकयात हो गुजरे हैं तो मुल्क मे चलो फिरो और देखो कि जिन लोगों ने झुठलाया उनको कैसा फल मिला। (१३७) यह लोगो का समझाना है ले- किन हिदायत और नसीहत तो उससे वही लोग पकड़ते है जिनके दिल में डर है। (१३८) और हिम्मत न हारो और उदासीन न हो

और अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम्हारी ही जीत होगी। (१३६) अगर तुमको खुड़पञ्च लगी तो उनको भी इसी तरह का खुड़पञ्च लगचुकी है और यह दैव संयोग है जो हमारी आज्ञा से लोगों को दिनके फेर आया करते हैं और यह इस लिये कि खुदा ईमानदारोंको मालूम करे और तुममें से कुछ को शहीद बनाये और खुदा अन्याय को नहीं चाहता। (१४०) और यह मन्ज़ूर था कि अल्लाह मुसल्मानों को शुद्ध करदे और काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। (१४१) क्या तुम इस ख्यालमें हो कि वैकुण्ठमें जा दाखिल होगे हालांकि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जांचा जो तुम में से जहाद (कोशिश) करने वाले हैं और न उन लोगोंको जांचे जो साबित क़दम रहते हैं। (१४२) और तुम तो मौत के आने से पहिले मरने की दुआयें किया करते थे सो अब तो तुमने उसको अपनी आंखों देख लिया। (१४३) और मुहम्मद तो और कुछ नहीं सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं और बस इनसे पहिले भी रसूल हो गुज़रे हैं पस अगर मरजावें या मारेजावें तो क्या तुम अपने उल्टे पैरों फिर लौट जाओगे और जो अपने उल्टे पैरों लौट जायगा वह खुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा और जो लोग शुक्र करते हैं उनको खुदा जल्दी बदला देगा। (१४४) और कोई शख्स बेहुक्म खुदा मर नहीं सकता। काल लिखा हुआ है और जो शख्स दुनिया में बदला चाहता है हम उसको बदला यहीं देदेते हैं और जो क़यामत में बदला चाहता है हम उसको वहीं देंगे और जो लोग शुक्र करते हैं हम उनको जल्दी बदला देंगे। (१४५) और बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं जिनके साथ बहुत खुदाके माननेवाले लड़े तो जो तकलीफ़ उनको अल्लाहके रास्ते में पहुंची उसके वजह से न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न थके और न दबे और अल्लाह जमे रहनेवालों को दोस्त रखता है। (१४६) और सिवाय इसके उनके मुँहसे एक बात भी तो नहीं

या ज़लील करे कि बिना काम हुए वापिस चले जावे। (१२७)
तुम्हारा तो कुछभी अधिकार नही चाहे खुदा उनपर दया करे या
उनको जियादतियो पर नज़र करके उनको सज़ादे । (१२८)
और जो कुछ आस्मानो में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह
ही का है जिसको चाहे क्षमा करे जिसको चाहे सज़ादे और अल्लाह
बख़्शनेवाला मिहरबान है। (१२९) [रुकू १४] हे ईमान वालो !
दुगुना चौगुना ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो। अजब नहीं
तुम मनमाना फल पाओ। (१३०) और नरक से डरते रहो
जो काफ़िरों के लिये तय्यार है (१३१) और अल्लाह और रसूल
को आज्ञा मानो अजब नही तुमपर दया की जावे। (१३२) और
अपने पालनकर्त्ता की बख़्शिश और बैकुण्ठ की तरफ लपको जिस
(बैकुण्ठ) का फैलाव ज़मीन और आस्मान कैसा है उन परहेज
गारों के लिये तय्यार है।(१३३) जो खुशहाली और तंगदस्ती मे
खर्च करते और क्रोधको रोकते और लोगो को क्षमा करते है और
भलाई करने वाले को अल्लाह चाहता है।(१३४) और वे लोग जब
कोई खुला पाप कर बैठे वा अपना नुकसान कर लेते है तो खुदा
को याद करके अपने पापो की क्षमा मांगने लगते हैं और खुदा के
सिवाय अपराधों को क्षमा करनेवाला कौन है और जो जान बूझ-
कर उसपर ज़िद नही करते। (१३५) यही लोग हैं जिनका बदला
उनके पालनकर्त्ता की तरफ से बख़्शिश है और बाग़ जिनके नीचे
नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे और काम करने वालों के
लिये भी अच्छे फलहै। (१३६) तुमसे पहिलेभी वाक्यात हो गुजरे
हैं तो मुल्क मे चलो फिरो और देखो कि जिन लोगों ने झुठलाया
उनको कैसा फल मिला। (१३७) यह लोगो का समझाना है ले-
किन हिदायत और नसीहत तो उससे वही लोग पकड़ते हैं जिनके
दिल में डर है। (१३८) और हिम्मत न हारो और उदासीन न हो

और अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम्हारी ही जीत होगी। (१३९) अगर तुमको खुड़पच्चलगी तो उनको भी इसी तरह की खुड़पच्च लगचुकी है और यह दैव संयोग है जो हमारी आज्ञा से लोगों को दिनके फेर आया करते हैं और यह इस लिये कि खुदा ईमानदारोंको मालूम करे और तुममे से कुछ को शहीद बनाये और खुदा अन्याय को नही चाहता। (१४०) और यह मन्जूर था कि अल्लाह मुसलमानों को शुद्ध करदे और काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। (१४१) क्या तुम इस ख्यालमे हो कि वैकुण्ठमे जा दाखिल होगे हालां कि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जांचा जो तुम मे से जहाद (कोशिश) करने वाले है और न उन लोगोंको जांच जो साबित क़दम रहते हैं। (१४२) और तुम तो मौत के आने से पहिले मरने की दुआयें किया करते थे सो अब तो तुमने उसको अपनी आंखो देख लिया। (१४३) और मुहम्मद तो और कुछ नहीं सिर्फ एक पैग़म्बरहैं और बस इनसे पहिले भी रसूल हो गुज़रे हैं पस अगर मरजावें या मारेजावें तो क्या तुम अपने उल्टे पैरो फिर लौट जाओगे और जो अपने उल्टे पैरां लौट जायगा वह खुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा और जो लोग शुक्र करते हैं उनको खुदा जल्दी बदला देगा। (१४४) और कोई शख्स बेहुक्म खुदा मर नही सका। काल लिखा हुआहै और जो शख्स दुनिया में बदला चाहता है हम उसको बदला यहीं देदेते हैं और जो क़यामत में बदला चाहता है हम उसको वहीं देंगे और जो लोग शुक्र करते है हम उनको जल्दी बदला देंगे। (१४५) और बहुत से पैग़म्बर हो गुजरे हैं जिनके साथ बहुत खुदाको माननेवाले लड़े तो जो तकलीफ़ उनको अल्लाहके रास्ते मे पहुंची उसके वजहसे न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न थके और न दबे और अल्लाह जमे रहनेवालो को दोस्त रखता है। (१४६) और सिवाय इसके उनके मुँहसे एक बात भी तो नहीं

निकली कि दुआयें मांगने लगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता ? हमारे पाप क्षमाकर और हमारे कामों में जो हमसे ज़ियादह ज़ुल्म हो गयेहैं उनको क्षमाकर और हमारे पांव जमाये रख और काफ़िरों के गिरोह पर हमको जीतदे। (१४७) तो अल्लाह ने उनको दुनिया मे बदला दिया। क़यामत मे भी अच्छा बदला दिया और अल्लाह भलाई करनेवालों को चाहता है (१४८) [रुकू १६] हे ईमान वालो ! अगर काफिरों के कहे मे आजाओगे तो वह तुमको उल्टे पैरों लौटाकर ले जांयगे फिर तुमही उल्टे घाटेमे आजाओगे। (१४६) बल्कि तुम्हारा मददगार अल्लाह है और उसकी मदद सबसे बड़ी है (१५०) हम जल्दी तुम्हारे डर क़ाफिरो के दिलो मे डालेंगे क्योंकि उन्होंने उन चीज़ों को खुदा का शरीक बनाया है जिनकी खुदा ने कोईसी सनद भी नही भेजी और उन लोगोका ठिकाना नरक है और ज़ालिमो का बुरा ठिकाना है। (१५१) और जिस वक्त तुम खुदा के हुक्मसे काफ़िरों को तलवार से माररहे थे (उस वक्त) खुदा ने तुमको अपनी प्रतिज्ञा सच्ची कर दिखाई यहांतक कि तुमको तुम्हारी खातिरी के लिये जीत दिखादी। इसके बाद तुम डर-पोंक होगये और तुमने हुक्मके बारे मे आपुस मे झगड़ा किया और नाफ़र्मानी (बेहुक्मी) की (१५२) कुछतो तुममेंसे दुनिया के पीछे पड़गये और कुछ क़यामत की फिक्र मे लगे फिर तो खुदाने तुमको दुश्मनो से फेर दिया। खुदाको तुम्हारी जांच मन्ज़ूर थी और खुदाने तुमसे दर गुज़र की और ईमानदारो पर खुदा की कृपा है। (१५३) जब तुम भागे चले जाते थे और बावजूदे कि पैग़म्बर तुम्हारे पीछे तुमको बुला रहे थे। तुम मुड़कर किसी की तरफ़ को नहीं देखते थे। पस रंज के बदले खुदाने तुमको रंज पहुंचाया ताकि जब कभी तुमसे कोई मतलब जातारहे या तुम पर कोई मुसबीत आन पड़े तो तुम उसका रंज मत करो और तुम

कुछ भी करो अल्लाह को उसकी खबर है। (१५४) फिर तंगी के बाद खुदा ने तुम पर आराम के लिये ऊँघ उतारी कि तुम में से कुछको नींदने आ घेरा और कुछ जिनको अपनी जानों की पड़ी थी अल्लाह के सामने बेफ़ायदा जाहिलियत कैसे बुरे विचार बांध रहे थे कहते थे कि हमारे बशकी क्या बात है—कह दो कि सब काम खुदाहीं के अख्तियार से हैं—इन के दिलों में और बातें भी छिपी हुई हैं जिनको तुम पर ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि हमारा कुछ भी वश चलता होता तो हम यहां मारेही न जाते। कह दो कि तुम अपने घरोंमें भी होते तो जिनके भाग्य में मारा जाना लिखा था निकल कर अपने पछड़ने की जगहआ मौजूद होते। और खुदा को मन्जूर था कि तुम्हारे दिली मंशायों को जांचे और तुम्हारे दिली ख्यालात को साफ़ करे और अल्लाह तो सबके जीकी बात जानता है। (१५५) जिस दिन दो जमाते भिड़गईं तुममें से लोग भाग खड़े हुए तो सिर्फ़ उनके कुछ पापोंकी वजहसे शैतानने उनके पांव उखाड़ दिये और खुदा ने उनको क्षमा किया। अल्लाह क्षमा करने वाला सहने वाला है (१५६) (रकू १७) हे मुसलमानो ! उन लोगों कैसे न बनो जो काफ़िर हैं और अपने भाई बन्धुओं से जो परदेश निकले हों या जहाद करने गये हो उनसे कहा करते हैं कि अगर हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते। खुदा ने उन लोगों के ऐसे ख्यालात इसलिये करदिये हैं कि उनके दिलों में दुःख रहे और अल्लाह ही जिलाता और मारता है और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको देख रहा है। (१५७) और खुदा की राय में अगर तुम मारे जाओ वा मर जाओ तो खुदा की क्षमा और कृपा उस से बढ़कर है जो तुम संसार में जमा कर लेते हो। (१५८) और तुम मरगये वा मारेगये तो अल्लाहही की तरफ़ इकट्ठे होगे। (१५९) तो अल्लाह की बड़ी ही कृपा हुई कि तुम इनका मुलायम

दिल मिले हो और अगर तुम मिजाज़ के अक्खड़ कड़े दिल के होते तो यह लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। तो तुम इनके अपराध क्षमा करो और इनके पापों की क्षमा चाहो और मुआमलात में इनकी सलाह ले लिया करो फिर तुम्हारे दिल में एक बात ठनजाय तो भरोसा खुदा ही पर रखना। जो लोग भरोसा रखते हैं खुदा उनको चाहता है (१६०) अगर खुदा तुम्हारी मदद पर है तो फिर कोई भी तुम को जीतने वाला नहीं और अगर वह तुमको छोड बैठे तो उसके पीछे कौन है जो तुम्हारी सहायता को खड़ा हो और ईमान वालों को चाहिये कि अल्लाह ही का भरोसा रक्खें। (१६१) और पैग़म्बर को मुनासिब नहीं कि कुछ भी छिपा रक्खें और जो कोई छिपाने का अपराधी होगा वह क़यामत के दिन उसको लाकर हाज़िर करैगा फिर जिसने जैसा किया है उसको उसका पूरा २ बदला दिया जावेगा और किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा। (१६२) भला जो शख़्स अल्लाह की मर्ज़ी के अधीन हो कहीं उस शख्स कैसा हो सक्ता है जो खुदा के कोप में आ गया हो और उसका ठिकाना नरक हो और वह बुरा ठिकाना है। (१६३) अल्लाह के यहां लोगों के दर्जे हैं और वह लोग जो कुछ कररहे हैं अल्लाह उसको देख रहा है। (१६४) अल्लाह ने ईमान वालों पर दया की कि उनमें उनहीं में का एक पैग़म्बर भेजा जो उनको खुदा की आयतें पढ २ कर सुनाता है और उनको सुधारता है और किताब और काम की बात उनको सिखाता है और पहिले तो यह लोग ज़ाहिरा भटके हुओं में से थे। (१६५) क्या जब तुमपर आफ़त (विपत्ति) आपडी हालांकि तुम इससे दूनी आफ़त डालचुके हो। तुम कहने लगे कि कहां से (आफत) आई। कहो कि तुम्हारे कर्म का यह फल है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिसाली है। (१६६) और जिस दिन दो जमातें भिड़ गई और तुमको रंज पहुंचा तो खुदा का हुक्म योंही था और यह

भी ग़रज़ थी कि खुदा ईमानवालों को मालूम करे। (१६७) और मुनाफ़िक़ो[1] (आगे कुछ पीछे कुछ कहनेवाले) को मालूम करे और मुनाफिक़ो से कहागया। आओ अल्लाह के रास्ते मे लड़ो या हटा दो। तो कहने लगे कि अगर हम लड़ाई समझते तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ होलेते। यह उस रोज़ ईमान को बनिस्वत इनकारी के नजदीक थे। मुंह से ऐसी बात कहते हैं जो इनके दिलों मे नही और जिसको छिपाते हैं अल्लाह खूब जानता है। (१६८) जो बैठे रहे और अपने भाइयो के सम्बन्ध से कहने लगे कि हमारा कहा मानते तो मारे न जाते कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को हटादेना। (१६९) और जो लोग अल्लाह के रास्ते मे मारे गये हैं उनको मराहुआ ख्याल न करना बल्कि अपने पालनकर्त्ता के पास जीतेहैं इनको रोज़ी मिलती है। (१७०) जो कुछ अल्लाहने अपनी कृपा से इनको देरक्खाहै उसमे मग्नहैं और जो लोग इनके बाद अभी इनमे आकर शामिल नही हुए वह खुशियां मनातेहैं क्योंकि इन पर न डर और न यह उदासीन हैं। (१७१) अल्लाह के पदार्थों के और दयाको खुशियां मनारहे हैं और इसकी कि अल्लाह ईमानवालों के फलको अकारथ नहीं होने देता। (१७२) [रुकू १८] जिन लोगोंने चोट खाये पीछे खुदा और पैग़म्बर का हुक्म माना खासकर ऐसे भलाई करनेवाले और परहेज़गारो के लिये बड़ा फल है। (१७३) वह लोग जिनको लोगोंने खबरदी कि लोगोंने तुम्हारे लिये बड़ी भीड़ जमा की है इनसे डरते रहना तो इससे उनके विश्वास और अधिक होगये और बोल उठे कि हमको अल्लाह काफ़ी है और वह अच्छा काम सम्भालने वालाहै। (१७४) ग़रज यह लोग अल्लाह के पदार्थों और दयासे लदेहुए वापिस आये और उनको कुछ बुराई नही हुई और अल्लाह की मर्जीपर चलतेरहे और अल्लाह की कृपा बड़ीहै। (१७५)

---

[1] आगे कुछ और पीछे कुछ कहनेवाले।

यह शैतान है जो अपने दोस्तों का भय दिखलाता है तो तुम उनसे न डरना और अगर ईमान रखतेहो तो हमाराही डर रखना। (१७६) और जो लोग इन्कार में दौड़े फिरते हैं तुम इन लोगो की वजह से उदास न होना यह लोग ख़ुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सक्ते ख़ुदा चाहताहै कि क़यामत मे इनको कुछ भाग न दे और इनको बड़ी सज़ा होनी है। (१७७) जिन लोगोंने ईमान देकर इन्कार मोल लिया ख़ुदा को तो हरगिज किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे बल्कि इन्हीं को दुःखदाई सज़ा होगी। (१७८) और जो लोग इन्कार कर रहे हैं इस ख़्याल मे न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह कुछ इनके हक़ मे भला है। हमतो इनको सिर्फ़ इसलिये ढील दे रहे है ताकि और पाप समेट ले और इनको ज़िल्लत की मार है। (१७९) अल्लाह ऐसा नहीं है कि जिस हाल मे तुमहो अच्छे बुरे की जांच के बग़ैर इसी हाल पर ईमानवालों को रहनेदे और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि तुमको ग़ैब (अन्तरिक्ष) की बातें बता दे। हां अल्लाह अपने पैग़म्बरो मे से जिसको चाहता है चुन लेता है तो अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और बचते रहोगे तो तुमको बड़ा फल मिलैगा। (१८०) और जिन लोगों को ख़ुदा ने अपनी कृपा से दिया है और वह उस मे कंजूसी करते हैं वह इसको अपने हक़ मे भला न समझे बल्कि वह उनके हक मे ख़राबी है जिस (माल) की कंजूसी करते हैं क़यामत के दिन के क़रीब उसको तौक़ (हँसली) बनाकर उनके गले मे पहिनायी जायगी और आसमान व ज़मीन का वारिस अल्लाह ही है और जो कर रहे हो अल्लाह को उसको ख़बर है। (१८१) [रुक १९] जो लोग अल्लाह को मुहताज और अपने को मालदार बताते हैं उनकी बकवाद अल्लाह ने सुनी यह लोग जो नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते चले आये हैं उसके साथ हम इनको इस

बकवाद को भी लिखे रखते हैं और इनका जवाब हमारी तरफ़ से यह होगा कि नरक की सज़ा भोगा करो। (१८२) यह उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुम ने पहिले से अपने हाथों भेजा है और अल्लाह तो अपने बन्दों पर किसी तरहका ज़ुल्म नहीं करता। (१८३) यह जो कहते हैं कि अल्लाहने हमसे कह रक्खा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हमको ऐसी भेट न देखावे कि उसको आग चटकर जाये तबतक हम उसपर ईमान न लावें। कहो कि मुझसे पहिले पैग़म्बर तुम्हारे पास खुले २ निशानियां लाये जिसको तुम मांगते हो तो अगर तुम सच्चे हो तो फिर तुमने उनको किसलिये क़त्ल किया। (१८४) इस पर भी अगर वह तुमको झुठलावें तो तुम से पहिले पैग़म्बर खुले चमत्कार लाये और छोटी किताबें (शरीफ़े) और रोशन किताबें भी लाये फिर भी लोगों ने उनको झुठलाया। (१८५) हर किसी का मरना है और पूरा २ बदला तुमको क़यामत ही के दिन दिया जायगा तो जो शख्स नरक से दूर हटा दिया गया और उसको बैकुण्ठ में जगह दी गई तो उसने मनमाना फल पाया और दुनियां की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोखे की पूंजी है। (१८६) तुम्हारे मालों और तुम्हारी जानों में ज़रूर तुम्हारी परीक्षा की जावेगी और जिन लोगों को तुम से पहिले किताब दी जाचुकी है उनसे और मुशरकीन से तुम बहुत सी नुक़सान की बातें ज़रूर सुनोगे और अगर संतोष किये रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक ये साहस के काम हैं। (१८७) और जब ख़ुदा ने किताब वालों से इक़रार लिया कि लोगों से इस का मतलब साफ़ २ बयान करदेना और इसका छिपाना नहीं मगर उन्होंने उसको अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले थोड़े से दाम हासिल किये सो बुरा है जो यह लोग ले रहे हैं। (१८८) और जो लोग अपने किये से खुश होते और किया नहीं उस पर अपनी तारीफ़ चाहते हैं ऐसे

लोगों की निस्वत हरगिज़ ख़्याल न करना कि यहलोग सज़ा से बचे रहेंगे बल्कि उनके लिये दुःखदाई सजा है। (१८९) और आसमान व ज़मीन का अख़्तियार अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिसाली है। (१९०) [रुकू २०] आसमान और जमीन की बनावट और रात और दिन के परिवर्तन में बुद्धिमानों के लिये निशानियां हैं। (१९१) जो खड़े और बैठे और पड़े खुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की बनावट में ध्यान देते है-हे हमारे पालनकर्ता तूने इसको बे फायदा नहीं बनाया तेरी जात पाक है हमको नरक की सज़ा से बचा। (१९२) हे हमारे पालन-कर्ता जिसको तूने नरक मे डाला उसको तूने नीच बनाया और अपराधियों का कोई भी मददगार नही होगा। (१९३) हे हमारे पालनकर्ता ? हमने एक मनादी करने वाले को सुना कि ईमान की मनादी कर रहे थे कि अपने पालनकर्ता पर ईमान लाओ तो हम ईमानले आये (१९४) पस हे हमारे पालनकर्ता ? हमको हमारे अप-राध क्षमाकर और हमसे हमारे पाप दूरकर और नेक बन्दों के साथ हमारी मौतदे और हे हमारे पालनकर्त्ता ? तूने जैसी प्रतिज्ञा अपने पैग़म्बरों के द्वारा हमसे की है-दे-और क़यामत के दिन हमको बदना-म न कर। तूं वादा ख़िलाफ़ी तो कियाही नहीं करता। (१९५) फिर उनके पालनकर्त्ता ने उनकी दुआ मानली कि हम तुममें से किसी मिहनतवाले की मिहनत को अकारथ नही जाने देते। मर्दहो या औरत तुम सब एक जात हो तो जिन लोगों ने हमारे लिये देश छोड़े और अपने घरों से निकाले गये और मेरी राह में सताये गये और लड़े और मारे गये हम उनकी भूलों को उनसे ज़रूर मिटादेंगे और उनको ऐसे बागों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी यह अल्लाह के यहां से फल मिलाता है और अच्छा फल तो अल्लाह ही के यहां है। (१९६) शहरों मे काफ़िरों का चलना फिरना

तुमको धोखे में न डाले। थोड़ा सा फ़ायदा है फिर इनका ठिकाना नरक है और वह बुरी जगह है। (१९७) लेकिन जो लोग अपने पालनकर्त्ता से डरते रहे उनके लिये बाग़ है जिनके नीचे नहरें बह-रही होंगी वह उनमें हमेशा रहेंगे और जो अल्लाहके यहांहै सो भलाई करनेवालो के लिये भला है। (१९८) और किताबवालो में से कुछ लोग ऐसे है जो खुदा पर ईमान रखते है और जो किताब तुम पर उतरी है और जो उनपर उतरी है उनको मानते हैं। अल्लाह के आगे झुके रहते है। अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम नहीं लेते यही वह लोग है जिनके बदले पालनकर्त्ता के यहां से मिलेंगे। (१९९) हे ईमानवालो ठहरे रहो और सामना करने में पक्के रहो और लगे रहो और अल्लाह से डरो ताकि तुम मनमाने फलपाओ। (२००

सूरे निशा।
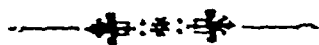
(स्त्रियों का अध्याय)

यह मदीने में उतरी इसमें १७७ आयतें और २४ रुकू हैं ॥

शुरूअ अल्लाहके नाम से निहायत रहमवाला मिहरबान है। [रुकू १]

हे लोगो ? अपने पालनकर्त्तासे डरो जिसने तुमको एक शख्ससे पैदा किया और उससे उसकी बीबी को पैदा किया और उन दोसे बहुत मर्द और औरत फैलादिये और जिस खुदा का लगाव दे दे कर तुम अपने कितने काम निकाल लेते हो उसका और सम्बन्धियों का लिहाज रक्खो–अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। (१) और अनाथोंके माल उनको देदो और अच्छे माल के बदले हराम का माल मतलो और उनके माल अपने मालो में मिलाकर खा, पी, मत डालो। यह बड़ा पाप है। (२) और अगर तुमको इस बात का डर हो कि अनाथ

लड़कियों में न्याय (इन्साफ) क़ायम न रख सकोगे तो अपनी इच्छा के अनुकूल दो दो और तीन तीन और चार चार औरतों से निकाह करलो लेकिन अगर तुमको इस बात का अंदेशा हो कि बराबरी न कर सकोगे तो एकही बीबी करना। या जो तुम्हारे हाथ में मालहो उसे एक तरफ़ न झुकादो और औरतों को उनके मिहर खुश दिली से दे डालो फिर अगर वह खुश दिली के साथ उसमें से कुछ तुम को छोड दें तो उसको रचता पचता खाओ। (३) और माल जिसको खुदाने तुम्हारे लिये सहारा बनाया है बुद्धिहीनो के हवाले न करो। जो उसमें से उनके खाने पहरने में खर्च करो उनको नर्मी से समझा दो। (४) और अनाथों को सुधारते रहो। जबतक निकाह (ब्याह) के लायक़ हों उसवक्त अगर उनमें होशियारी देखो तो उनके माल उनके हवाले करदो और ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के अंदेशे से जल्दी २ उनका माल खाडालो और जो सामर्थ्य वाला हो उसे बचा रहना चाहिये और जो जरूरत वाला हो वह दस्तूर के मुताबिक खालेवे और जब उनके माल उनके हवाल करने लगो तो उसके गवाह करलो वर्ना हिसाब लेनेको अल्लाह काफ़ी है। (५) माता पिता और सम्बन्धियों की छोड़ी हुई जायदाद में थोड़ा हो वा बहुत मर्दोंका हिस्सा है और माता पिता और सम्बन्धियो के छोड़े हुए में स्त्रियों का भी भाग है (और यह) भाग (हमारा) ठहराया हुआ (है) (६) और जब बांट के वक़्त सम्बन्धी, अनाथ बच्चे और ग़रीब आमौजूद हो तो उसमे से उनको भी कुछ दे दिया करो और उनको नर्मी से समझा दो। (७) और उनलोगों को डरना चाहिये कि अगर अपने पीछे कमज़ोर संतान छोड जाते तो उनपर उनको दया आतो। तो चाहिये कि अल्लाह से डरें और सीधी तरह बात करें। (८) जो लोग व्यर्थ अनाथों के माल तितर बितर करते हैं वह अपने पेट में

बस अंगारे भरते हैं और अब नरक में पड़ेंगे। (६) (रुकू २) तुम्हारी संतान अल्लाह तुमसे कहे रखता है कि लड़के को दो लड़कियों के बराबर हिस्सा मिलेगा फिर अगर लड़कियां दो से ज़ियादह हो तो छोड़ी हुई ज़ायदाद में उनका (हिस्सा) दो तिहाई और अगर अकेली हो तो उसको आधा और मरेहुए के माता पिता में दोनो में हरएक को छोड़ीहुई ज़ायदाद का छठवां भाग उस सूरत मे कि मरे की सतान हो और अगर उसके संतान न हो और उसके वारिस माता पिता हों तो उसकी माता को एक तिहाई भाग लेकिन मरे के भाई हों तो माता का छठवां भाग मरे को वसीयत और क़र्ज़ के बाद मिलैगा तुम अपने बाप और बेटों को नहीं जानसक्ते कि लाभ पहुँचने के विश्वास से उनमें कौनसा तुमसे अधिक नज़दीक है। भागों का क़रारदाद (ठहरौनी) अल्लाह का ठहराया हुआ है अल्लाह निस्संदेह जानकार है। (१०) और जो तुम्हारी बीबियां छोड़मरें। अगर उनकी संतान नहीं तो उनके तर्क[१] मे तुम्हारा आधा; अगर उनके संतान है तो उनकी उनके तर्क से तुम्हारा चौथियाई: उनकी वसीयत और कर्ज़ के बाद; और तुम कुछ छोड़ मरो और तुम्हारे कुछ औलाद न हो तो बीबियों का चौथियाइ; और अगर तुम्हारे सतान हो तो तुम्हारे तर्क से से बीबियो का आठवां तुम्हारी वसीयत और कर्ज़ के बाद दियाजायगा और अगर किसी मर्द वा औरत की मिलकियत और उसके बाप बेटा न हो और उसके भाई या बहिन हो तो उनमें से हरएक का छठवां और अगर एक से ज़ियादा हो तो एक तिहाई में सब शरीक मरे की वसीयत और कर्ज़ के बाद बशर्ते कि मरे हुए ने औरों का नुक्सान न किया हो हो। अल्लाह का हुक्म है और अल्लाह जानता है और बरदाश्त करता है। (११) यह

---

[१] मरे की छोड़ी हुई जायदाद।

अल्लाह की हद्दें हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेगा उसको अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें वहरहीं होगीं उनमें हमेशा रहेंगे और यह वड़ी कामी यावी है। (१२) और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माना करै और अल्लाह की हद्दो से वढ़चले उसको नरक में दाख़िल करैगा उसमें हमेशा रहैगा और उसको ज़िल्लत की मार दीजावेगी। (१३) (रुकू २) और तुम्हारी औरतों मेंसे जो औरत वदकारी की अपराधिन हो तो उनपर अपने लोगों में से चार की गवाही लो पस अगर गवाह तसदीक करें तो उनको घरों मे वन्द रक्खो यहांतक कि मौत उनका काम तमाम करदे या अल्लाह उनके लिये कोई रास्ता निकाले। (१४) और जो दो शख़्स तुम लोगों मेंसे वदकारी के अपराधी हो तौ उनको मारो पीटो फिर अगर तोवा करें और अपनी दशा को सुधार ले तो उनका ख़्याल छोड़दो क्योंकि अल्लाह बड़ा तोवा क़बूल करने वाला मिहरवान है। (१५) अल्लाह तोवा क़बूल करता है उनही लोगों की जो नादानी से यहां तक कोई बुरी हरकत कर वैठें फिर जल्दी से तोवा करले तो अल्लाह भी ऐसो की तोवा क़बूल करलेता है और अल्लाह हिकमत वाला सव जानता है। (१६) और उन लोगों की तोवा नहीं जो वुरे काम करते रहे यहांतक कि उनमेंसे जव किसी के सामने मौत आखड़ी हो तो कहने लगे कि अव मैंने तोवा की और उनकी भी तोवा कुछ नही जो काफ़िर हो मरजाते हैं। यही हैं जिनके लिये हमने दुःखदाई सज़ा तय्यार कर रक्खी है। (१७) हे ईमानवालो ? तुमको जायज़ नहीं कि औरतो को मीरास (वपौती) समझकर ज़वरदस्ती उनपर कब्ज़ा करलो

(आयत १८) नोट-चूंकि अरवमें पानी वहुत कम मिलता है इसीलिये नहरें सव से वंढकर वैकुण्ठ की चीज़ वताई गई हैं इससे सिद्ध होताहै कि यह क़ुरान ज़ियादा सम्वन्ध अरवसे रखताहै न कि तमाम दुनिया से।

जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ छीन लेनेकी नियत से उनको क़ैद न रक्खो (कि दूसरे से निकाह न करने पावें) या उनसे कोई खुली हुई बदकारी ज़ाहिर हो और बीबियों के साथ नेक सलूक से रहो सहो और तुमको बीबी नापसंद हो तो अजब नही कि तुमको एक चीज़ नापसंद हो और अल्लाह उसमे बहुत खैर खूबी रखता हो और अगर तुम्हारा इरादा एक बीबी को बदल कर उसकी जगह दूसरी बीबी करने का हो तो गो तुमने पहिली बीबी को बहुतसा माल दे दिया हो तोभी उसमें से कुछ भी न लेना क्या किसी क़िस्म का लफंट लगाकर ज़ाहिरा बेजा बात करके अपना दिया हुआ लेतेहो। (१८) और दिया हुआ कैसे लेलोगे हालांकि तुम एक दूसरे के साथ सुहबत (संगत) कर चुके हो और बीबियां तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ले चुकी हैं। (१९) और जिन औरतो के साथ तुम्हारे बापने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना मगर जो हो चुका सो होचुका। यह बड़ी निर्लज्जता और ग़ज़ब की बात थी और बहुतही बुरा दस्तूर था। (२०) [रुकू ४] तुम्हारी मातायें और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी बुआयें और तुम्हारी मौसियां और भतीजियां. भानजियां और तुम्हारी मातायें जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध शरीकी बहनें और तुम्हारी सासें तुमपर हराम हैं जिन स्त्रियो के साथ तुम संगत (सुहबत) करचुके हो उनकी पूर्वपति से पैदा हुई लडकियां जो तुम्हारी गोदो मे परवरिस पाती हैं लेकिन अगर इन बीबियों के साथ तुमने संगत (भोग) नकी हो तो तुमपर कुछ पाप नही और तुम्हारे बेटो की स्त्रियां (बहुयें) और दो बहिनो का एक साथ रखना भी तुमपर हरामहै मगर जो होचुका सो होचुका बेशक अल्लाह क्षमा करने वाला मिहरबान है। (२१)

——:*:——

पांचवां पारा।
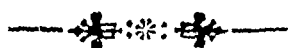
सूरेनिशा।

और जीवित पतिवाली औरतों का लेना भी हराम है मगर जो क़ैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों। उनके लिये तुमको खुदा का हुक्म है और इनके सिवाय दूसरी सब औरते हलाल हैं जिनको तुम माल (मिहर) देकर क़ैद में लाना चाहो नकि मस्ती निकालने को। (२२) फिर जिन औरतों से तमने मज़ा उठाया हो तो उनसे जो मिहर ठहरा था उनके हवाले करो--ठहराये पीछे आपस में राज़ी होकर जो और ठहरा लो तो तुमपर इसमें कुछ पाप नहीं। अल्लाह जानकार हिकमतवाला है। (२३) और तुममें से जिसको मुसलमान बीवियों से निकाह करने की सामर्थ्य न हो तो खैरबान्दियांही सही जो तुम मुसलमानो के क़ब्ज़े मे आजायँ, बशर्तेकि ईमान रखती हो और अल्लाह तुम्हारे ईमान का खूब जानता है। तुम आपस में एकहो पस बान्दोवालो की इजाज़त से उनके साथ निकाह करलो और दस्तूर के बमूजिब उनके मिहर उनके हवाले करदो। मगर शर्त यह है कि क़ैद (निकाह) मे लाई जावें; बाज़ारी औरतों कैसा लगाव न हो और न छिपकर यार रखती हों। अगर कैद (निकाह) मे आये पीछे कोई निर्लज्जता का काम करें (ज़िना करें) तो जो सज़ा बीबो को उसकी आधी लौंडी को, लौंडो से निकाह करने की आज्ञा उसी को है जिसको तुममे से पाप का डर है और अगर संतोष करो तो तुम्हारे हक़ मे भला है और अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (२४) (रुकू ५) अल्लाह चाहता है कि जो तमसे पहिले है उनके तरीके

तमसे खोल खोल कर बयान करे और तुमको उन्ही तरीक़ो पर चलाये और तुमको क्षमा करे और हिकमतवाला अल्लाह जानता है। (२५) और अल्लाह चाहता है कि तुमपर ध्यान दे और जो लोग इन्द्रियों की इच्छाओं के पीछे पड़े हैं उनका मतलब यह है कि तुम सच्ची राह से बहुत दूर हटजाओ। (२६) अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ हलका करे क्योंकि मनुष्य कमज़ोर पैदा किया गया है। (२७) हे ईमानवालो ! एक दूसरे का माल नाहक़ (व्यर्थ) मत खाओ लेकिन आपस में रज़ामन्दी से तिजारत करो और आपस मे मार काट मत करो, अल्लाह तुम पर मिहर्बान है। (२८) और जो ज़ोर जुल्म से ऐसा करैगा हम उसको आग में झोंकदेंगे और यह अल्लाह के नज़दीक सहज है। (२९) जिनसे तुमको मना किया जाता है अगर तुम उनमें से बडे २ पापों से बचते रहोगे तो हम तुम्हारे अपराध उतार देंगे और तुमको प्रतिष्ठा के स्थान मे जगह देंगे। (३०) खुदा ने जो तुम मे से एक को दूसरे पर बढ़ती दे रक्खी है उसकी कुछ आशा मत करो मर्दों ने जैसे कर्म किये हों उनको उनका भाग और औरतों ने जैसे कर्म किये हों उनको उनका भाग और अल्लाह से उसकी दया मांगते रहो अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (३१) और माता पिता और सम्बन्धी जो (तर्का) छोड़ मरें तो हमने हर एक के हक़दार (अधिकारी) ठहरा दिये हैं और जिन लोगों के साथ तुम्हारा वादा है तो उनका भाग उनको दो। हर चीज़ अल्लाह के सामने है। (३२) (रुकू ६) मर्द औरतो के शिरोमणि हैं कारण यह कि अल्लाह ने एक को एक पर प्रधानता दी है और इसलिये भी कि वे अपने माल में से भी खर्च करते हैं तो जो भली हैं कहा मानती हैं। खुदा की कृपा से पीठ पीछे रक्षा रखती हैं और तुम को जिन बीबियों की बुरी आदत

से खटका हो उनको समझा दो फिर उनके साथ सोना छोड़ दो और उन्हें मारो फिर अगर तुम्हारी बात मानने लगे तो उन पर दोष न लगाओ क्योंकि अल्लाह सर्वोपरि है। (३३) और अगर तुम-को मियां बीबी में खट पट का सन्देह हो तो मर्द की तरफ़ से एक पंच और एक पंच स्त्री की तरफ़ से ठहराओ अगर पंचों का इरादा सुधार का होगा तो अल्लाह दोनों में मिलाप करा देगा अल्लाह खबरदार है। (३४) और अल्लाह ही की पूजा करो और उसके साथ किसी को मत मिलाओ और माता पिता सम्बन्धियो और अनाथो और मुहताज़ों और सम्बन्धी पडोसियों और परदेशी पड़ोसियों और पास के बैठने वालो और पथिकों (मुसाफ़िरों) और जो तुम्हारे कब्ज़े में हो इन सब के साथ भलाई करते रहो और अल्लाह उन लोगों से खुश नही होता जो इतरायें बड़ाई मारते फिरें। (३५) वेजो कंजूसी करें और लोगों को भी कंजूसी करने को सलाह दें और अल्लाह ने जो अपनी कृपा से उन को दिया है उस को छिपायें और हमने काफ़िरो के लिये ज़िल्लत की सज़ा तय्यार कर रक्खी है। (३६) वे जो लोगो के दिखाने को माल खर्च करते हैं और अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं रखते और शैतान जिसका साथी हो तो वह बुरा साथी है। (३७) और अगर अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाते और जो कुछ खुदा ने उन को दे रक्खा था उसको खर्च करते तो उन का क्या बिगड़ता और अल्लाह तो इनसे जानकारही है। (३८) अल्लाह कुछ भी ज़ुल्म नही करता बल्कि भलाई हो तो उसको बढ़ाता है और अपने पास से बड़ा बदला दे देता है। (३९) क्या हाल होगा जब हम हर गिरोह के गवाह को बुलावेंगे और हम तुझे (हे मुहम्मद) इन पर गवाह तलब करेंगे। (४०) जिन लोगों ने इनकार किया और पैग़म्बर का हुक्म न माना उस दिन इच्छा करेंगे कि कोई उन पर मट्टी फेर

दे और खुदा से कोई बात भी नही छिपा सकेंगे। (४१) (रुकू ७) हे ईमानवालो ! जब तुम नशेमे हो नमाज़ न पढा करो। जब तक न समझो कि क्या कहते हो और नहाने की ज़रूरत हो तो भी नमाज़ के पास न जाना यहां तक कि स्नान न करलो। हां रस्ते चले जारहे हो और अगर तुम बीमार हो या मुसाफ़िर या तुममेंसे कोई पाखाने से आवे या स्त्रियों से प्रसंग करके आया हो और तुमको पानी न मिलसके तो पाक मिट्टी लेकर मुहँ और हाथों को मललो। अल्लाह क्षमा करनेवाला बख्शनेवाला है। (४२) क्या तुमने उन लोगों पर नज़र नही की जिनको किताब से एक हिस्सा दियागया था वह राह से भटके हुए हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह छोड़ दो और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनो को खूब जानता है और अल्लाह काफ़ी दोस्त और काफ़ी मददगार है। (४३) यहूद मे कुछ ऐसे भी हैं जो बातो को ठिकाने से फेरते हैं और कहते हैं हमने सुना और न माना और सुन कि तेरी कोई न सुने और ज़बान मरोड़ मरोडकर दीन मे ताने की राहसे रैना (सुना हमने) कहते हैं अगर वह कहते हमने सुना और माना और तू सुन और हम पर नज़र कर तो उनके लिये भला होता और मुनासिब था लेकिन खुदाने उनकी इनकारी के सबब उनपर लानत की है पस उनमे से थोड़े ईमान लाते है। (४४) हे किताब वालो ! जो हमने उतारा है और वह उस किताब की जो तुम्हारे पास है तसदीक़ करता है उसपर ईमान ले आओ इससे पहिले कि मुहँ बिगाड़ कर हम उल्टे उनकी गुधियो में लगावें या जिस तरह हमने सब्तके (शनीचरके) लोगो को फटकार दिया था उसी तरह उनको भी फटकार दे और जो खुदा को मन्ज़ूर है वह तो होकर रहैगा। (४५) खुदाके शरीक ठहराने वालेको खुदा क्षमा नहीं करता इसके नीचे जिसको चाहै क्षमा करै और जिसने खुदा का शरीक़ ठहराया उसने

बड़ा पाप बांधा। (४६) क्या तुमने उन लोगों (यानी यहूद) पर नज़र नही की जो आप बड़े पाक बनते हैं बल्कि अल्लाह जिसको चाहता पाक बनाता है और ज़ुल्म तो किसी पर कुछ भी न होगा। (४७) देखो यह लोग अल्लाह पर कैसे झूठ बांध रहेहैं और यही खुला अपराध काफ़ी है। (४८) (रुकू ८) क्या तुमने उनलोगों पर नज़र नही की जिनको किताब से हिस्सा दिया गया वह मूर्तियों और शैतान को मानते हैं और काफ़िरों को बावत कहते हैं कि मुसलमानो से तो यही लोग ज़ियादा सीधे रास्ते परहैं। (४९) हे पैग़म्बर यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने फटकार दिया है और जिसको अल्लाह फटकारे उसका कोई साथी न होगा। (५०) आया इनके पास राज्य का कोई भाग है फिर ये लोगो को तिल बराबर भी न देंगे।(५१) खुदाने जो लोगों को अपनी कृपा से पदार्थ दिये हैं उसपर जलते हैं सो इब्राहीम के वंश को हमने किताब और इल्म और उनको बडा भारी राज्य दिया। (५२) फिर लोगो में से कोई तो उसपर ईमान लाये और किसीने मुहँ मोड़ा और दहकता हुआ नरक काफ़ी है। (५३) जिनलोगों ने हमारी आयतों से इनकार किया हम उनको आग में झोकेंगे। जब उनकी खालें जल जावेंगी उनको दूसरी खाल बदलदेंगे ताकि दण्ड भोगें अल्लाह ज़बरदस्त बड़ा हिकमत वाला है। (५४) जो लोग ईमान लाये और उन्हो ने अच्छे काम किये हम उनको ऐसे बाग़ों मे दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे उन में उनके लिये बीबियां साफ़ सुथरी होंगी और हम उन को घनी छांहो में लेजाकर रक्खेंगे। (५५) अल्लाह तुम को आज्ञा देता है कि अमानत वालों की अमानतें उन के हवाले करदिया करो और जब लोगों के आपुसी के झगडे फैसिल करने लगो तो इन्साफ़ के साथ फैसला करो अल्लाह तुम को अच्छी शिक्षा देता है। अल्लाह सुनता देखता है। (५६) हे ईमानवालो !

अल्लाह की और पैग़म्बर की और जो तुम में से हुकूमत वाले हैं उनकी आज्ञा मानों फिर अगर किसी बात मे तुम्हारा झगड़ा हो तो खुदा और पैगम्बर की तरफ़ लेजाओ अगर तुम अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान रखते हो यह भला है और अच्छी खोज है। (५७) (रुकू ६) क्या तुमने उनकी तरफ़ न देखा जो दावा करते हैं कि वह जो तुम पर उतरा और जो तुझ से पहिले उतरा मानते हैं और चाहते हैं कि झगडा शैतान के पास लेजावें हालांकि उन को हुक्म दिया जाचुका है कि उसकी बात न मानें और शैतान चाहता है कि उनको भटका कर बड़ी दूर लेजावे। (५८) और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसकी तरफ़ और पैग़म्बर की तरफ़ आओ तो तुम इन्कारियों को देखते हो कि वह तेरी तरफ़ आने से रुकते हैं। (५६) तो कैसी बीतेगी जब इन्हीं कर्मों के कारण से इन पर कोई विपत्ति आपड़े तो तुम्हारे पास अल्लाहकी सौगन्ध खाते हुये आवेंगे कि हमारी ग़रज़ तो भलाई और मेल मिलाप की थी। (६०) यह ऐसे हैं कि जो इनके दिल मे है खुदा को मालूम है तो इनके पीछे न पड़ो और इनको समझा दो और इनके दिल पर असर करने वाली बातें कहो। (६१) और जो पैग़म्बर हमने भेजा उसके भेजने से हमारा अभिप्राय यही रहा है कि अल्लाह के हुक्म से उसका कहा माना जावे और जब इन लोगों ने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया था। अगर तेरे पास आते और खुदा से क्षमा मांगते और पैग़म्बर उन की माफ़ी चाहते तो अल्लाह को बड़ाही क्षमा करनेवाला और मिहर्बान पाते। (६२) सो तुम्हारे पालनकर्त्ता की क़सम कि जब तक यह लोग अपने आपसी के झगड़ों में तुम को न्यायी (मुन्सिफ़) न जाने और फिर तेरे न्याय से उदास न होकर मानलें तब तक ईमान वाले न होंगे। (६३) और अगर हम इन को हुक्म देते कि आप अपने

को क़त्ल करो वा घरबार छोड़ जाओ तो इन में से थोड़े आदमियों के सिवाय इसको न मानते और जो कुछ इनको समझाया जाता है अगर उसका पालन करते तो उनके हक़ में भला होता और उस कारण से दीन में मज़बूती से जमे रहते। (६४) और इस सूरत में हम इनको ज़रूर अपनी तरफ़से बड़ा बदलादेते। (६५) और इनको सीधे मार्ग पर ज़रूर लगादेते। (६६) और जो अल्लाह और रसूल का कहना मानै तो ऐसेही लोग उनके साथ होंगे जिनपर अल्लाह ने अहिसान किये यानी नबी और सच्चे लोग और शहीद और भले सेवक और यह लोग अच्छे साथी हैं। (६७) यह अल्लाह की कृपा है और अल्लाहही का जानना काफ़ी है। (६८) (रुकू १०) हे ईमान वालो! अपनी होशियारी रक्खो और जुदे २ गिरोह बांधकर निकलो या इकट्ठे निकलो। (६९) और तुम में कोई ऐसा है जो कि ज़रूर पीछे हट रहेगा फिर अगर तुमपर कष्ट आन पड़े तो कहेगा कि खुदा ने मुझपर अहिसान किया कि मैं इनके साथ मौजूद न था। (७०) और जो खुदा से तुम्हें कृपा मिली तो इसतरह कहने लगेगा गोया खुदा में और तुम में दोस्ती न थी। क्या अच्छा होता जो मैं भी इनके साथ होता तो बड़ी अभिलाषा पूरी करता। (७१) सो जो लोग परलोक के बदले संसार का जीवन बेचते हैं उनको चाहिये कि खुदा की राह में लड़ें और जो खुदा की राहमें लड़े और फिर मारा जावे वा जीतजाय तो हम उसको बड़ा फल देवें गे। (७२) और तुमको क्या होगया है कि अल्लाह की राह में और उन बेबस मनुष्यों, स्त्रियों और बालकों के लिये, दुश्मनो से नहीं लड़ते। जो दुवायें मांगरहे हैं कि हे हमारे पालनकर्त्ता इस बस्ती से निकाल। जहां के रहने वाले हमपर ज़ुल्म कररहे हैं और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा साथी बना और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा मददगार बना। (७३) जो ईमान

रखते हैं वह तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वह शैतान की राह में लड़ते हैं सो तुम शैतान की तरफ़दारों से लड़ो शैतान की तदबीरें निर्बल हैं। (७४)(रुकू ११) क्या तुम-ने उन लोगों को नहीं देखा कि जिनको हुक्म दियागया कि अपने हाथों को रोके रहो और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात दिया करो फिर जब इनपर जहाद फ़र्ज़ हुआ तो एक फ़रीक उनमें से लोगों से डरने लगा जैसे कोई खुदा से डरता है बल्कि उससे भी बढ़कर और शिकायत करने लगा कि हे हमारे पालनकर्ता तूने हमपर जहाद क्यों फ़र्ज़ करादिया हमको थोड़े दिनों और क्यों नहीं जीने देता। (७५) तो कहो कि दुनियां के लाभ थोड़े हैं और जो शख़्स डर रक्खे उसके लिये परलोक भला है और तुम लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा। (७६) तुम कहीं भी हो मौत तुमको आकर घेरैगी अगर्चि पक्के मठों में हो और इनको कुछ फ़ायदा पहुँच जाता है तो कहने लगते हैं कि यह खुदा की तरफ़ से है और अगर इनको कुछ नुक्सान पहुँचजाता है तो कहने लगते हैं कि यह तुम्हारी तरफ़ से है। सो हे पैग़म्बर! तुम इनसे कहदो कि सब अल्लाह की तरफ़ से है तो इन लोगों का क्या हाल है कि बात नहीं समझते। (७७) तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो अल्लाह की तरफ़ से है और तुमको कोई नुक्सान पहुँचे तो तेरी रूह (आत्मा) की तरफ़ से है और हमने तुम लोगों की तरफ़— संदेशा पहुँचाने वाला भेजा है और खुदा की गवाही काफ़ी है। (७८) जिसने पैग़म्बर की आज्ञा मानी उसने अल्लाह ही का हुक्म माना और जो फिर बैठा तो हमने तुमको कुछ इन लोगोंका निगह- बान नहीं भेजा। (७९) और यह (लोग) कह देतेहैं कि हम मानते हैं लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर जातेहैं तो इन मेंसे कुछ लोग रातों को अपने कहे के ख़िलाफ़ सलाह करते हैं और जैसो

जैसी सलाहें रातो का करते हैं अल्लाह लिखता आता है तो इनकी कुछ परवा न करो और अल्लाह पर भरोसा रक्खो और अल्लाह काम सम्भालने वाला काफ़ी है। (८०) तो क्या यह लोग क़ुरान में विचार नही करते और अगर खुदा को सिवाय (किसी और) के पास से आया होता तो ज़रूर उसमें वहुत से भेद पाते। (८१) और जब इनके पास अमन (शान्ति) वा डर की कोई खबर आती है तो उसको ज़ाहिर करदेते हैं और अगर उस खबर को पैग़म्बर तक और अपने अख़्तियार वालों तक पंहुचाते तो जो लोग इनमे से उसको खोद निकालने वालेहैं उसको मालूम करलेते और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो कुछ लोगों के सिवाय शैतान के पीछे चल दिये होते। (८२) तो तुम अल्लाह की राहमे लड़ो तेरी ही जानको तकलीफ़ दी जातीहै और ईमानवालो को उभारो आश्चर्य नहीं कि अल्लाह काफ़िरों के ज़ोर को रोकदे और अल्लाह का ज़ोर ज़्यादा शक्तिवाला और उसकी सज़ा अधिक कड़ी है। (८३) और जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करै उसमें से उसका भी हिस्सा मिलैगा और जो बुरी सिफ़ारिश करे उसमें वह भी शामिल होगा और अल्लाह हर चीज़ पर शान्ति रखनेवाला है। (८४) और जब तुमको किसी तरह पर सलाम किया जाय तो तुम उससे बढ़कर सलाम करदिया करो या वैसाही जवाब दो अल्लाह हर चीज़ का उज्र लेनेवाला है। (८५) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नही इसमें संदेह नही कि क़यामत के दिन वह तुमको ज़रूर इकट्ठा करैगा और अल्लाह से बढकर किसकी बात सच्ची है। (८६) [रकू १२] सो तुम्हारा क्या हालहै कि काफ़िरों के बारे में तुम दो पक्ष (फरीक़) हो रहेहो हालां कि अल्लाह ने उनके कामो के सबब उनको पलट दियाहै क्या तुम यह चाहते हो कि जिसको खुदा ने भटका दिया उसको सीधे रास्ते में लेआओ और

जिसको अल्लाह भटकावे सम्भव नहीं कि तुमसे से कोई उसके लिये रास्ता निकाल सके। (८७) इनकी इच्छा यह है कि जिस तरह खुद काफ़िर होगये हैं उसी तरह तुम भी इनकार करने लगो। ताकि तुम एकही तरह के होजाओ। तो जबतक खुदा की रास्तामे देश त्याग न कर आवें इनमे से मित्र न बनाना। फिर अगर मुख मोड़ें तो इनको पकड़ो और जहां पाओ उनको क़त्ल करो उनमें से मित्र और सहायक न बनाना। (८८) मगर जो लोग ऐसी क़ौम से जा मिलेहैं कि तुमने और उनसे प्रतिज्ञा है तुम्हारे साथ लड़ने से या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से तंगदिल होकर तुम्हारे पास आवें और अगर खुदा चाहता तो इनको तुम पर जीतदेता तो यह तुम से लड़ते। पस यदि तुमसे किनारा खींचजावे और तुमसे न लड़े और तुम्हारी तरफ़ मेलकरे तो ऐसे लोगो पर तुम्हारे लिये अल्लाह ने कोई राह नहीं दी (कि लूटो या मारो) (८९) कुछ और लोग तुम ऐसे भी पाओगे जो तुमसे शान्ति से रहना चाहते हैं और अपनी जातसे शान्ति से रहना चाहते हैं। जब कोई उनको लड़ाई को लेजावे उस हंगामेमें उलट जातेहैं सो अगर तुमसे किनारा खींचे न रहैं और न सुलह करैं और न अपने हाथ रोकैं तो उनको पकड़ो और जहां पाओ उनको क़त्ल करो और यही लोगहैं जिनपर हमने तुमको ज़ाहिरा सनददी है। (९०) [रुकू १२] किसी मुसलमान को लायक नहीं कि मुसलमान को मारडाले मगर भूल से. और जो मुसलमान को भूल से मारडाले तो एक मुसलमान गुलाम छोड़दे

(आयत नं० ८८) इस आयत ने खुदा एक मज़हब का मित्र और एक का शत्रु ठहरायागया है यह बात खुदा मे नहीं है। अगर ऐसा खुदा होता तो दूसरे मज़हब वालेको मारडालना उसे क्या कठिन है. खुदा का न कोई शत्रुहै और न कोई मित्र उसकी दृष्टि में सब प्रकार एकसा है।

और क़त्ल हुएके वारिसों को खूनकी क़ीमत दे मगर यह कि उसके वारिस क्षमा करदें। फिर अगर क़त्ल किया हुआ उन आदमियों में काहो जो तुम मुसलमानों के दुशमन हैं, और वह खुद मुसलमान हो तो एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना होगा (खून की कीमत न देनी होगी) और अगर उन लोगों मेका हो। जिनमें और तुममें प्रतिज्ञा है तो क़त्ल हुए के वारिसों को खूनकी क़ीमत पहुंचावे और और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करें और जिस हत्यारे को शक्ति न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े रक्खे कि तोवा का यह तरीक़ा अल्लाह का ठहराया हुआ है और अल्लाह जानकार और काम सम्भालने वाला है। (६१) और जो मुसलमान को जान बूझकर मारडाले तो उसकी सज़ा नरक है जिसमें वह हमेशा रहैगा और उसपर अल्लाह का कोप होगा और उसपर खुदा की फटकार पड़ैगी और अल्लाह ने उसके लिये वड़ी सज़ा तय्यार कररक्खी है। (६२) हे ईमानवाले! जब तुम खुदाकी राहमें वाहर निकलो तो अच्छी तरह खोज करलिया करो और जो शख़्स तुमसे सलाम करे उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नही क्या तुम दुनियां की ज़िन्दगी के लिये सामान की तलाश मे हो खुदा के यहां वहुत सी लूट मारें हैं पहिले तुमभी तो ऐसेही थे (यानी जान माल वचाने के लिये तुमने कलमा पढलिया था) फिर अल्लाहने तुमपर अपनी कृपा की तो अच्छी तरह जांच करलिया करो अल्लाह तुम्हारे कामों से जानकारहै। (६३) जिन मुसलमानों को उज्र नही और वह वैठ रहे यह लोग उन लोगों के वरावर नही जो अपने माल और जान से खुदा की राह में जहा

आयत नं०-६२ में जो मुसलमानों को क़त्ल करे उसपर खुदा का वड़ा भारी कोप हो और उसे नरक भोगना पड़े और पहिला आयतोमे खुदा खुले मुहँ काफिरों को क़त्ल करने का हुक्म फर्माता है क्या खुदाकी यही खुदाई है।

दकर रहे हैं। अल्लाह ने माल और जान से जहाद करने वालों को वैठ रहने वालों पर वड़ी वडाई दी और खुदा ने सब को खूबो का वादा दिया और अल्लाह ने वडे पुराय की वजह से जहाद करने वालों को वैठ रहने वालों पर वड़ी प्रधानता दी है। (९४) खुदा के यहां दर्जे हैं और उसकी क्षमा और कृपा है और अल्लाह वख्शने वाला मिहरवान है। (९५) (रुकू १४) जो लोग अपने ऊपर आप ज़ुल्म कर रहे हैं फिरिश्ते उनकी जान निकालने के वाद उनसे पूँछते हैं कि तुम क्या करते रहे तो वह जवाव देते हैं कि हम तो वहां वेवश थे (इस पर फिरिश्ते उनसे) कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन गुंजायश नहीं रखती थी कि तुम उसमे देशत्याग करके चले जाते. ग़रज़ यह वह लोग हैं जिन का ठिकाना नरक है और वह बुरी जगह है। (९६) मगर जो पुरुष और स्त्रियां और वालक इस क़दर वेवश हैं कि उन से कोई वहाना करते नहीं वन पड़ता और न उनको कोई रास्ता सूझ पड़ता है। (९७) तो आशा है कि अल्लाह ऐसे लोगों को क्षमा दे और अल्लाह क्षमा करने वाला वख्शने वाला है। (९८) और जो शख्स खुदा की राह में अपना देश त्याग करेगा तो ज़मीन मे उसको ज़ियादह जगह और अधिकता मिलेगी और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके पैग़म्बर को तरफ़ यात्रा करके निकले फिर उसकी मौत आजावे तो अल्लाह के जिम्मे उसका फल सिद्ध होचुका और अल्लाह वख़्शने वाला मिहर-वानहै। (९९) (रुकू १५) और जव तुम कहीको जाओ और तुम को डर हो कि काफ़िर तुम से छेड़ छाड़ करने लगें तो तुम पर कुछ पाप नहीं कि नमाज मे से घटा दिया करो वेशक काफिर तो तुम्हारे खुले दुश्मन है। (१००) और जव तुम मुसलमानों के साथी हो और उनको नमाज पढ़ाने लगो तो मुसलमानो की एक जमात तुम्हारे साथ खड़ी हो और अपने हथियार लिये रहैं फिर जव

सिजदा कर चुकें तो पीछे हटजावें और दूसरी जमात जो नमाज में शरीक नहीं हुई आकर तुम्हारे साथ नमाज़ में शरीक हो और होशियारी और अपने हथियार लिये रहें काफिरों की यह इच्छा है कि तुम अपने हथियारों और साज़ और सामान से बेखबर होजा· ओ तो एक बारगी तुम पर टूट पड़ें और अगर तुम लोगों को मेह की वजह से कुछ कष्ट पहुंचे या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार रखने में तुम पर कोई अपराध नहीं । अपना बचाव रक्खो अल्लाह ने काफिरों के लिये ज़िल्लत की सज़ा तय्यार कर रक्खी है। (१०१) फिर जब तुम नमाज़ पूरी करचुको तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह की यादगारी में लगे रहो फिर जब तुम संतोषित होजाओ तो नमाज़ पढ़ो क्योंकि मुसलमानों पर नियत समय में नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ (कर्तव्य) है (१०२) और लोगों का पीछा करने में हिम्मत न हारो अगर तुम को तकलीफ़ पहुंचती है तो जैसे तुमको तकलीफ़ पहुंचती है उनको भी तकलीफ़ पहुंचती है और तुमको खुदा से वह आशायें हैं जो उनको नहीं और अल्लाह जानकार और काम सम्भालने वाला है। (१०३) (रुकू १६) हमने सच्ची किताब तुम पर उतारी है कि जैसा तुम को खुदा ने बतला दिया है उसके बमूजिब लोगों के आपसों के झगड़े चुका दिया करो और दग़ाबाज़ों के तरफ़दार मतबनो। (१०४) और अल्लाह से माफ़ी चाहो कि अल्लाह बख़्शने वाला मिहरबान है। (१०५) और जो लोग अपने जी से दग़ा रखते हैं उनकी तरफ़ से मत झगड़ा करो क्योंकि दग़ाबाज़ अपराधी खुदा को पसन्द नहीं है। (१०६) लोगों से बातें छिपाते हैं और खुदा से नहीं छिपासकते । हालांकि जब रातों को उन बातों को सलाहें बांधते हैं जिनसे खुदा राज़ी नहीं तो खुदा उनके साथ होता है और जो कुछ करते हैं खुदा के क़ाबू में है। (१०७) सुनो तुमने दुनियां की ज़िन्दगी में उनकी तरफ़

होकर झगड़ा करलिया तो क़यामतके दिन उनकी तरफ़से अल्लाहके साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा। (१०८) और जो कोई बुरा काम करै या आप अपनी जान पर ज़ुल्म करै फिर अल्लाह से क्षमा मांगे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मिहरबान पावेगा। (१०६) जो शख़्स किसी बुराई को करता है तो वह अपनेही हक़ मे खराबी करता है और अल्लाह जानकर यत्नवान है। (११०) और जो शख़्स किसी अपराध व पाप का करने वाला हो फिर वह अपने क़सूर को किसी निरअपराधी पर थोप दे तो उसने लफ़ंट और जाहिरा पाप लादा। (१११) [रुकू १७] और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो उनमें से एक गरोह तुम को बहका देने का इरादा करही चुका था और यह लोग बस अपनेही लिये गुमराह कर रहे है और तेरा कुछ नही बिगाड कर सक्ते क्योंकि अल्लाह ने तुम पर किताब उतारी है और समझ और तुम को ऐसी बाते सिखादी हैं जो तुम को मालूम न थी और तुम पर अल्लाह की बड़ी कृपा है। (११२) इन लोगों को अक्सर कानाफूसियो में खैर नही मगर जो खैरात (दान) में वा अच्छे काम में या लोगो में मेल मिलाप की सलाह दे और जो खुदा की खुशी हासिल करने के लिये ऐसे काम करैगा तो हम उसका बडा बदला देवेगे। (११३) और जो शख़्स सीधी राह के ज़ाहिर हुए पीछे पैग़म्बर से दूर रहे और ईमानवालो के रास्ते के सिवाय किसी और राह पर चले तो जो (राह) उसने पकड़ी है हम उसको उसी रास्ते चलाये जावेंगे और उसको नरक में दाखिल करेंगे और वह बुरी जगह है। (११४) [रुकू १८] यह (पाप) तो अल्लाह क्षमा नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक ठहराया जावे और इससे कम जिसको चाहे क्षमा करे और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह दूर भटक गया। (११५) खुदा के सिवाय तो

बस औरतों ही को पुकारते हैं और उसके सिवाय सरकश शैतान को पुकारते हैं। (११६) जिस को खुदा ने फटकार दिया और वह कहनेलगा कि मैं तो तेरे बन्दों से एक मुक़र्रर हिस्सा ज़रूर लिया करूंगा। (११७) और उनको ज़रूरही बहकाऊंगा और उनको आशायें ज़रूर दिलाऊंगा और उनको सिखाऊंगा कि जानवरों के कान ज़रूर चीरा करें और उनको समझाऊंगा कि खुदा की बनाई हुई सूरतों को बदला करें और जो शख़्स खुदा के सिवाय शैतान को दोस्त बनाये तो वह ज़ाहिरा नुकसान में आगया। (११८) उनको वचन देता और उनको आशायें बँधवाता है और शैतान उनसे जो प्रतिज्ञा करता है निरा धोखा है। (११९) ऐसों का ठिकाना नरक है और वहां से कहीं भागने न पावेंगे। (१२०) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये हम उनको ऐसे बाग़ोंमें दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे अल्लाह की दृढ प्रतिज्ञा है और अल्लाह से बढकर बात का सच्चा कौन है। (१२१) न तुम्हारी विनती पर है और न किताब वालों की विनती पर जो शख़्स बुरा काम करैगा उसकी सज़ा पावेगा और खुदा के सिवाय उसको कोई साथी और मददगार न मिलैगा। (१२२) और जो शख़्स कोई नेक काम करै मर्द हो या औरत और वह ईमान भी रखता हो तो इन गुणों के लोग वैकुण्ठ में दाखिल होंगे और जरा भी उनका हक़ न मारा जायगा। (१२३) और उस शख़्स से किसका दीन बढकर है जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका-दिया और वह भलाई करनेवाला भी है और इब्राहीम के मज़हब पर चलता है जो एकही के हो रहे थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना दोस्त ठहराया है। (१२४) और जो कुछ आस्मानों में है अल्लाह ही का है जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और सब चीज़ें अल्लाहही के क़ाबू में हैं। (१२५) (रुकू १९) और तुम से

(अनाथ) स्त्रियों के साथ (निकाह करने का) हुक्म मांगते हैं तो समझा दो अल्लाह तुम को उनके बारे में आज्ञा देता है और कुरान में जो तुम को सुनाया जाचुका है सो उन अनाथ औरतो के सम्बन्ध में है जिनको तुम (उनका) हक़ जो उनके लिये ठहरा दिया गया है नहीं देते और उनके साथ निकाह करने की तरफ़ इच्छा करते हो और भी बेबश बच्चों के बारे में (भी वही हुक्म देता है) और यतीमों (अनाथो) के हक़ में इन्साफ़ का ख्याल रक्खो और जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (१२६) अगर किसी औरत को अपने पति की तरफ़ से ज़ियादती या दिल फिर जाने का संदेह हो तो दोनों पर कुछ पाप नहीं कि आपस में मेल करले और मेल अच्छा है और कंजूसी तो सभी की तबीयत में होती है और अगर भलाई करो और बचे रहो तो खुदा तुम्हारे कामो से खबरदार है। (१२७) और तुम बहुतेरा चाहो लेकिन यह तो तुम से हो नहीं सकैगा कि बीबियों में एकसा बर्ताव करसको तो बिल्कुल (एक की तरफ़) मत झुक पड़ो कि दूसरी को छोड़ बैठो और अगर मेल करलो और बचे रहो तो अल्लाह बख़शने वाला मिहरबान है। (१२८) और अगर दोनों जुदा होजावें तो अल्लाह अपने खज़ाने से दोनों को परिपूर्ण करदेगा और अल्लाह हिक़मत वाला गुंजाइश वाला है। (१२६) और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाहही का है और जिन लोगों को तुम से पहिले किताब मिली थी उन से और तुम से हमने कह रक्खा है कि अल्लाह से डरते रहो और अगर नहीं मानोगे तो जो कुछ आस्मानो में और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह बेपरवाह है और सर्व गुण युक्त है। (१३०) और अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाहही काम संभालने वाला काफ़ी है। (१३१) अगर वह चाहे तुमको मेट दे और दूसरे को

लावसाये और अल्लाह ऐसा करने पर शक्तिसाली है। (१३२) जिसको बदला दुनियां में दरकार हो तो अल्लाह के पास दुनियां और क़यामत के फल हैं और अल्लाह सुनता देखता है। (१३३) (रुकू २०) हे ईमान वालो ! मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो और अगर्चे तुम्हारे या तुम्हारे माता पिता और सम्बन्धियों के खिलाफ़ ही हो खुदा लगती गवाही दो अगर कोई मालदार या मुहताज है तो अल्लाह बढ़कर उनकी रक्षा करने वाला है। तो तुम ख़्वाहिश के आधीन न होजाओ कि न्याय से मुहँ फेरने लगो और अगर दबी ज़बान से गवाही दोगे या छुपा जाओगे तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे खबर रखता है। (१३४) हे ईमान वालो ! अल्लाह पर और उसके पैग़म्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उन किताबों पर जो पहिले उतारी ईमान लाओ और जो कोई अल्लाह का और उसके फ़िरिश्तों का और उसकी किताबों और पैग़म्बरों का और आखिरी दिनका इनकारी हुआ वह दूर भटक गया। (१३५) जो लोग ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर इन्कार में बढ़ते गये तो खुदा न तो उनको क्षमा करैगा और न उनको राह (रास्त) ही दिखायगा। (१३६) मुनफ़िकों (ज़ाहिरा कुछ भीतरी कुछ) को खुशखबरी सुनादो कि उनको दुःखदाई सज़ा होनी है। (१३७) वे जो मुसलमानो को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं क्या काफ़िरों के यहां इज़्ज़त चाहते हैं सो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह ही की है। (१३८) तुम पर अल्लाह किताब में यह उतार चुका है कि जब तुम सुनलो कि अल्लाह की आयतों से इन्कार किया जारहा है और उनकी हँसी उड़ाई जाती है तो ऐसे लोगों के साथ मत बैठो यहां तक कि किसी दूसरे की बात में लगजावें वर्ना इस सूरत में तुम भी उनही कैसे होजाओगे।

अल्लाह मुनाफ़िको[1] और काफ़िरों सब को नरक में जमा करेगा। (१३६) वह इन्कारी तुम्हे तकते हैं तो अगर अल्लाह से तुम्हारी फतह होगई तो कहने लगते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को नसीब हुई तो कहने लगते हैं कि क्या हम तुम पर नही जीत गये थे और तम को मुसलमानों से नही बचाया था। अल्लाह तुम मे क़यामत के दिन फैसला करदेगा और खुदा काफ़िरों को मुसलमानों पर हरगिज़ जीत न देगा। (१४०) (रुकू २१) काफ़िर खुदा को धोका देते हैं हालांकि खुदा उन्ही को धोका देरहा है और जब नमाज़ के लिये खडे होते हैं तो अलसाये हुये खड़े होते लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर कुछ योंही इनकार और ईमान के बीच मे पड़े भूल रहे है। (१४१) न इनकी तरफ़ और न उनकी तरफ़ और जिस को अल्लाह भटकाये तो उसके लिये कोई राह न पावेगा। (१४२) हे ईमान वालो! ईमानवालो को छोडकर काफ़िरों को दोस्त मतबनाओ क्या तुम खुदा का ज़ाहिरा अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो। (१४३) कुछ संदेह नहीं कि काफ़िर नरक के सब से नीचे के दर्जे में होंगे और तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे। (१४४) मगर जिन लोगो ने तोबा की और अपनी दशा सुधार ली और अल्लाह का सहारा पकड़ा और अपने दीन को खुदा के वास्ते मुक़र्रर कर लिया तो यह लोग मुसलमानो के साथ होंगे और अल्लाह मुसलमानो को बड़े फल देगा। (१४५) अगर तुम लोग शुक्र गुज़ारी करो और ईमान रक्खो तो खुदा को तुम्हें सज़ा देने से क्या फ़ायदा होगा और खुदा क़दरदान जाननेवाला है। (१४६)

---

[1] ज़ाहिरा कुछ और भीतरी कुछ रखनेवाले।

——:※:——

छठवां पारा ।

अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई मुहँ फोड़कर बुरा कहै मगर जिसपर ज़ुल्म हुआहो और (वह मुहँ फोड़कर ज़ालिम को बुरा कह बैठे तो लाचार है) और अल्लाह सुनता जानता है। (१४७) भलाई खुलम खुला करो या छिपाकर करो या बुराई क्षमा करो तो अल्लाह सामर्थ्यवान क्षमा करनेवाला है। (१४८) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों से फिरे हुएहैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बरों से जुदाई डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसी को मानते हैं किसी को नहीं । और चाहते हैं कि इन्कार और ईमान के बीच में कोई राह निकालें। (१४९) तो ऐसे लोग निश्चय काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिये हमने ज़िल्लत की सज़ा तय्यार कररक्खी है। (१५०) और जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उन में से किसी एक को दूसरे से जुदा नहीं समझा तो ऐसेही लोग हैं जिनको अल्लाह उनके फल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला है मिहर्बान है। (१५१) (रुकू २२) किताब वाले तुम से मांगते हैं कि तुम उन पर कोई किताब आस्मान से उतारो तो (इनके बड़े) मूसा से इससे भी बड़ी चीज़ मांग चुके हैं (यानी उन्हों ने) मांगा कि अल्लाह को सामने कर दिखलाओ। फिर उनको उनकी नटखटी के कारण से बिजली ने आदबोचा उसके बाद भी अगर्चि उनके पास चमत्कार आचुके थे तौभी बछड़े को ले बैठे फिर हमने वह भी क्षमा किया । और मूसा को हमने खुली हुई शक्ति दी। (१५२) और उनसे सच्ची प्रतिज्ञा लेने के लिये हमने तूर (पहाड़) को उन पर ला लटकाया और हमने उनको आज्ञा दी कि दरवाज़े में सिर झुकाते हुए दाख़िल होना और हमने उनको

कहा था कि हफ्ते के दिन ज़ियादती न करना और हमने पक्का वचन करलिया। (१५३) पस उनके वचन तोड़ने और अल्लाह की आयतों से इन्कारी होने और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करने के कारण और उनके इस कहने के कारण से कि हमारे दिलों पर पर्दा है। पर्दा नही बल्कि उनके इन्कारी की वजह से (खुदा ने) उनपर मुहर करदी है पस चन्द गिने हुए के सिवाय ईमान नही लाते। (१५४) और उनके इन्कारी की वजह से और मरीयम की निस्बत बड़े लफ्ट बकने की वजह से (१५५) और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मरीयम के बेटे ईसा मसीह को जो रसूल थे क़त्ल करडाला और न तो उन्होने उनको क़त्ल किया और न उनको सूली पर चढ़ाया मगर उनको ऐसाही मालूम हुआ और जो लोग इसबारे मे भेद डालते हैं तो इस मामले में शक मे पड़े हैं। इनको इसकी खबर तो है नही मगर सिर्फ़ अटकलके पीछे दौड़े चले जा रहे है और यक़ीनन ईसाको लोगोने क़त्ल नही किया। (१५६) बल्कि उनको अल्लाहने अपनी तरफ़ उठा लियां औरअल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (१५७) और जितने किताबवाले हैं जरूर अपने मरने से पहिले सबके सब उसपर ईमान लावेंगे और क़यामतके दिन ईसा उनका गवाह होगा। (१५८) अन्तको यहूदियों की शरारत की वजह से हमने पाक चीज़े जो उनके लिये हलाल थीं उनपर हराम करदी हैं और इस वजह से कि अक्सर खुदा की राहसे रोकते थे। (१५९) और इस वजह से कि बारम्बार उनको ब्याज लेने की मनाई करदी गई थी इसपर भी ब्याज लेते थे और इस कारण से कि लोगो के माल नाहक़ बर्बाद करते थे और इनमे जो लोग नही मानते उनकेलिये हमने दुखदाई सज़ा तय्यार कर रक्खी है। (१६०) लेकिन उन (किताबवालो) में से जो विद्या में निपुण और ईमानवाले है और जो तुम पर उतरी है और जो तुमसे पहिले

उतरी है मानते हैं और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और क़यामत का विश्वास रखते हैं। हम उन्हीं को बड़ा फल देंगे। (१६१) [रुकू २३] हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसा संदेशा भेजा है जैसा हमने नूह और दूसरे पैग़म्बरों की तरफ़ और जो उनके बाद हुए भेजा था और हमने इब्राहीम और इस्माईल, इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूबकी संतान, ईसा, आयूब, यूनिस, हारूं और सुलेमानकी तरफ़ खुदाई संदेशा भेजा था और हमने दाऊदको ज़बूर (किताब) दी थी।(१६२) और कितने पैग़म्बरहैं जिनका हाल हम पहिले तुमसे बयान करचुकेहैं और कितने पैग़म्बरहैं जिनका हाल हमने तुमसे बयान् नहीं किया और अल्लाहने मूसासे बातें की थीं। (१६३) और कितने पैग़म्बर खुश खबरी देनेवाले और डरानेवाले आचुके हैं ताकि पैग़म्बरों के पीछे खुदापर दोष देने का मौक़ा न रहे खुदा जीतने वाला और हिकमत वाला है। (१६४) लेकिन जो कुछ खुदाने तुम्हारी तरफ़ उतारा है अल्लाह गवाही देता है कि समझकर उसको उतारा है और फ़िरिश्ते गवाही देते हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (१६५) जो लोग इन्कारी हुए और खुदा की राह से रुके और वह बड़ी दूर भटक गये। (१६६) जो लोग काफ़िर हुए और ज़ुल्म करते रहे उनको खुदा न तो बख्शेहोगा और न उनको राहही दिखलावेगा। (१६७) बल्कि नरक की राह जिसमें हमेशा रहेंगे और अल्लाह के नज़दीक यह सहल है। (१६८) हे लोगो ! पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से ठीक बात लेकर आये हैं। पस ईमान लाओ तुम्हारा भला होगा और अगर न मानोगे तो जो कुछ आस्मान और ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह हिकमत वाला जानकार है। (१६९) किताब वालो अपने दीनमें हद से बढ न जाओ और खुदा की बाबत सच बात निकालो मरीयम के बेटे ईसामसीह बस अल्लाह के पैगम्बर हैं

और खुदा का हुक्म जो उसने मरीयम की तरफ कहला भेजा था और आत्मा खास अल्लाह की तरफ़ से आई पस अल्लाह और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और तीन (खुदा) न कहो । मान जाओ तुम्हारा भला होगा अल्लाह एक है वह इस लायक़ नहीं कि उसके कोई संतान हो उसी का है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है और अल्लाह कामका सम्भालनेवाला काफ़ीहै । (१७०) [रुकू २४] मसीह को खुदा का सेवक होने मे कदापि लज्जा नहीं और न फिरिश्तों को जो नज़दीक हैं और जो खुदा का सेवक होने से लज्जा करे और घमण्ड करे तो खुदा जल्द इन सबको खींच बुलावेगा । (१७१) फिर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये खुदा उनको पूरा बदला देगा और अपनी कृपा से ज़ियादा भी देगा और जो लोग लज्जा रखते और घमण्ड करते हैं खुदा उनको दुख-दाई सज़ा देगा । (१७२) और खुदा के अलावह उनको न कोई साथी मिलैगा और न मददगार । (१७३) हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से हुज्जत आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाता हुई रोशनी (कुरान) उतार सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये उन्होंने उसी का सहारा पकड़ा तो अल्लाह उनको जल्द अपनी कृपा और दया में ले लेगा और उनको अपनी तरफ़ की सीधी राह दिखला देगा । (१७४) तुमसे हुक्म मांगते हैं कहदो कि अल्लाह कलाला (जिसके संतान व बाप दादा न हो उसे क़लाला कहते हैं) के बारे में तुमको हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मरजावे जिसके संतान न हो और उसके बिहन हो तो बिहन को उसके तर्के का आधा और अगर बिहन के संतान न हो तो उसका वारिस वही भाई फिर अगर बिहने दो हों तो उनको इसके तर्के में से दो-तिहाई और अगर भाई बिहन (मिलेजुले) हों तो दो औरतों के हिस्से के बराबर एक मर्द का हिस्सा होगा । तुम लोगों के भटकने

उतरी है मानते हैं और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और क़यामत का विश्वास रखते हैं। हम उन्हीं को बड़ा फल देंगे। (१६१) [रुकू २३] हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसा संदेशा भेजा है जैसा हमने नूह और दूसरे पैग़म्बरों की तरफ़ और जो उनके बाद हुए भेजा था और हमने इब्राहीम और इस्माईल, इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूबकी संतान, ईसा, आयूब, यूनिस, हारूं और सुलेमानकी तरफ़ खुदाई संदेशा भेजा था और हमने दाऊदको ज़बूर (किताब) दी थी।(१६२) और कितने पैग़म्बरहैं, जिनका हाल हम पहिले तुमसे बयान करचुकेहैं और कितने पैग़म्बरहैं जिनका हाल हमने तुमसे बयान् नहीं किया और अल्लाहने मूसासे बातें की थी। (१६३) और कितने पैग़म्बर खुश खबरी देनेवाले और डरानेवाले आचुके हैं ताकि पैग़-म्बरों के पीछे खुदापर दोष देने का मौक़ा न रहे खुदा जीतने वाला और हिकमत वाला है। (१६४) लेकिन जो कुछ खुदाने तुम्हारी तरफ़ उतारा है अल्लाह गवाही देता है कि समझकर उसको उतारा है और फ़िरिश्ते गवाही देते हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (१६५) जो लोग इन्कारी हुए और खुदा की राह से रुके और वह बड़ी दूर भटक गये। (१६६) जो लोग काफ़िर हुए और जुल्म करते रहे उनको खुदा न तो बख्शेहोगा और न उनको राहही दिख-लावेगा। (१६७) बल्कि नरक की राह जिसमें हमेशा रहेंगे और अल्लाह के नज़दीक यह सहल है। (१६८) हे लोगो ! पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से ठीक बात लेकर आ-ये हैं। पस ईमान लाओ तुम्हारा भला होगा और अगर न मानोगे तो जो कुछ आस्मान और ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह हिकमत वाला जानकार है। (१६९) किताब वालो अपने दीनमें हद्द से बढ न जाओ और खुदा की बाबत सच बात निकालो मरीयम के बेटे ईसामसीह बस अल्लाह के पैगम्बर हैं

और खुदा का हुक्म जो उसने मरीयम की तरफ कहला भेजा था और आत्मा खास अल्लाह की तरफ़ से आई पस अल्लाह और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और तीन (खुदा) न कहो । मान जाओ तुम्हारा भला होगा अल्लाह एक है वह इस लायक़ नहीं कि उसके कोई संतान हो उसी का है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है और अल्लाह कामका सम्भालनेवाला काफीहै । (१७०) [रुकू २४] मसीह को खुदा का सेवक होने मे कदापि लज्जा नही और न फिरिश्तो को जो नज़दीक हैं और जो खुदा का सेवक होने से लज्जा करे और घमण्ड करे तो खुदा जल्द इन सबको खींच बुलावेगा। (१७१) फिर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये खुदा उनको पूरा बदला देगा और अपनी कृपा से ज़ियादा भी देगा और जो लोग लज्जा रखते और घमण्ड करते हैं खुदा उनको दुख-दाई सज़ा देगा। (१७२) और खुदा के अलावह उनको न कोई साथी मिलैगा और न मद्दगार। (१७३) हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से हुज्जत आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाता हुई रोशनी (क़ुरान) उतार सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये उन्होने उसी का सहारा पकड़ा तो अल्लाह उनको जल्द अपनी कृपा और दया मे ले लेगा और उनको अपनी तरफ़ की सीधी राह दिखला देगा। (१७४) तुमसे हुक्म मांगते हैं कहदो कि अल्लाह क़लाला (जिसके संतान व बाप दादा न हो उसे क़लाला कहते हैं) के बारे में तुमको हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मरजावे जिसके संतान न हो और उसके बहिन हो तो बहिन को उसके तर्के का आधा और अगर बहिन के संतान न हो तो उसका वारिस वही भाई फिर अगर बहिनें दो हों तो उनको इसके तर्के में से दो-तिहाई और अगर भाई बहिन (मिलेजुले) हो तो दो औरतो के हिस्से के बराबर एक मर्द का हिस्सा होगा । तुम लोगो के भटकने

के ख्याल से अल्लाह तुमसे खोल २ कर बयान करता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (१७५)॥

सूरे मायदा (दस्तरख्वान)

यह मदीने में उतरी इसमें १२० आयतें १६ रुकू हैं।

शुरूअ अल्लाह के नामसे जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

हे ईमानवालो? क़रार पूरा करो। (१) मुसलमानो अल्लाह के नाम की चीज़ें हलाल न समझो और न अदबवाला महीना और चढ़ाये के जानवर जो मक्के को जावें और न उनको जिनके गलों में पट्टे बांधदियेगयेहों न उनकी जो इज़्ज़तवाले घरको अपने पालनकर्ता की कृपा और खुशी ढूढने जाते हों और जब अहराम[1] से निकलो तो शिकार करो। कुछ लोगों ने तुमको इज़्ज़तवाली मसजिद से रोका था। यह दुश्मनी तुमको ज़ियादती करने का कारण न हो और नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे के मददगार हो। और पाप और ज़ियादती में एक दूसरे के मददगार न बनो और अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह की सज़ा सख़्तहै। (२) मरा हुआ और लोहू और सूअर का मांस और जो खुदा के सिवाय किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो और जो गला घुटने से मरगया और जो चोट से मरा हो और जो ऊपर से गिरकर मरा हो और सींगों से मारा हुआ हो यह सब चीज़ें तुमपर हराम करदी गईं और [illegible] को दांतवालो ने खाया हो मगर जिसको हलाल करलो और पत्थरों (क़ाबेके आस पास वाले पत्थर) पर ज़िबह (क़त्ल किया गयाहो हराम है। और पांसे डालकर बांटना हराम है पाप का काम है काफ़िर तुम्हारे दीनकी तरफ़ से निराश हुए

[1] अहराम—मुसलमान हज्ज (यात्रा) प्रारम्भ से स[illegible] एक कपड़ा पहिनते हैं उसे अहरामकहते हैं॥

उनसे न डरो। और हमही से डरो। आज हम तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिये पूरा करचुके और हमने तुम पर अपना अहसान पूरा कर दिया और हमने तुम्हारे लिये दीन इस्लाम को पसन्द किया फिर जो भूखसे व्याकुलहो पापकी तरफ़ उसकी चाह न होतो अल्लाह बख़्शनेवाला मिहरबान है (वहऊपर हरामकी हुई चीज़े खासक्ता है)। (३) तुमसे पूछते हैं कि कौन २ सी चीज़े उनके लिये हलाल की गई है सो तुम उनको समझा दो कि साफ़ चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल हैं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिये सिखला रक्खे हो हलाल है जैसा तुम को खुदा ने सिखला रक्खा है वैसाही तुमने उनको सिखला दियाहै तो जो तुम्हारे लिये पकड़ रक्खे तो उसको खालो मगर शिकारी जानवर के छोड़ते वक्त खुदा का नाम लेलिया करो और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि खुदा दम भर मे हिसाब लेलेगा। (४) आज पाक चीज़े तुम्हारे लिये हलाल कर दीगईं और किताब वालों का खाना तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है और मुसलमान व्याहता बीबियां और जिन लोगो को तुम से पहिले किताब दी जाचुकी है उन में की व्याहता बीबियां (तुम्हारे लिये) हलाल हैं बशर्ते कि उनके मिहर उनके हवाले करो और तुम्हारा इरादा (निकाह) क़ैद में लाने का हो न मस्ती निकालनेका और न चोरी छिपे आशनाई करनेका और जो ईमान को न माने तो उसका किया अकारथ। क़यामत में वह नुक़सान उठानेवालों मे होगा। (५) (रुकू २) मुसलमानो! जब नमाज़ के लिये तय्यार हो तो अपने मुंह हाथ कुहनियों तक धो लिया करो और अपने शिर को मललिया करो पैरो को गुरवा तक धो लिया करो और अगर नापाक हो तो स्नान करलिया करो और अगर बीमार हो या सफ़र मे हो या तुम मे से कोई पाखाने से आया हो या तमने स्त्रियों से प्रसंग (सुहबत) किया हो और तुम को पानी

न मिलसके तो साफ़ मिट्टी लेकर उससे तयम्मुम यानी अपने मुह और हाथों को मल लिया करो। अल्लाह तुम पर किसी तरहकी कड़ाई करना नहीं चाहता बल्कि तुमको साफ़ सुथरा रखना चाहता है और यह कि तुम पर अपना अहसान पूरा करै ताकि तुम शुक्र करो (कृतज्ञ हो) (६) और अल्लाहने जो तुमपर अहसान किये हैं उनको याद करो और उसका अहद (प्रतिज्ञा) जो तुम पर ठहराया गया है जब तुमने कहा कि हमने सुना और माना और खुदा से डरते रहो क्योंकि अल्लाह दिलों की बातें जानता है। (७) मुसलमानो! खुदा के वास्ते न्याय के साथ गवाही देने को तय्यार रहो और लोगों की दुश्मनी से न्याय न छोड़ो। न्याय परहेज़ गारी से ज़ियादह नज़दीक है और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है। (८) जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने अच्छे काम किये अल्लाह से उनकी प्रतिज्ञा है कि उनके लिये बख्शिश और बड़ा बदलाहै। (९) और जिन लोगोंने इन्कार किया और हमारी आयतों को झूठलाया वह नरक वासी हैं। (१०) हे मुसलमानो! अल्लाह ने जो तुम पर अहसान किये हैं याद करो कि जब कुछ लोगों ने (कुरेश जातिने) तुम पर हाथ फेंकने का इरादा किया था तो खुदा ने तुम से उनके हाथों को रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मुसलमानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा, रक्खें। (११) (रुकू २) और अल्लाह इसराईल के बेटों से वचन लेचुका है और हमने उन्ही में के बारह सिरदार उठाये और अल्लाह ने कहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं अगर तुम नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और हमारे पैग़म्बरों को मानों और उनकी मदद करो और खुशदिली से खुदा को कर्ज़ देते रहो तो हम ज़रूर तुम्हारे पाप तुम से दूर करदेंगे और ज़रूर तुम को ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी इसके बाद जो तुम में से फिरेगा तो

बेशक वह सीधी राह से भटक गया। (१२) पस उन्ही लोगो को उनकी प्रतिज्ञा तोड़ने के कारण से हमने उनको फटकार दिया और उनके दिलो को कड़ा कर दिया कि वह बातो को उनके ठिकानों से बदलते हैं और उनको जो शिक्षा दीगई थी उस से भाग लेना भूल गये और उनमे से चन्द लोगो के सिवाय उन सब के दग़ा की खबर तुम को होती ही रहती है तो उन लोगो के अपराध क्षमाकरो और दर गुज़र करो क्योंकि अल्लाह नेकी वालों को चाहता है। (१३) और जो लोग अपनेको ईसाई कहते हैं हमने उनसे वचन लिया था। तो जो कुछ उनको शिक्षा दीगई थी उस से फ़ायदा उठाना भूल गये। फिर हमने उनमें दुश्मनी और ईर्षा क़यामत के दिन तक के लिये लगादी और आखिर कार ख़ुदा उनको बतला-येगा जो कुछ करते थे। (१४) हे किताब वालो! तुम्हारे पास हमारा पैग़म्बर आचुका है और किताब में से जो कुछ तुम छिपाते रहे हो वह उसमे से बहुत कुछ तुमसे साफ़ २ बयान करता है और बहुतेरी बातों से जान बूझकर टराता है। अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे पास रोशनी और क़ुरान आचुका है। (१५) जो ख़ुदा की मरज़ी पर चलते हैं उनको अल्लाह क़ुरान के ज़रिये ठीक राहें दिख-लाता है और अपनी कृपा से उन को अन्धेरों से निकालकर रोशनी में लाता है और उनको सीधी राह दिखलाता है। (१६) जो लोग मरीयम के बेटे मसीह को ख़ुदा कहते हैं वही काफ़िर हैं। हे पैग़म्बर इन लोगो से कहो कि अगर अल्लाह मरीयम के बेटे मसीह को और उनकी माता को और जितने लोग ज़मीन मे हैं सब को मार डालना चाहे तो ऐसा कौन है जो उसकी इच्छा को रोके और आसमान और जमीन और जो कुछ आसमान और ज़मीन के बीच में है अल्लाहही का है। जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिसाली है। (१७) और यहूद व

ईसाई दावा करते है कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं कहो वह तुम्हारे पापों के बदले में तुमको सज़ा ही क्यों दिया करत है। बल्कि खुदा ने जो पैदा किये हैं उनही में इन्सान तुम भी हो खुदा जिसको चाहे क्षमा करै और जिसको चाहे सज़ा दे औ आस्मान और ज़मीन और जो कुछ आस्मान व जमीन के बीच है सब अल्लाह ही के अख़्तियार में है और उसी को तरफ़ लौटक जाना है। (१८) हे किताब वालो! पैग़म्बरों का तोड़ा परे पी हमारा पैग़म्बर तुम्हारे पास आया है ताकि तुम न कहो कि हमा पास कोई खुश खबरी सुनाने वाला आया और डरानेवाला नह आया। पस खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला आचुका औ अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिसाली है। (१६) (रुकू ४) और जब मूसाने अपनी जाति से कहा कि भाइयो अल्लाह ने जो तुम पर अहसा किये हैं उनको याद करो। उसने तुम में पैग़म्बर बनाये और तुमव बादशाह बनाया। और तुमको वह पदार्थ दिये हैं जो दुनियां जहान लोगों में से किसी को नही दिये (२०) भाइयो! पाक ज़मीन खुदा ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है उसमें दाखिल हो और पी न फेरना नही तो उलटे घाटे में आजाओ गे। (२१) कहने लगे कि हे मूसा! उस मुल्क में तो बड़े ज़बरदस्त लोग और जब तक वह वहां से न निकले हम उसमें पैर न रक्खेंगे उसमें से निकल जावें तो हम ज़रूर दाखिल होंगे। (२२) मानने वालों में से दो आदमी (यूशा और कालिब) थे कि उ खुदाने कृपा की। यह बोल उठे उनपर (चढ़ाई करके बैतुल मुक के) दरवाज़े में घुसपड़ो और जब दरवाजे में घुस पडो निश्चय तुम्हारी जीत है और अगर तुम ईमान रखते हो तो अ ही पर भरोसा रक्खो वह बोले:—हे मूसा जब तक उसमें दुश्मनहैं उसमें न जावेंगे। हां तुम और तुम्हारे खुदा जाओ और उ

लड़ो हम तो यहीं बैठे हैं। (२५) मूसा ने कहाः—हे मेरे पालन-कर्त्ता अपनी जान और अपने भाई के सिवाय कोई मेरे वश का नहीं। तू हममें और इन बे हुक्म लोगों में भेद डालदे। (२६) खुदाने कहाः—वह मुल्क चालीस वर्ष तक इनको न मिलेगा। जंगल में भटकते फिरेंगे। तू बे हुक्म लोगों पर अफसोस न कर। (२७) [रुकू ५] और (हे पैगम्बर) इन लोगों को आदम के दो बेटे हाबील और क़ाबील) के सच्चे हालात पढ़कर सुनाओ कि जब दोनों ने भेंट चढ़ाई। उनमें से एक (यानी हाबील) की क़बूल हुई और दूसरे (यानी क़ाबील) की क़बूल न हुई। तो क़ाबील कहने लगा कि मैं तुझको जरूर मार डालूंगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ़ परहेज़गारों की क़बूल करता है। (२८) अगर मेरे मार डालने के इरादे से तू मुझपर अपना हाथ चलायगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिये तुझ पर अपना हाथ न चलाऊंगा क्यों कि मैं अल्लाह संसारके पालनेवाले से डरताहूं।(२९) मैं यह चाहता हूं कि तू मेरा और अपना पाप समेटले और नरक वासियों में होजावे और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (३०) इसपर भी उसके दिल ने उसको अपने भाई के मार डालने पर आमादा किया आखिरकार उसको मार डाला और घाटे में आगया। (३१) इसके पीछे अल्लाह ने एक कौवा भेजा वह ज़मीन को खोदने लगा ताकि उसके (काबील-को) दिखाए कि वह अपने भाई की बदनामी को क्योंकर छिपावे (चुनांचि वह कौवे को ज़मीन खोदते देखकर) बोल उठा। हाय मैं इस कौवे को बराबर भी नहीं हूआ कि भाई के ऐबों को छिपाता (निदान वह पछताया। (३२) इस वजह से हमने इसराईल के बेटों को हुक्म दिया कि जो कोई किसी जानको बिना बदले या मुल्की फ़साद के बग़ैर किसी को मार डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को मारडाला और जिसने एक को बचालिया तो गोया

उसने तमामआदमियो को बचालिया।(३३) और उन(इसराईल के बेटों)के पास हमारे रसूल खुले खुले चमत्कार लेकर आ भी चुके हैं फिरइस्के वाद इनमें से वहुतेरे मुल्कमें ज़ियादतियां करते फिरते हैं। (३४) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरसे लड़ते और फ़िसाद को ग़रज़ से मुल्क में दौड़े फिरते हैं उनकी सज़ा तो यही है कि मार डाले जावें या उनको सूली दीजावे या उनके हाथ पांव उलटे काट दिये जायँ (यानी सीधा हाथ काटा जावे तो वायां पैर काटा जावे या वांयां हाथ तो सीधा पैर) या उनको देश निकाला दिया जाय। यह तो दुनिया मे उनकी वदनामी हुई और क़यामत मे वड़ी सज़ा है। (३५) मगर जो लोग तुम्हारे क़ावू मे आने से पहिले तोवा करलें तो जाने रहो कि अल्लाह माफ करने वाला मिहर्वान है। (३६) (रुकू ६) हे मुसल्मानो ! अल्लाह से डरो और उस तक (पहुँचने) के ज़रिये तलाश करते रहो और उसकी राह में जान लड़ादो शायद तुम्हारा भला हो। (३७) जिन लोगो ने इन्कार किया अगर उनके पास वह सव हो जो ज़मीन में है और उतनाही उसके साथ और भी हो ताकि क़यामत के रोज़ सज़ा के वदले में उसको दे निकलें उनसे कवूल नही किया जायगा और उन के लिये दुःखदाई सज़ा है। (३८) चाहेंगे कि आग से निकल भागें मगर वह वहां से नही निकलने पायँगे और उनके लिये हमेशगी की सज़ा है। (३९) अगर मर्द चोरी करै तो और औरत चोरी करै तो उनकी करतूत के वदले मे दोनो के हाथ काट डालो। सज़ा खुदा से है और अल्लाह ज़वरदस्त जानकार है। (४०) अपने अपराध के पीछे तोवा कर ले और सम्भाल ले तो अल्लाह उसकी तोवा क़वूल कर लेता है क्योकि अल्लाह वख़्शनेवाला मिहरवान है। (४१) क्या तुझको मालूम नही कि आस्मान और ज़मीन में अल्लाही की हकूमत है जिसको चाहे सज़ा दे और जिसको चाहे क्षमा करै अल्लाह हर

चीज़ पर शक्तिसाली है। (४२) हे पैग़म्बर जो लोग इन्कारी की तरफ़ दौड़ते हैं और चन्द ऐसे हैं जो अपने मुँह से तो कहदेते हैं कि ईमान लाये और उनके दिल ईमान नही लाये इनके कारण से तू उदास न हो और बाज़ यहूदी हैं झूंठी बातों को ढूंढ़ते फिरते हैं और दूसरे लोगों के वास्ते जो तुम्हारे पास नही आये बातों को बे ठिकाने कर देते हैं (और लोगो से) कहते हैं कि अगर तुम को यही (हुक्म) दिया जावे तो उसको मानना और अगर तुम को यह हुक्म न मिले तो मानने से बचना और जिन को अल्लाह विपत्ति में फँसा हुआ रक्खा चाहे तो उसके लिये खुदा पर तुम्हारा कुछ भी वश नही चल सक्ता। यह वह लोग हैं कि खुदा भी इनके दिलों को पाक करना नही चाहता। इन लोगों की दुनियां में बद-नामी है और क़ुयामत मे इनके लिये बड़ी सख़्त सज़ा है। (४२) झूंठी बातों को ढूंढ़ते फिरते हैं हराम का खाते हैं तो अगर वह तुम्हारे पास आवें तो तम इनमे फ़ैसला करो वा इनसे अल्लाहिदा हो और अगर तुम इनसे अलग रहोगे तो तुम को किसी तरह का भी नुक़सान नहीं पहुंचासकेंगे और अगर फैसला करो तो इन में इन्साफ के साथ फैसला करना क्योंकि अल्लाह इन्साफ़ करने वाले को मित्र रखता है। (४४) और यह लोग क्यों तुम्हारे पास झगड़े ते करने को लाते हैं जब कि खुद इनके पास तौरात है उस मे खुदा की आज्ञा है फिर इसके बाद वह उससे फिर जाते है और वे अपनी किताब पर भी ईमान नहीं रखते। (४५) [रुकू ७] हमने तौरात उतारी जिसमें शिक्षा और रोशनी है। आज्ञाकारी पैग़म्बर उसी के मुताबिक़ यहूदियों को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियो के पुजारी और विद्वान भी उसी के मुताबिक़ हुक्म देते थे क्योंकि वह सब अल्लाह की किताब के रक्षक और गवाह ठहराये गये थे। पस हे यहूदियो तुम आदमियों से न डरो और हमारा ही

डर मानो और हमारी आयतों के बदले में नाचोज़ फ़ायदे मतलो और जो खुदा की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दें तो यही लोग काफ़िर हैं। (४६) और हमने तौरात में यहूद को तहरीरी आज्ञा दी थी कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मो का बदला बराबर है फिर जो बदला क्षमा कर दे तो वह उसका कफ्फारा (पाप से छुटकारा) होगा और जो खुदा की उतारी हुईके मुताबिक हुक्म न दे दा वहीलोग अन्यायी हैं। (४७) और बाद को इन्हीं के पैर पर परे हमने मरीयम के बेटे ईसा को चलाया कि वह तौरात की जो उनके पहिले से थी तसदीक करते थे और उनको हमने इंजील दी जिसमें (समझ और प्रकाश) है और तौरात जो उसके पहिले से थी उसकी तसदीक भी करती है और परहेज़ गारों के लिये शिक्षा और उपदेश है। (४८) और इन्जील वालों को चाहिये कि जो खुदा ने उसमें (हुक्म) उतारे हैं उसी के मुताबिक़ आज्ञा दिया करें और जो खुदा के उतारे हुए के मुताबिक हुक्म न दे तो यही लोग बेहुक्म (अवज्ञा कारी) हैं। (४९) और हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी कि जो किताबें इसके पहिले से हैं उनकी तसदीक़ करती हैं और उनकी रक्षक है तो जो कुछ खुदा ने उतारा है तुम उसी के मुताबिक़ इन लोगों में हुक्म दो और जो सच्ची बात तुम को पहुँची है उसको छोड़ कर इनकी ख़्वाहिशों की पैरवी मत करो हमने तुम में से हर-एक के लिये एक शरीयत (नीति) और तरीक़ा दिया। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एकही दीन पर करदेता। लेकिन यह चाहा गया है कि जो हुक्म तुमको दिये उनमें तुम को आज़-माये। सो तुम नेक कामों की तरफ़ चलो तुम सब को अल्लाहही की तरफ़ लौटकर जाना है। तो जिन २ बातों में तुम लोग भेद करते

रहे हो वह तुम को बतादेगा। (५०) हे पैग़म्बर जो किताब ख़ुदा ने उतारी है उसी के मुताबिक़ इन लोगों को हुक्म दो और उनकी इच्छाओं की पैरवी न करो और इन से डरते रहो कि जो ख़ुदा ने तुम्हारी तरफ़ उतारी है उसके किसी हुक्म से यह लोग कहीं तुम को भटका न दें फिर अगर न मानें तो जानें रहो कि ख़ुदा ने इनके बाज़े अपराधों के कारण इन को सज़ा पहुंचाना चाही है और लोगों में बहुत से बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं। (५१) क्या मूर्खता की आज्ञा चाहते हैं और जो लोग यक़ीन करने वाले हैं उनके लिये अल्लाह से बेहतर आज्ञा देने वाला कौन होसक्ता है। (५२) (रुकू ८) मुसलमानो ! यहूद और ईसाई को मित्र न बनाओ यह एक दूसरे के मित्र हैं और तुम में से कोई इनको दोस्त बनावेगा तो बेशक वह इन्हों में का है क्योंकि ख़ुदा ज़ालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता। (५३) तो जिन लोगों के दिलों में (फूट का) रोग है तुम उनको देखोगे कि यहूदियों में कहते फिरते हैं कि हम को तो इस बात का डर लगरहा है कि हम पर विपत्ति न आजावे। सो कोई दिन जाता है कि अल्लाह जय या कोई हुक्म अपनी तरफ़ से भेजेगा तो उस पर जो अपने दिलों में छिपाते थे हैरान होंगे। (५४) और मुसलमान कहेंगे कि क्या यह वही लोग हैं जो बड़े ज़ोर से अल्लाह की क़सम खाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं इनका सब किया अकार्थ हुआ और नुक़सान में आगये। (५५) मुसलमानो ! तुम में से कोई अपने दीन से फिर जावे तो ख़ुदा ऐसे लोग (ला) मौजूद करेगा जिन को वह दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे मुसलमानों के साथ नरम काफ़िरों के साथ कड़े होंगे अल्लाह की राह में अपनी जानें लड़ावेंगे और किसी की मलामत का डर नहीं रक्खेंगे—यह ख़ुदा का दया है जिसको चाहेदे और अल्लाह बहुत जानने वाला है। (५६)

बस तुम्हारे तो यही मित्र हैं अल्लाह और अल्लाह का पैग़म्बर और मुसलमान जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और झुके रहते हैं। (५७) और जो अल्लाह और अल्लाह के पैग़म्बर और मुसलमानों का दोस्त होकर रहेगा तो अल्लाह वाले ही को जय है। (५८) (रुकू ६) मुसलमानो ! जिन्हों ने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रक्खा है यानी जिन को तुम से पहिले किताब दी जाचुकी है और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ और अगर तुम यक़ीन रखते हो तो खुदा से डरते रहो। (५६) और जब तुम नमाज़ के लिये (बांग देकर) बुलाते हो तो यह लोग नमाज़ को हँसी और खेल बनाते हैं यह इसलिये कि यह लोग ना समझ हैं। (६०) कहो कि हे किताबवालो (यहूद) क्या तुम हमसे इसीलिये दुश्मनी रखते हो कि हम अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ उतरी है उसपर और जो पहिले उतर चुकी है उसपर ईमान ले आये हैं और यह कि तुम में के अक्सर बेहुक्म हैं। (६१) कहो कि मैं तुम को बताऊं जो खुदा के नज़दीक बुरे बदले के लायक़ हैं। वह जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना कोप उतारा और किसी को बन्दर और सुअर बना दिया था जो शैतान को पूजने लगे तो यह लोग दर्जे में हम से कहीं खराब ठहरे और सीधी राह से बहुत भटक गये। (६२) और जब तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम ईमानलाये हालांकि इन्कारीही को साथ लेकर आये थे और इन्कारी को साथ लिये चले गये और जो छिपाये हुये थे अल्लाह उसको खूब जानता है ।(६३) और तुम इनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह की बात और ज़ुल्म और हराम का माल खाने पर गिरे पड़ते हैं क्या बुरे काम हैं जो वे करते हैं। (६४) इनके पुजारी और पण्डित इन को झूंठ बोलने और हराम का माल खाने से क्यों नहीं मने करते क्या बुरे काम हैं जो वह कररहे हैं। (६५) और यहूदी

कहते हैं कि ख़ुदा का हाथ तंग है। इन्हीं के हाथ तंग होजायँ और इनके कहनेपर इनको लानतहै बल्कि खुदाके दोनोहाथ फैलेहुएहैं जिस तरह चाहता है खर्च करता है और जो तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम पर उतरा है ज़रूर उनमें से बहुतेरो को नरखटी और इन्कारो के ज़ियादह होने का सबब होगा और हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्षा क़यामत तक डालदी हैं जब २ लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसको बुझा देता है और मुल्कमें फिसाद फैलाते फिरते हैं और अल्लाह फ़िसादियों को दोस्त नही रखता। (६६) और अगर किताब वाले ईमानलाते और डरते तो हम इनसे इनके अपराध ज़रूर उतार देते और इनको पदार्थों के बागों मे भी ज़रूर दाखिल करते और अगर यह तौरात और इन्जील और उनको जो उनपर इनके पालनकर्त्ताकी तरफ़से उतरी हैं क़ायम रखते तो जरूर ऊपरसे और पांवके तलेसे खाते इनमें से कुछ लोग सीधेहैं और इनमें से अक्सर तो बहुतही बुराकर रहेहैं। (६७) [रुकू १०] हे पैग़म्बर जो तुमपर तुम्हारे पालनकर्त्ताकी तरफ़से उतरा है। पहुंचा दे और अगर तुमने न किया तो तुमने खुदाका पैग़ाम नहीं पहुंचाया और अल्लाह तुमको लोगोंसे बचावेगा क्योंकि अल्लाह उनको जो काफ़िर हैं रस्ता नहीं दिखायगा ।। (६८) कहो कि हे किताब वालो! जब तक तुम तौरात और इन्जील और जो तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम पर उतरी हैं उसे न मानो तब तक तुम राह पर नहीं हो। और जो तुमपर तुम्हारे पालनकर्त्ता को तरफ़ से उतरा है उनमें से बहुतेरो की सरकशी और इन्कारी को ही बढ़गया सो तू काफ़िरो पर अफ़सोस न कर। (६९) इसमें कुछ सन्देह नहीं जो

बन्दर और सूअर बना दिया—इससे मालूम होता है कि कर्मों के बमूजिब इनको बन्दर और सूअर बनादिया—आवागमन यानी तनासुक सिद्ध होता है ॥

मुसलमान हैं और यहूदी हैं और साबी और ईसाई हैं जो कोई अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाये और नेक काम करे तो ऐसे लोगों पर न भय होगा और न वह उदासीन रहेंगे। (७०) हम याकूब के बेटों से प्रतिज्ञा करा चुके हैं और हमने इनकी तरफ़ बहुत पैग़म्बर भी भेजे—जब कभी कोई पैग़म्बर इनके पास ऐसी आज्ञा लेकर आया जिनको उनके दिल नहीं चाहते थे तो बहुतोंने झुठलाया और बाज़ने कितनों को क़त्ल किया। (७१) और समझे कोई विपत्ति नहीं आयगी सो अन्धे और बहरे होगये फिर खुदा ने उनकी तौबा क़बूल करली फिर भी इनमें से बहुतेरे अन्धे और बहरे बने और जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह देख रहा है। (७२) जो लोग कहते हैं कि खुदा तो यही मरीयम के बेटे मसीह हैं यह लोग काफ़िर होगये और मसीह समझाया करते थे कि हे याक़ूब के बेटो अल्लाह की पूजा करो कि वह मेरा और तुम्हारा पालनकर्त्ता है और शक नहीं कि जिसने अल्लाह का साझी ठहराया बैकुण्ठ उसपर हराम होचुका और उसका ठिकाना नरकहै और ज़ालिमों का कोई भी सहायकनहीं (७३) जो लोग कहते हैं खुदातो यही तीनमें का एक है बेशक काफ़िर होगये हालांकि एक खुदा के अलावह और कोई पूजित नहीं और जैसी जैसी बातें यह लोग कहते हैं अगर उनसे बाज़ नहीं आयेंगे तो जो लोग इनमें से काफ़िरहैं इनपर दुःखदाई सज़ा होगी। (७४) वह क्यों नहीं खुदा के आगे तौबा करके अपराध क्षमा कराते हालांकि अल्लाह क्षमाकरने वाला मिहरबान है। (७५) मरीयम के बेटे मसीह तो सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं इनसे पहिले पैग़म्बर हो चुकेहैं और इनकी माता सच्ची थीं। दोनों खाना खाते थे देखो तो सही हम दलीलें किस तरह खोल २ कर इन लोगों से बयान करतेहैं फिर देखो कि यहलोग किधर उल्टे भटकते चलेजारहे हैं (७६) कहो क्या तुम खुदा के सिवाय ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो; जो तुम्हें

मुसलमान हैं और यहूदी हैं और साबी और ईसाई हैं जो कोई अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाये और नेक काम करे तो ऐसे लोगों पर न भय होगा और न वह उदासीन रहेंगे। (७०) हम याक़ूब के बेटों से प्रतिज्ञा करा चुके हैं और हमने इनकी तरफ़ बहुत पैग़म्बर भी भेजे—जब कभी कोई पैग़म्बर इनके पास ऐसी आज्ञा लेकर आया जिनको उनके दिल नहीं चाहते थे तो बहुतोंने झुठलाया और बाज़ने कितनों को क़त्ल किया। (७१) और समझे कोई विपत्ति नही आयगी सो अन्धे और बहरे होगये फिर खुदा ने उनकी तौबा क़बूल करली फिर भी इनमें से बहुतेरे अन्धे और बहरे बने और जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह देख रहा है। (७२) जो लोग कहते हैं कि खुदा तो यही मरीयम के बेटे मसीह हैं यह लोग काफ़िर होग और मसीह समझाया करते थे कि हे याक़ूब के बेटो अल्लाह की पूजा करो कि वह मेरा और तुम्हारा पालनकर्त्ता है और शक नहीं कि जिसने अल्लाह का साझी ठहराया बैकुण्ठ उसपर हराम होचुका और उसका ठिकाना नरकहै और ज़ालिमों का कोई भी सहायक नहीं (७३) जो लोग कहते हैं खुदा तो यही तीनमें का एक है वे काफ़िर होगये हालांकि एक खुदा के अलावह और कोई पूज्य नहीं और जैसी जैसी बातें यह लोग कहते हैं अगर उनसे बाज़ न आयेंगे तो जो लोग इनमें से काफ़िरहैं इनपर दुःखदाई सज़ा है। (७४) वह क्यों नहीं खुदा के आगे तौबा करके अपराध क्षमा कराते हालांकि अल्लाह क्षमाकरने वाला मिहरबान है। (७५) मरियम के बेटे मसीह तो सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं इनसे पहिले पैग़म्बर हो चुकेहैं और इनकी माता सच्ची थी। दोनों खाना खाते थे देखो सही हम दलीलें किस तरह खोल २ कर इन लोगों से बयान करते हैं फिर देखो कि यहलोग किधर उल्टे भटकते चलेजारहे हैं (७६) क्या तुम खुदा के सिवाय ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो; जो

हम तो ईमान ले आये तू हमको गवाहों में लिख । (८३) और हमको क्या हुआ है कि हम अल्लाह को न मानें और सच्ची बात जो हमारे पास आई है उसपर विश्वास न करें हमें आशा है कि पालनकर्त्ता की निगाह में हम अच्छे पुरुषों में समझे जावेंगे। (८४) तो इनके इस वचन के वदले में खुदा ने इनको ऐसे वाग़ दिये जिनके नीचे नहरें वहरही हैं वे उनमें सदैवरहेंगे । भलाई करने वालों को यही वद्‌ला है। (८५) और जिन लोगोंने न माना और हमारी आयतोंको झुठलाया यही नरक वासी हैं। (८६) (रुकू १२) मुसलमानो ! खुदाने जो साफ़ चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल करदी हैं उनको हराम मत करो और हद्द से न वढ़ो क्योंकि अल्लाह हद से वढ़ने वालों को नही चाहता। (८७) और खुदाने जो तुमको सुथरी हलाल चीज़ें दी हैं उनको खाओ और जिस खुदा पर तुम्हारा ईमान है उससे डरते रहो। (८८) तुम्हारी वेफ़ायदा कस्मों पर खुदा नही पकड़ेगा हां पक्की सौगन्ध खालो तो खुदा पकड़ेगा तो इस पाप की शान्ति के लिये दश भूखों को मामूली भोजन खिला देना है जैसा अपने घरवालो को खिलाते हो। या उन को कपड़े वना देना है या एक गुलाम छोड़ देना है फिर जिस को सामर्थ्य न हो तो तीन दिन के रोज़े रक्खे यह तुम्हारी क़स्मों की शान्ति (कफ़्फ़ारा) है जव कि तुम सौगन्ध खाचुके हो और अपने क़स्मों को रोके रहो। इस तरह अल्लाह अपनी आज्ञायें तुम को सुनाता है शायद तुम अहसान मानो। (८९) मुसलमानो ! शराव और जुआ और मूर्ति और पांसे यह गन्दे शैतानी काम हैं इन से वचो शायद इससे तुम्हारा भला हो। (९०) शैतान तो यही चाहता है कि शराव और जुए के कारण तुम्हारे आपस में दुशमनी और ईर्षा डलवादे और तुम को खुदा की याद से और नमाज़ से रोके तो क्या तुम रुकना चाहते हो। (९१) और अल्लाह की और पैग़म्बर की आज्ञा मानो

और बचते रहो इस पर भी अगर तुम फिर बैठोगे तो जाने रहो कि हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ २ कहदेना था। (६२) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये तो जो कुछ खा पी चुके उस मे उन पर पाप नही रहा जब कि उन्हों ने हराम चीज़ों से परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम करने लगे और अल्लाह अच्छे कान करनेवालो को चाहता है। (६३) [रुकू १२] मुसलमानो ! एक ज़रासो शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले पहुंच सकें खुदा ज़रूर तुम्हारी जांच करेगा ताकि अल्लाह मालूम करे कि कौन अनदेखे से डरता है फिर इसके बाद जो ज़ियादती (अत्याचार) करै तो उसके लिये दुखदाई सज़ा है। (६४) मुसलमानों ! जब कि तुम अहराम की हालत में हो तो शिकार मत मारो और जो कोई तुम मे से जान बूझकर शिकार मारेगा तो जैसे जानवर को मारा है उसके बदले मे वैसाही पशु जो तुम मे के दो मुन्सिफ़ (न्यायी) ठहरादे देना पड़ैगा और भेंटें काबे मे भेजना या उसके बदले मे भूखों को खिलाना या उसके बराबर रोज़े रखना ताकि अपने किये का फल भोगे जो हो चुका उसे खुदा ने क्षमा किया और जो फिर करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा और अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेनेवाला है। (६५) दरियाई (जल सम्बन्धी) शिकार और खाने की दरियाई चीज़ तुम्हारे लिये हलाल की जाती हैं ताकि तुम को और मुसाफ़िरों को लाभ पहुंचे और जंगल का शिकार जब तक अहराम में रहो तुम पर हराम है और अल्लाह से डरते रहो जिसके पास जाना है। (६६) खुदा ने काबे को जो कि प्रतिष्ठित स्थान है लोगो के रक्षा के लिये क़ायम किया है और पाक महीनो को और क़ुरबानी को और जो ज़ेवर वग़ैरह उनके गले में लटक रहे हैं ठहराया है यह इसलिये कि तुम को मालूम रहे कि जो कुछ आस्मानों और जो कुछ जमीन में है अल्लाह

जानता है और यह कि अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (९७) जाने रहो कि अल्लाह सज़ा देने में कठोर है और यह भी कि अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। (९८) पैग़म्बर के ज़िम्मे सिर्फ़ पहुं-चादेना है और जो तुम लोग ज़ाहिर में करते और जो छिपा कर करते हो अल्लाह सब कुछ जानता है। (९९) कहो कि पाक और नापाक बराबर नहीं होसक्ती अगर्चे नापाककी ज़्यादती तुम को अच्छी लगे तो हे बुद्धिमानो खुदा से डरते रहो शायद तुम्हारा भला हो। (१००) [रुकू १४] मुसलमानो ! ऐसी बातें न पूछा करो कि जो अगर तुम पर ज़ाहिर करदी जावें तो तुम को बुरी लगें और ऐसे वक्त में जब कि क़ुरान उतर रहा है उन बातों की हक़ीक़त पूछोगे तो तुम पर ज़ाहिर कर दीजावेंगी अल्लाह ने इन बातों को क्षमा किया और अल्लाह क्षमा करने वाला सहन शील है। (१०१) तुम से पहिले लोगों ने ऐसीही बातें पूछी थीं फिर उनसे इनकार करने लगे। (१०२) खुदा ने बहीरा (कनकटी ऊंटनी) और न साहिबा (ऊंटनी जो सांड़ की तरह छोड़ी जाती थी) और न वसीला (वह ऊंटनी जिस के पहिलौठी के दो बच्चे मादा हों) और न हाम (ऊंट जिसकी नस्ल से कई बच्चे होगये हों) के बारे में कुछ नहीं ठहराया। बल्कि काफ़िरों ने खुदा पर लफ़ंट बांधा है और इनमें बहुतेरे बे समझ हैं। (१०३) और जब इनसे कहा जाता है जो अल्लाह ने उतारा है उसको और पैग़म्बरकी तरफ़ चलो कहते हैं कि जिसपर हमने अपने बापदादों को पाया है हमारे लिये काफ़ी है। भला अगर जो इनके बाप कुछ न जानते और सीधी राह पर न रहे हों तोभी (क्या उन्हीं की राह चलेंगे) (१०४) मुसलमानो ? तुम अपनी जानों की खबर रक्खो जब तुम सीधी राह पर हो तो कोई भी गुमराह तुमको नुकसान नहीं पहुंचा सक्ता तुम सबको अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है तो जो कुछ करते रहेहो

तुमको बतावेगा (१०५) मुसलमानो ! जब तुम मेंसे किसीके सामने मौत (काल) आखड़ी हो तो वसीयत करते वक्त तुममें के दो विश्वासी गवाह हो या अगर तुम कहीं को सफर करो और मौत आजाय तो ग़ैर मज़हब ही के दो (गवाह) हों अगर तुमको संदेह हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोकलो फिर वह दोनों अल्लाह को क़स्में खावे कि हम माल (रिश्वत) के लालच से क़स्म नही खाते अगर्चे वह शख्स रिश्तेदारही क्यों न हो और हम खुदा की गवाही को नही छिपाते और अगर ऐसा करें तो हम निःसन्देह अप-राधी हैं। (१०६) फिर अगर मालूम होजावे कि वह दोनो सच को छिपागये तो इनकी जगह दो उन लोगो मे से खड़े हो जिन्होंने इनको झूठ ठहराया हो उनमे से जो नज़दीकी हो फिर वह अल्लाह की क़स्मे खावें कि पहिले दो गवाहों की गवाही से हमारी गवाही ज़ियादा सच्ची है और हमने ज़ियादती नही की ऐसा किया हो तो हम बेशक ज़ालिम हैं। (१०७) इस तरहकी क़स्मसे यह बात सोचने के लायक़ है कि लोग जैसी को तैसी गवाही दें या डरें कि हमारी क़स्म उनकी क़स्म के बाद उल्टी पड़ेगी और अल्लाह से डरते रहो और सुनलो और अल्लाह हुक्म न मानने वालों को राह नही बतलाता। (१०८) (रुकू१५)जब कि अल्लाह पैग़म्बरोंको इकट्ठा करके पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला वह कहेंगे कि हमको कुछ मालूम नही छिपी(ग़ैब की) बातें तो तूही खूब जानता है। (१०९) उसदिन अल्लाह कहेगा कि हे मरीयम के बेटे ईसा हमने तुम पर और तुम्हारी मातापर जो जो अहसान किये हैं याद करो जब कि हमने पाक रूह से तुम्हारी सहायता की गोद में और बड़े होकर भी तुम्लोगो से बात चीत करते थे और जब कि हमने तुमको किताब और बुद्धिमानी और तौरात और इन्जील सिखलाई और जबकि तुम

(१) हव्वारी = ईसा के साथी।

हमारे हुक्म से चिड़िया की सूरत मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूंक मार देते तो वह हमारे हुक्म से पक्षी बनजाता और जब कि तुम जन्म के अन्धे और कोढ़ी को हमारे हुक्म से चंगा कर देते और जबकि तुम हमारे हुक्म से मुर्दों को निकाल खड़ा करते और जब कि हमने याकूब के बेटों (बनी इसराईल) को (तुम्हारे मारडालने से) रोका कि जिस वक्त तुमने उनको चमत्कार दिखलाया। तो उनमें से जो तुम्हारा विश्वास नहीं करते थे कहने लगे कि यह तो सिर्फ खुला जादू है। (११०) और जब हमने हव्वारियों के दिलमें डाला कि हम पर और हमारे पैग़म्बर पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा हम ईमान लाये और तू इस बात का गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हैं। (१११) जब हव्वारियों ने दरख्वास्त की कि हे मरीयम के बेटे ईसा क्या तुम्हारे पालनकर्त्ता से होसकेगा कि हम पर आस्मान से एक थाल उतारे कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो खुदा से डरो। (११२) वह बोले हम चाहते हैं कि उसमें से कुछ खावें और हमारे दिलों में इतमीनान हो जावे और हम मालूम करो लें कि तूने हमसे सच कहा और हम इसके गवाह हैं। (११३) ईसा मरीयम के बेटे ने कहा कि हे अल्लाह हमारे पालनकर्त्ता हमपर आस्मानसे एकथाल उतार थाल हमारे लिये यानी हमारे अगलो और पिछलों के लिये ईद क़रार पाये और तेरी तरफ़से निशानी हो और हमको रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देने वालों में है (११४) अल्लाह ने कहा निश्सन्देह हम वह थाल तुम लोगों पर उतारेंगे। तो जो शख़्स फिर भी तुममें से इन्कार करता रहेगा तो हम उसको ऐसी सख़्त दुःखदाई सज़ा देंगे कि दुनियां जहान में किसी को भी ऐसी सज़ा नहीं दूंगा। (११५) (रुकू१६)और उसदिन अल्लाह पूछेगा कि हे मरीयमके बेटे ईसा क्या तुमने लोगोंसे यह बात कहीथी कि खुदा के अलावह मुझको और मेरी माता को दो खुदामानो बोलाकि तेरी

जात पाक है मुझसे क्योंकर हो सक्ता है कि मैं ऐसी बात कहू जिसके कहने का मुझको कोई अधिकार नही अगर मैं ऐसाकहता तो तुझे ज़रूरही मालूम होता तू मेरे दिलकी बात जानता है और मैं तेरे दिलकी बातें नही जानता। ग़ैब (छिपी) बातें तो तू ही सब जानताहै (११६) तूने जो मुझको आज्ञा दी थी बस वही मैंने इनको कह सुनाया था कि अल्लाह जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्त्ताहै उसी की पूजा करो और जब तक मैं इन लोगों मे रहा। मैं उनका निगह-बान रहा फिर जब तूने मुझको उठा लिया तो तू ही इनका निगह-बान होगया और तू सब चीजों का साक्षी (गवाह) है। (११७) अगर तू इनको सज़ा दे तो यह तेरे बन्दे (सेवक) हैं और अगर तू इनको क्षमा करे तो निश्सन्देह तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (११८) अल्लाह ने कहा कि यह वह दिन है कि सच्चे सेवकों को उनका सच्च काम आवैगा उनके लिये बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी उनमे हमेशा वह रहैंगे अल्लाह उनसे खुश और वह अल्लाह से खुश यही बड़ी कामयाबी है। (११९) आस्मान और ज़मीन और जो कुछ आस्मान और ज़मीन में है सब पर अल्लाह ही का अधिकार है और वह सब चीज़ों पर शक्तिसाली है (१२०)

सूरे अनआम (जानवर का अध्याय)

मक्के में उतरी इसमें १६५ आयतें और २० रुकू हैं।

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम वाला मिहर्बान है हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही को है जिसने आसमानो और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरा और उजेला बनाया। इसपर भी काफ़िर अपने पालनकर्त्ता को शरीक ठहराते हैं (१) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक अवधि (मियाद) ठहरादी और एक मुक़र्रर वक़ उसके पास है फिर भी तुम सन्देह करते हो (२)

और आस्मानों में और ज़मीन में वही अल्लाह है जो कुछ तुम छिपाकर और जो ज़ाहिरा करते हो उसको मालूम है और जो कुछ तुम कमाते हो उसे मालूम है। (३) और तेरे पालनकर्त्ता की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास नहीं पहुँचती। लेकिन वह उनसे मुँह फेरते हैं (४) जब सच इनके पास आया उसको भी झुठलाय दिया तो यह लोग जिस चीज़ की हँसी उडारहे हैं उसकी हक़ीक़त इनको आगे चलकर मालूम होजायगी। (५) क्या इन लोगों ने नज़र नही की हमने इनसे पहिले कितनी उम्मतों (संगतों गरोहों) का नाश करादिया जिनकी हमने मुल्क में ऐसी जड़ बांध दी थी कि तुम्हारी ऐसी जड़ नही बांधी और हमने उन पर खूब मेह वर्षाया और उनके नीचे से नहरें जारी करदीं। फिर हमने उनको अपराधों के सबब से उनका नाश करादिया और उनके पीछे और दूसरी उम्मतें (संगतें) निकाल खड़ी की (६) और अगर हम काग़ज़ पर किताब तुम पर उतारते और यह लोग उसको अपने हाथों से छू भी लेते टटोलते तो भी काफिर कहेंगे कि यह ज़ाहिरा जादू है। (७) और कहते हैं कि इस पर कोई फिरिस्ता क्यों नहीं उतरा और अगर फिरिस्ते को भेजते तो झगड़ा ही चुक गया था फिर उनको मुहलत न मिलती (८) और अगर हम फिरिस्ते को पैग़म्बर बनाते तो उसको भी आदमी (की सूरत में) ही बनाकर भेजते। और हम उनपर वही सन्देह डालते जो यह सन्देह डाल रहे हैं (९) और तुमसे पहिले भी पैग़म्बर की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो जिन लोगों ने पैग़म्बरों से हँसी की वह उलटी उन्हीं पर पड़ी (१०) (रुकू २) कहो कि देश में चलो फिरो फिर देखो झुठलाने वालों को कैसा फल मिला। (११) पूछो जो कुछ आस्मान और ज़मीनमें है किसका है कहदो कि अल्लाह का है उसने खुदही लोगोंपर मिहरबानी करने को अपने ऊपर लाज़िम करलिया है वह क़यामत

(प्रलय) के दिनतक जिसके आनेमें कोई भी सन्देहनही तुम लोगोंको ज़रूर जमा करैगा जो अपनी जानों का नुक़सानकर रहेहैं वही ईमान नहीं लाते। (१२) और उसीकाहै जो कुछरात और दिनमें वसताहै और वह सुनता और जानता है। (१३) पूछो कि खुदा जो आस्मान और ज़मीन का पैदा करनेवाला है क्या उस के सिवाय काम सम्भालने वाला बनाऊं और वह रोज़ी देता है और कोई उसको रोज़ी नही देता। कह दो कि मुझको तो यह आज्ञा मिली है कि सब से पहिले मैं मुसलमान बनूं और मुशरकों (खुदा का साझी बनाने वालो) मे नहूं। (१४) कहो कि अगर मैं अपने पालनकर्त्ता का हुक्म न मानूं तो मुझको क़यामत के दिन की सख़्त सज़ा से डर लगता है (१५) उस दिन जिससे सज़ा टलगई तो उस पर खुदा ने कृपा की और यह ज़ाहिरा कामयाबी है (१६) और अगर अल्लह तुझ को तकलीफ़ पहुंचावे तो उसके सिवा कोई उसको दूर करनेवाला नहीं और अगर तुझको भलाई पहुंचावे तो वह हर चीज़ पर शक्तिसाली है। (१७) और वह अपने वन्दों पर अधिकारी है और वही हिक्मत वाला खबरदार है। (१८) पूछो कि गवाही किस चीज़ की बड़ीहै कह दो कि खुदाजो मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है और यह क़ुरान मेरी तरफ़ इसीलिये ईश्वरीय संदेशा है कि इसके ज़रिये से तुम को और जिसे पहुंचे डराऊं क्या तुम पक्के बन कर इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूजित भी हैं कहो कि मै तो गवाही नहीं देता तुम इन लोगों से कहो कि वह तो सिर्फ़ एक पूजित है और जिन चीज़ों को तुम खुदा का शरीक बनाते हो मैं उनको नहीं मानता। (१९) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जैसा अपने बेटों को पहिचानते हों वैसाही इस (पैग़म्बर मोहम्मद) को भी पहिचानते हैं जिन्हों ने अपनी जानोको जोखोंमें डाला वही ईमान नहीं लाते। (२०) [रुकू २]

और जो शख़्स खुदा पर झूठा लफंट बांधे या उसकी आयतों का झुठलाय उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है ज़ालिमों को किसी तरह छुटकारा नही होगा। (२१) और (एक दिन होगा) जब कि हम इन सब को इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगो से जो शरीक ठहराते थे पूछेंगे कि कहां हैं तुम्हारे वह शरीक जिनका तुम दावा करते थे फिर उनको कुछ उज्र न रहैगा मगर यों कहैंगे कि हमको खुदा पालनकर्त्ता की क़सम हम मुशरिक हो न थे। (२२) देखो किस तरह अपने ऊपर आप झूठ बोलने लगे और इनकी झूठो बाते इनसे गई गुज़री हो गईं (२३) इनमें से ऐसे भी हैं कि तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और उनके दिलों पर हमने पर्दे डालदिये हैं इनके कानोमे बोझ है ताकि तुम्हारी बात न समझें सके और अगर यह सब चमत्कार भी देखलें तो भी ईमान लाने वाले न हों यहां तक कि जब तुम्हारे पास तुमसे झगड़े हुए आते हैं तो काफ़िर बोल उठते हैं कि क़ुरान तो सिर्फ अगलोंकी कहानियां है। (२४) और यह लोग क़ुरान से दूसरे को मना करते और उससे भागते हैं और अपनी जानो को ही मारते हैं और नही समझते । (२५) और जब आग (नरक) के सामने खड़े किये जावेगे तो उसकी कैफ़ियत देखकर कहैंगे कि अगर दैवयोग से हम फिर दुनियां में भेजे जावे तो अपने पालनकर्त्ता की आयतों को न झुठलावें और ईमान वालों में से हों । (२६) बल्कि जिसको पहिले छिपाते थे उनके आगे आई और अगर (दुनियां में) वापिस भेज दिये जावें तो जिस चीज से इनको मने किया गया है उसको फिर दुबारा करेंगे और यह झूठे हैं । (२७) और कहते है कि जो हमारी दुनियां को ज़िन्दगी है इसके अलावह और किसी तरहकी ज़िन्दगी नहीं और मरे पीछे फिर जी उठने वाले नही। (२८) और अगर तू देखे जब कि यह लोग अपने पालनकर्त्ता के सामने लाकर खड़े

किये जावेंगे तो पूछेगा क्या यह सच न था कहेंगे अपने पालन-कर्त्ता की क़सम ज़रूर सच था वह कहैगा कि अपने इन्कारी की सज़ा चखो। (२६) [रुकू ४] जिन लोगों ने अल्लाह के सामने होनेको झूठ जाना विलाशक वह लोग घाटे में रहे यहां तक कि जब एकदम क़यामत इनपर आ मौजूद होगी तो चिल्ला उठेंगे कि अफ़-सोस हमने दुनिया में अपराध किया और अपने वोझ अपनी पीठ पर लादे होंगे देखो तो बुराहै जिसको यह लोग लादे होंगे। (३०) और दुनिया को ज़िन्दगी तो निरा खेल और तमाशा है और कुछ संदेह नहीं जो लोग परहेज़गार हैं उनके लिये क़यामत का घर कही अ-च्छा है क्या तुम लोग नही समझते। (३१) हम इस बात को जानते हैं कि यह लोग जैसी २ बातें कहते हैं वेशक तुमको रंज होता है पस यह तुमको नही झुठलाते बल्कि जालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (३२) और तुमसे पहिले भी पैग़-म्बर झुठलाये जा चुके हैं तो उन्होने लोगो के झुठलाने पर और उनको नुकसान पहुंचाने पर संतोष किया यहां तक कि हमारी मदद उनके पास आ पहुंची और कोई खुदा की बातो का बदलने वाला नही और पैग़म्बरो की खबरे तुझको पहुंच चुकी हैं। (३३) और अगर इनकी सरकशी तुमको बुरी लगती है और तुम से होसके कि ज़मीन के अन्दर सुरंग लगाओ या आस्मान में कोई सीढी और कोई चमत्कार इनको लाकर दिखाओ और अल्लाह को मन्जूर होता तो इनको सीधे रास्ते पर राज़ी कर देता तो देखो तुम कहीं मूर्खों मे न होजाना । (३४) वही मानते हैं जो सुनते है और मुर्दों को खुदा जिला उठायगा फिर उसी की तरफ़ जावेगे । (३५) कहते हैं कि इसके पालनकर्त्ता की तरफ़ से कोई निशान क्यो नही उतरा कहो कि अल्लाह निशान के उतारने मे शक्तिमान है। मगर इनमें के अक्सर वेसमझ हैं । (३६)

और क्या कोई रेंगने वाला जानवर और दोपरों से उड़ने वाला पक्षी जमीन में नहीं है कि तुम आदमियो की तरह अपनी जमातें रखता हो। कोई चीज़ नहीं जिसे हमने किताब में न लिखा हो फिर अपने पालनकर्त्ता के सामने जावेंगे। (३७) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं अन्धेरे में गूंगे और बहिरे ख़ुदा जिसे चाहे उसे भटकादे और जिसे चाहे उसे सीधे रास्ते पर लगादेवे। (३८) पूछो कि भला देखो तो सही अगर ख़ुदा की सज़ा तुम्हारे सामने आ मौजूद हो या क़यामत तुम्हारे सामने आ खड़ी हो तो क्या ख़ुदा के सिवाय (दूसरे) पूजितों को पुकारने लगोगे अगर तुम सच्चे हो। (३९) (दूसरे पूजितो को तो नहीं) बल्कि उसी (एक ख़ुदा) को पुकारोगे तो जिसके लिये पुकारोगे अगर उसकी मर्ज़ी में आवेगा तो उसको दूर करदेगा और जिनको तुम शरीक बनाते हो भूल जाओगे। (४०) (रुकू ५) और तुमसे पहिले बहुत उम्मतो (संगतों) की तरफ़ पैग़म्बर भेजे थे फिर हमने उनको सख़्ती और कष्ट में डाला ताकि वह हमारे सामने गिड़गिड़ाये। (४१) तो जब उनपर हमारी सज़ा आई थी नहीं गिड़गिड़ाये मगर उनके दिल कठोर होगये थे और जो काम करते थे शैतानने उनको भला बतलाया था। (४२) फिर जो शिक्षा उनको दीगई थी उसे भूलगये तो हरचीज़ के दरवाज़े उनपर खोलदिये जब उनको पाकर प्रसन्न हुये एकाएक हमने उनको धर पकडा और वह निराश होकर रहगये। (४३) और ज़ालिम लोगो की जड कटगई और ख़ुदा की तारीफ़ हो जो सब संसार का मालिक है। (४४) पूछो कि भला देखो तो सही अगर ख़ुदा तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे तो ख़ुदा के सिवाय और कोई पूजित है कि यह पदार्थ तुमको लादे सो तो क्योंकर हम दलीलें तरह तरह पर बयान करते हैं इस पर

भी यह लोग मुहँ फेरे चले जाते हैं। (४५) तो कहो देखो तो सही अगर खुदा की सज़ा एकाएक या जता बताकर तुम पर आन उतरे तो अपराधियों के सिवाय दूसरा कोई न मारा जावेगा। (४६) और पैगम्बरों को हम सिर्फ़ इस गरज़ से भेजा करते हैं कि खुश खबरी सुनावे और डरावे तो जो ईमान लाया उसने सुधार करलिया तो ऐसे लोगों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (४७) और जिन लोगो ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हुक्म न मानने के सबब सज़ा होगी। (४८) कहो कि मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास खुदा के खज़ाने हैं और न मैं छिपी जानता हूं और न मै तुमसे कहता हूं कि मैं फिरिश्ता हूं मैं तो बस उसी पर चलता हूं जो मेरी तरफ़ ईश्वर का संदेशा भेजा गया है पूछो कि आया अन्धा और जिसको सूझपड़ता है बराबर होसक्ते हैं? क्या तुम नहीं सोचते। (४९) [रुकू ६] और कुरान के ज़रिये से उन लोगो को डराओ जो इस बात का भय रखते हैं कि अपने पालनकर्ता के सामने लाकर हाजिर किये जावेंगे खुदा के सिवाय न कोई उनका मित्र होगा और न सिफ़ारश करनेवाला। शायद वे बचते रहें। (५०) और जो लोग सुबह व शाम अपने पालनकर्ता ही की तरफ़ मुहँ करके उससे दुआऐं मांगते हैं उनको मत निकालो न तो उनकी जवाबदिही किसी तरह तुम्हारे ज़िम्मे है और न तुम्हारी जवाबदिही किसीतरह उनके ज़िम्मे है कि उनको धक्के देने लगो तो तुम जालिमों (अन्याचारियो) में होगे। (५१) और इसीतरह हमने एक को एक से जांचा ताकि वह यो कहैं कि क्या हम में इन्हीं पर अल्लाह ने कृपा की है क्या अल्लाह को सच्चे मानने वाले मालूम नहीं है। (५२) और जो लोग हमारी आयतो पर ईमान लाते हैं वे जब तुम्हारे पास आया करें तो उन को संतोषित करो और कहो कि तुम अच्छे

रहो तुम्हारे पालनकर्त्ता ने मिहरबानी करना अपने ऊपर लेलिया है कि जो कोई तुम में से मूर्खता के कारण कोई अपराध कर बैठे फिर किये पोछे तोबा और सुधार करले तो वह बख़्शने वाला मिहरबान है। (५३) और इसीतरह पर हम आयतों को ब्योरेवार बयान करते हैं ताकि अपराधियों को राह ज़ाहिर होजावे। (५४) [रुकू ७] कहदो कि मुझ को इस बात की मनाई है कि मैं उन को पूजा करूं जिन को तुम खुदा के सिवाय बुलाते हो, कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर तो चलता नहीं ऐसा करूं तो मैं इस सूरत में गुमराह होचुका और उन लोगों में न रहा जो सीधे रास्ते पर हैं। (५५) तू कह कि मुझे अपने पालनकर्त्ता को शहादत पहुंची और तुम ने उसको झुठलाया जिसकी तुम जल्दी मचा रहेहो वह मेरे पास तो नहीं है। अल्लाह के सिवाय और किसी का अधिकार नही वह सच बात खोलताहै और वह सब फैसला करनेवालोंसे अच्छाहै। (५६) कहो कि जिसकी तुम जल्दी मचा रहेहो अगर मेरे पास होता तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान झगड़ा चुक गया होता और अल्लाह ज़ालिम लोगों से भलीभांति जानकार है। (५७) और उसी के पास गैब (छिपीहुई) की कुञ्जियां हैं जिनको उसके सिवाय कोई नहीं जानता और जो कुछ जंगल और नदी में है जानता है और कोई पत्ता तक नही हिलता जो उसे मालूम नही और ज़मीन के अन्धेरे में एक दाना नाज न सूखा और न हरा जो उसकी खुली किताब मे न हो। (५८) और वही है जो रात के वक्त तुम्हारी आत्माओंको अधिकार मे लेता है और जो कुछ तुमने दिनमें किया था जानताहै फिर दिनके वक्त तुमको उठा खड़ा करता है ताकि मियाद मुकर्ररह (ज़िन्दगी) पूरी हो। फिर उसी को तरफ़ लौटकर जाना है फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुमको बतलायगा। (५९) (रुकू ८) और वही अपने सेवकों पर अधिकारी है और तुम लोगों पर नि-

गह बान भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को काल आता है तो हमारे फिरिश्ते उसकी रूह निकालते हैं और वह कोताही नही करते। (६०) फिर खुदा की तरफ़ जो उनका काम सँभालनेवाला सच्चा है वापिस बुलाये जाते हैं सुनरक्खो कि उसी की आज्ञा है और वह सबसे ज़ियादा जल्द हिसाब लेने वालाहै। (६१) पूंछो कि तुमको जंगल और दरिया के अन्धेरो से कौन बचाता है वही जिसे तुम गिड़गिड़ाकर चुपके पुकारते हो कि अगर खुदा हमको इस कष्ट से बचाले तो हम अवश्य उसके कृतज्ञ (शुक्र गुज़ार)हो। (६२) (हे पैग़म्बर) कहो कि इनसे और हरतरह को सख़्ती से खुदाही तुमको बचाता है फिर भी तुम शरीक ठहराते हो। (६३) कहो कि वही इसपर शक्तिसालीहै कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के तले से कोई सज़ा तुम्हारे लिये निकाल खड़ाकरे या तुमको गिरोह गिरोह करके भिड़ादारे और तुममेसे किसी को किसी की लड़ाई का मज़ा चखाये देखो तो सही हम आयतो को किस २ तरह फेर फेरकर बयान करते हैं शायद वेसमझे। (६४) और कुरान को तुम्हारी जातिने झुठलाया हालां कि वह सच्चा है कहो कि मैं तुमपर अधिकारी नही। (६५) हर बात का एक वक्त मुकर्रर है और तुमको मालूम होजायगा। (६६) और जब ऐसे लोग तुम्हारे नज़रपडजावें जो हमारी आयतो की हँसी उड़ारहेहो तो उनसे हटजाओ यहां तक कि हमारी आयतो के सिवाय (दूसरी) बातो मे लगजावे और अगर शैतान तुमको भुलादेवे तो नसीहत के पीछे जालिम लोगो के साथ न बैठना। (६७) और परहेजगारो पर ऐसे लोगो के हिसाब को किसी तरह की ज़िम्मेदारी नही लेकिन शिक्षा करना शायद वे डरे अख़्तियार करले। (६८) और जिन्होने अपने दीनको खेल और तमाशा बना लिया और दुनिया की जिन्दगीने उनको धोखेमे डालरक्खा है ऐसे लोगोंको छाड

दा और कुरान के ज़रिये से समझाते रहो कि कहीं कोई शख़्स अपनी करतूत के बदले पकड़ न जावै कि खुदाके सिवाय न कोई उसका साथी होगा और न सिफ़ारशी । (६६) और बदला अगर वह सब भी दे तो भी उससे न लिया जावे यही वह लोगहैं जो अपनेकर्मके कारण पकड़े गये इनको पोनेके लिये उबलता हुआ पानी और दुखदाई सज़ा होगी क्योंकि यह कुफ़्र (इनकार) किया करते थे । (७०) (रु० ८) पूछो क्या हम खुदाको छोड़कर उनको अपनी मदद के लिये बुलावें जो न हमको नफ़ा पहुंचा सक्तेह और न नुक़सान और जब अल्लाह हमको सीधा रास्ता दिखा चुका तो क्या हम उसके बाद भी उल्टे पैरों लौट जावें जैसे किसी शख़्स को भूत बहकाकर ले जावे और जंगल मे हैरान फिरै उसके कुछ साथी हैं वह उसको सीधे रास्ते को ओर बुलारहे हैं कि हमारे पासआ (हे पैग़म्बर इनसे कहो) कि अल्लाह का रास्ता वही सीधा रास्ता है और हमको हुक्म मिला है कि हम तमाम दुनिया के पालने वालेके आज्ञाकारी होकर रहें । (७१) और नमाज़ पढते और खुदा से डरते रहो और वही है-जिसके सामने जमा होगे । (७२) और वहीहै जिसने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया और जिस दिन फर्मायगा किहो वह होजायगा । (७३) उसका कहा सच्चा है और जिस दिन नरसिंहा फूंका जायगा उसीको हुकूमत होगी और वह छिपो और खुलीका जानने वालाहै और वही हिकमत-वाला खबरदार है । (७४) और जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा क्या तुम मूर्तों को पूजित मानते हो मैं तो तुमको और तुम्हारी क़ौमको जाहिरा भटके हुओं में पाता हूँ । (७५) और इसीतरह हम इब्राहीम को आस्मान और ज़मीन का प्रबन्ध दिखलाने लगे ताकि वह विश्वास करने वालो में से होजावें । (७६) तो जब उनपर रात छागई उनको एक तारा दीख

पड़ा (तो) कहने लगे कि यही मेरा पालक है फिर जब वह अस्त होगया तो बोले कि अस्त होजाने वाली चीज़ों को तो मैं नही चाहता। (७७) फिर जब चन्द्रमा को देखा कि बड़ा जगमगा रहाहै तो कहनेलगे यही मेरा पालनेवालाहै फिर जब अस्त होगया तो बोले अगर मुझको मेरा पालने वाला नही दिखलायेगा तो निस्सन्देह मैं भूले हुए लोगों मे होजाऊंगा। (७८) फिर जब सूरज को देखा कि बड़ा जगमगा रहाहै तो कहनेलगे मेरा यही पालनेवाला सबसे बड़ाहै फिर जब अस्त होगया तो बोले भाइयो जिन चीज़ो को तुम ख़ुदा मे शरीक मानते हो मैं तो उनसे बे सम्बन्ध हूं। (७९) मैंने तो एकही का होकर अपना ध्यान उसी की ओर करलिया है जिसने आस्मान और ज़मीन को बनाया मै तो मुशरकीन में से नही हूं। (८०) और उनके गिरोह के लोग उनसे झगड़ने लगे कहा क्या तुम मुझसे ख़ुदा के एक होने के सम्बन्ध मे झगडते हो हालांकि वह तो मुझ को सीधा रास्ता दिखा चुका है और जिन-को तुम उसका शरीक मानते हो मै तो उनसे कुछ डरता नहीं सिवाय इसके कि ईश्वर की इच्छा हो मगर हां मेरे पालनेवाले की विद्या में सब चीज़े समाई हुई है क्या तुम ध्यान नहीं करते। (८१) और जिन चीजो को तुम शरीक करते हो मैं उनसे क्यो डरने लगा जब कि तुम इस बात से नही डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ो को शरीक ख़ुदाई बनाया जिनके (पूजित होने की) सनद ख़ुदा ने तुम्हारे लिये नहीं उतारी तो दोनो फरीक़ों मे से कौन सा अमन का ज़ियादा अधिकारी है अगर बुद्धि रखते हो तो कहो। (८२) जो लोग ख़ुदा पर ईमान लाये और उन्हो ने अपने ईमान मे जुल्म नहीं मिलाया यही लोग है जो शांति चाहने वाले है और यही लोग सीधे मार्ग पर हैं। (८३) (रुकू १०) और यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उन

की जातिके क़ायल माक़ूल करने के लिये बताई है हम जिसको चा-
हते हैं दर्जा ऊंचा कर देते हैं (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनेवाला
हिकमतवाला और सब कुछ जानता है। (८४) और हमने इब्रा-
हीम को इसहाक़ और याक़ूब दिये उन सब को हिदायत की और
पहिले नूह को भी हमने हिदायतकी थी और उन्हीं के वंशमेंसे दाऊद
और सुलेमान और अयूब और यूसुफ़ और मूसा और हारूंको हि·
दायत की थी और हम नेकों को ऐसाही बदला देते है । (८५)
निदान जक़रीया, यहिया और ईसा और इलयास नेकोंमे हैं।
(८६) और इस्माईल इलइसा और यूनिस और लूत सभी को
खूब दुनिया जहांन के लोगों पर बुलन्दी दी। (८७) और इनके
बड़ों और इनकी संतान और इनके भाई बन्धों में से बाज़ को हमने
चुना और इनको सीधी राह दिखला दी। (८८) यह अल्लाह की
हिदायत है अपने सेवको में से जिसको चाहे इस तरह का उपदेशदे
और अगर यह शरीक करते होते तो इनका किया धरा इनसे बेकार
होजाता। (८९) यह वह लोग हैं जिनको हमने किताब दी और
अधिकार दिया और पैग़म्बरी भी दी तो (यह मक्का के काफ़िर) अगर
इनको इज़्ज़त न करैं तो हमने इन पर लोग मुक़र्रर कर दिये हैं जो
इनके इन्कारी नही हैं। (९०) उन्हें अल्लाह ने हिदायत की तू उन
को हिदायतपर चल कहदो कुरानपर तुमसे कुछ मज़दूरी
नही मांगता यह कुरान तो दुनियां जहान के लोगों के लिये उपदेश है।
(९१) (रुकू ११) उन्होंने जैसी इज़्ज़त अल्लाह की जाननी चाहिये थी
वैसीउसकी इज़्ज़त न जानी कहनेलगे कि खुदा ने किसी आदमी पर
कोई चीज़ नहीं उतारी पूछो कि वह किताब किसने उतारी जिसे
मूसा लेकर आये लोगो के लिये प्रकाश है और उपदेश है तुमने
उसके अलाहिदा २ सफ़े बना कर ज़ाहिर किया और बहुतेरे
वरक़ तुम्हारे मतलब के विरुद्ध हैं उनको लोगों से छिपाते हो और

उसी किताब के ज़रिये से तुमको वे बातें बताई गई हैं जिसको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादे। कहो कि वह किताब अल्लाह ने उतारी थी फिर इनको छोड़ दे कि अपनी फ़िक्रों में खेला करें। (९२) और यह किताब आसमानी है जिसको हमने उतारा है बरकतवाली है और जो किताबें इससे पहिले की हैं उनको तसदीक़ करती हैं और हे पैग़म्बर हमने इसको इस प्रयोजन से उतारा है कि तुम मक्का वालों को और जो लोग उसके आस पास रहते हैं उनको डराओ और जो लोग क़यामत (प्रलय) का यक़ीन रखते हैं वह तो इसपर ईमान ले आते हैं और वह अपनी नमाज़ की खबर रखते हैं। (९३) और उससे बढ़कर और ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ लफंट बांधे या दावा करै कि मुझ पर खुदा का संदेशा आया है हालांकि उसकी तरफ़ कुछ भी खुदा का संदेशा न आया हो और जो कहे कि जैसे अल्लाह उतारता है वैसेही मैं भी उतारू चुनांचि ज़ालिम जब मौत की बेहोशियों में पड़े होंगे और फ़िरिश्ते हाथ फैला के कहेंगे अपनी जानें निकालो अब तुमको ज़िल्लत के दण्ड की सज़ा दीजावेगी इसलिये कि तुम खुदा पर व्यर्थ झूठ बोलते और उस की आयतों से अकड़ा करते थे। (९४) और पहिलीबार जैसा हमने तुमको पैदा किया था वैसेही अकेले तुम हमारे पास एक २ करके आये और जो कुछ हमने तुमको दिया था अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और तुम्हारी सिफ़ारिश करने वालों को हम तुम्हारे साथ नहीं देखते जिनको तुम समझते थे कि वह तुम में शामिल हैं अब तुम्हारे आपस के मेल टूटगये और जो दावा तुम किया करते थे तुमसे गये गुज़रे होगये। (९५ रुकू १२)

(वह) दाने और गुठली का फाड़ने वाला है और मुर्दों से जिन्दा और जिन्दा से मुर्दा निकालता है यही तुम्हारा खुदा है फिर तुम कहां भटके चले जारहे हो। (९६) उसी के किये से प्रात काल

पौ फटती है और उसीने आराम के लिये रात और हिसाबके लिये सूरज और चन्द्रमा बनाये हैं यह प्रबल बुद्धिमान के करतब हैं। (९७) और वही है जिसने तुम लोगों के लिये तारागण बनाये ताकि जंगल और नदीके अन्धेरों में उनसे हिदायत पाओ जो लोग समझदार हैं उनके लिये हमने निशानियां सब तफ़सीलवार बयान कर दी हैं। (९८) और वही है जिसने तुम सबको एक शरीर से पैदा किया फिर कहीं तुमको ठहरावहै और कही सुपुर्द रहना (पिता की कमर और माता का गर्भाशय) जो लोग समझते हैं उनके लिये हम निशानियां ब्यौरेवार बयान करचुके हैं। (९९) और वही है जिसने आस्मान से पानी बरसाया—फिर हमने उससे हरक़िस्म के अंकुर (कोया) निकाले फिर कोयों से हमने हरी हरी टहनियां निकाल खडी की कि उनसे हम गुथे हुए दाने निकालते हैं और खजूरके गाभेमें से गुच्छे जो झुके पड़ते हैं और अंगूर के बाग़ और जैतून अनार सूरतमे मिलते जुलते और (स्वादमें) मिलते जुलते नहीं (इनमें से हरचीज़) जब पकती है तो उसका फल और फल का पकना देखो, निश्सन्देह जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिये इनमें निशानियां हैं। (१००) और मुशरकों ने जिन्नो को खुदा का शरीक बना खडा किया हालांकि खुदाही ने जिन्नों को पैदा किया और इन लोगों ने बेजाने बझे खुदा से बेटियो का होना ठह-राते हैं (खुदा की बाबत) जैसी जैसी बातें यह लोग बयान करते हैं वह पाक है और इन बातों से बहुत दूर है। (१०१) [रुकू १२]

वह आस्मान और ज़मीन का कर्त्ता है और उसकी संतान क्यों होने लगी उसके कोई स्त्री नही और उसीने हरचीज़ को पैदा किया है और वही हरचीज से जानकार है। (१०२) यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्त्ताहै उसके सिवाय और कोई पूजित नही और वही सम्पूर्ण चीज़ो का पैदा करने वाला है तो उसी की पूजा करो और

वही हरचीज़ का रक्षक है। (१०३) और आखें उसको बतला नही सक्ती और वह आंखो को खूब जानता है और वह बड़ा बारीक़ देखने वाला खबरदारहै। (१०४) लोगो तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से सूझ की बातें तुम्हारे पास आही चुकी हैं फिर जिसने देखा अपना भला किया और जो अन्धा रहा अपने लिये बुराई की मै तुम लोगो का रक्षक नही हूं। (१०५) और इसी तरह हम आयतों को बयान करते है ताकि उनको कहना पड़े कि तुमने पढ़ा है और जो लोग समझ रखते है हम उनको क़ुरान अच्छी तरह समझादे। (१०६) (हे पैग़म्बर! क़ुरान) जो तुम्हारे पालनकर्त्ता के यहां से ईश्वरी सदेशा भेजा गया है उसी पर चले जाओ खुदा के सिवाय कोई पूजित नही और मुशरकीन से अलग रहो। (१०७) और अगर खुदा चाहता तो शरीक न ठहराता और हमने तुमको इन पर निगाहबान नही किया और न तुम इन पर वकील हो। (१०८) और ये लोग खुदा के सिवाय जिन को पुकारते हैं उनको बुरा न कहो कि यह लोग मूर्खता के कारण व्यर्थ खुदा को बुरा कह बैठे। इसी तरह हमने हर जमातो के कर्म उनको अच्छे कर दिखलाय है फिर इन को पालनकर्त्ता की तरफ़ लौटकर जाना है तो जैसे २ कर्म कर रहे थे उनको (खुदा) बतावेगा। (१०९) और (मक्के वाले) अल्लाह की सख्त सौगन्धे खाकर कहते हैं कि अगर कोई करामात (चमत्कार) उनके सामनेआवे तो वह जरूर उसपर ईमान लेआवेगे—तुम समझा दो कि करामाते तो अल्लाहो के पास हैं और तुम लोग क्या जानो यह लोग तो करामात आने पर ईमान नहीं लावेगे। (११०) और हम उनके दिलो और उनकी आंखों को उलट देवेगे जैसे क़ुरान पर पहिली मर्तबे ईमान नही लाये थे और हम इनको छोडदेंगे कि पड़े भटका करें। (१११) (रकू १४)

—— * ——

आठवां पारा।
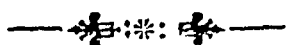
और अगर हम इनपर फ़िरिश्तोंको भी उतारें और मुर्दे भी इनसे बातें करें और हर चीज़ उनके साम्हने जिलाकर खड़ी करदें तब भी तो यह अल्लाह के बिना हरगिज़ ईमान न लावेंगे लेकिन इनमें के अक्सर नही समझते। (११२) इस तरह हमने हर पैग़म्बर के लिये आदमी और जिन्नों मेंसे शैतान पैदा किये, और जो एक दूसरे को मुलम्मा कैसी झूठी बात धोखा देनेको सिखाते हैं सो (उनको) छोडदे। वेजाने और उनका झूठ जाने। (११३) और इसलिये कि जो लोग क़यामत का ईमान नहीं रखते उनके दिल उनकी बातों की तरफ़ ध्यान दे और वह लोग उनकी बातो से रज़ामन्द हों ताकि जो बुरेकाम यह करते हैं वह किया करें। (११४) क्या मैं खुदा के सिवाय कोई और पंच तलाशकरूं हालांकि वह है जिसने तुम लोगोंकी तरफ किताब भेजी जिसमें तफसील है और वह लोग जिनको हमने किताब दीहै इस बातको जानते हैं कि कुरान हकीक़त में पालनकर्त्ता की तरफ से उतरीहै सो तू शक करनेवालों में न होजाना। (११५) और तेरे पालनकर्त्ता की बात सच्ची और न्याय की हुई कोई उसकी बात को बदल नहीं सक्ता और वही सुनता और सब कुछ जानता है। (११६) और बहुतेरे लोग दुनिया में ऐसे हैं कि अगर उनके कहे पर चलो तो तुमको खुदा के रास्तेसे भटकादें यह तो सिर्फ अपने ज़हनी ख्यालात पर चलते और निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (११७) जो लोग खुदा के रास्ते से भटके हुएहैं उन्हें तेरा पालनकर्त्ता खूब जानताहै और जो सीधी राह परहै उनको (भी) खूब जानता है। (११८) पस अगर तुम लोगों को उनके

हुक्मों का विश्वास है तो जिसपर अल्लाह का नाम लियागया हो उसी चीज़को खाओ। (११९) और क्या सबब है कि तुम उसमें से न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो हालांकि जो चीज़े खुदाने तुमपर हराम करदी हैं उनको तफ़सील के साथ तुमसे बयान करदी हैं वह चीज़ कि हराम तो है मगर भूख वग़ैरह की वजह से तुम उसपर मजबूर होजाओ (तो वह भी हराम नहीं) और बहुत लोग तो बिना समझे अपनी इच्छाओं के अनुसार बहकाते हैं जो लोग हद्दसे बाहर होजाते हैं तुम्हारा पालनकर्त्ता उनको खूब जानता है। (१२०) और ज़ाहिरी और छिपेहुए पाप से अलग रहो जो लोग पाप करते हैं उनको अपने करे का फल मिलैगा। (१२१) जिसपर खुदा का नाम न लिया गयाहो उसमें से मत खाओ और उसमेंसे खाना पापहै और शैतान अपने मित्रों के दिल मे डालते हैं कि तुमसे झगड़ा करे और अगर तुमने उनका कहा मान लिया तो तुम मुशरिक होजाओगे। (१२२) (रकू १५) एक शख्स जो मुर्दा था हमने उसमे जान डाली और उसको रोशनी दी वह लोगो में उसको लिये फिरता है क्या वह उस शख्स कैसा हो जाएगा जा अँधेरो मे है। वहां से निकल नहीं सका। इसीतरह काफ़िरो को जो कुछ भी कररहे हैं भला दिखाई देताहै। (१२३) और इसीतरह हमने हर बस्ती मे बडे बड़े अपराधी पैदा किये ताकि वहां फ़िसाद (विद्रोह) करते रहैं। और जो फ़िसाद वह करते है अपनेही जानो के लिये करते हैं और नहीं समझते। (१२४) और जब उनके (मक्कावालो के) पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि जैसी खुदा के पैग़म्बरो को दीगई है जब तक हमको न दीजावे हमतो ईमान लानेवाले नहीं हैं। खुदा जिस पर अपना सदेशा भेजता है खूब जानता है जो लोग अपराधी हैं उनके जिल्लत होगी और धोखा देनेवालो को सख्त सज़ा होगी।

(१२५) जिसको ख़ुदा सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल को इस्लाम के लिये खोल देताहै और जिस शख़्सको भटकाना चाहता है उसके दिलको तंगकर देताहै गोया ज़ोर से आस्मान पर चढ़ता है जो लोग ईमान नहीं लाते उनपर उसी तरह अल्लाह की फटकार पडती है । (१२६) और यह तुम्हारे पालनकर्त्ता की सीधी राह है । जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिये हमने आयतें तफ़-सील के साथ बयान की है । (१२७) उनके लिये तेरे पालनकर्त्ता के यहां अमन का घर है और जो अमल करते हैं उसके बदले में वही उनकी खबर लेनेवाला होगा । (१२८) और जिस दिन ख़ुदा सबको जमा करेगा कहैगा हे जिन्नो के गरोह ! आदम के बेटोंमें से तो तुमने अच्छी बड़ी जमात अपनी तरफ़ करली और आदम की औलाद में से जो शैतानो के दोस्त हैं कहैंगे कि हे हमारे पालन-कर्त्ता हम एक दूसरे से फ़ायदा उठाते रहेहैं और जो वक्त हमारे लिये मुक़र्रर किया था हम उस तक पहुंचगये ख़ुदा कहैगा कि तुम्हारा ठिकाना आग (नरक) है उसी में हमेशा रहोगे आगे ख़ुदा की मर्ज़ी। बेशक तुम्हारा पालनकर्त्ता हिकमत वाला और जानकार है। (१२९) और इसीतरह हम कुछ ज़ालिमो को बाज़ के ऊपर मुक़र्रर कर-देंगे । यह उनकी कमाई का फल है। (१३०) (रुकू १६) फिर हम जिन्नो और आदम के बेटे दोनों से मुखातिब होकर पूंछैंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हीं मेंके पैग़म्बर नहीं आये कि तुमसे हमारी आज्ञायें बयान करें और तुम्हारे इस रोज (कयामत) के आने से तुम को डरायें वह कहैंगे हम अपने ऊपर आपही गवाही देते हैं और दुनिया की ज़िन्दगी ने उनको धोखे में रक्खा और उन्होंने आपही अपने ऊपर गवाही दी कि बेशक वे काफ़िर थे। (१३१) यह इस सबब से है कि तुम्हारा पालनकर्त्ता बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक़ करनेवाला नहीं और यहांके रहने वाले बेखबरहों। (१३२) और जैसे

२ कर्म किये हैं उन्ही के बमूजिब सबके दर्जे होंगे और जो कुछ कररहे हैं तुम्हारा पालनकर्त्ता उससे बेखबर नहीं। (१३३) और तेरा पालनकर्त्ता बे परवाह और रहम वाला है चाहे तुझ को लेजावे और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह पर क़ायम करे जैसा दूसरे लोगों के वंश मे से तुमको पैदा करदिया। (१३४) जो तुमको वचन दिया (यानी सज़ा) सो आने वाला है। और तुम रुक नहीं सक्के। (१३५) कहो कि भाइयो तुम अपनी जगह काम करो मैं काम करता हूं फिर आगे चलकर तुम को मालूम होजावेगा कि अखीर मे किसका काम अच्छा है ज़ालिमों का भला न होगा। (१३६) और खुदा की पैदा की हुई खेती और चौपाहो में अल्लाह का भी एक हिस्सा ठहरातेहैं तो अपने ख्यालों के मुताबिक़ कहते हैं कि इतना तो खुदा का और इतना हमारे शरीकों का (यानी उन मूर्तियों का जिनको खुदा का शरीक मान रक्खा है) फिर जो (हिस्सा) इनके (मानेहुए) शरीकों का होता है वह अल्लाह की तरफ़ नहीं पहुंचता और जो अल्लाह का है वह हमारे शरीकों को पहुच जाता है क्या बुरा इन्साफ़ करते हैं। (१३७) और इसीतरह अक्सर मुशरिकों की निगाह में उनके शरीकों ने औलाद (यानी लड़कियों) का मार डालना पसंद किया और उनके दीन मे सन्देह डालदे और खुदा चाहता तो वह लोग ऐसा काम न करते सो (उनको) छोड दो वे जानें और उनका मूठ जाने। (१३८) और कहते हैं कि चौपाहे और खेती हराम है कि उनको उस शख्स के सिवाय जिसको हम अपने ख्याल के मुताबिक चाहें नहीं खा सक्ता और कुछ चौपाहे ऐसे हैं कि उनकी पीठ पर सवार होना वलादना मना है और कुछ चौपाहे ऐसे हैं जिनको जिबह (काटने) के वक्त उनपर अल्लाह का नाम नहीं लेते खुदा पर मूठ बांधते है (कि उसने ऐसा कहा है) वह इनको इस दर्के सिजा देगा।

(१३६) (ये लोग) और कहते हैं कि इन चौपायों के पेट से जो बच्चा निकले वह हमारे मर्दों के लिये हलाल और हमारी औरतों पर हराम है और अगर मरा हुआ हो तो मर्द और औरत उसमें शरीक हैं खुदा इन को इन बातों की सज़ा देगा वह हिकमत वाला खबरदार है। (१४०) बेशक वह लोग घाटे में है जिन्हों ने बेवक़ूफी और जहालत से अपने बच्चों को मारडाला और अल्लाह ने जो रोज़ी उनको दी थी खुदा पर झूंठ बांध कर उसको हराम कर लिया—यह लोग भटक गये और राह पर नहीं आये। (१४१) (रुकू १७) और वही है जिसने बाग़ पैदा किये और खजूर क दरख़्त और खेती जिनके कई तरह के फल होते हैं और ज़ैतून और अनार एक दूसरे से मिलते जुलते और नही भी मिलते जुलते हैं यह सब चीज़े जब फलैं इनके फल खाओ और उनके काटने के दिन हक अल्लाह का (यानी ज़कात) देदिया करो और फज़ूलखर्ची मत करो क्योंकि फ़ज़ूलखर्ची करनेवालों को खुदा पसद नही करता। (१४२) और चारपायों में बोझ उठानेवाले (पैदा किये जैसे ऊंट) और (बाज़) ज़मीन से लगे हुए (जो नही लादे जाते जैसे–भेड़ बकरी) और खुदा ने जो तुम को रोज़ी दी है उस में से खाओ और शैतान के पिछलगा न हो क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४३) आठ नर और मादा (यानी चार जोड़े) पैदा किये हैं भेड़ों में से दो, और बकरियों मे से दो–पूछो कि खुदा ने दो नरो को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या जो इन दो मादो के बच्चे दानों मे है अगर तुम सच्चे हो तो मुझको सनद बतलाओ। (१४४) और ऊंटो से दो और गाय से दो पूंछो दो नरों को हराम कर दियाहै या दो मादीनोंको या बच्चा जो दो मादीनो के बच्चे दानों में है तुम को इन चीज़ों के हराम करदेने का हुकम दिया था उस वक्त तुम मौजूद थे तो उस शख़्स से

और न उन लोगों की दिली ख्वाहिशों पर चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो क़यामत का यक़ीन नहीं रखते और वह (दूसरे पूजितों को) पालनकर्त्ता के बराबर समझते हैं। (१५१) (रुकू १९) कहो कि आओ मैं तुमको वह चीज़ें पढ़कर सुनाऊं जो तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुमपर हराम की हैं यह कि किसी चीज़का खुदा का शरीक मत ठहराओ और माता पिता के साथ नेकी करते रहो और ग़रीबी के डर से अपने बच्चों को मार न डालो हम तुमको रोज़ी देते हैं। और उनको (भी) और निर्लज्जताकी बातें जो ज़ाहिर हों और छिपी हुई हों उनमें से किसी के पास भी मत फटकना और जिस जानको अल्लाह ने हराम कर दिया है उसे मार न डालना मगर हक़ पर, यह वह बातें हैं जिन का हुक्म खुदाने तुमको दियाहै ताकि तुम समझो। अनाथके मालके पास मत जाना सिवाय इसके कि उसकी भलाई हो और जब तक कि वह बालिग़ न होजाये और न्याय के साथ पूरी २ नाप या तौल करो। हम किसी शख्स पर उसकी सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालते और जब बात कहो तो रिश्तेदारहा क्यो न हो न्याय की कहो और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो यह वह बातें है जिनका तुमको खुदा ने हुक्म दियाहै शायद तुम ध्यान दो। (१५२) और यही हमारा सीधा रास्ता है तो इसी पर चले जाओ और (दूसरे) रास्तों पर न पड़ना यह तुमको खुदा के रास्ते से तितर बितर करेंगे, यह (बातें) हैं जिनका खुदा ने तुमको हुक्म दियाहै शायद तुम बचते रहो। (१५३) फिर हमने मूसा को किताब दी जिससे भलाई करनेवालों पर हमारी नियामत पूरी हुई और उसमें कुल बातों की आज्ञाओं का ब्यौरा मौजूद है और उपदेश और दया है (और यह किताब मूसा को इसलिये दी गई) शायद वह अपने पालनकर्त्ता से मिलने का विश्वास लावें। (१५४) (रुकू २०)

यह किताब हमही ने उतारी है बरकतवाली है तो इसी पर चलो और डरते रहो शायद तुमपर कृपा की जाय। (१५५) (और हे मुशरकीन अरब हमने यह इसलिये उतारी) कि कही यह न कह बैठो कि हमसे पहिले बस दोहीं गिरोहों पर किताब उतरी थी और हमतो उसके पढ़ने पढाने से बिलकुल बेखबर थे । (१५६) या यह उज़् करने लगो कि अगर हम पर यह किताब उतरी होती तो हम ज़रूर इन से बढकर सच्ची राह पर होते तो अब तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़से तुम्हारे पास दलील और उपदेश और दया आगई है तो उससे बढकर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाय और उनसे अलाहिदगी अख़्तियार करे और जो लोग हमारी आयतो से अलाहिदगी अख़्तियार करते हैं हम जल्द उनको अलाहिदगी के बदले उनको बड़ी दुःखदाई सज़ा देंगे। (१५७) यह लोग इसीबात की राह देख रहे हैं कि फ़िरिश्ते इनके पास आवें या तुम्हारा पालनकर्त्ता इनके पास आवे या तुम्हारे पालनकर्त्ता का कोई चमत्कार ज़ाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे पालनकर्त्ता का कोई चमत्कार ज़ाहिर होगा तो जो शख़्स उस से पहिले ईमान नही लाया या अपने ईमान में उसने कुछ भलाई न कीथी अब उसका ईमान लाना उसको कुछभी लाभकारी न होगा तो कहो कि राह देखो हम भी राह देखते हैं । (१५८) जिन लोगो ने अपने दीन में भेद डाला और कई फ़िर्के बनगये तुमको उनसे कोई काम नहीं उनका मामला खुदा के हवाले है। फिर जो कुछ किया करते थे उनको बतावेगा। (१५९) जिसने नेकी की तो उसका दशगुना उसको मिलैगा और जिसने बदी की तो वह उसके बराबर सजा भुगतेगा और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा। (१६०) कहो मुझको तो मेरे पालनकर्त्ता ने सीधी राह बतादी है कि वह यानी इब्राहीम का ठीक दीन है कि वह एकही के होरहे थे और

बांई तरफ़ से आऊंगा और तू उनमें बहुतो को कृतज्ञ (शुक्रगुजार) नहीं पावेगा। (१७) फर्माया कि पापी निकाला हुआ यहां से निकल। (१८) आदम के बेटों में से जो तेरी पैरवी करेगा हम बिना सन्देह तुम सबसे नरक भर देवेंगे। (१६) और (हमने आदमसे कहा कि) हे आदम तुम और तुम्हारी स्त्री बैकुँठमें रहो और जहां से चाहो खाओ मगर इस दरख़्त के पास न फटकना नहीं तो तुम पापी होगे। (२०) फिर शैतान ने मियां बीबी दोनो को बहकाया ताकि उनकी याद करने की चीज़ें जो उनसे छिपी थी उन्हें खोल दिखावे और कहने लगा तुम्हारे पालनकर्त्ता ने जो इस दरख़्त (के फल खाने) से तुमको मना किया है तो इसका कारण यही है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम दोनों फिरिश्ते बन जाओ या दोनों अमर हो जाओ। (२१) और उसने क़सम खाई कि मै तुम्हारा भलाई चाहने वाला हूँ। (२२) गरज़ धोखे से उनको (सुहबत प्रसंग के लिये) मायल कर लिया तो ज्योंही उन्होंने दरख्त चखा तो दोनों के पर्दे करने की चीज़ें उनको दिखाई देने लगी और अपने ऊपर पत्ते ढांकने लगे उनके पालनकर्त्ताने उनको पुकारा। क्या हमने तुमको इस वृक्षकी मनाई नहीं कीथी और तुमसे नहीं कह दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२३) दोनों कहने लगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता हमने अपने को आप नष्ट किया और अगर तू हमको क्षमा नहीं करेगा और हम पर कृपा नहीं करेगा तो हम नष्ट होजायेंगे। (२४) कहा कि (तुम मियां बीबी और शैतान तीनों बैकुण्ठसे) नीचे उतर जाओ तुममें एक का एक दुशमनहै और तुमको एक खास वक्त तक ज़मीनपर रहना होगा और एक वक्त तक बर्तनाहोगा। (२५) फ़र्माया कि ज़मीन

(नोट)-आयत नं०-२५ से साफ़ ज़ाहिर होता है कि बैकुण्ठ ज़मीन से अलग है और लोगों को बैकुण्ठ भी मिलता है परन्तु

(ही मे तुम सब) ज़िन्दगी व्यतीत करोगे और उसीमें मरोगे और उसीमेंसे निकाल खड़े किये जाओगे। (२६)। [रुकू २] हे आदम के बेटो हमने तुम्हारे लिये पोशाक उतारी है जो तुम्हारे पर्दे की चीजों को छिपाये और सुन्दरता और परहेज़गारी की पोशाक भली है। ये ख़ुदा की निशानियां हैं शायद तुम ध्यान दो। (२७) हे आदम के बेटो शैतान तुम को भटका न दे जिसतरह कि उसने तुम्हारे माता पिताको बैकुण्ठसे निकलवाया कि उनसे उनकी पोशाक उतरवादी ताकि उनको पर्दा करने की चीज़ें उनपर ज़ाहिर करदे वह और उसकी संतान तुमको देखते हैं जिधर से तुम उनको नहीं देखते हमने शैतान को उन्हीं लोगों का मित्र बनाया है जो ईमान नहीं लाते। (२८) और जब किसी अनुचित कामके अपराधी होते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बड़ों को इसीपर (चलते) पाया और अल्लाह ने हमको इसकी आज्ञा दी है (हे पैग़म्बर) कहो कि अल्लाह तो अनुचित कामकी आज्ञा नहीं देता तुम लोग बे समझे ख़ुदापर क्यो झूठ बोलते हो। (२९) (हे पैग़म्बर) कहो कि मेरे पालकर्त्ता ने इन्साफ का और हर मसजिद में सीधा मुहँ रखने का हुक्म दिया है और खालिस उसी की सेवा ध्यान में रखकर उसको पुकारो जिस तरह तुमको पहिले (पैदा) किया था (उसी तरह) तुम दुबारा भी पैदा होगे। (३०) उसी ने एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह को भटका दिया। इन लोगों ने ख़ुदा को छोड़कर शैतान को पकड़ा और समझते हैं कि वह सीधी राह पर है।(३१) हे आदम के बेटो! हर एक नमाज़ के वक्त सज कर आया करो और खाओ और पीयो और फ़जूल ख़र्चियां

आयत नं० २६ से ज़ाहिर होता है कि आदमी को मरने के पहिले या बाद ज़मीन परही रहना होगा इन दोनों आयतों में परस्पर भेद पड़ता है पाठक गन इस पर विचार करें।

न करो क्योंकि खुदा फ़ज़ूल खर्च करने वालों को नहीं चाहता। (३२) [रुकू ४] कहो अल्लाह ने जो आरायश और खाने की साफ़ चीज़ें अपने सेवकों के लिये पैदा की है किसने हराम की है समझादो कि जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी में यह चीजें ईमानवालों के लिये है क़यामत के दिन यह खासकर उन्हीं को दीजायेंगी। इसी तरह हम समझदारों को आयतें तफ़सील के साथ बयान करते हैं। (३२) कहो कि सिर्फ़ निर्लज्जता के कामों को मना किया है उनमें जो खुले और जो छिपे हो और पाप और नाहक की ज़ियादती और इस बात को कि तुम किसीको खुदाका शरीक करार दो जिसको उसने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि खुदा पर लपंट लगाने लगो जो तुम्हे मालूम नहीं। (३४) और हर क़ौम का एक काल है फिर जब उनका काल आवेगा तो न एक घड़ी घटेगा और न एक घड़ी बढ़ेगा। (३५) हे आदम के बेटों! जब कभी तुम्हीं में से पैग़म्बर तुम्हारे पास पहुँचे और हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनावे तो जो कोई डरेगा और (अपनी हालत का) सुधार करेगा तो उन पर न तो डर उतरेगा और न उदास होंगे। (३६) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलावेंगे और उन से अकड़ बैठेंगे वही नरकवासी होंगे कि हमेशा नरक में रहेंगे। (३७) उनसे बढ़कर कौन जालिम होगा जो खुदा पर झूठ इलजाम बांधे या उसकी आयतों को झुठलावे यही लोग हैं जिनको (तक़दीर के) लिखे हुए में से उनका भाग उनको पहुंचेगा यहां तक कि जब हमारे फ़रिश्ते उनकी रूह निकालने के लिये मौजूद होंगे तो पूछेंगे कि अब वह कहां है जिनको तुम खुदा के अलावह बुलाया करते थे तो वह कहेंगे कि वह तो हमसे छिपगये और अपने ऊपर आप गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (३८) फ़र्माया कि जिन और इन्सान के गरोह

में जो तुम से पहिले होचुके हैं मिलकर आग (नरक) में जा दाख़िल हो। जब एक गरोह नरक में जायगा तो अपने साथियों पर लानत करेगा यहां तक कि जब सबके सब नरक में जमा होंगे तो उनमें का पिछला गरोह अपने से पहिले गरोह के हक़ में बुरी दुआ करेगा कि हे हमारे पालनकर्त्ता इन्हीं लोगों ने हमको भटका दिया तू इनको नरक की दूनी सज़ा दे कहैगा कि हरएक को दूनी सज़ा। मगर तुमको मालूम नहीं (३६) और उनमें के पहिले लोग पिछले लोगों से कहेंगे अब तो तुमको हम पर किसी तरह की ज़ियादती नहीं रही तो अपने किये की सज़ा भुगतो। (४०) (रुकू ५) बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जावेंगे और न वैकुण्ठ में दाख़िल होने पावेंगे जब तक ऊंट सुई के नाके में से न निकले और अपराधियों को हम ऐसीही सज़ा दिया करते हैं। (४१) कि उनके लिये आगो (नरक) का बिछौना होगा और उनके ऊपर से (आगही का) ओढना और सरकश लोगों को हम ऐसीही सज़ा दिया करते हैं। (४२) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये हमतो किस शख़्स पर उसकी सामर्थ्य से ज़ियादा नहीं बोझ डाला करते यही लोग वैकुण्ठ वाले होंगे, कि वह उसमें हमेशा रहैंगे। (४३)-और जो कुछ उनके दिलों में खरकी होगी हम निकालदेंगे उनके, तले नहरें बहरही होंगी और बोल उठेंगे कि खुदा का शुक्र है जिसने हमको इसका रास्ता, दिखलाया और अगर, खुदा हमको उप देश न करता तो हम रास्ता न पाते बेशक हमारे पालनकर्त्ता के पैग़म्बर सच्चाई लेकर आये थे और इन लोगों से पुकार, कर कह- दिया जावेगा कि यही वैकुण्ठ है जिसके वारिस तुम अपने, कर्मों के बदौलत बना दिये गये हो। (४४) और वैकुण्ठ वाले लोगनको

वासियोंको पुकारेंगे कि हमारे पालनकर्त्ताने जो हमसे प्रतिज्ञाकी थी हमने तो सच्चा पाया तो क्या जो तुम्हारे पालनकर्त्ता ने वादा किया था तुमने भी सच्चा पाया। वह कहेंगे हां इतने में पुकारने वाला उनमें पुकार उठेगा कि ज़ालिमो पर खुदा की लानत। (४५) जो खुदाके रास्ते से रोकते और उसमें नुक्स ढूंढते हैं और क़यामतसे इन्कार रखतेथे। (४६) वैकुण्ठ और नरक के वीच में एक आड़ होगी यानी आराफ़ उसके सिरे पर कुछ लोग हैं जो हरएक को उनकी शक्लों से पहिचानते हं वैकुण्ठ वासियोंको पुकारकर सलामालेक करेंगे। (आराफवाले कुछ वैकुण्ठ में नहीं गये मगर वह आशा कर रहेहैं। (४७) और जब उनकी नज़र नरक वासियों की तरफ़ जा पडी तो (उनकी खराबियां देखकर खुदा से) दुआ मांगने लगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता हमको पापी लोगो के साथ न करो। (४८) [रुकू ६] और आराफ़ वाले कुछ (नरकवासी) लोगों को जिन्हें उनको सूरतों से पहिचानते होंगे पुकार कर कहेंगे कि तुम्हारा मालका जमा करना और घमण्ड करना क्या काम आया। (४९) क्या यही लोग हैं जिन की बावत तुम क़समें खाकर कहा करते थे कि अल्लाह इनपर अपनी कृपा नहीं करैगा, वैकुण्ठ में चले जाओ तुमपर न डर होगा और न तुम उदास होगे। (५०) और नरक वासी पुकार कर वैकुण्ठवासियो से कहेंगे कि हम पर थोड़ा सा पानी डाल दो या तुमको जो खुदा ने रोज़ी दी है उसमें से कुछ हमको दे डालो वह कहेंगे कि खुदा ने यह दोनों चीज़ें काफिरो पर हराम कर दी ह। (५१) कि जिन्होंने अपने दीनको हँसी और खेल बनारक्खा और दुनिया की ज़िन्दगी इनको धोखे में डाले हुए थी तो आज हम इनको भुलादेंगे जैसे यह लोग अपना इस दिन को मिलना भूले और हमारी आयतों का इन्कार करते रहे। (५२) और हमने इनको कुरान पहुंचा दिया समझ बूझकर उसमें हर तरहका तफसील भी करदी। ईमान वाले

लोगों के हक़ में हिदायत और दया है। (५३) क्या यह लोग (मक्केवाले) उसके वाक़ै (कुरान का परिणाम) होने की राह देखते हैं। जब वह दिन आयगा तो जो लोग उसको पहिले से भूले हुए थे वह क़रार कर लेवेंगे कि बेशक हमारे पालनकर्त्ता के पैग़म्बर सब बात लेकर आये थे तो क्या हमारे कोई सिफारशी भी है कि हमारी सिफारिश करे या हमको (दुनियां में) फिर लौटा दिया जाय तो जैसे कर्म हम किया करते थे उनके खिलाफ़ कर्म करें बेशक इन लोगों ने आप अपना नुकसान किया और जो झूंठी बातें उड़ा या करते थे वह भूल गये। (५४) [रुकू ७] तुम्हारा पालनकर्त्ता अल्लाह है जिसने छैः दिन में ज़मीन और आस्मान को पैदा किया फिर तख़्त पर जा विराजा—वही रात को दिनका पर्दा बनाता है। रात दिनके पीछे चली आती है। और उसी ने सूर्य्य और चन्द्रमा और तारे को पैदा किया कि यह सब खुदा के आज्ञाकारी हैं। सुन रक्खो कि खुदाही की पैदा की हुई है और खुदाही का हुक्म है जो संसार का पालनेवाला और बढती वाला है। (५५) अपने पालन कर्त्ता से गिडगिड़ा कर और चुपके दुआ करते रहो। वह हद बढ़ने वालों को नही पसंद करता। (५६) और देशके सुधरे पीछे उस में फ़िसाद मत फैलाओ और डर से और आशा से खुदा को पुकारा खुदा की कृपा भले लोगों के क़रीब है। (५७) और वही है जो अपनी दया के आगे खुश खबरी देनेको हवायें भेजा करता है यहां तक कि वह पानी के भरे बादल उठा लाती है तो हम किसी मुर्दा बस्ती की तरफ उस बादल को हांक देते हैं फिर बादल से पानी बरसाते हैं फिर पानी से हर तरह के फल निकालते हैं इसी तरह हम (क़यामत के दिन) मुर्दों को निकाल खड़ा करेंगे। शायद तुम ध्यान दो। (५८) और जो शहर अच्छा है उसमें ईश्वर की आज्ञा से उसकी पैदावार अच्छी होती है और जो (शहर) खराब है

उसकी पैदावार खराबही होती है इसीतरह हम दलीलें तरह तरह से उन लोगों के लिये बयान करते हैं जो सच को मानते हैं। (५६) [रुकू ८] वेशक हमहीने नूह (पैग़म्बर) को उनकी क़ौमकीतरफ़ भेजा तो उन्होंने समझाया कि भाइयो अल्लाह की पूजाकरो उसके सिवाय कोई तुम्हारा पूजित नही मुझको तुमसे बड़े दिनकी सज़ा का डर है। (६०) उसकी जाति के सर्दारोंने कहा कि हमारे नज़दीक तो तुम ज़ाहिरा भटके हुए हो। (६१) (नूहने) कहा भाइयो मैं बहका नहीं बल्कि मैं तो दुनिया के पालने वाले का भेजाहुआ हूं। (६२) तुमको अपने पालनकर्त्ता का संदेशा पहुंचाता हूं और तुम्हें नसीहत देता हूं और मैं अल्लाह से ऐसी बातें जानता हूं जिन को तुम नहीं जानते। (६३) क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो कि तुमही में से एक शख़्श की, मार्फ़त तुम्हारे पालनकर्त्ता की आज्ञा तुमको पहुंचाता कि वह तुमको (ख़ुदा की सज़ासे) डराये और तुम बचो और शायद तुम पर कृपा की जावे। (६४) उन्हों ने उसे झुठलाया तो हमने नूहको और उन लोगो को जो उसके साथ थे किश्ती में बचालिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था (उनको) डुबो दिया । वह लोग अन्धे थे । (६५) [रुकू ६] और आद (एक कौम का नाम था) की तरफ़ उनके भाई हूत (पैग़म्बर) को भेजा उन्होने समझाया कि भाइयो अल्लाह की पूजा करो उसके अलावा तुम्हारा कोई पूजित नही क्या तुम नहीं डरते। (६६) उस जाति के सर्दार जो इन्कारी थे कहने लगे कि हम को तू बेवकूफ मालूम होता है और हम तुझको झूठा समझते हैं। (६७) कहा भाइयो ! मैं बेवकूफ नही बल्कि दुनियाके पालनकर्त्ता का भेजा हुआ हूं। (६८) तुमको अपने पालनकर्त्ता का संदेशा पहुंचाता हूं। और मैं तुम्हारा सच्चा खैरख़्वाह हूं। (६६) क्या तुम इस बातसे आश्चर्य करते हो कि तुमही में के एक शख़्स की

मार्फत तुम्हारे पालनकर्त्ता का हुक्म तुमको पहुंचा ताकि तुमको डरावे और यादकरो जब उसने तुमको नूह की क़ौम के बाद सर्दार बनाया और शरीर का फैलाव तुमको ज़ियादा दिया तो अल्लाह के पदार्थों को याद करो शायद तुम्हारा भला हो। (७०) उन लोगों ने पूंछा। क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम सिर्फ़ एक खुदा की पूजा करनेलगें जिनको हमारे बड़े पूजतेरहे (उनको) छोड़ बैठें. पस अगर सच्चे हो तो जिसका हमको डर दिखाते हो लेआओ। (७१) हूदने जवाब दिया कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुमपर सज़ा और कोप पड़ा, क्या तुम मुझसे कई नामों में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बड़ों ने गढ़ रक्खे हैं अल्लाह ने उनकी कोई सनद नहीं उतारी तो तुम सज़ा का इन्तिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूं। (७२) आखिरकार हमने अपनी दया से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ थे बचालिया और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते थे और न मानते थे उनकी जड़ें काट डाली। (७३) [रुकू १०] और समूद की तरफ उनके भाई सालह को भेजा (सालह ने) कहा कि भाइयो खुदाहो की पूजा करो-उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से तुम्हारे पास एक दलील साफ़ आ चुकी कि यह खुदाकी (भेजी हुई) ऊंटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार है तो इसे छुटी फिरने दो कि खुदा की ज़मीन में (से जहां चाहे) चरे और किसी तरह का नुक़सान पहुंचाने की नियतसे इसको छूना भी नहीं तो तुमको दुःखदाई सजा होगी। (७४) और याद करो जब उसने तुमको आद (क़ौम) के बाद सर्दार बनाया और तुमको ज़मीन पर इस तरह से बसाया कि तुम मैदान में महल खड़े करते और पहाड़ोंको तराशकर घर बनाते हो अल्लाहके अहसानों को याद करो और देश में फ़िसाद मत फैलाते फिरो। (७५) सालिह की

क़ौम में जो लोग अभिमानी सर्दार थे ग़रीब लोगों से जो उनमें से ईमान ले आये थे पूछने लगे क्या तुमको खूब मालूम है कि सालह खुदा का पैग़म्बर है उन्हों ने जवाब दिया जो हुक्म उनका देकर हमारी तरफ़ भेजा गया है हमारा तो उसपर विश्वास है। (७६) जिनको बड़ा घमंड थी कहने लगे कि जिस चीज पर तुम ईमान ले आये हो हमतो उसे नही मानते । (७७) फिर उन्होंने उंटनी को काट डाला और अपने पालनकर्त्ता के हुक्म से सरकशी की और कहा कि हे सालह जिसका तुम हमको डर दिखलाते थे अगर तुम पैग़म्बर हो तो हम पर लाकर उतारो। (७८) पस उनको भूकम्पने घेरलिया और अपने घरों मे सुबह को मरेहुए औन्धे पड़े रहगये। (७६) सालह उनसे यों कहता हुआ चला गया कि भाइयो मैं तो अपने पालनकर्त्ता का संदेशा तुमको पहुंचा चुका और तुम्हारा भला चाहा, मगर तुम नहीं चाहते भला चाहने वालो को। (८०) उसने लूत को भेजा और अपनी कौम से कहा क्या तुम लोग दुनिया जहान में तुमसे पहिले किसी ने ऐसी निर्लज्जता नही की। (८१) कि तुम स्त्रियों को छोड़कर विषय भोग के लिये मर्दों पर दौडते हो वल्कि तुम हद्द पर नहीं रहते हो। (८२) और लूत की जातिका जवाब यही था कि वह कहने लगे कि इन लोगों को अपनी वस्ती से निकाल बाहर करो। यह ऐसे लोग हैं जो पाक साफ़ बनना चाहते हैं। (८३) पस हमने लूत को और उनके घर वालों को बचाया मगर उसकी बीबी रहगई वह बाक़ी रहने वालों में थी। (८४) और हमने इन पर पत्थरों का मेह बरसाया तो देखना कि अपराधियों का परिणाम कैसा हुआ। (८५) [रुकू ११] मदीअन वालों की तरफ़ उनका भाई शोयेब (पैग़म्बर) भेजागया उसने कहा हे भाइयो ! अल्लाहको पूजाकरो उस के सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं। तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़

से तुम्हारे पास दलील ज़ाहिर हो चुकी है तो नाप और तौल पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें घट (कम) न दो और दुरुस्ती के बाद ज़मीन में फ़साद न करो यह तुम्हारे लिये भला है अगर तुम्हें यक़ीन हो। (८६) और हर राह पर डराने और रोकने को न बैठो और अल्लाह की राह में दोष मत ढूंढो और याद करो कि तुम थोड़े थे फिर खुदाने तुम्हें बहुत किया और देखो कि फ़साद करने वाले का कैसा परिणाम (अंजाम) हुआ। (८७) और अगर तुम में से एक फरीक़ने मेरी पैग़म्बरी को माना है और एक ने नहीं माना चाहिये कि तुम संतोष करो जब तक अल्लाह हमारे बीच फैसला करे वह सबसे बढ़कर फैसला करने वाला है। (८८)

—o—

नवां पारा।

शोएब की क़ौम के घमण्डी सर्दार बोले कि हे शोएब या तो तुम हमारे दीनमें लौट आओ नहीं तो हम तुमको और जो तेरे साथ ईमान लाये हैं अपने शहर से निकाल देंगे शोएब ने कहा क्या हम उस हालत में भी लौट आवें जब कि हम उसके खिलाफ़ हैं। (८६) जब कि खुदा ने तुम्हारे मजहब से हमें अलाहिदा कर दिया फिर भी अगर उसमें लौट आवे तो हमने खुदापर झूठ बांधा और हमारा काम नहीं कि उसमें आवें लेकिन अगर हमारा खुदा चाहे (तो हो सकता है) । हमारा पालनकर्त्ता अपने इल्म में हर चीज़ को जानता है अल्लाह पर हमने भरोसा किया—हे खुदा! हममें और हमारी जाति में तू ठीक न्याय कर क्योंकि तू सबसे अच्छा न्यायी (मुन्सिफ़) है। (९०) और शोएब की जाति के सर्दार जो इन्कारी थे बोले कि अगर शोएब की राहपर चलोगे तो तुम बर्बाद होगे

(६१) फिर उन्हें भूचाल ने घेरा और सुबह को अपने घरो में औंधे मरे पड़े थे। (९२) जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया गोया उन वस्तियों में कभी थेही नही। जिन लोगाने शाएवको झुठलाया वही वर्वाद हुए। (६३) शोएब उनसे हट गया और कहा हे क़ौम मैंने खुदा का संदेशा तुम्हें पहुंचाया और तुम्हारा भला चाहा फिर जिन लोगों ने न माना उन पर क्या अफ़सोस करूं। (९४) [रुकू १२] और जिस वस्ती में हमने पैग़म्बर भेजा वहां के रहने वालों पर हमने सख़्ती भी की और आफ़तभो डाली ताकि यह लोग गिड़ गिड़ायें। (६५) फिर हमने बुराई को जगह भलाई को वदला यहां तक कि लोग खूब वढे और कहने लगे कि इसतरहकी सख़्तियां और आराम तो हमारे वड़ो को भी पहुंच चुका है तो हमने उनको अचानक धर पकड़ा और वह वेखवर थे। (६६) और अगर वस्तियों वाले ईमानलाते और परहेज़गारी करते तो हम आस्मान और ज़मीन की वढती को उनपर खोलदेते मगर उनलोगों ने झुठलाया तो उन कामों की सज़ा में जो वह करते थे हमने उन को पकड़ा। (९७) तो क्या वस्तियों के रहने वाले इससे निडर हैं कि उनपर हमारी सज़ा रातोरात पड़े और वह सोये हुए पड़े हो। (६८) या वस्तियाके रहनेवाले इससे निडर हैं कि हमारी सज़ा दिन दहाड़े उनपर पड़े जवकि वह खेलकूद रहेहों। (६६) तो क्या अल्लाह के दांव से निडर होगये हैं सो अलाह के दाँव से तो वही लोग निडर होते हैं जो वर्वाद होने वाले हैं। (१००) [रुकू १२] जो लोग वहां के लोगों के जाने पीछे ज़मीन के मालिक होते हैं क्या इस वात की सूझ न आई कि अगर हम चाहें तो इनके पापों के वदले इन पर आफ़त डालें और हम इनके दिलों पर मुहर कर दें तो यह लोग नहीं सुनते। (१०१) (हे पैग़म्बर) यह चन्द वस्तियां हैं जिनके हालात हम तुमको सुनाते हैं और इन लोगों के

पैग़म्बर इन लोगो के पास चमत्कार भी लेकर आये मगर यह लोग (ऐसी तबीयत के) न थ कि जिस चीज को पहिले झुठला चुके हो उसपर ईमान ले आवे। काफ़िरो के दिलो पर खुदा इसीतरह मुहर लगा दिया करता है। (१०२) और हमने तो इनमें से बहुतेरो को वचन का पक्का न पाया और हमने इनमेंसे बहुतों को बेहुक्म पाया। (१०३) फिर उनके बाद हमने मूसा को चमत्कार देकर फिरऔन और उसके सर्दारो को तरफ भेजा तो इन लोगो ने ज़ियादती की। देखना कि 'फ़िसादियो का कैसा परिणाम हुआ। (१०४) और मूसाने कहा कि हे फिरऔन मैं दुनिया के पालने वाले का भेजा हुआ हूं। (१०५) कि सचके सिवाय खुदा की बाबत दूसरी बात न तुम लोगो के पास तुम्हारे पालनकर्त्ता से चमत्कार लेकर आया हूं,, तू इसराईल के बेटो को मेरे साथ करदे। (१०६) बोला कि अगर तू कोई चमत्कार लेकर आया है सच्चा है तो वह लाकर दिखा। (१०७) इसपर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते है कि वह जाहिरा एक अजगर होगया। (१०८) और अपना हाथ निकाला तो लोगों को सफेद दिखलाने लगा। (१०९) [रुकू १४] फिरऔन के लोगो मेसे जो दरबारी थे कहने लगे कि यह तो बड़ा होशियार जादूगर है। (११०) चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे तो क्या राय देते हो। (१११) सबने मिलकर कहा कि मूसा और उसके भाई हारूंको इस वक्त ढीलदे और गांवो मे कुछ हलकारे भेजिये। (११२) कि तमाम जानकार जादूगरो को आपके सामने लाकर हाजिर करें। (११३) निदान जादूगर फिर औनके पास हाजिर हुए कहनेलगे कि अगर हम जीत जावें तो हमको इनाम मिलना चाहिये। (११४) कहा हां! और जरूर तुम मेरे पास रहा करोगे। (११५) जादूगरो ने कहा-हेमूसा या तो तुम (अपना डंडा) लेकर डालो और या

हमही पहिले डालते हैं। (११६) मूसा ने कहा तुम्हीं डालो जब उन्होंने (अपनी लाठियां और रस्सियां) डाल दीं तो जादू के ज़ोर से लोगों की नज़रबन्दी करदी (कि चारों तरफ़ सांपही सांप दिखलाने लगे) और उनको भय में डाल दिया और बड़ा जादू लाये। (११७) और हमने मूसा की तरफ़ ईश्वरीयसँदेशा भेजा कि तुम भी अपना असा (लाठी) डालदो (मूसा ने असा (लाठी डालदी) तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूठ मूंठ बना खड़ा किया था उसको वह लीलने लगा। (११८) पस सच बात साबित होगई और जो कुछ जादूगरों ने किया था झूठा होगया। (११९) पस फिरऔन और उसके लोग उस अखाड़े में हारे और ज़लील (बर्बाद) होगये। (१२०) और जादूगर सिजदे (शिर नवाने) में गिर पड़े। (१२१) बोल उठे कि हमतो संसार के पालनकर्त्ता पर ईमान लाये। (१२२) जो मूसा और हारूं का पालनकर्त्ता है। (१२३) फिरऔन बोला अभी मैंने हुक्मही नहीं दिया और तुम ईमान ले आये हो न हो यह तुम्हारा फरेब है जो शहर में तुमने बांधा है ताकि यहां के लोगों को इस शहर से निकाल दो सो तुमको अब मालूम होजावेगा। (१२४) तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पांव उलटे (याने दाहिना हाथ तो बांया पैर और बांया हाथ तो दाहिना पैर) कटवाऊं फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊंगा। (१२५) वह कहने लगे हमको तो अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ लौट कर जानाहै। (१२६) और तू हमसे इसीलिये दुश्मनी करता है कि हमने अपने पालनकर्त्ता के चमत्कार जब हमारे पास पहुंचे मान लिये हैं। हे हमारे पालनकर्त्ता हमे संतोषदे और हमें मुसलमानही मार। (१२७) [रुकू १५] और फिरऔन के लोगों में से सर्दारोंने कहा कि क्या मूसा और उसकी जाति को रहने दोगे कि देश में द्रोह (फ़िसाद)

फैलाते फिरें और वह तुझको और तेरी मूर्तियों को छोड़ दें उसने कहा अब हम इनके बेटों को मारेंगे और उनकी औरतों को रक्खेंगे और हम उन पर विजयी (ग़ालिब) रहेंगे। (१२८) मूसाने अपनी जाति से कहा अल्लाह से मदद मांगो और संतोष करो देश तो सब अल्लाह ही का है अपने सेवकों में से जिसको चाहता है उसको वारिस बना देता है और डरनेवालों का परिणाम भला होगा। (१२९) और वह कहने लगे कि तुम्हारे आने से पहिले हमको दुःख मिला और तेरे आये पीछे भी (मूसाने) कहा कि क़रीब है कि पालनकर्त्ता तुम्हारे दुश्मन को मार डाले और तुमको बादशाह करै फिर देखे तुम कैसे काम करते हो। (१३०) [रुकू १६] और हमने फ़िरऔन के लोगों को अकालों और पैदावार की कमी में फंसाया ताकि वह लोग मान जावें। (१३१) फिर जब उनको कोई भलाई पहुंचती तो कहते यह हमारी ही वजह से है और अगर उनपर कोई आफ़त आती तो मूसा और उनके साथियों का अभाग्य बताते सुनो जी उनका अभाग्य ख़ुदा के यहां है लेकिन उनमें के बहुतेरे नहीं जानते। (१३२) और (फ़िरऔन के लोगों ने मूसा से) कहा तुम कोई सी निशानी हमारे सामने लाओ कि उसके ज़रिये से तुम हम पर अपना जादू चलाओ तो हमतो तुम पर ईमान लानेवाले नहीं हैं। (१३३) फिर हमने उनपर तूफ़ान भेजा और टीडियां, जुएँ और मेंडक और ख़ून यह सब जुदे २ चमत्कार थे इस पर भी वह लोग अकड़े रहे और वे लोग पापी थे। (१३४) और जब उनपर सज़ा पड़ी तो बोले हे मूसा! तुम से जो ख़ुदा ने वादा (प्रतिज्ञा) कररक्खा है उसके सहारे पर अपने पालनकर्त्ता से हमारे लिये पुकार अगर तुमने हमपर से सज़ा को टाल दिया तो हम ज़रूर तुम पर ईमान ले आवेंगे और इसराईल के बेटों को भी तुम्हारे साथ भेज देवेंगे फिर जब हमने एक समय तक के लिये

जिसवक्त उनको पहुंचना था सज़ा को उनसे उठालिया तो वह फौरन् वादा खिलाफ़ होगये। (१३५) फिर हमने उनसे बदला लिया और नदी में डुबोदिया क्योंकि वह हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बे परवाही करते थे। (१३६) और ज़मीन जिससे हमने बढ़ती दी थी हमने उन लोगों को उनके पूर्व और पश्चिम का मालिक करदिया जो (फ़िरऔन के यहां) कमज़ोर हो रहेथे और इसराईल के वंश पर तेरे पालनकर्त्ता का अच्छा वादा पूरा होगया उनके संतोष के कारण से और जो फ़िरऔन और उसकी जातिके लोगोंने बनाया था और अंगूर टट्टियों पर चढ़ायेथे। हमने बर्बाद करदिये। (१३७) और हमने इसराईलके बेटों को समुद्र पार उतारदिया तो वह ऐसे लोगों के पास पहुंचे जो अपनी मूर्तियों को पूजते थे (उनको देखकर इसराईल के बेटे मूसासे) कहने लगे कि हे मूसा जिसतरह इन लोगोंके पास मूर्तें हैं एक मूर्ति हमारे लिये भी बना दो। (मूसाने) जवाब दिया कि तुम जाहिल लोगहो। (१३८) यह लोग जो हैं नाश होनेवाले हैं और जो काम यह लोग कर रहे हैं झूठे हैं। (१३९) (मूसाने यहभी) कहा क्या खुदा के सिवाय कोई पूजित तुम्हारे लिये पहुंचा दूं हालांकि उसीने तुमको संसार के लोगों पर बढ़ती दी है। (१४०) और हे इजराईल के बेटो, वह वक्त याद करो जब हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से बचाया था कि वह लोग तुमको बड़े दुःख देतेथे तुम्हारे बेटोंको मारडालते और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रखते और इसमें तुम्हारे पालनकर्त्ता का बड़ा अहसान था। (१४१) [रुकू १७] और हमने मूसा से तीस रातका वादा किया और हमने दश रातें और मिलाईं, तब तेरे पालनकर्त्ताकी मुद्दत चालीसरात पूरीहुई और मूसाने अपने भाई हारूं से कहा कि मेरी जाति में प्रतिनिधि (क़ायम मुक़ाम) बने रहना और सम्भाल रखना और झगड़ालुओं की राह न चलना। (१४२) और

जब मूसा हमारे वादे के वक्त (तूर पहाड़ पर) हाज़िर हुए और उनके पालनकर्त्ताने उनसे बातें की तो (मूसाने) अर्ज किया कि हे हमारे पालनकर्त्ता तू मुझको दिखला कि मैं तेरी तरफ एक नज़र देखूं। फर्माया तुम हमको हरगिज़ न देख सकोगे-मगर हां पहाड़पर नज़र करो पस अगर पहाड़ अपनी जगह ठहरा रहा तो तू भी हमें देख सकेगा फिर जब उसका पालनकर्त्ता पहाड़पर (प्रकाश) ज़ाहिर हुआ तो उसको चकनाचूर कर दिया और मूसा मूर्च्छा खाकर गिरपड़ा फिर जब होश में आया तो बोल उठा कि तेरी जाति पाक है मैं तेरे सामने तोबा करता हूं और तुझ पर ईमान लाने वालों में पहिला हूँ। (१४३) (खुदाने) फर्माया हे मूसा हमने तुम को अपनी पैग़म्बरी और परस्पर बात-चीत से लोगों पर फ़ज़ीलत दी तो जो (सहीफ़े तौरात) हमने तुम को दिया है उसको लो और शुक्रगुज़ार रहो। (१४४) और हमने (तौरात की) तख्तियों में मूसा के लिये हर तरह की शिक्षा और हर चीज की तफ़सील लिखदी थी-तो इसको मज़बूती से पकड़े रह-अपनी जात को हुक्म दो कि इस किताब की अच्छी २ बातों के पल्ले बांधे रहो और (उनको यह भी समझाओ) मैं तुम लोगों को बेहुक्म लोगों का घर दिखाऊंगा। (१४५) जो लोग व्यर्थ (नाहक़) देश में अकड़ते फिरते हैं हम उनको अपनी निशानियों से फेर देंगे और (उनके दिलों को ऐसा सख्त करदेंगे कि) अगर सब चमत्कार भी देखें तो भी उन पर ईमान न लावें और अगर सीधा रास्ता देख पावें तो उस को अपना रास्ता न मानें और अगर गुमराही का रास्ता देख पावें तो उसको रास्ता बनालें यह हुक्म उनमें इसलिये पैदा हुए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से बेपरवाही करते रहे। (१४६) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और क़यामत के आने को नहीं माना उनका किया धरा सब अकार्थ-गया क्या उनको उन्हीं कर्मों को [illegible]

थे। (१४७) [रुकू१८] और मूसाके पीछे उनकी जातिने अपने आ-भूषणको (गलाकर) उसका एक बछड़ा बनाकर खड़ा किया कि वह एक जिस्म था जिसकी आवाज़ भी गाय कैसी थी (और उसको पूजा करने लगे) उन्हों ने यह न देखा कि वह न उन से बात करता है और न राह दिखा सक्ता है। उन्हों ने उसको (देवता) मान लिया और वे अन्यायी थे। (१४८) और जब पछिताये और समझे कि हम बहके तब बोले कि अगर हमारा पालनकर्त्ता हम पर दया न करे और हमारे अपराध क्षमा न करैगा तो हम घाटे मे आजावैंगे। (१४६) और जब मूसा अपनी जाति की तरफ़ गुस्सा और रंज से भरे हुए लौटे तो बोले कि मेरे पीछे मेरी गैरहाज़िरी मे तुमने बुरी हरकत की। क्या तुम ने अपने पालनकर्त्ता के हुक्म की जल्दी की और मूसाने तख़्तियो को फैंक दिया और अपने भाई के सिर को पकड़कर उनको अपनी तरफ़ खींचने लगा कहा हे मेरे सगे भाई! लोगो ने मुझ को नाचीज़ समझा और जल्द मुझ को मारने वालेथे तो दुश्मनों को मुझपर हँसनेका (मौका) न दो और मुझको ज़ालिम लोगों के साथ मत शामिल करो। (१५०) मूसा ने कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता ! मुझे और मेरे भाई का अपराध क्षमा कर और हम को अपनी दया मे ले और तू सब दया करने वालो से बडा है। (१५१) [रुकू १६] जो लोग बछड़े को ले बैठे उन पर उनके पालनकर्त्ता का कोप पड़ेगा और दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत और झूठ बांधने वालो को हम इसीप्रकार सज़ा दिया करते हैं। (१५२) और जिन्होंने बुरे काम किये फिर इसके बाद तोबा की और ईमान लाये तो तुम्हारा पालनकर्त्ता तोबा के बाद क्षमा करनेवाला मिहरबान है। (१५३) और जब मूसा का कोप जाता रहा तो उन्होंने तख़्तियोंको उठालिया और तोरात को तख़्तियों मे उन लोगो के लिये जो अपने पालनकर्त्ता से डरते हैं हिदायत

और दया है। (१५४) और मूसाने हमारे वादे के वक़् के लिये अपनी जातिमेसे ७० आदमी चुने फिर जब उनको भूचालने आघेरा तो मूसा ने कहा हे हमारे पालनकर्त्ता अगर तू चाहता तो उन्हें और मुझे पहिलेही से मारडालता। क्या तू हमें हमारे चन्दमूर्खों के काम से मारे डालता है यह सब तेरा आज़माना (परीक्षा) है जिसे चाहे इससे विचलावे और जिसको चाहे राहदे। तू ही हमारा काम का संभालने वाला है। तू हमारे अपराध क्षमाकर और हम पर कृपाकर और तू तमाम बख़्शने वालो से अच्छा है। (१५५) और इस दुनियां और क़यामत की बिहतरी हमारे नाम लिखदे हम तेरीही तरफ़ लगगये (खुदाने) कहा कि हमारी सज़ा उसी पर आती है जिसे हम सज़ा दिया चाहते हैं। और हमारी दया सब चीजो पर समान है तो हम उसको उन लोगो के नाम लिखलेवेंगे जो डरते और जकाद देते और जो हमारी आयतो पर ईमान लाते हैं। (१५६) जो पैग़म्बर बिनापढ़ (मोहम्मद) की पैर्वी करते हैं जिनको अपने यहां तौरात और इंजील मे लिखा हुआ पाते हैं वह उनको अच्छे कामको हुक्म देता और बुरे काम से मना करताहै और पाक चीजो को उनके लिये हलाल ठहराता और नापाक चीजो को उन पर हराम करता है और उनसे उनके बोझ और तौक़ (क़ैदी के गले का बन्ध) उन पर से दूर करता है। तो जो लोग उन पर ईमान लाये और उनकी हिमायत की और उनको मदद दी और जो रोशनी (कुरान) उनके साथ भेजी गई है उसको मानने लगे यही लोग बामुराद हैं। (१५७)। [रुकू २०] कहो कि लोगो मैं तुम सब की तरफ़ उस खुदा का भेजा हुआ हूं कि आस्मान और ज़मीन का राज उसीका है उसके सिवाय और कोई पूजित नहीं। जिलाता और मारता है तो अल्लाह पर ईमान लाओ और उनके रसूल और नबी बिनापढ़े (मोहम्मद) पर कि अल्लाह और उनकी किताबो पर

...मान रखते हैं और उन्ही की पैरवी करो ताकि तुम सीधे रास्ते पर आजाओ। (१५८) और मूसा की जाति में से कुछ लोग जो सच्ची बात का उपदेश और सच ही के बमूजिब न्याय करते हैं। (१५६) और हमने याक़ूब के बेटों को बांटकर एक एक दादा की संतान के बारह कबीला[1] (गिरोह) बनाये और जब मूसा से उसकी जातिने पानी मांगा तो हमने मूसा की तरफ़ वहीं (ईश्वर का संदेशा) भेजी कि अपनी लाठी उस पत्थर पर मारो लाठी का मारना था कि पत्थर से बारह सोते (चश्मे) फूट निकले हर एक क़बील ने अपना अपना घाट मालूम करलिया और हमने याक़ूब के बेटो पर बादल की छायाकी और उनपर मन और सलवा उतारा कि यह सुथरी रोज़ी है जो हमने तुमको दी है खाओ और उन लोगो ने (उदूल हुक्मी की) हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया बल्कि अपना ही नुक़सान करते रहे (यानी उनका आना बन्द हुआ) । (१६०) और जब इसराईल के बेटो को आज्ञा दीगई कि इस गांव (ररीहा) में बसो और इसमें से जहां से तुम्हारा जी चाहे खाओ और मौत से हित्ततुन (पाप दूर हो) कहो और दरवाजे में सिजदा करते हुए दाखिल हो हम तुम्हारे अपराध क्षमा करदेवेंगे और नेकों को ज़ियादा भी देंगे। (१६१) तो जो लोग उनमें से ज़ालिम थे वह दुआ, जो उनको सिखाई गई थी बदल कर कुछ और कहने लगे तो हमने उनकी नटखटीके बदले आस्मान से उन पर सज़ा उतारी। (१६२) [रुकू २१] और इसराईल के बेटों से उस गांव का हाल पूछो जो नदी के किनारे था, जब वहां के लोग (शनीचर के दिन) ज़ियादतियां करने लगे कि जब उनके शनी-चर का दिन होता तो मछलियां उनके सामने आकर जमा होतीं

(१) इसराईल की संतान यानी याक़ूब के १२ बटे इन बेटो को संतान अलग २ एक २ क़बीला है।

और जब उनके शनीचरका दिन न होता तो न आतीं । यों हमने उन्हें जांचा इसलिये कि यहलोग आज्ञा न माननेवाले थे। (१६३) और जब इनमें से एक जमात ने कहा जिन लोगोंको खुदा हलाक़ (मारडाला) करता या उनको कठिन सज़ा में फंसाना चाहता है तुम क्यों उप-देश देते हो। उन्हों ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पालनकर्त्ता के सामने पाप दूर करने के लिये और शायद यह लोग रुक जांय। (१६४) तो जब वह उपदेश जो उनको किये गये थे भुला दिये तो जो लोग बुरे काम से मना करते थे उनको हमने बचालिया और जालिमों को उनकी बेहूदगी के बदले हमने उन को सख्त सज़ा में फंसाया। (१६५) फिर जिस काम से उनको मना किया जाता था जब उसमें हद से बढ़गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फटकारे हुए बन्दर बनजाओ। (१६६) जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने जता दिया था कि वह जरूर उन पर कयामत के दिन तक ऐसे हाकिम मुकर्रर रक्खेगा जो उनको बुरी तकलीफें पहुँचाते रहेंगे तुम्हारा पालनकर्त्ता जल्द सज़ा देता है और वह बेशक क्षमा करने वाला मिहरबान है। (१६७) और हमने यहूद को गिरोह गिरोह करके मुल्क में अलग अलग करादिया है उनमें से कुछ भले थे और कुछ भले नहीं थे और हमने उनको सुख और दुःख से अजमाया शायद वह फिरें। (१६८) फिर उनके बाद ऐसे नालायक किताब के वारिस बने कि इस नाचीज दुनियां की चीजैली-और कहते हैं कि यह अपराध तो हमारा क्षमा होजायगा और अगर इसीतरह की कोई सांसारिक वस्तु उनके सामने आजावे तो उसे लेलेते है-क्या इन लोगों से इस प्रतिज्ञा जो किताब (तौरात) में लिखी है नहीं हुई कि सच बातके सिवाय दूसरी बात खुदा की तरफ न कहेंगे जो कुछ उसमें है उन्होंने उसको पढ़लिया और जो लोग परहेजगार हैं उनको आखिरत का घर उनके हक़में कहीं अच्छा है (हे याकूब के बेटो) क्या तुम

नही समझते। (१६९) और जो लोग किताब को मजबूती से पकड़े हुये हैं और नमाज़ पढ़ते हैं तो हम ऐसे अच्छे काम करने वालों के पुण्यको नाश नही होनेदेंगे। (१७०) और जब हमने उनपर पहाड़ को इस तरह जा लटकाया कि गोया वह शायबान (छायादेनेवाला) था और समझे कि यह उनपर गिरेगा, जो किताब तुमको दीहै मज़बूती के साथ लिये रहना और जो कुछ उसमे हैं उसे याद रखना–शायद तुम परहेज़गार बनो। (१७१) और जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने आदम के बेटो से उनकी पीठो से उनकी सन्तान को निकालाथा और उनके मुक़ाबिले मे खुद उन्होको गवाह बनाया, क्या मै तुम्हारा पालनकर्त्ता नही हूं ! सब बोले हो ? यह गवाही हमने इसलिये ली कि क़यामत के दिन न कहने लगो कि हम सब बात से बेखबर ही रहे। (१७२) या कहने लगो कि सिर्फ (खुदा का साझी ठहराथा) तो हमारे बड़ोहीने निकाला और हम उनके बाद उन्ही की सतान थे तो (हे खुदा) क्या तू हमको उन लोगो के अपराधो के जुर्म के बदले मे हलाक़ किये देता है जिन्हा ने भूलकी। (१७३) और इसी तरह आयतो को हम तफ़सील के साथ बयान करते हैं शायद वह फिरैं। (१७४) और (हे पैग़म्बर) इन लोगो को उस शख्स का हाल पढ़कर सुनाओ जिसको हमने अपनी (आयतें) करामाते दी थी फिर वह आयतो मे से निकल गया फिर शैतान उसके पीछे लगा और वह गुमराहो (भूले हुओ) मे जा मिला। (१७५) और अगर हम चाहते तो उनकी बदौलत से उसका दर्जा ऊचा करते मगर उसने नीचे मे गिरना चाहा और अपनी दिलकी ख्वाहिशो के पीछे लग गया तो उसकी कहावत कुत्ते कैसी कहावत होगई कि अगर उसको खदेरदोगे तो जीभ बाहर लटकाये रहे और अगर उसको (उसी की दशापर) छोड रक्खो तो भी जीभ लटकाये रहे यही कहावत उन लोगो की है जिन्हा ने

हमारी आयतों को झुठलाया तो यह क़िस्से बयानकरो ताकि यह लोग सोचें। (१७६) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनकी बुरी कहावत है और वह कुछ अपनाही बिगाड़ते रहे हैं। (१७७) जिनको खुदा राह दिखाये वही राह पाते हैं और जिनको वह गुमराह करे वही लोग घाटे में हैं। (१७८) और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य नरक ही के लिये पैदा किये हैं उनके दिल तो हैं (मगर) उनसे समझने का काम नहीं लेते और उनके आंखे भी हैं (मगर) उनसे देखने का काम नहीं लेते और उनके कान भी हैं उनसे सुनने का काम नहीं लेते सारांश यह कि यह लोग पशुओं की तरह हैं बल्कि उनसे भी गिरेहुए हैं यही बेखबर हैं। (१७९) और अल्लाह के (सब) नाम अच्छे हैं तो उसके नाम लेकर उसको (जिस नाम से चाहो) पुकारो और जो लोग उसके नामों में निन्दा करते हैं उनको छोड़ दो वह अपने किये का फल पावेंगे। (१८०) और हमारी सृष्टि में ऐसे लोग भी हैं जो सच्च बात का उपदेश और उसीके अनुसार न्याय भी करते हैं। (१८१) [रुकू २३] जिन लोगों ने हमारी आयतोंको झुठलाया हम उन्हें इस तरह पर कि उनको खबर भी न हो धीरे २ (नरक की तरफ़) लेजावेंगे। (१८२) और हम उनको (संसार में) अवकाश देते हैं हमारा दांव बेशक पक्का है। (१८३) क्या इन लोगोंने ख्याल नहीं किया कि इनके साहिब को (याने मुहम्मद) को किसी प्रकार का जनून (पागलपन) तो नहीं है। यह तो खुल्लम खुल्ला (खुदा की सज़ा से) डराने वाला है। (१८४) क्या इन लोगों ने आसमान और जमीन के इन्तजाम और खुदा के पैदा की हुई किसी चीज पर भी नजर नहीं की और न इस बात पर कि आश्चर्य नहीं इनको मौत ने घेरा हो। तो अब इसके [illegible] पीछे और कौन सी बात है जिसपर इनको ईमान [illegible]

(१८५) जिसको खुदा गुमराह करे तो फिर कोई भी उसका राह दिखाने वाला नहीं और खुदाही इनको छोड़े हुए है कि अपनी नटखटी में पड़े भटका करें। (१८६) (हे पैग़म्बर लोग) तुमसे क़यामतके बारे में पूछते हैं कि कहीं उसका ठिकाना भी है। तुम जवाब दो कि उसका इल्म तो मेरे पालनकर्त्ता का है। बस वही उसको उसके समयपर लाकर दिखावेगा। वह एक बड़ाभारी घटना आस्मान और ज़मीनमें होगी-क़यामत अचानक तुम लोगोंके सामने आवेगी (हे पैग़म्बर) यह लोग तुमसे (क़यामत का हाल) ऐसे पूछते हैं गोया तुम उसकी खोज में लगे रहेहो (तो इनसे) कहो कि इसकी मालूमात तो बस खुदाही को है लेकिन अक्सर आदमी नहीं समझते। (१८७) (हे पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो मेरा अपना जातीय हानि लाभ भी मेरे अधिकार में नहीं मगर जो खुदा चाहे (होकर रहता है) और अगर मैं ग़ैब (परोक्ष) जानता होता तो अपना बहुत सा लाभ करलेता और मुझको (किसी तरह का) दुःख न पहुँचता, मैं तो उन लोगों को जो ईमान लाना चाहते हैं (नरक का) डर और (वैकुण्ठ की) खुशखबरी सुनाने वाला हूं। (१८८)। [रकू २४] पस वही है जिसने तुमको एक शरीरसे पैदा किया और उससे उसकी स्त्री को निकाला ताकि पुरुष स्त्री की तरफ ध्यान दे, तो जब पुरुष का स्त्री से संगम हुआ तो स्त्री के एक हलका सा गर्भ रहगया फिर वह उस गर्भ को लिये लिये फिरती थी फिर जब (गर्भ के कारण) ज़ियादा बोझ होगया तो मियां बीबी दोनों मिलकर खुदा से दुआ मांगने लगे कि (हे खुदा) अगर तू हमको पूरा बच्चा देगा तो हम तेरा बड़ा अहसान मानेंगे। (१८९) फिर जब उनको पूरा बच्चा दिया तो उस (संतान) में जो खुदा ने उनको दी थी खुदा के लिये शरीक ठहराया सो खुदा के बनावटी साझी से खुदा की प्रतिष्ठा बहुत ऊंची है।

(१९०) क्या वह ऐसे (कल्पित पूजितो) को (खुदा का) शरीक बनाते है जो किसी चीज को पैदा नही करसक्ते और वह खुद पैदा किये हुए है। (१९१) और न वह उनकी मदद करने की सामर्थ रखते है और न आप अपनी मदद करसक्ते है। (१९२) और अगर तुम उनको सच्चे मार्ग की ओर बुलाओ तो तुम्हारे उपदेश पर न चलसके चाहे तो तुम उनको बुलाओ या चुप रहो (दोनो बातें) तुम्हारे लिये बराबर हैं। (१९३) (हे मुशरको तुम) खुदा के सिवाय जिन लोगों को बुलाते हो (वह भी) तुम जैसे सेवक हैं अगर तुम सच्चे हो तो उन्हें उस हालत मे पुकारो जब वह तुम्हे जवाब देसके। (१९४) क्या उनके ऐसे पांव है। जिनसे चलते है या उनके ऐसे हाथहै जिनसे पकडते हैं या उनकी ऐसी आंखे हैं जिनसे देखते है या उनके ऐसे कान है जिन से सुनते है (हे पैग़म्बर इन लोगा से) कहो कि अपने (ठहरायेहुए) शरीको को बुलालो फिर (सब मिलकर) मुझपर अपना दांव कर चलो और मुझको (जरा भी) अव-काश मत दो। (१९५) अल्लाह जिसने इस किताब को उतारा है वही मेरा काम सम्भालने वाला है और वही अच्छे सेवको की हिमायत करता है। (१९६) और उसके सिवाय जिन (पूजितो) को तुम बुलाते हो न वह तुम्हारी मदद करसक्ते है न अपनी मदद करसक्ते है। (१९७) और अगर तुम उनको सीधे रास्ते की तरफ बुलाओ तो (तुम्हारी एक) न सुने और वह तुझको ऐसे दिखलाई देते है कि (गोया) वह तेरी तरफ देख रहे है हालांकि वह देखते नही। (१९८) (हे पैग़म्बर) क्षमा को पकडो और (लोगों से) भले काम (करने) को कहो और मूर्खों से अलग रहो। (१९९) और अगर शैतान के गुदगुदाने से गुदगुदी तुम्हारे दिल मे पैदा हो तो खुदा से शरण मांग वह सुनता

और जानताहै। (२००) जो लोग परहेज़गारहैं जब कभी शैतान की तरफ़ का कोई ख्याल उनको छूभी जाता है तो जान जाते हैं और वह उसी दम देखने लगते हैं। (२०१) और इनके भाई इनको गुमराही में घसीटते हैं फिर कोताही नही करते। (२०२) और जब तुम इन लोगों के पास कोई आयत नही लाते तो कहते हैं कि क्यों कोई आयत नहीं बनाई। (२०३) तुम कहो कि मैं तो जो कुछ मेरे पालनकर्ता के यहां से मेरी तरफ़ वही (ईश्वरीय सँदेशा) आई है उसी पर चलता हूं यह हिदायत और दया और सोच समझ की बातें ईमान वालो के लिये तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से हैं और जब कुरान पढ़ा जाया करै तो उसको कान लगाकर सुनो और चुपरहो शायद तुम पर कृपा की जावे। (२०४) और अपने दिल में गिड़गिड़ाकर और डर कर और धीमी आवाज़ से सुबह व शाम अपने पालकर्त्ता को याद करते रहो और भूले न रहो। (२०५) जो तुम्हारे पालनकर्त्ता के नज़दीकी हैं उसकी पूजा से मुहँ नहीं फेरते और उसको पवित्रता की माला फेरते हैं और उसी के आगे शिर नवाते हैं। (२०६)।

—:※:—

सूरे अनफाल (लूटका माल)

मदीने में उतरी इसमें ७६ आयतें १० रुकूहैं।

(शुरुअ) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मिहरबान है [रुकू० १] (हे पैग़म्बर मुसलमान सिपाही) तुमसे लूटके माल का हुक्म पूछते हैं कहदो कि लूटका माल तो अल्लाह और पैग़म्बर का है तुम लोग खुदा से डरो और आपस में मेल करो अगर तुम मुसलमान हो तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा मानो। (१) मुसलमान वही हैं कि जब

खुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल दहल जातेहैं और जब खुदाकी आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती है तो वह उनके ईमान को और भी जियादा करदेती हैं और वह अपने पालनकर्त्ता पर भरोसा रखते हैं। (२) जो नमाज पढ़ते और हमने जो उनको रोज़ी दी है उसमे से खर्च (पुण्य) करते हैं। (३) यही सच्चे मुसलमान हैं इनके लिये इनके पालनकर्त्ता के यहां दर्जे हैं और क्षमा और प्रतिष्ठा की रोज़ी। (४) जैसे तुमको तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुम्हारे घर से निकाला और मुसलमानो का एक गिरोह राजी न था। (५) कि वह लोग ज़ाहिर हुए पीछे तुम्हारे साथ सच बात मे झगड़ा करने लगे गोया उनको मौत की तरफ़ ढकेला जाता है और वह मौत को आंखो देख रहेहैं। (६) और जब खुदा तुम मुसलमानो से प्रतिज्ञा करता था कि दो जमातो मे से (कोई सी) एक तुम्हारे हाथ आजावेगी और तुम चाहते थे कि जिसमे कांटा न लगे वह तुम्हारे हाथ आजावे और अल्लाह की मर्जी यह थी कि अपने हुक्म से हक (सच) को क़ायम करे और काफिरो की जड बुनियाद काटडाले। (७) ताकि सचको

का तुम से दूर करद और ताकि तुम्हारे दिलो का साहस बँधावे और उसीके ज़रियेसे तुम्हारे पांव जमायेरक्खे। (११) (हे पैग़म्बर!) यह वह वक्त था कि तुम्हारा पालनकर्त्ता फ़िरिश्तों को आज्ञा देरहाथा कि हम तुम्हारे साथहै तुम मुसलमानो को जमायेरक्खो हम जल्दकाफ़िरोके दिलो में डर डालदेंगे पस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े २ करडालो। (१२) यह इसबात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का सामना किया और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बड़ी कठिन है। (१३) यह तुम भुगतलो और जानलो कि काफ़िरो को नरक की सजा है। (१४) हे मुसलमानो जब काफिरो से तुम्हारे लश्कर की मुठभेड़ होजावे तो उनको पीठ न दिखाना। (१५) और जो शख़्स ऐसे मौक़े पर काफ़िरों को अपनी पीठ दिखायगा तो वह खुदा के कोप में आगया और उसका ठिकाना नरक है और यह बहुत ही बुरी जगह है मगर यह कि हुनर करता हो लडाई का या फौज में जामिलता हो। (१६) पस काफ़िरो को तुमने क़त्ल नही किया बल्कि उनको अल्लाह ने क़त्ल किया और जब तुमने तीर चलाये तो तुमने तीर नही चलाये बल्कि अल्लाहने तीर चलाये और वह मुसलमानो पर अहसान किया चाहता था बेशक अल्लाह सुनता और जानता है। (१७) यह बात जानलो कि खुदा को काफ़िरो की तदबीरों का नाक़िस करदेना मन्ज़ूर है। (१८) तुम जो जीत मांगते हो। तो जीत तुम्हारे सामने आगई और अगर बाज रहोगे तो यह तुम्हारे हक़ मे भला होगा और अगर तुम फिरकर आओगे तो हमभी फिरकर आवेंगे और तुम्हारा जत्था कितनाही बहुत हो कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आयगा और जानो कि अल्लाह मुसलमानो के साथ है। (१९) [रुकू २] मुसलमानो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा मानो और उससे शिर न उठाओ।

और तुम सुन ही रहे हो । (२०) और उन लोगों कैसे न बनो जिन्होंने कह दिया कि हमने सुना हालांकि वह सुनते नहीं । (२१) अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों में निकृष्ट बहरे गूंगे हैं जो नहीं समझते । (२२) और अगर अल्लाह इनमें भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी जरूर देता लेकिन अगर ख़ुदा इनको सुनने की योग्यता दे तो भी यह लोग मुँह फेर कर उल्टे भागें । (२३) मुसल्मानो ! जब पैग़म्बर तुमको ऐसे दीन की तरफ़ बुलाते हैं जो तुममें नई रूह फूंकता है तो तुम अल्लाह और पैग़म्बर की आज्ञा मानो और जाने रहो कि आदमी और उसके दिल के दर्मियान में ख़ुदा आजाता है और यह कि तुम उसी के सामने हाज़िर किये जाओगे । (२४) और उस आफ़त से डरते रहो जो ख़ालकर उन्हीं लोगों पर नहीं आवेगी जिन्हों ने तुम में से शिर उठाया है और जाने रहो कि अल्लाह को

दें और काफ़िर मकर करते थे और अल्लाह भी फ़रेब करता था और अल्लाह सब मक्कारों में अच्छा मकार है। (३०) और जब हमारी आयतें इन काफ़िरों को पढ़कर सुनाई जाती है तो कहते थे हमने सुन लिया अगर हम चाहें तो हम भी इसी तरह की बातें कहलें यह तो आगे के लोगों की कहानियांहैं। (३१) और जब काफ़िर कहने लगे कि हे अल्लाह अगर तेरी तरफ़ से यही सच है तो हम पर आस्मान से पत्थर वर्षा या हम पर दुखदाई सज़ा डाल। (३२) और खुदा ऐसा नही है कि तुम इनमें रहो वह इनको सज़ा दे और अल्लाह ऐसा नही है कि लोग क्षमा मांगते हैं और वह इन को सज़ा दे। (३३) और क्योंकर अल्लाह उन्हें सजा न देगा जब कि वह मसजिद हराम (यानी काबा के घर) से लोगों को रोकते है। हालांकि वह उसके हक़दार नहीं उसके हक़-दार तो परहेज़गारहैं लेकिन इनमे के बहुतेरे नही समझते। (३४) और काबा के घर के पास सीटियां और तालियां बजाने के सिवाय उनकी नमाज़ ही क्या थी तो (हे काफ़िर) जैसा तुम इन्कार करते रहे हो अब उसके बदले सज़ा भुगतो। (३५) इसमें सदेह नहीं कि यह काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं कि खुदा के रास्ते से रोकें सो माल खर्च करेंगे फिर (वही माल) इनके हक में रजका कारण होगा और आखिर हार जावेंगे। (३६) और काफ़िर नरक की तरफ हांके जायंगे। (३७) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाय फिर उस ढेर को नरक मे झोंक दें यही लोग हैं जो घाटे में रहे। (३८) [रुकू ५] काफ़िरों से कहो कि अगर मान जायँगे तो उनके पिछले अपराध क्षमा कर दिये जावेंगे और अगर फिर (शरारत) करेंगे तो अगले लोगों की चाल पड़ चुकी है। (३९) और काफिरों से लडते रहो यहांतक कि फिसाद

(द्रोह) न रहे और सब खुदाही का दीन होजावे पस अगर मान जावे तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह उसको देख रहाहै। (४०) और अगर सिर उठावें तो तुम समझते रहो कि अल्लाह तुम्हारा सहायक और अच्छा मददगार है। (४१)।

—:※:—

दशवां पारा।

—:o:—

और जान रक्खो कि जो चीज़ तुम लूटकर लाओ उसका पांचवां भाग खुदा का और पैग़म्बर का और पैग़म्बर के सम्बन्धियों का अनाथों का और ग़रीबों और मुसाफ़िरों का अगर तुम खुदा का और उस (मदद ग़ैबी) का विश्वास रखते हो जो हमने अपने सेवक पर फ़ैसले के दिन उतारी थी जिसदिन कि (मुसलमानों और काफ़िरों के) दो लश्कर एक दूसरे से गुथगये थे और अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है। (४२) यह वह वक्त था कि तुम (मुसलमान मैदान जंग के) उस सिरे पर थे और काफ़िर पले सिरे पर और काफ़ला (नदी के किनारे) तुमसे नीचे की तरफ को उतर गये थे और अगर तुम आपुस में (लड़ाई का) ठहराव किया होता तो जरूर वादा खिलाफ़ी करने पड़ती. लेकिन खुदा को जो कुछ करना मन्जूर था उसका पूरा कर दिखलाया ताकि मरजावे जो समझकर मरे और जीवे जो समझकर जीवे और अल्लाह सुनता और जानता है। (४३) (हे पैग़म्बर उसी वक्त की घटना यह भी है) जब कि खुदा ने तुमको थोड़े काफ़िर दिखलाये और अगर उन्हें तुमको बहुत कर दिखाता तो तुम जरूर हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में भी जरूर आपस में झगड़ने लगते। मगर खुदा ने बचाया बेशक वह दिली ख्यालों से

दें और काफ़िर मकर करते थे और अल्लाह भी फ़रेब करता था और अल्लाह सब मक्कारों में अच्छा मक्कार है। (३०) और जब हमारी आयतें इन काफ़िरों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते थे हमने सुन लिया अगर हम चाहें तो हम भी इसी तरह की बातें कहलें यह तो आगे के लोगों की कहानियां हैं। (३१) और जब काफ़िर कहने लगे कि हे अल्लाह अगर तेरी तरफ़ से यही सच है तो हम पर आसमान से पत्थर वर्षा या हम पर दुखदाई सज़ा डाल। (३२) और खुदा ऐसा नहीं है कि तुम इनमें रहो वह इनको सज़ा दे और अल्लाह ऐसा नहीं है कि लोग क्षमा मांगते हैं और वह इन को सज़ा दे। (३३) और क्योंकर अल्लाह उन्हें सज़ा न देगा जब कि वह मसजिद हराम (यानी कावा के घर) से लोगों को रोकते हैं। हालांकि वह उसके हक़दार नहीं उसके हक़-दार तो परहेज़गार हैं लेकिन इनमें के बहुतेरे नहीं समझते। (३४) और कावा के घर के पास सीटियां और तालियां बजाने के सिवाय उनकी नमाज़ ही क्या थी तो (हे काफ़िर) जैसा तुम इन्कार करते रहे हो अब उसके बदले सज़ा भुगतो। (३५) इसमें संदेह नहीं कि यह काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं कि खुदा के रास्ते से रोकें सो माल खर्च करेंगे फिर (वही माल) इनके हक में रंज का कारण होगा और आखिर हार जावेंगे। (३६) और काफ़िर नरक की तरफ़ हांके जायेंगे। (३७) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाय फिर उस ढेर को नरक में झोंक दें यही लोग हैं जो घाटे में रहे। (३८) [रुकू ५] काफ़िरों से कहो कि अगर मान जायेंगे तो उनके पिछले अपराध क्षमा कर दिये जावेंगे और अगर फिर (शरारत) करेंगे तो अगले लोगों की चाल पड़ चुकी है। (३९) और काफ़िरों से लड़ते रहो यहांतक कि फिसाद

(द्रोह) न रहे और सब खुदाही का दीन होजावे पस अगर मान जावे तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह उसको देख रहाहै। (४०) और अगर सिर उठावे तो तुम समझते रहो कि अल्लाह तुम्हारा सहायक और अच्छा मददगार है। (४१)।

---:::---

दसवां पारा।

---:o:---

और जान रक्खो कि जो चीज़ तुम लूटकर लाओ उसका पांचवां भाग खुदा का और पैग़म्बर का और पैग़म्बर के सम्बन्धियों का अनाथों का और ग़रीबों और मुसाफ़िरों का अगर तुम खुदा का और उस (मदद ग़ैबी) का विश्वास रखते हो जो हमने अपने सेवक पर फ़ैसले के दिन उतारी थी जिसदिन कि (मुसलमानों और काफ़िरों के) दो लश्कर एक दूसरे से गुथगये थे और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (४२) यह वह वक्त था कि तुम (मुसलमान मैदान जंग के) उस सिरे पर थे और काफ़िर दूर सिरे पर और काफ़िला (नदी के किनारे) तुमसे नीचे की तरफ़ को उतर गये थे और अगर तुम आपुस में (लड़ाई का) ठहराव किया होता तो जरूर वादा खिलाफ़ी करने पड़ती. लेकिन खुदा को जो कुछ करना मन्जूर था उसका पूरा कर दिखलाया ताकि मरजावे जो समझकर मरे और जीवे तो समझकर जीवे और अल्लाह सुनता और जानता है। (४३) हे पैग़म्बर उसी वक्त के धसना यह भी है) जब कि खुदा ने तुमको थोड़े काफ़िर दिखलाये और अगर उन्हें तुमको बहुत कर दिखाता तो तुम जरूर हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में भी ज़रूर आपस में झगड़ने लगते। मगर खुदा ने बचाया बेशक वह दिलों ख्यालों से

जानकार है। (४४) और जब तुम एक दूसरे से लड़पड़े काफ़िरों को तुम मुसलमानों की आंखों में थोड़ा कर दिखलाया और काफ़िरों की आंखों में तुम मुसलमानों को थोड़ा कर दिखाया ताकि खुदा को जो कुछ करना मन्जूर था पूरा कर दिखाये और आखिरकार सब कामों का आधार अल्लाह ही पर जाकर ठहरता है। (४५) [रुकू ६] मुसलमानों जब किसी फौज़ से तुम्हारी मुठभेड़ होजाय करै तो जमें रहो और अल्लाह को खूब यादकरो शायद तुम मुराद पाओ। (४६) और अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म मानो और आपस में झगड़ा न करो नही तो साहस तोड़ दोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जावेगी और ठहरे रहो और अल्लाह ठहरने वालों का साथी है। (४७) और उन (काफ़िरों) कैसे न बनो जो शेखी के मारे और लोगों के दिखाने के लिये अपने घरों से निकल खड़े हुए और खुदा की राह से रोकते थे और जो कुछ भी यह लोग करते हैं अल्लाह के क़ाबू में है। (४८) और जब शैतान ने उन (काफ़िरों) को हरकते उनको अच्छी कर दिखलाई और कहा आज लोगो मे कोई ऐसा नही जो तुमको जीत सके और मैं तुम्हारा मददगार हूं फिर जब दोनों फौज़ें आमने सामने आई वह अपने उल्टे पांव हटा और कहने लगा कि मुझ को तुम से कोई सम्बन्ध नही मैं वह चीज़ देख रहा हूं जो तुम को नही सूझ पड़ती—मैं तो अल्लाह से डरता हूं और अल्लाह की मार बड़ी सख्त है। (४९) [रुकू ७] जब मुनाफ़िक और जिन लोगों के दिलो में (इन्कार की) बीमारी थी कहते थे कि मुसलमान घमण्डी है और जो खुदा पर भरोसा रक्खेगा तो अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमत वाला है। (५०) और (हे पैग़म्बर) तुम देखोगे जबकि फिरिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं उनके मुखों और पुठियो पर मारते जाते हैं और (कहते जाते हैं कि देखो) नरक की सज़ा को भोगो।

(५१) यह तुम्हारे उन (बुरे कामों का) बदला है जो तुमने अपने हाथों पहिले से भेजे हैं और इसलिये कि ख़ुदा तो सेवकों पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं करता। (५२) जैसी गति फ़िरऔन की जाति और उनके अगलों की आदत है कि उन्हों ने ख़ुदा की आयतों से इन्कार किया तो ख़ुदा ने उनके पापों के बदले उनको धर पकड़ा अल्लाह जबरदस्त है उसकी मार बड़ी सख़्त है। (५३) यह इसलिये कि ख़ुदा ने जो पदार्थ किसी क़ौम को दिये हों जब तक वह लोग आपही न बदलें जो उनके जी में है ख़ुदा (की आदत) नहीं कि उसमें कुछ हेर फेर करै और अल्लाह सुनता और जानता है। (५४) और जैसी गति फ़िरऔन की जाति और उन लोगों की हुई जो उनसे पहिले थे कि उन्होंने अपने पालनकर्त्ता की आयतों को झुटलाया तो हमने उनके पापों के बदले मारडाला और फ़िरऔनके लोगों को डुबो

पर और अपने दुश्मनो पर अपनी धाक बैठाये रक्खोगे और उनके सिवाय दूसरो पर भी जिनको तुम नही जानते अल्लाह उनसे जानकार है और खुदा की राह में जो कुछ भी खर्च करोगे वह तुमको पूरा २ भर दिया जावेगा और तुम्हारा हक़ न मारा जावेगा। (६१) और (हे पैगम्बर) अगर सन्धि (सुलह) की तरफ झुकें तो तुम भी उसकी तरफ झुको और अल्लाह पर भरोसा रक्खो क्योंकि वही सुनता जानता है। (६२) और अगर उनका इरादा तुम से दगा करने का होगा तो अल्लाह तुमको काफ़ी है वही सर्व शक्तिमान है जिसने अपनी मदद को और मुसलमानों का तुमको ज़ोर दिया। (६३) और मुसलमानों के दिलों में आपस में प्रेम पैदा कर दिया अगर तुम ज़मीन पर के सारे खजाने भी खर्च कर डालते तो भी उनके दिलो मे प्रेम न पैदा करसते मगर अल्लाह ने उन लोगो में प्रेम पैदा कर दिया वह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है। (६४) हे पैग़म्बर अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको काफ़ी हैं। (६५) [रकू ८] हे पैगम्बर मुसलमानो को लड़ने पर उत्तेजित करो कि अगर तुम में से जमे रहने वाले बीस भी होगे दोसौ पर प्रबल बैठेंगे अगर तुममें से सौ होगे तो हजार काफ़िरो पर प्रबल बैठेंगे क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझते ही नही। (६६) अब खुदा ने तुम परसे अपनी आज्ञा का (बोझ) हल्का कर दिया और उसने देखा के तुम मे कमज़ोरी है तो अगर तुम में से जमे रहनेवाले सौ होगे दोसौ पर प्रबल रहेंगे और अगर तुम में से हजार होगे खुदा के हुक्म से वह दोहज़ार पर प्रबल बैठेंगे। और अल्लाह उन लोगो का साथी भी है जो जमेरहते हैं। (६७) पैगम्बर जब तक देश मे अच्छो तरह मार

ार न लें उसके पास क़ैदियों का रहना उचित न

सार के माल असबाब चाहने वा हो और अल्लाह क़यामत

के पदार्थ देना चाहता है और अल्लाह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है। (६८) अगर ख़ुदा के यहां से हुक्म तहरीरी पहिले से न होचुका होता तो जो कुछ तुमने लिया है उसमें अवश्य तुमको बुरी ही सज़ा मिलती। (६९) तो जो कुछ तुमको लूट से हाथ लगा है उसको पवित्र समझ कर खाओ और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह क्षमाकरनेवाला मिहर्बान है। (७०) [रुकू १०] हे पैग़म्बर क़ैदी जो तुम मुसलमानों के कब्ज़े में हैं उनको समझा दो कि अगर अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे दिलों में नेकी है तो जो तुमसे छीना गया है उससे अच्छा तुमको देगा और तुम्हारे अपराध भी क्षमा करेगा और अल्लाह बख़्शनेवाला मिहर्बान है। (७१) और (हे पैग़म्बर) अगर यह लोग तुम्हारे साथ दग़ा करना चाहेंगे तो पहले भी अल्लाह से दग़ा कर चुके हैं तो उसने उनको गिरफ़्तार करादिया और अल्लाह जानकार और हिक़मत वाला है। (७२) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने देशत्याग किया और अल्लाह के रास्ते में अपनी जान माल से कोशिश की और जिन लोगों ने जगह दी

इनके लिये क्षमा और इज्ज़त की रोजी है। (७५) और जो लोग बाद को ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और तुम मुसलमानों के साथ होकर जहाद किया तो वह तुम्हीं में दाखिल हैं और रिश्तेदार अल्लाह के हुक्म के बमूजिब (गैर आदमियों की निस्बत) एक दूसरे के जियादा हक़दार हैं। अल्लाह हरचीज से जानकार है। (७६)

———:o:———

सूरे तोबा।

मदीने में उतरी इसमें १३० आयतें और १६ रुकू हैं।

जिन मुशरिकों के साथ तुमने प्रतिज्ञा कर रक्खी थी अल्लाह और उसके पैगम्बर की तरफ़ से उनको साफ़ जवाब है। (१) तो (हे मुशरिको शान्ति के) चार महीने (ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम और रजब) देश में चलो फिरो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे और अल्लाह काफ़िरों का अपमान करने वाला है। (२) और बड़े हज्ज के दिन अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ से लोगों को सूचना दी जाती है कि अल्लाह और उसका पैग़म्बर मुशरिकों से अलग है। पस अगर तुम तोबा करो तो यह तुम्हारे लिये भला है और अगर फिरे रहो तो जानरक्खो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे और काफिरों को दुःखदाई सजा की खुशखबरी सुनादो। (३) हां मुशरिकों में से जिनके साथ तुमने प्रतिज्ञा कर रक्खी थी फिर उन्हों ने तुम्हारे साथ किसी तरह की कमी नहीं की और न तुम्हारे सामने किसी की मदद की। वह अलग हैं तो उनके साथ जो प्रतिज्ञा है उसे उस समय तक जो उनके साथ ठहरी थी पूरा करो क्योंकि अल्लाह उन लोगों को जो बचते हैं चाहता है। (४) फिर जब अदब के महीने निकलजावें तो मुशरिकों को जहां पाओ क़त्ल करो और उनको गिरफ्तार करो

और उनको घेरलो और हर घात की जगह उनकी ताक़ में बैठो फिर अगर वह लोग तोबा करें और नमाज़ पढ़ें और खैरात करें तो उनका रास्ता छोड दो । अल्लाह क्षमा करने वाला मिहरबान है । (५) (और हे पैग़म्बर) मुशरिकों मे से अगर कोई मनुष्य तुम से शरण मांगे ता शरण दो । यहां तक कि वह ख़ुदा का शब्द सुनले फिर उसको उसके सुख की जगह वापिस पहुंचा दो या इस वजह से कि यह लोग जानकार नहीं । (६) [रुकू २] अल्लाह और उसके पैग़म्बर के समीप मुशरिकों की प्रतिज्ञा क्योंकर विश्वासनीय रहो. मगर जिन लोगों के साथ तुमने मसजिद हराम के क़रीब अहद किया था. तो जबतक वह लोग तुम से सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो क्योंकि अल्लाह उन लोगों को जो बचते हैं पसंद करता है । (७) क्योंकर प्रतिज्ञा रहसकी है अगर वह तुमसे जीत जावें तो तुम्हारे हक़ में रिश्तेदारी और प्रतिज्ञा की रियाअत न करेंगे—अपने मुहँ की बातसे राजी करते हैं और उनके दिल नहीं मानते और उनमें बहुत बेहुक्म हैं । (८) यह लोग ख़ुदा की आयतों के बदले में थोडा सा दाम पाकरके ख़ुदा के रास्ते से रोकने लगे यह लोग जो कर रहेहैं बुरे काम हैं । (९) किसी मुसल्मान के बारे मे न तो रिश्तेदारी का ख़्याल रखते हैं और न बादे

और पैग़म्बर के निकालदेने का इरादा किया और तुमसे (छेड़खानी भी) अव्वल इन्होंहीं ने शुरूकी तुम इन लोगों से डरते हो। पस अगर तुम ईमान रखते हो तो तुमको अल्लाह से ज़ियादा डरना चाहिये। (१३) उन लोगों से लड़ो खुदा तुम्हारे ही हाथों इनको सज़ा देगा और इनको बदनाम करेगा और इन पर तुम को जीत देगा और मुसलमानों के दिलों का गुस्सा ठण्डा करेगा। (१४) और इनके दिलों में जो गुस्सा है उसको भी दूर करेगा और अल्लाह जिसकी चाहे तोबा क़बूल करले और अल्लाह जानकार हिकमत वाला है। (१५) क्या तुमने ऐसा समझ रक्खा है कि छूट जावोगे और अभी अल्लाह ने उन लोगों को देखा तक नहीं जो तुम में से कोशिश करते हैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बर और मुसलमानों को छोड़ कर किसी को अपना दोस्त नहीं बनाते और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१६) [रुकू ३] मुशरिकों को कोई अधिकार नहीं कि अल्लाह की मसजिदें आबाद रक्खे और अपने ऊपर कुफ्र (इनकारी) का मानते जावें यही लोग हैं जिनका किया धरा सब अकार्थ हुआ और यही लोग हमेशा नरक में रहने वाले हैं। (१७) अल्लाह की मसजिद को वही आबाद रखता है जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाया और नमाज़ पढ़ता और ज़कात देता रहा और जिसने खुदा के सिवाय किसी का डर न माना तो ऐसे लोग की निस्बत उम्मेद की जासक्ती है कि जो हिदायत पानेवालों में होंगे। (१८) क्या तुम लोगों ने हाजियों के पानी पिलाने और इज़्ज़त वाली मसजिद आबाद रखने को उस शख्स जैसा समझ लिया जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाता और अल्लाह के रास्ता में जहाद करता है अल्लाह के नज़दीक तो यह (लोग एक दूसरे के) बराबर नहीं और

---

(१) हज्ज यात्रा करने वालों।

अल्लाह जालिम लोगोको सीधा रास्ता नही दिखलाया करता। (१६) जो लोग ईमान लाये और उन्होने देश त्याग किया और अपने जान व माल से अल्लाह के रास्ते मे जहाद (कोशिश) किये अल्लाह के यहां दर्जे मे कहीं बढ़कर है और यही है जो कामयाब है। (२०) इनका पालनकर्त्ता इनको अपनी कृपा और रजासन्दी और ऐसे बागो का मंगल समाचार देता है। जिन मे इन को हमेशा का सुख भोग मिलैगा। (२१) उन बागो मे हमेशा रहेंगे अल्लाहके यहां बडा बदला है। (२२) मुसलमानो अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुकाबिले मे इन्कारी को भला समझें तो उनको मित्र मत बनाओ और जो तुम मे से ऐसे बाप भाइयों के साथ मित्रता रक्खेगा तो यही लोग (अन्यायी) है। (२३) (हे पैगम्बर मुसलमानो को) समझा दो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी स्त्रियां और तुम्हारे कुटुम्बी और माल जो तुमने कमाये हैं और व्योपार जिसके मंदा होजाने का तुमको संदेह हो और मकानात जिनको तुम्हारा दिल चाहता अल्लाह और उसके पैगम्बर और अल्लाह के रास्ते मे जहाद (कोशिश) करने से तुमको जियादा प्यारे हो तो सतोष करो यहां तक जो कुछ खुदा को करना है वह लाकर मौजूद करे और अल्लाह उन लोगो को जो शिर उठावे उपदेश नही दिया करता। (२४) [रुकू ४] अल्लाह बहुत से मौकों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और (खासकर) हुनैन (की लडाई) के दिन जब कि तुम्हारी जियादती ने तुमको घमंडी कर दिया था तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आई और जमीन जियादा होने पर भी तुमपर तंगी करने लगी फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले। (२५) फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर और मुसलमानो पर अपना संतोष उतारा और ऐसी फौजे भेजी जो तुमको दिखलाई नही पडती थी और काफिरो को बडी सखत मारदी और काफिरो

की यही सज़ा है। (२६) फिर उसके बाद खुदा जिसको चाहे तोबा देगा और अल्लाह बख़्शनेवाला मिहरबान है। (२७) मुसल्मानो मुशरक तो गन्दे हैं तो इस वर्षके बाद इज्जतवाली मसजिद के पास भी न फटकने पावे और अगर तुमको ग़रीबी का खटका हो तो खुदा चाहेगा तो तुमको अपनी दया से मालदार कर-देगा खुदा जानकार हिकमतवाला है। (२८) किताब वाले जो न खुदा को मानते हैं और न क़यामत को और न अल्लाह और उसके पैग़म्बर को हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीनको मानते हैं इनसे लड़ो यहां तक कि ज़लील होकर (अपने) हाथोंसे जिज़िया[1] दें। (२९) (रुकू ५) और यहूद कहते हैं कि उज़ेर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं यह उनके मुहँका कहना है उनही काफिरो कैसी बातें बनाने लगे जो इनसे पहिले हैं खुदा इनको ग़ारत करे किधर को भटकाये चले जारहेहैं। (३०) इन लोगोंने अल्लाह को छोड़कर अपने विद्वानों और अपने यतियों और मरीयम के बेटे मसीह को खुदा बना खड़ा किया हालांकि इनको यही हुक्म दिया गया था कि एकही खुदा की पूजा करते रहना उसके सिवाय कोई पूजित नहीं वह उन की शिर्क से पाक है। (३१) चाहते हैं कि खुदा की रोशनी को मुहँ से बुझा दें और खुदा को मन्जूर है कि हर तरह पर अपनी रोशनी को पूरा करे काफिरो को भलाही बुरा लगे। (३२) वही है जिसने अपने पेग़म्बर को उपदेश और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उस को सम्पूर्ण दीनो पर जीत दे। मुशरका को

नोट—१ जिज़िया = उसकर को कहते हैं जो एक मजहब वाले अपने खिलाफ़ मज़हब वालों से उनके मजहबी रसूमातों पर लिया करते थे—यह जिजिया मुसल्मानों ने हिन्दुओं से भी उनके हयदा आदि पर वसूल किया था।

भलेही बुरी लगे। (३३) मुसलमानो ! अक्सर विद्वान और यती लोगोंके माल व्यर्थ खाते और खुदा के रास्ते से रोकते है और जो लोग सोना और चांदी जमा करते रहते और उसको खुदा की राह में खर्च नही करते तो उनको दुःखदाई सजा की खुश खबरी सुना दो।

(३४) जब कि उस (सोने चांदी) को नरक की आग से तपाया जायगा फिर उससे उनके माथे और उनकी करोटे और उनकी पीठे हैं दागी जावेगी और कहा जायगा यह है जो तुमने अपने लिये इकट्ठा किया था तो अपने जमा किये का मज़ा चखो। (३५) जिसदिन खुदाने अस्मान और ज़मीन पैदा किये है खुदा के यहां महीनो की गिनती अल्लाह की किताब में १२ महीने हैं जिन में से चार अदब के है—सीधा दीन तो यह है तो मुसलमानो इन चार महीनों में अपनी जानो पर ज़ुल्म न करना (लड़ना नहीं) और तुम मुसलमान सब मुशरकों से लडो जैसे वह तुम सब से लड़तेहै और जाने रहो के अल्लाह परहेज़गारों का साथी है। (३६) महीनो का हटा देना भी एक ज़ियादा इनकारी है। जिसके कारण से काफ़िर भटकते रहते है एक वर्ष एक महीने को हलाल समझ लेते हैं और उसी को दूसरी वर्ष हराम ठहराते हैं अल्लाह ने जो हराम किये है उस गिनती का मुताबिक करके अल्लाह के हराम किये हुए को हलाल करले तन

उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है। (३६) अगर तुम पैग़म्बर की मदद न करोगे तो उसी ने अपने पैग़म्बर की मदद उस वक्त भी की थी जब काफ़िरो ने उनको (मक्का से) निकाल बाहर किया था, जब वह दोनो (अबूबकर और मोहम्मद) सौर की गुफ़ा मे छिपे थे उस वक्त पैग़म्बर अपने साथी को समझा रहे थे कि मत डरो अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने पैग़म्बर पर अपना सतोष उतारा और उनको ऐसी फौज़ो से मदद दी जिनको तुम लोग न देख सके और काफ़िरो की बात नीची रही और अल्लाह ही की बात ऊंची है और अल्लाह जबरदस्त हिकमत वाला है। (४०) हल्के और बोझिल (हथियार बन्द हो या बे हथियार तो पैग़म्बर के बुलाने पर) निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व माल से खुदा की राह मे जहाद करो अगर तुम जानते हो तो यह तुम्हारे हक़ मे भला है। (४१) अगर प्रत्यक्ष फ़ायदा होता और सफ़र भी मामूली दर्जे का तो तुम्हारे साथ चलते लेकिन इनको सफ़र दूर मालूम हुआ और खुदा की सौगन्धे खाखाकर कहेंगे कि अगर हमसे बन पड़ता तो हम ज़रूर तुम लोगो के साथ निकल खड़े होते यह लोग आप अपनी जानो को जोखो मे डाल रहे हैं और अल्लाह को मालूम है कि यह लोग झूठे है। (४२) [रकू ७] हे मोहम्मद खुदा तुझे क्षमा करे तूने क्यो उनको इस लड़ाई मे न जाने की आज्ञा दी इससे पहिले कि तुझे उज्र मे सच्चे और झूठे मालूम हो। (४३) जो लोग खुदा का और क़यामत का विश्वास रखते है वह तो तुमसे इस बात की छुट्टी नही मांगते कि अपनी जान व माल से जहाद मे शरीक न हो। और अल्लाह परहेजगारो को खूब जानता है। (४४) तुम से छुट्टी के चाहने वाले वही लोग हैं जो अल्लाह और क़यामत का विश्वास नही रखते। उनके दिल संदेह मे पडे

हैं तो वह अपने शक मे हैरान हैं। (४५) और अगर वह लोग निकलने का इरादा रखते होते तो उसके लिये कुछ तय्यारी करते मगर अल्लाह को इनका जगह से हिलना ही ना पसंद हुआ तो उसने इनको अहदी बना दिया और कह दिया कि जहां और बैठे हैं तुम भी उनके साथ बैठे रहो। (४६) अगर यह लोग तुममें निकलते तो तुममें और ज़ियादा खराबियां ही डालते और तुममें फ़िसाद फैलाने की गरज़ से तुम्हारे दर्मियान दौड़े दौड़े फिरते और तुममें उनके भेदी मौजूद हैं और अल्लाह जालिमों को जानता है। (४७) उन्हों ने पहिले भी फ़साद (द्रोह) डलवाना चाहा और तुम्हारे लिये तदबीरों को उलट पलट करते ही रहे यहां तक कि सच्ची प्रतिज्ञा आपहुंची और खुदा की आज्ञा पूरी हुई और उनको नागवार (असह्य) हुआ। (४८) और इनमें वह है जो कहता है कि मुझ को छुट्टी दे और मुझको विपत्ति मे न डाल सुनोजी वह लोग विपत्ति मे तो पड़ेही हैं और नरक काफिरों को घेरे हुए है। (४९) अगर तुम को कोई भलाई पहुंचे तो उनको बुरा लगता है और अगर तुम को कोई विपत्ति पहुंचे तो कहने लगते हैं कि हमने पहिले सेही अपना काम करालिया था और प्रसन्नता से वापिस चले जाते हैं। (५०) कहो कि जो कुछ खुदा ने हमारे लिये लिख दिया है वही हम को पहुंचेगा वही हमारा काम का संभालने वाला है और मुसलमानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (५१) (हे पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि तुम हमारे हक़ मे दो भलाइयों मे एक का तो इन्तज़ार करते ही हो और हम तुम्हारे हक मे इस बात के मुन्तज़िर हैं कि खुदा तुम पर अपने यहां से कोई दण्ड उतारे या हमारे हाथों से (तुम्हे मरवा डाले) तो तुम मुन्तज़िर रहो हम तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (५२) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि तुम खुशदिली से खर्च करो या बेदिली से

ख़ुदा तुमसे क़बूल नहीं करेगा क्योंकि तुम हुक्म न मानने वाले हो और उनका दिया इसलिये क़बूल नहीं होता कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा नहीं मानी और नमाज को अलसाये हुए पढ़ते आते हैं और बुरे दिल से खर्च करते हैं। (५४) तू इनके माल और संतान से आश्चर्य न कर ख़ुदा दुनिया की जिन्दगीमें इनको माल और संतान के कारण सज़ा देना चाहता है और वह काफ़िर ही मरेंगे। (५५) और क़सम खाते हैं कि वह तुमसे हैं हालांकि वह तुममें नहीं हैं बल्कि वह तुमसे डरते। (५६) ग़ार (खोख) या घुस बैठने की जगह अगर कहीं बचाव पाते तो रस्सी तुड़ा २ कर उसकी तरफ़ दौड़ पड़े। (५७) इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि ख़ैरात में तुम पर दोष लगाते हैं फिर अगर इनको उसमें से दिया जाय तो ख़ुश रहते हैं और अगर इनको उसमेंसे न दिया जाय तो वह फ़ौरनही बिगड़ बैठते हैं। (५८) और जो ख़ुदा ने और उसके पैग़म्बर ने इनको दिया था अगर यह उस को ख़ुशी से लेलेते और कहते कि हमको अल्लाह काफ़ी है आगे को अपने कर्म से अल्लाह और उसका पैग़म्बर हमको देंगे। हम तो अल्लाहही से लौ लगाये बैठे हैं। (५९) [रुकू ८] ख़ैरात का माल फ़क़ीरों का हक है और ग़रीबों का और उन काम करनेवालों का जो ख़ैरात परहैं और उन लोगों के लिये जिनके दिल इस्लाम की तरफ़ लगाना मन्ज़ूर है। ग़ुलामों के छुटाने और कर्ज़दारों में और जहाद में और मुसाफ़िरों में ज़कात (ख़ैरात) के मालका ख़र्च ठहराया गयाहै और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है। (६०) और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो पैग़म्बर को नुकसान देते और कहते हैं कि यह शख़्स कानका बड़ा कच्चा है-(हे पैग़म्बर-इनलोगों से) कहो वह तुम्हारे लिये भलाई का सुनाने वाला है वह अल्लाह का विश्वास रखता है और मुसलमानों का भी यक़ीन

रखता है। (६१) और जो लोग तुममें से ईमान लाये हैं उनके लिये दया है और जो लोग अल्लाह के पैग़म्बर को नुक़सान देते हैं उनको दुखदाई सज़ा होनी है। (६२) तुम्हारे सामने खुदा की क़स्मे खाते हैं ताकि तुमको राज़ी करलें हालांकि अल्लाह और उसका पैग़म्बर ज़ियादा हक़ रखते हैं कि यह लोग सच्चे मुसलमान हैं तो अल्लाह (और) पैग़म्बर को राज़ी करें। (६३) क्या इन्होंने अभीतक इतनी बात नहीं समझी कि जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर का विरोध करता है उसके लिये नरक की आग है जिसमें वह हमेशा रहैगा। यह बड़ी बदनामी है। (६४) मुनाफ़िक़ डरते हैं कि खुदा की तरफ़ से मुसलमानों पर ऐसी सूरत उतरे कि जो कुछ इनके दिलों में है मुसलमानों को जता बतादे। कहो कि हँसे जाओ जिस बात से तुम डर रहे हो खुदा वही बात निकालेगा। ६५) और अगर तुम इन लोगों से पूछो तो वह ज़रूर यही उत्तर देंगे कि हमतो इसप्रकार बातें चीते और हँसी मज़ाक़ कर रहे थे। कहो कि तुमको हँसी करनी थी तो खुदाही के साथ और उसी की आयतों और उसी के पैग़म्बर के साथ। (६६) बातें न बनाओ सच तो यहहै कि तुम ईमान लाये पीछे काफ़िर होगये। अगर हम तुम में से एक गिरोह के अपराध क्षमा भी करदें तो भी दूसरों को ज़रूर सज़ा देंगे। (६७) [रुकू ६] मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सबकी एक चालहै। बुरे कामकी सलाह दें और भले कामों से मना करें और अपनी मुट्ठियां खैरातसे बन्द रखतेहैं। इन लोगोंने अल्लाह को भुलादिया। तो अल्लाह ने भी इन्हें भुलादिया। कुछ सन्देह नहीं कि मुनाफ़िक़ सरकश हैं। (६८) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों के हक़ में खुदाने नरक की आग का क़रार करलिया है कि यह लोग हमेशा उसमें रहेंगे। यही उनको काफ़ी है और खुदाने उनको फटकार दिया है और इनके लिये हमेशा के लिये सज़ा है।

(६९) जैसी मिसाल तुम से पहिलों की थी वह तुम से बहुत ज़ियादा ज़ोरावर थे और माल और औलाद भी ज़ियादा रखते थे। तो वह अपने हिस्से के फ़ायदे उठाचुके सो तुमने भी अपने हिस्से के फ़ायदे उठाये। जैसे तुम से पहिलों ने अपने हिस्से के फ़ायदे उठाये थे और जैसी बातें वह लोग किया करते थे तुम भी वैसीही बातें करने लगे। इन्हीं लोगों का दुनियां और क़यामत में करा धरा अकार्थ हुआ और यही नुक़सान में रहे। (७०) क्या इन को उन लोगों की खबर नहीं मिली जो इनसे पहिले गुज़र चुके है। नूह की क़ौम और आदि और समूत और इब्राहीम की क़ौम और मदियन के लोग और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले कि इनके पैग़म्बर इनके पास खुलेहुए चमत्कार लेकर आये। सो खुदा ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया मगर यह लोग आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (७१) और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में दोस्त हैं। नेक काम करने का उपदेश देत और बुरे काम से रोकते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और उसके पैग़म्बर के हुक्म पर चलते। यही लोग है जिनपर अल्लाह जल्द दया करेगा। अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (७२) ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों से अल्लाह ने बाग़ों का वादा करालिया है जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे और हमेशगी (सदैवी) के वैकुण्ठ में अच्छे मकान हैं और खुदा की बड़ी खुशी और यही बड़ी कामयाबी है। (७३) [रुकू १०] हे पैग़म्बर काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जहाद करो और उनपर सख़्ती करो और उनका ठिकाना नरक है और वह बुरी जगह है। (७४) अल्लाह की सौगन्धे खाते है कि हमने नहीं कहा हालांकि ज़रूर उन्हों ने कुफ़्र (इन्कारी) के शब्द कहे और मुसलमान हुए पीछे काफ़िर होगये और गुस्ताखियां करनी चाहीं। जिन पर उनकी शक्ति नही हुई और यह

लोग किस पर बिगड़े। इसी पर न कि अपनी कृपा से अल्लाह ने और उस के पैग़म्बर ने इनको मालदार करदिया। सो यह लोग अगर अब भी तोबा करें तो इनके हक़ में अच्छा होगा और अगर न मानें तो अल्लाह इनको इसलोक और परलोक में दुःखदाई सज़ा देगा और ज़मीन पर न कोई इनका सहायक होगा और न मददगार। (७५) और इन में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने ख़ुदा के साथ प्रतिज्ञा की थी कि अगर वह अपनी कृपा से हमको (माल, धन) देगा तो हम ज़रूर पुण्य (ख़ैरात) किया करेंगे और ज़रूर भले काम करनेवाले रहेंगे। (७६) फिर जब ख़ुदा ने अपनी कृपा से उनको (माल) दिया तो उसमें कंजूसी करने लगे और (उदूल हुक्मी) मुँह मोड़ करके फिर बैठे। (७७) तो फल यह हुआ कि ख़ुदा ने उनके दिलों में भेद डाल दिया इसलिये कि उन्हों ने ख़ुदा से प्रतिज्ञा की थी उसको पूरा नहीं किया और झूंठ बोले। (७८) क्या उन्होंने इतना भी न समझा कि अल्लाह इनके भेदों को और कनफुसियों को जानता है और यह कि अल्लाह ग़ैब (परोक्ष) की बातों से भी ख़ूब जानकार है। (७९) यही तो हैं कि मुसलमानों में जो लोग ख़ुशदिली से पुण्य करते हैं उनपर (पाखंडी होने का) दोष लगाते हैं और जो लोग अपनी मिहनत के सिवाय (जियादा) सामर्थ नहीं रखते उनपर दोष लगाते हैं। निदान उनपर हँसते हैं। सो अल्लाह इन मुनाफ़िक़ों पर हँसता है और उनके लिये दुःखदाई सज़ा है। (८०) (हे पैग़म्बर) तुम इनके हक़ में क्षमाकी प्रार्थना करो या उनके हक़में न करो अगर तुम सत्तर दफ़े (बार) भी इनके लिये क्षमा मांगो तो भी ख़ुदा हरगिज़ इनको क्षमा नहीं करेगा—यह इनके इस कर्म की सज़ा है कि इन्हों ने अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ इन्कार किया और अल्लाह बाग़ी लोगों को उपदेश नहीं दिया करता। (८१) [रुकू ११]

जो (मुनाफ़िक़ अपनी ज़िद से) पीछे छोड़ दिये गये वह खुदा ।
पैग़म्बर के खिलाफ़ अपने (घरों में) बैठ रहने से बहुत खुश हु
और खुदा की राह में अपनी जान और माल से जहाद (कोशिश
करना उनको असह्य (नागवार) हुआ और समझाने लगे
गर्मी में (घरसे) न निकलना (हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कह
कि नरक की आग की गर्मी बहुत कठिन है हा शोक ! इनके
इतनी समझ होती । (८२) तो यह लोग थोड़ा हँसेंगे और बहुत
रोवेंगे और यही उनकी कमाई का फल है।(८३) तो (हे पैग़म्बर)
अगर खुदा तुमको इन मुनाफिकों के किसी गिरोह की तरफ़ लौ-
टाकर लेजावे और निकलने की तुम से आज्ञा चाहे तो तुम कहदेना
कि तुम न तो कभी मेरे साथ निकलोगे और न मेरे साथ होकर
किसी दुश्मन से लड़ोगे-तुम पहिलीबार (घरों में) बैठने से राज़ी
हुए अब भी पिछलों के साथ (घरों में) बैठे रहो । (८४) और
(हे पैग़म्बर) अगर इनमें से कोई मरजावे तो तुम कदापि उसप
नमाज़ न पढ़ना और न उसकी कब्र पर खड़े होना । उन्हों
अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ कुफ़् (इन्कार) किया औ
वह अन्यायी की दशा में ही मरगये । (८५) और इनके माल
और इनकी औलाद पर तू आश्चर्य न कर। खुदा माल और
संतान के कारण से इनको संसार में सज़ा देना चाहता है और जब
इनकी जान निकले तो काफ़िर ही मरेंगे । (८६) और
(हे पैग़म्बर) जब कोई सूरत उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान
लाओ और उसके पैग़म्बर के साथ जहाद करो तो इनमेंसे सामर्थ्य
वाले तुमसे आज्ञा मांगने लगते हैं और कहते हैं कि हमको छोड़
जाओ कि बैठने वालों के साथ हम भी (घरों में) बैठे रहें । (८७)
इनको औरतों के साथ जो पीछे रहा करती हैं (पीछे बैठ) रहना
पसंद आया और इनके दिलों पर मुहर करदी गया है यह लोग

नहीं समझते। हैं (८८) लेकिन पैग़म्बर और जो उनके साथ ईमान लाये हैं अपनी जान और माल से (खुदा की राहमें) जहाद किये। यही लोग है जिनके लिये (इसलोक और परलोक की सब) खूबियां हैं और यही मुराद पानेवाले हैं। (८६) इनके लिये अल्लाह ने (वैकुण्ठ के) बाग़ तय्यार कर रक्खे हैं जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे। यही बड़ी सफलताहै। (६०) [रुकू १२] और (हे पैग़म्बर) देहातियों में से बहाने वाले उज्र करते आये ताकि उनको आज्ञा दीजावे। जिन लोगोंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर से झूंठ बोला था वह बैठे रहे। इनमें से जिन्होंने इन्कार किया था उनको शीघ्रही दुःखदाई सज़ा मिलैगी। (६१) (हे पैग़म्बर) कमज़ोरों पर कुछ पाप नही और न बीमारो पर और न उन लोगों पर जिनको खर्च की सामर्थ्य नहीं वशर्तेकि अल्लाह और उसके पैगम्बर की खैरख्वाही में लगे रहें। भलाई करने वालों पर कोई दोष नहीं अल्लाह बख्शने वाला मिहर्बान है। (६२) और न उनपर पाप है जो तुम्हारे पास आते हैं कि सवारी दे और तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नही है जिस पर सवार करदूं। यह सुनकर (वह लोग) लोटगये और खर्च की सामर्थ्य न होने के कारण उनकी आखों से आंसू जारी थे। (६३) दोष तो उन्हीं पर है जो मालदार होने पर भी रुखसत चाहते है और औरतोंके साथ जो पीछे बैठी रहा करती हैं रहना पसंद करते है और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर की है वह नहीं समझते। (६४) ॥

ग्यारहवां पारा ॥

——:※:——

(मुसलमानो) जब तुम मुनाफ़िकों के पास वापिस जाओगे तो तुम्हारे सामने उज्र पेश करेंगे (तो हे पैगम्बर इनसे)

देना कि बातें न बनाओ हम किसीतरह तुम्हारा विश्वास कर वाले नहीं। अल्लाह तुम्हारे हालात हमको बताचुका है और अ तो अल्लाह और उसका पैग़म्बर जो तुम्हारे कर्मों को देखें फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाये जाओगे जो मौजूदा और छिपे व जानता है फिर जो कुछ तुम करते रहे हो तुमको बतावेगा। (६५) ज तुम लौटकर उनके पास वापिस जाओगे तो यह लोग ज़रूर तुम्हा आगे खुदा की सौगन्धें खावेंगे ताकि तुम इनको क्षमाकरो। स इनको जानेदो क्योंकि यह लोग नापाक हैं और इनका ठिकान नरक है। यह उनकी कमाई का फल है। (६६) यह तुम्हा सामने सौगन्धें खावेंगे ताकि तुम इनसे राज़ी होजाओ। स अगर, तुम इनसे राज़ी होजाओ तो अल्लाह इन बेहुक्म (नाफ़र्मान) लोगों से राज़ी न होगा। (६७) गांव के लो कुफ्र (इन्कार) और भेद में बड़े कठोर हैं। खुदाने जो अपने पैग़म्ब पर किताब उतारी है उसके हुक्मों को समझने के योग्य नहं और अल्लाह जानने वाला और हिकमत वाला है। (६८) औ देहातियों मेंसे कुछ लोग हैं कि उनको जो खर्च करना पड़ता है उसको चट्टी समझते और तुम मुसलमानों के हक़में ज़मानेके फेरोंव मुन्तज़िर हैं इन्ही पर (ज़माने के) बुरे फेर (का असर) पड़े अल्लाह सुनता और जानता है। (६६) और देहातियों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह का और क़यामतका विश्वास रखते और जो कुछ (खुदा की राह में) खर्च करते हैं उसमें खुदा के पास का और पैग़म्बरकी दुआओं का ज़रिया समझते हैं। तो सुन रक्खो वह उनके लिये नज़दीक है। अल्लाह ज़रूर उनको अपनी दया में लेलेगा। अल्लाह क्षमावाला कृपालु है। (१००) [रुकू १३] और महा जरीन (देशत्यागी) और मदद करनेवालों मेंसे जो लोग (मुसलमानी मत क़बूल करने में) सबसे पहिले अगुआ हुये और वह लोग

जो सच्चे दिल से ईमान में दाखिल हुए खुदा उनसे खुश और वह (खुदा से) खुश हुये और खुदाने उनके लिये बाग़ तय्यार कर रक्खे हैं जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (१०१) और तुम्हारे आस पास के बाज़ देहातियों में से (बाज़) मुनाफ़िक़ (कपटी) हैं और खुद मदीने के रहने वालों में से जो भेद पर अड़े बैठे हैं (हे पैग़म्बर) तुम इनको नहीं जानते। हम इनको जानते हैं सो हम इनको दोहरी मार देंगे फिर बड़ी सज़ा की ओर लौटाये जाएंगे। (१०२) और (कुछ) और लोग हैं जिन्होंने अपने अपराध को मानलिया (और उन्होंने) कुछ काम भले और कुछ बुरे मिले जुले किये आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे क्योंकि अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१०३) (हे पैग़म्बर यह लोग अपने मालकी ज़कात दें तो) इन के मालकी ज़कात लेलिया करो कि जकात के क़बूल करने से तुम इनको पवित्र करते हो और उनको शुभ आशीर्वाद दो क्योंकि तुम्हारी इच्छा इनके लिये संतोष है और अल्लाह सुनता जानता है। (१०४) क्या इन लोगों को इसकी खबर नहीं कि अल्लाह अपने सेवकों की तौबा क़बूल करता और वही खैरात लेता और अल्लाहही बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला मिहर्बान है। (१०५) और (हे पैग़म्बर इनको) समझादो कि तुम (अपनी जगह) काम करते रहो सो अभी तो अल्लाह पैग़म्बर और मुसल्मान तुम्हारे कामों को देखेंगे और अन्त (मरे पीछे) तुम उस (सर्वशक्तिमान) की तरफ़ जो

मतलब से एक मसजिद बना खड़ी की कि नुकसान पहुँचायें और कुफ्र (इन्कार) करें और मुसलमानों में फूट डालें और उन लोगों को शरणदें जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ पहिले लड़चुके हैं और (पूछा जायगा) तो सौगन्धे खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के सिवाय और किसी तरह की इच्छा नहीं की और अल्लाह गवाही देता है कि ये झूठे हैं। (१०८) [रुकू १४] सो (हे पैग़म्बर) तुम उसमेकभी खड़े भी न होना। हां वह मसजिद जिसकी नीव पहलेदिन से परहेज़गारी पर रक्खी गई है वह इस योग्य है कि तुम उस में खड़े हो। उस में ऐसे लोग हैं जो पवित्र रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पवित्रता से रहनेवालों को पसंद करता है। (१०९) भला जो आदमी खुदा के डरसे और उसकी प्रसन्नता पर अपनी इमारत की नींव रक्खे वह उत्तम है या वह जो गिरनेवाली खाई के किनारे अपनी नीव रक्खे। फिर वह उसको नरक की आग में लेगिरे और ईश्वर ज़ालिम लोगों को उपदेश नहीं दिया करता। (११०) यह इमारत जो इन लोगों ने बनाई है इसके कारण से इन लोगों के दिलों में हमेशा धुकुड़ पुकुड़ रहैगी यहांतक कि इनके दिलों के टुकड़े २ होजावें। अल्लाह जीतने वाला और बड़ा हिकमतवाला है। (१११) अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिये हैं कि उनके बदले उनको वैकुण्ठ देगा ताकि अल्लाह की राह में लड़ें और मारें और मरें। यह खुदा की पक्की प्रतिज्ञा है जिसका पूरा करना उसने अपने ऊपर लाजिम करलिया है (और यह प्रतिज्ञा) तौरात, इंजील और क़ुरान में है और खुदा से बढ़कर अपने प्रण का पूरा और कौन होसक्ता है। तो अपने सौदे का जो तुमने खुदा के साथ किया है आनन्द मनाओ और बड़ी कामयाबी है। (११२) तौबा करनेवाले, पूजा करनेवाले (खुदा की) तारीफ करनेवाले सफर करनेवाले

रुकू करनेवाले, सिजदा (वन्दना) करनेवाले, अच्छे काम की सलाह देनेवाले, बुरे काम से मना करनेवाले और अल्लाह ने जो हद्दें (मर्यादा) बांध दी है उनकी निगाह रखनेवाले और (हे पैग़म्बर ऐसे) मुसलमानों को खुशखबरी सुनादो। (११३) जब पैग़म्बर और मुसलमानो को मालूम होगया कि मुशरकीन नरकवाली होंगे तो उनको शोभा नही देता कि उनके लिये क्षमा चाहें। गो वह रिश्तेदार (सम्बन्धी) ही क्यों न हों। (११४) और इब्राहीम ने अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना की थी। सो एक वादे से जो इब्राहीम ने अपने बाप से करलिया था। फिर जब उनको मालूम होगया कि यह खुदा का दुश्मन है तो बाप से सम्बन्ध छोड़दिया। इब्राहीम बड़े कोमल दिल और सहनशील (बुर्दबार) थे। (११५) और अल्लाह की शान से बाहर है कि एक जाति को शिक्षा दिये पीछे राह से नही भटकाता जबतक उसको वह चीज़ें न बतलावे जिनसे वह बचते रहे। अल्लाह हरचीज़ से जानकार है। (११६) और आस्मान और ज़मीन की बादशाहत अल्लाहही की है वही जिलाता और वही मारता है और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई सहायक और मददगार नहीं। (११७) खुदा ने पैग़म्बर पर कृपा की और देशत्यागी और मदद करनेवालों पर जिन्होने तंगी के ज़माने मे पैगम्बर का साथ दिया जबकि इनमें से बाज़ के दिल डिग मिगा चले थे फिर उसी ने इनपर अपनी कृपा की। इसमें संदेह नही कि खुदा इन सब पर अत्यन्त कृपा रखता है। (११८) और उन तीनों पर जो पीछे रक्खे गये थे यहां तक कि जब जमीन चौड़ी होने पर भी तंगी करने लगी और वह अपनी जान से भी तंग आगये और समझलिया कि खुदा के सिवाय और कही शरण नहीं फिर खुदाने उनकी तौबा क़बूल करली ताकि तौबा किये रहें। बेशक अल्लाह बड़ाही तौबा क़बूल करनेवाला मिहर्बानहै। (

[रुकू १५] मुसलमानो ! खुदा से डरो सच बोलने वालों के साथ रहो। (१२०) मदीना वाले और उनके आसपास के देहातियों को मुनासिब न था कि खुदा के पैग़म्बर से पीछे रहजावें और न यह कि पैग़म्बर की जान की परवाह न करके अपनी जानों की चिन्ता में पड़जावें। यह इसलिये कि उनको खुदा की राह में प्यास और मिहनत और भूक की तकलीफ़ पहुंचनी हो और जिन स्थानों में काफ़िरों को इनका चलना असह्य (नागवार) होता है वहां चलते हैं और दुश्मनों से जो कुछ मिलजाता है तो हरकाम के बदले इनका कर्म अच्छा लिखा जाताहै। अल्लाह सच्चे दिलवालों के फलको अकार्थ नही होने देता। (१२१) और थोड़ा या बहुत जो कुछ खर्च करते हैं और जो मैदान उनको तै करने पड़ते हैं यह सब इनके नाम लिखा जाता है ताकि अल्लाह इन को इनके कर्मों का अच्छे से अच्छा बदला देवे। (१२२) और मुनासिब नहीं कि मुसलमान सबके सब निकल खड़े हों ऐसा क्यों न किया कि उनकी हरएक जमाअत में से कुछ लोग निकलते कि दीन की समझ पैदा करते और जब अपनी जाति में वापस जाते तो उनको डराते ताकि वह लोग बचें। (१२३) [रुकू १६] मुसलमानो ! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुमसे सख़्ती मालूम करें और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो बचते हैं। (१२४) और जिस वक्त कोई सूरत उतारी जाती है तो मुनाफ़िकों से बाज लोग पूछने लगते हैं कि भला इसने तुममें से किसका ईमान बढ़ादिया सो वह जो ईमानवाले हैं उसने उनका तो ईमान बढ़ाया और यह खुशियां मनाते हैं। (१२५) और जिन के दिलों में (कपट का) रोग है तो इससे उनकी अपवित्रता और हुई (नापाकी ज्यादह बढ़ी) और यह लोग काफ़िर ही मरेंगे। (१२६) क्या नहीं देखते कि यह लोग हरसाल एकबार या दो

चार विपत्ति (आफ़त) में पड़ते रहते हैं इस पर भी न तो तौबाही करते हैं और न उपदेशही ग्रहण करते हैं । (१२७) और जब कोई सूरत उतारी जाती है तो उन में से एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं और कहते हैं कि तुमको कोई देखता है या नहीं फिर बलदेते हैं । अल्लाह ने इनके दिलों को फेरदिया इसलिये वह बिलकुल नहीं समझते । (१२८) तुम्हारे पास तुम्हीं में के एक पैग़म्बर आये हैं । तुम्हारा दुःख इनको कठिन मालूम होताहै । वह तुम्हारी भलाई चाहता है और ईमानवालों पर प्रेम रखनेवाला और मिहर्बान है । (१२९) इस पर भी यह लोग सिर उठायें तो कहदो कि मुझको तो अल्लाह काफ़ी है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं है उसीपर भरोसा रखता हूँ और अर्श जो बड़ा है उसका भी वही मालिक है । (१३०) ॥

——:※:——

सूरे यूनिस ।

मक्के में उतरी इस में १०९ आयतें और ११ रुकू हैं ।

पालनकर्त्ता है तो उसी की पूजा करो क्या तुम विचार नही करते। (३) उसी की तरफ़ (तुम सबको) लौटकर जाना है अल्लाह का वादा सच्चा है। वही अव्वल मर्तवा सृष्टि को पैदा करता है-फिर उनको दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये न्याय के साथ उनको बदला दे। काफ़िरों के लिये उनके कुफ़्र की सज़ा में पीनेको खौलता पानी और दु:खदाई सज़ा होगी। (४) वही जिसने सूर्य को चमकीला बनाया और चांदको रोशन और उसकी मंज़िलें ठहराईं ताकि तुम लोग वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम करलिया करो। यह सब खुदा ने मसलहत (विचार) से बनाया है। जो लोग समझ रखते हैं उनके लिये पते बयान करता है। (५) जो लोग डर मानते हैं उनके लिये रात और दिन के आने जाने में और-जो कुछ खुदाने आस्मान और जमीन में पैदा किया है निशानियां हैं। (६) जिन लोगों को हमसे मिलने की आशा नही और दुनियां के जीवन से खुश हैं और विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और जो लोग हमारी निशानियों से अचेत हैं। (७) यही लोग हैं जिनको करतूत के बदले उनका ठिकाना नरक होगा। (८) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके ईमान की वृद्धि से उनको उनका पालनकर्त्ता राह दिखा देगा कि आराम के बागों में रहेंगे और उनके नीचे नहरें बहती होंगी। (९) उनमें पुकार उठेंगे हे खुदा तेरी जात पाक है और उनमें उनकी कुशलप्रश्न (दुआयें वैर) की सलाम होगी। (१०) उनकी आखिरी प्रार्थना होगी "अल्हम्द लिल्लाह रब्बुल आलमीन" यानी हरतरह की तारीफ़ खुदा के लायक़ है जो दुनियां जहान का पालनकर्त्ता है। (११) [रुकू २] और जिसतरह लोग फ़ायदों के लिये जल्दी किया करते हैं अगर खुदा भी उनको जल्दी से नुकसान पहुँचा दिया करता तो उन

को मौत आचुकी होती और हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने की आशा नहीं छोड़े रखते हैं कि अपनी नटखटी में पड़े भटका करें। (११) और जब मनुष्य को कष्ट पहुंचता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा हमको पुकारता है फिर जब हम उसकी तकलीफ़ को उससे दूर करदेते है तो ऐसे चल देता है कि गोया उस कष्ट के लिये जो उसको पहुँच रहाथा हमको पुकाराही न था। जो लोग हद से क़दम बाहर रखते हैं उनको उनके कम इसीतरह अच्छे कर दिखाये गये हैं। (१२) और तुमसे पहिले कितनी उम्मतें (संगतें) हुईं। जब उन्होंने नटखटी पर कमर बांधी हमने उनको मारडाला और उनके पैग़म्बर उनके पास खुले चमत्कार लेकर आये और उनको ईमान लाना नसीब न हुआ। पापियों को हम इसतरह दण्ड दिया करते है। (१४) फिर उनके पीछे हमने ज़मीन में तुमलोगों को नायब बनाया ताकि देखें तुम कैसे काम करते हो। (१५) और जब हमारे खुले २ हुक्म इनलोगों को पढ़कर सुनाये जाते हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मेद नहीं वह पूछते हैं कि इसके सिवाय और कोई कुरान लाओ या इसी को बदल लाओ कहो कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नहीं कि अपनी तरफ़ से उसको बदलूं। मेरी तरफ़ जो ईश्वरीय संदेशा आता है मैं तो उसीपर चलता हूं। अगर मैं अपने पालनकर्त्ता की अवज्ञा (उदूलहुक्मी) करूं तो मुझे बड़े दिन की सज़ा का डर लगता है। (१६) कहो अगर खुदा चाहता तो मैं तुमको पढ़कर सुनाता और न खुदा तुम को इससे आगाह करता इससे पहिले मैं मुद्दतों तुममें रहचुका हूं क्या तुम नहीं समझते। (१७) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो खुदापर झूठ। (लफंट) बांधे या उसकी आयतों को झुटलाये अपराधियों का भला नहीं होता। (१८) और खुदा के सिवाय ऐसी चीजों को पूजते हैं जो उनको नुक्सान या फायदा नहीं

पहुंचा सक्तीं और कहते हैं कि अल्लाह के यहां हमारे शिफ़ारिसी हैं। कहो क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़की खबर देते हो जिसे वह न आस्मान में पाता है और न ज़मीन में और वह इस शिर्क़ से पाक और अधिक ऊंचा है। (१९) और लोग एकही तरीक़े पर थे। भेद तो उनमें पीछे हुआ और अगर तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से प्रतिज्ञा पहिले से न हुई होती तो जिन चीज़ों में यह भेद डाल रहे हैं उनके दर्मियान उनका फ़ैसला करदिया गया होता। (२०) और मक्के वाले कहते हैं इसको उसके पालनकर्त्ता को तरफ़ से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिया गया तो कहो कि ग़ैब (की खबर तो) बस खुदाही को है तो तुम इन्तिज़ार करो। मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में हूं। (२१) [रुकू ३] और जब लोगों को तकलीफ़ पहुंचने के बाद हम मिहरबानी का स्वाद चखा देते हैं तो बस हमारी आयतों में युक्तियां लगाते हैं कहो अल्लाह की युक्ति ज़ियादह चलती है (वह फ़र्माता है) हमारे फ़िरिश्ते तुम्हारी करतूतें लिखते हैं। (२२) वही है जो तुम लोगों को जंगल और नदी में फिराता है यहांतक कि कोई वक़्त तुम किश्तियों में होते हो और वह लोगों को अनुकूल हवा की सहायता से चलाता है और लोग उनसे खुश होते हैं। किश्ती को तूफ़ानी हवा आवे और लहरें हर तरफ़ से उनपर आने लगें और वह समझें कि अब हम घिरगये तो खालिस दिल से खुदाही को मान कर उससे दुआयें मांगने लगते हैं कि अगर तू हम को इस कष्ट से बचावे तो हम ज़रूर कृतज्ञ होंगे। (२३) फिर जब उसने बचन दिया तो वह व्यर्थ की नटखटी करने लगते हैं। लोगो ! तुम्हारी नटखटी तुम्हारीही जानों पर पड़ेगी। यह दुनियां की ज़िन्दगी के फ़ायदे हैं आखिरकार तुम्हें हमारीही तरफ़ लौटकर आना है तो जो कुछ भी तुम करते रहे हम तुमको बतादेंगे। (२४) दुनियां की ज़िन्दगी की तो मिसाल उस

पानी कैसी है कि हमने उसको आस्मान से बरसाया फिर ज़मीन की पैदावार जिसको आदमी और चौपाये खाते हैं पानी के साथ मिलगई यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना शृंगार करलिया और शोभायमान हुई और खेत वालों ने समझा कि वह उस पैदावार पर क़ाबू पागये और रात के वक्त या दिन के वक्त हमारा हुक्म उसपर आया। फिर हमने उसका ऐसा कटा हुआ ढर करदिया कि गोया कल उसका नामही निशान न था। जो लोग सोचते समझते हैं उनके लिये आयतें बयान करते हैं। (२५) और अल्लाह सलामती के घर (बैकुण्ठ) की तरफ़ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है। (२६) जिन लोगों ने भलाई की उनके लिये भलाई है और कुछ बढ़कर भी और उनके मुहों पर स्याही न छाई होगी और न बदनामी। यही बैकुण्ठ वासी हैं कि वह बैकुण्ठ में हमेशा रहेंगे। (२७) और जिन लोगों ने बुरे काम किये तो बुराई का बदला वैसीही (बुराई) और उनपर बदनामी छारही होगी। अल्लाह से कोई उनको बचानेवाला नहीं गोया अन्धेरी रातके टुकड़े उनके मुँह पर अड़ादिये हैं यही नरकवासी हैं कि वह नरक में हमेशा रहेंगे। (२८) और जिसदिन हम उन सबको जमाकरेंगे फिर मुशरकीन को हुक्म देवेंगे कि तुम और जिनको तुमने शरीक बनाया था वह ज़रा अपनी जगह ठहरें। फिर हम उनके आपस में फूट डालदेंगे और उनके शरीक कहेंगे कि हमारी पूजा तो तुम कुछ करतेही नहीं थे। (२९) पस हमारे और तुम्हारे बीच बस ख़ुदाही साक्षी है हमको तो तुम्हारी पूजा की बिल्कुल ख़बरही नहीं थी। (३०) वहीं हर शख़्स अपने कर्म को जो उसने किये हैं जांच लेवेगा और सब लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह की ओर लौटाये जावेंगे और जो झूंठ लफंट लगाते रहे हैं वह सब उनसे गये गुज़रे हो जावेंगे। (३१) [रुकू ४] (हे पैग़म्बर ! लोगोंसे इतना तो)

पूछो कि तुमको आस्मान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या कान और आंखों का कौन मालिक है और कौन मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और कौन ज़िन्दा से मुर्दा (करता है) और कौन इन्तज़ाम चला रहा है तो तुरंतही बोल उठेंगे कि अल्लाह। तो कहो कि फिर तुम उससे क्यों नहीं डरते। (३२) फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा सच्चा पालनकर्त्ता है तो सचाई से गुमराहो नहीं तो और क्या है सो तुम लोग किधर को फिरे चले जारहे हो। (३३) इसी-तरह पर तुम्हारे पालनकर्त्ता का हुकम वे हुक्म लोगोंपर सच्चा हुआ कि यह किसीतरह ईमान नहीं लावगे।(३४) पूछोकि तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा भी है कि सृष्टि को अव्वल पैदा करै फिर उनको दुबारा पैदा करै। कहा अल्लाहही सृष्टि को प्रथमवार पैदा करता है फिर उनको दुबारा पैदा करेगा तो अब तुम किधर को उलटे चले जारहे हो। (३५) (हे पैग़म्बर इनसे) पूछो कि तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो सच्ची राह दिखा सके। कहो अल्लाहही सच्ची राह दिखलाता है। तो क्या जो सच्ची राह दिखावे उसका हक़ नहीं कि उसी की पैरवी की जाय। या जो ऐसा है कि जब तक दूसरा उसको राह न दिखलावे वह खुद भी राह नहीं पासक्ता। तो तुमको क्या होगया है (जाने) कैसा न्याय करते हो। (३६) और इन लोगों में से अकसर अटकल पर चलते हैं सो अन्दाज़ी तुक्के सचके सामने काम नहीं आते। जैसा २ यह कर रहे हैं खुदा अच्छीतरह जानता है। (३७) और यह किताब (कुरान) इस क़िस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बनालावे। बल्कि जो (किताबें) इससे पहिले की हैं उनकी तसदीक़ है और संसार के पालनकर्त्ता की वे शुबह किताब की तफ़सील है। (३८) क्या वह कहते हैं कि इसे खुद (मुहम्मद) पैग़म्बर ने बनालिया है (तू कहदे कि) यदि सच्चे हो तो एक ऐसीही सूरत तुम भी

बनालाओ और ख़ुदा के सिवाय जिसे चाहो बुलालो। (३६) और उस चीज़ को झुठलाने लगे जिसके समझने की (इन्हें) शक्ति नहीं। और अभी तक इनको इसके तसदीक़ का मौक़ाही पेश नहीं आया-इसीतरह उनलोगो ने भी झुठलाया था जो इनसे पहिले थे तो (हे पैग़म्बर) देखो ज़ालिमों को कैसा फल मिला। (४०) और इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि जो क़ुरान पर ईमान लेआवेंगे और कोई २ नहीं लावेंगे और तुम्हारा (पैग़म्बर का) पालनकर्त्ता फ़सादियों को खूब जानता है। (४१) और (हे पैग़म्बर) अगर तुमको झुठलावें तो कहदो कि मेरा करना मुझको और तुम्हारा करना तुमको तुम मेरे काम के ज़िम्मेदार नहीं और न मैं तुम्हारे काम का ज़िम्मेदार। (४२) और (हे पैग़म्बर) इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं क्या इससे तुमने समझ लिया कि यह लोग ईमान लावेंगे तो क्या तुम बहरों को सुना सकोगे जो अक़्ल भी नहीं रखते हों। (४३) और इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ़ ताकते हैं तो क्या तुम अन्धों को रास्ता दिखादोगे जो इन को सूझ पड़ता हो। (४४) अल्लाह तो ज़रा भी लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता लेकिन लोग (ख़ुद) अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते हैं। (४५) और जिस दिन लोगों को जमा करेगा तो गोया (दुनियां में सारे दिन भी नहीं बल्कि) घड़ीभर (संसार मे) रहेहोंगे आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे—जिन लोगों ने ख़ुदा की मुलाक़ात को झुठलाया वह बड़े टोटे में आगये और उनको मार्ग ही न सूझा। (४६) और जैसे २ वादे हम इनसे करते हैं चाहे इनमें से बाज़ को तुम्हे दिखावेंगे या तुम को उठा लेवेंगे-इनको तो लौटकर हमारी तरफ़ आना है-जो कुछ यह कर रहे हैं ख़ुदा देखरहा है। (४७) और हर उम्मत (गिरोह) का एक पैग़म्बर है तो जब वह (उनका पैग़म्बर) अपने गिरोह में

आता है तो अपने गरोह में न्याय के साथ फैसला होता है और लोगों पर ज़ुल्म (अत्याचार) नहीं होता। (४८) और पूछते है कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा। (४९) (हे पैग़म्बर इन से) कहो कि मेरा अपना फ़ायदा व नुक़सान भी मेरे हाथ में नहीं। मगर जो खुदा चाहता है वही होता है उसके इल्म में हर उम्मत का एक वक्त मुक़र्रर है जब उनका काल आजाता है तो घड़ी भर भी पीछे नहीं हटसक्ती और न आगे बढ़सक्ती है। (५०) (हे पैग़म्बर इनसे) पूछो कि भला देखो तो सही अगर खुदा की सज़ा रातो रात तुम पर आ उतरे या दिन दहाड़े (आजाय) तो पापी लोग इससे पहिले क्या करलेंगे। (५१) सो क्या जब आ पड़ेगी तभी उसका विश्वास करोगे—क्या अब ईमान लाये और तुम तो इसके लिये जल्दी मचा रहे थे। (५२) फिर (क़यामत के दिन) बेहुक्म लोगों को आज्ञा होगी कि अब हमेशगी की सज़ा चक्खो तुम को सज़ा दी जा रही है (यही) तुम्हारी कमाई का बदला है। (५३) और तुमसे पूछते हैं कि जो कुछ तुम इनसे कहते हो क्या यह सच है? कहो कि पालनकर्त्ता की सौगंध सच है—और तुम हरा न सकोगे। (५४) [रुकू ६] और जिस २ ने दुनियां में अवज्ञा की है वे अपने छुटकारे के लिये अगर तमाम खज़ाने ज़मीन के जो उनके क़ब्ज़े में हो दे निकलें लेकिन सज़ा को देख उन को लज्जित होने पड़ेगा और लोगों में न्याय के साथ फैसला कर दिया जायगा और उनपर ज़ुल्म न होगा। (५५) याद रक्खो जो कुछ आस्मान और ज़मीन में है अल्लाहही का है। याद रक्खो कि अल्लाह की प्रतिज्ञा सच्ची है मगर बहुधा मनुष्य यक़ीन नहीं करते। (५६) वही जिलाता और मारता है और उसकी तरफ तुम को लौट कर जाना है। (५७) तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ से तुम्हारे पास (नसीहत) शिक्षा आचुकी और दिलों रोग की दवा और ईमान वालों के लिये

हिदायत और रहमत (कृपा) आचुकी है। (५८) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि यह (क़ुरान) अल्लाह की कृपा और दया है और लोगों को चाहिये कि ख़ुदा की कृपा और दया यानी क़ुरान को पाकर खुश हों कि जिन दुनियावी फ़ायदों के पीछे पड़े हैं यह उन से कहीं बढ़ कर है। (५९) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि भला देखो तो सही ख़ुदा ने तुम पर रोज़ी उतारी अब तुम उस में से हराम और हलाल ठहराने लगे (इन लोगों से पूछो) ख़ुदा ने तुम्हें क्या ऐसी आज्ञा दी है या उस (ख़ुदा) पर लफंट बांधते हो। (६०) और जो लोग ख़ुदा पर झूंठ बांधते हैं वह क़यामत के दिन क्या समझेंगे अल्लाह लोगों पर कृपा रखता है पर बहुतेरे कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) नही होते। (६१) [रुकू ७] (हे पैग़म्बर) तुम किसी दशा में हो और जो कोईसी क़ुरान की आयत भी पढ़कर सुनाओ और तुम कोई भी कर्म करते हो —जब तुम उसमें लगे रहते हो हम तुम को देखते रहते हैं और तुम्हारे पालनकर्त्ता से जरा भी कुछ छिपा नही रहसक्ता न ज़मीन में और न आस्मान में और कण से छोटी चीज़ हो या बड़ी रोशन किताब में लिखी हुई है। (६२) याद रक्खो कि ख़ुदा जिन को चाहता है उनको न डर होगा और न वे उदास होंगे। (६३) यह लोग जो ईमान लाये और डरते रहे इन को यहां दुनिया की ज़िन्दगी में भी खुशख़बरी है। (६४) और क़यामत में भी ख़ुदा की बातों में भेद नहीं आता है यह बड़ी कामयाबी है। (६५) और (हे पैग़म्बर) इनकी बातों से तुम उदास न हो क्योंकि तमाम जोर अल्लाह का है वह सुनता जानता है। (६६) याद रक्खो कि जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और जो लोग ख़ुदा के सिवाय शरीकों को पुकारते हैं (कुछ मालूम नही कि) किस पर चलते हैं वह सिर्फ़ वहम पर चलते हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (६७) वही है

जिसने तुम्हारे लिये रात को बनाया ताकि तुम उसमें आराम करो और दिनको ताकि तुम उसकी रोशनी में देखो भालो रात दिन के बनाने में उन लोगों को जो सुनते हैं निशानियां हैं। (६८) कहते हैं कि खुदा ने बेटा बना रक्खा है वह पवित्र है और इच्छा रहित है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है उसी का है तुम्हारे पास इसकी कोई दलील तो है नहीं तो क्या बेजाने बूझे खुदा पर झूठ बोलते हो। (६९) (हे पैग़म्बर) इन लोगों से कहदो कि जो लोग खुदा पर झूठा लफंट बांधते हैं उनको मुराद (अभीष्ट) नहीं मिलती। (७०) दुनियां के फ़ायदे हैं फिर उनको हमारी तरफ़ लौट कर आना है तब उनके कुफ्र की सज़ा में हम उनको सख़्त सज़ा देंगे। (७१) [रुकू ८] और (हे पैग़म्बर) इन लोगों को नूह का हाल पढ़कर सुनाओ कि जब उन्हों ने अपनी जाति से कहा कि भाइयो अगर मेरा रहना और खुदा की आयतें पढ़कर समझाना तुमपर असह्य (गिरां) गुज़रता है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है पस तुम और तुम्हारे शरीक अपनी बात ठहरालो फिर तुम्हारी बात तुमपर छिपी न रहे फिर (जो कुछ तुमको करना है) मेरे साथ करचुको और मुझे अवकाश न दो। (७२) फिर अगर तुम मुहँ मोड़ बैठे तो मैंने तुम से कुछ मज़दूरी नहीं मांगी मेरी मज़दूरी तो बस खुदाही पर है और मुझको हुक्म दियागया है कि मैं उस के आज्ञाकारियों में रहूं। (७३) फिर लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने नूहको और जो लोग उनके साथ किश्तियों में थे उनको बचालिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन सबको डुबो करके इन लोगों को अधिकारी बनाया तो जो लोग डराये गये हैं उनका कैसा परिणाम हुआ। (७४) फिर नूह के बाद हमने पैग़म्बरों को उनकी जाति की तरफ़ भेजा तो यह पैग़म्बर उन के पास चमत्कार लेकर आये इसपर भी जिस चीज़ को पहिले

झुठला चुके थे उसपर ईमान न लाये इसीतरह हम वेहुक्म लोगों के दिलों पर मुहर करदिया करते हैं। (७५) फिर इसकेबाद हमने मूसा और हारूंको अपने निशान देकर फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो वे अकड़बैठे और यह लोग कुछ अपराधी थे। (७६) तो जब इनके पास हमारी तरफ़से सच बात पहुंची तो वह कहनेलगे कि यह तो ज़रूर खुला जादूहै। (७७) मूसा ने कहा कि जब सच बात तुम्हारे पास आई तो क्या तुम उसकी बाबत कहते हो क्या यह जादू है? और जादूगरो का भला नही होता। (७८) वह कहने लगे क्या तुम इस प्रयोजन से हमारे पास आये हो कि जिसपर हमने अपने बड़ों को पाया उससे हमको फिरादो और देश मे तुम दोनों को सर्दारी हो और हमतो तुम पर ईमानलानेवाले नहीं हैं। (७९) और फिरऔन ने हुक्म दिया कि हरएक जानकार जादूगर को हमारे सामने लाकर हाज़िर करो फिर जब जादूगर आ मौजूद हुए तो उनसे मूसा ने कहा कि जो तुमको डालना मन्जूर है डालो। (८०) तो जब उन्होने डाल दिया तो मूसा ने कहा कि यह जो तुम लाये हो जादू है अल्लाह इसको झूंठ करेगा क्योंकि अल्लाह फ़सादियो को काम नही बनाने देता। (८१) और अल्लाह अपने हुक्म से सचको सच करता है चाहे अपराधियों को बुराही क्यों न लगे। (८२) [रुकू ८] इन तमाम बातो पर मूसाही के कुटुम्ब के सिर्फ़ थोडे से ईमान लाये और सो भी फिरऔन और उसके सर्दारों से डरते २ कि कहीं कोई विपति उनके ऊपर न डाले फिरऔन देश मे बहुत बढा चढा था और वह जियादती किया करता था। (८३) और मूसा ने समझाया कि भाइयो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो। (८४) इसपर उन्होंने जवाब दिया कि हमको खुदाही का भरोसा है ऐ हमारे पालनकर्ता हम पर इस ज़ालिम कौम का ज़ोर न अज़मा। (८५) और अपनी कृपा

से हमको काफ़िर क़ौम से बचा । (८६) और हमने मूसा और उस के भाई की तरफ़ हुक्म भेजा कि मिश्र में अपने लोगों के घर बनालो और अपने घरों को मसजिदें क़रार दो और नमाज़ पढ़ो और ईमानवालों को खुशखबरी सुना दो । (८७) और मूसा ने दुआ मांगी कि हे मेरे पालनकर्त्ता तुमने फ़िरऔन और उसके सर्दारों को संसार के जीवन में आदर, सत्कार और धन दे रक्खाहै और (हे हमारे पालनकर्त्ता) यह इसलिये दिये हैं कि वह तेरे रास्ते से भटकावें तो हे हमारे पालनकर्त्ता इनके माल मेंट दे और इनके दिलों को कठोर करदे कि यह लोग दुःखदाई सज़ा के देखे बिना ईमान न लावें । (८८) फ़र्माया तुम दोनों अपनी राह पर रहो और मूर्खों के रास्ते मत चलना । (८६) और हमने इसराईल की संतानको पार उतार दिया। फिर फ़िरऔन और उसके लशकरियों ने नटखटी और शरारत की राह से उनका पीछा किया यहां तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तब कहनेलगा कि मैं ईमानलाया कि जिस पर इसराईल के बेटे ईमान लाये हैं उसके सिवाय कोई पूजित नहीं और मैं आज्ञाकारियों में हूं । (६०) अब यों बोला पहले बराबर उदूल हुक्मी करता रहा और तू फसादियों में था । (६१) तो आज तेरे शरीर को हम बचावेंगे कि जो लोग तेरेबाद आने वाले हैं तू उनके लिये शिक्षा हो और बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफिल हैं। (६२) [रुकू १०] और हमने इसराईल की संतान को एक सच्चे ठिकाने से जा बैठाया और उनको उम्दह २ (उत्तम २) पदार्थ दिये और उनमें भेद नहीं पड़ा जबतक इल्म (कुरान) न आया यह लोग जिन २ बातों में भेद डालते रहते हैं तुम्हारा पालनकर्त्ता क़यामत के दिन उन भेदों का फैसला करदेगा। (६३) तो (हे पैग़म्बर यह कुरान) जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा है अगर इसकी बाबत तुम को किसी न किसी क़िस्म का संदेह हो

तो तुम से पहले जो लोग किताबों को पढ़ते हैं उनसे पूछ देखो कुछ संदेह नहीं कि तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ सच्ची किताब उतरी है तो कदापि सन्देह करने वालों में न होना। (९४) और न उन लोगों में होना जिन्होंने ख़ुदा की आयतों को झुठलाया तो तुमभी नुक़सान उठानेवालों में हो जाओगे। (९५) (हे पैग़म्बर) जिनपर पालनकर्त्ता की बात ठीक आई वे ईमान न लावेंगे। (९६) वह तो जब तक दुखदाई सज़ा को न देख लेवेंगे किसी तरह ईमान लानेवाले नहीं हैं चाहे सम्पूर्ण चमत्कार उनके सामने आ मौजूद हों। (९७) तो जाति के सिवाय और कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान लेआती और उनको ईमान लाना फ़ायदा देता कि जब ईमान ले आये तो हमने दुनिया की ज़िन्दगी में उसे बदनामी की सज़ा को क्षमा करदिया और उनको एक वक़्त तक रहने दिया। (९८) और हे पैग़म्बर तुम्हारा पालनकर्त्ता चाहता तो जितने आदमी ज़मीन की सतह में हैं सबके सब ईमान ले आते तो क्या तुम लोगों को मजबूर करसक्ते हो कि वह ईमान लेआवें और किसी शख़्स के अधिकार में नहीं है कि बिना हुक्म ख़ुदा के ईमान लेआवे। (९९) और गन्दगी उन्हीं लोगों पर डालता है जो बुद्धि को काम में नहीं लाते। (१००) निशानियां और डरावे उनको कोई उपकारी नहीं। (१०१) तो क्या वैसेही गर्दिश के मुन्तज़िर हैं (राह देखते हैं) जैसी पहले लोगों पर आ चुकी है (हे पैग़म्बर) इन लोगों से कह दो कि तुम भी इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करने वालों में हूं। (१०२) फिर हम अपने पैग़म्बरों को बचालेते हैं और इसीतरह उन लोगों को जो ईमान लाये हमने अपने ज़िम्मे लाज़िम करलिया है कि ईमानवालों को बचा लिया करें। (१०३) [रुकू ११] हे पैग़म्बर इन लोगों से कहो कि अगर मेरे दीन के सम्बन्ध में सन्देह हो तो ख़ुदा के सिवाय तुम जिनकी

पूजा करते हो—मैं तो उनकी पूजा नहीं करता बल्कि मैं अल्लाह ही को पूजता हूं जो कि तुमको मारडालता है और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान वालों मे रहूं। (१०४) और यह कि दीन की तरफ अपना मुहँ किये सीधी राह चलाजाऊ और मुशरिकों में हरगिज़ न होऊंगा। (१०५) और खुदा के सिवाय किसी को न पुकारना कि वह तुझको न तो लाभही पहुँचा सक्ता है और न तुमको नुक़सानही पहुँचा सक्ता है अगर तूने ऐसा किया तो उसी वक्त तूभी ज़ालिमों में होगा। (१०६) और अगर खुदा तुझको कोई कष्ट पहुँचावे तो उसके सिवाय कोई उसका दूर करनेवाला नही और अगर किसी क़िस्म का फ़ायदा पहुंचाना चाहे तो कोई उसकी कृपाको रोकनेवाला नही अपने दासों में से जिसे चाहे लाभ पहुँचावे और वह क्षमाकरनेवाला मिहर्बान है। (१०७) कहदो कि लोगों सचबात तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम्हारे पास आचुकी। फिर जिसने सच्चीराह पकड़ी तो अपनेही लिये और जो भटका सो भटक कर अपनाही खाता है और मैं तुम्हारा मुख्तार नही। (१०८) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारी तरफ़ जो हुक्म भेजा जाता है उसीपर चलेजाओ और जब तक अल्लाह न्याय न करे ठहरे रहो और वही न्यायकारियों में भला है। (१०९)

———:*:———

बारहवां पारा॥

———:*:———

सूरे हूद।

मक्के में उतरी इसमें १२३ आयतें और दश रुकू हैं।

शुरूअ अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] अलिफ़-लाम-रे। यह किताब (क़ुरान) पुख़्ताकार ख़बरदार की तरफ़ से है जिसकी आयतें तफ़सील के साथ बयान की गई हैं। (१) ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो उसी की ओर से तुमको डराता और ख़ुश ख़बरी सुनाता हूं। (२) और यह कि अपने पालनकर्त्ता से क्षमा मांगो और उसी के सामने तौबा करो तो वह तुमको एक वक़्त मुक़र्ररह तक अच्छी तरह बरताये रक्खेगा और जिसने ज़ियादा किया है वह उसको ज़ियादा देगा और अगर मुँह मोड़ो तो मुझको तुम्हारी बाबत बड़े दिन की सज़ा का खटका है। (३) तुमको अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाना है और वह हर चीज़पर शक्ति रखता है। (४) (हे पैग़म्बर) सुनो कि यह अपने सीनों को दुहरा किये डालते हैं ताकि ख़ुदा से छिपे रहें। (५) जब वह अपने कपड़े ओढ़ते हैं ख़ुदा उनकी छुपिया और ज़ाहिर बातों से ख़बरदार है वह दिलों की बात जानता है। (६) और जितने ज़मीन में चलने फिरते हैं उनकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है और वही उनके ठिकाने को और उनकी सौंपे जाने की जगह को जानता है सब कुछ खुली किताब में है। (७) और वही है जिसने आस्मान और ज़मीन को ६ दिन में बनाया और उसका तख़्त (किब्रियाई) पानी पर था ताकि तुम लोगों को जांचे कि तुम में किस के कर्म अच्छे हैं और अगर तुम कहो कि मरे पीछे तुम उठकर खड़े किये जाओगे तो जो लोग इन्कारी हैं ज़रूर कहेंगे कि यह तो ज़ाहिर जादू है। (८) और अगर हम सज़ा को इनसे गिनती के चन्द रोज़ तक मुल्तवी किये रहें तो अवश्य कहने लगेंगे कि कौन सी चीज़ सज़ा को रोक रही है सुनो जो दिन सज़ा इन पर उतरेगी इनसे फिरने के टाले टलने वाली नहीं और जिस पर लोग हँसी उड़ा रहे थे वह इन को घेर लेगी। (९) रुकू २

और अगर हम मनुष्य को अपनी मेहरबानी चखाके फिर उससे

उससे छीन लें तो वह ना उम्मेद और नाशुक्र (कृतघ्न) होता है। (१०) अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुंची हो और उसके वाद उसको आराम चखावें तो कहने लगता है कि मुझसे सब सख्तियां दूर होगईं क्योंकि वह वहुत ही खुश होजाने वाला शेखी खोरा है। (११) मगर जो लोग दृढ़ रहते हैं और नेक काम करते हैं यही हैं जिनके लिये वख्शिश और बड़ा फल है। (१२) तो आश्चर्य नही कि जो हुक्म तुम पर भेजा जाता है तुम थोड़ा सा छोड़ देना चाहो उसके कारण से तंग होकर कह वैठें कि इस शख्शपर खज़ाना क्यों नही उतरा या उसके साथ कोई फिरिश्ता क्यों नही आया सो तुम डरानेवाले हो और हर चीज़ खुदाही के अधिकार में है। (१३) (हे पैग़म्बर) क्या (काफ़िर) कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से वना लिया है तो इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसीतरह की वनाई हुई दश सूरतें लेआओ और खुदा के सिवाय जिसको तुम से वुलाते वनपड़े वुलालो अगर तुम सच्चे हो। (१४) पस अगर काफ़िर तुम्हारा कहना न करसकें तो जाने रहो कि (कुरान) खुदाही के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवाय कोई पूजित नहीं तो क्या अब तुम हुक्म मानते हो। (१५) जिनका मतलव दुनियां की ज़िन्दगी और दुनियां की रोनक चाहना है। हम उनके कर्मों का वदला दुनियां में उनको पूरा पूरा भर देते हैं और वह दुनियां में घाटे में नहीं रहते। (१६) वह लोग हैं जिनके लिये क़यामत में नरक के सिवाय और कुछ नहीं और जो कर्म दुनियां में इन लोगों ने किये, गये गुज़रे हुए और इनका किया धरा अकारथ हुआ। (१७) तो क्या जो लोग अपने पालनकर्त्ता के खुले रास्ते पर हो और उनके साथ उन्हीं में का एक गवाह हो और कुरान से पहिले मूसाकी किताव हो जो राह देखानेवाली और मिहरवानी है वह लोग इसको मानते हैं और फिर्क़ों मेंसे जो इस (कुरान) से इन्का-

रोहो उनका आखिरी टिकाना नरक है तो (हे पैग़म्बर) तुम कुरान की तरफ़ से संदेह मे न रहना इसमे कुछ संदेह नहीं कि वह तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से सच्चा है। लेकिन अक्सर लोग ईमान नही लाते। (१८) और जो खुदापर झूठ लफंट लगाये उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है यही लोग अपने पालनकर्त्ता के सामने पेशकिये जावेंगे और गवाह गवाही देंगे यही हैं जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता पर झूठ बोलाथा सुनो जी ज़ालिमो पर खुदाहीका मार है। (१९) जो खुदा के मार्ग से रोकते और उसमें कजी (टेढ़) चाहते हैं और यही हैं जो क़यामत से इन्कारी हैं। (२०) यह लोग न दुनियां ही मे खुदा को हरा सकेंगे और न खुदा के सिवाय इनका कोई हिमायती खड़ा होगा इनको दोहरी सज़ा होगी क्योंकि न सुन सक्ते थे न इनसे सूझ पड़ता था। (२१) यही लोग हैं जिन्हो ने आप अपना नुकसान करलिया और झूठ जो बांधा था गुम होगया। (२२) जरूर यही लोग क़यामत में सब से जियादा टोटे मे होंगे। (२३) जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये और अपने पालनकर्त्ता के आगे विनती करते रहे यही वैकुण्ठवासी हैं कि यह वैकुण्ठ में हमेशा रहेंगे। (२४) दो फिर्कों की मिसाल अंधे और बहिरे और आंखों वाले और सुनने वाले कैसी है क्या दोनों की मिसाल एकसां हो सक्ती है! क्या तुम ध्यान नही करते। (२५) [रुकू ३] और हमही ने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा कि मैं तुमको साफ़ २ डर सुनाने आया हूं। (२६) खुदा के सिवाय पूजा न किया करो मुझको तुम्हारी बाबत् एक रोज़ दुखदाई सज़ा का डर है। (२७) इसपर उनकी जाति के सर्दार जो नही मानते थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारेही जैसे आदमी दिखाई देते हो और हमारे नज़दीक सिर्फ़ वही लोग तुम्हारे सहायक होगये हैं जो हम में नीच

हैं और हमतो तुम लोगों में अपने से कोई विशेषता नहींपाते बल्कि हम तुमको झूठा समझते हैं। (२८) नूह ने कहा भाइयो भला देखो तो सही अगर मैं अपने पालनकर्त्ता के खुले रास्ते पर हूं और उसने मुझको अपनी सर्कार से नियामत दी है फिर वह रास्ता तुम को दिखाई नहीं देता तो क्या हम उसको तुम्हारे गले मढ़ रहे हैं और तुम उसको ना पसंद कर रहे हो। (२६) और भाइयो मैं इसके बदले में तुमसे रुपयों का चाहने वाला नहीं हूं मेरी मज़दूरी तो अल्लाह ही पर है और मैं लोगों को जो ईमान ला चुके हैं निकालने वाला नहीं हूं क्योंकि इनको भी अपने पालनकर्त्ता के यहां जाना है मगर मैं देखता हूं कि तुम लोग मूर्खता देते हो। (३०) भाइयो अगर मैं इनको निकालदूं तो खुदा के सामने कौन मेरी मदद का खड़ा होजायगा क्या तुम नहीं समझते। (३१) और मैं तुमसे दावा नहीं करता कि मेरे पास खुदाई खज़ाने हैं और न मैं गैब जानता हूं और न मैं कहता हूं कि मैं फिरिश्ता हूं और जो लोग तुम्हारी नज़रों मे तुच्छ हैं मैं इनके सम्बन्ध मे यह भी नहीं कहसक्ता कि खुदा उनपर कृपा करैहीगा नहीं इनके दिल की बात को अल्लाही खूब जानता है अगर ऐसा कहूं तो मैं ज़ालिमों में हूंगा। (३२) वह बोले नूह तूने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया अगर तू सच्चा है तो जिससे हमको डराता है उसको हम पर लेआ। (३३) (नूह ने कहा) कि खुदा को मंज़ूर होगा तो वही सजा को भी तुम पर लावेगा और तुम हटा न सकोगे। (३४) और जो मैं तुम को नसीहत करना चाहूं अगर खुदाही को तुम्हारा वह करना मंज़ूर है तो मेरी शिक्षा तुम्हारे काम नहीं आसक्ती। वही तुम्हारापालनकर्त्ताहै और उसीकी तरफ़ तुमको लौटकरजानाहै। (३५) (हे पैगम्बर जिस तरह नूहकी क़ौम ने नूहको झुठलाया था) क्या तुम को झुठलाते हैं और तुम पर ऐतराज़ करते और कहते हैं कि

क़ुरान को इसने खुद बना लिया है तुम (उनको जवाब दो) कि अगर क़ुरान मैं ने खुद बनालिया है तो मेरा पाप मुझ पर है और जो पाप तुम करते हो मेरा कुछ ज़िम्मा नहीं। (३६) (रुकू ४) और नूह की तरफ़ ईश्वरी संदेशा आया कि तुम्हारी जाति में जो लोग ईमान लाचुके हैं उनके सिवाय अब हरगिज़ कोई ईमान नहीं लावेगा और जैसी २ बदकारियां यह लोग करते रहे हैं तुम इसका रंज न करो। (३७) और हमारे सामने और हमारे इशारे के बमूजिब एक किस्ती बना और नाफर्मा (उद्धूल हुक्मी) लोगों के सम्बन्ध मे हम से कुछ न कह क्योंकि यह लोग ज़रूर डूबेंगे। (३८) चुनांचि नूहने नाव (किस्ती) बनानी शुरू की और जब कभी उनके जाति के इज़्ज़तदार लोग उनके पास से होकर गुज़रते तो उन से हँसी करते नूह ने जवाब दिया कि अगर तुम हम पर हँसते हो तो जिसतरह तुम हँसते हो तुम पर हम हँसेंगे। (३६) और थोड़े दिनों बाद तुमको मालूम होजायगा कि किसपर सजा उतरती है जो उसकी बदनामी करे और हमेशगी की सजा उसके सिर पड़े यहां तक कि हमारा हुक्म जब आ पहुँचा और (ईश्वर के कोप के) तनूर ने जोश मारा तो हमने हुक्मदिया कि हरकिस्म में से दो दो के जोड़े और जिसकी बाबत पहिला हुक्म होचुका है उसको छोड़कर अपने घर वाले और जो ईमान ला चुके हैं किस्ती मे बैठालो। (४०) और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लाये थे और उसने कहा सवार हो उसमें और किश्ती का बहना और ठहरना अल्लाह के नाम से है और अल्लाह बख्शनेवाला मिहरबान है। (४१) और किश्ती इनको ऐसी लहरों में जो पहाड़ के मानिंद थीं उनको लेगई और नूह का बेटा अलग था तो नूहने उसे पुकारा कि बेटा हमारे साथ बैठले और काफिरों के साथ मत रह। (४२) वह बोला मैं अभी किसी पहाड़ के सहारे जा लगता हूं कि वह मुझको

पानी से बचा लेगा नूह ने कहा कि आजके दिन अल्लाह के कोप से बचाने वाला कोई नहीं मगर खुदाही जिसपर अपनी कृपाकरे और दोनों के दर्मियान में एक लहर आगई और दूसरों के साथ नूहका बेटा भी डूबगया। (४३) और आज्ञाहुई कि हे ज़मीन अपना पानी सोख ले और हे आस्मान थम जा और पानी उतरगया और काम तमाम करदिया गया और किश्ती तोदी (पहाड़) पर ठहर गई और हुक्म हुआ कि ज़ालिम लोग दूरहों। (४४) और नूह ने अपने पालनकर्त्ता को पुकारा और विनती की कि मेरे पालनकर्त्ता मेरा बेटा मेरे लोगों में है और तूने जो प्रतिज्ञा की थी सच्ची है और तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है। (४५) खुदा ने फर्माया कि नूह तुम्हारा बेटा तुम्हारे लोगों में नही था क्योंकि इसके कर्म बुरे थे जो तू नहीं जानता वह बात न पूंछ। मैं तुमको समझाये देता हूं कि मूर्खों में न हो। (४६) कहा हे मेरे पालनकर्त्ता मैं तेरीही शरण मांगता हूं कि जो मैं नहीं जानता था उसकी बाबत तुझसे पूंछा और अगर तू मेरा अपराध नही क्षमा करेगा तो मैं बर्बाद होजाऊंगा। (४७) हुक्म दियागया है कि हे नूह हमारी तरफ़ से सलामती (कुशल) और बरकतों (वृद्धि) के साथ किश्ती से उतरो तुम पर और उन लोगों पर जो तेरे साथ वालों से पैदा हुए हैं बरकतें हैं और बाज फिरकों को फ़ायदा देंगे फिर उन को हमारी तरफ़ से दुःख की मार पहुंचेगी। (४८) यह ग़ैबकी खबरें हैं (हे मोहम्मद) हम तेरी तरफ़ ईश्वरी संदेशा भेजते हैं इस से पहिले तू और तेरी जाति के लोग इन बातों को न जानते थे तो तू संतोष कर परहेज़गारोंका परिणाम भला है। (४९) [रुकू ५] और भाइयो आदकी तरफ़ हमने उन्हीं के भाई हूद को भेजा उन्हों ने समझाया कि भाइयो खुदाही की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तुम सब झूंठ

कहते हो। (५०) भाइयो इसके बदले मैं तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं मांगता मेरी मजदूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया तो क्या तुम नही समझते । (५१) और भाइयो अपने पालनकर्त्ता से क्षमा मांगो फिर उसके सामने तोबा करो कि वह तुमपर खूब बर्षते हुए बादल भेजेगा और दिन पर दिन तुम्हारे बल (ज़ोर) को बढ़ावेगा और नटखटी करके उस से मुहँ न मोड़ो । (५२) वह कहने लगे हे हूद ? तू हमारे पास कोई दलील लेकर नहीं आया और तेरे कहने से हम अपने पूजितों को न छोड़ेंगे और हम तुम पर ईमान न लावेंगे। (५३) हम तो यही समझते हैं कि तुझ पर हमारे पूजितो मे से किसी की मार पड़गई है हूद ने जवाब दिया कि मैं खुदा को गवाह करता हूं और तुम भी गवाह रहो कि खुदा के सिवाय जो तुम शरीक बनाते हो मैं तो उनसे दुखित हूं । (५४) तो तुम सब मिलकर मेरेसाथ अपनी बदी करो और मुझको अवकाश न दो। (५५) मैंने अपने और तुम्हारे अल्लाह पर भरोसा किया जितने जानदार है सभी की चोटी उसके हाथमें है मेरा पालनकर्त्ता सीधी राह पर है। (५६) इसपर भी अगर तुम लोग फिरे रहो तो जो हुक्म मेरे ज़रिये से भेजा गया था वह मैं तुम को पहुंचा चुका और मेरा पालनकर्त्ता तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को तुम्हारी जगह लाकर मौजूद करेगा और मेरा पालनकर्त्ता हरचीज़ को रक्षक है। (५७) और जब हमारा हुक्म आया तो हमने अपनी मेहरबानी से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे बचालिया और उनको सख्त सज़ा से बचालिया। (५८) यह आद है जिन्होने अपने पालनकर्त्ता के हुक्मों से इन्कार किया और उसके पैगम्बरों की अवज्ञा (उदूल हुक्मी) की और हर सरकश दुश्मनों के हुक्म पर चलते रहे। (५९) और इस दुनियां में लानत उनके पीछे लगादीगई और क़यामत के दिनभी देखो आदने

पानी से बचा लेगा नूह ने कहा कि आजके दिन अल्लाह के कोप से बचाने वाला कोई नहीं मगर खुदाही जिसपर अपनी कृपाकरे और दोनों के दर्मियान में एक लहर आगई और डूबने के साथ नूहका बेटा भी डूबगया। (४३) और आज्ञाहुई कि हे ज़मीन अपना पानी सोख ले और हे आस्मान थम जा और पानी उतरगया और काम तमाम करदिया गया और किश्ती जोदी (पहाड़) पर ठहर गई और हुक्म हुआ कि ज़ालिम लोग दूरहों । (४४) और नूह ने अपने पालनकर्त्ता को पुकारा और विनती की कि मेरे पालनकर्त्ता मेरा बेटा मेरे लोगों में है और तूने जो प्रतिज्ञा की थी सच्ची है और तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है। (४५) खुदा ने फर्माया कि नूह तुम्हारा बेटा तुम्हारे लोगों में नहीं था क्योंकि इसके कर्म बुरे थे जो तू नहीं जानता वह बात न पूंछ। मैं तुमको समझाये देता हूं कि मूर्खों में न हो। (४६) कहा हे मेरे पालनकर्त्ता मैं तेरोही शरण मांगता हूं कि जो मैं नहीं जानता था उसकी बाबत तुझसे पूंछा और अगर तू मेरा अपराध नहीं क्षमा करेगा तो मैं बर्बाद होजाऊंगा। (४७) हुक्म दियागया है कि हे नूह हमारी तरफ़ से सलामती (कुशल) और बरकतों (वृद्धि) के साथ किश्ती से उतरो तुम पर और उन लोगों पर जो तेरे साथ वालों से पैदा हुए हैं बरकतें हैं और बाज़ फिरकों को फ़ायदा देंगे फिर उन को हमारी तरफ़ से दुःख की मार पहुंचेगी। (४८) यह गैबकी खबरें हैं (हे मोहम्मद) हम तेरी तरफ़ ईश्वरी संदेशा भेजते हैं इस से पहिले तू और तेरी जाति के लोग इन बातों को न जानते थे तो तू संतोष कर परहेज़गारोंका परिणाम भला है। (४९) [रुकू ४] और भाइयो आदकी तरफ हमने उन्हीं के भाई हूद को भेजा उन्हों ने समझाया कि भाइयो खुदाही की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तुम सब झूंठ

कहते हो। (५०) भाइयो इसके बदले मैं तुमसे कुछ मज़दूरी नही मांगता मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया तो क्या तुम नही समझते । (५१) और भाइयो अपने पालन-कर्त्ता से क्षमा मांगो फिर उसके सामने तोबा करो कि वह तुमपर खूब वर्षते हुए बादल भेजेगा और दिन पर दिन तुम्हारे बल (ज़ोर) को बढ़ावेगा और नटखटी करके उस से मुहँ न मोड़ो । (५२) वह कहने लगे हे हूद ? तू हमारे पास कोई दलील लेकर नही आया और तेरे कहने से हम अपने पूजितो को न छोड़ेंगे और हम तुम पर ईमान न लावेंगे। (५३) हम तो यही समझते हैं कि तुझ पर हमारे पूजितो मे से किसी की मार पड़गई है हूद ने जवाब दिया कि मै खुदा को गवाह करता हूं और तुम भी गवाह रहो कि खुदा के सिवाय जो तुम शरीक बनाते हो मैं तो उनसे दुखित हूं । (५४) तो तुम सब मिलकर मेरेसाथ अपनी बदी करो और मुझको अव काश न दो। (५५) मैंने अपने और तुम्हारे अल्लाह पर भरोसा किया जितने जानदारहैं सभीकी चोटी उसके हाथमेंहै मेरा पालनकर्त्ता सीधी राह पर है। (५६) इसपर भी अगर तुम लोग फिरे रहो तो जो हुक्म मेरे ज़रिये से भेजा गया था वह मैं तुम को पहुंचा चुका और मेरा पालनकर्त्ता तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को तुम्हारा जगह लाकर मौजूद करेगा और मेरा पालनकर्त्ता हरचीज़ को रक्षक है। (५७) और जब हमारा हुक्म आया तो हमने अपनी मेहरबानी से हूद को और उन लोगो को जो उनके साथ ईमान लाये थे बचालिया और उनको सख्त सज़ा से बचालिया। (५८) यह आदहैं जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता के हुक्मो से इन्कार किया और उसके पैगम्बरो की अवज्ञा (उदूल हुक्मी) की और हर सरकश दुश्मनो के हुक्म पर चलते रहे। (५९) और इस दुनियां में लानत उनके पीछे लगादीगई और क़यामत के दिनभी देखो आदिने

अपने पालनकर्त्ता का इन्कार किया देखो आद जो हूद की जाति के लोग थे फटकारे गये। (६०) (रुकू ६) और समुद्र की तरफ हमने उनके भाई सालह को भेजा तो उन्हों ने कहा कि भाइयो खुदा ही की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं उसने तुम को ज़मीन से बना खड़ा किया और तुमको उस में बसाया और उसी से क्षमा मांगो और उसी के सामने तोबा करो मेरा पालनकर्त्ता पास है और दुआ क़बूल करने वाला है। (६१) वह कहनेलगे हे सालह इससे पहिले तो हम लोगों में तुम से उम्मेद की जाती थी कि तुम हर तरह हमारा साथ दोगे सो क्या तुम हम को उनकी पूजा से मना करते हो जिनको हमारे बाप दादा पूजते चलेआये हैं और जिसकी तरफ तुम हमको बुलाते हो हम को उसकी बाबत सन्देह है जिसने आश्चर्य में डाल रक्खा है। (६२) जवाब दिया कि भाइयो देखो तो सही अगर मुझे अपने पालनकर्त्ता से सूझ मिलगई है और उसने मुझपर अपनी कृपा की है और अगर मैं उसकी बेहुक्मी करने लगूं तो ऐसा कौन है जो खुदा के मुकाबिले में मेरी मदद को खड़ा हो। (६३) तो तुम मेरा नुक़सान ही कररहे हो और भाइयो यह खुदा की ऊटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तुम इस को छुटा रहने दो कि खुदा की ज़मीन में से खाती फिरे और इस को किसीतरह का नुकसान न पहुंचा वर्ना फौरन ही तुम को सज़ा मिलेगी। (६४) तो लोगो ने उसको मारडाला तो सालह ने कहा तीनदिन अपने घरो में बसलो यह प्रतिज्ञा झूंठी नहीं होगी। (६५) तो जब हमारा हुक्म आया तो हमने सालह को और उनलोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे अपनी कृपा से उसदिन की बदनामी से बचालिया तुम्हारा पालनकर्त्ता वही जबरदस्त जीतने वाला है। (६६) और जिन लोगों ने ज़ियादती की थी उनको कड़कने पकड़ लिया वे अपने घरों में बैठे रहगये। (६७)

गोया उन में बसेही न थे देखो समूद ने अपने पालनकर्त्ता की बेहुक्मी की। देखो समूद धुधकारे गये। (६८) और हमारे फ़िरिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशखबरी लेकर आये उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने सलाम का जवाब दिया। फिर इब्राहीम ने देर न की और भुना हुआ बछेड़ा ले आया। (६९) फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं उठते तो उनसे बुरा ख्याल हुआ और जी ही जी में उनसे डरे। वह बोले डर मत हम। तो फ़िरिश्ते हैं लूत की जाति की तरफ़ भेजे गये। (७०) और इब्राहीम की बीबी भी खड़ी थी वह हँसी फिर हमने उसको इसहाक़ और इसहाक़ के बाद याक़ूब की ख़ुशखबरी दी। (७१) वह कहनेलगी हाय मेरी कमबख्ती क्या मेरी संतान होगी मैं तो बुढ़िया हूं और यह मेरे पति भी बूढ़े हैं हमारे यहां संतान का होना आश्चर्य की बात है। (७२) फ़िरिश्ते बोले क्या तू ख़ुदा की क़ुदरत से तअज्जुब करती है, हे बेत के रहने वाले तुम पर ख़ुदा की कृपा और उसकी बरकतें हैं, वह सराहा बड़ाइयों वाला है। (७३) फिर जब इब्राहीम से डर दूर हुआ और उन को ख़ुशखबरी मिली। लूत की जाति के सम्बन्ध में हम से झगड़ने लगे। इब्राहीम बड़े नर्म दिल रुजू करने वाले थे। (७४) हे इब्राहीम इस ख्याल को छोड़ दो तुम्हारे पालनकर्त्ता का हुक्म आ पहुंचा और उन लोगों पर ऐसी सज़ा आने वाली है जो टल नहीं सकती। (७५) और जब हमारे फ़िरिश्ते लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने की वजह से तंगदिल हुये और कहने लगे यह तो बड़ी मुश्किल का दिन है। (७६) और लूत की जाति के लोग दौड़े २ लूत के पास आये और यह लोग पहिले सेही बुरे काम किया करते थे लूत कहने लगे कि भाइयो यह मेरी बेटियां हैं यह तुम्हारे लिये ज़ियादा पवित्र हैं तो ख़ुदा से डरो और मेरे मेहमानों में मेरी रुसवाई न करो। क्या

तुम में कोई भला आदमी नही। (७७) उन्होंने जवाब दिया कि तुम को तो मालूम है कि हम को तो तुम्हारी बेटियों से कोई सम्बन्ध नही। हमारे इरादे से तुम भलीभांति जानकार हो। (७८) (लूत) बाले आज मुझको तुम्हारे मुकाबिले की सामर्थ्य होती या मैं किसी ज़ोरावर सहारे का आसरा पकड़ पाता। (७९) (फिरिश्ते) बोले कि हे लूत हम तुम्हारे पालनकर्त्ता के भेजे हुये हैं यह लोग हरगिज़ तुम तक नही पहुंच पावेंगे तो तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात से निकल भागो और तुम में से कोई मुड़ कर न देखे मगर तुम्हारी बीवी देखे कि जो (सज़ा) इन लोगो पर उतरने वाली है वह उस पर भी ज़रूर उतरेगी। इनके वादे का समय सुबह (प्रातःकाल) है। क्या सुबह क़रीब नही। (८०) फिर जब हमारा हुक्म आया तो (हे पैग़म्बर) हमने बस्ती लौट दी और उसपर जमेहुये खंगड़ के-पत्थर बर्षाये। (८१) जिन पर तुम्हारे पालनकर्त्ता के यहां निशान किया हुआ था और यह ज़ालिमों से दूर नही। (८२) (रुकू ८) और मदीने की तरफ़ उनके भाई शोएब को भेजा उन्होंने कहा भाइयो खुदाही की पूजा करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नही और नाप और तोल में कमी न किया करो। मैं तुम को खुश हाल देखता हूं और मुझ को तुम्हारी निस्बत सज़ा के दिन का खटका है जो आघेरेगी। (८३) और भाइयो नाप और तौल इन्साफ के साथ पूरी कियाकरो और लोगो को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और देश मे विद्रोह मत मचाते फिरो। (८४) अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह का जो कुछ बच रहे वही तुम्हारे लिये अच्छा है। (८५) और मै तुम्हारा रक्षक तो नही हूं। (८६) वह कहने लगे कि हे शोएब क्या तुम्हारी नमाज़ ने तुम को यह सिखाया है कि जिन को हमारे बाप दादा पूजते आये हैं हम उनको छोड़ बठे या अपने माल में जिसतरह चाहें न करें। हां तुमही तो

सहनशील (बुर्दबार) और भले निकले हो। (८७) (शौएब ने) कहा भाइयो भला देखो तो सही अगर मुझको अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ से सूझ हुई और वह मुझको अपने से अच्छी रोज़ी देता है और मैं नही चाहता कि जिस से तुम को मना करता हूं वही काम पीछे से आप करूं। मैं तो जहांतक होसके सुधार चाहता हूं और मेरा कामयाब होना तो बस खुदाही से है मैंने तो उसीपर भरोसा किया और इसी की तरफ़ ध्यान देता हूं। (८८) और भाइयो मेरी ज़िद में आकर कहीं ऐसा जुर्म न कर बैठना कि जैसी मुसीबत नूह व हूद की जाति व सालह की जाति पर आई थी। वैसीही मुसीबत तुम पर भी आवे और लूत की जाति भी तुम से दूर नहीं। (८९) अपने पालनकर्त्ता से क्षमा मांगो फिर उसी के सामने तोबा करो मेरा पालनकर्त्ता मेहरबान चाहने वाला है। (९०) वहकहने लगे कि हे शौएब ! जो बातें तुम कहते हो उन में से बहुतसी तो हम नहीं समझते इसके सिवाय हम तुम को अपने में कमज़ोर पाते हैं और अगर तुम्हारे कुटुम्ब के लोग नहीं होते तो हम तुझपर (संगसार) पथराव करते और तू हम पर सर्दार नहीं (शौएब) ने जवाब दिया कि भाइयो अल्लाह से बढ़कर तुम पर मेरे कुटुम्ब का दबाव है और तुमने खुदा को अपनी पीठ पीछे डाल दिया जो कुछ तुम करते हो मेरे पालनकर्त्ता का है। (९२) और भाइयो तुम अपनी जगह काम करो। म अपनी जगह काम करता हूं आगे तुमको मालूम होजावेगा कि किसपर सज़ा उतरना है जो उसको बदनाम करदे और कौन झूंठा है। (९३) और राह देखते रहो और मैं भी तुम्हारे साथ राह देखता हूं। (९४) और जब हमारी आज्ञा आ पहुंची तो हमने अपनी मेहरबानी से शौएब को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे बचा-लिया और जो लोग वे हुक्मी करते थे उनको कठोर शब्द ने आ

पकड़ा। तो अपने घरों में मरे रहगये। (९५) गोया उनमें बसेही न थे सुन रक्खो कि जैसे समूद खुदा के यहां से धुधकारे गये मदीना वाले भी धुधकारे गये। (९६) [रुकू ४] और हमने मूसाको फिरऔन और उसके दर्बारियों की तरफ़ अपना निशानियों और ज़ाहिरा दलील के साथ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा। (९७) तो लोग फिरऔन के कहने पर चले और फिरऔन की बात कुछ राह की न थी। (९८) क़यामत के दिन फिरऔन अपनी जाति के आगे आगे होगा और उनको नरक में ले जा दाखिल करेगा और बुराघाट है जिस पर उतरे हैं। (९९) इस (दुनियां) में लानत उनके पीछे लगादी गई और क़यामत के दिन भी बुरा इनाम है जो दियागया। (१००) (हे पैग़म्बर) यह बस्तियों की खबरें हैं जो हम तुम से बयान करते हैं इनमें से (कोई तो उस वक्त) कायम हैं और कोई उजड़ गई हैं। (१०१) और हमने इन लोगों पर जुल्म नहीं किया बल्कि उन्हों ने अपने ऊपर आप जुल्म किया तो (हे पैग़म्बर) जब तुम्हारे पालनकर्त्ता की आज्ञा आई तो खुदा के सिवाय जिन पूजितों को वह लोग पुकारा करते थे वह उनके कुछ भी काम न आये बल्कि उनके नाश के कारण हुए। (१०२) और (हे पैग़म्बर) जब बस्तियों के लोग जुल्म करने लगते हैं और तुम्हारा पालनकर्त्ता उनको पकड़ता है तो उसकी पकड़ ऐसी ही है बेशक उसकी पकड़ सख़्त दुखदाई है। (१०३) इनमें उस आदमी के लिये जो क़यामत की सज़ा से डरे एक निशानी है क़यामत का दिन वहदिन होगा जब आदमी जमा किये जावेंगे और वह दिन देखने का है। (१०४) और हमने उसमें एक ठहराये हुए समय तक देर की है। (१०५) जब वह दिन आवेगा तो खुदा के हुक्म के बिना कोई शख़्श बात नहीं कर सकेगा फिर कोई अभागे कोई भाग्यवान होंगे। (१०६) तो जो अभागे हैं वह नरक में होंगे वहां उनको चिल्लाना और दहा-

ड़ना होगा। (१०७) जब तक आकाश व ज़मीन है हमेशा उसी में रहेंगे मगर (हे पैग़म्बर) जिसको तुम्हारा पालनकर्त्ता चाहे तुम्हारा पालनकर्त्ता जो चाहता है कर डालता है। (१०८) और जो लोग भाग्यवान है वह बैकुंठ में होंगे जब तक आस्मान और ज़मीन है बराबर उसी मे रहेंगे मगर जिसको खुदा चाहे अखण्ड देनहै। (१०९) तो (हे पैग़म्बर) यह (मुशरकीन) जिसकी पूजा करते हैं उसके सम्बन्ध में तुम किसीतरह के सन्देह मे मत पड़ना जैसी पूजा पहिले उनके बाप दादा पूजते आये हैं वैसीही पूजा यह लोग भी करतेहैं और हम इनका हिस्सा बिना कम बढ़ किये पूरा २ पहुँचा देवेंगे। (११०) [रुकू १०] और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी थी तो लोग उसमें भेद डालने लगे और हे (पैग़म्बर) अगर तुम्हारा पालनकर्त्ता एक बात पहिले से न कह चुका होता तो लोगों मे फैसला करदिया गया होता और यहलोग कुरान की तरफ़ से ऐसे शक में पड़े हुए हैं जिसने इनको दुखी कर रखा है। (१११) और जब वक्त आवेगा तुम्हारा पालनकर्त्ता इनको इनके कर्मों का बदला ज़रूर देगा क्योंकि जैसे २ कर्म यहलोग कररहे हैं उसको (सब) खबर है। (११२) तो (हे पैग़म्बर) सब अपने साथियों के जिन्होंने तुम्हारे साथ तोबा की जैसी आज्ञा हुई है सीधे चले जाओ और हद से न बढ़ो और जो कुछ तुम कर रहे हो खुदा देख रहा है। (११३) और (मुसलमानों) जिन लोगों ने बे हुक्मी (अवज्ञा) की उनकी ओर मत झुकना और न (नरक की) आग तुम्हारे लगेगी और खुदा के सिवाय तुम्हारा सहायक कोई नहीं है (बे हुक्मों की तरफ झुकने की सूरत मे उसकी तरफ़ से भी) तुमको सहायता नहीं मिलेगी। (११४) और (हे पैग़म्बर) दिन के दोनों सिरे (यानी सुबह शाम) और रात के पहिले नमाज़ पढ़ाकरें क्योंकि भलाइयां पापों को दूर कर देती है ऐ लोग

खुदा का जिक्र (स्मर्ण) करनेवाले हैं उनके हक़ में यह याद दिलाना है। (११५) और (हे पैग़म्बर) ठहरे रहो क्योंकि अल्लाह अच्छे कामों के वदले को वृथा नहीं होने देता। (११६) तो जो जमातें (गिरोह) तुमसे पहिले हो चुकी हैं उनमें (संसार की उतनी) खैरख्वाही करनेवाले भी क्यों न हुए कि (लोगोंको) देश में विद्रोह मचाने से मना करते मगर थोड़े जिनको हमने वचा-लिया और जो ज़ालिम थे वही राह चले जिसमें ऐश पाया और यह लोग पापी थे। (११७) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालन-कर्त्ता ऐसा नहीं है कि वस्तियों को व्यर्थ (नाहक) मारडाले और वहां के लोग भले हों । (११८) और अगर तुम्हारा पालनकर्त्ता चाहता तो लोगों का एकही मत कर देता लेकिन लोग हमेशा भेद डालते रहेंगे मगर जिस पर तुम्हारा पालनकर्त्ता दया करे और इसी-लिये तो इनको पैदा किया है और तुम्हारे पालनकर्त्ताका कहा हुआ पूरा हो कि हम जिन्नों और आदमियों सब से नरक भर देंगे। (११९) और (हे पैग़म्बर) दूसरे पैग़म्बरों के जितने क़िस्से हम तुम से वयान करते हैं उनके ज़रिये से हम तुम्हारे दिल का साहस वँधाते हैं और इन में सच वात तुम्हारे पास पहुंची और ईमान वालों के लिये शिक्षा और समझौती। (१२०) और (हे पैग़म्बर) जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कहदो कि तुम अपनी जगह काम करो हम भी काम करते हैं। (१२१) और तुम भी राह देखो हम भी राह देखते हैं। (१२२) और आस्मान और ज़मीन की छिपी वातें अल्लाह ही के पास हैं और हरएक काम आखिरकार उसी पर जाकर ठहरता है तो (हे पैग़म्बर) उसी की पूजा करो और उसी पर भरोसा रक्खो और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो तुम्हारा पालनकर्त्ता उस से वे खवर नहीं । (१२३) [रुकू १०]

——:*:——

सूरे यूसुफ़।

मक्के में उतरी। इसमें १११ आयतें १२ रुकू हैं।

शुरूअ अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहरबान है। [रुकू १] अलिफ़-लाम-रे यह (सूरत) खुली किताब (यानी क़ुरान) की आयतें हैं। (१) हमने इस क़ुरान को अर्बी भाषा में उतारा है ताकि तुम समझ सको। (२) (हे पैग़म्बर) हम तुम्हारी तरफ़ वही (ईश्वरीय संदेशा) के ज़रिये से यह सूरत भेजकर तुम को एक अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं और तुम इस से पहिले बे खबर थे। (३) एक समय था कि यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि हे बाप मैंने ११ नक्षत्रों (सितारे) और सूरज और चांद को देखा है कि यह सब मुझको सिजदा (सिर झुकाना) कर रहे हैं। (४) याक़ूब ने कहा बेटा कहीं अपने स्वप्न को अपने भाइयों से न कह बैठना कि वह तुझको (किसी न किसी) आफ़त में फंसाने की तदबीर करने लगेंगे। शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। (५) (जैसा तूने स्वप्न में देखा है) वैसाही (होगा कि) तेरा पालनकर्त्ता तुझको (मेरी संगति में) क़बूल करेगा। तुझको (स्वप्ने की) बातों की कल बैठाना सिखायगा और जिसतरह खुदा ने अपनी नियामत पहिले तेरे दादा इसहाक़ और इब्राहीम पर पूरी की थी उसीतरह तुझ पर और याक़ूब की संतान पर पूरी करेगा तेरा पालनकर्त्ता जानकार और हिकमत वाला है। (६) [रुकू २] (हे पैग़म्बर यहूद) जो दर्याफ्त करते हैं उनके लिये यूसुफ़ और उनके भाइयों में निशानियां हैं। (७) जब यूसुफ़ के भाइयों ने (आपस में) कहा कि बावजूदे कि (हक़ीक़ी) भाइयों की बड़ी जमात हैं तो भी यूसुफ़ और उसका भाई हमारे पिता को हम से बहुत ज़ियादा प्यारे हैं। हमारा पिता ज़ाहिरा ग़लती में है। (८) (तो यानी)

यूसुफ को मारडालो या उसको किसी जगह फेंक आओ तो पिता का रुख़ तुम्हारी ही तरफ़ रहेगा और उसके बाद तुम लोगों के (सब) काम ठीक होजावेंगे। (९) उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ़ को जान से न मारो। हां तुम को करना है तो उसको अन्धे कुयें में डालदो कि कोई राह चलता क़ाफ़िला उसको निकाल लेगा। (१०) (तब सब ने मिलकर याक़ूब से) कहा कि हे बाप इसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ के सम्बन्ध में हमारा विश्वास क्यों नही करते हालांकि हम तो उसके (दिली) हैं। (११) उसको कल हमारे साथ भेज दीजिये कि (जंगल की फल फलैरी) खांय और खेले और हम उसकी रक्षा के ज़िम्मेदार हैं। (१२) (याक़ूब ने) कहा कि तुम्हारा इसको लेजाना तो मुझपर सख़्त गुज़रता है और मैं इस बात से भी डरता हूं कि (ऐसा न हो) कहीं तुम इस से बेख़बर होजाओ और इसको भेड़िया खाजावे। (१३) वह कहने लगे कि अगर इसको भेड़िया खाजायँ और हम इतने सब हैं तो इस सूरत में हम निकम्मे ठहरे। (१४) आखिरकार जब यह लोग (याक़ूब की आज्ञा से) यूसुफ़ को अपने साथ लेगये और सब ने इस बात पर पक्का करलिया कि इसको किसी अन्धे कुएँ में डालदें तो जैसा ठहराया था वैसाही किया और (उसी वक्त) हमने यूसुफ़ की तरफ़ वही (ईश्वरीय संदेशा) भेजी कि तुम इनको इनके इस बुरे व्यवहार से जतलाओगे और वह तुमको नहीं जानेंगे। (१५) ग़रज़ यह लोग (यूसुफ़ को कुयें मे गिरा) थोड़ी रात गये रोते (पीटते) बाप के पास आये। (१६) कहने लगे हे बाप जानो हम तो जाकर कबड्डी खेलने लगे और यूसुफ़ को हमने असबाब के पास छोड़ दिया इतने में भेड़िया खा गया और अगर्चे हम सच भी कहते हों तौभी आप को हमारी बात का विश्वास न आवेगा। (१७) और यूसुफ़ के कुर्ते पर

झूंठ मूठ का खून (भी लगा) लाये। याकूब ने (उनका बयान सुनकर और खून से सना कुर्ता देखकर) कहा (कि यूसुफ़ को भेड़िये ने तो नहीं खाया) बल्कि तुमने अपने (मुंह उजागर करने के) लिये अपने दिल से एक बात बनाली है खैर संतोष अच्छा है और जो तुम कहते हो ख़ुदाही मदद करे। (१८) और एक काफ़िला आगया उन्होंने अपने भिश्ती को भेजा ज्योंही उसने अपना डोल लटकाया (यूसुफ उसमें आबैठे) पुकार उठा अहा यह तो लड़का है और काफ़िले वालों ने यूसुफ़ को माल तिजारत क़रार देकर छिपा रक्खा और (इस हाल को छिपाने को) जो तदबीरें (यह लोग) कर रहे थे अल्लाह को खूब मालूम थीं। (१९) (इतने में तो भाइयों को यूसुफ़ की खबर लगी और उन्हों ने उसको अपना गुलाम बनाकर बेचा) और काफिले वालों ने कम दामों (यानी) चंद दिरहम के बदले में उसको बेच दिया और वह यूसुफ़ की इच्छा न रखते थे। (२०) [रकू २] और (आखिरकार) मिश्र के लोगों में से जिसने यूसुफ़ को मोल लिया उसने अपनी औरत (जुलैखा) से कहा इसको अच्छीतरह रक्खो आश्चर्य नहीं (अपनी खिदमत से) अरब का सिक्का हमको फ़ायदा पहुंचाये या इसको हम बेटाही बनाले और या हमने यूसुफ़ को देश में जगह दी और प्रयोजन यह था कि हम उनको बातों की कल बैठाना सिखावें और अल्लाह अपने इरादे पर शक्तिमान है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (२१) और जब यूसुफ़ अपनी जवानी को पहुंचा हमने उसको हुक्म और इल्म दिया हम भलाई करने वालों को इसीतरह बदला दिया करते हैं। (२२) और (जुलैखा) जिसके घर में यूसुफ़ थे उसने उनसे बदकामी का इरादा किया और दरवाजे बन्द करदिये और कहा इधर आओ (यूसुफ) ने कहा अल्लाह बचावे वह (तुम्हारा पति) मेरा मालिक

है उसने मुझको अच्छातरह रक्खा है (मैं उसकी अमानत में खयानत नहीं करसक्ता) क्योंकि जालिम लोग भलाई नहीं पाते। (२३) और वह तो यूसुफ के साथ बुरी इच्छा करही चुकी थी और यूसुफ़को अपने पालनकर्त्ताकी तरफकी दलील कि वह मेरा स्वामी है उस वक्त न सूझगई होती तो वह भी उसके साथ बुरी इच्छा कर बैठे होते इसीप्रकार (हमने) यूसुफ को दृढ़ रखा ताकि बदकारी और निर्लज्जता उनसे दूर रखें कुछ संदेह नहीं कि वह हमारे चुने सेवकों में से था। (२४) और दोनों दरवाज़े की ओर भागे और औरत ने पीछे से यूसुफ़ का कुर्ता फाड़दिया और औरत का पति द्वारे के पास मिलगया (वह शौहर से पेशबन्दी के तौरपर) बोली कि जो शख़्श तेरी बीबीके साथ बदकारी की इच्छा करे बस उसकी यही सज़ा है कि क़ैद करदियाजाय या दुःखदाई सज़ा दीजावे। (२५) यूसुफ़ ने कहा कि वह (औरत खुद) मुझसे मेरी चाहने वाली हुई थी और उसके कुटुम्ब वालों में से गवाह ने यह बात बताई कि यूसुफ़ का कुर्ता (देखाजाय) अगर आगे से फटा है तो औरत सच्ची और यूसुफ़ झूठा। (२६) और अगर इसका कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूठी और यूसुफ़ सच्चा। (२७) तो जब यूसुफ़ के कुर्त को पीछे से फटाहुआ देखा तो उसने कहा कि यह तुम औरतो के चरित्र हैं कुछ संदेह नहीं कि तुम स्त्रियों के बड़े चरित्र हैं। (२८) यूसुफ़ इसको जाने दो और (हे स्त्री) तू अपने अपराध की क्षमा मांग क्योंकि सरासर तेराही अपराध था। (२९) [रुकू ४] और शहर में औरतों ने चर्चाकिया कि अज़ीज़[1] की स्त्री अपने ग़ुलामसे मतलब (नाजायज़) हासिल करना चाहती है ग़ुलामका इश्क उसके दिलमें जगह पकड़ गया है हमारे नज़दीक़ तो वह ज़ाहिरा ग़लती में है। (३०) तो जब (मिश्र के अज़ीज़) की

नोट-(१) " अज़ीज़ " मिश्र के वज़ीर का ख़िताब है।

औरत ने इनके ताने सुने उनको बुलवा भेजा और उनके लिये एक महफ़िल की तैयारी की और (फल तराश तराश कर खाने के लिये) एक एक छुरी उनमें से हरएक के हवाले की और (ठीक वक़्त पर यूसुफ़ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ (और ज़रा अपनी शकल तो दिखाओ) फिर जब औरतों ने यूसुफ़ को देखा तो उनपर यूसुफ़ की ऐसी धाग बैठी कि उन्होंने अपने हाथ काटलिये और कहने लगी अल्लाह की क़सम यह आदमी तो नहीं। हो नहो यह एक बड़ा फ़िरिस्ता है। (३१) (अज़ीज़ मिश्र की औरत) बोली बस यही तो है जिसके सम्बन्ध में तुमने मुझको मलामत की और मैंने अपना मतलब (नाजाइज़) इससे हासिल करना चाहाथा मगर उसने बचाया और जिसको मैं इससे कहरहीहूं अगर उसको नहीं करेगा तो जरूर क़ैद किया जावेगा और जरूर ज़लील होगा। (३२) (यह सुनकर) यूसुफने दुआकी कि हे मेरे पालनकर्त्ता जिसकी तरफ़(यह औरतें) मुझको बुला रहीं हैं क़ैद रहना मुझको उससे कहीं ज़ियादा पसंद है अगर इनके चरित्रों को तूने मुझसे दूर नहीं किया तो मैं इनसे मिलजाऊंगा और मूर्खों में हो जाऊंगा। (३३) तो यूसुफके पालनकर्त्ता ने उनकी सुनली और उनसे औरतो के चरित्रों को दूर करदिया खुदा सुनता जानता है। (३४) फिर जब लोगोंने (यूसुफ की निष्कलंकताकी) निशानियां देखलीं उसके बाद (भी जुलैखा की दिलजोई और यूसुफ को उसकी नजर से दूर रखने के लिये) उनका यही (मुनासिब) मालूम हुआ कि एक वक़्त तक उसको क़ैद रखें। (३५) [रुकू ४] और यूसुफ के साथ दो आदमी जेलखाने में दाखिल हुये (उन्होंने ख्वाब देखे कि यूसुफ को बुजुर्ग समझ कर स्वप्नफल पूंछने के मतलब से) एक ने कहा कि मैं देखता हूं कि शराब निचोड़ रहाहूं और दूसरे ने कहा कि मैं देखता हूं कि अपने सर पर

रोटियां उठाये हुये हूं और परिन्दा उनमें से खा खा जाते हैं (यूसुफ) हमको (हमारे) इस (स्वप्न) का स्वप्न फल बताओ क्योंकि तुम हमको भले मनुष्य दिखाई देतेहो। (३६) (यूसुफ़ने) जवाब दिया कि जो खाना तुमको अब मिलनेवाला है वह तुम तक अब आने नहीं पावेगा कि उसके आने के पहिले स्वप्न की ताबीर (स्वप्न फल) बताडूंगा यह उन बातों में से जो मुझको मेरे पालनकर्त्ता ने सिखलाई हैं। मैं (शुरू से) उन लोगों का मज़हब छोड़े बैठाहूं जो खुदा पर ईमान रखते और क़यामत से इन्कार करने वाले हैं। (३७) और मैं अपने बाप दादा इब्राहीम और इस-हाक़ और याक़ूब के दीनपर चलरहा हूं। हमारा काम नहीं कि खुदा के साथ किसी चीज़को शरीक बनावे यह (विश्वास) खुदा की एक कृपा है (जो उसने) हमपर और लोगो पर कीहै मगर अक्सर लोग शुक्र (कृतज्ञता) नहीं करते। (३८) हे जेलखाने के दोस्तो जुदे २ पूजित अच्छे या एक खुदा ज़बरदस्त। (३९) तुम लोग खुदा के सिवाय निरे नामोंहो की पूजा करते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादो ने गढ़ रखे हैं खुदाने तो इन की कोई सनद नहीं दी हुकूमत तो एक अल्लाहही की है (और) उसने आज्ञा दी है कि केवल उसीका पूजन करो यही, सीधा दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (४०) हे जेलखाने के दोस्तो तुम में से एक तो अपने मालिकको शराब पिलायगा औरदूसरा फांसीपर लटकाया जायगा और पक्षी उसका सिर खायेगे जिस बात को तुम पूंछते थे फैसला हो चुकाहै। (४१) और जिस मनुष्य की बाबत यूसुफ़ ने सम-झाया था कि इन दोनों में से एक की रिहाई होजावेगी उससे कहा अपने मालिकके पास मेरी भी चर्चा करना (कि मैं व्यर्थ क़ैदहूं) सो शैताननें उसको अपने मालिकसे चर्चा करना भुलादिया तो (यूसुफ़) कई वर्ष क़ैदखानेमेरहे। (४२) [रुकू ६] और (इसबीचमे) बादशाह

यान किया कि मैं सात मोटी गायें देखता हूं उनको सात दुब-
ायें खारही हैं और सात हरी वाले हैं और दूसरी (सात)
। हे दरबार के लोगो ! अगर तुमको स्वप्न की ताबीर (स्वप्न
फल) देनी आती हो तो मुझ से इस स्वप्न के बारे में अपनी
जाहिर करो। (४३) उन्हों ने कहा कि यह तो कुछ उड़ते
लात हैं और (ऐसे) ख्यालात की ताबीर हमको नही आती।
४) और वह शख्श जो (यूसुफ के उन) दो (साथियों) में
छुटकारा पा गया था और उसको एक अर्से के बाद (यूसुफ़ का
सा) याद आया बोल उठा कि मुझ को (क़ैदखाने तक)
को आज्ञा हो तो (मैं यूसुफ़ से पूंछकर) इसकी ताबीर
वप्न का फल) तुमको बताऊं। (४५) (उसको आज्ञा हुई)
उसने यूसुफ से जाकर कहा कि हे यूसुफ़ बड़ा सच्चा स्वप्न
बताने वाले हो। भला इस बारे में तो तुम अपनी राय हमसे
हिर करो कि सात मोटी गायों को सात दुबली (गायें) खाती
और सात हरी वालें और दूसरी (सात वालें) सूखी इसका
व दो तो मैं लोगों के पास लौट जाऊं ताकि (इस ता-
का हाल) उनको मालूम हो। (४६) (यूसुफ ने) कहा
वप्न का फल यह है कि) तुम लोग सात वर्ष तक बराबर काश्त
ी करते रहोगे तो जो (फस्ल) काटो उसका उसी की बाल ही
हने देना (ताकि ग़ल्ला गले सड़े नहीं) मगर हां किसी क़दर जो
ारे खाने के काम में आये। (४७) फिर इसके बाद सातवर्ष
सख्त अकाल के आयेंगे कि जो कुछ तुमने पहिले से इन
ों) के लिये इकट्ठा कर रखा होगा खाजांयगे मगर हां थोड़ा जो कुछ
(बीज के लिये) बचा रखोगे (उतनाही लोगोंसे बचजायगा) ।
४८) फिर इसके बाद एक ऐसा वर्ष आवेगा जिसमें लोगोंके लिये
ी होगी और (खेती के सिवाय) उस वर्ष अंगूर भी खूब फलेंगे

(लोग शराब के लिये उनके सीरे भी) निचोड़ेंगे । (४६) [रुकू ७] (सारांश यह कि साक़ी ने यह सब स्वप्न फल जाकर बादशाह से कहा) और बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को हमारे सामने लाओ तो जब चोपदार यूसुफ़ के पास (यह आज्ञा लेकर) पहुँचा तो उन्होंने कहा तुम अपनी सर्कार के पास लौट जाओ और उनसे पूछो कि उन औरतों का भी हाल मालूम है जिन्होंने (मुझको देखकर) अपने हाथ काट लिये थे (आया वह मेरे पीछे पड़ी थीं या मैं उनके पीछे पड़ा था) इनके चरित्रों को मेरा पालनकर्त्ता जानता है । (५०) चुनांचि बादशाह ने इन औरतो को बुलवाकर उनसे) पूंछा कि जिस वक़्त तुमने यूसुफ़ से अपना मतलब (नाजायज़) हासिल करना चाहा था (उसवक्त) तुमको क्या मामला पेश आया । उन्होंने अर्ज़ किया "हांशअल्लाह" हमने तो यूसुफ़ में किसीतरह की बुराई नहीं पाई (इस पर) अज़ीज़ को बीबी बोल उठी कि अब सब बात ज़ाहिर होगी मैंने यूसुफ से अपना मतलब (नाज़ायज़) हासिल करना चाहा था और यूसुफ सच्चों में है । (५१) यह (माजरा चोबदार ने यूसुफ से बयान किया यूसुफ ने कहा मैंने कभी की दबो दबाई बात को) इस लिये उखाड़ा कि मिश्र के अज़ीज़ को मालूम होजाय कि मैंने उसकी पीठ पीछे उसकी (अमानत में) खयानत नहीं की और यहभी मालूम रहै कि खयानत करने वालों की तदबीरों को खुदा चलने नही देता । (५२)

——:*:——

तेरहवां पारा ।

——:*:——

मैं (यूसुफ़) अपनी बाबत नही कहता कि मैं पाक साफ हूं क्योंकि इन्द्रियां तो बुराईके लिये उभारती ही रहती हैं मगर यह कि

मेरा पालनकर्त्ताही अपनी कृपाकरै। कुछ सन्देह नहीं कि मेरा पालन-कर्त्ता क्षमा करने वाला दयालु है। (५३) और वादशाह ने आज्ञा दी कि यूसुफ़ को हमारे सामने लाओ कि हम उसको अपनी सेवाके लिये रक्खेंगे जब यूसुफ़ से बात चीतकी तो कहा आज तूने विश्वा-सपात्र (मुअतवर) होकर हमारे पास जगह पाई। (५४) यूसुफ़ ने अर्ज़ किया मुझको मुल्की खज़ाने पर नियत (मुक़र्रर) करदी-जिये मैं अत्यन्त निगहवान और चैतन्य हूं। (५५) और यो हमने यूसुफ़ को देश मे स्थान दिया कि उसमे जहां चाहें रहें हम जिसपर चाहते हैं अपनी कृपा करते हैं और अच्छे काम करने वालो के फल को अकारथ नही होने देते। (५६) और जो लोग ईमान लाये और परहेज़गारी करते रहे आखिरी फल भला है। (५७) (रुकू ८) और यूसुफ़ के भाई आये और यूसुफ़ के पास गये तो यूसुफ़ ने उनको पहिचान लिया और उन्होने यूसुफ़ को नहीं पहिचाना। (५८) और जब यूसुफ़ ने भाइयों का सामान उनके लिये तैयार करदिया तो कहा अपने द्विमात भाई (इब्रयामीन) को लेते आना क्या तुम नही देखते कि हमे नाप (तौल) पूरी देते हैं और हम सब से अच्छे अतिथि सत्कारी हैं। (५९) फिर अगर तुम उसको हमारे पास न लाये तो तुम को हमारे यहां अनाज नहीं मिलेगा और तुम हमारे पास न आना। (६०) उन्हों ने कहा कि हम जातेही उसके पिता से उसके सम्बन्ध मे विनती करेंगे और अवश्य हमको करना है। (६१) यूसुफ़ ने अपने नौकरों को आज्ञादी कि इन लोगो की पूंजी इन्हीं की बोरियो मे रखदो ताकि जब लोग अपने बाल बच्चो की तरफ़ लौटकर जावें तो अपनी पूंजी के पहिचानें आश्चर्य नही यह लोग फिरभी आवे। (६२) तो जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो निवेदन किया कि हे बाप हमें अनाज की मनाई करदी गई है सो आप हमारे भाई को भी हमारे साथ भेजदी-

जिये कि हम अनाज लावें और हम उसकी रक्षा के ज़िम्मेदार हैं। (६३) कहा कि मैं इस पर तुम्हारा क्या विश्वास करूं मगर वैसाही विश्वास जैसा मैंने पहिले इसके भाई पर किया था सो खुदा सब से अच्छा रक्षक है और वह सब दयालुओं से ज़ियादा दयालु है। (६४) और जब इन लोगों ने अपना सामान खोला तो देखा कि इनकी पूंजी भी इनको लौटा दीगई है फिर बाप की तरफ़ आये (और) कहनेलगे कि हे पिता हमें और क्या चाहिये यह हमारी पूंजी फिर हम को लौटा दी गई है (अब हमको आज्ञा दो कि विनयामिन को साथ लेकर जावें) और अपने घरके लिये रसद लावें और हम अपने भाई विनयामिन की रक्षा करेंगे और एक बार ऊंट भर अनाज और लावेंगे यह अनाज (ग़ल्ला) थोड़ा है। (६५) (बाप ने) कहा जबतक तुम खुदा की क़सम खाकर मुझ को पूरी प्रतिज्ञा न दोगे कि तुम इसको ज़रूर मेरे पास फिर लावोगे। मगर यह कि तुम आपही घिरजाओ तो मजबूर है ऐसी प्रतिज्ञा किये विना तो मैं इसको तुम्हारे साथ कदापि नही भेजूंगा तो जब उन्होंने बाप को अपनी पक्की प्रतिज्ञा देदी तो (बाप ने) कहा कि प्रतिज्ञा जो हम कररहे हैं अल्लाह उसका साक्षी है। (६६) और बापने (उनको चलते वक्त यह भी) शिक्षा की लड़को (देखो) एक दर्वाज़े से दाखिल न होना कि कही बुरी नज़र न लग जाये बल्कि अलहिदा २ दर्वाज़ो से दाखिल होना और मै खुदा की किसी चीज़ से नहीं बचा- सक्ता। हुक्म तो अल्लाह ही का है मैंने उसी पर विश्वास करलिया है और भरोसा करने वालो को चाहिये कि उसीपर भरोसा करें। (६७) और जब यह लोग (उसी तरह पर) जैसे उनके बाप ने उनसे कहदिया था (मिश्र में) दाखिल हुये तो यह होशियारी खुदा के सामने इनकी कुछ भी काम नहीं आसक्तीथी वह तो याकूब की एक दिली इच्छा थी जिसको उन्होने पूरा किया और उसमे

सन्देह नही कि याकूब हमारे सिखाये से खबरदार था लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६८) [रुकू ६] और जब यूसुफ के पास गये तो यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास बैठालिया कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूं सो जो (बुरा व्यवहार यह लोग तुम्हारे साथ) करते रहे हैं उसको कुछ रंज मत करो। (६९) फिर जब (यूसुफ ने) भाइयो को उनका सामान साथ पहुंचा दिया तो अपने भाई की बोरी मे पानी पीने का कटोरा रखवा दिया फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि काफलेवालो हो न हो तुम्ही चोर हो। (७०) यह लोग पुकारने वालो की तरफ घिरकर पूंछने लगे कि (क्योंजो) तुम्हारी क्या चीज़ खोगई है। (७१) उन्हो ने कहा शाही पैमाना (माप) हमको नही मिलता और जो शख्स उसे लाकर हाज़िर करै उसको एक बोझ ऊंट इनाम मिलैगा और मै उसका ज़ामिन हूं। (७२) (यह सुनकर यह लोग) कहने लगे देश मे शरारत करने की इच्छा से नही आये और न हम कभी चोर थे। (७३) (कटोरेके ढूंढने वाले) बोले कि अगर तुम झूंटे निकले तो फिर चोरकी क्या सज़ा। (७४) वह कहने लगे कि चोर की यह सज़ा कि जिसकी बोरी मे कटोरा निकले वही आप उसके बदले मे जावे (यानी कटोरे के बदले बादशाह का गुलाम) हम तो जालिमो को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं। (७५) आखिरकार यूसुफ़ ने अपने भाई की बोरी से पहिले दूसरे भाइयो की बोरियो की तलाशी लिवाना शुरू की। फिर अपने भाई के बोरे से कटोरा निकलवाया, यो हमने यूसुफके फ़ायदे के लिये मकर किया। बादशाह मिश्र के कानून की रू से वह अपने भाई को नही रोक-सक्ते थे मगर यह कि अगर खुदा को मन्जूर होता (तो कोई दूसरा उपाय निकलता) हम जिसको चाहते है उसके दर्जे ऊंचे कर देते है हर एक खबर वाले से एक खबरदार बढ़कर है। (७६) (जब

इब्रयामीन के बोरे से कटोरा निकला तो भाई) कहने लगे कि अगर इसने चोरी की हो तो (आश्चर्य की बात नहीं) (इससे) पहिले इसका भाई (यूसुफ़) भी चोरी कर चुका है तो यूसुफ़ ने (इसका जवाब देना चाहा मगर) उसको अपने दिलमें रक्खा। और इन पर उसको ज़ाहिर न होने दिया और कहा कि तुम बड़े नीच हो और जो कहते हो खुदा ही इसको खूब जानता है। (७७) कहने लगे हे अज़ीज़ इसके पिता बहुत वृद्ध हैं सो आप (कृपाकरके) इसकी जगह हम में से किसी को रख लीजिये हम को तो आप बड़े अहसान करने वाले मालूम होते हैं। (७८) (यूसुफ़ ने) कहा अल्लाह बचावे कि हम उस शख़्स को छोड़ कर जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है किसी दूसरे शख़्स को पकड़ रक्खें ऐसा करे तो हम अन्याई ठहरे। (७९) [रुकू १०] तो जब यूसुफ़ से ना उम्मेद होगये तो अकेले सलाह करने बैठे जो सब मे बड़ा था बोला कि क्या तुमको मालूम नहीं कि पिता साहिब ने खुदा की क़सम लेकर तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली है और पहिले यूसुफ़ के हक़ मे तुमसे एक अपराध होही चुका है तो जब तक मुझ को पिता आज्ञा न दें या (जब तक) खुदा मेरे लिये कोई और सूरत न निकाले मैं तो इस जगह से टलने वाला नहीं खुदाही सब से बढ़कर तजवीज करने वाला है। (८०) तो तुम पिता की सेवा में लौट जाओ और प्रार्थना करो कि हे पिता आपके पुत्र ने चोरी की—हमने वही बात कही है जो हमको मालूम हुई है और (वह जो हमने इब्रयामीन की रक्षा का ज़िम्मा लिया था तो कुछ) हम को ग़ैब की खबर नहीं थी। (८१) और आप उस बस्ती से पूंछ लीजिये जहां हम थे और उस क़ाफ़िले से जिसमें हम आये हैं और हम बिल्कुल सच कहते हैं। (८२) बोले कि (इब्रयामीन ने तो चोरी नहीं की) बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बनाली है तो (ख़ैर) अब

संतोष अच्छा है मुझ को तो आशा है कि अल्लाह मेरे सब लड़कों को मेरे पास लावेगा क्योंकि वह जानकार हिक्मत वाला है। (८३) और याक़ूब बेटों से अलग जा बैठे और कहने लगे हाय यूसुफ़ और शोक के मारे उनकी दोनों आंखें सफ़ेद होगई थीं और वह जी ही जी में घुटा करते थे। (८४) (बाप का यह हाल देखकर) बेटे कहने लगे कि खुदा की क़सम तुम तो सदा यूसुफ़ ही की याद्गारी में लगे रहोगे यहांतक कि (झुर झुर कर घाती) जाते रहोगे या मरही जाओगे। (८५) (याक़ूब ने) कहा (मैं तुम से तो कुछ नहीं कहता)जो परेशानी और रंज मुझको है उसीकी फ़रियाद खुदाही से करता हूं और खुदाही की तरफ़ से मुझ को वह बातें मालूम हैं जो तुम को मालूम नहीं। (८६) लड़को (एकबार फिर मिश्र) जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और खुदा की कृपा से निराश (ना उम्मेद) न हो क्योंकि खुदा की कृपा से वही लोग निराश हुआ करते हैं जो काफ़िर हैं। (८७) तो जब यूसुफ़ तक पहुंचे तब गिड़गिड़ाने लगे कि हे अज़ीज़ हम पर और हमारे बाल बच्चों पर सख़्ती पड़रही है और हम कुछ थोड़ी सी पूंजी लेकर आये हैं तो हमको पूरा गल्ला (अनाज) दिलवा दीजिये और हम को अपनी खैरात दीजिये क्योंकि अल्लाह (खैरात) करनेवालों को फल (बदला) देता है (अब तो यूसुफ से भी) न रहा गया और कहने लगे कि तुम को कुछ याद भी है जिस वक्त तुम मूर्खता पर थे तो तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था। (८८) (इसके कहने से भाइयों को आगाही हुई और) कहने लगे क्या सच तुम्हीं यूसुफ़ हो ? यूसुफ़ ने कहा मैं ही यूसुफ़ हूं और यह मेराही भाई है हम पर अल्लाह ने कृपा की। जो कोई परहेज़गार हो और साबित (ठहरा) रहे तो अल्लाह नेकी करने वालों के फल को अकारथ नहीं होने देता। (९०) बोले खुदा की क़सम कुछ सन्देह

नहीं कि तुम को अल्लाह ने हमसे ज़ियादा पसंद रक्खा और हमह अपराधी थे। (९१) यूसुफ़ ने कहा अब तुमपर कोई अपरा नहीं। खुदा तुम्हारे अपराध क्षमा करे और वह सब मिहरबानों से ज़ियादा मेहरबान है। (९२) (तुम्हारे कहने से मालूम हुआ कि पिता की आखें जाती रही हैं तो) मेरा यह कुर्त्ता लेजाओ और इस को पिता के मुँह पर डाल दो कि वह देखने लगेंगे और अपने सम्पूर्ण कुटुम्ब को मेरे पास लेआओ। (९३) [रुकू ११] और काफ़िला (व्यौपारियों का झुंड) मिश्र से चलाही था कि उनके बापने कहा कि मुझको वृथा बकवादी न बनाओ (तो एक बात कहूं कि) मुझको तो यूसुफ़ कैसी गन्ध आरही है। (९४) (तो जो बेटे याक़ूब के पास ठहरे थे) वह कहने लगे कि खुदा की सौगन्ध तुम तो अपनी पुरानी ग़लती में हो। (९५) फिर जब (यूसुफ के जीवन पाने की) खुशखबरी देनेवाला (याक़ूब के पास) आया (यूसुफ का) कुर्त्ता याक़ूब के मुँहपर डाल दिया और उनको तुरत ही दिखलाई देनेलगा। (९६) (अब याक़ूब ने बेटों) से कहा कि क्या मैं तुमसे नहीं कहा करता था कि मैं अल्लाह (की तरफ) से वह (बातें) जानताहूं जो तुम नहीं जानते। (९७) यह (बोले) पिता (खुदा से) हमारे अपराध क्षमा कराइये हमी अपराधी थे। (९८) (याक़ूब ने) कहा मैं अपने पालनकर्त्ता से तुम्हारे अपराधों को क्षमा कराऊंगा वही बख़्शने वाला मिहरबान है। (९९) फिर जब (यह लोग आखिरी बार) यूसुफ के पास गये तो यूसुफ ने अपने माता पिता का (प्रणाम करके) अपने पास जगहदी और (सब की तरफ सम्बोधन करके) कहा कि शहर मिश्र में दाखिल हो और खुदाने चाहा तो सब उनके आगे सुखपूर्वक रहोगे। (१००) और (मिश्र के क़ायदे के बमूजिब यूसुफ ने) अपने माता पिता का तख़्त पर ऊंचा बैठाया और सब (दस्तूर के बमूजिब यूसुफ को

ताजीम के लिये) उनके आगे सिजदे मे गिरपड़े (साष्टाग दण्डवत की) और यूसुफ़ ने (अपना स्वप्न याद करके अपने पिता से) निवेदन किया कि हे पिता वह जो मैने पहिले स्वप्न देखा था यह उस स्वप्न का फल है। मेरे पालनकर्त्ता ने (आज) उस (स्वप्न) को सच कर दिखलाया और (उसके सिवाय) उसने मुझ पर अहसान किये है कि मुझ को क़ैद से निकाला और तुमको गांव से ले आया और (यद्यपि) मुझ मे और मेरे भाइयो में शैतान ने विद्रोह डलवा दिया था बाहर से तुम सब को (मुझ से) लामिलाया बेशक मेरे (पालनकर्त्ता) को जो मंज़ूर होता है वह उसकी तदबीर खूब जानता है क्योंकि वह जानकार और हिकमत वाला है। (१०१) (यूसुफ़ की तबियत दुनियां से संतुष्ट होगई और खुदा से मिलने का शौक हुआ तो उन्हो ने दुआ की) हे मेरे पालनकर्त्ता तूने मुझ को हुकूमतदी और मुझ को (स्वप्न को) बातों का स्वप्न फल कहना भी सिखलाया–हे आस्मान और ज़मीन के पैदा करने वाले दुनिया और क्यामत (दोनों) मे तूही मेरा काम सम्भालनेवाला है मुझको नेकबख्तो मे मौत दे। (१०२) (हे पैग़म्बर) यह चन्द ग़ैब की बाते हैं जिनको हम (वही के जरिये से) तुम्हें भेजतेहैं और तू उनके पास न था जिस वक्त यूसुफके भाइयोंने अपना पक्का इरादा करलिया था (कि यूसुफ़ को कुये मे डालदें) और वह (उनके मारने की) तदबीरें कर रहे थे–और बहुत लोग यक़ीन लाने वाले नही अगर्चे तू ललचावे। (१०३) और तू उनसे उसपर कुछ मजूरी नही मांगता यह और तो कुछ नही परन्तु सब संसार को शिक्षा है। (१०४) [रुकू १२] और आसमान और ज़मीन मे कितनी निशानियां हैं जिनपर से होकर लोग गुज़रते हैं और उन पर ध्यान नहीं देते। (१०५) और अकसर लोगो का हाल यह है कि खुदा को नही मानते हैं और मुशरिकही रहते है।

(१०६) तो क्या इससे निडर होगये हैं कि इनपर खुदा की कोई सज़ा की आफ़त न आपड़े या एकदम से इनपर क़यामत आजावे और इनको खबर भी न हो। (१०७) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो मेरा तरीक़ा तो यह है कि (सबको) खुदा की तरफ़ समझ बूझ कर बुलाता हूं मैं और जो लोग मेरे हैं और अल्लाह पाक है मैं मुशरिकों से नहीं हूं। (१०८) और (हे पैग़म्बर) हमने तुम से पहिले भी बस्तियों ही के रहनेवाले आदमीही (पैग़म्बर बनाकर) भेजे थे कि हमने उनपर ईश्वरीय सदेशा भेजा था तो क्या (यह लोग) देश में चले फिरे नहीं कि देख लेते कि जो लोग इन से पहिले हो गुज़रे हैं उनका कैसा फल हुआ और परहेज़गारों के लिये परलोक बास अच्छा है तो क्या तुम नहीं समझते। (१०९) यहां तक कि पैग़म्बर निराश (ना उम्मेद) होगये और खयाल करने लगे कि उनसे झूठ कहा था तो हमारी मदद उनके पास आपहुँची ता जिसको हमने चाहा बचालिया और अपराधी लोगों से तो हमारी सज़ा टलही नहीं सक्ती। (११०) सन्देह नहीं कि बुद्धिमानों के लिये इनलोगों के हालात से शिक्षा है यह (कुरान) कोई बनाई हुई बात तो नहीं है बल्कि जो (आसमानी किताबें) इस से पहिले हैं उन की तसदीक़ है और इसमें उन लोगों के लिये जो ईमानवाले हैं हरचीज़ का ब्योरेवार बयान और शिक्षा और दया है। (१११)

——:※:——

सूरे राद।

मक्के में उतरी इसमें ४३ आयतें ६ रुकू हैं ॥

शुरूअ अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बानहै।

रुकू [१] अलिफ़-लाम-मीम-रे-(हे पैग़म्बर) यह किताब कुरान की आयतें हैं और तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से जो कुछ

तुम पर उतरा है वह सच है। लेकिन बहुतलोग नही मानते। (१) अल्लाह वह है जिसने आस्मानो को बिना किसी सहारे के ऊंचा बना खड़ाकिया (जैसा कि) तुम देख रहे हो फिर तख़्त पर जा विराजा और चन्द्रमा सूर्य्य को काम मे लगाया कि हर एक नियत समय तक चला जारहा है वही सब संसार का प्रबन्धकर्त्ता है (अपनी कुदरत की) निशानियां तफ़सील के साथ बयान फर्माता है ताकि तुम लोगों को अपने पालनकर्त्ता से मिलने का विश्वास हो। (२) और वह है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमे पहाड़ और नदी बनादी और उसमे हरतरह के फलों की दो दो किस्मे पैदा की। रातको दिनसे ढांपता है इन बातो मे उन लोगों के लिये जो ध्यान करते हैं निशानियां हैं। (३) और ज़मीन मे पासर कई खेत हैं और अंगूर के बाग़ और खेतो और खजूर के पेड़, जड़ मिले और बिन मिले (होते) हालांकि सबको एकही पानी दियाजाता है और फलों मे हम एक को एक पर खूबी देते है—उसमें निशानियां है उनको जो समझते हैं। (४) और अगर तू अचम्भाकी बात चाहे तो इनका कहना अचम्भा है कि जब हम मिट्टी होजावेंगे तो क्या हम नये बनेंगे। (५) यही लोग हैं जिन्होने अपने पालनकर्त्ता से इन्कार किया और यही लोग हैं जिनके गर्दनो मे (क़यामतके दिन) तौक़[१] होंगे यही नरकवासी हैं और हमेशा नरकही मे रहेंगे। (६) और (हे पैग़म्बर) भलाई से पहिले यह लोग तुमसे बुराई की जल्दी मचारहे है हालांकि इनसे पहिले कहावते चली आती है और (हे पैग़म्बर इसमे) कुछ संदेह नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता लोगो से उनकी नटखटियो के होने पर भी क्षमा करनेवाला है और तुम्हारे पालनकर्त्ता की मार भी बड़ी सख्त है। (७) और काफ़िर

नोट—तौक़—हंसुलिया की किस्म का जो क़ैदियो के गले मे डालाजाता है।

कहते हैं कि इसपर इसके पालनकर्त्ता की ओर से निशानी क्यो नही उतरी (हे पैग़म्बर) तुमतो सिर्फ़ डराने वाले हो और हर एक जातिका एक राह बनानेवाला है। (८) [रुकू २] हर मादह जो बच्चा (पेटमें) लिये हुये है उसको अल्लाह ही जानता है और पेटका घटना बढ़ना (उसीको मालूम रहता है) और उसके यहां हर एक चीज़ का अन्दाज़ा है। (९) खुले और छिपेका जाननेवाला सर्वोपरि है। (१०) तुम लोगों में जो कोई बात चुपकेसे कहे और जो शख़्श पुकारकर कहे और जो रातके वक्त छिपाहो और दिनमें गलियो मे फिरताहो उसके नज़दीक बराबर है। (११) उस (सेवक) के आगे और पीछे पहिरेवाले है जो उसको अल्लाह की आज्ञा से बचाते हैं। खुदा किसी जाति की हालत नही बदलता जब तक वह अपने दिलके ख्याल न बदले और जब खुदा किसी जातिपर कोई आफ़त डालनी चाहे, तो वह टल नही सक्ती और खुदा के सिवाय उनलोगो का कोई मददगार नही। (१२) और वही है डराने और आशादिलाने के लिये (बिजली की) चमक तुम लोगों को दिखाता और बोझिल बादलों को उभारता है। (१३) और गरज (कड़क) उसकी तारीफ़ के साथ पाकीज़गी (पवित्रता) बतलाती है और फिरिश्ते उसके डरकेमारे और बिजलियां भेजता है फिर जिसपर चाहता है उनपर डारता है और यह खुदा की बात में झगड़ते हैं हलांकि उसके दांव सख़्त है। (१४) उसी को सच्चा पुकारना है और जो लोग इसके सिवाय पुकारते है वह उनकी कुछ नहीं सुनते मगर जैसे एक शख़्श अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलावै ताकि पानी उसके मुंहमे आजावे हालांकि वह उसतक कभी नही पहुँचेगा और जितनी काफ़िरोंकी पुकार है सब गुमराही है। (१५) और जिसक़दर आस्मान व ज़मीन मे है वश और बेवश अल्लाह ही के आगे सिरझुकायेहुये हैं और (इसीतरह) सुबह और शाम

उनके सायेभी सिजदा करते हैं। (१६) (हे पैग़म्बर इनलोगों से) पूंछो कि आसमान और ज़मीन का पालनेवाला कौन ? कहो। कि अल्लाह–कहो। क्या तुमने ख़ुदाके सिवाय काम के सम्भालने वाले बना रक्खे हैं जो अपने जातों हानि लाभ के मालिक नहीं। कहो भला कहीं अन्धा और आंखोंवाला बराबर है। या कहीं अँधेरा और उजाला बराबर है ? या कहो इन्हों ने अल्लाह के ऐसे शरीक ठहरा रक्खे हैं कि उसी कैसी सृष्टि (मखलूक़ात) उन्होंने भी पैदा कर रक्खी है और अब उनको संसार की बाबत् में सन्देह होगया है ? (हे पैग़म्बर इन से) कहो कि अल्लाह ही हरचीज़ का पैदा करने वाला है और वह अकेला ज़बरदस्त है। (१७) (उसीने) आस्मान से पानी बर्षाया फिर अपने अन्दाजे से नाले बह निकले। फिर फूला हुआ झाग जो ऊपर आगया था उसको रेले ने उठालिया और यह जो ज़ेवर और दूसरे सामान के लिये धातों को आग में तपाते हैं उसमें उसी तरह का झाग होता है यों अल्लाह सच और झूठ की मिसाल (उदाहरण) बतलाता है (कि पानी सचकी जगह है और झाग झूठ की जगह है) सो झाग तो खराब जाता है और (पानी) जो लोगों के काम आता है वह ज़मीन में ठहरा रहता है। अल्लाह इस तरह मिसाले ब्यान फर्माता है। जिन लोगों ने अपने पालनकर्त्ता का कहामाना उनको भलाईहै और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी जो कुछ ज़मीनपरहै अगर सब उनके पासहो और उसके साथे उतना और तो यह लोग अपने छुड़वाई के बदले में उसको दे डालें। यही लोग हैं जिनसे बुरीतरह हिसाब लिया जायगा और उनका आख़िरी ठिकाना नरकहै और वह बुरी जगहहै। (१८) [रुकू ३] भला जो बन्दा इस बात को समझता है कि जो तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़से तुम पर उतराहै सच है उस आदमी की तरह है जो अन्धा हो बस यही लोग समझते हैं जिनको समझ है। (१९) वे जो अल्लाह के ...

को पूरा करते हैं और प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ते। (२०) और खुदाने जिनके जोड़े रखने का हुक्म दिया है वह उनको जोड़ रखते हैं और अपने पालनकर्त्ता से डरते और (कयामत के दिन) बुरी तरह हिसाब लिये जाने का खटका रखते हैं। (२१) और जिन्हों ने अपने पालनकर्त्ता की ओर लगकर कष्ट से संतोष किया और नमाजें पढ़ीं और हमारे दिये में से चुपके और ज़ाहिर (खुदा की राह में) खर्च किया करते और बुराई के मुक़ाबिले में भलाई करते हैं यही लोग हैं जिनको दुनियां का फल अच्छा। (२२) हमेशा रहने के बाग़ हैं जिन में वह जांयगे और उनके बड़ों और उनकी बीबियों और उनकी संतान जो जो भला काम करने वाले होंगे-(सब उनके साथ जावेंगे) और (वैकुण्ठ के) हर दर्वाज़े से फ़िरिश्ते उनके पास आते हैं। (२३) (सलामालेक करेंगे और कहेंगे कि दुनियां में) जो तुम संतोष करते रहेहो सो तुम को खूब अच्छा फल मिला है। (२४) और जो लोग खुदा के साथ पक्का क़ौल व क़रार किये पीछे प्रतिज्ञा तोड़ते और जिनके जोड़े रखने का खुदाने हुक्म दिया है उनको तोड़ते और देश में विद्रोह फैलाते हैं यही लोग हैं जिनके लिये फटकार है और उनका बुरा फल है। (२५) अल्लाह जिसकी रोज़ीचाहता है बढ़ा देता है और (जिसकी चाहता है)कम करदेता है और वे (काफ़िर) दुनियां की जिन्दगी से खुश हैं हालांकि दुनियां की जिन्दगी क़यामत के सामने बिल्कुल नाचाज़ है। (२६) [रुकू ४] और जो लोग इन्कारी हैं कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्त्ता की तरफ़ से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतरा ! तुम इन से कहो अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह (भटकाया) करता है और जो रुजू होता है-उसको अपनी तरफ का रास्ता दिखाता है। (२७) जो लोग ईमान लाये और उनके दिलों को खुदा की याद से चैन होता है सुन रक्खो कि खुदा की याद से दिलों को चैन

हुआ करता है जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये उनके लिये (क़यामत में) खुशहाली है और (वैकुण्ठ) उनका अच्छा ठिकाना है। (२८) (हे पैग़म्बर जिस तरह हमने और पैग़म्बर भेजे थे) इसी तरह हमने तुमको भी एक उम्मति (गरोह) में भेजा है जिनसे पहिले और उम्मते (सगते) गुज़र चुकी हैं ताकि जो तुम पर वही (ईश्वरीय संदेशा) के ज़रिये से तुम पर उतरा है वह उनको पढ़कर सुना दो और यह लोग इन्कारी हैं तो कहो कि वही मेरा पालनकर्त्ता है उसके सिवाय कोई पूजित नही। मैं उसी का भरोसा रखता हूं और उसीकी तरफ़ चित्त लगाता हूं। (२९) और अगर कोई कुरान न होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उस (की बरकत) से जमीन के टुकड़े हो सक्ते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगे बल्कि सब काम अल्लाह के हैं तो क्या ईमानवालों को इस पर संतोष नही आया कि अगर खुदा चाहे तो सब लोगों को राह पर लावे। (३०) और जो लोग मुन्किर है इनको इनकी करतूत की सज़ा मे कष्ट पहुंचता रहेगा या इनको वस्ती के आस पास उतरेगी यहां तक कि खुदा का प्रण पूरा हो खुदा-वादा खिला-फ़ी नही करता। (३१) [रुकू ५] और (हे पैग़म्बर) तुम से पहिलें भी पैग़म्बरो की हँसी उड़ाई जाचुकी है सो हमने इन्कारियो को ढील दी है फिर उनको धर पकड़ा तो हमारी सज़ा कैसी (सख्त) थी। (३२) तो क्या जो हर एक शख्श के काम की खबर रखता है और यह लोग अल्लाह के लिये (दूसरे) शरीक ठहराते हैं (हे पैग़म्बर उनसे) कहो कि तुम इनके नाम तो लो या तुम खुदा को (ऐसे शरीकों की) खबर देते हो जिनको वह जमीन मे नहीं जानता या ऊपरी बाते बनाते हो। बात यह है कि मुन्किरो को अपनी चालाकियां भली मालूम होती हैं और राह (बिचलाये) से रुके हुये हैं और जिसको खुदा गुमराह करे तो कोई उसको राह

दिखानेवाला नही। (३३) इन लोगों के लिये दुनियां की जिन्दगी में सज़ा है और क़यामत की सज़ा बहुत सख्त है और खुदासे कोई इनको बचाने वाला नही। (३४) परहेज़गारों के लिये जिस बाग़ (बैकुण्ठ) की प्रतिज्ञा की जारहीहै उसके नीचे नहरें बहरही हैं उसके फल सदा बहार और छांह। यह उन लोगोंको फलहै जो परहेज़गारी करते रहे और इन्कारियों का फल नरक है। (३५) और जिनको हमने किताब दीहै वह जो तुमपर उतारी है उससे खुशहोते हैं और दूसरे फिर्के उसकी चन्दबातों से इन्कार रखते हैं तुम (इन) से कहो कि मुझको तो यही हुक्म मिला है कि मैं खुदा ही की पूजा करूं और किसी को उसका शरीक न बनाऊ मैं (तुमको) उसी की तरफ़ बुलाताहूं और उसीकी तरफ मेरा ठिकाना। (३६) और ऐसाही हमने इसको अर्बी (भाषा)मे हुक्म उताराहै और अगर इसके बाद भी जबकि तुमको इल्म होचुका हैं तुमने इनकी इच्छाओं की पैरवी की तो खुदाके समने न कोई तुम्हारा हिमायतीहोगा और न कोई बचाने वाला। (३७) [रुकू ६] और तुमसे पहिलेभी हमने पैग़म्बर भेजे और हमने उनको बीबियां भी दीं और संतान भी और किसी पैग़-म्बर की सामर्थ्य न थी कि खुदा की आज्ञा के बिना कोई चमत्कार दिखलावे। हर वादा लिखाहुआ है। (३८) खुदा जिसको चाहे मिटादेता है और (जिसको चाहता है) क़ायम रखता है और उसके पास असल किताब है।/(३९) और जैसे २ वादे इनको हम करते हैं चाहे बाज़ वादे हम (तुम्हारी ज़िन्दगी मे) तुमको पूरे कर दिखावें और चाहें तुमको दुनियां से उठालेवें। हर हाल मे पहुँचा देना तुम्हारा काम हैं और हिसाब लेना हमारा। (४०) क्या यह लोग इस बातको नहीं देखते कि हम देशको सब तरफ से दबाते चले आते है और अल्लाह आज्ञादेता है कोई उसकी आज्ञाको टाल नही सक्ता और वह बड़ो जल्दी हिसाब लेनेवाला है।

(४१) और जो लोग इन (मक्का के काफ़िरों) से पहिले हो गुज़रे हैं उन्होंने भी मकर किये सो सब मकर तो अल्लाहही के हाथमें हैं जो शख़्श जो कुछ कर रहा है ख़ुदाको मालूम है और इन्कारियों को जल्द मालूम होजायगा कि पिछला घर किसका है। (४२) और काफ़िर कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो तो (इनसे) कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह और जिनके पास किताबहै गवाहहैं। (४३)

—:×:—

सूरे इब्राहीम।

मक्के में उतरी। इसमें ५२ आयतें और ७ रुकू हैं।

(शुरुअ) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहरबानहै। [रुकू १] अलिफ़-लाम-रे-यह किताब हमने तुमपर इस प्रयोजन से उतारी है कि लोगों को उनके पालनकर्त्ता के हुक्म से अन्धेरों से निकलकर उजालेकी ओर उसके रास्तेपर जो ज़बरदस्त और तारीफ़ के लायक़हैं लाये। (१) अल्लाहकाहै जो कुछ आस्मानोंमें है और जो कुछ ज़मीनमेंहै और इन्कार वालों को एक सख़्त सज़ा से ख़राबी है। (२) जो लोग क़यामत के सामने दुनियां का जीवन पसंद करते और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोकते और उसमें ऐब ढूंढते हैं यही लोग बड़ी भूलपर हैं। (३) और जब कभी हमने कोई पैग़म्बर भेजा तो उसीको जाति ज़बान में (बात चीत करता हुआ) भेजा ताकि वह उनको समझा सके इसपरभी ख़ुदा जिसको चाहता है फिर भटकाता है और जिसको चाहता है राह देता है और वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (४) और हमने ही मूसाको अपनी निशानियां देकर भेजाथा कि अपनी जाति को (कुफ़्रके) अन्धेरों से निकाल कर (ईमान के) उजाले में लाओ और उनको ख़ुदाके दिनकी याद दिलाओ क्योंकि उनमें जो सब मानने वाले

अचल हैं उनके लिये निशानियां हैं। (५) और उन्ही वक्तों का ज़िक्र यह भी है कि मूसा ने अपनी जाति से कहा कि (भाइयो) अल्लाहने जो तुमपर अहसान किये हैं उनको याद करो। जब कि उसने तुमको फिरऔन के लोगों से बचाया वह तुमको बुरी सज़ा देते और तुम्हारे बेटों को ढूंढ़ढूंढ़ कर हलाल करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से बड़ी मदद थी। (६) [रुकू २] और जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने जता दिया था कि अगर सच मानोगे तो हम तुमको और ज़ियादह (नियामत) देंगे और अगर तुमने कृतघ्नता (नाशुक्री)की तो हमारीमार सख़्तहै। (७) और मूसा ने कहा कि अगर तुम और जितने लोग ज़मीन की सतह पर हैं वह सब खुदा से इन्कारी होजाओ तो खुदा बे परवाह और तारीफ़ के योग्य है। (८) क्या तुमको उनके हालात नहीं पहुंचे जो तुमसे पहिले और आदि की और समूद की जाति से हो गुज़रे हैं। (९) और जो उनके बाद हुए जिनकी खबर खुदा ही को है उनके पैग़म्बर चमत्कार ले लेकर उनके पास आये तो उन्हों ने उनके हाथोंको उन्हीं के मुखों पर उलटे दिये (यानी उनको नहीं माना) और बोले जो हुक्म लेकर तुम भेजे गये हो हम उस को नहीं मानते और जिस राहकी तरफ तुम हमको बुलाते हो उस से इतमीनान नहीं। (१०) उनके पैग़म्बरों ने कहा क्या खुदामें शक है जो आस्मान और ज़मीन का बनाने वाला है। वह तुमको इसी लिये बुलाताहै कि तुम्हारे अपराध क्षमा करे और एक प्रतिज्ञा तक जो हो चुकी है तुमको (दुनियां में) रहने दे। (११) वह कहने लगे कि तुमभी तो हमारी तरह के आदमी हो तुम चाहते हो कि जिन (मूर्त्तियों को) हमारे बड़े पुजते आये हैं उनसे हमको रोक दो तो हमको कोई ज़ाहिरा चमत्कार ला दिखाओ। (१२) उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि हम तुम्हारीही तरह के आदमी हैं

मगर खुदा अपने सेवकों में से जिसपर चाहता कृपा करता है और हमारी सामर्थ्य नहीं कि हम कोई चमत्कार लाकर तुमको दिखावें। (१३) और अल्लाह ही पर ईमान वालोंको भरोसा रखना चाहिये। (१४) और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न रक्खें हमारे तरीक़ उसीने हमको बताये और जैसा २ दुःख तुम हमको दे रहे हो हम उसपर संतोष करेंगे और भरोसा करने वालों को चाहिये कि खुदा ही पर भरोसा करें। (१५) [रुकू २] और काफ़िरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे वर्ना तुम फेर हमारे मज़हब में आजाओ इसपर पैग़म्बरों के पालनकर्त्ता ने उनकी तरफ़ वही (ईश्वरीय संदेशा) भेजा कि हम (इन सर्कश लोगों को ज़रूर नष्ट करेंगे। (१६) और इनके पीछे ज़रूर तुमको इसी ज़मीन पर बसायेंगे यह बदला उस शख़्स का है जो हमारे सामने खड़े होने से डरे और हमारी सज़ा से डरे। (१७) और पैग़म्बरों ने चाहा कि (उनका और काफ़िरों का झगड़ा) फ़ैसल होजावे और हर एक हेकड़ ज़िद्दी बे मुराद रहगया। (१८) इसके बाद उसको नरक है और उसको पीप का पानी पिलाया जावेगा। (१९) उसको घूंट २ पीवेगा और उसको लीलना कठिन होगा और मौत उसको हर तरफ़ से आती (हुई दिखाई देती) है और वह नहीं मरता है और उसके पीछे दुखदाई सज़ा है। (२०) जो लोग अपने पालनकर्त्ता को नहीं मानते उनकी मिसाल ऐसी है कि उनके काम गोया राख (का ढेर) है कि आंधी के दिन उसको हवा ले उड़े जो यह लोग कर गये हैं उनमें से कुछ भी इनके हाथ नहीं आवेगा यही आख़िरी दर्जे की नाकामयाबी है। (२१) क्या तूने इसबात पर नज़र नहीं की कि खुदाने आसमान और ज़मीन को जैसे चाहिये बनाया। अगर चाहे तो तुमको मिटादे और नई सृष्टि को लाकर बसादे। (२२) और यह खुदा पर कुछ कठिन नहीं। (२३)

और सब लोग खुदा के आगे निकल खड़े होंगे तो कमज़ोर सर्कशों से कहेंगे कि हमतो तुम्हारे पीछे थे सो क्या तुम खुदा की सजा मे से कुछ हम पर से हटा सक्ते हो। (२४) वह बोले अगर खुदा हमको राह पर लाता तो हम भी तुमको राहपर लाते (अब तो) असंतोष करें तो और संतोष करें तो हमारे लिये बराबर है हमको किसी तरह छुटकारा नहीं। (२५) [रुकू ४] और जब फैसला होचुकेगा तो शैतान कहेगा कि खुदा ने तुमसे सच्चा वादा किया था और जो वादा मैंने तुमसे किया था झूंठ था और तुमपर मेरी कुछ ज़बरदस्ती न थी। (२६) बात तो इतनीही थी कि मैंने तुमको (अपनी तरफ़) बुलाया और तुमने मेरा कहा मानलिया तो अब मुझे दोष न दो बल्कि अपने को दोष दो। नतो मैं तुम्हारी विनती को पहुंच सक्ता हूं और न तुम मेरी विनती को पहुँच सक्ते हो। मैं तो मानताही नहीं कि तुम मुझको पहिले शरीक (खुदा) बनाते थे। इसमें सन्देह नहीं कि जो लोग ज़ालिम हैं उनको दुखदाई सज़ा है। (२७) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये (बैकुण्ठ के) बागों मे दाखिल किये जावेंगे जिनके नीचे नहरें बहरहीं होंगी अपने पालनकर्त्ता के हुक्म से उनमें हमेशा रहेंगे वहां उनको दुआ सलाम होगी। (२८) क्या तुमने नहीं देखा कि खुदा ने अच्छी बात की कैसी मिसाल दी है कि गोया एक पाक पेड़ है उसकी जड़ मजबूत है और उसकी शाखायें आस्मान में हैं। (२९) अपने पालनकर्त्ता के हुक्म से हरवक्त अपने फल देता है और अल्लाह लोगों के लिये उदाहरण बतलाता है ताकि वह सोचें। (३०) और गन्दी बातकी मिसाल गन्दे वृक्ष कैसी है जो ज़मीन के ऊपर से उखड़गया उसको कुछ ठहराव नहीं। (३१) जो लोग ईमान लाये हैं उनको मज़बूत बात से अल्लाह दुनिया में मज़बूत और क़यामत मे मज़बूत करता है और अल्लाह अन्यायियों को

विचला देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है । (३२) [रुकू ५] (हे पैग़म्बर) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अच्छे पदार्थों के बदले मे कृतघ्नता (नाशुक्री) की और अपनी जातिको मौत के घरमे ले जा उतारा । (३३) कि उसमें दाखिल होंगे और वह बुरा ठिकाना है । (३४) और इन लोगो ने अल्लाह के सामने (दूसरे पूजित) खड़े किये हैं ताकि उसकी राह स विचलाये । (हे पैग़म्बर लोगो से) कहो कि (खैर चन्दरोज़ दुनिया में) रह बसलो फिर तो तुमको नरक की तरफ़ जाना ही है (हे पैग़म्बर) हमारे सेवक जो ईमान लाये हैं उनसे कहो निमाज़ पढ़ाकरें और हमारी दी हुई रोज़ी मे से (खुदा की राह मे) चुपके और जाहिरा खर्च करते रहें । (३५) और इससे पहिले (क़यामत का) दिन आवे जबकि न सौदा है न दोस्ती । (३६) अल्लाह वही है जिसने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया और आस्मान से पानी वरसाया फिर पानी के जरिये से फल निकाले कि वह तुम लोगो की रोज़ी है और किश्तियो को तुम्हारे अधिकार में किया । ताकि उसके हुक्म से नदी मे चले और नदियो को भी और सूरज और चन्द्रमा को जो चक्कर खाते हैं एक दस्तूर पर तुम्हारे काम मे लगाया और रात दिन को तुम्हारे अधिकार मे कर दिया और तुमको हर चीज़ मे से जो कुछ मांगी दिया और अगर खुदा के अहसान को गिनना चाहो तो पूरा २ गिन न सकोगे । मनुष्य बड़ा अन्यायी और बडा कृतघ्न (नाशुक्र) है । (३७) [रुकू ६] और जब इब्राहीम ने दुआ की कि हे मेरे पालनकर्त्ता इस शहर (मक्का) को शांति की जगह बना और मुझको और मेरी संतान को मूर्ति पूजा से बचा । (३८) हे पालनकर्त्ता इन मूर्तियों ने बहुतेरे लोगो को भटकाया है सो जिसने मेरी राह गही वह मेरा है और जिसने मेरा कहना न माना सो तू क्षमा करने वाला दयालु है । (३९) हे हमारे पाल-

नकर्त्ता मैंने तेरे प्रतिष्ठित घर के पास (इस) उजाड़ भूमि में जहां खेती नहीं अपनी कुछ संतान बसाई है ताकि यह लोग नमाज़ें पढ़ें तो ऐसा कर कि लोगों के दिल इनकी तरफ़ को लगें और फलों से इनको रोज़ी दे ताकि यह शुक्र (कृतज्ञता) करें। (४०) हे हमारे पालनकर्त्ता जो हम छिपाते और जो ज़ाहिर करते हैं तुझको मालूम है और ज़मीन और आस्मान में अल्लाह से कोई चीज़ छिपी नहीं। खुदा का शुक्र है जिसने मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ (दो बेटे) दिये मेरा पालनकर्त्ता पुकार को सुनता है। (४१) हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको और मेरी संतानको सामर्थ्य दे कि मैं नमाज़ पढ़ता रहूं और हे हमारे पालनकर्त्ता जिसदिन (कर्म का) हिसाब होने लगे मुझको और मेरे माता पिता को और ईमानवालों को क्षमा करना। (४२) [रुकू ७] और (हे पैग़म्बर) ऐसा न समझना कि खुदा (इन) ज़ालिमों के कर्म से बेखबर है और खुदा इनको उसदिन तकका अवकाश (फुर्सत) देताहै जबकि आंखें फटीकी फटी रहजावेंगी। (४३) अपने सिर को उठाये दौड़ते फिरेंगे निगाह उनकी तरफ़ न करेंगे और उनके दिल उड़ जायंगे और (हे पैग़म्बर) लोगोंको उसदिन से डरा जबकि उनपर सज़ा उतरेगी। (४४) तो अन्यायी कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता हमको थोड़ी सी मुद्दत की मुहलत और दे। (४५) तो हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े होंगे और पैग़म्बरों के पीछे होजावेंगे-क्या तुम पहिले सौगंधे नहीं खाया करते थे कि तुमको किसी तरह की घटती न होगी। (४६) और जिन लोगों ने आप अपने ऊपर ज़ुल्म किये थे। उन्हीं के घरों में तुमभी रहे और तुम जान चुके थे कि हमने उनके साथ कैसा बर्ताव किया और हमने तुम्हारे लिये उदाहरण भी बतला दिये थे और यह अपना मकर कर चुके और उनकी चालें खुदा की नज़र में थीं और उनकी चालें ऐसी न थीं कि पहाड़ों को जगह से टालदें। (४७) सो ऐसा

ख़याल न करना कि ख़ुदा जो अपने पैग़म्बरों से प्रतिज्ञा कर चुका है उसके विरुद्ध करैगा अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। (४८) जबकि ज़मीन बदलकर दूसरी तरह की ज़मीन करदी जावेगी और आस्मान और (सब) लोग एक ख़ुदा ज़बरदस्त के सामने निकल खड़े होंगे। (४९) और हे पैग़म्बर तुम उसीदिन अपराधियों को जन्जीरों मे जकड़े हुए देखोगे। (५०) गन्धक के उनके कुर्त होंगे और उनके मुंहो का आग ढांके लेती होगी इस ग़रज़ से कि ख़ुदा हर शख्स को उसके किये का बदला दे अल्लह जल्द हिसाब लेनेवाला है। (५१) यह (कुरान) लोगों के लिये एक संदेशा है और ग़रज़ यहहै कि इसके ज़रिये से लोगोंको डराया जाय और मालूम होजावे कि ख़ुदा एक है और जो लोग बुद्धि रखतेहैं शिक्षा पकड़ें। (५२)

—— :*: ——

चौदहवां पारा ॥

—— :*: ——

सूरे हजर।

मक्के में उतरी इसमें ९९ आयतें और ६ रुकू हैं।

(शुरूअ) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। [रुकू १] अलिफ-लाम-रे-यह किताब और खुले कुरान की आयते हैं। (१) काफ़िर बहुतेरी इच्छायें करेंगे कि ईमानदार होते। (२) तो (हे पैग़म्बर) इनको रहने दो कि खावें और फ़ायदे उठावें और आशाओं पर भूलेरहें फिर पीछे मालूम होजायगा। (३) और हमने कोई बस्ती नहीं उजाड़ी मगर उसके लिये एक ठहराहुआ काल लिखा था। (४) कोई जमात (गिरोह) न अपने काल से आगे बढ़सकी है और न पीछे रहसकी है। (५) और (मक्का के

काफ़िर कहते हैं) कि हे शख्स तुझ पर कुरान उतारा है तू पागल है। (६) अगर तू सच्चा है तो फिरिश्तो का हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता। (७) सो हम फिरिश्तों को नही उतारा करे मगर फैसलेके लिये और फिर उनको अवकाश भी न मिलैगा। (८) हमीं ने यह शिक्षा (कुरान) उतारी है और हमी उसके निगहवान भी हैं। (९) और हे पैग़म्बर हमने तुमसे पहिले भी अगले लोगो के गिरोहों में (पैग़म्बर) भेजे थे। (१०) और जब २ उनके पास पैग़म्बर आये उनकी हँसी उड़ाई। (११) इसी तरह हमने अपराधियो के दिलों में ठट्ठेबाज़ी डाली है। (१२) यह कुरान पर ईमान नही लावेंगे और यह रस्म अगलों से चली आई है। (१३) और अगर हम इन लोगों के लिये आस्मान का एक दरवाज़ा खोलदे और यह लाग सब दिन चढ़ते रहें। (१४) तौभी यही कहेंगे कि कि हो नहो हमारी दृष्टि (निगाह) बांध दीगई है और हम पर किसी ने जादू करदिया है। (१५) [रुकू २] और हमने आस्मान में बुर्ज़ (गुर्ज) बनाये और देखनेवालो के लिये उसका (तारो से) सजाया। (१६) और हर शैतान फटकारे हुये से हमने उसकी रक्षा की। (१७) *मगर चोरी छिपा कोई बात सुनभागे तो दहकता* हुआ अंगारा (उसके खदेरने को) उसके पीछे होता है। (१८) और हमने ज़मीन को फैलाया और हमने उसमें पहाड़ गाढ़ दिये और हमने उसमें हरेक चीज़ मुनासिब पैदा की। (१९) और हमने ज़मीन में तुम लोगों के खाने के सामान इकट्ठा किये और इनको जिनको तुम रोज़ी नही देते। (२०) और जितनी चीज़ें है। हमारे यहां सबके खज़ाने हैं मगर हम एक अटकल मालूम करके उनको (सृष्टि के लिये) भेजते रहते हैं। (२१) हमने हवाओं को जो बादलो का पानी से बोझदार करती है चलाया फिर हमने आस्मान से पानी वर्षाया फिर हमने वह तुम लोगों को पिलाया

और तुमलोगों ने उसको जमा करके नहीं रक्खा। (२२) और हमही जिलाते और हमही मारते हैं और हमही (उनके धन दौलत के) वारिस होंगे। (२३) और हम तुम्हारे अगलों और पिछलों को जानते हैं। (२४) और (हे पैगम्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ताही इनको जमा करेगा। वह हिकमत वाला जानकार है। (२५) [रुकू ३] और हमने सड़े हुए गारे से जो सूखकर खनखनाने लगता है आदमी को पैदा किया। (२६) और हम जिन्नों को (आदम से भी) पहिले लू की गर्मी से पैदा कर चुके थे। (२७) और (हे पैगम्बर उस वक्त को याद करो) जब कि तुम्हारे पालनकर्त्ता ने फिरिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे से जो खनखनाने लगता है एक आदमी को पैदा करने वाला हूं। (२८) तो जब मैं उनको पूरा बना-चुकूं और उस में रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सिजदा (दण्डवत) करना। (२९) चुनांचि तमाम फिरिश्ते सबके सब सिजदा करने लगे। (३०) मगर इबलीस जिसने सिजदा करने वालों में शामिल होनेसे इन्कार किया। (३१) (इस पर खुदाने) कहा हे इबलीस ! तुझ को क्या हुआ कि तू सिजदा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। (३२) वह बोला कि मैं ऐसे शख्स का सिजदा न करूंगा जिसको तू ने सड़े हुए गारे से पैदा किया जो खनखनाने लगता है। (३३) (खुदा ने) कहा तो बैकुण्ठ से निकल तू फटकारा हुआ है। (३४) और क़यामत के दिन तक तुझ पर फटकार होगी। (३५) कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता तू मुझ को उस दिन तक का अवकाश दे जबकि मुर्दे उठा खड़े किये जावेंगे। (३६) (खुदा ने) कहा कि तुझको अवकाश (मुहलत) दिया गया। (३७) ठहराये (क़यामत के) वक्त के दिन तक। (३८) (शैतान ने) कहा.—हे मेरे पालनकर्त्ता जैसी तूने मेरा राह मारी मैं भी दुनिया में इन सब को बहार दिखाऊंगा

और इन सब को राह से बहकाऊंगा। (३६) सिवाय उनके जो तेरे चुने बन्दे हैं। (४०) (खुदा ने) कहा कि यही हम तक एक सीधी राह है। (४१) हमारे सेवक हैं उनपर तेरा किसी तरह का ज़ोर न होगा मगर उनपर जो गुमराहों में से तेरे पीछे होजावे। (४२) और ऐसे तमाम लोगों के लिये नरक का वादा है। (४३) उसके सात दरवाज़े हैं हर दरवाज़े के लिये नरक वासियों की टोलियां अलग २ होंगी। (४४) [रुकू ४] परहेज़गार (वैकुण्ठ के) बागों और चश्मों में होंगे। (४५) कुशलता के साथ इतमीनान से इन (बागों) में पधारो। (४६) और इनके दिलों में जो रन्जिस है उसको निकाल देवेंगे एक दूसरे के आमने सामने तख्तों पर भाई होकर बैठो। (४७) इनको वहां (वैकुण्ठ में) किसी तरह का दुःख न होगा और न यह वहां से निकाले जावेंगे। (४८) हमारे सेवकों को चेता दो कि मैं क्षमा करनेवाला दयालु हूं। (४६) और हमारी मार दुःख की मार है। (५०) और इनको इब्राहीम के महिमान का हाल सुनाओ। (५१) जब इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। इब्राहीम ने कहा हम तुम से डरते हैं। (५२) वह बोले आप डर न कीजिये हम आप को एक योग्य पुत्र का मंगल समाचार सुनाते हैं। इब्राहीम ने कहा क्या तुम मुझे मंगल समाचार देते हो जब कि मुझे बुढ़ापा आचुका है तो अब काहे की खुशखबरी सुनाते हो। (५४) वह कहने लगे हम आपको सच्चा मंगल समाचार सुनाते है सो आप निराश न हो। (५५) (इब्राहीम ने) कहा कि राह भूलों के सिवाय ऐसा कौन है जो अपने पालनकर्त्ता की कृपा से निराश हो। (५६) इब्राहीम ने) कहा कि खुदा के भेजे हुये फ़िरिश्तो! फिर अब तुम को क्या कठिन काम है। (५७) उन्हों ने जवाब दिया कि हम एक अपराधी जाति की तरफ़ भेजे गये हैं। (५८) मगर लूत का कुटुम्ब हम

बचा लेवेंगे। (५९) मगर उनकी स्त्री हमने ताक रक्खी है वह रहजावेगी। (६०) [रुकू ५] फिर जब (ख़ुदा के) भेजे (फ़िरिश्ते) लूत की जाति के पास आये। (६१) (तो लूत ने) कहा तुम लोग ऊपरी हो। (६२) वह कहने लगे नहीं बल्कि जिस में सन्देह करते थे उसी को लेकर आये हैं। (६३) और हम सच आज्ञा लेकर तुम्हारे पास आये हैं और हम सच कहते हैं। (६४) तो कुछ रात रहे तुम अपने लोगों को लेकर निकल जाओ और तुम इनके पीछे रहना और तुम में से कोई मुड़कर न देखे और जहां को हुक्म दिया गया है उसी तरफ़ को चले जाना। (६५) और हमने लूत के दिल में यह बात जमा दी थी—सुबह होते २ इनकी जड़ काट दी जावेगी। (६६) और शहर के लोग खुशियां मनाते हुए आये। (६७) (लूत ने उनसे) कहा कि यह मेरे महिमान हैं सो मुझको बदनाम मत करो। (६८) और ख़ुदा से डरो और मेरा अपमान मत करो। (६९) वह बोले क्या हमने तुमको दुनिया जहान के लोगों की हिमायत से नहीं रोका था। (७०) लूत ने कहा अगर तुमको करना है तो यह मेरी बेटियां हैं इनसे निकाह करलो। (७१) हे पैग़म्बर तुम्हारी जानकी क़सम वह अपनी मस्ती में बेहोश हैं। (७२) गरज़ सूरज के निकलते २ उनको एक बड़े जोर की आवाज ने घेर लिया। (७३) और हमने उस बस्ती को उलट पलट दिया और उनपर कंकड़ के पत्थर बर्षाये। (७४) इसमें उन लोगों के लिये जो ताड़ जाते हैं निशानियां हैं। (७५) और वह बस्ती सीधी राह पर है। (७६) कुछ सन्देह नहीं कि इसमें ईमान लाने वालों के लिये निशानी है। (७७) और बनके रहनेवाले निश्चै सरकश थे। (७८) तो उनसे हमने बदला लिया और दोनों शहर रास्ते पर हैं। (७९) [रुकू ६] और हिजर के रहनेवालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया। (८०) और

हमने उनको निशानियां दी फिर भी वह उनसे मुख मोड़े रहे। (८१) और शान्ति से पहाड़ों को काट २ कर घर बनातेथे। (८२) तो उनको सुबह होते २ बड़े ज़ोर की आवाज़ ने घेर लिया। (८३) और जो उपाय करते थे-उनके कुछ भी काम न आये। (८४) और हमने आस्मान और ज़मीन को और जो कुछ आस्मान व ज़मीन में है विचार ही से बनाया है और क़यामत ज़रूर २ आने-वाली है सो अच्छीतरह किनारा पकड़। (८५) तुम्हारा पालन-कर्त्ता पैदा करने वाला जानकार है। (८६) और हमने तुझको सात आयतें वज़ीफ़ा (जो नमाज़ में बार २ पढ़ी जाती है) और बड़े दर्जे का क़ुरान दिया। (८७) लोगों को चीज़ें बर्तने को दी हैं तुम इनपर अपनी नज़र न दौड़ाओ। और इनपर अफ़सोस न करना और अपनी भुजाओं को ईमान वालों के वास्ते झुका। (८८) और कहदो कि मैं तो खुले तौर पर डरानेवाला हूं। (८९) जैसे हमने इनपर पहुँचाया है। (९०) जिन्होने बांटकर क़ुरान के टुकड़े २ कर डाले। (९१) तेरे पालनकर्त्ता की क़सम है कि हम इन सबसे पूछेंगे। (९२) जो काम करते थे। (९३) पस तुमको जो आज्ञा हुई है उसे खोलकर सुनादो और मुशरकीन की बिल्कुल परवाह न करो। (९४) हम तेरी तरफ़ से ठट्ठा करने वालों को काफ़ी हैं। (९५) जो खुदा के साथ दूसरे पूजित ठहराते हैं। इनको आगे चलकर मालूम हो जायगा। (९६) और हम जानते हैं कि तेरा जी उनकी बातो से रुकता है। (९७) सो तू अपने पालनकर्त्ता के गुणो का यादकर और सिजदा करने वालों में से हो। (९८) और जब तक तुझको विश्वास पहुँचे तब तक तू अपने पालनकर्त्ता की पूजाकर। (९९)

——:*:——

सूरे नहल ।

मक्के में उतरी इसमें १२८ आयतें १६ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है । [रुकू १] खुदा की आज्ञा आई तो उसके लिये जल्दी मत मचाओ इनकी शिर्क से खुदा की जात पाक और ऊंची है । (१) वही अपने हुक्म से फिरिश्तों को वही (ईश्वरी संदेशा) देकर अपने सेवको मे से जिसकी तरफ चाहता है भेजता है कि इस बात से चेता दो कि हमारे सिवाय काई और पूजित नही सो हमसे डरते रहो । (२) उसी ने विचार से आस्मान और ज़मीन को बनाया । तो यह लोग जो शरीक बनाते हैं वह उससे ऊंचा है । (३) उसीने मनुष्यको एक बूंद (वीर्य) से पैदा किया । इस पर वह एक दम से खुल्लमखुल्ला झगड़ने लगा । (४) और उसीने चारपाओ को पैदा किया जिनमें तुम लोगो के जाड़ो के कपड़े (शीतकालके वस्त्र) और कई फ़ायदे हैं और उनमे से तुम किसी २ को खालेतेहो । (५) और जब शाम के वक्त घर वापिस लाते हो और जब सुबह को चराने लेजाते हो तो इस कारण से तुम्हारी शोभा भी है । (६) और जिन शहरो तक तुम जान तोड़कर भी नही पहुॅच सक्ते चारपाये वहां तक तुम्हारे बोझ उठा लेजाते हैं तुम्हारा पालनकर्त्ता बड़ा दयावान मिहर्बान है । (७) और उसने घोड़ों खच्चर और गधो को तुम्हारी शोभा और सवारी के लिये बनाया और वही पैदा करता है जिसको तुम नही जानते । (८) और (दीन के रास्ते दो प्रकार के हैं एक) सीधा रास्ता खुदा तक है और कोई टेढ़ा और खुदा चाहता तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता । (९) [रुकू २] वही है जिसने आस्मान से पानी वर्षाया जिसमे से कुछ तुम्हारे पीने का है और उससे पेड़ परवरिश पाते है जिन्हे तुम अपने मवेशियो को

चराते हो। (१०) उसी पानी से खुदा तुम्हारे लिये खेती और ज़ैतून-खजूर और अंगूर और हर तरह के फल पैदा करता है। जो लोग ध्यान करते हैं उनके लिये इसमें निशानी है। (११) और उसीने रात और दिन और सूरज और चांद को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है और सितारे और तारागण उसीकी आज्ञा से आज्ञाकारी हैं। जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके लिये इन चीजों में निशानियां हैं। (१२) और जो चीजें तुम्हारे लिये ज़मीन पर जुदे २ रंग की पैदा कर रक्खी हैं इनमें उन लोगों को जो सोच विचार को काम में लाते हैं निशानियां हैं। (१३) और वही जिसने नदी को आधीन करदिया ताकि तुम उसमें से (मछलियां निकालकर उनका) ताज़ा मांस खाओ और उसमेंसे जब २ (मोती वग़ैरह) निकालो जिनको तुम लोग पहनते हो और तू किश्तियों को देखता है कि फाड़ती हुई नदी में चलती हैं ताकि तुम लोग खुदा की दया ढूंढ़ो और कृतज्ञता (शुक्र) करो। (१४) और पहाड़ ज़मीन पर गाड़े ताकि ज़मीन तुम्हें लेकर किसी और तरफ़ न झुकने पावे और नदियां और रास्ते बनाये शायद तुम राह पाओ। (१५) और पते बनाये और लोग तारों से राह मालूम करते हैं। (१६) तो क्या जो पैदा करे उसके बराबर होगया (जो कुछ भी) पैदा नही करसक्के फिर क्या तुम लोग नहीं समझते। (१७) और अगर खुदा के पदार्थों को गिनना चाहो तो उनकी पूरी तादाद न गिन सकोगे खुदा बड़ा क्षमावान दयालु है। (१८) और जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो अल्लाह जानता है। (१९) और खुदा के सिवाय जिनको पुकारते हैं वह कोई चीज़ पैदा नहीं करसक्के बल्कि वह खुद बनाये जाते हैं। (२०) मुर्दे हैं जिन में जान नहीं और खबर नहीं रखते। (२१) (क़यामत में) कब उठाये जावेंगे। (२२) [रुकू ३] (लोगों) तुम्हारा

पूजित एक खुदा है सो जो लोग पिछली ज़िन्दगी का विश्वास नहीं करते उनके दिल इन्कारी हैं और वह घमण्डी हैं। (२३) यह लोग जो कुछ छिपाकर करते और जो ज़ाहिर करते हैं अल्लाह जानता है। (२४) वह घमण्डियों को पसन्द नहीं करता। (२५) और जब इन से पूछा जाता है कि तुम्हारे पालनकर्त्ता ने क्या उतारा है तो यह उत्तर देते हैं कि अगलों की कहानियां। (२६) फल यह कि क़यामत के दिन अपने पूरे बोझ और जिन लोगों को बिना समझे बूझे भटकाते हैं उनके भी बोझ (उन्हीं को) उठाने पड़ेंगे देखो तो बुरा बोझ यह लोग अपने ऊपर लादे चले जाते हैं। (२७) [रुकू ४] इन से पहले लोग धोखा देचुके हैं तो खुदा ने उनकी इमारत की जड़ बुनियाद से खबर ली तो उसकी छत उन्हीं पर उनके ऊपर से गिरपड़ी और जिधर से उनको खबर भी न थी सज़ा ने उन को आघेरा। (२८) फिर क़यामत के दिन खुदा उनको बदनाम करेगा और पूछेगा कि हमारे शरीक जिनके बारे में तुम लड़ा करते थे कहां हैं जिन लोगों को समझ दी गई थी वह बोल उठेंगे कि आज के दिन बदनामी और खराबी काफ़िरों पर है। (२९) जिस वक्त फ़िरिश्तों ने इनकी रूहें निकाली थीं यह लोग अपने अपने ऊपर ज़ुल्म कररहे थे। तब विनती करते हुए आगिरेंगे और कहेंगे कि हम तो किसी किस्म की बुराई नहीं किया करते थे—जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उस से खूब जानकार है। (३०) नर्क के दर्वाजों से (नरक में) जादाखिल हो उसी में सदा रहो घमण्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है। (३१) और जो लोग परहेज़गार हैं इन से पूछा जाता है कि तुम्हारे पालनकर्त्ता ने क्या उतारा ? तो जवाब देते हैं कि जिन लोगों ने भलाई की उन के लिये इस दुनियां में भी भलाई है और आखिरी ठिकाना कहीं अच्छा है और परहेज़गारों का घर अच्छा है। (३२) यानें (इन को) हमेशा रहने के

बाग़ है जिनमें जा दाखिल होंगे उनके नीचे नहरें बहरही होंगी और जिस चीज़ का उनका जी चाहेगा वहां उनके लिये मौजूद होगी परहेज़गारों को अल्लाह ऐसाही बदला देता है। (३३) जिनकी जानें फ़रिश्ते पाक होने की हालत में निकालते है। फिरिश्ते सलामलेके करते हैं और कहते हैं कि जैसे कर्म तुम करते रहे हो उनके बदले बैकुण्ठ में जा दाखिल हो। (३४) काफ़िर क्या इसीबात की राह देखते हैं कि फ़िरिश्ते उनके पास आवेंगे या अल्लाह उनके पास हुक्म भेजेगा ऐसाही उनके अगलों ने किया और खुदा ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने ऊपर आप ज़ुल्म करते हैं। (३५) फिर उनके कर्मों के बुरे फल उनको मिले और उनकी ठट्ठे बाज़ी ने उन्हें घेर लिया। (३६) [रुकू ५] और मुशरकीन कहते हैं कि अगर खुदा चाहता तो हम और हमारे बड़े उसके सिवाय किसी और चीज़ की पूजा न करते और न हम उसके बिना किसी चीज़ को हराम ठहराते और ऐसा ही इनके अगलों ने कहा था। पैग़म्बरों पर सिर्फ़ खुला संदेशा पहुँचा देना है। (३७) और हमने हरएक गिरोह में एक पैग़म्बर भेजा है कि खुदा की पूजा करो और शैतान से बचते रहो सो उनमें से बाज़ को तो खुदा ने राह दी और उनमें से बाज़पर गुमराही साबित हुई। ज़मीन पर चलो फिरो और देखो कि झुठलाने वालों को कैसा फल मिला। (३८) अगर तू इन लोगों का सीधे रास्ते पर लाने को ललचावे (सो खुदा जिसको बिचलाना चाहता है) उसको राह नहीं दिया करता और कोई ऐसे लोगों का मददगार नहीं होता। (३६) और वह खुदा की बड़ी सख्त क़समें खाते हैं कि जो मरजाता है उसको खुदा (दुबारा) नहीं उठाता। (हे पैग़म्बर इनसे कहो कि) ज़रूर (उठा खड़ा करेगा) वादा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (४०) वह इसलिये उठायगा कि जिन चीज़ों में यह झगड़ते थे खुदा उनपर ज़ाहिर करदे

और काफ़िर जानलें कि वह झूठे थे। (४१) [रुकू ६] जब हम किसी चीज़ को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होताहै कि हम उसको फ़र्मा देतेहै कि हो और वह हो जाताहै। (४२) और जिनपर अन्याय हुए और अन्याय हुए पीछे उन्होंने खुदा के लिये देश छोड़ा। हम उनको ज़रूर संसार में ठिकाना देंगे और क़यामत का फल कहीं बढ़कर है अगर उनको मालूम होता। (४३) यह लोग जिन्हों ने संतोष किया और अपने पालनकर्त्ता पर भरोसा किया। (४४) और हमने तुमसे पहिले आदमी पैग़म्बर बनाकर भेजे थे और उनकी तरफ़ वही (ईश्वरीय संदेशा) भेजदिया करते थे सो अगर तुमको खुद मालूम नहीं तो याद रखने वालों से पूछ देखो। (४५) और हमने तुम पर यह क़ुरान उतारा है ताकि जो आज्ञायें लोगों के लिये उनकी तरफ़ भेजी गई हैं तुम उनको अच्छीतरह समझा दो और शायद वह सोचें। (४६) तो जो लोग बुराई की तदबीरें करते हैं क्या उनको इस बात का बिलकुल डर नहीं कि खुदा उनको ज़मीन में धसादे या जिधर से उनको खबर भी न हो सज़ा उनपर आ गिरे। (४७) या उनके चलते फिरते खुदा उन को पकड ले वह हरा नहीं सक्ते। (४८) या उनको खटका हुए पीछे धर पकड़े सो इसमें शक नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता बड़ा दयालु है। (४९) क्या उन लोगों ने खुदा की सृष्टि (मखलूक़ात) में से किसी चीज़ की तरफ़ नहीं देखा कि उसके साये दाहिनी तरफ़ और बाईं तरफ़को अल्लाह के आगे सिर झुकाये हुए हैं और वह विनती को जाहिर कर रहे हैं। (५०) और जितनी चीज़ें आस्मानों में और जितने जानदार ज़मीन में हैं (सब) अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हैं और फ़िरिश्ते (खुदाकी आज्ञा से) सिजदा किये हुए हैं और घमण्ड नहीं करते। (५१) अपने पालनकर्त्ता से जो उनके ऊपर है डरते रहते हैं और जो हुक्म उनको दिया जाता है

उसकी तामील करते हैं। (५२) [रुकू ७] और खुदाने आज्ञा दी है कि दो पूजित न ठहराओ बश वही (खुदा) एक पूजित है है उस से डरो। (५३) और उसी का है जो कुछ आस्मान ज़मीन में है और उसी का हमेशा न्याय है सो क्या तुम खुदा के सिवाय (दूसरी) चीज़ों से डरते हो। (५४) और जितने पदार्थ तुमको मिले हैं खुदा ही की तरफ़ से हैं। फिर जब तुमको कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो उसी के आगे बिलबिलाते हो। (५५) फिर जब वह कष्ट को तुमपर से दूर कर देता है तो तुममें से एक फ़िर्क़ा अपने पालनकर्त्ता का शरीक ठहराता है। (५६) ताकि जो (नियामतें) हमने उनको दीथी उनकी कृतघ्नता (नाशुक्री) करें सो फ़ायदा उठालो फिर आखिरकार (क़यामत में) तो तुमको मालूम होजायगा। (५७) और हमने जो इनको रोज़ी दी है उस में यह लोग जिन्हें नहीं जानते हिस्सा ठहराते हैं। सो खुदा की क़स्म तुम जैसे झूठ बान्धते हो तुमसे ज़रूर पूछा जावेगा। (५८) और खुदा के लिये फ़िरिश्तों को बेटियां ठहराते हैं और वह पाक है और अपने लिये जो चाहे सो ठहराते हैं यानी बेटे। (५९) और जब इन में से किसी को (बेटी के पैदा होने) की खुश खबरी दी जाती है तो (मारे रंज के) उसका मुंह काला पड़ जाता है और (विष कैसे घूंट) पीकर रह जाता है (६०) लोगों से बेटी की शर्म के मारे जिसके पैदा होने की उसको खुश खबरी दी गई है इसे सुनकर इस बदनामी को सहकर (जीता) रहने दे या उसको मिट्टी में गाढ़दे। देखो तो इन लोगों की (क्या) बुरी रायहै। (६१) उनकी बुरी बातें हैं जो क़यामत का यक़ीन नहीं करते और अल्लाहकी कहावत तो सबसे ऊपर है और वही ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (६२) [रुकू ८] और अगर खुदा सेवकों को उनके अन्याय की सजा में पकड़े तो ज़मीन की सतह पर किसी

जानदार को बाक़ी न छोड़ेगा मगर एक वक़्त मुक़र्रर (मौत) तक इनको अवकाश (मुहलत) देता है फिर जब इनका काल आवेगा तो न एक घड़ी पीछे रहसके और न एक घड़ी आगे बढ़ सक्ते हैं। (६३) और जिन चीजों को आप नहीं पसंद करते उनको खुदाके लिये (तजवीज) करते हैं और अपनी ज़बान से झूंठ बोलते हैं कि उनके लिये भलाई है उनके लिये नरक (की आग) है बल्कि (नरक वासियों के) अगुआ हैं। (६४) खुदा की क़सम है तुमसे पहिले हमने बहुत उम्मतों (गिरोहों) की तरफ़ पैग़म्बर भेजे तो शैतान ने उनके बुरे कर्म उनको अच्छे कर दिखाये सो वही (शैतान) इस जमाने में इनका मित्र है और इनको दुःखदाई सज़ा है। (६५) और हमने तुम पर किताब इसीलिये उतारी है कि जिन बातों में (यह लोग आपस में) भेद डाल रहेहैं वह इनको अच्छी-तरह समझा दे। इसके सिवाय (यह कुरान) ईमान वालों के लिये शिक्षा और दया है। (६६) अल्लाहही ने आस्मान से पानी वर्षाया फिर उसके जरिये से ज़मीन को उसके मरे पीछे जिलाया। जो लोग सुनते हैं उनके लिये निशानी हैं। (६७) और तुम्हारे लिये चौपायों में भी सोचने की जगह है कि उनके पेट में जो है उससे गोबर और खून में से हम तुमको खालिस दूध पिलाते हैं जो पीने-वालों को भला लगता है। (६८) और खजूर और अंगूर के फलों में से तुम शराब और अच्छी रोजी बनाते हो जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके लिये इन चीजों में निशानी है। (६९) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारे पालनकर्त्ता ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाल दी कि पहाड़ों में और वृक्षों में और लोग जो ऊंची २ टट्टियां बना लेते हैं उनमें छत्ते बना। (७०) फिर हर तरह के फलको चूंस और अपने पालनकर्त्ता के आसान तरीक़ों पर चल। मक्खियों के पेट से पानी की एक चीज (शहद) निकलती है उसकी रंगतें

कई तरह की होती हैं उससे लोगों के रोग जाते रहते हैं विचार करने वालों के लिये इसमें पता है। (७१) और खुदाने ही तुमको पैदा किया फिर वही तुमको मारता है और तुम में से कोई निकम्मी उमूको पहुंचते हैं कि जानने पीछे कुछ न जान सके (बुड्ढा बेअक्ल होजाय) अल्लाह जानने वाला क़ुदरत वाला है। (७२) [रुकू १०] और खुदाही ने तुममें से किसी को किसी पर रोज़ी में बढ़ती दी, तो जिनको जियादा रोज़ी दी गई है (वह) अपनी रोज़ी लौटाकर अपने गुलामों को नही देते कि रोज़ी में इनका हिस्सा बराबर है तो क्या यह लोग खुदा के पदार्थों के इन-कारी हैं। (७३) और तुम्हीं मेंसे खुदा ने तुम्हारे लिये बीवियों को पैदा किया और तुम्हारी स्त्रियों से तुम्हारे लिये बेटों और पोतों को पैदा किया तुमको अच्छी चीज़े खाने को दी तो क्या झूठे (पूजितों के पदार्थ देने का) विश्वास करते हैं और अल्लाह की कृपा को नही मानते। (७४) और खुदा के सिवाय उन (पूजितों) की पूजा करते हैं जो आसमान और ज़मीन से इनको भोजन देने का कुछ भी अधिकार नही रखते और न सामर्थ्य रखते हैं। (७५) तो खुदा के लिये उदाहरण मत बनाओ। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (७६) एक उदाहरण खुदा बयान करता है कि एक गुलाम है दूसरे की जायदाद पर (जो) किसी बात का अधिकार नही रखता और एक शख़्स है जिसको हमने अच्छे भोजन दे रक्खेहैं तो वह उस मेंसे छिपे और खुले खज़ाने खर्च करता है क्या यह (दो मनुष्य) बराबर होसक्ते हैं। सब तारीफ़ अल्लाह को है मगर इनमें बहुतेरे नही समझते। (७७) और खुदा (एक दूसरा) उदाहरण देता है कि दो आदमी हैं उनमें का एक गूँगा (और गुलाम भी है) कि खुद कुछ नही करसक्ता है और वह अपने मालिक को बोझ भी है कि जहां कहीं उसको

भेजे उससे कुछ भी ठीक नहीं बनता क्या ऐसा ग़ुलाम और वह शख़्स बराबर होसक्ते हैं जो (लोगों को) बराबरी की हद पर क़ायम रहने को कहता और ख़ुद भी सीधे रास्ते पर है। (७८) [रुकू ११] और आसमान और ज़मीन की छिपी बातें अल्लाह ही को (मालूम) है और क़यामत का वाक़ा होना तो ऐसा है कि जैसा कि आंख का झपकना बल्कि वह (इससे भी) क़रीब है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (७९) और अल्लाह ही ने तुमको तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला। तुम कुछ भी नहीं जानते थे और तुमको कान और आंख दिलादिये ताकि तुम शुक्र करो। (८०) क्या लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो आसमान की हवा में उड़ते हैं उनको ख़ुदा ही थामे रहता है जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिये इसमें निशानियां हैं। (८१) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये तुम्हारे घरों को ठिकाना बनाया और

गिरोह में से गवाह (बनाकर) उठा खड़ा करेंगे फिर (काफिरों को) बात करने की आज्ञा नही दी जावेगी और न उनसे तौबा के लिये कहा जायगा। (८६) और जिन लोगों ने गुस्ताखियां की हैं जब सज़ा को देख लेंगे तो नतो इनसे सज़ाही हलकी की जायगी और न उनको अवकाश (मुहलत) दिया जावेगा। (८७) और जो लोग खुदा के शरीक बनाते रहे जब वह अपने शरीकों को देखेंगे तब बोल उठेंगे कि हमारे पालनकर्त्ता यही हैं वह हमारे शरीक जिन को हम तेरे सिवाय पुकारा करते थे तो वह शरीक (उनकी) बात (उलटो) उन्हीं की तरफ़ फेंक मारेंगे कि तुम निरे झूठे हो। (८८) और वह लोग उस दिन खुदा के आगे सर झुकादेंगे और जो झूठ बांधते थे वे उनको भूल जावेंगे। (८६) जो लोग इन्कारी हुये और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोकते हैं उनके फ़साद (विद्रोह) के जवाब मे हम उनके हक्क में सज़ा पर सज़ा बढ़ाते जावेंगे। (६०) और जब हम हरएक गिरोह में उन्हीं मे का एक गवाह (पैग़म्बर) उनके सामने खड़ा करेंगे और हे (पैग़म्बर) तुमको इनके सामने मे गवाह बनाकर लावेंगे और हे (पैग़म्बर) हमने तुमपर किताब उतारी है (जिसमें) हर चीज़ का बयान राह की सूझ, हिदायत और दया है और खुशखबरी ईमानवालो के लिये है। (६१) [रुकू १२] अल्लाह न्याय करने, और भलाई करने और सम्बन्धियों को (माली सहारा) देने की आज्ञा देता है और निर्लज्जता के कामों और असभ्य व्योहारों और अत्याचार करने से मना करता है-तुम लोगों को शिक्षा देता है शायद तुम खयाल रक्खो। (६२) और जब तुम लोग आपस मे प्रतिज्ञा करलो तो अल्लाह की कसम का पूरा करो और कसमों को उनके पक्के किये पीछे न तोड़ो हालांकि तुम अल्लाह को अपना ज़ामिन ठहराचुके हो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे जानकार है। (६३) उस

औरत कैसे मत बनो जिसने अपना सूत काते पीछे टुकड़े २ करके तोड़ डाला, आपस के झगड़े के सबब अपनी सौगन्धों का मत तोड़ने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बलशाली है ख़ुदा इस (भेद) से तुम लोगों की जांच करता है और जिन चीज़ों में तुम भेद डालते हो क़यामत के दिन ख़ुदा तुम पर ज़ाहिर करेगा। (९४) और ख़ुदा चाहता तो तुम (सब) को एकही गिरोह बनादेता- मगर वह जिसको चाहता गुमराह करता और जिसको चाहता सुझाता है और जो कुछ तुम करते रहे हो उसकी तुमसे पूंछ होगी। (९५) और अपनी सौगन्धों को अपने आपस के फ़साद का सबब न बनाओ (कि लोगोंके) पैर जमें पीछे उखड़जावें और ख़ुदा के रास्ते से रोकने के बदले में तुम को सज़ा चखनी पड़े और तुम को बड़ी सज़ा हो। (९६) और अल्लाह की क़सम के बदले थोड़े फ़ायदे मत लो-जो ख़ुदा के यहां है वही तुम्हारे हक़ में बहुत अच्छा है बशर्तें कि तुम समझो। (९७) जो तुम्हारे पास है निबट जायगा और जो अल्लाहके पासहै शेष रहेगा और जिन लोगोंने संतोष किया उनके अच्छे काम का बदला भला देंगे। (९८) जो शख़्स अच्छे काम करेगा मर्द हो या औरत और वह ईमान भी रखता हो तो हम उसको अच्छी ज़िन्दगी जिला देंगे और उनके अच्छे कामों का बदला जो करते थे देंगे। (९९) तो (हे पैग़म्बर) जब तुम क़ुरान पढ़ने लगो तो शैतान फटकारे हुये से ख़ुदा की शरण मांग लिया करो। (१००) जो लोग ईमान रखते हैं और अपने पालनकर्त्ता पर भरोसा करते हैं उनपर शैतान का कुछ क़ाबू नहीं चलता। (१०१) उसका बस तो उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसके साथ मेल जोल रखते और जो ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं। (१०२) [रुकू १४] और (हे पैग़म्बर) जब हम एक आयत को बदलकर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं और जो (आयतें) उतारता

है उसको वही खूब जानता है तो (काफ़िर तुमसे) कहने लगते हैं तू तो अपने दिल से बनाया करता है बल्कि इनमें से अक्सर नही समझते। (१०२) (हे पैग़म्बर) कहो कि सच तो यह है कि इस (कुरान को) तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से शुद्धात्मा याना जिब्रील लेकर आये हैं ताकि जो लोग ईमान लाचुके हैं खुदा उनको अचल रक्खे और ईमानवालोंके हकमें राह की सूझ और खुशखबरी है। (१०४) और (हे पैग़म्बर) हम को खूब मालूम है कि काफ़िर (कुरान की बाबत) यह संदेह करते हैं कि हो न हो इस शख़्स को (फ़लाना) आदमी सिखलाया करता है सो जिस शख़्स की तरफ़ निस्बत करते हैं उसकी ऊपरी बोली (अन्य देशीय भाषा) है (कुरान) सब अर्बी भाषा से है। (१०५) और जो लोग खुदा की आयतों पर ईमान नही लाते खुदा उन्हे सच्चा रास्ता नहीं दिख-लाता और उनको दुःखदाई सज़ा है। (१०६) दिल से झूठ बनाना तो उन्ही लोगों का काम है जिनको खुदा की आयतों का विश्वास नही और यही लोग झूठे हैं। (१०७) जो शख़्स ईमान लाये पीछे खुदा की इन्कारी पर मजबूर किया जाय मगर उसका दिल ईमान की तरफ़ से संतोषित हो-लेकिन जो कोई ईमान लाये पीछे खुदा के साथ इन्कार करे और इन्कार भी करे तो जी खोलकर ऐसे लोगों पर खुदा का कोप और उनके लिये बड़ी सजा है। (१०८) यह इस कारण से कि उन्होंने संसार के जीवन को क़यामत पर पसन्द किया और इस वजहसे कि अल्लाह इन्कारियोंको हिदायत नहीं दिया करता। (१०९) यही वह लोग हैं जिनके दिलों पर और जिनके कानों पर और जिनकी आंखों पर अल्लाहने मुहर करदी है और यही ग़ाफ़िल (अचेत) हैं। जरूर क़यामत में यही लोग घाटे में रहेंगे। (११०) फिर जिन लोगोंने आफ़त आये पीछे घरबार छोड़े फिर (खुदा की राह में) जहाद किये और डटेरहे-तुम्हारा पालनकर्त्ता क्षमाकरनेवाला दयालु

है। (१११) [रुकू १५] जब कि वह दिन आवेगा हर आदमी अपनी जाति के लिये झगड़ने के लिये मौजूद होगा। हर शख़्स को उसके काम का पूरा २ बदला दिया जायेगा और लोगों पर ज़ुल्म न होगा। (११२) और ख़ुदाने एक गांव की मिसाल बयान की है कि वहां के लोग अमन व इतमीनान से थे हर तरफ से उनकी रोज़ी उनके पास बे खटके चली आती थी—फिर उन्होंने ख़ुदा के अहसानों की नाशुक्री (कृतघ्नता) की तो उनके कामों के बदलेमें अल्लाहने उनको भूख और डर का उनका ओढ़ना और बिछौना बनादिया। (११३) और उन्हीं में का एक पैग़म्बर उनके पास आया तो उन्होंने उसको झुठलाया उसपर (ईश्वरी) सज़ा ने उनको पकड़ा और वे अप-राधी थे। (११४) तो ख़ुदा ने जो तुमको हलाल और पाक रोज़ी दी है उसको खाओ और अगर अल्लाह ही को पूजते हो ना उसका

अगुआ होगये हैं खुदा के आज्ञाकारी सेवक जो एक खुदा के होकर रहे थे और शिर्कवालो मेंसे न थे। (१२१) खुदा ने उनको चुन-लिया था और उनको सीधा रास्ता दिखलादिया था और हमने उनको दुनिया में भलाई दी। (१२२) और क़यामतमें भी वह भले लोगों में होंगे। (१२३) फिर (हे पैग़म्बर) हमने तुम्हारी तरफ़ हुक्म भेजा कि इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो एक के होकर रहे थे और शरीक वालों में से न थे। (१२४) हफ्ते की ताज़ीम तो बस उन्ही पर लाज़िम कीगई थी जिन्होंने उसमें भेद डाले और जिन२ बातों में यह लोग आपस में भेदडालते रहेह क़यामत के दिन तुम्हारा पालनकर्त्ता उनमें उन बातों का फैसला करदेगा। (१२५) (हे पैग़म्बर) समझ की बातों और नसीहतों से अपने पालनकर्त्ता की राह की तरफ़ बुलाओ और उनकी तरफ़ अच्छीतरह विवाद करके जो कोई खुदा के रास्ते से भटका उसे और जिसने सीधी राह पकड़ी उसे तुम्हारा पालनकर्त्ता खूब जानता है। (१२६) और अगर सख़्ती भी करो तो वैसेही सख़्ती करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो और अगर संतोष करो तो हर हाल में संतोष करने वालो के लिये संतोष अच्छा है। (१२७) और संतोष करो और खुदा की मदद से संतोष कर सकोगे और इन पर पछितावा न कर और उनके फरेब से रंज मत कर। अल्लाह परहेज़गारो और भले काम करनेवालों का साथी है। (१२८)

पन्द्रहवां पारा।

सूरे बनी इसराईल (इसराईल की संतान)

मक्के में उतरी इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] वह पाक है जो अपने सेवक (बन्दे) को रातों रात

मसजिद हराम (यानी काबे के घर) से मसजिद अक्सा (यानी बैतुल मुकद्दस) तक लेगया जिसके आस पास हमने खूबियां दे रक्खी हैं (और इस लेजाने से मतलब यह था) कि हम उनको अपनी कुदरत के नमूने दिखलावें। वह सुनता और देखता है। (१) और हमने मूसा को किताबदी और उसको इसराईल की संतान के लिये शिक्षा ठहराया (और उनसे कह दिया) कि हमारे सिवाय किसी को अपना काम सम्भालने वाला न बना। (२) हे उन लोगों की संतान जिनको हमने नूह के साथ (किश्ती में) सवार कर लिया था, वह हमारे कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार सेवक) थे। (३) और हमने इसराईल के बेटों से किताब में साफ़ कह दिया था कि तुम जरूर देश में दो दफ़े फ़िसाद करोगे और बुरी तरह का चढ़ना चढ़ जाओगे। (४) फिर जब पहिला वादा आया तो हमने तुम्हारे मुक़ाबिले में अपने ऐसे सेवक उठा खड़े किये जो बड़े लड़ने वाले थे और वह शहरों के अन्दर फैलगये और वादा होनाही था। (५) फिर हमने दुश्मनों पर तुम्हारे दिन फेरे और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुम को बड़े जत्थेवाला बना दिया। (६) अगर तुम भलाई करो या बुराई अपनी ही जानों के लिये है फिर जब दूसरे (फ़िसाद) का वक़्त आया तो फिर हमने अपने दूसरे बन्दों को उठाकर खड़ा किया कि तुम्हारे मुंह बिगाड़ दें और जिस तरह पहिली दफ़े मसजिद में घुसे थे उसी तरह उसमें घुसें और जिस चीज पर क़ाबू पावें तोड़ फोड़ उसका सत्यानाश करें। (७) आश्चर्य नहीं तुम्हारा पालनकर्ता तुम पर कृपा करे और अगर तुम फिर पहिली सी शरारतें करोगे तो हम भी सजा में लौटेंगे और हमने काफ़िरों के लिये नरक का बन्दीखाना (जेलखाना) तय्यार कर रक्खा है। (८) यह कुरान वह राह दिखाता है जो बहुत सीधी है। ईमान वालों को और जो नेक काम करते हैं इस बात

को खुशखबरी देता है । (६) और जो भला काम करते हैं उनको बड़ा फल मिलेगा । (१०) जो लोग क़यामत का यक़ीन नहीं रखते उनके लिये हमने सख्त सज़ा तय्यार की है। (११) [रुकू २] और आदमी जिस तरह भलाई मांगता है उसी तरह बुराई मांगने लगता है और मनुष्य बड़ा उतावला है। (१२) और हमने रात और दिनको दो नमूने बनाये फिर रातके नमूने को मिटा दिया। दिनका निशान देखने को बना दिया ताकि तुम अपने पालनकर्त्ता से रोज़ी ढूंढ़ो और वर्षों की गिनती और हिसाब को जानो और हमने सब बातें खूब ब्योरे के साथ बयान करदी हैं। (१३) और हमने हर आदमी का भाग्य उसकी गर्दन से लगादिया है और क़यामत के दिन हम (उसके) कर्मों का लेखा निकालकर उसके सामने पेश करेंगे उसको अपने सामने खुला हुआ देखलेगा। (१४) (और हम उससे कहेंगे कि यह) अपना लेखा पढ़ले आज अपना हिसाब लेने के लिये तू आपही काफ़ीहै। (१५) जो आदमी सीधी राह चला तो वह अपनेही लिये सीधी राह चलता है और जो भटका तो उसके भटकने के अपराध की सज़ा भी उसी को भुगतनी पड़ेगी और कोई दूसरे के बोझको अपने ऊपर न लेगा और जब तक हम पैग़म्बर को भेज न लें (किसी को उसके अपराध की) सजा नहीं दिया करते। (१६) और जब हमको किसी गांव का मार डालना मन्ज़ूर होता है हम उसके बुरा हाल लोगों को आज्ञा देते हैं, फिर वह उसमें बे हुक्मी करते हैं, तब उनपर यह बात (सजा) साबित होजाती है फिर हम उस बस्ती को मारकर तबाह कर देते हैं। (१७) और नूह के बाद हमने कितने गिरोहों को मार डाला और (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ता अपने सेवकों का अपराध जानने और देखने को काफ़ी है। (१८) जो शख्स दुनिया का चाहनेवाला हो तो हम जिसे देना चाहते हैं उसी में उसको उसी

बस, दे देते हैं फिर हमने उसके लिये नरक ठहरा रक्खा है जिसमें वे बुरी तरह से फटकारे हुए दाखिल होंगे। (१९) और जो शख्स क़यामत का चाहनेवाला है और क़यामत के लिये जैसी कोशिश करनी चाहिये वैसी उसके लिये कोशिश करता है और वह ईमान भी रखता है तो यही लोग हैं जिनका परिश्रम सुफल होगा। (२०) (हे पैग़म्बर) यह (दुनिया के चाहने वाले) और यह (क़यामत के चाहने वाले) सबही को हम तुम्हारे पालनकर्त्ता की बख़्शिश से मदद देते हैं और तुम्हारे पालनकर्त्ता की बख़्शिश बन्द नहीं। (२१) देखो हमने एकको एकसे कैसा बढ़ाया और क़यामत में बड़े दर्जे हैं और बड़ी बढ़ती है। (२२) (हे पैग़म्बर) ख़ुदा के साथ किसी दूसरे को पूजित नहीं बनाना नहीं तो तुम मलामती बनकर बैठे रह जाओगे। (२३) [रुकू ३] और तुम्हारे पालन-

की तलाश में उम्मेदवार होकर इनसे मुँह फेरना पड़े तो नर्मी से इनको समझा दो। (३०) और अपना हाथ नतो इतना सकोड़ो कि गर्दन में बन्ध रहे न बिल्कुल उसको फैलाही दो कि तू फटकारा हुआ हारकर बैठ रहे। (३१) (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ता जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है कम कर देता है वह अपने सेवकों को जानता देखता है। (३२) [रुकू ४] ग़रीबी से अपनी संतान को मार मत डालो उनको और तुमको हम रोज़ी देते हैं संतान का जान से मारना बड़ा भारी पाप है। (३३) और ज़िना (व्यभिचार) के पास न फटकना क्योंकि वह निर्लज्जता है और बुरा चलन है। (३४) और (किसी की) जान को जिसका मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है व्यर्थ क़त्ल न करना मगर हक़ पर और जो शख़्स ज़ुल्म से मारा जाय तो हमने उस के वारिस को अधिकार दे दियाहै तो उसको चाहिये कि ख़ून में ज़ियादती न करे क्योंकि उसकी मदद होती है। (३५) और जब तक अनाथ जवानी को न पहुंचे उसके माल के पास मत जाओ मगर जिस तरह बिहतर हो और वादे को पूरा करो क्योंकि वादे की पूंछ होगी। (३६) और जब माप करो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और तौलकर देना हो तो डंडी सीधी रखकर तौलाकरो। यह अच्छा है और इसका अख़ीर भी अच्छा है। (३७) और (हे समबन्धी) जिस बात का तुझको ज्ञान नहीं उसके पीछे न हो क्योंकि कान और आंख और दिल इन सब से पूंछ पांछ होनी है। (३८) और ज़मीन में अकड़ कर न चल क्योंकि न तो तू ज़मीन को फाड़ सक्ता है और न पहाड़ोंकी ऊंचाई को पहुंच सक्ता है। (३९) (हे पैग़म्बर) इन बातों की बुराई ख़ुदा को नापसन्द है। (४०) और (हे पैग़म्बर) यह बातें उन बुद्धि की बातों में से हैं जिनको तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म किया है और ख़ुदा के

साथ और कोई पूजित नही बनाना नहीं तो तू फटकारा हुआ अपराधी होकर नरक मे डाल दिया जावेगा। (४१) (हे शिर्कवालो) क्या तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुमको बेटो के लिये चुनलिया और आप फिरिश्तों से बेटियां ले बैठा है फिरिश्ते तुम बड़ी बात कहते हो। (४२) [रुकू ५) और हमने इस कुरान में तरह २ से समझाया ताकि यह लोग समझे मगर इससे इनकी घृणा ही बढ़ती जाती है। (४३) (हे पैग़म्बर इन लोगो से) कहो कि अगर खुदा के साथ जैसा (यह लोग) कहते है और पूजित होते तो इस सूरत मे वे (दूसरे पूजत) तख़्त के साहिब (खुदा) की तरफ़ राह निकालते। (४४) जैसी बातें यह लोग कहते है इनसे वह पाक और बहुत ऊंचा है। (४५) आस्मान और ज़मीन और जो आस्मान और ज़मीन में है उसका नाम लेता है और जितनी चीज़े है सब उसकी तारीफ़ के साथ उसका नाम लेती हैं मगर तुम लोग इनके पढ़ने को नही समझते। वह बरदाश्त करनेवाला और बड़ा क्षमा करने वाला है। (४६) और (हे पैगम्बर) जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुम में और उन लोगो में जिनको क़यामत का विश्वास नहीं एक गाढ़ा परदा करदेते है। (४७) और उनके दिलों पर आड़ रखते ताकि कुरान को समझ न सकें और उनके कानो मे (एकतरहका) बोझ डालते है ताकि सुन न सके। (४८) और जब कुरान में अकेले खुदा की चर्चा करते है तो काफ़िर नफ़रत (घृणा) करके उल्टे भाग खड़े होते है। (४९) जब यह लोग तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो जिस नियतसे सुनतेहैं हमको खूब मालूमहै और जब यह सलाह करतेहैं तब कहते हैं कि तुमतो एक आदमीके पीछे पड़े हो जिसपर किसीने जादू करदियाहै। (५०) (हे पैगम्बर) देखो तुम्हारी निस्बत कैसी २ बाते बकते हैं तो यह लोग भटक गये और अब राह नहीं पासक्ते। (५१) और कहते हैं जब हम हड्डियां और टुकड़े २ होगये

तो क्या हम को नये सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जायगा। (५२) (हे पैग़म्बर) कहो कि तुम पत्थर या लोहा या और चीज बनजाओ या कोई चीज़ जो तुम्हारी समझ में बड़ी हो। उस पर पूछेंगे कि हम को दोबारा कौन ज़िन्दा कर सकेगा कहो कि वही (ख़ुदा) जिसने तुम को पहिली बार पैदा किया था इस पर यह लोग तुम्हारे आगे सिर मटकाने लगेंगे और पूछेंगे कि भला क़यामत कब आवेगी (तुम इन से) कहो आश्चर्य नही कि क़रीबही आलगी हो। (५२) जब ख़ुदा तुम को बुलायगा तो तुम उस को सराहते फिर चले आओगे और ख्याल करोगे कि बस थोड़े ही दिन तुम रहे। (५४) [रुकू ६] और हमारे सेवकों को समझा दो कि ऐसी कहें जो भली हो क्योंकि शैतान लोगों में झगड़ा डलवाता है और शैतान आदमी का खुला वैरी है। (५५) लोगो तुम्हारा पालनकर्त्ता तुम्हारे हाल से ख़ूब जानकार है चाहे तुम पर दया करे और चाहे तुम को सजा दे और हमने तुम को लोगों का ठेकेदार बना कर तो नही भेजा। (५६) और जो आस्मान और ज़मीन में है तुम्हारा पालनकर्त्ता उससे ख़ूब जानकार है और हमने किन्हीं पैग़म्बरों पर किन्ही को बढ़ती दी और हमी ने दाऊद को ज़बूरदी। (५७) (हे पैग़म्बर लोगोंसे) कहो कि ख़ुदाके सिवाय जिन को तुम ख़ुदा समझते हो पुकारो सो न तो तुम्हारी तकलीफ़ ही दूर करसकेंगे और न बदल सकेंगे। (५८) यह जिनको शिर्क वाले बुलाते हैं वह अपने पालनकर्त्ताकी तरफ़ ज़रिया ढूंढ़ते हैं कि कौन बन्दा ज़ियादा नज़दीक है और उसकी दया की आशा रखते हैं और उसकी मारसे डरते हैं निश्चय तेरे पालनकर्त्ता की मार डर की चीज़ है। (५९) और कोई बस्ती नही जिसे क़यामत से पहले हम नष्ट न करदेंगे या उस को सख्त सजा न देंगे। यह बात किताबमे लिखी जाचुकी है। (६०) और हमने चमत्कारों का भेजना बन्द किया क्योंकि अगले लोगों

ने उन को झुठलाया चुनांचि हमने समूद को ऊटनी (का खुला हुआ) चमत्कार दिया था फिर भी लोगों ने उसे सताया और हम चमत्कार सिर्फ डराने की ग़रज़ से भेजा करते हैं। (६१) और जब हमने तुम से कहा कि तुम्हारे पालनकर्त्ता ने लोगों को हरतरफ़ से रोक रक्खा है और (स्वप्न) जो हमने तुम को दिखावा दिखाया सो लोगों के जांचने को दिखाया और दरख़्त जिस पर क़ुरान में लानत की गई है बावजूदे हम इन लोगों को डराते हैं लेकिन हमारा डराना इनकी सरकशी को बढ़ाता है। (६२) [रुकू ७] और जब हमने फ़िरिश्तोंको आज्ञा दी कि आदमको सिजदाकरो (झुको) तो सभी ने सिजदा किया मगर इबलीस झगड़ने लगा कि क्या मैं ऐसे आदमी को सिजदा करूं (झुकूं) जिसे तूने मिट्टी से बनाया। (६३) कहनेलगा कि भला देख तो यही वह आदमी है जिसको तूने मुझपर बढ़ती दी है अगर तू मुझको क़यामत तक की मुहलत दे तो मैं सिवाय थोड़े लोगों के इसकी सब संतान को जड़ से मिटादूंगा। (६४) ख़ुदा ने कहा चल दूर हो जो आदमी इनमें से तेरा पैरवी करेगा सो तुम सबको नरक की सज़ा पूरा बदला होगी। (६५) और इनमें से जिसे अपनी बातों से बहकासके बहकाले और उनपर अपने सवार और प्यादे चढ़ाला और उनके साथ माल और संतान में साझा करले और इनसे वादे कर और शैतान तो इनलोगों से जितने वादे करता है सब धोखे के होते हैं। (६६) हमारे सेवकों पर तेरा किसी तरह का क़ाबू न होगा और तुम्हारा पालनकर्त्ता काम का सम्भालने वाला है। (६७) तुम्हारा पालनकर्त्ता वह है जो तुम्हारे लिये नदी में नाव (किश्ती) को चलाता है ताकि तुम उसकी कृपा ढूंढो। ख़ुदा तुम पर मिहरबान है। (६८) और जब नदी में तुम पर दुःख पहुंचता है तो जिनको तुम उसके सिवाय पुकारा करतेथे भूल जाते हो। मगर जब वह तुमको ख़ुश्की की तरफ़ निकाल

लाता है तो तुम फिर मुँह मोड़ते हो और आदमी बड़ाही कृतघ्नी (नाशुक्रा) है। (६९) सो क्या तुम इस बात से निडर होगये हो कि वह तुमको जंगल की तरफ़ धसादे या तुम पर पत्थर वर्षावे और उस वक्त तुम अपना मददगार न पाओ। (७०) या तुम इस बात से निडर होगयेहो कि खुदा फिर तुमको लौटाकर दुबारा उसी नदी में लेजावे और तुम पर हवा का झोंका भेजे और तुम्हारी कृतघ्नता (ना शुक्रियों) की सज़ा में तुमको डुबोदे फिर तुम अपने लिये इस पर दावा करनेवाला न पाओ। (७१) और बेशक हमने आदम की संतान को इज़्ज़त दी और खुश्की और दरिया में उनको सवारी दी है और अच्छी चीज़ों में उन्हें रोज़ी दी और जितने आदमी हमने पैदा किये हैं उनमें बहुतेरों पर उनको बढ़ती दी। (७२) [रुकू ८] और बड़ी बढ़ती तो उस दिनकी है जब हम हर एक गिरोह को उनके पेशवाओं समेत बुलायेंगे तो जिन का कर्म लेखा उनके दाहिने हाथ में दिया जायगा वह अपने लेखे को पढ़ने लगेंगे और उनपर एक तिनका बराबर भी अन्याय न होगा। (७३) और जो इसमें अन्धा रहा वह क़यामत में भी अन्धा होगा और राह से बहुत दूर भटका हुआ होगा। (७४) और (हे पैग़म्बर क़ुरान) जो हमने हुक्म तुम्हारी तरफ़ भेजा है लोग तो तुमको इससे विचलाने में लगे थे ताकि इसके सिवाय तुम झूठ हमारी तरफ़ ख़्याल करो और यह लोग तुमको मित्र बना लेते हैं। (७५) और अगर हम तुझे दृढ़ न रखते तो तू भी थोड़ा इन की तरफ़ को झुकने लगाथा। (७६) ऐसा होता तो हम तुमको जीते और मरे दुहरो (सज़ा का मज़ा) चखाते फिर तुमको हमारे मुक़ाबिले में कोई मददगार न मिलता। (७७) और यह लोग तो तुमको मक्के की ज़मीन से घबराहट करा रहे थे ताकि तुम को यहां से निकाल बाहर करें और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे यह

लोग भी चन्द रोज़ से (ज़ियादा) न रहने पाते । (७८) तुमसे पहिले जितने पैग़म्बर हमने भेजे हैं उनका यही दस्तूर रहा है और (जो) दस्तूर (हमारे ठहराये हुए हैं उन) में तब्दीली होती हुई न पाओगे। (७९) [रुकू ९] (हे पैग़म्बर) सूरज के ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ें पढ़ा करो और कुरान सुबह (प्रातः) पढ़ना चाहिये निस्सन्देह कुरान का सुबह पढ़ना (खुदाके) सामने होना है। (८०) और रातके एक हिस्से में कुरान (नमाज़ तहज्जद) पढ़ाकरो और यह फर्ज़ से जियादा बात तेरे लिये है शायद तुम्हारा पालनकर्त्ता तुमको तारीफ़ के मुक़ाम में पहुँचावे । (८१) और दुआ मांगा करो कि हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको अच्छी जगह पहुँचा और मुझको सच्चा निकालना निकाल और अपने पास से मुझको हकूमत की मदददे । (८२) और (हे पैग़म्बर लोगों से) कहदो कि (दीन) सच्चा आया और (दीन) झूठ मिटगया और बेशक झूठ तो मिटनेवाला ही था । (८३) और हम कुरान में ऐसी ऐसी बातें उतारतेहैं जो ईमान वालोंके लिये इलाज और दयाहैं और अन्यायियों को तो इस से नुकसानही और होता है । (८४) और जब हम मनुष्यको आराम देते हैं तो (उल्टा हमसे) मुँह फेरता और पहलू खाली करता है और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो उम्मेद तोड़ बैठता है। (८५) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि हर एक अपने तौर पर काम करता है फिर जो ठीक से थे रास्ते पर है तुम्हारा पालनकर्त्ता उसको खूब जानता है। (८६) [रुकू १०] (और हे पैग़म्बर) रूह की बाबत तुमसे पूछते हैं तो कहदो रूह मेरे पालनकर्त्ता की तरफसे है और तुम लोगों को थोड़ा ही इल्म दियागया है । (८७) (हे पैग़म्बर) अगर हम चाहें तो जो (कुरान) हम ने तुम्हारी तरफ हुक्म भेजा है उसको उठा ले जायें फिर तुम को उसके लिये हमारे मुकाबिले में कोई मददगार

न मिलेगा। (८८) मगर तुम्हारे पालनकर्त्ता ही की कृपा से तुम पर उस की बड़ी ही परवरिश है। (८६) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर सब आदमी और जिन्न ऐसा कुरान बनाने को जमा हो तो भी ऐसा न बना सकेंगे अगर्चे उन में एक दूसरे की बड़ी मदद करे। (६०) बावजूदे कि हमने इस कुरान में लोगों के लिये सभी मिसालें बयान की हैं मगर बहुतेरे लोग कृतघ्न (नाशुक्रा) ही रहे। (६१) और (हे पैग़म्बर मक्का के काफ़िर तुम से) कहते हैं कि हम तो उस वक्त तक तुम पर ईमान लाने वाले नहीं जब तक हमारे लिये ज़मीन से कोई चश्मा बहा न निकालो। (६२) या खजूरों और अंगूरों का तुम्हारा कोई बाग़ हो और उसके बीचो-बीच तुम नहरें जारी कर दिखाओ। (६३) या जैसा तुम कहा करते थे कि आस्मान के टुकड़े २ हम पर लागिराये या खुदा फ़िरिश्तो को लाकर सामने खड़ा करे। (६४) या कोई तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आस्मान मे चढ़जाओ और जब तक तुम हमको लेखा न उतारो जिसे हम आप पढ़लें तब तक हम तुम्हारे चढ़ने का विश्वास करने वाले नही कहो कि अल्लाह पाक है मै तो एक भेजा हुआ आदमी हू। (६५) [रुकू ११] और जब लोगों के पास (खुदा की तरफ) से शिक्षा आचुकी तो उन को ईमान लाने से इसके सिवाय और कोई रोकनेवाली नही हुई मगर यही कहने लगे क्या खुदाने आदमी (पैगम्बर बनाके) भेजा है। (६६) (हे पैगम्बर) तू लोगों से कह कि जमीन में अगर फ़िरिश्ते होते और विश्वास से चलते फिरते तो हम आस्मान से फ़िरिश्तों ही को पैगम्बर (बनाकर) उनके पास भेजते। (६७) (हे पैगम्बर उन से) कहो कि हम मे और तुम्हारे बीच में अल्लाह ही काफी है वह अपने सेवकों से जानकार है और (उन्हें) देख रहा है। (६८) और जिस को खुदा शिक्षा दे वही सची राह पर है और

जिसे भटकावे तो ऐसे गुमराहों के लिये तुम खुदा के सिवाय कोई मददगार नहीं पाओगे और क़यामत के दिन हम उन लोगों को उन के मुंह के बल अन्धे और गूंगे और बहरे करके उठावेंगे उन का ठिकाना नरक है जब आग (नरक) बुझने को होगी हम उन के लिये और ज़ियादा भड़कादेंगे। (९९) यह उनकी सज़ा है कि उन्हों ने हमारी आयतो से इन्कार किया और कहा कि जब हम हड्डियां और टुकड़े २ हो जांयगे तो क्या हम दोबारा जन्म लेंगे। (१००) क्या इन लोगों ने इस बात पर नज़र नहीं की कि खुदा जिस ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया है इस बात पर भी शक्ति शाली है कि इन जैसे (आदमी दोबारा) पैदा करे और उनके लिये (दुबारा पैदा करने के) एक अवधि (मियाद) नियत कररक्खी है जिस मे किसी तरह की सन्देह नहीं इस पर अन्यायी इन्कार ही करते हैं। (१०१) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो अगर मेरे पालनकर्त्ता के दया के खज़ाने तुम्हारे अधिकार में होते तो खर्च हो जाने के डर से तुम उन्हें बन्द ही रखते और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है। (१०२) [रुकू १२] हमने मूसाको खुले हुए चमत्कार दिये तो (हे पैग़म्बर) इसराईल के बेटो से पूंछ कि जब मूसा इसराईल के संतान के पास आये तब फ़िरऔन ने उससे कहा कि मूसा मेरी अटकल में तुमपर किसी ने जादू करदिया है। (१०३) (मूसा ने) जवाब दिया कि तू जान चुका है कि आस्मान और ज़मीन तेरे पालनकर्त्ता ही के ये चमत्कार हैं और हे फ़िरऔन मेरे ख्याल में तेरी भावई आई है। (१०४) फिर फ़िरऔन ने ईसराईल की संतान को तंग करके देश से निकाल देना चाहा तो हमने उसको और उसके साथियो को सबको डुबो दिया। (१०५) और फ़िर-औन के पीछे हमने याक़ूब के बेटो से कहा कि देश में बसना फिर जब क़यामत का वादा आवेगा तो हम तुमको समेटकर जमा करेंगे

और (हे पैग़म्बर) सच्चाई के साथ हमने क़ुरान को उतारा और सच्चाई के साथ वह उतरा और हमने तो तुमको बस खुश खबरी देने वाला और डराने वाला भेजाहै। (१०६) और क़ुरान को हमने थोड़ा २ करके उतारा कि तुम अवकाश के साथ उसे लोगों को पढ़ कर सुनाओ और हमने उसे धीरे २ उताराहै। (१०७) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि तुम क़ुरान को मानो या न मानो जिन लोगों को क़ुरान से पहिले इल्म दिया गया है जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो थोड़ियों के बल सजदे में गिरते हैं और कहने लगते हैं कि हमारा पालनकर्त्ता पवित्र है और उसका वादा पूरा हुआ। (१०८) थोड़ियों के बल गिर पड़तेहैं रोते और क़ुरान के कारण से उनकी विनती ज़ियादा होती जाती है। (१०९) (हे पैग़म्बर तुम इन लोगों से) कहो कि तुम (खुदा को) अल्लाह कहकर पुकारो या रहमन (दयालु) कहके पुकारो जिस (नाम) से भी पुकारो तो उसके सब (नाम) हैं और (हे पैग़म्बर) तू अपनी नमाज़ ज़ोर से न पढ़ और न धीमी आवाज़ से बल्कि इनके बीच की राह पकड़। (११०) और कहो कि हर तरह से खुदा को सराहना है जो न तो संतान रखता है और न उसके राज में कोई (उसका) साझी है खराबी के वक्त उसका कोई मददगार नहीं उसकी बड़ाइयां बड़ा जानकर करते रहो। (१११)-

——:※:——

सूरेकहफ़

मक्के में उतरी इसमें ११० आयतें और १२ रुकू हैं।

(शुरूअ) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हर तरह की तारीफ़ ख़ुदाही को है जिसने अपने सेवक पर क़ुरान उतारा और उसमें कोई पेच नहीं रक्खा। (१) बिल्कुल सीधा

ात है ताकि खुदा की तरफ़ से कठोर सज़ा से डरा और जो ईमान
ाले है और अच्छे काम करते हैं उनको इस बात की खुशखबरी दे
के उनको अच्छा फल (वैकुण्ठ) है जिसमें वह हमेशा रहेंगे।
(२) और उन लोगों को खुदा की सज़ा से डरा जो कहते हैं कि
ख़ुदा संतान रखता है। (३) नतो इन्हीं को इसबात की कुछ खोज
है और न इनके बड़ों को—क्या बुरी बात है जो इनके मुँह से निक-
लती है जो कहते हैं निरी झूठ है। (४) इस बात को न माने तो
शायद तुम शोक के मारे इनके पीछे अपनी जान देडालोगे। (५)
जो ज़मीन पर है हमने उसको जमीन की शोभा बनाई है ताकि इनमें
लोगों को जांचें कि कौन अच्छे कर्म करता है। (६) और हम
सब चीज़ों को जो ज़मीन पर हैं चटियल मैदान बनादेंगे । (७)
क्या तुम लोग ऐसा ख़्याल करते हो कि गुफा और खोह के रहने
वाले हमारी निशानियों मेंसे अजीब थे। (८) जब जवान गुफा में
जाबैठे और प्रार्थनाकी कि हेहमारे पालनकर्त्ता हमपर अपनी तरफसे
कृपाकर और हमारे काम को पूराकर। (९) फिर कई वर्ष के लिये
हमने गुफा में उनके कान थपक दिये। (१०) फिर हमने उनको
उठाया ताकि हम देखले कि दो गरोहो में से कौन वो ठहरने की
अवधि याद है। (११) [रुकू २] हम उनका हाल ठीकर तुमसे
कहते हैं कि वह थोड़े जवान थे जो अपने पालनकर्त्ता पर ईमान
लाये और हम उनको जियादा ही शिक्षा देते रहे। (१२) और
हमने उनके दिलों पर गिरह लगादी कि जब उठ खड़े हुए और बोल
उठे कि हमारा पालनकर्त्ता आस्मान और ज़मीन का पालनकर्त्ता है-
हमतो उसके सिवाय किसी पूजित को न पुकारेंगे (अगर हम ऐसा
करें) तो हमने बड़ीही अनुचित बात कही। (१३) यह हमारी जाति
है जिन्हों ने अल्लाह के सिवाय कई पूजित समझ रक्खे हैं इनको
कोई खुली सनद क्यों नहीं पेश करते तो जिसने खुदा पर झूठ

बांधा उससे बढ़कर कौन अपराधी है। (१४) और जब तुमने अपनी जाति के लोगों से और खुदा के सिवाय जिनकी यह लोग पूजा करते हैं उनसे किनारा खींच लिया तो गुफ़ा में चल बैठो तुम्हारा पालनकर्त्ता अपनी दया तुमपर फैला देगा और तुम्हारे काम में सुभीते करेगा। (१५) जब सूर्य निकले तो तू देखेगा कि वह उनकी गुफ़ा से दाहिनी ओर को बचता हुआ रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं ओर को कतरा जाता है और वह गुफ़ा के अन्दर बड़ी चौड़ी जगहमें है यह खुदा की निशानियोंमें से है जिसको खुदा राह दे वही सच्चे रास्ते पर है और जिसको वह विचलाये (गुमराह) करे तो फिर तुम कोई उसको राह पर लानेवाला न पाओगे। (१६) [रुकू ३] और तू उनको समझे कि जागते हैं हालांकि वह सो रहे हैं और हम दाहिनी तरफ़ को और बाईं तरफ़ को उनको करवटें बदलते रहते हैं और उनका कुत्ता चौखट पर अपने दोनों हाथ फैलाये है अगर तू उन लोगों को झांक कर देखे तो उनसे डरावेगा और उल्टे पैर भाग खड़ा होगा। (१७) और इसी तरह हमने उनको जगा दिया था ताकि अपने आपस में बातें करें। उनमें से एक बोल उठा भला तुम कितनी देर ठहरे होगे वह बोले कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम-फिर बोले कि जितनी मुद्दत तुम (ग़ार में) खोह में रहे तुम्हारा पालनकर्त्ता हो अच्छी तरह जानता है तू अपने में से एक को अपना यह रुपया देकर शहर की तरफ़ भेजो ताकि वह देखे कि किसके यहां अच्छा भोजन है तो उसमेंसे खाना तुम्हारे पास लेआये और चुपकेसे लेकर चला आये और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे। (१८) अगर लोग तुम्हारी खबर पाजावेंगे तो तुमपर संगसार (पत्थरों की वर्षा) करेंगे या तुमको उल्टा फिर अपने दीन में कर लेवेंगे और ऐसा हुआ तो फिर तुमको कभी मुक्ति नहीं होगी। (१९) और इसी

तरह हमने उन्हे सूचित करदिया था कि जानलें कि खुदा का वादा सच्चा है और क़यामत में कुछ भी शक नही अब खबर पाये पीछे लोग उनके सम्बन्ध में आपसमें झगड़ने लगे तो किसी २ ने कहा उन (कहफ़वालों) पर एक इमारत बनाओ और उनके हालको उनका पालनकर्त्ता ही अच्छी तरह जानता है उनके बारे में जिनकी राय ज़बरदस्त रही उन्हो ने कहा हम उनके मकान पर एक मसजिद बनावेंगे। (२०) कोई २ कहते हैं (कहफ वाले) तीन थे चौथा उनका कुत्ता और कोई कहते है कि पांच थे और छठवां उनका कुत्ता-छिपी बातों मे अटकल चलाते हैं और कहते हैं कि सात थे और आठवां उनका कुत्ता-(हे पैग़म्बर इन लोगो से) कहो कि इस गिनती को तो मेरा पालनकर्त्ता ही जानता है इनको बहुत थोड़े जानते हैं। (२१) तो (हे पैग़म्बर) कहफवालों के बारे मे झगड़ा मत करो-मगर सरसरी तौर का झगड़ा और कहफवालो के सम्बन्ध में इनमें से किसी से पूंछ पांछ मत करो (२२) और किसी काम की बाबतन कहाकरो कि मैं इसको कलकरूंगा मगर खुदा चाहे तो (इस काम को कल करूंगा) और अगर कभी भूल जाया करो तो अपने पालनकर्त्ता को याद करो और कहदो शायद मेरा पालनकर्त्ता इससे जियादा सीधी राह मुझको बतावे। (२३) और (कहफ वाले) अपनी गुफा मे ३०० वर्ष रहे। (२४) (हे पैग़म्बर) (इस पर भी लोग इस मुद्दत को न माने तो उनसे) कहो कि जितनी मुद्दत (कहफवाले गुफा मे) रहे अल्लाह खूब जानता है आस्मान और ज़मीन की गैब की विद्या उसी को है क्याही देखनेवाला और क्याही सुननेवाला है। उसके सिवाय लोगो का कोई काम सम्भालनेवाला नहीं और न वह अपनी आज्ञामें किसी को शरीक करता है। (२५)

नोट--आयत नम्बर २१ महाभारत से लीगई मालूम होती है उसमें पांच पाण्डव छठवी द्रोपदी सातवां कुत्ता हिमालय को गये।

[रुकू ४] और (हे पैग़म्बर) तुम्हारे पालनकर्त्ता की किताब जो तुम पर हुक्म उतरा है उसको पढ़ो कोई उसकी बातों को बदल नही सक्ता और उसके सिवाय तुम कही शरण न पाओगे। (२६) और जो लोग सुबह और शाम अपने पालनकर्त्ता की याद करते हैं और उसीकी रज़ामंदी चाहते हैं तू उनके साथ मिला रह और तेरी नजर उनपरसे हटने न पावे कि दुनियाकी ज़िन्दगीके साज़ सामान ढूढता है और ऐसे शख़्स का कहा न मान जिसके दिलको हमने अपनी याद से भुलादिया है और वह अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा है और उसकी दुनियादारी हद से बढ़गई है । (२७) और (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि यह कुरान तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़से सच है पस जो चाहे माने और जो चाहे न माने इन्कारियों के लिये तो हमने ऐसी आग तय्यार कर रक्खीहै जिसकी कनातें उनको चारों तरफ़से घेर लेंगी और प्रार्थना करेंगे तो (जिस) पानी से उनकी फ़रियादरसी (विनती की पहुंच) की जायगी (वह इसतरह गर्म होगा) जैसे पिघला हुआ तांबा (और) वह मुहों को भूँज डालेगा (क्याही) बुरा पीना है और क्या बुरा आराम है। (२८) जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने नेक काम किये । जो शख़्स नेक काम करे हम उसके बदले को वृथा नही होने दिया करते।(२९) यही लोगहैं जिनके रहनेके लिये (वैकुण्ठके) बाग़हैं । इन लोगों के (मकानो के) नीचे नहरे बहरही होगी वहां सोने के कंगन पहिनाये जावेंगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहिनेंगे (और) वहां तख़्तों पर तकिय लगाये बैठेंगे (क्याही) अच्छा बदला है और क्या ख़ूब आराम है। (३०) [रुकू ५] और (हे पैग़म्बर) इन लोगों से उन दो आदमियों की मिसाल बयान करो जिनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दिये थे और हमने उनके आस पास खजूर के पेढ़ लगा रक्खे थे और हमने दोनों बाग़ो के बीच २

मे खेती लगा रक्खी थी। दोनों बाग़ अपने फल लाये और फल (लाने) मे किसी तरह की कमी नही की। (३१) और दोनों के बीच हमने नहर जारी की। तो बाग़ों के मालिक के पास एकदिन जिसदिन तरह २ की पैदावार मौजूदथी यह आदमी अपने (किसी) दोस्त से बातें करते २ बोल उठा कि मैं तुझसे माल में और आदमियों मे ज़ियादा हूं। (३२) और यह बातें करता हुआ अपने बाग़मे गया और वह (वृथा के घमंड और खुदा की कृतघ्नता से) अपने पर आपही बुरा कर रहा था कहने लगा कि मैं नहीं समझता कि (यह बाग़) कभी मिटजावे। (३३) और मै नही समझता कि कयामत आनेवाली है और अगर मैं अपने पालनकर्त्ता की तरफ लौटाया जाऊंगा तो जहां लौटकर जाऊंगा इससे बढ़कर वहां पाऊंगा। (३४) उसका दोस्त जो उससे बाते करता जाताथा बोलउठा कि क्या तू इसका इन्कार करनेवालाहै जिसने तुझको मिट्टी से फिर पैदाकिया फिर तुझको पूरा आदमी बनाया। (३५) लेकिन मैंतो (यह विश्वास रखता हूं कि) वही अल्लाह मेरा पालनकर्त्ता है और मैं अपने पालनकर्त्ता के साथ किसी को शरीक नही करता। (३६) और जब तू अपने बाग़ मे आया तो तूने क्यों नही कहा कि यह (सब) खुदा के चाहे से हुआ (वर्ना मुझमें तो) वे मदद खुदा के कुछभी बल नही अगर माल और संतान के विचार से तू मुझको अपने से कम समझता है। (३७) तो आश्चर्य नही मेरा पालनकर्त्ता तेरे बाग़ से बढ़कर मुझको दे और तेरे बाग़पर आस्मान से कोई बला उतारे कि वह सुबह को साफ मैदान होकर रहजावे। (३८) या उसका पानी बहुत नीचे उतर जावे और तू उसको किसी तरह ढूंढ़कर ला सके। (३९) और उसकी पैदावार फेर में आगई तो वह उस लागत पर जो बाग़ मे लगाई थी अपने दोनों हाथ मलता रहगया और वह अपनी टट्टियों पर गिरा पड़ा था और

कहता जाता था कि क्या अच्छा होता अगर अपने पालनकर्त्ता के साथ किसी को साझी न ठहराता। (४०) और उसका कोई ऐसा जत्था न हुआ कि खुदा के सिवाय उसकी मदद करता और न वह बदला लेसक्के। (४१) इसी से सब सच्चे अधिकार खुदा को है वही बढ़कर पुण्यात्मा और अच्छा बदला देनेवाला है। (४२) [रुकू ६] और (हे पैग़म्बर) इन लोगों से बयान करो कि दुनिया की ज़िन्दगीकी मिसाल पानी कैसी है जिसको हमने आस्मान से बर्षाया तो ज़मीन की पैदावारी पानी के साथ मिलगई फिर चूर २ होकर रहगई जिसे हवायें उड़ाये २ फिरती हैं और अल्लाह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है। (४३) (हे पैग़म्बर) माल और संतान दुनिया की ज़िन्दगी की शोभा हैं और अच्छे काम जिनका असर देरतक) बाक़ी रहे तुम्हारे पालनकर्त्ता के नज़दीक पुण्य के विचार से बढ़कर हैं और आशा से भी बढ़कर है। (४४) और (लोगो उसदिन की चिंता से बेखटके नहो) जिसदिन हम पहाड़ों को हिलावेंगे और (हे पैग़म्बर) तुम ज़मीन को देखलोगे कि खुला मैदान पड़ा है और हम लोगों को घेर बुलावेंगे और उनमें से किसी को नहीं छोड़ेंगे। (४५) और पांति के पांति तुम्हारे पालनकर्त्ता के सामने पेश कियेजायंगे जैसा हमने तुमको पहिली बार पैदाकिया वैसेही तुम हमारे सामने आये मगर तुम यह ख्याल करते रहे कि हम तुम्हारे लिये कोई समय ही नहीं ठहरावेंगे। (४६) और (लोगों के कर्म का) रजिस्टर रक्खा जायगा तो (हे पैग़म्बर) तुम पापियोंको देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में है उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य(कमबख़्ती)यह कैसा रजिस्टरहै, और जो कुछ इन लोगों ने किया था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखीहो (वह सब कर्म लेखे में लिखा हुआ) मौजूद पावेंगे और तुम्हारा पालनकर्त्ता किसी पर अन्याय नहीं करेगा। (४७) [रुकू ७]

और जब हमने फिरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सिर झुकाओ तो इबलीस (जो जिन्नो की जाति मे से था) के सिवाय सभीने सिर झुकाया, अपने पालनकर्त्ता के हुक्म से निकल भागा तो (लोगो) क्या मुझे छोड़ कर इबलीस को और उसके कुटुम्ब को दोस्त बनाते हो हालांकि वह तुम्हारे (पुराने) दुश्मन हैं और जालिमों का फल बुरा हुआ। (४८) हमने आस्मान और ज़मीन के पैदा करते वक्त बल्कि खुद शैतान के पैदा करते वक्त भी शैतानो को नही बुलाया और हम न थे कि राह भुलाने वालों को (अपना) मददगार बनाते। (४९) और (लोगो उस दिन की चिन्ता से बेखटके न हो) जिस दिन खुदा हुक्म देगा कि जिन को तुम हमारा शरीक समझा करते थे उनको बुलाओ या उनको बुलादेंगे मगर वह इनको जवाब ही न देंगे और हम इनके बीच में मारने का सदन करदेंगे। (५०) [रुकू ८] मारडालने वाले और अपराधी लोग नरक की आग को देखेंगे और समझ जावेंगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं और उनको उससे कोई भागने की राह नहीं मिलेगी। (५१) और हमने इस कुरान मे लोगो के लिये हर तरह की मिसालें बयान की है मगर आदमी ज़ियादा झगड़ालू है। (५२) और जब लोगों के पास हिदायत आचुकी तो (अब) ईमान लाने और अपने पालनकर्त्ता से क्षमा मांगने से इनको उनके सिवाय और कौन काम रोकनेवाला होसक्ता था कि अगले लोगों कैसा चरित्र इनको भी पेश आवे या (हमारी) सज़ा इनके सामने आमौजूद हो। (५३) और हम पैगम्बरों को सिर्फ इसलिये भेजा करते हैं कि खुश खबरी सुनावें और डरावें और जो लोग इन्कार करने वाले हैं झूठी बातों की सनद पकड़कर झगड़े किया करते हैं ताकि झगड़े से सचको डिगावें और इन लोगो ने हमारी आयतों को और (हमारी सज़ा को) जिससे इनको डराया जाता है हंसी

चना रक्खी है । (५४) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो खुदा की आयतों से समझाये जाने पर फिर उसकी तरफ़ से मुंह फेरे और अपने पहिले कर्मों को भूल जावे हमहो ने इनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं ताकि (सच बात) समझ न सकें और इनके कानों में (एक तरह का) बोझ (पैदा कर दिया है) । (५५) और (हे पैग़म्बर) अगर तुम इनको सच्ची राह की तरफ़ बुलाओ तो यह कभी राहपर आनेवाला नहीं । (५६) और तुम्हारा पालन-कर्त्ता बड़ा क्षमा करनेवाले दयालु है अगर इनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो फ़ौरनही इनपर सज़ा उतार देता लेकिन इनके लिये एक मियाद है जिससे इधर कहीं शरण नहीं पासक्के । (५७) और (आदि और समूद की) यह बस्तियां (जिनको तुम देखते हो) इन्हों ने भी जब नटखटी की हमने उनको मेट दिया और इनके मार डालने की भी हमने एक मियाद नियत कर रक्खी है । (५८) [रुकू ६] और (हे पैग़म्बर) जब मूसा (खिज्र की मुलाक़ात के इरादे से चले तो उन्हों ने) अपने नौकर (यूशा) से कहा कि जबतक मैं दोनों नदियों के मिलने की जगह पर न पहुंचलूं बराबर चलूंगा या मैं कारनून तक चलाही जाऊँगा । (५९) फिर जब यह दोनों उन दो नदियों के मिलने की जगहपर पहुंचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये तो मछली ने नदी में सुरंग की तरह का अपना रास्ता बनालिया । (६०) फिर जब आगे बढ़गये तो मूसा ने अपने नौकर से कहा कि हमारा कलेऊ तो हमको दो । हमारे इस सफ़र से तो हमको बड़ी थकावट हुई । (६१) (नौकर ने) कहा आपने यहभी देखा कि जब हम उस पत्थर के पास ठहरे तो मैं मछली भूलगया और शैतानहीने मुझको भुलादिया कि मैं (आप से) उसका जिक्र करता और मछलीने अजीब तौर पर नदी में (जानेका) अपना रास्ता करलिया । (६२) (मूसाने) कहा कि

वही है जिसकी हम तलाश में थे फिर दोनों अपने (पैरों के) निशानों के खोज लगाते २ उलटे पांव फिरे। (६३) तो उन्होंने हमारे सेवकों मेंसे एक सेवक (यानी खिज्र) को पाया जिसपर हमने अपनी कृपा की और अपनी तरफ़ उसको एक इल्म सिखाया था। (६४) मूसाने खिज्र से कहा कि क्या मैं तेरे साथ इस शर्त पर रहूं कि जो इल्म तुझको सिखाया गया है तू कुछ मुझको भी सिखादे। (६५) (खिज्र ने) कहा तू मेरे साथ न ठहर सकेगा। (६६) और जो चीज़ तुम्हारी जानकारी के घेरे से बाहर है उस पर तू कैसे संतोष करसक्ता है। (६७) (मूसा ने) कहा कि जो खुदा ने चाहा तू मुझको संतोष करनेवाला पावेगे और मैं तेरी किसी आज्ञा को न टालूंगा। (६८) (खिज्र ने) कहा अगर तुझको मेरे साथ रहना है तो जबतक मैं तुझसे किसी बात को चर्चा न करूं तू मुझसे कोई सवाल न कर। (६९) [रुकू १०] फिर (मूसा और खिज्र) दोनो यहां तक चले कि जब दोनों नाव में सवार हुए तो खिज्र ने (एक तख्ता तोड़कर) नावको फाड़दिया (मूसा ने) कहा कि तूने क्या किश्ती को इसलिये फाड़ा कि नाव के लोगों को (दरियामें) डुबोदे, तूने एक विचित्र बात की। (७०) (खिज्र ने) कहा क्या मैंने न कहा था कि तू मेरे साथ ठहर न सकेगा। (७१) (मूसा ने) कहा कि तू मेरी भूल चूक न पकड़ और मेरे काम के सबब मुझपर सख़्ती मत डाल। (७२) फिर दोनों और बढ़े यहां तक कि (रास्ते में) एक लड़के से मिले तो खिज्र ने उसको मारडाला (मूसा ने) कहा क्या बिना किसी जानके बदले तूने एक निरअपराधी (बेक़सूर) मनुष्य को मारडाला तूने बड़ा बेजा काम किया। (७३)—

——:x:——

सोलवां पारा ।

—— :*: ——

(खिज्र ने) कहा क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मेरे साथ तुम संतोष नहीं करसकोगे । (७४) (मूसा ने) कहा कि इसके बाद अगर मैं तुम से कुछ भी पूछूं तो मुझको अपने साथ न रखना फिर मैं तुझसे कुछ उज्र न करूंगा । (७५) फिर आगे बढ़े यहां तक कि गांव वालों के पास पहुँचे और वहां के लोगोंसे खाने को मांगा और उन्होंने उनको खाना देना मंजूर न किया, इतने में इन्होंने गांव में एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो (खिज्र ने) उस को खड़ा करदिया (इसपर मूसा ने) कहा अगर तुम चाहते तो (इन लोगों से) दीवार के खड़े कर देने की मज़दूरी ले सकते थे । (७६) (खिज्र ने) कहा अब मुझमें और तुझमें भेद पड़गया जिसपर तुम संतोष न करसके मैं तुमको उसकी हकीकत बताये देता हूं । (७७) नाव तो ग़रीबों की थी वह नदी में चलाते थे मैंने चाहा कि उसको एबदार करदूं क्योंकि इनके सामने की तरफ़ एक बादशाह था जो हर एक किश्ती को ज़ब्त करलिया करता था । (७८) और वह जो लड़का था उसके माता पिता ईमानवाले थे तो हमको यह डरहुआ कि यह लड़का सरकशी और इन्कार से उनके सिरों पर न डाले । (७९) इसलिये हमने यह इरादा किया (उसको मारदे) और उनका पालनकर्त्ता उसके बदले में उनको पाक और उससे अच्छे ख्याल वाला बेटा देवे । (८०) और रही दीवार सो शहर के दो अनाथ लड़कों की थी और दीवार के नीचे उन्हीं (लड़कों) का ख़ज़ाना (गढ़ाहुआ) था और उनका पिता अच्छा आदमी था पस तुम्हारे पालनकर्त्ता ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँचकर अपना ख़ज़ाना निकाललें तुम्हारे

पालनकर्त्ता की यह कृपा थी और मैंने जो कुछ किया सो अपने अख़्तियार से नही किया (बल्कि ख़ुदा की आज्ञा से) यह उसका भेद है जिसपर तुम संतोष न करसके। (८१) [रुकू ११] और हे (पैग़म्बर) लोग तुमसे ज़ुलक़रनैन का हाल पूंछते है तुम कहो कि मै तुमको उसका थोड़ासा ज़िक्र पढ़कर सुनाताहूं। (८२) हमने उसको तमाम ज़मीन पर सामर्थ्यवान किया और हमने उसको हरतरह के साज सामान दिये, और वह एक सामान के पीछे पड़ा। (८३) यहां तक कि जब सूरजके डूबनेकी जगह पर पहुँचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली २ कीचड़के कुण्डमें डूबता हुआ है और देखा कि उस (कुण्ड) के करीब एक जाति बसीहै। (८४) हमने कहा कि हे ज़ुलक़रनैन चाहो (इनको) सज़ा दो या इनको भले बना। (८५) (ज़ुलक़रनैन ने कहा) कि जो सरकशी करेगा उस को तो हम सज़ा देंगे वह अपने पालनकर्त्ता के सामने लौट कर जायगा और वह उसे बुरी मार देगा। (८६) और जो ईमान लाये और अच्छे काम किये (उसके) बदले मे उस को भलाई मिलेगी और हम भी आसान काम करने को कहेंगे। (८७) फिर वह एक सामान के पीछे पड़ा। (८८) यहां तक कि जब वह सूरज के निकने की जगह पहुंचा तो उस को ऐसा मालूम हुआ कि सूरज कुछ लोगो पर निकलता है जिनके लिये हमने सूरज के इधर कोई आड़ नही रक्खी। (८९) ऐसा ही (था) और ज़ुलक़रनैन के पास जो कुछ था हम को उससे पूरी जानकारी थी। (९०) फिर वह एक सामान के पीछे पड़ा। (९१) यहां तक कि जब चलते २ एक पहाड़ की घाटी के दो किनारो के बीच मे पहुंचा तो किनारो के इधर एक क़ौम को पाया जो बात को नहीं समझते थे। (९२) उन लोगो ने (अपनी बोली) में कहा कि ज़ुलक़रनैन (इस घाटी के इधर) याजूज और माजूज मुल्क मे (आकर)

फ़िसाद करते हैं तो हम आप के लिये चन्दा जमा करदें बशर्ते कि आप हमारे और उनके दर्मियान कोई रोक बनादें। (९३) (ज़ुल-क़रनैन ने) कहा कि मेरे पालनकर्त्ता ने जो मुझे सामर्थ्य दी है काफ़ी है (चन्दे की आवश्यकता नहीं) बल से मेरी सहायता करो मैं तुम में और उनमें एक दीवार खींच दूंगा। (९४) लोहे की सिलें हम को लादो (वे लाये) यहां तक कि जब ज़ुलक़रनैन ने दोनों किनारों के बीच को पाटकर बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि अब इसको धोंको यहां तक कि जब (लोहे की) दीवार को (लाल) अंगारा कर दिया तो कहा कि अब हम को तांबा लादो कि उस को पिघलाकर इस दीवार पर डालदें। (९५) (ग़र्ज़ इस तदबीर से ऐसी ऊंची और मज़बूत दीवार तैयार होगई कि याजूज माजूज) न उस पर चढ़सक्ते थे और न उस में सूराख करसक्ते थे। (९६) (ज़ुलक़रनैनने) कहा कि यह मेरे पालनकर्त्ता की कृपा है। (९७) लेकिन जब मेरे पालनकर्त्ता का वादा आवेगा तो इस दीवार को गिरा देगा और मेरे पालनकर्त्ता का वादा सच्चा है। (९८) और हम उस दिन किसी को किसी में मौज करने के लिये छोडदेंगे और नृसिंहा फूंका जावेगा फिर हम सब लोगों को जमाकरेंगे। (९९) और उसीदिन काफ़िरोंके सामने नरक पेशकरेंगे। (१००) जिनकी आंखें हमारी यादगारीसे पर्दे में थी और वह सुन न सक्तेथे। (१०१) [रुकू १२) क्या काफ़िर इस ख़्याल में है कि हमको छोड़ कर हमारे बन्दों को काम का सम्भालने वाला बनावें। हमने काफ़िरों की मिहमानी के लिये नरक तय्यार कर रक्खा है। (१०२) कहो तो बताऊं कि किस के काम अकार्थ हैं। (१०३) वह लोग जिनकी दुनिया की ज़िन्दगी में कोशिश गई गुज़री हुई और वह इसी ख़्याल में हैं कि वह अच्छे काम कररहेहैं। (१०४) यही वह लोगहैं जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता की आयतों को और उसके सामने हाज़िर होने

को न माना तो इनके काम अकार्थ होगये तो क़यामत के दिन हम इनकी तौल न खड़ी करेंगे। (१०५) यह नरक उनका बदला है कि उन्हों ने इन्कार किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों को हँसी उड़ाई। (१०६) जो लोग ईमानलाये और नेक काम किये उनकी महिमानी के लिये बैकुण्ठ के बाग़ हैं। (१०७) जिनमें वह हमेशा रहेंगे यहां से उठना नहीं चाहेंगे। (१०८) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर मेरे पालनकर्त्ता की बातों के (लिखने के) लिये समुद्र स्याही हो वह लिखते २ निबटजाय और वैसाही समुद्र और भी मदद को लिया जाय वह भी निबट जाय तब भी पालनकर्ताकी बातें न लिखी जा सकें। (१०९) (हे पैग़म्बर) कहो कि मैं तुम्हीं कैसा आदमी हूँ मेरे पास यह वही (ईश्वरीय संदेशा) आती है कि तुम्हारा पूजित एक पूजित है तो जिसको अपने पालनकर्त्ता के मिलने की चाह होवे तो उसे भले कामकरना चाहिये और किसी को अपने पालनकर्त्ता की पूजा में शामिल न करना चाहिये। (११०)

——:*:——

सूरे मरियम।

मक्के में उतरी इसमें ९८ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। [रुकू १] काफ-हे-ये-एन-स्वाद-(हे पैग़म्बर) यह उस मिहर्बानी का जिक्र है जो तुम्हारे पालनकर्त्ताने अपने सेवक ज़करिया परकी थी। (१) कि जब उन्होंने अपने पालनकर्त्ताको दबी आवाजसे पुकारा। (२) बोले कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरी हड्डियां सुस्त पड़गईहैं और सिर बुढ़ापे से भड़कउठाहै। (३) और हे मेरे पालनकर्त्ता मैं तुझ से मांग कर [illegible] नहीं रहा। (४) और अपने (मरे) पीछे तुमको [illegible]

से डर है और मेरी बीबी बांझ है पस अपनी तरफ़ से मुझको एक वारिस (यानी बेटा) दे। (५) जो मेरा वारिस हो और याक़ूब की संतानका वारिस हो और हे मेरे पालनकर्त्ता उसे मनमाना बना। (६) (ख़ुदा ने कहा) ज़करिया हम तुमको एक लड़के की खुश खबरी देते हैं जिसका नाम यहिया होगा। (७) (और इससे) पहिले हमने इसनाम का कोई (आदमी पैदा) नहीं किया। (८) (ज़करिया ने) कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरे यहां लड़का कैसे होसक्ता है जबकि मेरी बीबी बांझ है और मैं बिल्कुल बूढ़ा होगया हूं। (९) कहा, ऐसाही तुम्हारा पालनकर्त्ता कहता है कि तुमको इस उम्र में बेटा देना हमारे लिये आसान है और पहिले तुम्हीं को हमने पैदा किया हालांकि तुम कुछभी न थे। (१०) ज़करिया ने निवेदन किया कि हे मेरे पालनकर्त्ता मुझे कोई निशानी बता, कहा कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम बराबर तीन रात (दिन) लोगों से बात नहीं कर सकोगे। (११) फिर (जब ज़करिया) कोठे से निकलकर अपने लोगों के सामने आया तो इशारे से उनको समझा दिया कि सुबह और शाम (खुदाकी) पूजामें लगे रहो। (१२) (ग़र्ज़ यहिया पैदा हुआ और हमने उसको हुक्म दिया) हे यहिया किताब को खूब मज़बूती से लिये रहना और अभी वह लड़के ही थे कि हम ने अपनी कृपा से उनको पैग़म्बरी दी। (१३) और दया और शुद्ध स्वभाव दिया और वह परहेज़गार था और अपने मां बाप की सेवा करता था और ज़बरदस्त बेहुक्म नथा। (१४) और सलाम है उसपर जिसदिन पैदा हुआ और जिसदिन मरेगा और जिसदिन (दुबारा) ज़िन्दा होगा। (१५) [रुकू २] और (हे पैग़म्बर) कुरान में मरियम का ज़िक्र करो कि जब वह अपने लोगों से जुदा होकर पूरब की तरफ जाबैठी। (१६) और लोगों की तरफ़से पर्दा करलिया तो हमने अपनी रूह (यानी आत्मा) को उनकी तरफ़

भेजा. फिर हमारी आत्मा पूरा मनुष्य बनकर उसके सामने आई। (१७) मरियम कहने लगी अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं खुदाकी शरण चाहती हूं। (१८) बोले कि मैं तेरे पालनकर्त्ता का भेजा हुआ (फ़िरिश्ता) हूं इसलिये (आया हूं) कि तुझको एक पाक लड़का देजाऊं। (१९) वह बोली कि मेरे यहां कैसे लड़का होसक्ता है जब कि मुझे किसी मर्द ने नहीं छुआ और मैं कभी बदकार नहीं। (२०) (शुद्धात्माने) कहा ऐसाही तुम्हारा पालनकर्त्ता कहता है कि यह मामला मुझपर आसान है और लोगों के लिये हम उसको एक निशानी और दया अपनी तरफ़ से किया चाहते हैं और यह काम पहिले (सृष्टि के आदि) से ठहर चुका है। (२१) इसपर मरियम के गर्भ रहगया और फिर वह गर्भ लेकर कहीं अलग दूरके मकानमें जाबैठी। (२२) फिर उसको एक खजूरके पेड़की जड़के पास जनने का दर्द उठा (मरियमने कहा) अच्छा होता अगरमैं इससे पहिले मरचुकी होती और भूली बिसरी होगई होती। (२३) फिर उसको उसके नीचेसे आवाज आई कि उदास नहो तेरे पालनकर्त्ता ने तेरे नीचे एक चश्मा बहा दिया है। (२४) और खजूरकी जड़को अपनी तरफ हिलाओ उससे तेरे लिये पक्के खजूर गिरेंगे। (२५) फिर खाओ और (चश्मेका पानी) पियो और (बेटेको देखकर) आंखें ठण्डी करो फिर तुमको कोई आदमी दिखलाई पड़े। (२६) और वह तुमसे पूछे तो (तुम इशारे से) कहदेना कि मैंने दयालु (रहमान) का रोजा रक्खा है सो मैं आज किसी आदमीसे न बोलूंगी। (२७) फिर मरियम लड़के को गोद में लिये अपनी जाति के लोगोंके पास लाई। वह (देखकर) कहने लगे कि हे मरियम यह तूफान कहां से लाई (२८) हे हारूं की बिहन न तो तेरा बापही बदकार था और न तेरी माताही बदचलन थी। (२९) तो मरियम ने बच्चेकी तरफ इशारा किया (कि जो कुछ पूछना है इससे पूछलो) वह कहने लगे कि हम

गोदके बच्चे से कैसे बात करें। (३०) इसपर बच्चा बोला कि मैं अल्लाह का सेवक हूं उसने मुझको किताब (इंजील) दी और मुझको पैग़म्बर बनाया। (३१) और कहीं भी रहूं मुझको बरकत दी और मुझको आज्ञादी कि जबतक ज़िन्दा रहूं नमाज़ पढ़ूं और ज़कात दूं। (३२) और मुझको अपनी मांका सेवक बनाया और मुझको ज़ालिम और अभागा नही बनाया। (३३) और मुझपर सलाम है जिसदिन मैं पैदा हुआ और जिसदिन मरूंगा और जिसदिन (दुबारा) ज़िन्दा उठ खड़ा हूंगा। (३४) यह ईसा मरियम का बेटा है सच्ची रवात, जिसमें लोग झगड़ा करते है। (३५) खुदा ऐसा नहीं कि बेटा बनावे, वह पाक है जब वह किसी कामका करना ठानलेता है तो इतना कहदेता है कि हो और वह होजाता है। (३६) अल्लाह मेरा और तुम्हारा पालनकर्त्ता है तो उसीकी पूजाकरो यही सीधी राह है। (३७) फिर आपसमें फूटन डालने लगे सो उन लोगो के हालपर अफ़सोस है जो इनकार करते हैं कि बड़े दिन फिर हाज़िर होने पड़ेगा। (३८) जिसदिन यह लोग हमारे सामने आवेंगे क्या कुछ सुनेंगे और क्या कुछ देखेंगे लेकिन ज़ालिम आजके दिन खुली (गुमराही) भटकने में पड़े है। (३९) और इनलोगों को पछतावे के दिनसे डराओ जब काम का फैसला करदिया जावेगा और यह लोग भूल रहे हैं और ईमान नही लाते। (४०) हम ज़मीन के वारिस होंगे और उन लोगोंके भी जो तमाम ज़मीनपर हैं और हमारी तरफ़ सबको लौटकर आना होगा। (४१) [रुकू २] और कुरान में इब्राहीम का ज़िक्र (बयान) करो कि वह बड़ेही सच्चे पैग़म्बर थे। (४२) जब उन्होंने अपने बापसे कहा कि हे बाप आप क्यों इन (बुतो) की पूजा करते हो जो न सुनते और न देखते और न कुछ काम आपके आसक्ते हैं। (४३) हे बाप मुझको (खुदाकी रतफ़से) ऐसी मालूमात मिली है जो तुझको नही मिली। सो तू

मेरे पीछे हो तुझको सीधी राह दिखाऊंगा। (४४) हे बाप शैतान को न पूज क्योंकि शैतान खुदा से फिराहुआ है । (४५) हे बाप मुझको इसबात से डर है कि खुदासे कोई सज़ा न आलगे और तू शैतान का साथी होजावे। (४६) (इब्राहीमके बाप ने) कहा कि हे इब्राहीम क्या तू मेरे पूजितोंसे फिराहुआ है अगर तू नही मानेगा तो मैं तुझको संगसार (पथराव) करदूंगा और अपनी खैर चाहता है तो मेरे सामने से दूरहो। (४७) (इब्राहीमने) कहा (अच्छा तो मेरा) सलाम है मैं अपने पालनकर्ता से तेरे लिये क्षमा मागूंगा वह मुझपर मिहर्बान है। (४८) मैं तुम (बुतपरस्तो) का और (इन बुतो) से जिनको तुम खुदा के सिवाय पुकारा करते हो अलग होता हूं और अपने पालनकर्त्ताको पुकारूंगा उम्मेद है कि मैं अपने पालनकर्त्ता से दुआ मांगकर अभागा नहो बनूंगा। (४९) तो जब इब्राहीमने उन (बुतपरस्तों) से और उन बुतों से जिनको वह खुदा के सिवाय पूजते थे अलग होगये, हमने उनको इसहाक़ और याक़ूब दिये और सबको हमने पैग़म्बर बनाया। (५०) और अपनी कृपा से उनको (सबकुछ) दिया और उनके लिये सच्चे और बड़े शब्द कहे। (५१) [रुकू ४] और किताब में मूसा का जिक्र (बयान) करो कि वह चुना हुआ और पैग़म्बर था। (५२) और हमने उसको (पहाड़) तूरकी दाहिनी तरफ़ से पुकारा और भेद कहने के लिये उसको पास बुलाया। (५३) और अपनी मिहर्बानी से उसके भाई हारूं को पैग़म्बर बनाकर बख्श दिया। (५४) और कुरानने इस्माईल का जिक्र कर कि वह वादे का सच्चा और पैग़म्बर था। (५५) और अपने घरवालो को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और खुदाको पसंद था। (५६) और किताबसे इद्रीसका जिक्र (बयान) कर कि वह सच्चा पैग़म्बर था। (५७) और हमने उसको उठाकर बड़ी ऊंची जगह दाखिल किया। (५८) यह लोग है जिनपर

अल्लाह ने कृपाकी और आदमकी औलाद है और उन लोगोंकी औलाद हैं जिनको हमने नूहके साथ (नावमें) सवार कर लिया था और इब्राहीम और इसराईल की औलाद हैं और उनलोगों की औलाद में से हैं जिनको हमने सच्चीराह दिखलाई और चुनलिया जब अल्लाहकी आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती थीं तो सिजदे में गिर पड़ते थे और रोते जाते थे। (५९) फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ (पैदा) हुए जिन्होंने नमाज़ें छोड़दीं और बुरी ख़्वाहिशों के पीछे पड़गये सो उनकी गुमराही उनके आगे आवेगी। (६०) मगर जिसने तौबा की और ईमान लाये और नेक काम किये तो ऐसे लोग बाग़ोंमें दाखिलहोंगे और उनपर ज़ुल्म न होगा। (६१) हमेशा रहने के बिना देखे बाग़ जिनका खुदाने अपने दासोंसे वादा कर रक्खा है, उसका वादा आनेवाला है। (६२) वहां कोई बेहूदा बात उनके कान में न पड़ेगी सिवाय सलाम के और वहां उनको खाना सुबह शाम मिलाकरेगा। (६३) यही वह स्वर्ग है जिसे अपने दासों में से जो परहेज़गार होगा उसे उसका वारिस बनायेंगे। (६४) और (हे पैग़म्बर) हम (फ़िरिश्ते) तुम्हारे पालनकर्त्ता के बिना हुक्म दुनियां में नहीं आसक्ते जो कुछ हमारे आगे होनेवाला है और जो कुछ हमसे पहिले होचुकाहै और जो कुछ इनदोनों के बीचमें है सब उसी के हुक्म से है और तेरा पालनकर्त्ता भूलनेवाला नहीं। (६५) [रुकू ५] और आदमी पूछा करता है कि जब मैं मरजाऊंगा तो क्या (दुबारा) ज़िन्दा होजाऊंगा। (६७) क्या आदमी याद नहीं करता कि हमने पहिले इसको पैदाकिया था और वह कुछभी न था। (६८) तो (हे पैग़म्बर) तेरे पालनकर्त्ता को क़सम हम उन्हें शैतानों के साथ इकट्ठा करेंगे और नरक के गिर्द घुटनों के बल बिठलायेंगे। (६९) फिर हर फ़िर्क़ें में से उन लोगों को अलग करेंगे जो खुदासे अकड़े फिरते थे। (७०) फिर जो लोग नरकमें जानेके लायक़

हैं हम उनको ख़ूब जानते हैं। (७१) और तुम मेसे कोई नहीं जो नरकमें होकर न गुज़रे यह वादा तेरे पालनकर्त्ता पर लाज़िम होचुका है। (७२) फिर हम परहेज़गारों को बचालेंगे और बेहुक्मों को उसीमे पड़ा छोड़देंगे। (७३) और जब हमारी खुली आयतें लोगोंको पढ़कर सुनाई जाती है तो काफ़िर मुसल्मानों से पूछने लगते हैं कि हम दोनों फ़रीक़ों मेंसे दर्जा (रुतबा) किसका अच्छा है और मजलिस किसकी अच्छी। (७४) और हम इनसे पहिले बहुत सी जमाअतों को जो सामान और दिखावे मे अच्छी थीं मेट दिया। (७५) (हे पैग़म्बर) कहो कि जो शख़्स गुमराही में है ख़ुदा उसको लम्बा खींचे। (७६) यहांतक कि जब उसचीज़ को देखले जिसका उनसे वादा कियाजाता है यानी सजा या क़यामत तो उसवक़्त इनको मालूम होजायगा कि अब किसका रुतबा बुरा और (किसका जत्था) कमज़ोरहै। (७७) और जो लोग सीधीराह पर हैं अल्लाह उनको ज़ियादह शिक्षा देता है। (७८) और अच्छे काम जिनका असर बाक़ी रहे अच्छा बदला मिलता है और उनका लौटआना भी अच्छा है। (७९) भला तुमने उस शख़्सको देखा जिसने हमारी आयतोंसे इनकार किया और कहनेलगा (क़यामत होगी) तो वहां भी मुझको माल और संतान मिलैगी। (८०) क्या उसको ग़ैबकी ख़बर लगगई है या इसने ख़ुदासे वादा करलियाहै। (८१) यद्यपि नहीं जो कुछ यह बकता है हम लिखलेते हैं और इसके हकमें सज़ा बढ़ाते चले जायगे। (८२) और यह जो (माल और औलाद) उसके पास है (आख़िरकार) हम उससे लेलेंगे और यह अकेला हमारे सामने आवेगा। (८३) और मुशरिकों ने ख़ुदा के सिवाय पूजित बना रक्खे हैं ताकि वे इनके मददगार हों। (८४) कभी नहीं, वह पूजित इनकी पूजाका इनकार करेंगे और उलटे इनके वैरी होजायेंगे। (८५) [रुकू ६] क्या तुमने नहीं देखा कि हमने

शैतानोंको काफ़िरोंपर छोड़ रक्खाहै कि वह उनको उकसाते रहतेहैं। (८६) तो (हे पैग़म्बर) तुम इन (काफ़िरों) पर (सज़ा उतरने की) जल्दी न करो हम उनके लिये दिन गिनरहे हैं। (८७) जिस दिन हम परहेज़गारों को खुदा के सामने मिहमानों की तरह जमा करेंगे। (८८) और पापियों को प्यासे नरक की ओर हांकेंगे। (८९) वहां शिफ़ारस का अधिकार न होगा, हां जिसने खुदा से वादा लिया है। (९०) और कोई २ कहते हैं कि खुदा बेटा रखता है (हे पैग़म्बर इनसे कहो कि) तुम ऐसी बुरी बात कहते हो। (९१) जिस से आसमान फटपड़े और ज़मीन फटजावे और पहाड़ कांपकर गिर पड़ें। (९२) इसलिये कि खुदा के लिये बेटा साबित करते हैं और इसलिये कि खुदा के लायक़ नहीं कि बेटा रक्खे। (९३) आसमान और ज़मीन में कोई नहीं है जो खुदा के आगे दास होकर न आवे खुदा ने इनको घेर लिया है और इनको गिन रक्खा है। (९४) और यह सब क़यामत के दिन अकेले उसके सामने आवेंगे। (९५) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिये खुदा दोस्त पैदा करैगा। (९६) तो (हे पैग़म्बर) हमने इस(कुरान)को तुम्हारी ज़बान मेंइस ग़र्ज़ से आसान करदिया है कि तुम इससे परहेज़गारों को खुशखबरी सुनाओ, झगड़ालुओंको सज़ासे डराओ। (९७) और इनसे पहिले हम बहुत जमाअतोंको मार चुकेहैं भला अब तुम उनमें से किसीको देखतेहो या उनमेंसे किसीकी आवाज़ सुनतेहो। (९८)

—— :*: ——

सूरे ताहा।

मक्के में उतरी इसमें १३५ आयतें और ८ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

रुकू १] (हे पैग़म्बर) हमने तुमपर कुरान इसलिये नहीं उत

कि तुम मिहनत उठाओ (१) (हां यह कुरान) शिक्षा है उसी के लिये जो खुदा से डरता है। (२) यह उसका उतारा हुआ है जिसने जमीन और ऊंचे आस्मानों को पैदा किया। (३) रहमान (कृपालु) अर्श तख़्तपर विराज रहाहै। (४) उसी का है जो कुछ आस्मानो मे है और जो कुछ ज़मीन मे है और जो कुछ दोनों के बीच मे है और जो कुछ मिट्टी के नीचे है उसी का है। (५) और अगर तू पुकार कर बात करै तो वह भेद को और अधिक छिपी हुई बात को जानता है। (६) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं अच्छे नाम उसी के हैं। (७) और क्या तुमने मूसा की पक्की बात सुनी है। (८) जब उनको आग दिखलाईदी तो उन्होंने अपने घरके लोगों से कहा ठहरो मुझको आग दिखाई दी है। (९) अजब नहीं उससे तुम्हारे लिये चिंगारी ले आऊं या आग से राह का पता मालूम करूं। (१०) फिर जब मूसा वहां आये तो उनको वहां आवाज़ आई कि हे मूसा। (११) मैं तेरा पालनकर्त्ता हूं तो अपनी जूतियां उतार डाल तू तोवा के पाक मैदान में है। (१२) और मैंने तुम को (पैग़म्बरी के लिये) चुना है तो जो कुछ आज्ञा होती है उसको कान लगाकर सुनो। (१३) कि मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवाय कोई पूजित नहीं तुम मेरी ही पूजा किया करो और मेरी याद के लिये नमाज़ पढ़ा करो। (१४) क़यामत आने वाली है मैं उसको छिपाता हूं ताकि हर आदमी डर से नेक काम करनेकी कोशिश करे। (१५) और क़यामत मे उसकी कोशिश का बदला मिले। (१६) तो ऐसा न हो कि जो आदमी क़यामत का यक़ीन नहीं रखता और अपनी दिली ख़्वाहिश के पीछे पड़ा है तुमको क़यामतसे रोक रक्खे कि तू तबाह हो जावे। (१७) और मूसा तुम्हारे दाहिने हाथ मे यह क्या है ?। (१८) (मूसा ने) कहा यह मेरी लाठी है मैं इस पर सहारा लगाताहूं और इसीसे अपनी बकरियोंके लिये पत्ते

झाड़ताहूं और इस में मेरे और भी मतलब हैं। (१६) फ़र्माया हे मूसा इसको (ज़मीन में) डाल दे । (२०) चुनांचि मूसाने लाठीडाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक भागता हुआ सांप बनगई । (२१) फ़र्माया इसको पकड़लो और डरो मत हम इसकी फिर वही पहिली हालत करदेंगे । (२२) और अपने हाथ को सुकेड़ कर अपनी बग़ल में रखलो (और फिर निकालो) तो वह बिना किसी तरह की बुराई के सफ़ेद निकलेगा (यह) दूसरा चमत्कार है। (२३) हम तुमको अपनी बड़ी निशानियां दिखलायें। (२४) (अच्छा तू) फ़िरऔन के पास चलाजा उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (२५) [रुकू २] (मूसाने) कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरा दिल खोल दे । (२६) और मेरे काम को मेरे लिये आसान कर। (२७) और मेरी जीभ की गांठ खोल दे। (२८) ताकि लोग मेरी बात समझें। (२६) और मेरे घरवालों मेसे काम बनाने वाला दे। (३०) मेरे भाई हारूं को। (३१) उससे मेरी हिम्मत बन्धा। (३२) और मेरे काम में उसे शरीक कर। (३३) ताकि हम दोनों तेरी पाकी अधिक बयान करें और तेरी यादगारी में बहुत लगे रहें। (३४) तू हमारे हाल को खूब देख रहा है। (३५) कहा मूसा तुम्हारी अभिलाषा पूरी हुई। (३६) और हम तुम पर एकबार और भी अहसान करचुके हैं। (३७) हमने तुम्हारी मां को हुक्म भेजा जिसका हाल आगे बताया जाता है । (३८) यह कि उस (मूसा) को संदूक़ मे रखकर दरिया में डालदो और दरिया उस (संदूक) को किनारे पर लगा देगा उसको हमारा दुशमन और मूसाका दुशमन (फ़िरऔन) ले लेगा और (हे मूसा) हमने तुझपर अपनी तरफ़ से मुहब्बत डाल दी। (३६) और मतलब यह था कि तू हमारी निगरानी में परवरिश पावे। (४०) जब कि तुम्हारी बहिन (विदेशी बनकर) कहती फिरती थी कि मैं

तुमको एक ऐसी दाया बतलाऊं जो उसको पाले। हमने तुमको फिर तुम्हारी मां के पास पहुँचा दिया ताकि उसकी आंखे ठंढी रहें और रंज न करें और तू ने एक आदमी को मारडाला तो हमने तुम को (उस) रंज से छुटकारा दिया गरज यह कि हमने तुमको खूब ठोंक बजाकर आज़माया। (४१) फिर तू कई बरस मदियनके लोगोंमें रहा फिर तू हे मूसा तू भाग्य से यहां आया। (४२) और मैंने तुमको अपने लिये चुनलियाहै। (४३) तू और तेरा भाई हमारे चमत्कार लेकर जाओ और हमारी यादगारीमें सुस्ती न करना। (४४) दोनों फिरऔन के पास जाओ उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (४५) फिर उससे नर्मी से बात करो शायद वह समझ जावे या डरे। (४६) दोनों (भाइयों) ने अर्ज़ की कि हे हमारे पालनकर्त्ता हम इस (बात) से डरते हैं कि हमपर ज़ियादती और सख़्ती न करने लगे। (४७) फ़र्माया डरो मत हम तुम्हारे साथ सुनने और

बनाया और तुम लोगों के लिये ज़मीन में सड़कें निकालीं और आस्मान से पानी बरसाया फिर हमही ने पानी के ज़रिये से भांति २ की पैदावारियां निकाली। (५५) खाओ और अपने चारपायों को चराओ इनमें अक़्लवालों के लिये निशानियां हैं। (५६) [रुकू२] इसी ज़मीन से हमने तुमको पैदा किया और इसी में तुमको लौटा कर लायँगे और इसी से तुम को दोबारा निकाल खड़ा करेंगे। (५७) और हमने फ़िरऔन का अपनी सभी निशानियां दिखलाईं इस पर भी वह झुठलाता और इनकार ही करता रहा। (५८)कहा कि मूसा क्या तू हमारे पास इसलिये आया है कि अपने जादू से हमको हमारे मुल्क से निकाल दे। (५९) हम भी ऐसाही जादू तेरे सामने ला पेशकरेंगे-तू हमारे और अपने बीच एक वादा ठहरा कि न हम उसके खिलाफ़ करें और न तू। (६०) (मूसा ने) कहा तुम्हारा वादा सजनईके दिनहै और यह कि लोग दिन चढ़े जमाहों। (६१) यह सुन कर फ़िरऔन लौटगया फिर उसने अपने हथखण्डे जमा किये फिर आ मौजूदहुआ। (६२) मूसाने फ़िरऔनियोंसे कहा कि तुम्हारी शामत आई है खुदा पर (जादू की) झूठी तुहमत (दोषारोपण) मत लगाओ वर्ना वह सज़ा से तुम्हें मटिया मेट कर देगा। (६३) और जिसने खुदा पर झूठ बान्धा वह मुराद को नहीं पहुँचा। (६४) फिर वह आपस में अपने कामपर झगड़ने लगे और छुपके २ मन्सूबा बान्धने लगे। (६५) सब ने कहा यह दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे (मिश्रियो के) उम्दह मज़हब को मिटा देवें। (६६) तो तुम भी अपनी कोई तदबीर उठा न रक्खो पांति बनकर आओ और जो आज ऊपर रहा वही जीतगया। (६७) (जादूगरों ने) कहा कि मूसा या तो यह हो कि तू (अपनी लाठी मैदान में) डाल और या यहहो कि हम पहले डालने

वाले बनें। (६८) (मूसाने) कहा नहीं तुमही डाल चलो तो बस मूसा को उनके जादू की वजह से ऐसा मालुम हुआ कि उनकी रस्सियां और लाठियां (सांप बनकर) इधर उधर दौड़ रही है। (६९) फिर मूसा अपने जी ही जीमें डरगया। (७०) हमने कहा मूसा डरो मत तुम्ही ऊंचे रहोगे। (७१) और तुम्हारे दाहिने हाथ मे जो (लाठी) है उसको (मैदान मे) डालदो कि (इन जादूगरों ने) जो (जादू) बना खड़ा किया है (सबको) हड़प कर जावे जो जादू बना खड़ा किया है जादूगरो का करतब है और जादूगर कही भी जाय उसको छुटकारा नही। (७२) (ग़र्ज़ मूसाकी लाठी ने सांप बनकर जादूगरों की सपलियोंको हड़प करलिया) तो (यह देखकर) जादूगरोने दण्डवत की कहनेलगे कि हम हारू और मूसा के पालनकर्त्ता पर ईमान लाये। (७३) (फिरऔन ने) कहा क्या इससे पहले कि हम तुमको इजाज़तदें तुम मूसा पर ईमान लेआये। हो न हो यह (मूसा) तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिसने तुमको जादू सिखायाहै तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर उलटे काटडालूं और तुमको खजूरोंके तनो पर सूली चढ़ाऊ और तुमको मालूम होजायगा कि हम (दो फरीकोंमें) किसकी मार जियादा सख्त और स्थाई(पायदार)है। (७४) (जादूगर) बोले कि खुलेर चमत्कार जो हमारे सामने आये उनपर और जिस (खुदा) ने हमको पैदाकिया है उस पर तो हम तुझ को किसी तरह विजय देनेवाले नही हैं तू जो करने वाला है करगुजर तू दुनियां की इसी ज़िन्दगी पर हुक्म चलासका है और हम अपने पालनकर्त्ता पर ईमान लाये हैं ताकि वह हमारे पापों को क्षमा करें और जादू को जिस पर तूने हम को लाचार किया और अल्लाह (की देन) बिहतर और चिरस्थाई है। (७५) कुछ शक नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने पालनकर्त्ता के सामने गया उसके लिये नरक है जिस मे वह न तो मरेहीगा और न जिन्दा

ही रहेगा । (७६) और जो ईमानदार खुदा के सामने हाज़िर होगा (और) उसने नेक काम भी किये होंगे तो यही लोग हैं जिन के बड़े दर्जे होंगे । (७७) रहने के बाग़ जिन के नीचे नहरें बहरही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे और (जो आदमी) पाक रहे उनका यही बदला है । (७८) [रुकू ४] और हमने मूसा की तरफ़ हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (इसराईल के बेटों) को रातों रात (मिश्र से) दरिया में (लाठी मार कर उनके लिये) सूखी सड़क बनाकर निकाल लेजा । (७९) तू उनके पकड़े जाने का डर और शंका मत कर । (८०) फिर फ़िरऔन ने अपना लशकर लेकर इसराईल के बेटों का पीछा किया फिर दरिया का जैसा कुछ (रेला) उन पर आया सो आया और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराही में डाला और सीधा रास्ता न दिखाया । (८१) हे इसराईल के बेटो हमने तुम को तुम्हारे दुशमन (फ़िरऔन) से छुटकारा दिया और तुम से तूर के दाहिनी ओर का वादा किया और हमने तुम पर मन[1] और सलवा[2] उतारा । (८२) (और कहा) अच्छी रोज़ी जो हमने तुम को दी है खाओ और इसके बारे में नटखटी मत दो (ऐसा करोगे) तो तुम पर हमारा ग़ज़ब उतरेगा और जिस पर हमारा ग़ज़ब उतरा तो (वह नरक के गढ़े में) जा गिरा । (८३) और जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाये और नेक काम करे फिर सच्ची राह पर (क़ायम) रहे तो हम उस के क्षमा करने वाले हैं । (८४) और हे मूसा तुम जल्दी करके अपनी क़ौम से कैसे आगे आगये । (८५) अर्ज़ की कि वह भी मेरे पीछे आरहे हैं और (हे मेरे पालनकर्ता) मैं जल्दी करके इसलिये तेरी ओर बढ़आया हूं कि तू खुश हो । (८६) फ़र्माया तुम्हारे पीछे हमने तुम्हारी क़ौमको

---

१ मीठी चीज़ जो रात में पत्तों पर जमजाती है ।

२ बटेर जैसी चिड़िया का मांस ।

एक और बलामें फांसदियाहै और उनको सामरीने भटकादिया। (८७) फिर मूसा ग़ुस्सा और अफ़सोस की हालतमें अपनी क़ौमकी तरफ़ वापिस आये। (८८) कहने लगे कि भाइयो क्या तुमसे तुम्हारे पालनकर्त्ता ने भली (किताब का) वादा नहीं किया था तो क्या तुमको मुद्दत लम्बी मालूम हुई या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता का ग़ज़ब आ उतरे और इसकारण से तुमने उस आयत के ख़िलाफ़ किया। (८९) कहने लगे हमने अपने अख़्तियारसे वादा नहीं तोड़ा बल्कि क़ौमके ज़ेवरों का बोझ हमपर लदाथा अब (सामरी के कहने से) हमने उसे (आगमें ला) डाला और इसीतरह सामरी ने भी ला डाला फिर (सामरी होने) लोगों के लिये बछड़ा बनाया जिसकी आवाज़ बछड़े कैसी थी फिर कहने लगे यही तो तुम्हारा पूजित है और मूसा का पूजित है और वह (मूसा बछड़े को) भूल (कर तूरपर चला) गया है। (९०) क्या इनलोगों को इतनी बात भी नहीं सूझ पड़ती थी कि बछड़ा इनकी बात का न तो उलटकर जवाब देसक्ता है और न इनके किसी हानिलाभ पर अधिकार रखता है। (९१) [रुकू ४] और हारूं ने (बछड़े की पूजा से) पहिले इनसे कहदिया था कि भाइयो इस बछड़े के सबब से तुम्हारी जांच की जारही है वर्ना तुम्हारा पालनकर्त्ता दयालु (रहमान)है तो मेरे कहे परचलो और मेरी बात मानो। (९२) कहनेलगे जबतक मूसा हमारे पास लौटकर न आवे हम तो बराबर इसीपर जमे बैठे रहेंगे। (९३) (मूसा ने हारू की तरफ़ इशारा किया) कहा कि हारूं जब तुमने इनको देखा था (कि वह लोग) गुमराह होगये तो तुमको क्या रोकने का कारण हुआ कि तुमने मेरी शिक्षा की पैरवी न की. क्या तुमने मेरा कहा न माना। (९४) (वह) बोले कि हे मेरे मां जाये भाई मेरे सिर और दाढ़ीको मत पकड़ो मैं इस (बात) से डरा कि (तुम वापिस आकर) कहीं यह न कहने

लगो कि तुमने इसराईल के बेटों में फूट डालदी और मेरी बात का पास न किया। (९५) (जब मूसाने सामरीसे) पूछा कि सामरी तेरा क्या मतलब है, कहा मुझे वह चीज़ दिखाई दी जो दूसरों को नहीं दिखाई दी, तो मैंने (जिबराईल) फ़िरिश्ते के पैर के निशान से एक मुट्ठी मिट्टी भरली फिर उसको बछड़े के पेट में डाल दिया (और वह बछड़े की बोली बोलने लगा) और यही बात मुझे उस समय भली लगी। (९६) (मूसाने) कहा चल (दूरहो) (इस) ज़िन्दगीमें तेरी यह सज़ा है कि ज़िन्दगीभर कहता फिरै कि मुझे छू न जाना (इसीलिये सामरियों के हाथ की चीज़ यहूदी नहींखाते) और तेरे लिये (क़यामत की सज़ा का) एकवादा है जो किसी तरह टलेगा नहीं और अपने पालनकर्त्ता (यानी बछड़े) की तरफ़ देख जिस पर तू जमा बैठा था इसको हम जलादेंगे और दरिया में बहादेंगे। (९७) लोगो तुम्हारा पूजित एक अल्लाह है जिस के सिवाय कोई पूजित नही उसके इल्म में हरएक चीज़ समा रही है। (९८) (हे पैग़म्बर) इसीतरह हम गुज़रे हुए हालात तुम को सुनाते हैं और हमने तुमको अपने पास से क़ुरान दिया। (९९) जिन लोगों ने इस से मुंह फेरा क़यामत के दिन एक बोझ लादे होंगे। (१००) और इसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्याही बड़ा बोझ है जो यह लोग क़यामत के दिन उठाये होंगे। (१०१) जिसदिन नरसिंहा फूंका जायगा और हम उसदिन अपराधियों को जमा करेंगे उनकी आंखें (डरके मारे) नीली होंगी। (१०२) वह आपस में चुपके २ कहेंगे कि दुनियां में हम लोग दसही दिन ठहरे होंगे। (१०३) जैसी २ बातें (यह लोग उसदिन) करेंगे हम उनसे अच्छीतरह जानकार हैं जो इनमें ज़ियादा जानकार होगा वह कहेगा नहीं तुम (दुनियां में) ठहरे होगे (तो) बस एकदिन। (१०४) [रुकू ६] और (हे पैग़म्बर) तुमसे पहाड़ों की बाबत

पूंछते हैं (कि क़यामत के दिन इनका क्या हाल होगा) तो कहो कि मेरा पालनकर्ता इनको उड़ा देगा। (१०५) और ज़मीन को मैदान हम वार कर छोड़ेगा जिसमें तू न तो कहीं मोड़ देखेगा और न कहीं ऊंचा नीचा। (१०६) उसदिन वे सब लोग बिना इधर उधर को मुड़े उसके पीछे हो जावेंगे और (मारे डर के) खुदा दयालु के आगे (सबकी) आवाज़ें बैठ जांयगी तू खुसर फुसर के सिवाय और कुछ न सुनेगा। (१०७) उसदिन किसीको सिफ़ारिश काम न आवैगी मगर जिसको रहमान (दयालु)ने इजाजत दी और उसका बोलना पसन्द आया। (१०८) जो कुछ लोगोंके सामने होरहा है और जो इनसे पहिले होचुका है वह सब कुछ जानता है और लोग खोज करके भी उसे क़ाबूमें नहीं लासक्ते। (१०९) और (क़यामतके दिन) हमेशा जीवित रहने वाले के सामने मुँह रगड़ते होंगे और उस दिन जो आदमी जुल्म का बोझ लादेगा उसी की तबाही है। (११०) और जो अच्छे काम करेगा और वह ईमान भी रखता होगा तो उसको बे इन्साफ़ी का डर न होगा। (१११) और ऐसे ही हमने अर्बी जबान का कुरान उतारा है और उसमें तरह २ के डर सुनादिये हैं ताकि लोग बच चलें या उनको सोच पैदा हो। (११२) पस अल्लाह सब से ऊंचा सच्चा बादशाह है और तू क़ुरान के लेने में जल्दी न कर जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो और प्रार्थना कर कि हे मेरे पालनकर्ता मेरी समझ बढ़ा। (११३) और हमने (पहले जमाने में) आदम से एक वादा लिया था सो आदम भूलगये और हमने उनमें कुछ हिम्मत न पाई। (११४) [रुकू ७] और जब हमने फ़िरिश्तों से कहा कि आदम के आगे दण्डवत करो तो सबही ने दण्डवत की मगर इबलीस ने इन्कार किया तो हमने (आदम से) कहा कि हे आदम यह (इबलीस) तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है तो ऐसा न हो

कि कहीं तुम दोनों को बैकुण्ठ से निकलवादे और तुम्हारी शामत आजावे। (११५) और यहां (बैकुण्ठ में) तो तुमको ऐसे मज़े हैं कि न तो तुम भूके रहोगे न नगे। (११६) और यहां तुम न प्यासे होगे न धूप में रहोगे। (११७) फिर शैतान ने आदम को फुसलाया और कहा हे आदम कहो तो तुमको हमेशगी का दरख़्त बताऊं कि जिसको खाकर हमेशा जीते रहो और ऐसी सल्तनत जो पुरानी नहो। (११८) चुनांचि दोनोंने दरख़्त के फलको खालिया (तो उन पर) उनके परदे की चीज़ें ज़ाहिर होगईं और अपने को (बैकुण्ठके) बाग़के पत्तोंसे ढांकनेलगे और आदमने अपने पालनकर्त्ताका हुक्म न माना और भटकगया। (११९) फिर उनके पालनकर्त्ताने क़बूल किया और उनकी ओर ध्यान दिया और राह दिखलाई। (१२०) फ़र्माया कि तुम दोनों एक दूसरेके दुशमन होकर यहां (बैकुण्ठ) से नीचे उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास हमारी तरफ़से शिक्षाआवे। (१२१) तो जो हमारी हिदायत पर चलेगा न मरेगा और न मारा जायगा। (१२२) और जिसने हमारी याद से मुंह मोड़ा तो उसकी ज़िन्दगी तंगी में होगी। (१२३) और क़यामतके दिन हम उसको अन्धा उठावेंगे। (१२४) वह कहेगा (हे मेरे पालनकर्त्ता) तूने मुझ को अन्धा क्यों उठाया और मैं तो देखता था। (१२५) (खुदा) फ़र्मायगा ऐसेही हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ खबर न की और इसीतरह आज तेरी खबर न ली जायगी। (१२६) और जो आदमी (हद से) बढ़चला और अपने पालनकर्त्ता की आयतों पर ईमान न लाया हम उस को ऐसाही बदला दिया करते हैं और आखिर की सज़ा (दुनियां की सज़ा से) बहुतही सख़्त और देरतक की है। (१२७) क्या लोगों को इस से हिदायत न हुई कि इन से पहिले हमने कितनी जमाअतों को मारडाला जो अपने गिरोहों में चलते फिरते थे जो लोग बुद्धिमान हैं उनके लिये इसी में

निशानियां हैं। (१२८) [रुकू ८] अगर पालनकर्त्ता ने पहिले से एक बात न फर्माई होती और मिआद मुक़र्रर न की होती तो सजा का आना ज़रूरी बात था। (१२९) (हे पैग़म्बर) जैसी बातें (यह काफ़िर) कहते हैं उन पर संतोष करो और सूरज के निकलने से पहिले और उसके डूबने से पहिले अपने पालनकर्त्ता की तारीफ के साथ माला फेरा करो और रात के वक्तों में और (दोपहर) दिन के लगभग तक माला फेरा करो, शायद तुम खुश होजाओ। (१३०) और (हे पैग़म्बर) हमने जो जुदी क़िस्म के लोगों को दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक़ के साज़ सामान इस्तेमाल के लिये देरक्खे हैं तू उनकी तरफ़ नज़र न दौड़ा कि उनको उन में अजमायें और तुम्हारे पालनकर्त्ताकी रोज़ी कही बिहतर और पायदार है। (१३१) और अपने घरवालो पर नमाज़ को ताक़ीद रक्खो और उसके पाबन्द रहो हम तुम से कोई रोज़ी नहीं मांगते। हम तुम को रोजी देते है और अन्त को परहेज़गारों ही का भला है। (१३२) और (यहूद और ईसाई) कहते है कि (यह पैग़म्बर) अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता क्या अगली किताबों की साक्षी इनके पास नहीं पहुंची। (१३३) और अगर हम क़ुरान से पहिले किसी सज़ा से उनको मरवादेते तो वह कहते हे हमारे पालनकर्त्ता ! तुमने हमारी तरफ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि बदनाम होनेसे पहिले हम तेरी आज्ञा पर चलते। (१३४) (हे पैग़म्बर इनसे कहो) कि सभी इन्तिज़ार कर रहे है तुम भी करो तो आगे चलकर तुम जानलोगे कि सीधी राह पर कौन है और किसने राह पाई। (१३५)

——:*:——

सत्तरहवां पारा ।

—— :*: ——

सूरे अम्बिया ।

मक्के में उतरी इसमें ११२ आयतें और ७ रुकू हैं ।

अल्लाह के नामसे जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है [रुकू १] लोगों के हिसाब का वक्त नज़दीक आलगा इसपरभी भूल में बेखबर हैं । (१) उनके पास उनके पालनकर्त्ता की ओर से जो नया हुक्म आता है उसे ऐसे (बेपरवाह होकर) सुनते हैं कि हँसी खेल बनाते हैं । (२) उनके दिल खेल में पड़े हैं और यह अन्यायी चुपके २ सलाहे बान्धते हैं कि यह (मुहम्मद) है ही क्या, तुमही जैसा एक आदमी है फिर जानते बूझते क्यो जादूमें पड़ते हो । (३) (पैग़म्बरने) कहा तुमलोग क्या सलाहें करते हो । जितनी बातें आसमान और ज़मीनमें होती है मेरे पालनकर्त्ता को मालूम है और वह सुनता जानता है । (४) बल्कि कहने लगे कि यह तो परेशान खयालात का जमाव है बल्कि इसने यह झूठी २ बातें अपने दिल से बनाली हैं बल्कि यह कवि है नही तो कोई चमत्कार दिखावे जैसे अगले पैग़म्बरो ने दिखलाये हैं । (५) जिन बस्तियों को हमने इनसे पहले मार डाला वे (चमत्कार देख कर भी) ईमान न लायीं तो क्या यह ईमान ले आवेंगे । (६) और हमने पहले भी आदमी ही (पैग़म्बर बनाकर) भेजे थे हम उन्हें वही (ईश्वरी संदेशा) दिया करते थे तो अगर तुम को मालूम नहीं तो किताब वालों से पूछ देखो । (७) और हमने उनके ऐसे शरीर भी नहीं बनाये थे कि खाना न खाते हों न वे लोग दुनिया मे हमेशा रहने वाले ही थे । (८) फिर हमने उनको सज़ा का वादा सच्चा कर दिखाया तो उन (पैग़म्बरों)

का और जिनको हमने चाहा (सज़ा से) वचा दिया जो लोग हद से वढ़गये थे (मर्यादा भ्रष्ट होगये थे) हमने उनको मारडाला। (९) हमने तुम्हारी तरफ़ किताव उतारी है जिस में तुम्हारा जिक्र है क्या तुम नही समझते। (१०) [रुकू २] और हमने वहुत सी वस्तियों को जहां के लोग सरकश थे तोड़ फोड़ कर वरावर कर दिया और उनके वाद दूसरे लोग उठा खड़े किये। (११) तो जव उन हलाक़ होने वालो ने हमारी सजाकी आहटपाई तो उस (वस्ती) से भागने लगे। (१२) हमने कहा भागो मत और उसी (दुनिया के साज़ व सामान) की तरफ़ लौट जाओ जिस में चैन करते थे और अपने मकानों की तरफ लौट जाओ-शायद तुम्हारी कुछ पूंछ हो। (१३) वह कहने लगे हाय हमारी कमवख़्ती हमही अपराधी थे। (१४) पस वह लोग वरावर यही पुकारा किये और यहां तक कि हमने उनको कटे हुये खेत वुझे हुये अंगारे (ऐसा वर्वाद) कर दिया। (१५) और हमने आस्मान और ज़मीन को और जो कुछ आस्मानो और ज़मीन में है उसको खेलके लिये पैदा नहीं किया। (१६) अगर हमको खेल वनाना मन्ज़ूर होता तो तजवीज़ से खेल वनाते हमको ऐसा करना मन्ज़ूर नही था। (१७) वात यह है कि हम सचको झूठपर खींच मारते हैं तो वह झूठके सिरको कुचलदेता है और झूठ उसीदम सिटिया मेटहोजाता है और लोगो तुमपर अफ़सोस है कि तुम ऐसी वाते वनातेहो (१८) और जो आस्मानो और जो ज़मीन में है उसीका है. और जो खुदा के पास है वह न तो उसकी पूजा से इन्कार करते हैं और न थकते है। (१९) रात दिन उस की याद में लगे रहते हैं सुस्ती नहीं करते। (२०) क्या इन लोगो ने ज़मीन की चीजो से ऐसे पूजित वनाये हैं जो इनको वना खड़ा करेंगे। (२१) अगर ज़मीन आस्मानो में खुदा के सिवाय और पूजित होते तो (ज़मीन आस्मान दोनो) वर्वाद होगये होते तो ऐसा

२ बातें यह लोग बनाते हैं अल्लाह जो तख्तका मालिक है वह इनसे पाक है। (२२) जो कुछ वह करता है उसकी पूछ पाछ उससे नही होती और लोगों से पूछ पाछ होनी है। (२३) क्या लोगों ने खुदा के सिवाय दूसरे पूजित बना रक्खे हैं (हे पैग़म्बर) तुम इनलोगों से कहो कि अपनी दलील तो पेशकरो। जो लोग मेरे साथ हैं उनकी किताब (कुरान) और जो मुझसे पहिले होचुके हैं उनकी किताबें (तौरात इन्जील आदि) मौजूद हैं बात यह है कि इनमेंसे अक्सर लोग सचको न समझकर मुहँ मोड़ते हैं। (२४) और (हे पैग़म्बर) हमने तुमसे पहिले जबकभी कोई पैग़म्बर भेजा तो उसपर हम हुक्म उतारते रहे कि हमारे सिवाय कोई पूजित नहो हमारा ही पूजा करो। (२५) और कोई २ कहते हैं कि रहमान (खुदा) बेटे रखता है (यानी फिरिश्ते) उसकी जात पाक है (फ़िरिश्ते खुदा के बेटे नहीं) बल्कि इज़्ज़तदार सेवक हैं। (२६) उसके आगे बढ़कर बात नहीं करसक्ते और वह उसीके हुक्म पर काम करते हैं। (२७) इनका अगला पिछला हाल उसको मालूमहै और यह (फ़िरिश्ते) किसी की सिफारिश नहीं करसक्ते। (२८) मगर उसकेलिये जिससे खुदा राज़ी हुआ और वह खुद अल्लाह के डरसे कांपते हैं। (२९) और जो उनमें से यह दावा करे कि खुदा नही मैं पूजित हूं तो उसको हम नरक की सज़ा देंगे। अन्यायियों को हम ऐसीही सज़ा दिया करते हैं। (३०) [रुकू ३] क्या जो लोग इन्कार करनेवाले हैं उन्हों ने नहीं देखा कि आस्मान और ज़मीन दोनो का एक पिंडासा था। सो हमने (उसको तोड़कर) ज़मीन और आस्मान को अलग २ किया और पानी से तमाम जानदार चीज़ें बनाईं तो क्या इसपर भी लोग ईमान नही लाते। (३१) और हमही ने ज़मीन में पहाड़ रक्खे ताकि लोगों को लेकर झुक न पड़े और हमही ने चौड़े २ रास्ते बनाये ताकि लोग राह पावें। (३२) और हमही ने आस्मान को

बचाव को छत बनाया और वे आस्मानी निशानियों को ध्यानमें नहीं लाते । (३२) और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चन्द्रमाको पैदा किया कि तमाम चक्र (दायरे) में फिरा करते है । (३३) और (हे पैग़म्बर) हमने तुमसे पहिले किसी आदमी को अमर नहीं किया पस अगर तुम मर जाओगे तो क्या यह लोग हमेशा जीवेंगे । (३५) हरजी को मौत चखनी है और हम तुमको बुराई और भलाई से आजमाकर जांचते हैं और तुम सबको हमारी तरफ़ लौटकर आना है । (३६) और (हे पैग़म्बर) जब इन्कार करने वाले तुमको देखते है तो (आपस में) तुम्हारी हँसी उड़ाने लगते हैं कि क्या यही है जो तुम्हारे पूजितों की बुरी तरह चर्चा करता है और वह लोग रहमान को नहीं मानते हैं । (३७) आदमी जल्दी का (पुतला) बनाया गया है हम तुमको अपनी निशानियां दिखाये देते हैं तो हमसे जल्दी मत मचाओ । (३८) और (इन्कार करने वाले) कहते हैं कि अगर तुम सच्चे होते तो वह (कयामत का) वादा कब (पूरा) होगा । (३९) काश इन्कार करने वाले उस वक़्त को जानें जब कि आग को न अपने मुंह से रोक सकेंगे और न अपनी पीठ पर से और न उनको मदद मिलेगी । (४०) बल्कि वह एकदम से उन पर आपड़ेगी और इनके होश खो देगी फिर वह उसे न हटा सकेंगे और न इनको मुहलत मिलेगी । (४१) और (हे पैग़म्बर) तुमसे पहले पैग़म्बरों के साथ भी हँसी की जा चुकी है तो जो लोग जिस (सज़ा) की हँसी उड़ाया करते थे उसने आकर इनको पकड़ा । (४२) [रुकू ४] (हे पैग़म्बर इन लोगों से) पूछो कि रहमान से तुम्हारी रात दिन कौन चौकीदारी कर सकता है मगर यह ख़ुदा के नाम से मुंह मोड़ते हैं । (४३) क्या हमारे सिवाय इनके कोई और पूजित हैं जो इनको बचा सके हैं न वह अपनी मदद कर सकते हैं और न वह हमारे

साथी है। (४४) बात यह है कि हमने इन लोगों को और इनके पुरुषों को (दुनियां में) बसाया यहां तक कि इनपर बहुतसी उम्रें गुज़र गईं (यह घमण्डी होगये) तो क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम मुल्क को चारों तरफ़ से दबाते चले आते हैं अब क्या वह (कुरेश) जीतने वाले हैं। (४५) (हे पैग़म्बर) कहो कि मैं ईश्वरी संदेशा (इलहाम) से डराता हूं (मगर यह लोग बहरे हैं) और बहरे को डराया जाय तो वह पुकार नहीं सुनते। (४६) और (हे पैग़म्बर) अगर इनको तुम्हारे पालनकर्त्ता की सज़ा की हवा भी लग जावे तो बोल उठेंगे कि अफ़सोस हमही अपराधी थे। (४७) और क़यामत के रोज़ (लोगों के काम की तौल के लिये) हम सच्ची तराजू लगा देंगे तो किसी पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा और अगर राईके दानेके बराबर भी होगा तो हम उसे (तौलने के लिये) लावेंगे और हिसाब लेने के लिये हम काफ़ी है। (४८) और हमने मूंसा और हारूं को फ़र्क़ करनेवाली किताब (तौरात) दी और रोशनी और शिक्षा डरवालों के लिये। (४६) जो बे देखे खुदा से डरते और उस घड़ी (क़यामत) से कांपते हैं। (५०) और यह (कुरान) बढ़ती की शिक्षा है जो हमीने उतारी है सो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते । (५१) [रकू ५] और इब्राहीम को हमने शुरूही से अच्छी समझ दी थी और हम उनसे जानकार थे । (५२) जब उन्हीं ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि (यह) बुत क्या हैं जिन को पूजापर जमें बैठे हो। (५३) वह बोले हमने अपने बापदादों को इन्हीं की पूजा करते देखा है। (५४) (इब्राहीम ने) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बड़े ज़ाहिरा भूल में पड़े रहे। (५५) वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या दिल्लगी करता है। (५६) (इब्राहीमने) कहा आसमान और जमीन का मालिक तुम्हारा

खुदा है जिसने इनको पैदा किया और मैं इसी बात का क़ायल हूं। (५७) खुदा की क़सम तुम्हारे पीठ फेरे पीछे मैं तुम्हारे बुतों का इलाज करूंगा। (५८) (इब्राहीम ने) बुतों को (तोड़ फोड़) टुकड़े २ करदिया मगर उनके बड़े (बुत) को इस ग़रज़ से (रहने दिया) कि वह उसकी तरफ़ आवेंगे। (५९) (जब लोगों को मूर्तों के तोड़े जाने का हाल मालूम होगया तो) उन्होंने कहा हमारे पूजितो के साथ यह काम किसने किया—वह कोई अन्यायी है। (६०) (कोई२) बोले कि कि वह नौजवान जिसको इब्राहीमके नाम से पुकारा जाता है उसको हमने इन (मूर्तों) का जिक्र करते हुए सुना है। (६१) (लोगों ने) कहा उसको आदमियों के सामने ले आओ ताकि लोग उसे देख लें। (६२) (ग़रज़ इब्राहीम बुलाये गये और) लोगों ने पूछा कि इब्राहीम हमारे पूजितों के साथ यह क्या हरकत तू ने की है। (६३) (इब्राहीम ने) कहा (नहीं) बल्कि यह (बुत) जो इन सबमे बड़ा है उसने यह हरकत की (होगी) और अगर यह (बुत) बोल सक्ते हो तो इन्ही से पूछ देखो। (६४) उस पर लोग अपने जो में सोचे और (आपसमें) कहने लगे कि लोगो तुम्हीं झूंठे हो। (६५) फिर अपने सिरों के बल औंधे (उसी गुमराही में) ढकेल दिये गये (और इब्राहीम से बोले कि) तुमको मालूम है कि यह (बुत) बोला नहीं करते। (६६) (इब्राहीम ने कहा) क्या तुम खुदा के सिवाय ऐसे पूजितों को पूजते हो कि जो न तुमको कुछ फायदाही पहुंचा सकें और न कुछ नुकसान ही पहुंचा सक्ते हैं। अफ़सोस तुमपर और उन चीज़ों पर जो तुम खुदा के सिवाय पूजते हो क्या तुम नहीं समझते हो। (६७) वह कहनेलगे कि अगर तुमको कुछ) करना है तो इब्राहीम को (आगमे) जलादो और अपने पूजितो की मदद करो। (६८) चुनांचि उन लोगों ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया) हम ने

(आग को) हुक्म दिया कि हे आग इब्राहीम के हक़में ठंढी और आराम देनेवाली हो जा। (६९) और लोगों ने इब्राहीमके साथ बुराई करनी चाही थी तो हमने उन्हींको ना कामयाब किया। (७०) और इब्राहीम को और लूतको सहीह सलामत निकाल कर उस ज़मीन (शाम) में ले जा दाखिल किया जिसमें हमने लोगोंके लिये (तरह २ की) बरकतें रक्खी हैं । (७१) और इब्राहीमको (एक बेटा) इसहाक़ और (पोता) याक़ूब दिया और सभीको हमने नेक बख्त किया। (७२) और उनको पेशवा बनाया कि हमारे हुक्मसे उनको शिक्षा देते थे और उनको नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने के लिये कहला भेजा और वे हमारी पूजा में लगे रहते थे। (७३) और लूत को हमने हुक्म और समझदी और उसको उस शहर से जहां के लोग गंदे काम करते थे बचा निकाला इसमें शक नहीं कि वह बड़े बुरे और बदकार थे। (७४) और लूत को हमने अपनी मिहर्बानी में लेलिया क्योंकि वह नेकबख़्तों में था। (७५) [रुकू ६] और (हे पैग़म्बर) नूह ने जब हमको पहिले पुकारा तो हमने उसकी सुनली और उसको और उसके लोगों को बड़ी मुसीबत से बचाया। (७६) और फिर हमने उसे उस कौम पर जो आयतों को झुठलाया करते थे जीत दी और वह लोग बुरे थे हमने उन सबको डुबोदिया। (७७) और (हे पैगम्बर) दाऊद और सुलेमान जब कि यह दोनों एक खेती के बारे में जिसमें कुछ लोगों की बकरियां जापड़ी थी फैसला करने लगे और हम उनके फ़ैसलाको देख रहेथे। (७८) फिर हमने फ़ैसला सुलेमानको समझा दिया और हमने दोनोंही को हुक्म और समझ (फ़ैसलेकी) दी थी और पहाड़ों और पक्षियों को दाऊद के आधीन करदिया कि उनके साथ पाकी बयान करें और करनेवाले हम थे। (७९) और दाऊद को हमने तुम लोगों के लिये एक लिबास (यानी बख्तर) बनाना

सिखादिया था ताकि लड़ाई मे तुमको बचाये-तो क्या तुम शुक्र करते हो। (८०) और हमने ज़ोर की हवा को सुलेमान के ताबे करादिया था कि उनके हुक्म से मुल्क शाम की तरफ़ चलती थी जिसमें हमने बरकते देरखी थी और हम सब चीज़ोसे जानकार थे। (८१) और कितने शैतानों को आधीन किया जो सुलेमानके लिये गोते लगाते (ताकि जवाहरात निकाल लावें) और हमही उनको थामे रहते थे। (८२) और (हे पैग़म्बर) सायूब जब उसने अपने पालनकर्त्ता को पुकारा कि मुझे दुःख पड़ा है और तू सब दया करनेवालों से ज़ियादा दया करनेवाला है । (८३) और हमने उनकी सुनली और जो दुःख उनको था उसको दुर करादिया और जो लोग उसके मरगये थे जिला दिये बल्कि इतनेही और जियादा करादिये हमारी कृपा थी और पूजा करनेवालोंके लिये यादगार है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस और जलफ़किल यह सब साबिर थे । (८५) और हमने इनको अपनी कृपा में ले लिया क्योंकि यह लोग नेकबख़्तों मे है । (८६) और मछलीवाले (यूनिस) को याद करो जब नाराज होकर चल दिये और समझे कि हम उसे पकड़ न सकेंगे तो अन्धेरों के अन्दर चिल्ला उठे कि तेरे

. जिसने अपनी शर्म की जगह यानी शिहवत की जगह की हिफ़ाज़त की तो हमने उसमें अपनी रूह फूंकदी और हमने उसको और उस के बेटे (ईसा) को दुनिया जहान के लोगों के लिये निशानी क़रार दिया। (९१) वह तुम्हारे दीन के लोग सब एक दीन पर हैं और मैं तुम्हारा पालनकर्त्ता हूं सो सब हमारी ही पूजा करो। (९२) और लोगों ने आपस में (फूटन करके) दीन को टुकड़े २ कर डाला सब हमारीही तरफ़ लौटकर आने वाले हैं। (९३) [रुकू ७] सो जो आदमी नेक काम करे और वह ईमान भी रखता हो तो उसकी कोशिश अकार्थ होने वाली नहीं है और हम उसको लिखते जाते हैं। (९४) और जिस बस्ती को हमने बर्बाद कर दिया हो मुमकिन नहीं कि वह लोग लौटकर आवें। (९५) हां इतना जरूर ठहरना पड़ेगा कि याजूज माजूज खोल दिये जावें-वह हर बुलन्दी से लुढ़कते हुए चले आवेंगे। (९६) और सच्चा वादा पास आ पहुंचे तो एकदम से काफ़िरों की आंखें खुली की खुली रहजावें (और बोल उठें कि) हम तो सुस्ती में रहगये बल्कि हमही अपराधी थे। (९७) तुम और जिन चीज़ों को अल्लाह के सिवाय पूजते हो यह सब नरक का ईंधन बनेंगे और तुमको नरक में जाना होगा। (९८) अगर यह पूजित अल्लाह होते तो नरक में न जाते और वह सब इसमें हमेशा रहेंगे। (९९) इन लोगों की नरक में चिल्लाहट लगी होगी और वह वहां न सुन सकेंगे। (१००) जिन लोगों के लिये हमारी तरफ से पहले से भलाई है वह नरक से दूर रक्खे जावेंगे। (१०१) उसकी भनक भी उन के कानों में न पड़ेगी और वह अपनी मनमानी मुरादों में हमेशा रहेंगे। (१०२) और उनको (क़यामत की) बड़ी भारी घबड़ाहट में भी डर न होगा और फिरिश्ते उनको (हाथों हाथ) लेंगे और (कहेंगे कि) यही तो तुम्हारा दिन है जिसका वादा तुमसे कर दिया गया था। (१०३) जबकि

हम आस्मान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में काग़ज़ लपेटते हैं जिसतरह हमने पहले पैदाइश शुरूअ की थी हम उसे दुहरावेंगे वादा हमारे ज़िम्मा है हमे करना है। (१०४) और हम ज़बूर में शिक्षा के बाद यह बात लिख चुके हे कि हमारे नेक बन्दे ज़मीन के वारिस होंगे। (१०५) जो लोग खुदा की पूजा करने वाले हैं उनके लिये इस मे मतलब है। (१०६) और (हे पैग़म्बर) हमने तुमको दुनिया जहान के लोगों पर कृपा करके भेजा है। (१०७) (हे पैग़म्बर) कहो कि मुझको तो हुक्म आया है कि अकेला खुदाही तुम्हारा पूजित है तो क्या तुम हुक्म बरदारी करते हो। (१०८) पस अगर न माने तो कहो कि मैंने तुमको एकसां तौर पर खबर करदी और मैं नहीं जानता कि जिस (सज़ा) का तुमसे वादा किया जाता है क़रीब आ लगी है या दूर है। (१०९) वह खुली बात को (जो मैंने जाहिरा कही) जानता है और तुम्हारी छिपी हुई बातें भी जानता है। (११०) और मै नहीं जानता शायद खुदा को उसमें तुम को जांचना है और एक वक्त तक वर्तवाना मंज़ूर है। (१११) (पैग़म्बर ने) फर्माया है कि मेरा पालनकर्त्ता ठीक फ़ैसला करदेगा और वह हमारा रहमान है जिससे हम उन बातों के मुक़ाबिले में जो तुम बनाते हो मदद मांगते है। (११२)

सूरे हज्ज ॥

जायगी और गर्भवती अपना गर्भ गिरा देदेगी और लोग (नशेमें) दिखाई देंगे हालांकि वह मतवाले नहीं बल्कि खुदा की सज़ा बड़ी सख़्त है। (२) और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो वे जाने खुदा (के बारे में) झगड़ते हैं और शैतान सरकशके पीछे हो जाते हैं। (३) शैतान की क़िसमत में लिखा है कि जो कोई उसका दोस्त बने (या जिसका वह दोस्त बने) उसे भटका कर नरक की राह बतावेगा। (४) लोगो ! अगर तुमको जी उठने में शक है तो हमने तुमको मिट्टी से फिर धातुसे फिर खून के लोथड़े से फिर पूरी और अधूरी बनी हुई बोटी से पैदा किया ताकि तुम पर ज़ाहिर करें और पेट में हम जिसको चाहते हैं वक्त नियत तक ठहराये रखते हैं फिर तुम को बच्चा बनाकर निकालते हैं ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंचो और कोई २ तुम में से मरजाता है और कोई २ सब से ज़ियादह निकम्मी उम्र की तरफ़ लौटाकर लाया जाता है कि जाने पीछे कुछ न समझने लगे और तू ज़मीन को खुश्क देखता है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह लहलहाने और उभरने लगती है। और भांति २ के खानेकी चीज़ें उगने लगती हैं। (५) यह इस बात की दलील है कि अल्लाह सचमुच है और मुर्दों को जिलाता है और वह हरचीज़ पर शक्तिशाली है। (६) और यह कि वह घड़ी (क़यामत) अवश्य आनेवाली है उसमें किसी तरह का शक नहीं और जो लोग कब्रोंमें हैं अल्लाह उनको उठायगा। (७) और लोगों में कोई २ ऐसेभी हैं कि जो अल्लाह के बारेमें बिना समझके और रोशन किताब के झगड़ा करते हैं। (८) घमण्ड से ताकि खुदा की राह से बहकावें ऐसो के लिये (सज़ा) संसार मे बदनामी है और क़या-मत के दिन हम उनको जलनेकी सज़ा चखायेंगे। (९) यह उनका बदला है कि जो तूने अपने हाथों किया वर्ना खुदा तो अपने बन्दों पर अन्याय नहीं करता। (१०) [रुकू २] और लोगामें कोई २

ऐसे भी है जो ख़ुदा की पूजा उखड़े २ करते हैं कि अगर कोई उनको फ़ायदा पहुँचा तो उसकी वजहसे इतमीनान होगया और कोई दुःख अपड़ा तो जिधर से आया था उल्टा उधरही लौटगया इसने दुनिया और आख़िरत दोनोंही गवाये ज़ाहिरा घाटा यही है। (११) ख़ुदा के सिवाय उन चीज़ों को बुलाते हो जो नफ़ा नुक़सान नहीं पहुंचाती—यही भूल कर दूर पड़ना है । (१२) उन चीज़ों को बुलाते हो जिनके फ़ायदे से नुक़सान जियादा क़रीब है ऐसा काम संभालने वाला भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा है। (१३) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनको अल्लाह बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी अल्लाह जो चाहे करे। (१४) जिसको यह ख़याल हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद न करेगा तो उसको चाहिये कि ऊपर की तरफ़ को एक रस्सी लटकाये फिर काटडाले फिर देखे कि उसकी यह तद्बीर गुस्सा खोती है या नहीं। (१५) और यो हमने यह क़ुरान खुली आयतों में उतारा है और अल्लाह जिसे चाहे समझ देवे। (१६) जो लोग ईमान लाये हैं और यहूदी और साबी, ईसाई और मजूस (अग्नि पूजक) और शिर्कवाले क़यामत के दिन उनके बीच अल्लाह फ़ैसला करदेगा अल्लाह सब बातों को देख रहा है। (१७) क्या तूने न देखा कि जो आसमानों में है और जो जमीन में है और सूर्य, चन्द्रमा, और नक्षत्र सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाये ख़ुदा के आगे सिर झुकाये हैं और बहुत से आदमी ऐसे भी हैं जिनपर सज़ा लाज़िम हो चुकी है और जिस को ख़ुदा बदनाम करे तो कोई उसको इज़्ज़त देने वाला नहीं ख़ुदा जो चाहे सा करे। (१८) यह दो (फ़रीक़ हैं) एक दूसरे के आपस में विरुद्ध अपने पालनकर्ता के बारेमें झगड़तेहैं (एक फ़रीक़ ख़ुदाको मानता है और एक नहीं मानता) तो जो लोग नहीं मानते उनके लिये

आगके कपड़े ब्योंतेहैं उनके सिरोंपर खौलता पानी डाला जायगा (१६) जिससे जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जांयगी। (२०) और उनकेलिये लोहेके हथोड़े मौजूद हैं। (२१) घुटे २ जब उससे निकलना चाहेंगे तो उसीमें फिर ढकेल दिये जावेंगे ताकि जलनेकी सज़ा चक्खाकरें। (२२) [रुकू ३] जो लोग ईमान लाये और उन्हो ने अच्छे काम किये उनका अल्लाह बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी वहां उनको गहना पहिनाया जायगा, सोने के कंगन और मोती और वहां उनकी पोशाक रेशमी होगी। (२३) और उनको अच्छी बातकी शिक्षा दीगई थी और उनको उसी (खुदा) की राह दिखाई गई थी जो तारीफ़ के योग्य है। (२४) जो लोग इन्कार करते हैं और खुदा की राह से और मसजिद हरामसे रोकते हैं जिसको हमने सब आदमियोंके लिये बनायी हैं चाहे वहांके रहने वाले हों या बाहर के हों सब को इकसां बनाई है। (२५) और उनको जो मसजिद हराम में शरारतसे इन्कार करना चाहे हम उसे दुःखदाई सज़ा चखादेंगे। (२६) [रुकू ४] और (हे पैग़म्बर) जब हमने इब्राहीम के लिये काबे के घर को जगह मुक़र्रर करदी। और (हुक्म दिया) कि हमारे साथ किसी को शरीक न करना और हमारे घरको परिक्रमा करनेवालों और ठहरने और खड़े होने, झुकने, सिजदा करनेवालों के लिये साफ़ और सुथरा रखना। (२७) और लोगोंमें हज्जके लिये पुकार दो कि लोग तुम्हारी तरफ़ और हरलागर ऊंटो पर सवार होकर दूरी की राह से चले आवें। (२८) अपने फ़ायदो के लिये हाज़िर हों खुदा ने जो मवेशी उनको दिये हैं ख़ास दिनोंमें उनपर खुदा का नामलें। (२६) उसमेंसे खावो और दुखिया फ़क़ीर का खिलाओ। (३०) फिर चाहिये कि अपना मैल कुचैल उतार दें और अपनी मन्नतें पूरी करें (और पूजा की जगह) पुराने काबे का परिक्रमा दें। (३१) यह सुन चुके और जो आदमी खुदा

के अदव की बड़ाई रक्खे तो वह उसके पालनकर्त्ता के यहां उसके हक़में अच्छा है और जो तुमको (क़ुरान से) पढ़कर सुनाया जाता है वह सब चौपाये तुमको हलाल हैं और बुतों की गन्दगी से बचते रहो और झूठी बात के कहने से बचते रहो। (३२) एक अल्लाहके होरहो उसके साथ साझी न ठहराओ और जो ख़ुदाका साझी बनावे गोया वह आस्मानों से गिरपड़ा फिर उसको परिन्दों (पंछियों) ने उचक लिया या उसको हवाने किसी और जगह पटकदिया। (३३) यह बात है और जो शख़्स उन चीज़ों का अदब लिहाज़ रक्खे जो ख़ुदा के नाम रक्खी गई है तो यह दिलों की परहेज़गारी है। (३४) तुमको चौपायों में ख़ास वक़्त तक फ़ायदे हैं फिर पुराने ख़ाने (काबा) के पास उनको पहुंचा देना है। (३५) [रुकू ५] हरएक गरोह के लिये हमने क़ुरबानी ठहरादी है ताकि ख़ुदा ने जो उनको मवेशी देरक्खे हैं उनपर ख़ुदा का नाम लेवें सो तुम सबका एक ख़ुदा है तो उसी के आज्ञाकारी बनो और गिड़गिड़ाने वाले बन्दों को ख़ुशख़बरी सुनादो। (३६) जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है उनके दिल कांप उठते हैं और जो दुःख उनपर आपड़े उसपर संतोष करने और नमाज़ पढ़ते और जो हमने उनको देरक्खा है उसमें से ख़र्च करते हैं। (३७) और हमने तुम्हारे लिये क़ुर्बानी के ऊंटों को उन चीज़ों मे करदिया है जो ख़ुदा के साथ नामज़द कीजाती हैं उनमें तुम्हारे लिये फ़ायदे हैं तो उनको खड़ा रखकर उनपर ख़ुदा का नाम लो फिर जब वह किसी पहलूपर गिरपड़ें तो उनमें से खाओ और सब्र पेशा और फ़क़ीरोंको खिलाओ हमने यों तुम्हारे बसमें इन जानवरों को करदिया है ताकि तुम शुक्र करो। (३८) ख़ुदा तक नहीं इनके गोश्त ही पहुंचते हैं और न इनके ख़ून बल्कि उसतक तुम्हारी पर-हेज़गारी पहुंचती है ख़ुदा ने इनको यों तुम्हारे क़ब्ज़े में करदिया है ताकि उसने जो तुमको राह दिखादी है तो इसके बदले में उसकी

बड़ाइयां करो। (३६) खुदा ईमानवालों से (उनके पाप) हटाता रहता है बेशक अल्लाह किसी दग़ाबाज़ कृतघ्नी को पसंद नहीं करता। (४०) [रुकू ६] जिनसे (काफ़िर) लड़ते हैं उनको (भी उन काफ़िरों से लड़ने की) इजाज़त है इसवास्ते कि उनपर ज़ुल्म होरहा है और अल्लाह उनकी मदद करने पर शक्तिशाली है। (४१) यह वह हैं जो इसबात के कहने पर कि हमारा पालनकर्त्ता अल्लाह है नाहक अपने घरों से निकाल दिये गये और अगर अल्लाह एक दूसरे से न हटाया करता तो (ईसाइयों की) पूजा की जगहों और गिर-जाओं और (यहूदियों की) पूजा की जगहों और मुसल्मानों की मसजिदें जिनमें अधिकता से खुदा का नाम लिया जाता है कभीके ढाये जाचुके होते और जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह अवश्य उसकी मदद करेगा। अल्लाह ज़बरदस्त ज़ोरावर है। (४२) यह लोग अगर हम इनके पांव ज़मीन में जमादें तो नमाज़ें पढ़ेंगे और खैरात देंगे और अच्छे काम के लिये कहेंगे और बुरे कामों से मने करेंगे और सब चीज़ों का अन्त तो खुदाही के हाथ है। (४३). और (हे पैग़म्बर) अगर तुमको झुठलाये तो इनसे पहिले नूह (के गिरोह) के लोग और आद और समूद के झुठलाये जाचुके हैं। (४४) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम और मदीने के रहनेवाले (अपने २ पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं और मूसा झुठलाये जाचुके हैं तो हमने काफ़िरों को मुहलतदी फिर उनको धर पकड़ा सो हमारी नाराज़गी कैसी थी। (४५) बहुत बस्तियां जो ज़ालिम थीं हमने उनको मारडाला पस अपनी छत्तों पर गिरपड़ी हैं और (कितने) कुए बेकार और पक्के महल वीरान पड़े हैं। (४६) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं जो इनके ऐसे दिल होते कि उनके ज़रिये से समझते और ऐसे कान होते कि उनके ज़रिये से सुनते। बात यह है कि कुछ आंखें अन्धी नहीं हुआ करतीं बल्कि दिल

जो छाती में है वह अन्धे हो जाया करते हैं । (४७) और (हे पैग़म्बरो) तुम से सज़ाकी जल्दी मचा रहे हैं और ख़ुदा तो कभी अपना वादा खिलाफ़ करने का नहीं और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे पालनकर्ता के यहां तुम लोगों की गिनती के मुताबिक़ हज़ार वर्ष के बराबर एकदिन है । (४८) और बहुत सी बस्तियां हैं जिनको हमने ढील दिया फिर उनको पकड़ा और हमारी तरफ़ लौट कर आना है । (४६) [रुकू ७] (हे पैग़म्बर) कहो कि मैं तुमको ज़ाहिरा (सज़ा) से डरानेवाला हूं । (५०) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने नेक काम किये उनके लिये इज्ज़त की रोजी है । (५१) और जो लोग हमारी आयतों को हराने के लिये दौड़ते हैं वही नरक वाले है । (५२) और (हे पैग़म्बर) हमने तुम से पहिले कोई ऐसा पैग़म्बर नही भेजा और कोई ऐसा नबी कि उसको यह मामला पेश न आया हो कि जब वह ख्याल बान्धनेलगा शैतान ने उसके ख्याल में कुछ न कुछ डाल दिया है फिर ख़ुदा ने शैतान

लाये और उन्होंने नेक काम किये वह आराम के बाग़ों में होंगे। (५७) और जो इन्कार करते और हमारी आयतोंको झुठलाते रहे तो यही हैं जिनको बदनामी की सज़ा होगी। (५८) [रुकू ८] और जिन लोगों ने खुदा की राह में घर छोड़े फिर मारेगये या मरगये उनको ज़रूर उमदा रोज़ी देगा और खुदाही सबसे अच्छी रोज़ी देनेवाला है। (५९) वह उनको ऐसी जगह पहुंचावेगा जैसी वह चाहेंगे और अल्लाह जानकार बरदाश्त करने वाला है। (६०) यह सुनचुके और जिस आदमीने उसीक़दर सताया जितना कि यह शख़्स सताया गया है फिर उसपर ज़ियादती हुई तो इसकी खुदा ज़रूर मदद करेगा खुदा क्षमा करनेवाला बख़शने वाला है। (६१) यह इस वजह से है कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है अल्लाह सुनता देखता है। (६२) यह इस वजह से है कि अल्लाहही सचमुच है और जिनको (इन्कारी) खुदा के सिवाय पुकारते हैं वह झूठे हैं और इस सबब से अल्लाह ही बड़ा है। (६३) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आस्मान से पानी बरसाता है फिर ज़मीन हरी होजाती है बेशक अल्लाह छिपी चीज़ें जानता खबरदार है। (६४) उसी का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है अल्लाह बेपरवाह और तारीफ़ के लायक़ है। (६५) [रुकू ९] क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने उन चीज़ों को जो ज़मीन में हैं तुम लोगों के वश में दिया है और किश्ती उसके हुक्म से नदी में चलती है और आस्मान ज़मीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से कुछ शक नहीं कि अल्लाह आदमियों पर बड़ी मिहरबानी और मुहब्बत रखता है। (६६) और वही है जिसने तुम में जान डाली फिर तुम को मारता है फिर जिलावेगा बेशक इन्सान बड़ा कृतघ्नी (नाशुक्रा) है। (६७) (हे पैग़म्बर) हमने हर गिरोह के लिये (पूजा के) तरीक़े क़रार दिये कि वह उनपर

चलते है तो इन लोगों को चाहिये कि तुझ से इस काम में झगड़ा न करें और तुम अपने पालनकर्त्ता की तरफ बुलाये चले जाओ बेशक तुम सीधी राह पर हो। (६८) और अगर तुम से झगड़ा करें तो कहदो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है। (६९) जिन बातो में तुम आपस में भेद डालते हो अल्लाह क़यामत के दिन झगड़ों का फ़ैसला करदेगा। (७०) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आस्मान और ज़मीन मे है अल्लाह उसे जानता है यह किताब में लिखा हुआ है यह अल्लाह पर आसान है। (७१) और खुदा के सिवाय उन चीज़ो की पूजा करते है जिनके लिये न तो खुदा ने कोई सनद उतारी है और न इनके पास कोई इसकी अक़ली दलील है और अन्यायियों का कोई भी मददगार न होगा। (७२) और (हे पैग़म्बर) जब इनको हमारी खुली २ आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम काफ़िरों के चेहरो में नाखुशी देखते हो क़रीब है कि यह लोग क़ुरान सुनाने वालों पर हमला कर बैठें (हे पैग़म्बर) कहो कि इससे भी बुरी (और एक चीज) सुनाऊं वह नरक है जिसका वादा खुदा इन्कारियों से करता है—बुरा ठिकाना है। (७३) [रुकू १०] लोगो एक मिसाल बयान की जाती है तो उस को

में से ईश्वरीय संदेशा पहुंचाने के लिये चुनलेता है। (७६) वह उनके अगले और पिछले हालतों को जानता है और सब कामों की पहुंच अल्लाह ही पर है। (७७) हे ईमान वालो रुकू करो और सिजदा करो और अपने पालनकर्त्ता की पूजा करो और भलाई करते रहो शायद तुम्हारा भला हो। (७८) और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसा कि उस में कोशिश करने का हक़ है उसने तुम को चुन लिया और दीन में किसी तरह की सख़्ती नहीं की दीन तुम्हारे बाप इब्राहीम का था उसी ने तुम्हारा नाम पहले से मुसलमान रक्खा और इस में (भी) ताकि पैग़म्बर तुम्हारे मुक़ाबिले में गवाह हो और तुम (दूसरे) लोगों के मुक़ाबिले में गवाह हो तो नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह ही का सहारा पकड़ो वही तुम्हारे काम का संभालने वाला है खूब मालिक है और खूब मददगार है। (७९)

अठारहवां पारा।

सूरे मोम्नून।

मक्के में उतरी इसमें ११९ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है

[रुकू १] ईमानवाले मुराद को पहुँचगये। (१) वह जो अपनी नमाज़ में नवे हैं। (२) और वह जो निकम्मी बात पर ध्यान नहीं करते। (३) और वह जो जकात दिया करते हैं। (४) और वह जो अपनी शर्मगाहों (शिहवत की जगह) की रक्षा करते हैं। (५) मगर अपनी बीवियों और बान्दियों के बारे में

उलाहना नहीं है। (६) फिर जो कोई उसके सिवाय ढूंढ़े तो यही लोग हद्द से बाहर निकले हुये (मर्यादा भ्रष्ट) हैं। (७) और वह जो अपनी अमानतों और क़ौल (प्रतिज्ञा) को ख़्याल में रखते हैं। (८) और जो अपनी नमाज़ों के पाबन्द हैं। (९) यही लोग वारिस हैं। (१०) जो बैकुण्ठ के वारिस होंगे वही उसमें हमेशा रहेंगे। (११) और हमने आदमी को सनी मिट्टी से बनाया है। (१२) फिर हमने उसको ठहरने वाली जगह पर वीर्य्य बनाकर रक्खा। (१३) फिर हमने वीर्य्य से लोथड़ा बनाया। फिर हमने लोथड़े की बन्धी हुई बोटी बनाई फिर बन्धी बोटी की हड्डियां बनाईं, फिर हड्डियों पर गोश्त मढ़ा फिर उसको एक नई सूरत में बना खड़ा किया सो अल्लाह की बरकत है जो सबसे अच्छा बनाने वाला है। (१४) फिर इसके बाद तुम को मरना है। (१५) फिर क़यामत के दिन तुम उठा खड़े किये जाओगे। (१६) और हमने तुम्हारे ऊपर सातराह (आस्मान) बनाये और पैदा करने में हम अनाड़ी न थे। (१७) और हमने नापकर आस्मान से पानी बर्षाया फिर उसको ज़मीन में ठहरा दिया और हम उस पानी को ले जा सक्ते

पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तो क्या तुमको डर नहीं लगता। (२४) इस पर उनकी क़ौमके सर्दार जो इन्कारी थे कहने लगे यह भी एक आदमी है जो तुमसे बड़ा बनना चाहता है और अगर खुदाको (पैग़म्बर ही भेजना) मंजूर होता तो फ़िरिश्तोंको उतारता–हमने तो ऐसीबात अपने अगले बापदादा से नहीं सुनी। (२५) हो नहो यह एक आदमी है जिसको जुनून (उन्मत्तता) होगया है सो एक खास वक्ततक उसकी राह देखो। (२६) नूहने दुआ मांगी कि हे मेरे पालनकर्त्ता जैसा इन्हों ने मुझे झुठलाया है तूही मेरी मदद कर। (२७) इसपर हमने नूहको हुक्म भेजा कि हमारे आंखों के सामने और हमारे हुक्म से एक नाव बनाओ फिर जब हमारी आज्ञा आवे और तनूर (ज़मीनसे पानी) उबलने लगे। (२८) तो नावमें हरएक (जीवधारी) मेंसे (नर और मादा) दो २ का जोड़ा और अपने घरवालों को बैठालो मगर उनमें से जिन (नूह की स्त्री और बेटे) की बाबत आज्ञा होचुकी है और अन्यायियों के बारे में मुझसे न बोल वह डूबेंगे। (२९) फिर जब तुम और तुम्हारे साथी नाव में बैठजाओ तो कहो कि खुदा का शुक्र है जिसने हमको ज़ालिम लोगोंसे छुटकारा दिया। (३०) और कहो कि हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको बरकतका उतारना उतार और तू सब उतारनेवालों से अच्छा है। (३१) इसमें निशानियां हैं और हम जांचनेवाले हैं। (३२) फिर हमने उनके बाद एक और संगत उठाई। (३३) और उन्हीं में से (सालह को) पैग़म्बर बनाकर भेजा कि खुदा की पूजाकरो उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं तो क्या तुमको डर नहीं लगता। (३४) [रुकू २] और उसकी क़ौम के सर्दार जो इन्कारी थे और क़यामतके आने का झुठलाते थे और दुनियां की ज़िन्दगी में हमने उनको आराम दियाथा कहने लगे कि यह (सालह) तुम्हीं जैसा आदमी है जो तुम खाते हो यहभी

खाता है और जो (पानी) तुम पीते हो यह भी पीता है। (३५) और अगर तुम अपने कैसे आदमी के कहने पर चले तो तुम बेशक खराब हुए। (३६) (यह शख्स) तुमसे कहता है कि जब तुम मरजाओगे और तुम्हारी मट्टी और हड्डियां रहजावेंगी तो तुम दुबारा निकाले जाओगे। (३७) जो तुम्हें वादा दियाजाता है नहीं होसक्ता नहीं होसक्ता। (३८) और कुछ नही यह हमारी दुनियां का जीना है और हम जीते और मरते हैं और हम उठाये न जावेंगे। (३९) हो नहो यह (सालह) ऐसा आदमी है जिसने खुदा पर झूंठ बान्धा है और हमतो इसका यक़ीन नही करते। (४०) (सालहने) कहा हे मेरे पालनकर्ता मेरी मददकर इन्होंने मुझे झुठलाया है। (४१) (खुदा ने) फ़र्माया थोड़े दिनों बाद पछतायेंगे। (४२) चुनांचि सच्च के बमूजिब उनको चिघारने आ पकड़ा और हमने उनका कूड़ा करदिया (कुचल दिया) ताकि अन्यायी लोग दूर होजावें। (४३) फिर उनके बाद हमने और संगत (गिरोह) उठाई। (४४) कोई संगत अपने वक़्त से न आगे बढ़सक्ती न पीछे रहसक्ती है। (४५) फर हम लगातार अपने पैग़म्बर भेजते रहे—जब किसी गिरोह का

(५१) और हमने मरियम के बेटे (ईसा) और उनकी मां को निशानी बनाया और उन दोनों को एक ऊंची जगह पर जहां पड़ाव और श्रोता (चश्मा) था ठहरावदिया। (५२) [रुकू ४] हे पैग़म्बरो सुथरी चीज़ें खाओ और भले काम करो जैसे काम तुम करते हो मैं जानता हूं। (५३) और यह सब तुम्हारे दीन के सब एक दीन पर हैं और मैं तुम्हारा पालनकर्त्ता हूं मुझ से डरते रहो। (५४) फिर लोगों ने आपस में फूट करके अपना दीन जुदा २ करलिया जो जिस फ़िर्क़े के पास है वह उस से रीझ रहा है। (५५) तो (हे पैग़म्बर) तुम एकवक्त तक इनको इनकी ग़फ़लत में रहने दो। (५६) क्या ऐसे लोग ख़्याल करते हैं जो हम माल और औलाद इनको दिये जारहे हैं। (५७) इनको लाभ पहुँचाने में हम जल्दी कररहे हैं बल्कि यह समझते नहीं। (५८) जो लोग अपने पालन-कर्त्तासे डरते हैं। (५९) और जो अपने पालनकर्त्ताकी आयतोंको मानते हैं। (६०) और जो अपने पालनकर्त्ता के साथ शरीक नहीं ठहराते और जितना कुछ देते बनताहै (खुदाकी राहमें) देते हैं और उनके दिलों को इसबात का खटका लगा रहता है कि उनको अपने पालनकर्त्ता की ओर लौटकर जाना है। (६१) यही लोग नेक कामों में जल्दी करते हैं और उनके लिये लपकते हैं। (६२) और हम किसी आदमी को ताक़त से बढ़कर बोझ नहीं डालते और हमारे यहां (लोगोंके कामका) रजिस्टर है जो ठीक हाल बताता है और उनपर अन्याय न होगा। (६३) लेकिन इनके दिल इस बात से ग़ाफ़िल हैं और इन कामों के सिवाय और कामों में लगे हैं। (६४) यहांतक कि जब हम इनमेंसे खुशहाल लोगों को सज़ा में धरपकड़ेंगे तो यह लोग चिल्ला उठेंगे। (६५) मत चिल्लाओ आज के दिन तुम हमसे मदद न पाओगे। (६६) (कुरान में से) हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनाई जाती थीं और तुम उल्टे भागते थ। (६७)

तुम क़ुरान से अकड़ते हुए बेहूदा बकवाद करते हो। (६८) क्या इन लोगों ने (क़ुरान में) ध्यान नहीं दिया था इनके पास एकबात आई जो इनके अगले बापदादों के पास नहीं आईथी। (६९) या यह लोग अपने पैग़म्बर से जानकार थे और उसे ऊपरी समझते है। (७०) या कहते हैं कि इसको जनून है बल्कि रसूल इनको सचबात लेकर आयाथा और इनमेंसे बहुतोंको सचबात बुरी लगती है। (७१) और अगर सच्चा खुदा उनकी खुशी पर चलता तो आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है खराब हो गया होता, बल्कि हमने इनको इन्हीं की शिक्षायें लाकर सुनाई सो वे अपनी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं देते। (७२) या (हे पैग़म्बर) तुम इनसे कुछ मज़दूरी मांगते हो तो तुम्हारे पालनकर्त्ताकी दैन भली है और वह रोजी देनेवाला बिहतर है। (७३) और (हे पैगम्बर) तू इनको सीधी राहपर बुलाता है। (७४) और जिन लोगों को क़यामत का यक़ीन नहीं है वही रस्ते से हटे हुये हैं। (७५) और अगर हम इनपर रहम करजावें और जो कष्ट इनको पहुंचना है दूर कर देवें तो भटके हुये अपनी गुमराही में हमेशा पड़े रहेंगे। (७६) और हमने इनको सज़ा में फांसा तोभी यह लोग अपने पालनकर्त्ता

तब क्या हम (दोबारा ज़िन्दा करके) उठा खड़े किये जावेंगे (८३) हम को और हमारे बड़ों को इस का वादा पहले से मिल चुका है कि हो न हो यह अगले लोगों के ढकोसले हैं। (८४) (हे पैग़म्बर) पूछो कि अगर तुम समझते हो तो बताओ कि ज़मीन और जो कुछ उसमें है किसके हैं। (८५) कहेंगे कि अल्लाह का (उनसे) कहो कि फिर क्यों नही ध्यान देते। (८६) (हे पैग़म्बर इन से) पूछो कि सात आस्मानों का मालिक और उस बड़े तख़्त का मालिक कौन है। (८७) अब बतावेंगे कि अल्लाह—कहो फिर तुम क्यो नही डरते। (८८) (हे पैग़म्बर इन लोगो से) पूछो कि अगर जानते हो तो बताओ कि हर चीज़ पर अधिकार किसका है और कौन है जो बचाता है और उससे कोई बचा नहीं सक्ता। (८९) अब बतावेंगे अल्लाह का, कहो, तो फिर कहां से जादू पड़ जाता है। (९०) सच यह है कि हमने सच २ बात इन को पहुंचा दी है और बेशक यह झूठे हैं। (९१) अल्लाह ने किस को बेटा नही बनाया और न उसके साथ कोई और खुदा है अगर ऐसा होता तो हर खुदा अपने बनाये को लिये फिरता और एक दूसरे पर चढ़ जाता जैसी २ बातें यह (लोग) बयान करते हैं वह उन से निराला है। (९२) ज़ाहिरा और छिपी बात का जानने वाला उससे बहुत ऊपर है और ये शरीक बताते हैं। (९३) [रुकू ६] (हे पैग़म्बर) तुम यह मांगो कि हे मेरे पालनकर्ता जिस (सज़ा) का वादा इन से किया गया है तू मुझे कभी दिखादे। (९४) (हे मेरे पालनकर्त्ता) ज़ालिम लोगों में मुझे न शामिल कर लेना। (९५) और हे पैग़म्बर हम को सामर्थ्य है कि जिस (सज़ा) का वादा इन (काफ़िरों) से कर रहे हैं तुम को दिखा दें। (९६) (हे पैग़म्बर) बुरी बात के बदले में वह कह जो भली है . खूब जानते हैं जो यह बताते हैं। (९७) और हे पाल-

नकर्त्ता मैं शैतानों की छेड़ से तेरी शरण चाहता हूं। (९९) शरण मांगता हूं इससे कि शैतान मेरे पास आवें। (९९) और यहां तक कि जब इन में से किसी की मौत आती है कहता है कि हे मेरे पालनकर्त्ता मुझे फिर (दुनियां में) भेजे। (१००) (ताकि दुनियां) जिसे मैं छोड़ आया हूं उस में (फिर जाकर) भले काम करूं- यह एक बात है जिसे वह कहता है उनके पीछे अटकाव है जबतक कि मुर्दों में से उठाये जांय। (१०१) फिर जब नरसिहा (सूर) फूंका जायगा तो उस दिन लोगों में न तो रिश्तेदारियां (बाक़ी) रहेंगी और न एक दूसरेकी बात पूछेंगे। (१०२) फिर जिनका पल्ला भारी निकलेगा तो यही लोग मुराद पावेंगे। (१०३) और जिनका पल्ला हल्का होगा तो यही लोग हैं जो अपनी जानें हारगये हमेशा नरकमें रहेंगे। (१०४) आग उनके मुहों को झुलसाती होगी और वह वहां बुरे मुंह बनाये होंगे। (१०५) क्या हमारी आयतें तुमको पढ़२ कर नहीं सुनाई जातीथीं और तुम उनको झुठलातेथे। (१०६) वह कहेंगे हे हमारे पालनकर्त्ता हमको हमारी कमबख्ती ने आ दबाया

कम रहे होंगे गिनने वालों से पूछ देख। (११४) फर्माया तुम उसमें बहुत नहीं थोड़ेही रहेहोगे अगर तुम जानते होते। (११५) क्या तुम ऐसा खयाल करते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और यह कि तुमको हमारी तरफ़ फिर लौट कर आना नही है। (११६) सो खुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊंचा है उसके सिवाय कोई पूजित नही। वही बड़े तख़्त का मालिक है। (११७) और जो शख़्स खुदा के सिवाय किसी और पूजित को बुलाता है उसके पास इस (शामिल करने) की कोई दलील नहीं तो बस उसके पालनकर्त्ता के ही यहां उसका हिसाब होना है बेशक इन्कारी लोगों का भला न होगा। (११८) और हे पैग़म्बर कहो कि हे मेरे पालनकर्त्ता क्षमाकर, और कृपा कर और तू कृपा करने वालो से भला है। (११९)

—:※:—

सूरेनूर।

मदीने में उतरी इसमें ६४ आयतें और ९ रुकू हैं॥

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। [रुकू १] एक सूरत है जिसको हमने उतारी और हमने लाज़िम कर दिया है और हमने इसमें खुले २ हुकम उतारे शायद तुम याद रक्खो। (१) मर्द और औरत छिनाला करें तो उन दोनों मे से हरएक के १०० कोड़े मारो और अगर अल्लाह का और आखिर दिनका विश्वास रखते हो तो अल्लाह की आज्ञा की तामील में तुम को उनपर तरस न आना चाहिये और मुसलमानों को चाहिये कि जब उनपर मार पड़े देखने आवें। (२) व्यभिचारी आदमी व्यभिचारिणी से विवाह करेगा और शिर्कवाली औरत शिर्कवाले मर्द से विवाह करेगी और यह बात ईमानवालों पर हराम है। (३) और

जो लोग पाक औरतों पर (छिनाले का) लफ़ंट लगायें और चार गवाह न ला सकें तो उनके अस्सी चाबुक मारो और कभी उनकी गवाही क़बूल न करो और ये लोग बे हुक्म हैं। (४) मगर जिन्हों ने ऐसा किये पीछे तौबा की और अपनी आदत दुरुस्त करली तो अल्लाह बख्शनेवाला मिहरबान है। (५) और जो लोग अपनी बीबियो पर छिनाले का लफ़ंट लगायें और उनके पास सिवाय उन की जानो के और गवाह न हों तो उनमें से एक की गवाही चार दफ़े खुदा की क़सम के साथ ले लेना चाहिये कि वह सच्चो में हैं। (६) और पांचवें दफे यों कहे कि अगर वह झूंठ बोलता हो तो उसपर अल्लाह की लानत पड़े। (७) और (मर्द के हल्फ़ किये पीछे) औरत से इस तरह पर सज़ा टल सक्ती है कि वह चार बार खुदा की सौगन्ध खाकर बयान कर दे कि यह आदमी बिल्कुल झूंटा है। (८) और पांचवें (बार) यों कहे कि अगर यह (आदमी अपने दावे में) सच्चा है तो मुझ पर खुदाई का कोप पड़े। (९) और अगर तुम पर अल्लाह की मिहर और कृपा न होती तो अल्लाह क्षमाकरने वाला हिक्मत वाला है। (१०) [रुकू २]

तुम पर दुनियां और क़यामत में खुदा की कृपा और मिहर न होती तो इस चर्चे में तुम पर बड़ी सज़ा उतरती–जब तुमने लफ़ंटको अपनी ज़बानों पर लिया और अपने मुँह से ऐसी बात कहने लगे जिसको तुम न जानते थे और तुम उसे हल्की बात समझे हालांकि अल्लाह के नज़दीक वह बुरी बातहै। (१४) और जब तुमने ऐसी बात सुनीथी क्यों न बोल उठे कि हमको ऐसी बात मुँहसे निकालनी शोभा नहीं देती अल्लाह तो पाकहै और यह बड़ा लफ़ंटहै। (१५) खुदा तुमको शिक्षा देताहै कि अगर तुम ईमान रखते हो तो फिर कभी ऐसा न करना। (१६) और अल्लाह (अपने) हुक्म तुमसे खोलकर बयान करताहै और अल्लाह हिकमतवाला जानकारहै। (१७) जो लोग चाहतेहैं कि ईमानवालोंमें व्यभिचारकी चर्चाहो उनके लिये दुनियांमें और क़यामत में दुःखदाई सज़ा है। (१८) और अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते। (१६) और अगर अल्लाहकी कृपा और मिहर तुमपर न होती तो अल्लाह नर्मी करनेवाला मिहर्बान है। (२०) [रुकू२] हे ईमानवालो शैतानके क़दम पर क़दम न रक्खो और जो शैतानके क़दमपर क़दम रक्खेगा तो शैतान (उसको) बेशर्मी और बुरेकाम को कहेगा और अगर तुमपर अल्लाहकी कृपा और दया न होती तो तुम से कोई कभी भी पाक न होता लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है और अल्लाह सुनता जानता है। (२१) और तुमसे जो लोग बड़ाईवाले और सामर्थ्यवान हैं नातेदारों, मुहताजों और देश छोड़ने वालों को अल्लाह की राह में देने से सौगन्ध न खावैं बल्कि क्षमाकरें और छोड़दें क्या तुम नही चाहते कि अल्लाह तुम्हारे अपराध क्षमाकरे और अल्लाह बख्शनेवाला मिहर्बान है। (२२) जो लोग ईमानवाली बेखबर पाक औरतों पर (छिनाले का) लफ़ंट लगाते हैं (ऐसे लोग) दुनिया और क़यामत में फटकारे गये हैं और उनको बड़ी सज़ा होगी। (२३) जब इनकी ज़बानें और इनके

हाथ और इनके पांव और इनके कामों की जो कुछ वे करते थे गवाही देंगे। (२४) उसदिन अल्लाह इनको पूरा २ बदला देगा और जानलेंगे कि अल्लाह ही सच्चा दिखाने वाला है। (२५) व्यभिचारी औरतें व्यभिचारी मर्दों के लिये और व्यभिचारी मर्द व्यभिचारिणी औरतों के लिये और पाक औरतें पाक मर्दों के लिये और पाक मर्द पाक औरतों के लिये हैं और जो लफंट लगाते फिरते हैं उन से जो बरी (अलग) हैं उनके लिये क्षमा है इज़्ज़त की रोज़ी है। (२६) [रुकू ४] हे ईमान वालो अपने घरों के सिवाय और घरों में बग़ैर पूछे और बिना (उन से) सलाम किये न जाया करो, यह तुम्हारे हक़ में भला है शायद तुम याद रक्खो। (२७) फिर अगर तुम को मालूम हो कि घर में कोई आदमी नहीं है तो जब तक तुम्हें इजाजत न हो उस में न जाओ और अगर तुम से कहा जावे कि लौट जावो तो लौट आवो यह तुम्हारे लिये ज़ियादह सफ़ाई की बात है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उस को जानता है। (२८) और ग़ैर आबाद मकान जिसमें तुम्हारा असबाब हो उन में चले जाने से तुम्हे पाप नहीं और जो कुछ तुम

पतिके बेटे के या अपने भाइयों के या भतीजों के या अपने भानजों के या अपनी मेलजोल की औरतों के या अपने हाथके माल (यानी लौंड़ियां) या घर के लगे हुए ऐसे ख़िदमतगारों के या जो मर्द तो हों (मगर औरतों से कुछ) ग़रज़ नहीं रखते हों या लड़कों को जिन्हों ने औरतों के भेद नहीं जाने और (चलने में) अपने पांव ऐसे ज़ोरसे न रक्खें कि लोगोंको उनके अन्दरूनी ज़ेवर की खबर हो और तुम सब अल्लाहके सामने तौबा करो जिससे छुटकारा पाओ। (३१) और अपनी रांडों के निकाह करादो और अपने ग़ुलामों और लौंड़ियों मेंसे जो नेकबख़्त हों उनके निकाह करादो अगर यह लोग मुहताजहोंगे तो अल्लाह उनको मालदार बनादेगा और अल्लाह गुंजाइश वाला जानकार है। (३२) और जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ वे अपने को थामे रहे यहां तक कि अल्लाह अपनी कृपासे उन्हें सामर्थ्य दे और तुम्हारे हाथ के माल (लौंड़ी ग़ुलामों) मेंसे जो लिखनेके चाहने वाले हों तो तुम उनके साथ लिखदिया करो बशर्तेकि तुम उनमें नेकी पाओ और माल ख़ुदा मेंसे जो उसने तुमको देरक्खा है उनको दो और तुम्हारी लौंडियां जो पाक रहना चाहती है उनको दुनियां की जिन्दगी के फ़ायदे की ग़रज़ से हरामकारी पर मजबूर न करो और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये गये पीछे क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (३३) और हमने (इस क़ुरान में) तुम्हारे पास खुले खुले हुक्म भेजे हैं और जो लोग तुमसे पहिले हो गुज़रे हैं उनके हालात परहेज़गारों के लिये शिक्षा है। (३४) [रुकू ४] अल्लाह आस्मान और ज़मीन की रोशनी है उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक ताक़ है उस ताक़ में एक चिराग़ और चिराग़ एक शीशे में धरा है (और) शीशा एक सितारे की तरह चमकता है जैतूनके बरकतके पेड़से उस चिराग़ में तेल जलता है जो न पूर्वी है न पश्चिमी है उसका तेल

(ऐसा साफ़ है) कि अगर उसको आंच न भी छुए तोभी जल उठे। रोशनी पर रोशनी अल्लाह अपनी रोशनी की तरफ जिसको चाहता है राह दिखाता है और अल्लाह लोगोंके लिये मिसालें बयान फ़र्माता है और अल्लाह हरचीज़ से जानकार है। (३५) ऐसे घरोंमें जिनकी बाबत (खुदाने) हुक्म दिया है कि उनकी बुजुर्गी की जाय और उनमें खुदा का नाम लिया जावे उनमें सुबह शाम याद करते हैं। (३६) ऐसे लोग खुदाकी पाकी बयान करते रहते हैं जो सौदागरी और खरीद फरोख्त. खुदाके ज़िक्र और नमाजके पढ़ने और ज़कात के देने से गाफिल नहीं होते उसदिन से डरते हैं जबकि दिल और आंखे उलट जांयगी। (३७) अल्लाह उनको उनके कामों का भला से भला बदला दे और उनको अपनी कृपासे बढ़ती दे और

की हकूमत अल्लाह की है और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (४२) क्या तूने न देखा कि अल्लाह बादल को हांकता है फिर बादलों को आपस में जोड़ता है फिर उनको तह पर तह करके रखता है फिर तू बादल में से मेह को निकलते हुए देखता है और आस्मान में जो ओलों के पहाड़ जमें हुए हैं जिस पर चाहता है (ओले) बरसाता है और जिसे चाहता है उसे बचा देता है बादल की बिजली की चमक आंखों को उचक लेजावे। (४३) अल्लाह रात और दिन की तब्दीली करता रहता है जो लोग सूझ रखते हैं उनके लिये ध्यान की जगह है और अल्लाह ने तमाम जानदारों को पानी से पैदा किया है फिर उनमें से कोई (जो) पेटके बल चलते हैं और कोई उनमे से पांव से चलते हैं और कोई उनमें से चार पांव से चलते हैं अल्लाह जो चाहता है बनाता है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्ति साली है। (४४) हमने खुली आयतें उतारी हैं और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह बताता है। (४५) कहते हैं कि हम अल्लाह पर और पैग़म्बर पर ईमान ले आये और हुक्म माना फिर इसके बाद इनमें का एक फ़िर्का नहीं मानता है और वे ईमान लाने वाले नही। (४६) और जब खुदा और पैग़म्बर की तरफ बुलाये जाते हैं कि उनमें (उनके आपस के झगड़ों का) निबटारा करदें उन में का एक फ़रीक़ मुह मोड़ता है। (४७) और अगर उनको कुछ पहुंचता हो तो कान दबाये रसूल की तरफ चले आते हैं। (४८) क्या इनके दिलों में कुछ रोग है या शक में पड़े हैं या डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल उनकी हक़तलफी न करबैठें बल्कि यही लोग अन्याई हैं। (४९) [रकू ७] ईमानदारों की बात यह है कि जब खुदा और उनके पैग़म्बर की तरफ़ फ़ैसले के लिये बुलाये जाते हैं तो कहते हैं हमने सुना और माना और यही लोग छुटकारा पाते हैं। (५०) और जो कोई अल्लाह और उसके

पैग़म्बर की आज्ञा माने और अल्लाह से डरे और उस से बचता रहे तो ऐसेही लोग मुराद को पहुंचेंगे। (५१) और अल्लाह की पक्की सोगन्धे खा खा कर कहते है कि अगर आप आज्ञा देवें तो बिला-उज़्र निकल खड़े हों (हे पैग़म्बर) इन लोगों से कहो कि कसमें न खाओ तुम्हारी आज्ञाकारी (की हक़ीक़त) मालूम है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (५२) कहो कि अल्लाह का हुक्म मानो और पैग़म्बर का कहा मानो । फिर अगर तुम (दुःख) भोगोगे तो जो जिम्मेदारी पैग़म्बर पर है उसका जवाबदह वह हैं और जो ज़िम्मेदारी तुम पर है उसके जवाबदह तुम हो और अगर पैग़म्बर के कहने पर चलोगे तो किनारे जा लगोगे और पैग़म्बर के ज़िम्मे तो (खुदा की आज्ञा) साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। (५३) तुम में से जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उन से खुदा का वादा है कि उनको मुल्क मे खलीफ़ा बनावेगा जैसे इन लोगों से पहले खलीफे बनाये थे उन का दीन जो उसने उनके लिये पसंद किया उसको उनके लिये मज़-बूत करदेगा और डर जो इनको है इसके बाद इनको इस (बदले में) अमनदेगा कि हमारी पूजा किया करेंगे (और) किसी चीज को हमारा साझी न मानेंगे और जो आदमी इसके बाद इन्कारी हों तो ऐसेही लोग बे हुक्म हैं। (५४) और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और पैग़म्बर के कहे पर चलो शायद तुम पर रहम किया जावे। (५५) (हे पैग़म्बर) ऐसा ख्याल न करना कि काफ़िर मुल्क में (हमें) हरा देंगे और इनका ठिकाना नरक है और बुरी जगह है। (५६) [रुकू ८] हे ईमानवालो तुम्हारे हाथ के माल (यानी लौंडी गुलाम) और तुम्हारे नाबालिग लड़के तीन दफ़ों में तुम्हारी इजाज़त लेकर घर में आवें पहिले सुबह की नमाज़ से पहले और दूसरे दोपहर को जब तुम कपड़े उतारा करते हो।

और तीसरे शाम की नमाज के बाद यह तीन वक्त तुम्हारे पर्दे के हैं इन वक्तों के सिवाय न (वे इजाज़त आने देनेमें) तुम पर कुछ गुनाह है और न (वे इजाजत चले आनेमें) उनपर (क्योंकि वह) अकसर तुम्हारे पास आते जाते रहते हैं यों अल्लाह आयतों को तुम से खोल २ कर बयान करता है और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है। (५७) जब तुम्हारे लड़के बालिग़ होजावें तो जिस तरह इनके अगले इजाजत मांगा करते हैं (इसीतरह) इनको भी इजाज़त मांगना चाहिये इस तरह अल्लाह अपनी आयतें खोल २ कर बयान करता है और अल्लाह जानकार हिकमत वाला है। (५८) और बड़ी बूढ़ी औरतें जिनको निकाह की उम्मेद नहीं अगर अपने कपड़े (दुपट्टे या चद्दर) उतार रक्खा करें तो इसमें उनपर कुछ अपराध नहीं बशर्ते कि उनको (अपना) बनाव दिखाना मन्ज़ूर न हो और अगर बचाव रक्खें तो उनके हक़ में भला है और अल्लाह सुनना जानता है। (५९) अन्धे लंगड़े और बीमार तुम्हारी जानों पर भी कुछ पाप नहीं कि अपने बाप के घर से या मांके घर से या अपने भाइयोंके घरसे या अपनी बहिनोंके घरोंसे या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फुफियों के घरों से और या अपने मामुओं के घरों से या अपनी मौसियों के घरों से या उन घरों से जिनकी कुंजियां तुम्हारे क़ाबू में हैं या अपने दोस्तों के घरों से (फिर इस में भी) तुमपर पाप नहीं कि सब मिलकर खाओ या अलग २। (६०) फिर जब घरों में जाने लगो तो अपने लोगों को सलाम कर लिया करो क्षेम कुशल की असीस खुदा की ओर से बरकत वाली उमदह है यों अल्लाह हुक्म खोल २ कर बयान करता है शायद तुम समझो। (६१) [रुकू ८] ईमान वाले हैं जो अल्लाह और पैग़म्बर पर ईमान लाये हैं और जब किसी ऐसी बात के लिये जिसमें लोगों के जमा होने की ज़रूरत है पैग़म्बर

के पास होते हैं तो जबतक पैग़म्बर से इजाज़त न लेलें नहीं जाते हैं (हे पैग़म्बर) जो तुमसे इजाज़त ले लेते हैं हक़ीक़त में वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये हैं तो यह लोग अपने किसी कामके लिये तुमसे इजाज़त मांगे तो तुम इनमेंसे जिस को चाहो इजाज़त देदियाकरो ख़ुदासे उनकेलिये क्षमा मांगो अल्लाह दरगुज़र करनेवाला मिहर्बानहै।(६२) (जब)पैग़म्बर(तुममेंसे किसीको बुलाये तो उन) के बुलाने को आपस से मामूली बुलाना न समझो जैसा तुममें एक को एक बुलाया करता है अल्लाह उनलोगों को ख़ूब जानता है जो तुम में से छिपकर सटक जाते हैं तो जो लोग रसूल की आज्ञाका विरोध करते हैं उनको इससे डरना चाहिये कि उनपर कोई आफ़त न आपड़े या उनपर दुखदाई सज़ा आजावे। (६३) सुनो जो अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मान और ज़मीन में है तुम जिस हाल से हो उसे मालूम है और जिस रोज़ ख़ुदा की तरफ लौटाकर लाये जावेंगे तो जैसे काम करते रहे हैं ख़ुदा उनको बता देगा और अल्लाह सब कुछ जानता है। (६४)।

—— ० ——

सूरे फुर्क़ान ॥

मक्केमें उतरी इसमें ७७ आयतें और ६ रुकू हैं॥

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है [रुकू १] उसको बरकत है जिसने अपने दास (मुहम्मद) पर कुरान उतारा ताकि तमाम दुनिया के लिये डरानेवाला हो। (१) आस्मान और ज़मीन की सल्तनत उसी की है और वह कोई बेटा नहीं रखता और न राज्य में उसका कोई साझी है और उसीने हरचीज़ को पैदाकिया फिर हरेकचीज़ के लिये एक अन्दाज़ा ठहरादिया। (२) और काफ़िरों ने ख़ुदा के सिवाय (दूसरे) पूजित बना लिये हैं

जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करसक्ते बल्कि वह खुद बनाये हुये हैं। (३) और अपने लिये बुरे भले के मालिक नही हैं और न मरने के और न जीने के और न जी उठने के मालिक हैं। (४) और काफ़िर (कुरान की निस्बत) कहते हैं कि यह तो निरा झूठ है जिसको इस (पैग़म्बर) ने गढ़ लिया है और दूसरे लोगों ने उसकी मदद की है यह लोग झूठ और जुल्म कर कुरान बनालाये हैं। (५) और कहतेहैं कि कुरान अगले लोगोंके ढकोसले हैं जिसको इस मुहम्मद ने किसी से लिखवालिया है और वही सुवह शाम पढ़ २ कर सुनाया जाता है। (६) (हे पैग़म्बर) कहो यह कुरान उसने उतारा है जो आसमान और ज़मीन की सब छिपी बातों को जानता है वह बख़्शने वाला मिहर्बान है। (७) और कहते हैं कि यह कैसा पैग़म्बरहै जो-खानाखाता और बाज़ारोमें फिरता है इसके पास फ़िरिश्ता कोई नहीं भेजागया कि इसके साथ होकर डराता। (८) या इसपर कोई खज़ाना बरसा होता या इसके पास बाग़ होता कि उस से खाता और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो ऐसे आदमी के पीछे होगये हो कि जिसपर किसी ने जादू करदिया है। (९) (हे पैग़म्बर) देखो तुम्हारी बाबत कैसी बातें बनाते हैं जिससे गुमराह होगये और फिर राह पर नही आसक्ते हैं। (१०) [रुकू २) वह ऐसा बरकत वाला है कि चाहे तो तुम्हारे लिये ऐसे बाग दे कि जिनके नीचे नहरें बहती हों और तुम्हारे लिये महल बनादे। (११) असली बात यह है कि यह लोग क़यामत को झूठ समझते हैं और जो लोग क़यामत को झूठ समझें उनके लिये हमने नरक तय्यार कर रक्खा है। (१२) जब वह उसको दूर से देखेंगे तो उसकी चिल्लाहट और झुंझलाहट सुनेंगे। (१३) और जब नरक की किसी तंग जगह में मुश्के बान्ध कर डाल दिये जांयगे तो वहां मौत को पुकारेंगे। (१४) फ़िरिश्ते कहेंगे कि एक

मौत को न पुकारो बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो। (१५) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि यह बढ़कर है या हमेशा रहनेके बाग़ जिसका वादा परहेज़गारों को मिला है कि उनका बदला वह ठिकाना होगा। (१६) और जो चीज़ वह चाहेंगे वहां मौजूद होगी हमेशा रहेंगे यह उनका मांगाहुआ वादा तेरे खुदा पर लाज़िम आगया है। (१७) और जिस दिन खुदा उन काफ़िरों को और (उन पूजितों को) जिनको यह खुदा के सिवाय पूजते हैं जमा करेगा फिर (इनके पूजितों से) पूछेगा कि क्या तुमने मेरे इन दासों को गुमराह किया था या यह (आपसे) आप राह भटक गये थे। (१८) (इनके पूजित) कहेंगे कि तू पाक है हमको यह बात किसी तरह शोभा नहीं देतीथी कि तेरे सिवाय दूसरे काम सम्भालने वाले बनाते बल्कि तूने इनको और इनके बड़ोंको आसूदगियां(आराम चैन) दी यहां तक कि (तेरी) याद को भुलाबैठे और यह हलाक होने वाले लोग थे। (१९) (हम काफ़िरों से फ़र्मायेंगे) तुम्हारे इन पूजितों ने तुमको तुम्हारी बातों में झुठलाया अब तुम न तो (हमारी सज़ाको) टाल सकते हो और न मदद ले सकते हो। (२०) और जो तुम मेंसे (शरीक खुदा बनकर) जुल्म करेगा हम उसको बड़ी सज़ा देंगे। (२१) और (हे पैग़म्बर) हमने तुम से पहले जितने रसूल भेजे वह खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे और हमने तुममें एक दूसरे की जांच को रक्खा है तो देखें ठहरे रहते हो (या नहीं) और तुम्हारा पालनकर्त्ता देख रहा है। (२२)।

—:※:—

उन्नीसवांपारा।

—※—

[रुकू ३] और जो लोग हम से मिलनेकी उम्मेद नहीं रखते यह कहा करते हैं कि हम पर फ़िरिश्ते क्यों नहीं उतरे या हम अपने

पालनकर्त्ता को देखें (तो यक़ीन करें) इन लोगों ने अपने दिलों में अपनी बड़ी बड़ाई समझ रक्खी है और हद से बहुत बढ़गये हैं। (२२) जिसदिन लोग फ़िरिश्तों को देखेंगे उसदिन पापियों को कोई खुशी न होगी (और फिरिश्ता को देखकर) कहेंगे कि किसी आड़ में हो जाओ। (२४) और यह लोग जो काम करगये हैं अब हम उनकी तरफ़ ध्यान देंगे और उनको बखेरी हुई धूल करदेंगे। (२५) बैकुण्ठ वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना होगा और दोपहर को सोने की जगह भी अच्छी मिलेगी। (२६) और जिस दिन आस्मान बदली से फटजायगा और फ़िरिश्ते दर्जा बदर्जा उतारे जायेंगे। (२७) उस दिन रहमान का सच्चा राज्य होगा और वह दिन काफ़िरों को कठिन होगा। (२८) और जिस दिन अपराधी अपने हाथ चबा २ लेगा और कहेगा कि किसी तरह मैंने पैग़म्बर के साथ राह पकड़ी होती। (२९) हाय मेरी कमबख़्ती मैं फलाने (आदमी) को यार न बनाता। (३०) उसने तो शिक्षा आये पीछे भी मुझ को बहका दिया और शैतान आदमियों को वक़्त पर दग़ा देनेवाला है। (३१) और उस वक़्त पैग़म्बर (मुहम्मद खुदा के सामने) अर्ज़ करेंगे कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरे गिरोह ने इस कुरान को बकवाद समझा। (३२) और (हे पैग़म्बर जिस तरह तुम्हारे ज़माने के काफ़िर तुम्हारे दुश्मन हैं) इसी तरह पापियों को हम हरेक पैग़म्बर के दुश्मन बनाते आये हैं और हिदायत देने और मदद करने को तुम्हारा पालनकर्त्ता काफ़ी है। (३३) और काफ़िर कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर कुरान सारे का सारा एक दम से क्यों नही उतारा गया ताकि हम इस के द्वारा से तुम्हारे दिल को तसल्ली देते रहें—और हमने उसे ठहर २ कर उतारा। (३४) और जो मिसाल यह तेरे पास लाते हैं हम उस का ठीक जवाब और सच्चा बयान तुझे देते रहते हैं। (३५) जो लोग औंधे मुंह नरक

की तरफ हांके जायंगे यही लोग बुरी जगह में होंगे और वही द
भटके हुए हैं। (३६) [रुकू ४] और हमने मूसा को किताब (तौरे
दी और उनके भाई हारूं को उनके साथ नायब करदिया। (३
फिर हमने आज्ञा दी कि दोनों (भाई) उन लोगों के पास जा
जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है तो हमने उन लोगों
खोज खोदिया। (३८) और कौम नूहने भी जब पैग़म्
को झुठलाया तो हमने उनको डुबो दिया और उन को लो
के लिये निशान बना दिया और हमने अन्यायियोंको दुःखदाई स
तय्यार कर रक्खी है। (३९) (इसी तरह) आद और समूद अ
खन्दक वालों और उनके बीच २ में और बहुत से गिरोहों को
ने मारडाला)। (४०) और सभी को तो हमने मिसालें दे दे
समझाया था और हमने उनका सत्यानाश करदिया। (४१) अ
यह (मक्के के काफ़िर) जरूर (क़ौम लूत की उस) बस्ती पर
आये हैं जिस पर बुरा पथराव बरसाया गया था तो क्या
उसे न देखा होगा मगर इन लोगों को (मरे पीछे) जी उठ
उम्मेद ही नहीं। (४२) और (हे पैग़म्बर) जब यह लोग
देखते हैं तुम्हारी हँसी बनाते हैं और छेड़ने के तौर पर कहते
क्या यही है जिनको अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है। (४

[रुकू ५] (हे पैग़म्बर) क्या तुमने अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ नहीं देखा कि उसने साये को क्योंकर फैला रक्खा है और अगर चाहता तो उसको ठहराये रखता फिर हमने सूरज को साया का कारण ठहरा दिया है। (४७) फिर हमने साया को धीरे २ अपनी तरफ़ समेट लिया। (४८) और वही है जिसने तुम्हारे लिये रात को ओढ़ना और नींद को आराम बनाया और दिन लोगों के चलने फिरने के लिये बनाया। (४९) और वही है जो अपनी कृपा के आगे हवाओं को खुशखबरी देने को भेजता है और हमने आस्मान से पाक पानी उतारा। (५०) ताकि उसके द्वारा मुर्दा शहर में जान डाल दें और अपने पैदा किये हुए यानी बहुत से चारपायों और आदमियों को उससे पानी पिलावें। (५१) और हमने लोगों में (पानी को) तरह २ से बांटा लेकिन बहुधा लोगों ने कृतघ्नता के सिवाय कुछ न माना। (५२) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डर सुनाने वाला (यानी पैग़म्बर) उठा खड़ा करते। (५३) तो (हे पैग़म्बर) तुम काफ़िरों का कहा न मानो और कुरान (की दलीलों से) उनका सामना बड़े ज़ोर से करो। (५४) और वही है जिसने दो दरियाओं को मिलाया एक (का पानी) मीठा मज़ेदार और (एक का) खारी कड़ुवा और दोनों में एक रोक और अटल आड़ बनादी। (५५) और वही है जिसने पानी (वीर्य) से आदमी को पैदा किया फिर उसको किसी का बेटा या बेटी और किसी का दामाद बहू बनाया और तुम्हारा पालनकर्त्ता हरचीज़ पर शक्तिमान है। (५६) और काफ़िर खुदा के सिवाय (झूठे पूजितों) को पूजते हैं जो न उनको नफ़ा पहुंचा सक्ते हैं और न उनको नुक़सान पहुंचा सक्ते हैं और काफ़िर तो अपने पालनकर्त्ता से पीठ दिये हुए हैं। (५७) और (हे पैग़म्बर) हमने तुमको खुशखबरी सुनाने और सिर्फ़ डराने के लिये भेजा है। (५८) (इन लोगों से) कहो

कि मैं तुमसे इस (खुदा के हुक्म) पर कुछ मज़दूरी नहीं मांगता हां जो चाहे अपने पालनकर्त्ता तक पहुंचने की राह पकड़े। (५९) (हे पैग़म्बर) उस ज़िन्दा (खुदा) पर भरोसा रक्खो जो अमर है और तारीफ़के साथ उसकी पाकी बयान करतेरहो और अपने दासों के पापोंसे वह काफी खबरदार है–जिसने आस्मान और ज़मीन और जोकुछ आस्मान और जमीन मे है (सबको) छः दिनमे पैदाकिया फिर तख़्त पर जा बैठा (वही खुदा) रहमान है तो उसको किसी खबरदारही से पूछना। (६०) और जब काफ़िरों से कहा जाता है कि रहमान को झुको तो कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है क्या जिसके आगे तुम हमे (सिजदा करनेको) कहो उसीके आगे झुकने लगे और उनकी नफ़रत बढ़ती है। (६१) बड़ी बरकत है उसकी जिसने आस्मान में बुर्ज (राशे) बनाये और उसमे चिराग और चांद उजाला करनेवाला रक्खा। (६२) [रुकू ६] और वही है जिसने रात और दिनको जो एक के बाद एक आते जाते रहतेहैं ठहराया उन लोगों के लिये जो ग़ौर करना चाहे या शुक्रगुजारी करना चाहे। (६३) और रहमानके दास तो वह हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी (नम्रता) के साथ चले और जब जाहिल उनसे बातें करने लगते हैं तो उनको सलाम करते हैं। (६४) और जो रात अपने पालनकर्त्ता के लिये सिजदा और खड़े रहने मे काटते हैं। (६५) और जो कहते हैं हे हमारे पालनकर्त्ता नरक की सज़ा को हमसे दूर रख क्योंकि उसकी सज़ा बड़ी कड़ी (ठहराव) है वह ठहरनेको बुरी जगह है और रहने की बुरी जगहहै। (६६) और जो खर्च करनेलगें तो वृथा खर्च न करें और न बहुत तंगीकरे बल्कि उनका खर्च औसत दर्जेका होवे। (६७) और जो खुदा के साथ (किसी) दूसरे पूजित को न पुकारें और न किसी आदमीको जानसे न मारे जिसको खुदाने हरामकर रक्खा है और हिनालेने भी क़बूल करने वाले नहो और जो कोई यह काम करेगा

वह पाप का बदला भुगतेगा। (६८) कयामत के दिन उसको दोहरी सज़ा दी जावेगी और अपमान के साथ उसी हालमें हमेशा रहेगा (६९) मगर जिसने तोबा की और ईमानलाया और भले काम किये तो अल्लाह ऐसे लोगों के पापों को नेकियों से बदलदेगा और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। (७०) और जिसने तोबा की और भले काम किये वह हकीकत मे खुदा की तरफ़ फिर आये है। (७१) और वह जो झूठ गवाही न दें और बेहूदा कामों के पास होकर न गुज़रे तो वजहदारी के साथ गुजरजावें। (७२) और वह लोग जब उनको उनके पालनकर्त्ता की आयतें पढ़ २ कर सुनाई जावें तो अन्धे और बहरे होकर उनपर नहीं गिरते। (७३) और जो दुआयें मांगते हैं कि हे हमारे पालनकर्त्ता हमको हमारी बीवियों और सतान से आंखो की ठंडक दे और हमको परहेजगारों का पेशवा बना। (७४) यही लोग हैं जिनको उनके सब्र के बदले में (बैकुण्ठ में रहने को) बालाखाने (ऊपर के मकान) मिलेंगे और दुआ और सलाम के साथ वहां उनकी अगवानी की जावेगी। (७५) (और यह लोग) बैकुण्ठ में हमेशा रहेंगे क्या अच्छी जगह ठहरने के लिये है और क्या ही अच्छी जगह रहने के लिये है। (७६) (हे पैगम्बर) कहो कि मेरा पालनकर्त्ता तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता सो तुमने उसकी आयतों को झुठलाया पस अब तो उसका बबाल पड़कर रहेगा। (७७)।

———:*:———

सूरे शुआरा ॥

मक्के में उतरी इसमें २२८ आयतें और ११ रुकू हैं।

अल्लाह के नामसे जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। [रुकू १] तो–सीन–मीम। यह उसी किताब की आयतें हैं जिसका

मतलब साफ है। (१) (हे पैग़म्बर) शायद तू अपनी जान छोड़ मारे कि यह लोग ईमान (क्यों) नहीं लाते। (२) हम चाहें तो इनपर आस्मान से एक निशाना उतारें फिर तो इनकी गर्दनें उसके आगे झुक कर रहजावेंगी। (३) और जब कभी (ख़ुदा) रहमान के पास से उनके पास कोई नई शिक्षा आती है तो उस से मुंह मोड़ते हैं। (४) यह लोग तो झुठला चुके इनको उस (सज़ा) की हक़ीक़त मालूम होजावेगी जिसकी हंसी उड़ाया करते थे। (५) क्या इन लोगों ने ज़मीन की तरफ़ नहीं देखा कि हमने हरेक भांति२ की उम्दह २ चीज़ें कितनी उसमें पैदा की हैं। (६) इसमें निशानी है मगर इनमें से अकसर ईमान लाने वाले नहीं। (७) तुम्हारा पालनकर्ता ज़ोरावर रहमवाला है। (८) [रुकू २] और (हे पैग़म्बर) जब तेरे पालनकर्ता ने मूसा को बुलाया कि (इन) ज़ालिम लोगों (यानी फ़िरऔन की क़ौम) के पास जाओ। (९) क्या यह लोग नहीं डरते। (१०) (मूसाने) अर्ज़ की कि हे मेरे पालनकर्ता मैं डरता हूं कि वह मुझे झुठलावेंगे। (११) और (बातें करने में)

है। (१८) (मूसाने) कहा कि मैं उनदिनों वह (हरकत) करबैठा जब मैं ग़लती पर था। (१९) फिर जब मुझको तुमसे डरलगा मैं भागगया फिर मेरे पालनकर्त्ताने मुझे (पैग़म्बरीके) अधिकार दिये और पैग़म्बरों में दाख़िल करलिया। (२०) और यह अहसान है जो तू मुझपर रखता है कि तूने इसराईल की संतानको ग़ुलाम बना रक्खा है। (२१) फ़िरऔन ने पूछा कि तमाम जहान का पालन-कर्त्ता कौन है। (२२) (मूसा ने) कहा, आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उनमें है सबका वही मालिकहै अगर तुम यक़ीन करो। (२३) फ़िरऔनने अपने मुसाहिबोंसे जो उसके आस पास थे कहा क्या तुम (मूसा की बातें) नही सुनते। (२४) (मूसाने) कहा वही तुम लोगों का और तुम्हारे बाप दादा का पालनकर्त्ता है। (२५) (फ़िरऔन ने) कहा कि (हो न हो) तुम्हारा पैग़म्बर जो तुम्हारे पास भेजा गया बावला है। (२६) (मूसा) ने कहा (वही) पूर्व और पश्चिम का और जो कुछ उनके बीचमें है सबका मालिक है अगर तुम अक़्ल रखते हो। (२७) (फ़िरऔन ने) कहा अगर मेरे सिवाय (किसी और को) तूने ख़ुदा माना तो मैं तुझको क़ैदियों में करूंगा। (२८) (मूसा ने) कहा कि अगर मैं तुझको एक खुला हुआ चमत्कार दिखाऊँ। (२९) (फ़िरऔन ने) कहा अगर तू सच्चा है तो ला दिखा। (३०) इसपर (मूसा ने) अपनी लाठी डालदी तो क्या देखते हैं कि वह एक ज़ाहिरा सांप है। (३१) और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकालने के साथ सब देखनेवालों की नजर में बड़ा चमक रहा था। (३२) [रुकू २] (फ़िरऔन ने) अपने दर्बारियोंसे कहा जो इर्द गिर्द थे कहा कि इसमे शक नही कि यह कोई जानकार जादूगर है। (३३) और चाहता है कि तुमको अपने जादूसे देशसे बाहर निकालदे तो तुमलोग क्या सलाह देतेहो। (३४) (दरबारियों ने) निवेदन किया कि मूसा और हारूं को रोको

और मुल्क में जादूगरों के जमा करने को हल्कारे दौड़ाओ। (३५) कि वह तमाम बड़े २ जादूगरों को तुम्हारे पास लावें। (३६) फिर ठहरे हुए दिन जादूगर जमा किये गये। (३७) और लोगों में मनादी करादी गई कि अब तुम लोग जमा होगे या नहीं। (३८) अगर जादूगर (मूसा) ही जीत में रहे तो शायद हम उन्हीं का दीन क़बूल करलें। (३९) तो जब जादूगर आये उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि अगर हम जीते तो हम को क्या इनाम मिलेगा। (४०) (फ़िरऔन ने) कहा हां ज़रूर जीतने पर तुम पास बैठने वालों में होगे। (४१) मूसा ने (जादूगरों से) कहा जो कुछ तुम को डालना मंज़ूर हो डाल चलो। (४२) इस पर जादूगरों ने अपनी रस्सियां और अपनी लाठियां डालदीं और बोले कि फ़िरऔन के प्रताप से हम्हीं ज़बरदस्त रहेंगे। (४३) इस पर मूसा ने अपनी लाठी (मैदान में) डाली तो बस वह उन (जादुओं) को-जो जादूगर बनालाये थे एक दम से निगलने लगा। (४४) यह देख कर जादूगर सिजदे में गिर पड़े। (४५) (और) बोले कि हम तमाम जहान के पालनकर्त्ता पर ईमान लाये। (४६) जो मूसा और

(५२) इस पर फ़िरऔन ने शहरों में हलकारे दौड़ाये । (५३) कि इस्राईल की सतान थोड़ी सी जमात हैं। (५४) और उन्हो ने हमको क्रोध दिलाया है। (५५) और हमारी जमात हथियारबन्द है। (५६) गरज़ हमने फ़िरऔन के लोगों को बागों से चश्मों से (५७) और खज़ानो से और इज़्ज़त की जगह से निकाल बाहर किया। (५८) ऐसा ही और इसराईल की सन्तान को उन चीज़ों का वारिस बनाया। (५९) तो फ़िरऔन के लोगों ने दिन निकलते २ इसराईल के बेटों का पीछा किया। (६०) फिर जब दोनों जमा-अतें एक दूसरे को देखने लगीं तो मूसा के लोग कहने लगे कि अब तो दुश्मनों ने हमको घेर लिया। (६१) (मूसाने) कहा हर-गिज़ नहीं मेरे साथ मेरा पालनकर्त्ता है वह मुझको राह दिखलायेगा। (६२) फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी दरिया पर दे-मारो चुनांचे (मूसा ने देमारा) दरिया फटगया और हरेक टुकड़ा गोया एक बड़ा पहाड़ था। (६३) और उसी मौक़े के पास हम दूसरे लोगों (फ़िरऔन वालों) को लिवा लाये। (६४) और हमने मूसा और जो लोग उनके पास थे सबको बचालिया। (६५) फिर दूसरों (फ़िरऔन वालों) को डुबोदिया। (६६) इसमें एक चमत्कार है और फ़िरऔन के लोगों में से अकसर ईमान लाने वाले न थे। (६७) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ता अलबत्ता ज़बरदस्त रहम वाला है। (६८) [रुकू ५] (और हे पैग़म्बर) इन लोगों को इब्राहीम का हाल सुनाओ। (६९) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से पूछा कि तुम किस चीज़ को पूजते हो। (७०) तो उन्होने जवाबदिया कि हम मूर्त्तों को पूजते हैं और उन्हीं की सेवा करते रहते है। (७१) (इब्राहीम ने) पूछा कि जब तुम (इनको) पुकारते हो तो क्या यह तुम्हारी सुनते हैं। (७२) या तुमको फ़ायदा या नुक़सान पहुँचा सक्ते हैं। (७३) उन्होने कहा

नही मगर हमने अपने बड़ों को ऐसाही करते देखा है । (७४) (इब्राहीमने) कहा भला देखो तो जिन्हें तुम पूजते हो । (७५) तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा पूजते चले आये हो । (७६) यह तो मेरे दुश्मन है मगर संसार का पालनकर्त्ता साथी है । (७७) जिसने मुझको पैदा किया वही राह दिखायगा । (७८) और जो मुझको खिलाता और पिलाता है । (७९) और जब मैं बीमार पड़ता हूं वही मुझको अच्छा करता है । (८०) और जो मुझको मारेगा और फिर जिलायगा । (८१) और मुझे उम्मेद है कि बदले के दिन मेरे अपराध माफ़ करेगा । (८२) हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको समझादे और नेक दासों में शामिल कर । (८३) और आनेवाली नस्लों मे मेरा अच्छा ज़िक्र जारी रख । (८४) और बैकुण्ठ की नियामतों के वारिसों में से मुझको (भी एक वारिस) बना । (८५) और मेरे बाप को क्षमा कर वह गुमराहो मे से था । (८६) और जब लोग (दोबारा जिला कर) खड़े किये जांयगे मुझको उस दिन बदनाम न कर । (८७) उस दिन माल और बेटे काम न आवेंगे । (८८) मगर जो पाक दिल लेकर ख़ुदा के सामने हाजिर होगा । (८९) और बैकुण्ठ परहेजगारों के क़रीब लाया जायगा । (९०) और नरक गुमराहों के वास्ते खोला जायगा । (९१) और उनसे कहा जायगा कि ख़ुदा के सिवाय जिन चीज़ों को तुम पूजते थे कहां है । (९२) क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सक्ते या बदला ले सक्ते हैं । (९३) फिर वे (पूजित) और वह (लोग) औंधे मुंह नरक मे झोंक दिये गये । (९४) और इबलीस का सब लशकर औंधे मुंह नरक में ढकेल दिया जायगा । (९५) गुमराह और उनके पूजित वहां (आपस मे) झगड़ते हुए यों कहेंगे । (९६) ख़ुदा की क़सम हम तो जाहिरा गुमराही में थे । (९७) जब हमने तुम को संसार के पालनकर्त्ता के बराबर ठहराय

था। (९८) और हम को तो (पूजितों) पापियों ने गुमराह किया था। (९९) तो न तो कोई (हमारी) शिफ़ारश करने वाला है। (१००) और न कोई दिली दोस्त। (१०१) सो हम को (दुनियां में) फिर लौटकर जाना है। तो हम ईमान वालों में रहें। (१०२) वेशक (इब्राहीम के) इस (क़िस्से) में चमत्कार है और इब्राहीम के गिरोह में अकसर ईमान लाने वाले न थे। (१०३) और (हे पैग़म्बर) तेरा पालनकर्त्ता ज़बरदस्त रहम वाला है। (१०४) [रुकू ६] (इसी तरह) नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया। (१०५) उन से उनके भाई नूह ने कहा क्या तुम (लोग ख़ुदा से) नहीं डरते। (१०६) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१०७) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस (समझाने) पर तुम से मज़दूरी नही मांगता मेरी मजदूरी तो दुनियां के पालनकर्त्ता पर है। (१०९) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (११०) वह कहने लगे कि क्या हम तुम्हारी बात को मानलें और (हम देखते हैं) छोटे दर्जे के लोग तुम्हारे पीछे होगये हैं। (१११) कहा जो यह लोग करते रहे हैं मुझ को क्या खबर है। (११२) इनका हिसाब ता सिर्फ अल्लाह पर है अगर तुम समझो। (११३) और मैं ईमान वालों का धक्का देने वाला नही हूं। (११४) मैं तो (लोगों को) साफ़ तौर पर (ख़ुदा की सज़ा से) डराने वाला हूं। (११५) वह बोले नूह अगर तू (अपनी हरकत से) बाज़ न आया तो ज़रूर पत्थरों से मारा जायगा। (११६) (नूहने) कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरी क़ौम ने मुझको झुठलाया। (११७) तू मुझ में और इन लोगों में फ़ैसला करदे और मुझे और ईमान वालों को छुटकारा दे। (११८) फिर हमने नूह और उन लोगों को जो भरी हुई किश्ती में उनके साथ थे (तूफान से) बचा दिया। (११९) फिर इसके बाद हमने बाक़ी लोगों का

डुबो दिया। (१२०) इस में अलबत्ता शिक्षा है और नूह के गिरोह के बहुत लोग ईमान लाने वाले न थे। (१२१) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ता अलबत्ता वही ज़ोरावर रहम वाला है। (१२२) [रुकू ७] (इसी तरह क़ौम) आद ने पैग़म्बरो को झुठलाया। (१२३) जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा क्या तुम (खुदा से) नहीं डरते। (१२४) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१२५) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१२६) और मैं इस पर तुम से कुछ (उजरत) तो नही मांगता मेरी उजरत तो बस संसार के पालनकर्त्ता पर है। (१२७) क्या तुम हर ऊंची जगह पर बेज़रूरत यादगारे बनाते हो। (१२८) और (बड़ी कारीगरी के) महल बनाते हो गोया तुम (संसार मे) हमेशा रहोगे। (१२९) और जब हाथ डालते हो तो ज़ुल्म से पंजा मारते हो। (१३०) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१३१) और उस (के कोप) से डरो जिसने तुम्हारी चीजों से मदद की जो तुमको मालूम है। (१३२) चारपाओं और बेटों से। (१३३) और बाग़ों और चश्मों से (तुम्हारी) मदद की। (१३४) मैं

हूं । (१४३) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो । (१४४) और मैं इस पर तुम से कुछ मज़दूरी नहीं चाहता और मेरा मजदूरी तो संसार के पालनकर्त्ता पर है। (१४५) क्या यहां का चीज़ें दुनियां में निडर छोड़ देंगे । (१४६) (यानी) बागों और चश्मों में । (१४७) और खेतों और खजूरों में जिनके गुच्छे (मारे बोझ के) टूटे पड़ते हैं । (१४८) तुम तकल्लुफ़ से पहाड़ों को काट २ कर घर बनाते हो। (१४९) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो । (१५०) और (हद से) बढ़ जाने वालों के कहे में न आजाना। (१५१) जो मुल्कों में फ़िसाद डालते हैं और दुरुस्ती नहीं करते। (१५२) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१५३) तुम भी हम ही जैसे आदमी हो और अगर सच्चे हो तो कोई चमत्कार ला दिखाओ। (१५४) (सालह ने) कहा यह ऊटनी चमत्कार है पानी पीने की (एक दिन की) बारी इसकी है और तुम्हारे पानी पीने को एक दिन मुक़र्रर है। (१५५) और इसको किसी तरह का नुक़सान न पहुँचाना वरना बड़े दिनकी सज़ा तुमको आयगी। (१५६) इसपर (भी) लोगों ने उसकी कूंचे (एड़ी के ऊपर के हिस्से) काट डाले फिर हैरान हुये। (१५७) आखिरकार उनको सज़ा ने पकड़ लिया इसमें (भी एक बड़ी) शिक्षा है और सालहकी क़ौमके बहुत से लोग ईमानलाने वाले न थे। (१५८) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ता ज़ोरावर रहमवाला है । (१५९) [रुकू ९] (इसी तरह) क़ौम लूतने पैग़म्बरों को झुठलाया। (१६०) जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा क्या तुम नहीं डरते। (१६१) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बरहूं। (१६२) तो अल्लाहसे डरो और मेरा कहा मानो। (१६३) और मैं इस पर तुम से कुछ मज़दूर नहीं मांगता मेरी मज़दूरी तो संसार के पालनकर्त्ता परहै। (१६४)

क्या तुम दुनियां के लोगों पर दौड़ते हो। (१६५) और तुम्हारे पालनकर्त्ताने जो तुम्हारे लिये बीवियां दी हैं उन्हें छोड़ देते हो बल्कि तुम सरकश क़ौम हो। (१६६) वह बोले लूत अगर तुम (इनबातों से) बाज़ न आवोगे तो देश से निकाल बाहर करेंगे। (१६७) (लूतने) कहा कि मैं तुम्हारे (इस) कामका दुश्मन हूं। (१६८) (लूतने दुआ की कि) हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको और मेरे घरवालों को इन (नापाक) कामों से जो यह लोग करते हैं छुटकारा दे। (१६९) फिर हमने लूतको और उनके घरवालोंको सबको छुटकारा दिया। (१७०) मगर (लूतकी) बूढ़ी औरत बाकीरही। (१७१) फिर हमने बाकी लोगों को हलाक़ करमारा। (१७२) और इनपर पत्थर वर्षाये बुरा पत्थरों का बरसना था जो इन लोगों पर बरसा जो (हमारी सज़ा से) डराये गये थे। (१७३) इसमें शिक्षा है और लूत की क़ौम के बहुधा लोग तो ईमान लाने वाले न थे। (१७४) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ता जोरावर रहम वाला है। (१७५) [रुकू १०] (इसी तरह) बनके रहनेवालों ने पैगम्बरों को झुठलाया। (१७६) जब शुएब ने उनसे कहा क्या तुम (खुदा से) नहीं डरते। (१७७) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१७८) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१७९) और मैं इसपर तुमसे कुछ मजदूरी नहीं चाहता मेरी मजदूरी तो संसार के पालनकर्त्ता पर है। (१८०) (कोई चीज़ पैमाने से नापकर दिया करो तो) पैमाना भरकर दियाकरो (लोगों को) नुकसान पहुंचाने वाले न बनो। (१८१) और तौला करो तो (तराज़ू की डंडी) सीधी रखकर तौला करो। (१८२) और लोगों को उनकी चीजें (जो खरीदें) कमी से न दिया करो और मुल्क में फ़साद फैलाते न फिरो। (१८३) और उस (खुदा) से डरतेरहो जिसने तुमको और तुमसे अगलों को पैदा किया। (१८४) वह बोले तुम

पर तो किसी ने जादू करदिया है । (१८५) और तुम तो हमारी तरह के एक आदमी हो और हम तुमको झूठा ही समझते हैं । (१८६) और सच्चे हो तो हमपर आसमानसे एक टुकड़ा गिरादो (१८७) (शुएब ने) कहा जो तुम कर रहे हो मेरा पालनकर्त्ता उसको खूब जानता है। (१८८) ग़रज़ उनलोगो ने शुएब को झुठ-लाया तो उनको सायवान की सज़ाने आघेरा । वेशक सायवानही की सज़ा थी । (१८९) इसमें वेशक शिक्षा है और शुएब के गिरोह के वहुधा लोग ईमान लाने वाले न थे। (१९०) और (हे पैग़म्बर) और तुम्हारा पालनकर्त्ता ज़ोरावर रहमवाला है। (१९१) [रुकू ११] और (हे पैग़म्बर) (यह कुरान) दुनियां के पालन-कर्त्ताका उतारा हुआ है। (१९२) इसको जिब्राईल अमीनने उतारा है। (१९३) तेरे दिलपर ताकि तू डरानेवालों में होजाय। (१९४) साफ़ अरबी ज़बान में। (१९५) यह कुरान अगले पैग़म्बरों की किताबों में है। (१९६) क्या लोगों के लिये यह दलील नहीं है कि इसराईल के वेटों में विद्वान इस भविष्यता से जानकार हैं। (१९७) और अगर हम कुरान को किसी ऊपरी ज़बान वाले पर (उसकी ज़बान में) उतारते। (१९८) और वह उसे इन (अरब वालों) को पढ़कर सुनाता तो यह उसपर ईमान न लाते। (१९९) इसी तरह के इन्कार को हमने अपराधियों के दिल में जमादिया है। (२००) जब तक दुखदाई सज़ा न देखलें इस पर ईमान न लावेंगे। (२०१) वह (सज़ा) इन पर यकायक इनके सामने आजायगी और इनको खबर भी न होगी। (२०२) फिर कहेंगे हमें कुछ मुहलत मिल-सक्ती है। (२०३) क्या यह लोग हमारी सज़ा के लिये जल्दी मचारहे हैं। (२०४) तो (हे पैग़म्बर) ज़रा देखो तो सही अगर हम चन्द साल इनको (दुनियां के) फ़ायदे उठाने दें। (२०५) फिर जिस (सज़ा) का इनसे वादा कियाजाता है वह उनके सामने

आवेगी। (२०६) तो वह जो इन्होंने (दुनिया के) फ़ायदे उठा लिये इनके क्या काम आसक्ते हैं। (२०७) और हमने किसी गांव को नही मारा जब तक उनके पास डर सुनानेवाले (पैग़म्बर) न आये। (२०८) याद दिलाने को और हमारा काम ज़ुल्म करना नही है। २०६) और इस (कुरान) को (जैसा यह लोग ख़्याल करते हैं। शैतान लेकर नही उतरे। (२१०) और न यह काम उनके करने का है और न वह (इसको) कर सके हैं। (२११) वह तो सुनने से दूर रक्खे गये हैं। (२१२) तो (हे पैग़म्बर) तुम खुदा के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारने लगना वरना तुम भी सज़ा में फँस जाओगे। (२१३) और अपने पास के रिश्तेदारों को (खुदा की सज़ा से) डराओ। (२१४) और जो ईमानवालों में से तेरे पीछे होगया है उससे खातिरदारी के साथ पेश आओ। (२१५) अगर लोग तेरा कहा न माने तो कहदे कि मैं तुम्हारे कर्मों से बरी हूं। (२१६) और (हे पैगम्बर) (खुदा) जोरावर मिहर्बान पर भरोसा रक्खो। (२१७) तो जो तुम नमाज में खड़े होते हो तो वह तुम्हारे खड़े होने को देखता है। (२१८) और नमाजियों में तेरा फिरना देखता है। (२१६) बेशक वही

और उनपर जुल्म हुये पीछे बदला लिया और जिन्हों ने (लोगों पर) ज़ुल्म किये हैं उनको जल्दी मालूम होजावेगा किस करवट पर उलटते हैं (२२८) ।

——:*:——

सूरे नमल् ।

मक्के में उतरी इसमें ९३ आयतें और ७ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है । [रुकू १] तोय-सीन । यह कुरान यानी खुली किताब की चंद आयतें हैं । (१) जो ईमान वालों के लिये शिक्षा और खुश खबरी है । (२) जो नमाज़ पढ़ते, ज़कात देते और अखीर दिनका भी यक़ीन रखते हैं । (३) जो लोग अखीर दिन का यक़ीन नहीं रखते हमने उनके काम उन्हें अच्छे कर दिखाये तो यह लोग भटके फिरते हैं । (४) यही लोग हैं जिनको बुरी तरह की सज़ा होती है और यही लोग क़यामत में ज़ियादह नुकसान में रहेंगे । (५) और (हे पैग़म्बर) तुझको तो कुरान (खुदा) एक हिक्मत वाले खबरदार से मिलता है । (६) जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि मुझ को आग दिखलाई दी है मैं वहां से तुम्हारे पास कोई खबर या एक सुलगता अंगारा लाऊंगा ताकि तुम तापो । (७) फिर जब मूसा आग के पास आये तो उनको आवाज आई कि वह जो आग में है और वह जो उस (आग) के आस पास है बरकत वाला है और अल्लाह तमाम संसार का पालनकर्त्ता और पाक है । (८) (हे मूसा) मैं ज़ोरावर हिक्मत वाला अल्लाह हूं । (९) और अपनी लाठी डाल तो जब (मूसा ने) देखा कि लाठी चलरही है मानिन्द ज़िन्दा सांप के तो पीठ फेर कर भागा और पाछे न देखा (हमने फ़र्माया) मूसा डरो मत हम से पैग़म्बर नहीं डरा करते । (१०) मगर (जिसने)

कोई क़सूर कियाहो फिर अपराधके बाद नेकी की तो मैं बख्शनेवाला मिहर्बान हूं। (११) और अपना हाथ अपनी छातीपर रख फिर निकालो तोवह वे रोग सफ़ेद निकलेगा। फ़िरऔन और उसकी क़ौमके लोगोंकी तरफ़ यह नये चमत्कारहैं। कि वे अन्यायीहैं। (१२) तो जब उनके पास हमारे आंखे खोल देनेवाले चमत्कार आये तो कहने लगे कि यह तो ज़ाहिरा जादू है। (१३) और बावजूदे कि उनके दिल क़बूल करचुके थे (मगर) उन्हो ने हेकड़ी और शेखी से उन्हें न माना तो (हे पैग़म्बर) देख झगड़ालुओं का कैसा अन्त हुआ। (१४) [रुकू २] और हमने दाऊद और सुलेमानको इल्म दिया था और दोनो ने कहा कि खुदा का धन्यवाद है जिसने हम को अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर बुज़ुर्गी दी है। (१५) और सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा लोगो हम को (खुदा की तरफ़ से) परिन्दों की बोली सिखाई गई है और हम को हर तरह के सामान मिलेहैं यह (खुदाकी) जाहिरा कृपाहै। (१६) और सुलेमान का लशकर जिन्नो और आदमियों और चोंटियों में से जमा किये गये

मैं उसको ज़रूर सख्त सज़ा दूंगा या उसे हलाल करडालूंगा या वह हमारे हुज़ूर में कोई वजह (ग़ैरहाज़िरीकी) बयान करे। (२१) फिर थोड़ी देर बाद हुदहुद आगया और कहने लगा कि मुझको एक ऐसा हाल मालूम हुआ है जो तुम्हें मालूम नहीं और मैं (शहर) सबा की एक जंची खबर लाया हूं। (२२) मैंने एक औरतको देखा जो वहां की रानी है और हरतरह के सामान (राज्य) उसको मिले हैं और उसके यहां बड़ा तख़्त है। (२३) मैंने मलिका और उसके लोगों को देखा कि खुदाको छोड़कर सूरजको सिजदा करते हैं और शैतान ने उनके कामों को उन्हें अच्छा करदिखाया है और उनको सीधी राहसे रोकदिया है तो उनको नहीं सूझ पड़ती। (२४) फिर खुदाहीके आगे (क्यों) न सिजदा करे जो आस्मान और ज़मीन की छिपीहुई चीज़ों को ज़ाहिर करताहै और जोकाम तुम छिपाकर करते हो-या ज़ाहिर करते हो वह सब से जानकारहै। (२५) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं वही बड़े तख़्त का मालिक है। (२६) कहा अब देखूंगा कि तू सच्चा है या झूठा। (२७) यह हमारा लिखावट लेकर चला जा और इसको उनकी तरफ़ डाल दे फिर उन से हटजा फिर देख कि वह लोग क्या जवाब देते हैं। (२८) बोली हे दरबारियो एक इज़्ज़त का खत मेरी तरफ़ डाला गया है। (२९) यह सुलेमान की तरफ़ से है और शुरूअ अल्लाह के नाम से है जो बड़ा रहमवाला मिहर्बान है। (३०) और यह कि हम से सरकशी न करो और हुक्म बरदार बनकर हमारे सामने चले आओ। (३१) [रुकू ३] बोली हे दरबारियो मेरे मामले में अपनी राय दो जब तक तुम मेरे सामने मौजूद न हो मैं किसी काम में पक्का हुक्म नहीं दिया करती। (३२) (दरबारियों ने) निवेदन किया कि हम ताकतवर और बड़े लड़ने वाले हैं और तुझे अख़्तियार है जैसा चाहे हुक्म दे देखें तू क्या हुक्म देती है। (३३) (वह) बोली बादशाह

जब किसी शहर मे दाखिल होते हैं तो उसको खराब करते हैं और वहां के इज़्ज़तदारों को बेइज़्ज़त करते हैं और ऐसाही करेंगे। (३४) और मैं उनको तरफ़ नज़र भेजकर देखती हूं कि दूत क्या जवाब लेकर आतेहैं। (३५) फिर जब सुलेमान के सामने (नजर लेकर) आया तो (सुलेमान ने) कहा कि क्या तुम लोग माल से मेरी सहायता करते हो सो जो कुछ खुदा ने मुझ को दे रक्खा है वह उससे जो तुम्हें दे रक्खाहै बिहतर है बल्कि तुम अपने तुहफ़ेसे खुश रहो। (३६) (हे दूत जिसने तुझे भेजा है) उन्होंके पास लौट जा और (हम) ऐसे लशकर लेकर उन पर चढ़ाई करेंगे कि जिनका उनसे सामना न हो सकेगा और हम वहां से उनको (बदनाम) अपमानित करके निकालदेंगे। (३७) (सुलेमान ने) कहा हे दरबारियो कोई तुम में ऐसा भी है कि उस औरत का तख्त मेरे पास उठालावे उससे पहले कि वह (इस पर) मुसल्मान होकर हाजिर हो। (३८) (इस पर) जिन्नों मेंसे एक बोला कि दरबार के बरखास्त होने के पहले मै वह तख्त लेआऊंगा मैं उसके उठा

जब आई तो (उस से) कहा गया कि ऐसाही तेरा तख्त है वह बोली गोया वहीं है और (सुलेमान से बोली कि) मुझे तो इससे पहले मालूम होगया था और मै मानगई थी। (४२) और वह जो खुदा के सिवाय (सूरज को) पूजती थी उसी ने इसको (सुलेमान के पास आने से) रोक रक्खा था क्योंकि वह काफिरों में से थी। (४३) उससे कहा गया कि महल में दाखिल हो तो जब उसने महल को देखा तो उसको पानी का हौज समझी और दोनों पिंड-लिया खोलदीं (सुलेमान ने कहा यह तो शीश) महल है जिसमें शीशे जड़े हैं। (४४) बोली हे मेरे पालनकर्त्ता मैंने अपनाही नुक-सान किया और अब मैं सुलेमान के साथ होकर अल्लाह दोनो जहान के पालनकर्त्ता पर ईमान लाई। (४५) [रुकू ४] और हमने (क़ौम) समूद की तरफ़ उनके भाई सालह को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था कि खुदा की पूजा करो तो सालह के आतेही वह लोग दो फ़रीक़ होगये और झगड़ने लगे। (४६) (सालह ने) कहा भाइयो भलाई से पहले बुराई के लिये क्यों जल्दी मचाते हो अल्लाह के सामने क्यों नहीं क्षमा मांगते शायद तुम पर रहम हो। (४७) वह बोले हमने तुझे और उन लोगों को जो तेरे साथ हैं बड़ाही बुरा पाया है (सालह ने) कहा तुम्हारी बद क़िस्मती खुदा की तरफ़ में है बल्कि तुम लोग जांचे जा रहे हो। (४८) और शहर में नौ आदमीथे जो देशमें फिसाद करते और सलाह न करतेथे। (४९) उन्होंने कहा आपसमें खुदाकी क़सम खाओ कि हम जरूर सालहको और उसके घरवालों को रातके समय जा मारेंगे फिर उसके वारिससे कहदेंगे कि सालहके घरवालोंके मारेजानेके समय हम मौजूद न थे और हम बिलकुल सच कहतेहैं। (५०) ग़रज़ वह एक दांव चले और हम भी एक दांव चले और उनको खबर भी न हुई। (५१) तो (हे पैग़म्बर) देखा उनके दांव का कैसा परिणाम हुआ कि हमने उनको और

उनकी सब क़ौम को हलाक कर डाला। (५२) अब यह उनके घर उनके अन्यायियों से खाली पड़े हैं इसमें उनको जो जानते हैं शिक्षा है। (५३) और जो लोग ईमान लाये और खुदा से डरते रहते थे उनको हम ने बचा लिया। (५४) और लूतने जब अपनी क़ौम से कहा कि तुम बेशर्मी करते हो और देखते जाते हो। (५५) क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों पर ललचाकर दौड़ते हो बात यह है कि तुम बेसमझ हो। (५६) तो लूत की क़ौम का इसके सिवाय और कुछ जवाब न था कि लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो (क्योंकि) यह लोग बड़े पाक बनना चाहते हैं। (५७) तो हमने लूत को और उनके खान्दान के लोगों को (सज़ा से) बचा लिया मगर उनकी बीबी जिसकी तक़दीर में लिख चुके थे कि वह पीछे रहने वालों में होगी। (५८) और हमने उनपर पत्थर बरसाये सो उन लोगों पर बरसाओ जो डराये जाचुके थे। (५९) (हे पैग़म्बर) कहो खुदा का शुक्र है और खुदा के बन्दों को सलाम है जिनको उसने कबूल किया। भला अल्लाह बिहतर है या जिनको ये शरीक ठहराते हैं। (६०)

—:o:—

बीसवां पारा।

—:o:—

[रुकू ५] भला आसमान व जमीन किसने पैदा किये और आसमान से तुम लोगों के लिये (किसने) पानी बरसाया—फिर पानी के ज़रिये से हमने उम्दह बाग़ पैदा किये–तुम्हारे बसकी तो बात न थी कि तुम उन के दरख्तों को उगासको. क्या खुदा के साथ (कोई और) पूजित है मगर यही लोग राह से मुड़ते हैं। (६१) भला किसने जमीन को ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच में

नदी नाले बनाये और उसके लिये अटल पहाड़ बनाये और दो समुद्रों में खास सीमा रक्खी–क्या अल्लाह के साथ (कोई और) पूजित है कोई नही मगर इन लोगों में बहुधा नहीं जानते। (६२) भला बेचैन की पुकार को कौन सुनता है जब वह पुकारे और कौन बुराई को टाल देता है और तुम को ज़मीन में नायब बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई पूजित है तुम बहुत कम फ़िक्र करते हो। (६३) भला कौन तुम लोगो को ज़मीन और पानी के अंध्यारे मे दिखाता है और कौन अपनी कृपा (मेह) के आगे हवाओं को (मेह की) खुशखबरी देने के लिये भेजता है–क्या अल्लाह के साथ (कोई और) पूजित है खुदा उनके शिर्क से ऊंचा है। (६४) कौन है जो पहले नई सृष्टि पैदा करता है और उसी तरह बार २ पैदा करता है और कौन है जो तुम्हें आस्मान व ज़मीन से रोज़ी देता है–क्या अल्लाह के साथ (और कोई) पूजित है। (हे पैग़म्बर इन लोगो से) कहो कि अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो। (६५) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि जितनी पैदाइश आस्मान व ज़मीन में है उनमें से किसी को भी खुदा के सिवाय छिपे हुए भेद की खबर नही। मगर अल्लाह जानता है और वह नही जानते। (६६) कि किस वक़्त उठाये जांयेगे। (६७) बात यह है कि इन लोगों की मालूमात क़यामत के बारे में हार गई बल्कि इस के बारे में इनको शक है यह लोग उससे अन्धे बने हुए हैं। (६८) [रुकू ६) और जो लोग इन्कार करने वाले है वह कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जांयगे तो क्या हम फिर निकाले जांयगे। (६६) पहले से भी हमारे और हमारे बाप दादो के साथ और ऐसे वादे होते चले आये है हो न हो यह अगले लोगों के ढकोसले हैं। (७०) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि मुल्क में चलो फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा अंत हुआ। (७१) और (हे पैग़म्बर) इन

पर कुछ अफ़सोस न करो और जैसी २ तद्‌बीरें कर रहे हैं उनसे तंगदिल न हो। (७२) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब होगा। (७३) क्या आश्चर्य जिसकी तुम जल्दी मचारहे हो वह तुम्हारे पास आलगीहो। (७४) इसमें शक नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता लोगों पर कृपा रखता है मगर बहुधा लोग कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) नहीं होते। (७५) और इसमें शक नहीं कि जैसी २ बातें लोगों के दिलों में छिपी हुई हैं और जो कुछ यह प्रत्यक्ष करते हैं तुम्हारे पालनकर्त्ता को मालूम हैं। (७६) और आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छिपी हुई बात नहीं (जो) खुली किताब (लोह महफ़ूज़) में न लिखी हो। (७७) यह कुरान इस्राईल के बेटों की बहुधा बातों को जिन में फ़र्क़ डालते हैं ज़ाहिर करता है। (७८) और यह (कुरान) ईमान वालों के हक़ में हिदायत और कृपाहै। (७९) (हे पैग़म्बर) तुम्हारा पालनकर्त्ता अपनी आज्ञा से इनके बीच फ़ैसला करदे और वह ज़ोरावर सबका जानकारहै। (८०) तो (हे पैग़म्बर) अल्लाहही पर भरोसा रक्खो—कुछ शक नहीं कि तुम राह पर हो। (८१) तुम मुर्दों को नहीं सुना सक्ते और न बहरों को आवाज़ सुना सक्ते—ऐसी हालत में कि वह पीठ फ़ेर कर भाग खड़े हो। (८२ और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से राह देखा सक्ते हो तुमतो बस उन्हीं को सुना सक्ते हो जो हमारी आयतों का विश्वास रखते हैं तो वह मान भी जाते हैं। (८३) और जब वादा (क़यामत) इन लोगों पर पूरा होगा तो हम ज़मीन से इनके लिये एक जानवर निकालेंगे वह इनसे बातें करेगा कि लोगों हमारी बातों का विश्वास नहीं रखते थे। (८४) [रकू ७] और जब हम हरेक गरोह मेंसे उस एक दल को जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे फिर पंक्तिवार खड़े किये जावेंगे। (८५) यहांतक कि जब हाज़िर होवेंगे तो (ख़ुदा इनसे) पूछेगा कि बावजूदे कि तुमने हमारी

आयतों को अच्छी तरह समझा भी न था क्यों तुमने उनका (वे समझे) झुठलाया (यह नही किया तो और) क्या करते रहे। (८६) और चूंकि यह लोग सरकशी करते रहे वादा (सज़ा) उन पर पूरा हुआ और यह लोग बात भी न कर सकेंगे। (८७) क्या इन लोगों ने नही देखा कि हमने रातको बनाया है कि उसमें आराम करें और दिनको बनाया देखने को इसमें उन लोगों को निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (८८) और जिस दिन नरसिंहा फूंका जायगा तो जो आस्मान में है और जो ज़मीन में है सब कांप जांयगे मगर जिसका खुदा चाहे वही धैर्य से रहैगा और सब उसके सामने दबे झुके हाज़िर होंगे। (८९) और तू पहाड़ों को देखकर ख़्याल करता है कि जमे हुयेहैं मगर यह (क़यामत के दिन) बादल की तरह उड़े २ फिरेंगे (यह भी) अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज को खूब पुख़ता तौर पर बनाया है—बेशक जो कुछ भी तुम करते हो वह उस से खबरदार है। (९०) जो आदमी सुकर्म लेकर आयेगा तो उनको उससे बढ़कर अच्छा (बदला) मिलेगा और ऐसे आदमी उस दिन डर से चैन में होंगे। (९१) और जो बुरे काम लेकर आवेंगे वह औन्धे मुंह नरकमें ढकेल दिये जावेंगे तुमको उन्हीं कर्मोंकी सज़ा दी जारही है जो तुम करतेथे। (९२) (हे पैग़म्बर इन लोगों से कहो कि) मुझको यही हुक्म मिलाहै कि इस (शहर) मक्का के मालिक की पूजा करूं जिसने इसको प्रतिष्ठादी है और सब कुछ उसीका है और मुझे आज्ञा मिली है कि आज्ञाकारी रहूं। (९३) और यह कि कुरान पढ़२कर सुनाऊं तो जो राहपर आगया सो अपनेही भलेको और जो गुमराह हुआ तो तुम कहदो कि मैं तो सिर्फ़ डर सुनाने वाला हूं। (९४) और कहो कि खुदा की तारीफ़ हो वह जल्दी तुमको अपनी निशानियां दिखलायेगा और तुम उनको पहिचान लोगे—और जैसे २ काम तुम लोग कर रहे हो तुम्हारा पालनकर्त्ता उनसे बेखबर नहीं (९५)।

सूरे क़सस ॥

मक्के में उतरी इसमें ८८ आयतें और ९ रुकू है।

अल्लाह के नामसे जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है। [रुकू १] तोय–सीन–मीम। यह खुली किताब की आयतें हैं। (१) (हे पैग़म्बर) हम उन लोगों के लिये जो यक़ीन करते हैं मूसा और फ़िरऔन के सच्चे हाल को तेरे सामने सुनाते हैं। (२) फिरऔन मुल्क मिश्र मे चढ़रहा था और उसने वहां के लोगों के अलग २ जत्थे कर रक्खेथे उनमेसे एक गरोह (इस्राईल की संतान) को कमज़ोर कर रक्खाथा कि उनके बेटों को हलाक़ करवादेता और बेटियो को जिन्दा रखता-वह फ़सादियो में से था। (३) और हमारा इरादा यह था कि जो लोग मुल्क में बलहीन समझे गये थे उन पर नेकी करें और उनको सर्दार बनायें और इनको (राज्य का) मालिक बनावे। (४) और उनको मुल्क में जमावे और फिरऔन हामां और उनके लशकर को जिस बात का डर है वही उनके आगेलावें। (५) और हमने मूसा की मांको हुक्म भेजा कि इसको दूध पिलाओ फिर जब इनका बाबत तुमको डर होवे तो इनको नदी में डालदे और डर न करना और न रञ्ज करना हम इनको फिर तुम्हारे पास पहुँचादेंगे और इनको पैग़म्बरों में से (एक पैग़म्बर) बनावेंगे। (६) तो फ़िरऔन के लोगों ने उसे (बहतेको) उठालिया कि उनका एक दुश्मन रंज पहुँचानेका कारण हो कुछ शक नहीं कि फिरऔन और हामां और उनके सिपाहियों ने ग़लती की थी। (७) और फ़िरऔन की औरत (अपने पति से) बोली यह मेरी और तुम्हारी आंखों की ठण्डक है इसको मारो मत आश्चर्य नहीं कि हमारे काम आवे। या इसको अपना बेटा बनालें और उन लोगों को खबर न थी। (८) और मूसा की मां का दिल

बेचैन होगया और वह ज़ाहिर करने वालीही थी (कि मैं उसकी माता हूं) हमने उसके दिल को मज़बूत करदिया ताकि वह ईमान वालों में रहे। (९) और(सन्दूक़ को दरिया में डालते वक्त मूसा की मा ने) मूसा का वहिन से कहा कि इसके पीछे २ चली जा, तो वह उसको दूरसे ऊपरी की तरह देखती रही और फ़िरऔन के लोगों को ख़बर न हुई। (१०) और हमने मूसा पर पहिलेही से (धायके) दूध वन्द कर रक्खे थे (कि वह किसी की छाती मुंह में लेतेही न थे) इसपर (मूसा की वहिन ने) कहा कि कहो तो मैं तुमको एक घराने का पता वतावें कि वह तुम्हारे लिये इसकी परवरिश करेंगे और वह इसके हितके चाहनेवाले हैं। (११) फिर हमने मूसा को उसकी माता के पास भेजा ताकि उसकी आंखें ठण्डी हों और उदास न रहे और यह भी जानले कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन वहुत लोग नहीं जानते। (१२) [रुकू २] और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचे और सम्हले हमने उसको हुक्म और बुद्धि दी और सुकर्मियों को हम इसी तरह वदला दिया करते है। (१३) और मूसा (एक दिन) शहर में आया कि लोग (दोपहर को) वेखवर (सोते) थे तो क्या देखते हैं कि दो आदमी आपस में लड़रहे हैं एक तो उनकी क़ौमका है और एक उनके दुश्मनों में का। तो जो मूसा की क़ौम का था इसने उस आदमी के सामने जो उनके वैरियों में था मदद मांगी तो मूसा ने उस (वैरी) के घूसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया (फिर) कहने लगे कि यह तो एक शैतानी काम हुआ। कुछ शक नहीं कि शैतान प्रत्यक्ष गुमराह करनेवाला है। (१४) (मूसाने) कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता मैं ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया तू मेरा पाप क्षमाकर खुदा ने उसका पाप क्षमा किया। वह वहुत क्षमा करने वाला दयालु है। (१५) (मूसाने)कहा कि मेरे पालनकर्त्ता जैसी

तूने मुझ पर कृपा की। मैं आइन्दा कभी अन्यायियों का साथी न हूंगा। (१६) फिर सुबह को डरते २ शहर में गया इतने में क्या देखता है कि वही आदमी जिसने कल इनसे मदद मांगी थी (आज फिर) इस को पुकार रहा है मूसा ने उस से कहा कि इसमें शक नहीं तू तो प्रत्यक्ष खराब राह पर है। (१७) फिर जब मूसा ने उस (क़िब्ती) को जो इसका और उस फरियाद करने वाले दोनों का दुश्मन था पकड़ना चाहा तो (इसराईल की संतान को) शक हुआ कि मुझ को पकड़ना चाहते हैं और वह चिल्ला उठा कि मूसा जिसतरह तूने कल एक आदमी को मारडाला। क्या मुझ को भी मारडालना चाहता है बस तू यह चाहता है कि मुल्क में ज़ुल्म करता फिरे और मेल करा देने वाला नहीं बनना चाहता। (१८) और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया उसने खबर दी कि मूसा बड़े २ आदमी तुम्हारे बारे में सलाहें कररहे हैं ताकि तुम को मारडालें तुम निकल जाओ मैं तेरे भले की कहता हूं। (१९) चुनांचि (मूसा) शहर से निकल भागे और डरते २ जाते थे कि देखें क्या होता है और (मूसा ने) दुआ की कि हे मेरे पालनकर्त्ता जालिम लोगों से छुटकारा दे। (२०) [रुकू ३] और जब मदीयन की तरफ मुंह किया तो कहा मुझ को अपने पालनकर्त्ता से उम्मेदहै कि वह मुझको सीधी राह दिखायेगा। (२१) और जब शहर मदीयन के कुए पर पहुंचा तो देखा कि लोग पानी पिला रहे हैं। (२२) और देखा उनसे अलग दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं। (मूसा ने उनसे) पूछा कि तुम्हारा क्या प्रयोजन है वह बोलीं जबतक (दूसरे) चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिलाकर) हटा न लेजायें हम (अपनी बकरियों को पानी) पिला नहीं सकीं और हमारे पिता निहायत बूढ़े हैं। (२३) यह सुनकर (मूसा ने) उनके लिये (पानी खींचकर उनकी बक

रियों को) पिला दिया फिर हट कर साये में जा बैठे और कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता तू (अपनी कृपा के थाल से इस समय) जो मुझको भेज दे मैं उसका चाहने वाला हूं। (२४) इतने में उन दो औरतों में से एक उनकी तरफ़ शर्माता चली आरही है उसने (मूसा से) कहा कि मेरे पिता तुझे बुला रहे हैं कि वह जो तूने हमारी खातिर (हमारी बकरियों को पानी) पिला दिया था तुम को उसकी मज़दूरी देंगे जब मूसा उस (बुड्ढे) के पास पहुंचा और उनसे हाल बयान किया तो (उन्हो ने) कहा कि डर न कर तू ज़ालिम लोगों से बचगया। (२५) फिर उन दो (औरतों) मेसे एकने (अपने बाप से) कहा कि हे बाप तू इनको नौकर रखले क्योंकि अच्छे से अच्छा आदमी जो तू नौकर रखना चाहे मज़बूत अमानतदार होना चाहिये। (२६) (उस बुड्ढे ने मूसा से) कहा कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम्हारे साथ ब्याह दूं कि तुम आठ वर्ष मेरी नौकरी करो और अगर तुम (दश वर्ष) पूरे करो तो तुम्हारी भलाई है और मैं तुझे कष्ट नही देना चाहता (और) तू मुझ को ईश्वर ने चाहा भला आदमी पायगा। (२७) (मूसा ने) कहा यह बातें मेरे और तेरे बीच होचुकी मुझको अख्तियार है दोनों मुद्दतों में से जौनसी (मुद्दत चाहूं) पूरी करूं मुझ पर किसी तरह का जब्र नहीं और जो मेरे और तेरे बीच में बचन हुआ है अल्लाह उसका साक्षी है। (२८) [रुकू ४] फिर जब मूसा ने मुद्दत पूरी की और अपना बीबी को लेकर चल दिया तो तूर (पहाड़) की तरफ़ से इस को एक आग दिखाई दी (मूसा ने) अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (इसी जगह) ठहरो मुझ को आग दिखाई दी है शायद वहां से तुम्हारे पास कुछ खबर लेआऊं या आग की एक चिंगारी लेता आऊं ताकि तुम लोग तापो। (२९) फिर जब मूसा आग के पास

पहुंचा तो (उस) पाक जगह मैदानके दाहिने किनारे दरख्तसे उसे आवाज सुनाई दी कि मूसा हम सब संसार के पालनकर्त्ता अल्लाह हैं। (३०) और यह (भी आवाज़ आई) कि तुम अपनी लाठी ज़मीन पर डाल तो जब लाठी को डाला और उस को इस तरह चलते हुये देखा कि गोया वह (ज़िन्दा) सांप है तो पीठ फेर कर भागा और पीछे को न देखा (हमने फ़र्माया) मूसा आगे आओ और डर न करो तू बेखटके है। (३१) अपना हाथ अपने गिरेबान (कोष्ट वस्त्र) के अन्दर रक्खो (और फिर निकालो तो वह) बिना किसी बुराई के सफ़ेद निकलेगा डर दूर होजानेके लिये अपनी भुजा अपनी तरफ़ सकोड़ ले सारांश (असाः लाठी और यदबेज़ाः सफ़ेद हाथ) यह दोनों चमत्कार खुदा के दिये हुये हैं (जो तुम्हारी मार्फ़त) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजे जाते हैं क्योंकि वे बेहुक्म हैं। (३२) (मूसाने) कहा हे मेरे पालनकर्त्ता मैंने उन में से एक आदमी का खून कर दिया है। सो डर है कि मुझे मार न डालें। (३३) और मेरे भाई हारूं जिसकी जबान मुझसे जियादा चलती है तो उसको मेरी मदद के लिये भेज कि वह मुझे सच्चा करै मुझको डर है कि (फ़िरऔन के लोग) मुझको झुठलायेंगे। (३४) फर्माया मैं तेरे भाईको तेरा मददगार बनाऊंगा और तुम दोनों को ऐसी जीत देंगे कि फ़िरऔन के लोग तुम तक पहुंच न सकेंगे तुम दोनों और जो तुम दोनों की पैरवी करें विजयी होंगे। (३५) फिर जब मूसा खुले हुये चमत्कार लेकर उनके पास पहुंचा वह कहने लगे यह बनाया हुआ जादू है और हमने अपने अगले बाप दादों से ऐसी बातें नहीं सुनीं। (३६) और मूसा ने कहा जो अपनी खुदा की तरफ से हक की बात लेकर आया है और जिसका अन्तिम परिणाम भला होगा मेरे पालनकर्त्ता को खूब मालूम है। बेशक अन्यायियों का भला न होगा। (३७) और फ़िरऔन ने

कहा है दरबारियो मुझको तो अपने सिवाय तुम्हारा कोई खुदा मालूम नहीं। हे हामां तू हमारे लिये मिट्टी (की ईंटों) में आगलगा (पंजावा) और हमारे लिये पक्का महल बनवा कि हम (उस पर चढ़कर) मूसा के खुदा को झांकें और हम मूसा को झूठाही समझते हैं। (३८) और फ़िरऔन और उसके लश्करों ने वृथा मुल्कों में बहुत शिर उठाया और उन्हों ने ऐसा समझा कि वह हमारी तरफ़ लौटाकर नहीं लाये जायेंगे। (३६) तो हमने फ़िरऔन और उसके लश्करों को धर पकड़ा और उनको समुद्र में फेंक दिया सो (हे पैग़म्बर) देख ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ। (४०) और हमने उनको सर्दार किया कि नरक की तरफ़ बुलाते रहें और क़यामत के दिन इनको मदद मिलने की नहीं। (४१) और हमने इस दुनियां में उनके पीछे फटकार लगादी और क़यामत के दिन तो उनका बुरा हाल होना है। (४२) [रुकू ५] और अगले गिरोहों के मार डाले पीछे हमने मूसा को किताब (तौरात) दी जिससे लोगों को सूझहो और राह पकड़ें और कृपाहो शायद वे शिक्षा पावें। (४३) और (हे पैग़म्बर) जिस वक्त हमने मूसा को हुक्म भेजा तू (तूर के) पश्चिम ओर था और तू देखने वालों में न था। (४४) लेकिन हमने बहुत से गिरोह निकाल खड़े किये और उन पर बहुत सी उम्रें गुज़र गईं और न तुम मदियन के लोगों में रहते थे कि तुम उनको हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते बल्कि हम पैग़म्बर भेजते रहे हैं। (४५) और तू तूर के पास उस वक्त न था जब कि हमने मूसा को बुलाया था बल्कि तेरे पालनकर्त्ता की कृपा है कि तू उन लोगों को डरावे जिनके पास तुझ से पहिले कोई डराने वाला नहीं आया शायद यह लोग शिक्षा पकड़ें। (४६) और ऐसा न हो कि इन पर अपने ही करतूत के बदले में कोई आफ़त आपड़े तो कहने लगें हे मेरे पालनकर्त्ता तूने मेरे पास कोई पैग़म्बर

क्यों न भेजा जिससे हम तेरी आज्ञा की पैरवी करते और ईमान वालों मे होते। (४७) फिर जब हमारी तरफ़ से ठीक बात उनके पास पहुंची तो कहने लगे कि जैसे (चमत्कार) मूसा को मिले थे ऐसेही इस (पैग़म्बर) को क्यों नही मिले क्या जो (चमत्कार) पहिले मूसा को मिले थे लोग उनके इन्कार करने वाले नहीं हुये थे उन्होंने कहा था कि (मूसा और हारू) दोनों जादूगर हैं और एक दूसरे के साथी हैं और कहा कि हम दोनों को नहीं मानते। (४८) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो ख़ुदा के यहां से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों से हिदायत में बढ़-कर हो मैं उसपर चलूं। (४९) तो अगर यह लोग तेरे कहने के बमूजिब न कर दिखाये तो जानलो कि अपनी बुरी चाहों पर चलते हैं और उससे बढ़कर गुमराह कौन है कि ख़ुदा के बिना राह बताये अपनी चाह पर चले। अल्लाह अन्यायियों को राह नहीं दिखाता। (५०) [रुकू ६) और हम बराबर लोगों पर (आयतें) अतारें भेजते रहे हैं शायद वह शिक्षा पकड़ें।(५१) जिन लोगों को क़ुरान से पहिले हमने किताब दी वह इस पर ईमान ले आते हैं। (५२) और जब उनको क़ुरान सुनाया जाता है तो बोल उठते हैं कि हमको तो इसका विश्वास आगया कि हमारे पालनकर्त्ता की तरफ से भेजा हुआ ठीक है हम तो इससे पहिले के हुक्म मानने वाले हैं। (५३) यही लोग हैं जिनको इनके सब्र के बदले दोहरा बदला दिया जायगा और नेकी से बदी का बदला करते हैं और हमने जो इनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। (५४) और जब झूठी बात सुनते हैं तो उस से किनारा पकड़ते हैं और कहते हैं कि हमारे काम हमको और तुम्हारे काम तुमको हैं हम तुम्हें (दूरही से) सलाम करते हैं हम बे समझों को नहीं चाहते। (५५) (हे पैग़म्बर) तू जिसको चाहे हिदायत नहीं दे सकता बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है

हिदायत देता है और वही राह पर आने वालों से खूब जानकार है। (५६) और (हे पैग़म्बर लोग) कहते हैं कि अगर हम तेरे साथ सच्चे दीन की पैरवी करें तो हम अपनी जगह से उचक जावें क्या हमने उनको अदन वाले मकान में जहां चैन है जगह नही दी क हर तरह के फल यहां खिचे चले आते हैं (इनकी) रोज़ी हमारे यहां से है । मगर वह बहुधा नहीं जानते । (५७) और हमने बहुत सी बस्तियां मारडाली जो अपनी रोज़ी में इतरा चली थीं तो यह उन के घर हैं जो उनके पीछे आबाद नही हुए सिवाय थोड़ो के और हम हीं वारिस हुये। (५८) और जब तक तेरा पालनकर्त्ता किसी बस्ती में पैग़म्बर न भेज लें और वह उन को हमारी आयतें पढ़कर न सुना दें तब तब वह बस्तियों का निशान नहीं करता और हम बस्तियों को तभी मार डालते हैं जब कि वहां के लोग पापी हो जाते हैं। (५६) और जो कुछ तुम को दिया गया है दुनियां की ज़िन्दगी में वर्तने के लिये है और यहां की शोभा है और जो अल्लाह के यहां है वह बढ़ कर और वहीं ठहरने वाला है क्या तुम लोग नही समझते। (६०) [रुकू ७] भला वह आदमी जिसे हमने अच्छा वादा दिया वह उस को मिलने वाला है क्या उस के बराबर है जिसे हमने दुनियां का वर्त्तना वर्त्ता लिया फिर वह क़यामत के दिन पकड़ा हुआ आया। (६१) और जिस दिन खुदा क़ाफिरों को बुला कर पूछैगा कि जिन लोगों को तुम हमारे साझी समझते थे कहां हैं। (६२) जिन पर बात साबित हुई बोल उठेंगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता यह वही लोग हैं जिन को हमने बहकाया जिस तरह हम खुद बहके थे इसी तरह हम ने उन को भी बहकाया । हम तेरे सामने इन्कार करते हैं यह लोग हम को नही पूजते थे। (६३) और कहेंगे कि अपने शरीकों को बुलाओ फिर यह लोग उनको बुलायेंगे तो वह(पूजित) इन को जवाब न देंगे और

सज़ा को देख लेंगे और पछितायंगे कि हम सच्ची राह पर होते। (६४) और जिस दिन खुदा काफ़िरों को बुला कर पूछैगा कि पैग़म्बरों को तुमने क्या जवाब दिया। (६५) तो उस दिन उनको कोई बात न सूझ पड़ेगी और वह आपस में पूछ पाछ भी न कर सकेंगे। (६६) सो जिसने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो आशा है कि ऐसे आदमी मुक्ति पाने वाले हों। (६७) और (हे पैग़म्बर) तेरा पालनकर्त्ता जो चाहता है पैदा करता और चुन लेता है चुनना लोगों के हाथ मे नही है अल्लाह पाक है और इन के शरीकों (पूजितों) से ऊचा है। (६८) और (हे पैग़म्बर) जो यह लोग अपने दिलों में छिपाते और जो ज़ाहिर करते हैं तेरा पालनकर्त्ता उन को (खूब) जानता है। (६९) और वही अल्लाह है कि उस के सिवाय कोई पूजित नहीं दुनियां और क़यामत मे उसी की तारीफ़ है और उसी की हुकूमत है और उसीकी तरफ तुम लोगो को लौटकर जाना है। (७०) (हे पैगम्बर) कहो कि देखो तो कि अगर अल्लाह क़यामत के दिन तक लगातार तुम पर रात किये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो तुम्हारे लिये रोशनी ले आये क्या तुम नहो सुनते । (७१) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि देखो अगर अल्लाह क़यामतके दिन तक लगातार तुम पर दिन ही बनाये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो तुम्हारे लिये रात लावे जिस मे चैन पाओ क्या तुम लोग नहीं देखते और अपनी कृपा से तुम्हारे लिये रात और दिन को बनाया है। (७२) ताकि तुम चैन पाओ और उस की कृपा की तलाश में लगे रहो शायद तुम कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) हो। (७३) और जिस दिन (खुदा) मुशरिकों को बुलाकर पूछेगा कि कहां है मेरा शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (७४) और हरेक गिरोह में हम एक साक्षी (यानी पैग़म्बर को) अलग करेंगे फिर कहेंगे कि अपन

दलील पेश करो तब जानेंगे कि अल्लाह की बात सच्ची है और जो बातें बनाते थे उन से गुम होजांयगी। (७५) [रुकू ८] कारूं मूसा की क़ौम में से था फिर वह उन पर ज़ुलम करने लगा और हमने उस को इतने खज़ाने देरक्खे थे कि कई ज़ोरावर मर्द उस को कुंजियां मुशकिल से उठा सक्ते थे तब उस्की कौम ने उससे कहा इतरा मत (क्योंकि) अल्लाह इतराने वालों को नहीं चाहता। (७६) और जो तुझ को खुदा ने दे रक्खा है उससे अंत के घर की फ़िक्र करता है और दुनियां से जो तेरा हिस्सा है उस को मत भूल और जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है तू भी भलाई कर और मुल्क में फिसाद चाहने वाला न हो अल्लाह झगड़ा करने वालों को पसद नही करता। (७७) कारूं बोला यह तो मुझ को अपनी लियाक़त से मिला है क्या यह ख़्याल न किया कि इस से पहिले खुदा कितने गिरोहों को नाश कर चुका जो इस कारूं से ज़ियादा बल और खज़ाना रखते थे और पापियों से उनके पाप न पूछे जांयगे। (७८) फिर कारूं अपनी ठसक से अपनी क़ौम पर निकला तो जो लोग दुनियां की ज़िन्दगी के चाहिने वाले थे कहने लगे कि जैसा कुछ कारूं को मिला है हम को भी मिले बेशक कारूं बड़ा भाग्यवान है। (७९) और जिन लोगों का समझ मिली थी बोल उठे कि तुम्हारा सत्यानाश हो जो आदमी ईमान लाया और उस ने सुकर्म किये उस के लिये खुदा का सवाब (कारूं के माल से) बहुत है और यह बात सब्र करने वालों के लिये है। (८०) फिर हमने क़ारूं और उस के घर को ज़मीन में धसा दिया और खुदा के सिवाय कोई गिरोह उसकी मदद को न आया और न अपने तईं बचासका। (८१) और जो लोग कल उस कैसे होने की इच्छा करते थे सुबह उठकर कहने लगे अरे अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसकी रोज़ी चाहे बढ़ा दे और

(जिसकी चाहे) तंग करे अगर खुदा हम पर कृपा न करता तो हम को भी धसा देता अरे काफ़िरों का भला नहीं होता। (८२) [रुकू ८] यह आख़िरत का घर है हम ने उन लोगों के लिये कर रक्खा है जो दुनियां में शेखी और फिसाद नहीं चाहते और परहेज़-गारों का अच्छा परिणाम है। (८३) जो आदमी सुकर्म करे उस को उससे बढ़कर फल मिलेगा और जो कुकर्म करेगा तो जिन लोगों ने जैसा बुरा किया है वैसाही फल पावेंगे। (८४) (हे पैग़म्बर वह खुदा) जिसने क़ुरान को तुम पर लाज़िम किया है ज़रूर तुमको ठिकाने से लगा देगा (हे पैग़म्बर इन से) कहो कि मेरा पालन-कर्त्ता जानता है कि कौन सच्चा दीन लेकर आया है और कौन प्रत्यक्ष गुमराही में है। (८५) और (हे पैग़म्बर) तुम्हें क्या उम्मेद थी कि तुम पर किताब उतारी जायगी मगर तेरे पालनकर्त्ता की कृपासे दी गई। तू काफ़िरों का साथी न हो। (८६) और ऐसा न हो कि जब खुदा के हुक्म तुम पर उतर चुके हैं उसके बाद यह आदमी तुम को उन से रोकें और अपने पालनकर्त्ता की तरफ (लोगों को) बुलाये चले जाओ और मुशरिकों में न हो। (८७) और अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकार उस के सि-वाय कोई और पूजित नहीं उसकी ज़ात के सिवाय सब चीजें मिट-नेवाली हैं उसी की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (८८)

सूरे अनकबूत।

मक्के में उतरी इसमें ६९ आयतें और ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला कृपालु है।

[रुकू १] अलिफ-लाम-मीम। क्या लोगों ने यह समझ रक्खा है

कि इतना कहने पर छूट जायंगे कि हम ईमान ले आये और उनको आज़माया न जायगा। (१) और हमने उन लोगों का आज़माया था जो इनसे पहिले थे पस खुदा को चाहिये कि सच्चे भी मालूम हो जायं और झूठे भी मालूम होजावें। (२) क्या जो लोग बुरे काम करते हैं उन्होंने समझ रक्खा है कि हमारे क़ाबू से बाहर हो जाएंगे यह लोग क्याही बुरी तजवीज़ें करते हैं। (३) जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मेद हो तो खुदा का वक्त ज़रूर आनेवाला है और वह सुनता जानता है। (४) और जो मिहनत उठाता है वह अपने ही लिये मिहनत उठाता है खुदा को दुनिया के लोगों की परवाह नहीं है। (५) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये हम ज़रूर उनके पाप उनसे दूर करदेंगे और इनको अच्छे से अच्छे कामों का फलदेंगे। (६) और हमने आदमी को अपने मा बाप के साथ अच्छा वर्ताव करने का हुक्म दिया और अगर मा बाप ज़ोर दें कि तू किसी को हमारा साझी ठहरा जिसकी तेरे पास कोई दलील नही। तू इनका कहा न मानना तुमको हमारी तरफ लौट कर आना है फिर जो तुम करते हो हम तुमको बतादेंगे। (७) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये हम उनको नेक लोगों में दाखिल करेंगे। (८) और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते है कि हम खुदा पर ईमान लाये फिर जब उनको खुदा की राह में दुख पहुंचता है तो लोगों के दुःख को खुदाकी सज़ा के बराबर ठहराते हैं और अगर तेरे पालनकर्त्ता की तरफ से मदद पहुंचे तो कहने लगते हैं कि हम तुम्हारे साथ थे भला जो कुछ दुनिया जहान के दिलों में है क्या खुदा उससे जानकार नही। (९) और जो लोग ईमान लाये हैं अल्लाह उनको जानलेगा और जानलेगा उनको जो दग़ाबाज है। (१०) और काफ़िर ईमानवालों से कहते है कि हमारे क़ायदे पर चलो और तुम्हारे पाप हम उठालेंगे हालांकि यह

लोग ज़रा भी उनके पाप नही उठा सक्ते और यह झूठे हैं। (११) मगर हां अपने बोझ उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और बोझा भी उठायेंगे और जैसी २ लफंट बाज़ियां यह लोग करते रहे हैं क़यामत के दिन इनसे पूछा जायगा। (१२) [रुकू २] और हमने नूहको उनकी क़ौम के पास भेजा तो वह पचास वर्ष कम हज़ार वर्ष (९५० वर्ष) उनमें रहे फिर उनको तूफ़ान ने पकड़लिया और वह पापी थे फिर हमने नूह को और जो किश्ती में थे उनको (तूफ़ान से) बचादिया। (१३) और हमने इसको तमाम दुनिया के लिये शिक्षा बनादी। (१४) और इब्राहीम ने जब अपनी क़ौम से कहा कि खुदा की पूजा करो और उससे डरो यह बढ़कर है अगर तुम समझ रखते हो। (१५) तुम जो खुदा के सिवाय बुतो की पूजा करते हो और झूठी २ बातें बनाते हो। खुदा के सिवाय जिनकी तुम पूजा करते हो तुम्हारी रोज़ी के मालिक नहीं हैं सो रोज़ी खुदाही से मांगो और उसी की पूजा करो और उसी को धन्यवाद दो और तुमको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (१६) और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहिले बहुत संगतें (अपने पैग़म्बरो को) झुठलाचुकी हैं और पैग़म्बर के ज़िम्मे तो (खुदा की आज्ञा) साफ तौर पर पहुंचादेना है। (१७) क्या लोगों ने नहीं देखा कि खुदा किस तरह सृष्टि को पहिली दफा पैदा करके फिर उसी तरह को सृष्टि बार बार पैदा करता रहता है। यह अल्लाह के लिए एक साधारण बात है। (१८) समझाओ कि तुम मुल्कमे चलो फिर और देखो कि खुदा ने किस तरह पर पहिली मर्तबा (सृष्टि को) पैदा किया फिर खुदा आखिरी उठाना (भी) उठायगा बेशक अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (१९) जिसे चाहे सज़ादे और जिसपर चाहे कृपा करे और तुम उसकी तरफ लौटकर जाओगे। (२०) और तुम न तो जमीन मे (खुदा को) हरा सक्ते हो और

न आसमान में और ख़ुदा के सिवाय न तो कोई तुम्हारे काम का सम्भालने वाला होगा न साथी होगा। (२१) [रुकू ३] और जो लोग ख़ुदा की आयतों को और उस से मिलने को नहीं जानते वे हमारी कृपा से निरास हुये हैं और उनको दुखदाई सज़ा है। (२२) पस इब्राहीम की क़ौम के पास इस्को सिवाय जवाब न था कि इस को मारडालो या जलादो चुनांचि (उनको आग में फेंक दिया मगर) ख़ुदा ने उसको आग से बचादिया इसमें बड़े पते हैं उनलोगों को जा ईमान रखते हैं। (२३) और (इब्राहीम) ने कहा कि तुम ने जा ख़ुदा को सिवाय मूर्तों को मान रक्खा है सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती मुहब्बत के ख़्याल से फिर क़यामत के दिन तुम में से एक को एक इन्कार करेगा और एक को एक लानत करेगा और तुम सब का ठिकाना नरक होगा और (इन मूर्तों में से) कोई भी तुम्हारा मददगार नहीं होगा। (२४) इस पर (सिर्फ़) लूत इब्राहीम पर ईमान लाये और (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो देश छोड़कर अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ निकल जाऊंगा बेशक वह ज़ोरावर हिकमत वाला है। (२५) और हमने इब्राहीम को (बेटा) इसहाक़ और (पोता) याक़ूब दिया और उनके कुटुम्ब में पैग़म्बरी और किताब को (जारी) रक्खा और हमने इब्राहीम को दुनियां में भी उन का बदला दे दिया और क़यामत में वह नेकों में है। (२६) और लूत (को भेजा) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम बेशर्मी का काम करते हो जो तुम से पहिले दुनियां जहान के लोगों में से किसी ने नहीं किया। (२७) क्या तुम लड़कों पर गिरते और राह मारते और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो। उस लूत की क़ौम का यही जवाब था कि अगर तू सच्चा है तो हम पर ख़ुदा की सज़ा ला। (२८) (लूत ने) कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता फ़िसादी लोगों के मुक़ाबिले

में मेरी मदद कर। (२६) [रुकू ४] और जब हमारे फ़िरिश्ते इब्राहीम के पास खुशखबरी लेकर आये तो उन्हों ने (इब्राहीम से) कहा कि हम इस वस्ती के रहने वालों का नाश करदेंगे (क्योंकि) इसके लोग शरीर है। (३०) (इब्राहीम ने) कहा कि उस में लूत है वह बोले कि जो लोग उस में है हमें खूब मालूम है हम लूत को और उस के घर वालों को बचा लेंगे मगर लूत की बीबी पीछे रहजाने वालो में होगी। (३१) और जब हमारे फ़िरिश्ते लूत के पास आये तो (लूत) उन (केआने) से नाखुश हुआ और दिल दुखाया फ़िरिश्तों ने कहा डर न कर और उदास न हो हम (सज़ा के फ़िरिश्ते है) तुझको और तेरे घर के लोगों को बचा लेंगे मगर तेरी बीबी रहजाने वालों में रहगई। (३२) हमको इस वस्ती के लोग जैसे कुकर्म करते रहे हैं उसकी सज़ा में हम इन पर एक आ-स्मान से आफत उतारने वाले है। (३३) और हमने उन लोगों के लिये जो अक्ल रखते है उस वस्ती का ज़ाहिरा निशान छोड़ रक्खा है। (३४) और (हमने) मदियान की तरफ़ उनके भाई शुएब को (भेजा) तो उन्हों ने कहा कि भाइयो खुदा की पूजा करो और अन्त का ख्याल रक्खो और मुल्क में फ़िसाद फैलाते न फिरो। (३५) तो उन्होंने शुएब को झुठलाया पस भूचाल ने उन को पकड़ा और सुबह को अपने घरो में बैठे रहगये। (३६) और (हमने क़ौम) आद और समूद को (मेट दिया) और तुम को उन के घर दिखाई देते हैं और शैतान ने उनके लिये जो वह करते थे अच्छा कर दिखाया था और राह से रोका था वह बूझ बूझ के लोग थे। (३७) और (हम ने) कारूं और फ़िरऔन और हामां को भी (मेटदिया) और मूसा उन के पास खुलखुले चमत्कार ले आये वह मुल्क में घमण्ड करने लगे थे और जीतनेवाले न थे। (३८) तो हमने सब को उनके पाप में धर पकड़ा चुनांचि उन में

से कोई तो वह थे जिन पर हमने पत्थर बरसाये (क़ौम आद) कोई उन में से वह थे जिन को बड़े जोर की आवाज़ ने पकड़ा (जैसे समूद) और उन में से कोई वह थे जिन को हमने ज़मीन में धसाया (जैसे क़ारूं) और कोई उन में से वह थे जिन को डुबो दिया (जैसे फ़िरऔन और हामां) और ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता मगर वह अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया करतेथे।(३९) जिन लोगों ने खुदा के सिवाय दूसरे काम सम्भालने वाले बना रक्खे हैं उनकी मिसाल मकड़ी कैसी है कि उसने घर बनाया और सब घरों में बोदा मकड़ी का घर है अगर यह लोग समझते। (४०) जिनको खुदा के सिवाय (यह लोग) पुकारते हैं वह जानता है और वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (४१) और हम यह मिसालें लोगों के लिये बयान करते हैं और समझदारही इनको समझते हैं। (४२) खुदा ने आसमान ज़मीन बनायी ईमान वालों के लिये निशानी है। (४३)

---:*:---

इक्कीसवांपारा।

---:o:---

(हे पैग़म्बर) किताब में जो ईश्वरीय संदेशा दिया जाता है उसे पढ़ और नमाज़ पढ़ाकर, नमाज़ बेशर्मी और बुरी आदतों से रोकती है और अल्लाह की याद बड़ी बात है और जो तुम करते हो अल्लाह जानता है। (४४) और किताब वालों के साथ झगड़ा न किया करो मगर ऐसी तरह पर जो बिहतर है। हां जो लोग उनमें से तुम पर ज़ियादती करें औरकहो कि जो हमपर उतराहै और तुमपर उतरा है सभीको मानतेहैं और हमारा खुदा और तुम्हारा खुदा एकही है और हम उसीके हुक्म परहैं। (४५) और इसी तरह हमने तुमपर

किताब उतारी सो जिनको हमने किताब दी है वे उसको मानते हैं और इनमें से भी ऐसे हैं कि वह भी इस पर ईमान ले आते हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतों को नहीं मानते। (४६) और (हे पैग़म्बर) क़ुरान से पहले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे और न तुम को अपने हाथ से लिखना ही आता था अगर ऐसे तुम करते होते तो बेशक यह झूंठा ठहराने वाले लोग शक करसक्ते थे। (४७) जिन लोगों को समझ दी गई है उन के दिलों में यह खुली आयतें है और जो इन्कारी है वही हमारी आयतों को नहीं मानते। (४८) और कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्त्ता से निशानियां क्यों नही उतरी। कहो निशानियां तो खुदा के पास हैं और मैं तो साफ़ तौर पर डर सुनाने वाला हूं। (४९) (हे पैग़म्बर) क्या इन लोगों के लिये यह काफ़ी नही कि हमने तुम पर कुरान उतारा जो उनको पढ़कर सुनाया जाता है जो लोग ईमान लाने वाले हैं उनके लिये इस में कृपा और शिक्षा है। (५०) [रुकू ६] (हे पैग़म्बर) कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह काफ़ी गवाह है। (५१) वह आस्मान और ज़मीन की चीज़ों को जानता है और जो लोग झूंठे (पूजितों) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह से फिरे हुए हैं यही तो घाटे में रहेंगे। (५२) और (हे पैग़म्बर) तुम से सज़ा के लिये जल्दी मचा रहे हैं और अगर वक्त नियत न होता तो इन पर सज़ा आचुकी होती और वह इकबारगी इन पर आवेगी और इन को खबर भी न होगी। (५३) तुमसे सज़ा के लिये जल्दी मचा रहे है और नरक काफ़िरों को घेरे हुए हैं। (५४) जब कि सज़ा उनके ऊपर से और इनके पैरों के तले से इन को घेर लेगी और (खुदा) कहेगा कि जैसे२ कर्म तुम करते रहेहो (उनका मज़ा) चक्खो। (५५) हमारे सेवको जो ईमान लाये हो हमारी ज़मीन चौड़ी है हमारी ही पूजा करो। (५६) हर जीव मौत को चक्खेगा फिर

हमारी तरफ़ लौट कर आयेगा। (५७) और जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने सुकर्म किये उन को हम वैकुण्ठ की खिड़कियों में जगह देंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी उन में हमेशा रहेंगे काम वालों को अच्छा बदला है। (५८) जिन्होंने संतोष किया और अपने पालनकर्त्ता पर भरोसा रखते रहे (उनका अच्छा फल है) ।(५९) और कितने जीव हैं जो अपनी रोज़ी उठा नहीं रखते अल्लाह ही उनको रोजी देता है और वही सुनता और जानता है । (६०) और (हे पैगम्बर) अगर तू इन से पूछे कि किसने आस्मान और जमीन को पैदा किया और किसने चांद और सूरज को वश में कर रक्खा है तो ज़रूर जवाब देंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं । (६१) अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसको चाहे रोज़ी देता है और जिसको चाहता है नपी तुली कर देता है। अल्लाह ही हर चीज़ से जानकार है। (६२) और अगर तुम इनसे पूछो कि किसने आस्मान से पानी बरसाया फिर उस पानी के जरिये से ज़मीन को उसके मरे पीछे कौन जिला उठाता है—तो जवाब देंगे कि अल्लाह (हे पैगम्बर) तू कह सब खूबी अल्लाह को है इन में से अक्सर समझ नहीं रखते। (६३) [रुकू ७] और यह दुनियां की ज़िन्दगी तो जी बहलाना और खेल है और पिछला घर (परलोक) का जीना ही जीना है अगर यह समझते। (६४) फिर जब किश्ती में सवार होते हैं तो उसी पर पूरा भरोसा करके अल्लाह को पुकारते हैं फिर जब उनको छुटकारा देकर खुश्की की तरफ पहुंचा देता है तो छुटकारा पाते ही वह साझी ठहराने लगते हैं। (६५) जो हमने उनको दिया है उस से मुकरते हैं और बर्तते रहते हैं आगे चल कर मालूम कर लेंगे। (६६) क्या मक्के के काफ़िरों ने नहीं देखा कि हमने हरम को अमन की जगह बना रक्खा है और लोग इनके आस पास से उचके जाते

है तो क्या यह लोग झूठ पर ईमान रखते है और अल्लाह का अहसान नहीं मानते। (६७) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो ख़ुदा पर झूंठ लफंट लगाये या जब सत्य बात को पहुंचे तो उस को झुठलावे क्या इनकार करने वालो को नरक में ठिकाना नहीं है। (६८) और जिन्हों ने हमारे काम में कोशिश की हम उनको अपनी राह दिखलावेंगे और बेशक नेक काम वालो का अल्लाह ही साथी है। (६९)

——:o:——

सूरे रूम ॥

मक्के में उतरी इसमें ६० आयतें और ६ रुकू हैं ॥

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहरबान है। [रुकू १] अलिफ-लाम-मीम । रूमी लोग दब गये है। (१) समीपी देशो में (दब गये है) और वे हारे पीछे फिर जीत जायेंगे। (२) चन्द वर्षों में पहले और पिछले काम अल्लाह ही के हाथ में है और उस दिन ईमानदार खुश होंगे। (३) वह जिसकी चाहता है मदद करता है और वह बलवान दयालु है। (४) अल्लाह का वादा (है) और अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं किया करता लेकिन बहुधा लोग नहीं समझते। (५) संसारी जीवन के जाहिरा हालों को समझते है और आखिरत (परलोक) से यह लोग बिलकुल बे खबर हैं। (६) क्या इन लोगोंने अपने दिलमें ध्यान नहीं दिया कि अल्लाहने आस्मान और ज़मीनको और इन चीजों को जो इन दोनो के बीच में है किसी मतलब से और नियत समय के लिये पैदा किया है और बहुतेरे आदमी (क़यामत के दिन) अपने पालनकर्ता से मिलने को नहीं मानते। (७) क्या यह लोग मुल्क में नहीं चलते फिरते कि अपने पहलों का परिणाम (फल)

देखें वह लोग इन से बल में भी बढ़कर थे और उन्होंने इन से ज़ियादा ज़मीन को जोता और आबाद किया था और उन के पास उनके पैगम्बर चमत्कार लेकर आये थे (मगर उन्होंने न माना और अपने किये की सज़ा पाई) तो खुदा उन पर जुल्म करने वाला नही था बल्कि वह अपनी जानों पर आप ज़ुल्म करते थे। (८) फिर जिन लोगों ने बुरा किया उनका अंजाम (परिणाम) बुराही हुआ क्योंकि उन्होंने खुदा की आयतों को झुठलाया और उनकी हँसी उड़ाई था। (९) [रुकू २] अल्लाह पहला दफ़ा पैदा करता है फिर उसको दुहरावेगा फिर उस की तरफ़ फिर जाओगे। (१०) जिस दिन क़यामत उठेगी अपराधी निरास होकर रहजावेंगे। (११) और इनके शरीकों में से कोई इनका शिफ़ारिशी न होगा और ये अपने शरीकों से फिर बैठेंगे। (१२) और जिस दिन क़यामत उठेगी उस दिन वे तितर बितर हो जांयगे। (१३) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये वह बाग़ (बैकुंठ) में होंगे उनकी आव भगत हो रही होगी। (१४) और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों और अन्तिम दिन के पेश आनेको झुठलाते रहे तो यही लोग सज़ा में पकड़े जावेंगे। (१५) पस जिस वक्त तुम लोगों को शाम हो और जिस वक्त तुमको सुबहहो अल्लाह की पाकी से याद करो। (१६) और आसमान ज़मीन में वही अल्लाह तारीफ़ के लायक़ है और तीसरे पहर और जब तुम लोगों को दोपहर हो। (१७) ज़िन्दे को मुर्दे से निकालताहै और मुर्देको ज़िन्दे से निकालता है और ज़मीनको उसके मरे पीछे ज़िन्दह करता है और इसी तरह तुम (लोग भी मरे पीछे ज़मीन से) निकाले जाओगे। (१८) उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान होकर फैले हुए हो। (१९) [रुकू ३] और उसके चमत्कारों में से एक यह है कि उसने तुम्हारेलिये तुम्हारेबीच से औरतें

पैदा की कि तुम को उनके पास चैन मिले और तुममें प्यार और प्रेम पैदा किया इस मामले में समझवालों के लिये चमत्कार है। (२०) और आस्मान और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी बोलियां और तुम्हारी रंगतों का जुदा २ होना इसमें समझने वालों के लिये निशानियां हैं। (२१) और तुम्हारा रात और दिन का सोना और उसकी कृपा तलाश करना उसकी निशानियों में से है जो लोग सुनते हैं उन के लिये इन में निशानियां हैं। (२२) और उसी की निशानियों में से है कि वह तुम को डरने और उम्मेद करने के लिये बिजलियां दिखाता और आसमान से पानी बरसाता और उसके ज़रीये से ज़मीन को उसके मरे (यानी पड़ती पड़े) पीछे जिला उठाता है जो लोग समझ रखते हैं उनके लिये इन बातों में निशानियां हैं। (२३) और उसी की निशानियों में से है कि आसमान और जमीन उसकी आज्ञा से कायम हैं फिर जब वह तुमको एक आवाज़ देकर ज़मीन से बुलायेगा तो तुम (सबके सब) निकल पड़ोगे। (२४) और जो आसमान और ज़मीन में है उसी के हैं सब उसीके काबूमें हैं। (२५) और वही है पहिली दफ़े पैदा करता है फिर उनको दुबारा पैदा करेगा यह उसके लिये सहल है और आसमान और जमीन में उसी की शान ज़ियादह है और वह बलवान हिकमतवाला है। (२६) [रुकू ८] वह तुम्हारे लिये तुम में का एक उदाहरण बयान करता है कि तुम्हारे बांदी गुलामों में से कोई हमारी दी हुई रोज़ी में साझी है कि तुम सब उसमें बराबर (हक रखते) हो तुम उनकी (वैसीही) परवाह करते हो जैसी कि तुम अपनी परवाह करते हो जो लोग समझ रखते हैं उनके लिये हम आयतों को इसी तरह खोल २ कर बयान करते हैं। (२७) मगर जो लोग (साझी खुदा बनाकर) जुल्म कररहे हैं वह तो बे जाने बूझे अपनी ख्वाहिशों पर चलते हैं तो जिस को खुदा गुमराह करे उसको कौन

सीधी राह पर ला सक्ता है और ऐसे लोगों का कोई मददगार न होगा। (२८) (हे पैग़म्बर) तू एक (ख़ुदा) के होकर दीन की तरफ़ अपना मुंह सीधा कर (यह) ख़ुदा की चतुराई है जिस से उसने लोगों की सूरत बनाई है ख़ुदा की बनावट में तबदीली नहीं होसक्ती यही दीन सीधा है । मगर अकसर लोग नही समझते। (२९) उसी की तरफ़ फिरो और उसी (एक ख़ुदा) का डर मानो और नमाज़ पढ़ो और शरीक ठहराने वालो में न हो। (३०) जिन्हों ने अपने दीन में अन्तर डाला और (ख़ुदा के सिवाय दूसरे पूजित बनाकर) फिरक़े होगये जो जिस फ़िर्क़े में है वह उसी में मग्न है। (३१) और जब लोगो को कोई दुख पहुंचता हैं तो वह अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ फिर कर उसी को पुकारने लगते हैं फिर जब वह उनको अपनी कृपा चखा देता है तो उनमें से कुछ लोग (झूठे पूजितों को) अपने पालनकर्त्ता का साझी बनाबैठते हैं। (३२) ताकि जो (निआमतें) हमने उनको दी हैं उनकी कृतघ्नता करें तो फ़ायदे उठालो आगे चलकर मालूम करलोगे। (३३) क्या हमने इन लोगों पर कोई सनद उतारी है कि जैसे यह लोग ख़ुदा के साथ शरीक ठहरा रहे हैं वह (सनद इनको शरीक करना) बता रही है। (३४) और जब लोगों को हम कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो वह उस से ख़ुश होते है और अगर उनके पिछले कर्मों के बदले में उन पर आफ़त आजावे तो वह आस तोड़ बैठते हैं। (३५) क्या लोगो ने नही देखा कि अल्लाह जिसको रोज़ी चाहे ज़ियादह करदे और (जिसकी चाहे) नपी तुली करदेता है जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिये इस में निशानियां हैं। (३६) तो (हे पैग़म्बर) रिश्तेदार को और मुहताज़ को और मुसाफ़िर को उनका हक़ देते रहो जो लोग ख़ुदा की रोज़ी के चाहने वाले हैं यह उनके वास्ते बिहतरहै और यही मनुष्य मन माने फल पाने वाले

हैं। (३७) और जो तुम लोग ब्याज देते हो ताकि लोगों के माल में जियादती हो तो वह (ब्याज) खुदा के यहां (फलता) फलता नहीं जो तुम खुदा की राह पर खैरात करते हो तो जो लोग ऐसा करते हैं उन्ही के दूने होगये। (३८) अल्लाह वह है जिसने तुमको पैदा किया फिर तुमको रोज़ी दी फिर तुमको मारताहै फिर तुमको जिलायेगा भला तुम्हारे शरीको में कोई है जो इनमें से कोई कामकर सके यह लोग जैसे २ शरीक ठहराते हैं खुदा उनसे पाक और ज़ियादह बड़ा है। (३९) [रुकू ५] खुद लोगों ही की करतूतों से खुश्की और पानी मे खराबियां जाहिर हो चुकी है कि लोग जैसे २ कार्य्य कर रहे हैं खुदा उनको उनके कामों का मज़ा चखाये शायद वे मान जावें। (४०) (हे पैगम्बर) (इन लोगों से) कहो कि ज़मीन पर चलो फिरो और पहिलो का परिणाम (आखीर) देखो उन में से बहुधा शरीक ठहराते थे। (४१) तो (हे पैगम्बर) इससे पहिले कि खुदा की तरफ से वह रोज (कयामत) आवे जो टल नही सक्ता तू दीन के सीधे (रास्ते) पर अपना मुंह सीधा किये रह उसदिन (ईमान वाले और काफ़िर एक दूसरे से) जुदा २ होंगे। (४२) जो इन्कार करता है तो उसी पर उसके इन्कारी की आफत पड़ेगी और जो सुकर्म करता है तो वह अपने ही लिये (आराम का) सामान कर रहा है। (४३) ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने सुकर्म किये उनको अल्लाह अपनी कृपा से बदला देगा वह काफिरोको पसंद नही करता। (४४) और उसको (कुदरत की) निशानियों में से है कि वह हवाओं को भेजता है (कि बारिश की) खुश खबरी पहुंचावें ताकि अल्लाह तुम लोगों को अपनी कृपा (का स्वाद) चखाये ताकि अपने हुक्म से नावें चलावें और शायद तुम उसकी कृपा तलाश करो और भलाई मानो। (४५) और (हे पैगम्बर) हमने तुम से पहिले पैगम्बर भी उनकी क़ौमों की

तरफ़ भेजे तो वह (पैग़म्बर) चमत्कार लेकर उनके पास आये (मगर उन्होंने झुठलाया) तो जो लोग (झुठलाने के) अपराधके अपराधी हुये उनसे हमने बदला लिया और ईमान वालों को मदद देना हम पर ज़रूरी था। (४६) अल्लाह वह है जो हवाओं को भेजता है वह बादलों को उभारती है फिर जिस तरह चाहता है बादल को अस्मान में फैलाता है और उसको टुकड़े टुकड़े करदेता है तो तू देखता है कि बादल के बीच में से मेह बरसता है फिर जब खुदा अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है बरसादेता है तो वह लोग खुशियां मनाने लगते हैं। (४७) और अगचें मेह के बरसने से पहिले यह लोग निराश थे। (४८) तो खुदा की कृपा की निशानियों को देख कि ज़मीन को उसके मरे पीछे कैसे जिलाता है बेशक वही (खुद) मुर्दों का जिलानेवाला है और हर चीज़ पर शक्तिवान है। (४६) और अगर हम (ऐसी) हवा चलावें और यह लोग खेती का पीला देखें तो खेती के पीले पड़े पीछे ज़रूर कृतघ्नता (नाशुक्री) करने लगते हैं। (५०) तो (हे पैग़म्बर) तुम न तो मुर्दों को सुना सक्ते हो न बहरों ही को (अपनी) आवाज़ सुना सक्ते हो उस वक्त कि बहरे पीठ फेर कर भागें। (५१) और तू न अन्धों को उल्टे रस्ते से सीधे रस्ते पर लासक्ता है तू तो बस उन्हीं लोगों को सुना सक्ता है जो हमारी आयतों को मानलेते हैं वही ईमान वाले हैं। (५२) [रुकू ६] अल्लाह वह है जिसने तुम लोगों को कमज़ोर हालत से पैदा किया फिर (लड़कपन की) कमज़ोरी के बाद (जवानी की) ताक़त दी। फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापे (की हालत) दी। जो चाहता है पैदा करता है और वही जानकार कुदरत वाला है। (५३) और जिस दिन क़यामत होगी पापी लोग सौगन्धें खायेंगे। (५४) कि (दुनियां में) एक घड़ी से ज़ियादह नहीं ठहरे इसी तरह से यह लोग बहके

रहे। (५५) और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया है वह जवाब देंगे कि तुम तो अल्लाह की किताब में क़यामत के दिन तक ठहरे और यह क़यामत का दिन है मगर पापियो को यक़ीन न था। (५६) तो उस दिन न तो पापियों का उनका उज्र करना फ़ायदा पहुँचायगा और न उनको खुदा के राज़ी करलेने का मौका दिया जायगा। (५७) और हमने लोगों के लिये इस क़ुरान में हर तरह की मिसाले बयान कर दी हैं और अगर तुम इनको कोई चमत्कार लाकर दिखाओ तो जो इन्कार करने वाले हैं वह कहेंगे कि तुम निरे फरेबिया हो। (५८) जो लोग समझ नही रखते उनके दिलों पर अल्लाह इसीतरह मुहर लगादिया करता है। (५६) तो (हे पैग़म्बर) तू ठहरा रह। बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और ऐसा न हो कि जो लोग यक़ीन नही करते तुमको उछाल न दे (६०)।

सूरे लुक़मान ॥

मक्के में उतरी इसमें ३४ आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम वाला मिहरबान है।

[रुकू १] अलिफ़-लाम-मीम। यह हिकमत वाली किताब की आयते हैं। (१) नेकों के लिये सूझ और कृपा है। (२) जो नमाज पढ़ते और जकात दें और वह क़यामत का भी यक़ीन रखते हैं। (३) वे अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ से सूझ पर हैं और वे मनमाने फल पाने वाले हैं। (४) और लोगों में कोई ऐसे भी हैं जो वृथा कहानियां मोललेते हैं ताकि वे समझे बूझे खुदा की राह से भटकाये और खुदा की आयतो की हँसी उड़ाये। यही हैं जिन को जिल्लत की सजा होनी है। (५) और जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती है तो अकड़ता हुआ मुंह फेर कर चल देता है

मानो उसको सुना ही नहीं गोया उसके दोनों कान बहरे हैं सो तू उसे दुखदाई सज़ा की ख़ुशख़बरी सुनादे। (६) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिये नियामत के बाग़ हैं। (७) उन में हमेशा रहेंगे खुदा का पक्का वादा है और वह ज़ोरावर हिकमत वाला है। (८) उसी ने आस्मानों को जिनको तुम देखते हो बग़ैर खम्भों के खड़ा किया है और ज़मीन में पहाड़ों को डाल दिया कि तुम्हें लेकर ज़मीन झुक न पड़े और उसमें हर क़िस्मके जानदार फैला दिये और आस्मान से पानी बरसाया फिर ज़मीन में हरतरह के उमदह जोड़े पैदा किये। (६) यह खुदा की पैदाइशहै पस तुम मुझे दिखाओ कि खुदाके सिवाय जो पूजित तुम लोगों ने बना रक्खे हैं उन्होंने क्या पैदा किया यह ज़ालिम खुली गुमराहीमें हैं। (१०) [रुकू २] और हमने लुक़मान को हिकमत दी कि अल्लाह को जो धन्यवाद देता है अपने ही लिये धन्यवाद देता है और जो कृतघ्नता करताहै तो अल्लाह बेपरवाह और तारीफ़के योग्यहै। (११) और जब लुक़मान अपने बेटेको शिक्षा करते वक्त उससे कहा कि बेटा (किसी को) खुदा का शरीक न ठहराना शरीक ठहराना ज़ुल्म की बात है। (१२) और हमने इन्सानके उसके माता पिता के हक़में ताकीद की। कि उसको माताने झटके पर झटके उठाकर उसको पेटमें रक्खा और दो बरसमें उसका दूध छूटताहै मेरा और अपने माता पिता का शुक्रगुज़ार हो आख़िरको मेरे पासही तुझको आनाहै। (१३) और अगर तेरे माता पिता तुझको मजबूर करें कि तू हमारे साथ शरीक बना जिसका तुझे इल्म नहीं है तो (इसमें) उनका कहा न मान। दुनिया में उनके साथ अच्छी तरह रह और उन लोगों के तरीक़े पर चल जो मेरी तरफ़ रुजू हैं फिर तुमको मेरी तरफ़ लौटकर आना है तो जैसे काम तुम लोग करते रहे हो मैं तुमको बताऊंगा। (१४) हे बेटा अगर राई के दाने की बराबर भी कोई चीज़ हो और फिर वह

किसी पत्थर के अन्दर या आस्मानों में या ज़मीन में हो तो उसको (क़यामतके दिन) खुदा ला हाज़िर करेगा। बेशक खबरदार अल्लाह छिपे की जानने वाला है। (१५) बेटा नमाज़ पढ़ाकर और भली बात सिखला और बुरी बातों से मनाकर और जो कुछ तुझ पर आ-पड़े उसे झेल (सह) बेशक यह एक बड़ा काम है। (१६) और लोगों से बेरुखी न करना और ज़मीन पर इतरा कर न चल अल्लाह किसी इतराने वाले बुराई करने वाले को पसन्द नहीं करता। (१७) और चल बीच की चाल अपनी आवाज़ नीची कर बेशक बुरी से बुरी गधों की आवाज़ है। (१८) [रुकू २] क्या तुमने नहीं देखा कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सबको अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा रक्खा है और तुमपर अपनी ज़ाहिरा और छिपी हुई निआमतें पूरी की हैं और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो खुदा के बारे में झगड़ते हैं न तो इल्म है और न हिदायत और न रोशन किताब (जो उनको सीधा रास्ता) दिखावे। (१९) और

तो यही जवाब देंगे कि खुदाने। तो कह सब खूबियां अल्लाह को है मगर इनमें से अकसर समझ नहीं रखते। (२४) अल्लाहही का है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है बेशक अल्लाह बे परवाह और तारीफ़ के योग्य है। (२५) और ज़मीन में जितने दरख़्त हैं अगर (सब) क़लम (लेखनी) होजायें और समुद्र उसके बाद सात समुद्र और उसकी मदद करें (यानी स्याही के होजावें तौ भी) खुदा की बातें तमाम न होवें। बेशक अल्लाह ज़ोरावर हिकमतवाला है। (२६) तुम सबका पैदा करना और मरे पीछे जिलाना ऐसाही है जैसा एक शख़्स का (पैदा करना) और जिलाना बेशक अल्लाह सुनता देखता है। (२७) तूने नही देखा कि अल्लाह रात को दिन में और दिन को रात मे दाखिल करता है और सूर्य्य चन्द्रमा को काम में लगा रक्खा है कि हरएक ठहरे हुए वादे तक चलता है और जो कुछ भी तुम लोग कररहे हो अल्लाह को उसकी खबर है। (२८) यह इसलिये है कि अल्लाहही सच है और उसके सिवाय जो तुम पुकारते हो झूठे हैं और अल्लाह बड़ा सबसे ऊपर है। (२९) [रुकू ४] तूने नहीं देखा कि अल्लाहही की कृपा से जहाज़ समुद्र में चलते हैं कि कुछ अपनी कुदरते तुमको दिखायें हर एक संतोषी और सच समझने वाले के लिये निशानियां है। (३०) और जब लहरें (नाव के चढ़ने वालों पर) बादलों की तरह आजाती है तो वह साफ दिल से अल्लाह की बन्दगी को ज़ाहिर करके उसीको पुकारने लगते है कि जब खुदा उनको छुटकारा देकर खुश्की पर पहुंचा देता है तो उन में से कोई तो बीच की चालपर क़ायम रहते हैं और हमारी निशानियो से वही लोग इन्कारी रखते है जो क़ौल के झूठे और सच न समझने वाले हैं। (३१) लोगो अपने पालनकर्त्ता का डर रक्खो और उस दिन से डरो कि न कोई बाप अपने बेटे के काम आवेगा और न कोई बेटा अपने बाप के काम आसकेगा।

(३२) ख़ुदा का वादा (क़यामत के दिन) सच्चा है तो दुनिया की ज़िन्दगी के धोखे में न आ जाना और न ख़ुदा से फ़रेबिये (शैतान) का धोखा खाना। (३३) अल्लाह ही के पास क़यामत की ख़बर है और वही मेंह बरसाता और जो कुछ माताओं के पेट में है जानता है और कोई नही जानता कि कल क्या करेगा और कोई नही जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह ही जानने वाला ख़बर रखने वाला है। (३४) ।

सूरे सिजदा॥

मक्के में उतरी इसमें ३० आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है.

[रुकू १] अलिफ़-लाम-मीम। इसमें कुछ शक नहीं कि कुरान संसार के पालनकर्त्ता की ओर से उतरता है। (१) क्या कहते हैं कि इसको इसने (अपने दिलसे) बना लिया है बल्कि यह ठीक तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुमसे पहिले कोई डरानेवाला नही पहुंचा (ख़ुदा की सज़ा से) डराओ अजब नही कि यह लोग राह पर आजावें। (२) अल्लाह वह है जिसने ६ दिन में आस्मान और ज़मीन और उन चीज़ों को पैदा किया जो आस्मान और ज़मीन के बीच में है फिर तख़्त पर जा विराजा उसके सिवाय न कोई तुम लोगों का काम सम्भालने वाला है और न कोई शिफ़ारशी है क्या तुम नहीं सोचते। (३) आस्मान से ज़मीन तक का बन्दोबस्त करता है फिर तुम लोगों की गिनती के (अनुसार) हजार वर्ष की मुद्दत का एक दिन होगा उस दिन तमाम इन्तज़ाम उसके सामने गुज़रेगा। (४) वही छिपी और खुली सब बातों को जाननेवाला ज़ोरावर मिहर्बान है। (५)

उसने जो चीज़ बनाई खूब ही बनाई और आदमी की पैदायश को मिट्टी से शुरूअ किया। (६) फिर नाचीज़ निचोड़ यानी (वीर्य) से उसकी संतान बनाई। (७) फिर उस को दुरुस्त किया और उस में अपनी तरफ़ से जानडाली और तुम लोगों के लिये कान, आंखें, और दिल बनाये बहुत ही थोड़ी तुम भलाई मानते हो। (८) और कहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल जायगे तो क्या (फिर) हम नये जन्म से आवेंगे। (६) बल्कि अपने पालनकर्त्ता के सामने हाज़िर होने को नही मानते। (१०) (हे पैग़म्बर) कहो कि मौत (यमदूत) जो तुम पर तैनात है तुम्हारे जीवों को निकालते हैं फिर अपने पालनकर्त्ता की ओर लौटाये जाओगे। (११) [रुकू २] और अफसोस तुम अपराधियों को देखो कि अपने पालनकर्त्ता के सामने सर झुकाये खड़े हैं (और निवेदन कर रहे हैं) हे हमारे पालनकर्त्ता हमारी आंखें और हमारे कान खुले हम को फिर (दुनिया में) भेज कि हम भलाई करें हम को विश्वास आया। (१२) हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सब से हम नरक भरावेंगे। (१३) तो जैसे तुम अपने इस दिन के पेश आने का भूलरहे (आज उसका) मज़ा चक्खो कि हमने तुम को भुला दिया और जैसे २ तुम काम करते रहे उसके बदले में हमेशा की सजा चक्खो। (१४) हमारी आयतो पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वह याद दिलाई जाती है सिजदे में गिर पड़ते और अपने पालनकर्त्ता की तारीफ़ के साथ पाकी याद करने लगते हैं और वे बुराई नही करते। (१५) रात के समय उनकी करवटें बिछौना से प्रेमी नहीं होती डर और आशा से अपने पालनकर्त्ता से दुआयें मांगते और जो कुछ हमने उनको देरक्खा है उस में से (ख़ुदा की राह में) खर्च करते हैं। (१६) तो कोई आदमी

नहीं जानता कि लोगों के नेक काम के बदले में कैसी २ आंखों की ठंडक उसके लिये छिपा रक्खी है। (१७) तो क्या ईमान लाने वाला उसके बराबर है जो बेहुक्म है बराबर नहीं हो सक्ते। (१८) सो जो लोग ईमान लाये और उन्हों ने भले काम किये उनके लिये रहने को बाग होंगे मिहमानदारी उनके (नेक) कामों का बदला है जो करते रहे। (१९) और जो लोग बेहुक्म हुए उनका ठिकाना नरक होगा जब उस से निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जांयगे और उन से कहा जायगा कि जिस सज़ा (नरक) को तुम झुठलाते रहे अब उसी (नरक) के मज़ा चक्खो। (२०) और क़यामत की बड़ी सज़ा से पहिले हम इन को सज़ा का मज़ा भी चखायेंगे। शायद यह लोग फिरें। (२१) [रुकू ३] और उससे बढ़कर अन्यायी कौन कि उसको उसके पालनकर्त्ता की बातों से शिक्षा की जावे और वह उनसे मुंह फेरले—हम को इन पापियों से बदला लेना है। (२२) और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी थी तो (हे पैगम्बर) तुम भी किताब (क़ुरान) के मिलने से शक में न रहो और हमने उस (तौरात) को इसराइल के बेटों के लिये हिदायत ठहराई थी। (२३) और हमने इसराईल के बेटों में से पेशवा बनाये थे जो हमारी आज्ञा से हिदायत किया करते थे जब कि वह संतोष किये बैठे रहे और हमारी आयतों का विश्वास रखते रहे। (२४) (हे पैग़म्बर) इसराईल के बेटे जिन २ बातों में फूट डालते रहे तुम्हारा पालनकर्त्ता क़यामत के दिन उन में उन का फैसला करदेगा। (२५) क्या लोगों को इसकी हिदायत नहीं हुई कि हमने इनसे पहिले कितने गिरोह मारडाले यह लोग उन्हीं के घरों में चलते फिरते हैं। इस तब्दीली में बहुत पते हैं तो क्या यह लोग सुनते नहीं। (२६) और क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम पड़ी हुई ज़मीन की तरफ़ को पानी को हांक देते हैं फिर पानी के

द्वारा से खेतो को निकालते हैं। जिसमें से इनके चौपाये भी खाते हैं और आप भी खाते हैं तो क्या (यह लोग) नही देखते। (२७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह फ़ैसला कब होगा। (२८) (हे पैग़म्बर) जवाब दो कि जो लोग (दुनियां में) इन्कार करते रहे फ़ैसले के दिन उनका ईमान लाना उनके कुछ भी काम न आवेगा और न उनको मुहलत मिलेगी। (२९) (सो हे पैग़म्बर) तू उनका ख़्याल छोड़ और राह देख वे भी राह देखते हैं। (३०)

——:*:——

सूरे अहज़ाब।

मदीने में उतरी इसमें ७३ आयतें और ९ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहम वाला मिहर्बान है। [रुकू १] (हे पैग़म्बर) ख़ुदा से डरते रहो और काफ़िरों और दग़ाबाज़ो का कहा न मान, बेशक अल्लाह जानकार हिकमत वाला है। (१) और तेरे पालनकर्त्ता से जो हुक्म आवे उसी पर चल अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है। (२) और (हे पैग़म्बर) अल्लाह पर भरोसा रक्खो और अल्लाह काम का बनाने वाला काफ़ी है। (३) अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रक्खे और न तुम लोगों को उन जोरुओं को जिनको तुम मां कह बैठते हो तुम्हारी सच्ची मां बनाया और न तुम्हारे मुंह बोले बेटे को तुम्हारा बेटा ठहराया यह तुम्हारे अपने मुंह की बातहै और अल्लाह ठीक बात कहता है और वही राह दिखाता है। (४) उन (मुंह बोले बेटों) को उन के (सगे) बापों के नाम से बुलाया करो। यही बात अल्लाह के न्याय के जियादह तर नज़दीक है पस अगर तुम को उनके बाप मालूम न हों तो तुम्हारे दीनी भाई और तुम्हारे दीनी दोस्त हैं और तुम से इस में भूल चूक होजाय तो इसमें तुम

पर कुछ पाप नहीं मगर हां दिलसे इरादा करके ऐसा करो। (४) (ता बेशक पापकी बात है) और अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (५) ईमानवालों को अपनी जान से ज़ियादह नबी से लगाव है और उस (पैग़म्बर) की स्त्रियां उनकी मातायें हैं। नातेवाले एक दूसरे से सब ईमानवालों और देश छोड़नेवालों से ज़ियादह लगाव रखते हैं मगर यह कि तुम अपने दोस्तोंके साथ नेक बर्ताव करना चाहो। यह आज्ञा किताब में लिखी हुई है। (६) और जब हमने पैग़म्बरों से और तुझ से-नूहसे-इब्राहीम से मूसा और मरियम के बेटा ईसा से क़रार लिया और पुख़्ता अहद बान्धा था। (७) (क़यामत के दिन ख़ुदा) सच्चों से उनकी सत्यता का हाल पूछेगा और काफ़िरों को दुखदाई सजा तैयार है। (८) [रुकू २] हे मुसल्मानो अपने ऊपर अल्लाह का अहसान याद करो जब तुम पर फ़ौजें चढ़ आईं तब हमने उनपर आंधी भेजी और फ़ौज जो तुमको दिखाई नहीं देती थी और जो तुम लोग करते हो अल्लाह देख रहा है। (९) जिस वक़् कि (दुश्मन) तुम पर तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ़ से आये थे और (डरके मारे तुम्हारी) आंखें फिरी रह गईं थीं और दिल गलों तक आगये थे और तुम ख़ुदा का बाबत तरह २ के ख़याल करने लगे थे। (१०) वहां मुसल्मानों की जांच की गई और वह ख़ूब ही हिलाये गये। (११) और जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनके दिलों में (शक के) रोग थे बोल उठे कि ख़ुदा और उसके पैग़म्बर ने जो हम से वादा किया था बिल्कुल धोखा था। (१२) और जब उन में से एक गिरोह कहने लगा कि मदीने के लोगो तुम से (इस जगह दुश्मन के मुक़ाबिले में) नहीं ठहरा जायगा तो (बिहतर है कि) लौट चलो और उन में से कुछ लोग पैग़म्बर से घर लौट जाने की इजाज़त मांगने लगे (और) कहते थे कि हमारे घर खुले पड़े हैं हालांकि वह हर्गिज़ खुले न

पड़े थे उनका इरादा सिर्फ़ भागने का था। (१३) और अगर शहर में कोई किनारेसे आकर घुसे फिर उन्हें दीनसे थिचलाना चाहे तो यह लोग मानही लेते और थोड़ी देर करते। (१४) हालांकि पहिले खुदा से वादा कर चुके थे कि (हम दुश्मन के सामने से) पीठ न फेरेंगे और खुदा के वादे की पूंछ पाछ होकर रहेगी। (१५) (हे पैग़म्बर) कहो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो (यह) भागना तुम्हारे काम न आवेगा और अगर भाग कर बच भी गये तो (दुनिया में) चंद रोज़ रह बस लोगे। (१६) (हे पैग़म्बर) कहो कि अगर खुदा तुम्हारे साथ बुराई (करनी) चाहे तो कौन ऐसा है जो तुम को उस से बचासके या तुम पर मिहर्बानी करना चाहे (तो कौन उसको रोक सक्ता है) और खुदा के सिवाय न तो अपना हिमायती हीं पायोगे और न मददगार। (१७) खुदा तुम में से उनको खूब जानता है जो (दूसरों को लड़ाई में शामिल होने से) रोकते और अपने भाई बन्दों से कहते है कि (लड़ाई से अलग होकर) हमारे पास चले आओ और लड़ाई में हाज़िर नहीं होते मगर थोड़ी देर के लिये। (१८) दरेग़ रखते है तुम्हारी तरफ़ से तो जब डर का वक्त आवे तो तू उनको देखेगा कि तेरी तरफ़ ताकते है और उनकी आंखें ऐसी फिरती हैं जैसी किसी पर मौत की बेहोशी होवे। फिर जब डर दूर हो जाता है तो माल (लूट) पर गिरे पड़ते हैं और चढ़ २ कर तेज़ जबानों से तुम पर ताने मारते हैं यह लोग ईमान नहीं लाये तो अल्लाह ने उन के काम अकार्थ कर दिये और अल्लाह के पास यह आसान है। (१९) ख्याल कर रहे है कि (यह) लशकर नहीं गये और अगर (दुश्मनों के) लशकर आजायें तो यह लोग चाहें कि देहात में निकल जावें और उनकी खबरें पूछते हैं और अगर यह लोग तुम में होते हैं तो बहुत ही कम लड़ते है। (२०) (रुकू २) तुम्हारे लिये पैग़-

म्बर की चाल सीखनी भली थी उसके लिये जो अल्लाह और क़या मतके दिनसे डरते थे और कसरत से खुदाकी याद किया करते थे। (२१) और जब मुसलमानो ने (दुश्मनोके) गिरोहो को देखा तो बोल उठे कि यह तो वही है जो खुदा और उसके पैग़म्बर ने हम पहिलेसे बता रक्खा था और अल्लाह और रसूल ने सच कहा था और उस से लोगों का ईमान और भी जियादह होगया। (२२) ईमानवालो मे कितने मर्द है कि अल्लाह से जो उन्होंने क़ौल कर लिया था उसे सच कर दिखाया तो उनमें वह भी थे जो काम पूरा कर चुके और उनमें ऐसे भी है कि इन्तिज़ार करते हैं और वह कुछ भी नही बदले। (२३) तो अल्लाह सच्चो को सच का बदला दे और मुनाफ़िकों को चाहे सज़ा दे या उनकी तौबा कबूल कर ले बेशक अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (२४) और खुदा ने काफ़िरो को हटा दिया गुस्से में उनको कुछ भी फ़ायदा न पहुंचा और खुदा ने मुसलमानो को लड़ने की नौबत न आने दी और अल्लाह बलवान जीतने वाला है। (२५) और किताब वालों मे से जो लोग (यानी यहूदी) मुशरकीन के मददगार हुए थे खुदा ने उनको गढ़ियों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में ऐसी धाक बैठादी कि तुम कितनों को जान से मारने लगे और कितनो को क़ैद करने लगे। (२६) और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालो का और उस ज़मीन (खैबर) का जिसमें तुमने क़दम तक नही रक्खा था तुमको मालिक कर दिया और अल्लाह हर चीज़ पर सर्व शक्तिमान है। (२७) [रुकू ४] हे पैग़म्बर अपनी बीबियो से कहदो कि अगर तुम दुनियां का जीना या यहां की रौनक़ चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें दिलाकर अच्छी तरह से बिदा करदूं। (२८) और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर और क़यामतके घरको चाहने वाली हो तो तुम मे से जो नेकी परहें

उनके लिये खुदाने बड़े फल तय्यार कर रक्खे हैं। (२६) हे पैग़म्बर की बीबियों तुम में से जो कोई ज़ाहिरा बदकारी करेगी उसके लिये दोहरी सज़ा दुगनी की जायगी और अल्लाह के नज़दीक यह साधारण है।(३०)

—:o:—

बाईसवां पारा।

—:*:—

और जो तुम में से अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा कारिणी होगी और भले काम करेगी हम उसको उसका दुगुना फल देंगे और हमने उसके लिये प्रतिष्ठा की रोज़ी तैयार कर रक्खी है। (३१) हे पैगम्बर की बीबियों तुम और औरतो की तरह नही हो अगर तुमको परहेज़गारी मंजूर है तो दबी ज़ुबान (किसी) के साथ बात न किया करो (कि ऐसा करोगी) तो जिसके दिल में (किसी तरह का) लालच है वह तुम से (किसी तरह की) आशा पैदा कर लेगा और तुम माकूल बात कहो। (३२) और अपने घरों में ठहरो और अपना जोबन-बनाव शृंगार वग़ैरह न दिखाती फ़िरो जैसा पहले नादानी के वक्त में दिखाने का दस्तूर था और नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा मानो (हे पैग़म्बर की) घरवालियो खुदा यही चाहता है कि तुम से नापाकी दूर करे और तुमको खूब पाक साफ़ बनाये। (३३) और तुम्हारे घरों में जो खुदा की बातें और अक़्लमंदी की बातें पढ़ी जाती हैं उनको याद रक्खो (क्योंकि) अल्लाह भेद का जाननेवाला जानकार है (३४) [रुकू ५] बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतें

और आज्ञाकारी मर्द और आज्ञाकारी औरते और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें और संतोषी मर्द और संतोषी औरतें और गिगिड़ानेवाले मर्द और गिड़गिड़ाने वाली औरतें और पुण्य करनेवाले मर्द और पुण्य करनेवाली औरतें और रोजा (व्रत) रखनेवाले मर्द और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियां और विषय इन्द्रिय के थामनेवाले मर्द और विषय इन्द्रिय की थामने वाली औरते और अक्सर (बहुधा) याद करने वाले मर्द और बहुधा याद करनेवालीऔरतें इन (सब) के लिये अल्लाह ने पापों की क्षमा और बड़े फल तय्यार कर रखे है। (३५) जब अल्लाह और उसका पैग़म्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी मुसलमान औरत और मर्द को अपने काम का अधिकार नहीं है (ज़ैनब और उसके भाई अब्दुल्ला का ज़िक्र है जिन्होंने हज़रत की तजवीज को ना मन्जूर किया था कि ज़ैद को शादी के लिये ना मन्जूर करते थे) और जिसने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म नहीं माना। वह ज़ाहिरा राह भूल गया (यह सुनकर ज़ैनब ने लाचारी से ज़ैद के साथ निकाह किया) (३६) और जब तू (हे मोहम्मद) उस (ज़ैद) से जिस पर अल्लाह ने

ने कहा तलाक़ न दे अपनी औरत घर में रख। हज़रत का दिल अन्दर से यह चाहता था कि तलाक़ देवे तो खूब बात है मैं उसे ले लूंगा। आखिर उसने तलाक़ देदी। पस जब ज़ैद ने अपना मतलब उससे पूरा करलिया तो हमने हे मुहम्मद तेरा निकाह उस औरत से कर दिया ताकि मुसलमानों को अपने मुंह बनाये बेटों (दत्तक पुत्रों) की जोरुओं से निकाह करलेना पाप न रहे जब कि वे अपनी मनो कामना उस से पूरी करलें (और इसका) करना अल्लाह का हुक्म है। (३७) * अल्लाह ने पैगम्बर के लिये जो बात ठहरा दी हो उस में पैग़म्बर के लिये कुछ हर्ज नहीं। जो पैग़म्बर पहिले होचुके हैं उनमें खुदा का दस्तूर रहा है और अल्लाह का हुक्म मुक़र्रर ठहर चुका है। (३८) वे जो खुदा के पैग़ाम पहुंचाते और खुदा का डर रखते थे और खुदा के सिवाय किसी से नहीं डरते थे और हिसाब के लिये अल्लाह काफ़ी है। (३९) मुहम्मद तुम में से किसी का बाप नहीं है (तो ज़ैद का क्यों है) वह तो अल्लाह का पैग़म्बर है और सब पैग़म्बरों पर मुहर है और अल्लाह सब चीज़ों से जानकार है। (४०) [रुकू-६] हे मुसलमानो बहुतायत से खुदा को याद किया करो और सुबह व शाम उसीकी पाकी याद करते रहो। (४१) वही है जो तुम पर दया भेजता है और अपने फिरिश्ते भी (भेजता है ताकि) तुम को अन्धियारियों से निकाल कर रोशनी में लावे और खुदा ईमानवालों पर मिहर्बान है। (४२) जिस दिन यह लोग खुदा से मिलेंगे (उसका) सलाम उनकी सलामी होगी और खुदा ने उन के लिये इज्ज़त का फल तय्यार कर रक्खा है। (४३) हे पैग़म्बर हमने तुम को बतानेवाला और खुशखबरी देनेवाला और डरानेवाला भेजा

---

* आयत नम्बर ३६ व ३७ के कोष्ठकों का कुल मज़मून मौलवी इमामुद्दीन साहिब का दिया हुआ है ॥

है। (४४) और अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ़ बुलवाने वाला और रोशन चिराग़ बनाकर भेजा है। (४५) और ईमान वालों को इसकी खुशखबरी सुना दो कि उनपर अल्लाह की बड़ी कृपा है (४६) और काफ़िरों और दग़ाबाज़ों का कहा न मान और उन्हें दुख देना छोड़ दे और खुदा पर भरोसा रख और ख़ुदा काम बनाने वाला काफ़ी है। (४७) हे मुसलमानो ? जब तुम मुसलमान औरतों के साथ अपना निकाह करो फिर उनको हाथ लगाने से पहिले तलाक़ देदो तो इद्दत (में बिठाने) का तुमको उनपर कोई हक़ नही कि इद्दत की गिन्ती पूरी कराने लगो। सो उनको कुछ दे दिलाकर अच्छे क़ायदेके साथ विदा करदो। (४८) हे पैग़म्बर हमने तेरी वह बीबियां तुझपर हलाल की जिनके मिहर तू देचुका है और लौंडियां जिन्हे अल्लाह तेरी तरफ लाया और तेरे चचा की बेटियां और तेरी बुआ की बेटियां और तेरे मामा की बेटियां और तेरे मौसियों की बेटियां जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह मुसलमान औरतें जिन्होंने अपने को पैग़म्बर को दे दिया (वे मिहर निकाह में आना चाहा) बशर्ते कि पैग़म्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहें यह हुक्म खास तेरेही लिये है सब मुसलमानोंके लिये नहीं। (४९) हमने जो मुसलमानों पर उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल (यानी लौंडियों) का हक (मिहर) ठहरा दिया है हमको मालूम है इसलिये कि तुमपर (किसी तरह की) तंगी न रहे और अल्लाह बख्शने वाला मिहर्बान है। (५०) अपनी बीबियो मेंसे जिसको चाहो अलगरक्खो और जिसको चाहो अपने पास रक्खो और जिनको तुमने अलग करदिया था उनमें से किसी को फिर बुलवालो तो तुमपर कोई पाप नहीं। यह इसलिये कि बहुधा तुम्हारी बीबियों की आंखें ठंढी रहेंगी और उदास न होंगी और जो तुम उनको देदो उसे लेकर सबके सब राज़ी रहेंगी

और जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है अल्लाह जानता है और अल्लाह जानने वाला सहने वाला है। (५१) (हे पैग़म्बर इसवक्त के) बाद से (दूसरी) औरतें तुमको दुरुस्त नहीं और न यह (दुरुस्त हैं) कि उनको बदलकर दूसरी बीवियां करलो अगर्चि उनकी खूबसूरती तुमको अच्छीही क्यों न लगे मगर बांदियां (और भीआसक्ती हैं) और अल्लाह हरचीज़ का निगरां है। (५२) [रुकू७] मुसल्मानो ! पैग़म्बर के घरों में न जाया करो मगर यह कि तुमको खाने के लिये (आने की) इजाज़त दीजावे कि तुमको खाना तय्यार होने की राह न देखनी पड़े मगर जब तुम बुलाये जाओ तब आओ और जब खाचुको तो अपनी २ राह गहो और बातों में न लग जाओ इससे पैग़म्बर को दुख होता था और पैग़म्बर तुमसे शर्माते थे और अल्लाह ठीक बात बताने में शर्म नहीं करता -और जब पैग़म्बर की बीवियों से तुम्हें कोई वस्तु मांगनी हो तो पर्दे के बाहर (खड़े रहकर) उनसे मांगो इससे तुम्हारे और उनकी औरतों के दिल पाक रहेंगे और तुम्हें योग्य नहीं है कि खुदा के पैग़म्बर को दुःख देव और न यह योग्य है कि पैग़म्बर के बाद कभी उनकी बीवियों से निकाह करो । खुदा के यहां यह बड़ा पाप है। (५३) तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ अल्लाह सब जानता है। (५४) पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के अपने बेटों के अपने भाइयों के अपने भतीज़ों के और अपने भानजों के और अपनी औरतों और अपने बांदी गुलामों के सामने होने में कुछ पाप नहीं और अल्लाह से डरती रहो अल्लाह हर चीज़ का गवाह है। (५५) अल्लाह और उसके फिरिश्ते पैग़म्बर पर मिहरबानी भेजते रहते हैं (सो) मुसल्मानो (तुम भी) पैग़म्बर पर मिहरबानी और सलाम भेजते रहो। (५६) जो लोग अल्लाह और पैग़म्बरको दुःख देते हैं उनपर दुनियां और क़यामत में अल्लाह

की फटकार है और खुदा ने उनके लिये ज़िल्लत की सज़ा तय्यार कर रक्खी है। (५७) और जो लोग मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को विना अपराध सताते है तो उन्होने झूठ का और ज़ाहिरा पाप का बोझ उठाया। (५८) [रुकू ८] हे पैग़म्बर अपनी बीवियो और अपनी बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कहदो कि अपनी चादरों के घूंघट निकाल लिया करें इस से बहुधा पहचान पड़ेगी कि (नेकवख्तहै) और कोई छेड़ेगा नही (मदीनेमें बिला घूंघट वाली औरतों को शरीर लोग छेड़ते थे) और अल्लाह बख्शने वाला मिह-र्बान है। (५६) मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनको नियतें बुरी है और जो लोग मदीने में (झूठी) खबरें फैलाया करते हैं अगर बाज़ न आवेंगे तो हम तुमको उनपर उभार देंगे। फिर मदीने में तुम्हारे पड़ोस में चन्दरोज़ के सिवाय ठहरने न पावेंगे। (६०) इनका यह हाल हुआ कि जहां पायेगये पकड़े गये और जानसे मारे गये। (६१) जो लोग पहिले होचुके हैं उनमें खुदा का दस्तूर रहा है (हे पैगम्बर) तुम खुदा के दस्तूर में कदापि तबदीली न पावोगे। (६२) (हेपैगम्बर) लोग तुमसे क़यामत का हाल दरयाफ्त करते हैं तुम कहो कि क़यामत की खबर तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानों शायद क़यामत निकट आगई हो। (६३) बेशक अल्लाह ने काफ़िरो को फटकार दिया है और उनके लिये दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है। (६४) उसमें हमेशा रहेंगे न हिमायती पावेंगे और न मददगार। (६५) (यह वह दिन होगा) जब कि इनके मुंह आग में उलट पुलट किये जावेंगे और कहेंगे शोक हमने अल्लाह का और पैग़म्बर का कहा माना होता। (६६) और कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता हमने अपने सरदारो और अपने बड़ों का कहा माना फिर इन्होने हमको राह से भटका दिया। (६७) तो हे हमारे पालनकर्त्ता इनको दुहरी सज़ा दे और इनपर बड़ी लानत

कर। (६८) [रुकू ६] मुसलमानो ! उन लोगों कैसे न बनो जिन्होंने मूसाको दुःखदिया फिर अल्लाह ने उनके कहेसे उसे वे ऐब दिखलाया और वह अल्लाह के नज़दीक इज़्ज़तदार था। (६९) हे मुसलमानो अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहो। (७०) वह तुमको तुम्हारे कर्म सम्भालदेगा और तुम्हारे पाप तुमको क्षमा करेगा और जिसने अल्लाह और पैग़म्बर का कहा माना उसने बड़ी कामयाबी पाई। (७१) हमने वह अमानत आस्मानों ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उस से डरगये और आदमी ने उसे उठालिया वह बड़ा ज़ालिम नादान था। (७२) ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (कपटी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतो को सज़ा दे और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों पर (अपनी) कृपा करे और अल्लाह बख्शनेवाला मिहर्बान है। (७३)

——:*:——

सूरेसबा।

मक्के में उतरी इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] सब खूबी अल्लाह की है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है उसी का है और आख़िरत में उसी की प्रशंसा है और वही हिकमतवाला खबरदार है। (१) जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होताहै (जैसे बीज) और जो कुछ उस से निकलता है जैसे बनस्पति (नबातात) और जो कुछ आस्मान से उतरता (जैसे पानी) और जो कुछ उसमें चढ़कर जाता है (जैसे भाफ) वह जानता है और वही कृपालु बख्शने वाला है। (२) और इन्कारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी। पोशीदा बातों के जानने

वाले अपने पालनकर्त्ता की क़सम ज़रूर आवेगी। ज़रा भर आस्मानों और जमीनमें उससेछिपानहीं और ज़र्रा (कण) से छोटी और ज़र्रा (कण)से बड़ी जितनी चीज़ें हैं सब रोशन किताबमें लिखी हुई है। (३) ताकि ईमानवालों और नेक काम करने वालों को उनका बदला दे। यही वह लोग हैं जिनके लिये बख़शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (४) और जो लोग हमारी आयतों के हराने में कोशिश करते रहे उन्हें दुःखदाई सज़ा है। (५) और जिनको समझ दी गई है वह जानते हैं कि तेरे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुझ पर उतरा है वहीं सच है और उस ज़बरदस्त ख़ूबियों वाले की राह दिखलाता है। (६) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं वह कहते हैं कि कहो तो हम तुमको ऐसा आदमी (मुहम्मद) बतलावें जो तुमको खबर देगा कि जब तुम मरे पीछे बिलकुल टुकड़ा २ हो जाओगे तो तुम को फिर नये जन्म में आना होगा। (७) (इस शख़्स ने) अल्लाह पर कैसा झूंठ बांधा है या इसको किसी तरह का जनून है (कोई नहीं) परन्तु जो क़यामत का यक़ीन नहीं रखते दुख में हैं और ग़लती में दूर पड़े हैं। (८) तो क्या इन लोगों ने आस्मान और

उसकी शाम की मंज़िल महीने भर की (राह) होती और हमने उनके लिये तांबे का चश्मा बहा दिया और जिन्नों में से वह जिन्न जो उसके पालनकर्त्ता के हुक्म से उसके साम्हने काम करते थे और इन में से जो कोई हमारे हुक्म से फिरेगा हम उसको नरक की सज़ा चखायेंगे। (११) और वह जिन्न उसके लिये जो वह चाहता बनाते थे क़िले तसवीरें और प्याले जैसे तालाब और देगें चूल्हों पर जमी। हे दाऊद के घरवालो शुक्रगुज़ारीकरो और हमारे बन्दों में थोड़े शुक्र गुज़ार हैं। (१२) फिर जब हमने सुलेमान पर मौत भेजी तो जिन्नो को उनके मरनेका पता न बताया। मगर घुनके कीड़े ने जो सुलेमान की लाठी को खाता था यानी जब वह गिरपड़ी तो जिन्नो ने जाना कि अगर (हम) छिपी हुई बातें जानते होते तो ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते। (१३) सबा (के लोगों) के लिये उनकी बस्ती में एक निशानी थी। दो बाग़ दाहिने और बायें थे अपने पालनकर्त्ता की रोज़ी खाओ और उसको धन्यवाद दो उम्दह शहर और बख़्शने वाला पालनकर्त्ता। (१४) इस पर उन्होंने कुछ परवाह न की तो हमने उन पर बड़े ज़ोर का नाला छोड़ दिया और हमने उन के दो बाग़ों के बदले में और हो दो बाग़ दिये जिनके फल कसैले और भाऊ और थोड़े से बेर थे। (१५) यह हमने उनको उनकी कृतघ्नता (नाशुक्री) का बदला दिया और हम कृतघ्नों को (ऐसे) बदले दिया करते हैं। (१६) और हमने सबा के लोगो और उन देहात के दर्मियान जिन में हम ने बरकत देरक्खी थी और (बहुत से) गांवों (आबाद) कर रक्खे थे जो (पास २) दिखाई देते थे और उन में चलने की मन्ज़िलें ठहरा दी कि वे खटके इन में रातों और दिनों को चलो फिरो(१७) फिर कहने लगे हे हमारे पालनकर्त्ता हमारी मन्ज़िलों को दूर २ कर दे। इन लोगों ने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया फिर हमने उनके

क़िस्से वना दिये और टुकड़े२ कर दिये। हर ठहरनेवाले (संतोषी) और सब समझने वालों के लिये इस में पते हैं। (१८) और इब्लीस ने अपनी अटकल उन पर सच कर दिखाई। उन्होंने उसी की राह गही मगर थोड़े से ईमानवालों ने (उनकी राह न गही) (१९) और शैतान का उन पर कुछ ज़ोर न था और मतलब असली यह था कि जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं। हम उन को उन लोगों से (अलग) मालूम करलें जो उसकी तरफ़ से शक में है और तेरा पालनकर्त्ता हर चीज़ का निगाहवान है। (२०) [रुकू ३] (हे पैग़म्बर) कहो कि ख़ुदा के सिवाय जिन को तुम समझते हो उन को बुलाओ (कि वह) न तो आस्मानों ही में ज़रा भर अधिकार रखते हैं और न ज़मीन में और न आस्मान ज़मीन (के बनाने) में इनका कुछ साझा है और न इनमें से कोई ख़ुदा का मददगार (२१) और ख़ुदा के यहां इनकी शिफ़ारिश काम नहीं आती मगर उसके (काम आयेगी) जिसकी बाबत शिफ़ारिश की इजाज़त दे यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट उठजावे तब कहेंगे तुम्हारे पालनकर्त्ताने क्याफ़र्माया। ये कहेंगे जो वाजिबी है और वही सबसे ऊपर बड़ा है। (२२) (हेपैग़म्बर इन लोगोंसे) पूछो कि तुम को आस्मान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है कहो कि अल्लाह और मैं (हूं) या तुम (हो एक न एक ज़रूर तो) अवश्य सच राह पर है और (दूसरा) खुली हुई गुमराही में। (२३) (हे पैग़म्बर) कहो कि हमारे पापों की पूछ तुमसे न होगी और न तेरे पापों की पूछ पाछ तुमसे होगी। (२४) (और) कहो कि हमारा पालनकर्त्ता (क़यामतके दिन) हम सबको जमा करेगा। फिर हम में न्याय के साथ फ़ैसला करदेगा और वह बड़ा जानकार न्यायी है। (२५) (हे पैग़म्बर) कहो जिनको तुम शरीक (ख़ुदा) बनाकर ख़ुदा के साथ मिलते हो उन्हे मुझे दिखलाओ। कोई उसका

शरीक नही बल्कि वही अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (२६) और (हे पैग़म्बर) हमने तुमको तमाम (दुनियां के) लोगों की तरफ़ भेजा है कि उनको खुश खबरी सुनाओ और डराओ मगर अक्सर लोग नहीं समझते। (२७) और (पूछते हैं) अगर तुम सच्चे हो तो यह (क़यामत का) वादा कब पूरा होगा। (२८) (हे पैग़म्बर) कहो कि तुम्हारे साथ जिस दिन का वादा है तुम न उससे एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे। (२६) [रुकू ४] और इन्कारी कहने लगे कि हम इस कुरान को कभी न मानेंगे और न इससे पहली किताबों को मनेंगे और (हे पैग़म्बर) अफ़सोस तुम देखो जब (क़यामत के दिन यह) ज़ालिम अपने पालनकर्त्ता के साम्हने खड़े किये जायंगे। एक की बात एक रद्द कर रहा होगा कि कमज़ोर (यानी छोटे दर्जे के मनुष्य) बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाते। (३०) (इस पर) बड़े लोग कमज़ोरों से कहेंगे कि जब तुम्हारे पास (खुदा की ओर से) हिदायत आई तो क्या उसके आये पीछे हमने तुमको उस से रोका बल्कि तुम अपराधी थे। (३१) और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे रात दिन के फरेब ने हमें गुमराह कर दिया। जब तुम हम से कहते थे कि हम अल्लाह को न मानें और उसके साथ दुसरे पूजित ठहरावें और जब यह लोग सज़ा को देखेंगे तो छिपे छिपे पछतायंगे और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक डलवा देंगे। जैसे २ काम ये लोग करते रहे हैं उन्ही का फल पावेंगे। (३२) और हमने जिस बस्ती में डराने वाला भेजा वहां के धनी लोगों ने कहा कि जो कुछ तुम लाये हो हम उसे नही मानते। (३३) और (इसी तरह ये मक्के के काफ़िर भी मुसलमानों से) कहते हैं कि हम माल और औलाद में अधिक हैं और हम को दण्ड न होगा। (३४) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहा

कि मेरा पालनकर्त्ता जिसकी रोज़ी चाहता है ज़ियादह कर देता है और (जिसकी चाहता है) नपी तुली करदेता है मगर बहुधा लोग नहीं जानते। (३५) [रुकू ५] और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी नहीं कि तुमको हमारा निकटवर्त्ती (नगीची) बनावे मगर जो ईमान लाया और उसने नेक कामकिये ऐसे मनुष्यों के लिये उनके काम का दुगना बदला है और वह बालाखानों में भरोसे से बैठेहोंगे। (३६) और जो लोग हमारी आयतों के हराने की कोशिश करते हैं वह सज़ा में रक्खे जांयगे। (३७) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मेरा पालनकर्त्ता अपने सेवकों मेंसे जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है नपी तुली कर देता है और तुम लोग कुछ भी (खुदा की राह में) खर्च करो वह उसका बदला देगा और वह सब रोजी देनेवालों से अच्छा है। (३८) और खुदा सब लोगों कोजमा किये पीछे फिरिश्तों से पूछेगा कि क्या यह तुम्हारी ही पूजा किया करते थे।(३९) वह बोले तू पाक है हमको तुझसे सरोकार है इन से नहीं बल्कि यह लोग जिन्नों की पूजा करते थे इन में अक्सर जिन्नों पर यकीन रखते हैं। (४०) सो आज तुम में एक दूसरे के भले बुरे का मालिक नहीं और हम उन पापियों से कहेंगे कि जिस आग को तुम झुठलाते थे उसका मज़ा चक्खो। (४१) और जब हमारी खुली २ आयतें उनके सामने पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं कि यह (मुहम्मद) एक आदमी है इसका मतलब यहहै कि जिनको तुम्हारे बाप दादा पूजा करते थे तुम को उन से रोक दे और (कुरान के बारे में) कहते हैं कि यह तो बस निरा झूठ है (और इसका अपना) बनाया हुआ और जो लोग इन्कार करने वाले हैं जब उनके पास सच्ची बात आई तो वह इसकी निस्बत कहने लगे कि यह तो ज़ाहिरा जादू है। (४२) और हमने इनको किताबें नहीं दीं कि

उनको पढ़ते हों और न तुमसे पहले इनकी तरफ़ कोई डरानेवाला भेजा। (४३) और इनसे अगले लोगों ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया था और जो हमने उन लोगों को दे रक्खा था यह लोग (तो अभी) उसके दशवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे। फिर उन्होंने हमारे पैग़म्बरों को झुठलाया। तो हमारा क्या बिगाड़ हुआ। (४४) [रुकू ६] (हे पैग़म्बर तुम इन से) कहो कि मैं तुमको एक नसीहत (शिक्षा) करता हूं कि अल्लाह के काम के लिये दो २ और एक २ उठ खड़े हो फिर सोचो कि तुम्हारे दोस्त (मुहम्मद) को किसी तरह का जनून तो नहीं है। यह तो तुमको आगे आने वाली एक बड़ी आफ़त से डराने वाला है। (४५) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि मैं तुम से कुछ मज़दूरी नहीं चाहता मेरी मज़दूरी तो अल्लाह पर है और उसके साम्हने हर चीज़ है। (४६) (हे पैग़म्बर) कहो कि मेरा पालनकर्त्ता सच्चा दीन चला रहा है और वह छिपी हुई बातों को खूब जानता है। (४७) (हे पैग़म्बर) कहोकि सच्चीबात आ पहुंची और झूंठ से न तो कभी कुछ होता है और न आगे होगा। (४८) (हे पैग़म्बर) कहो कि अगर मैं ग़लती पर हूं तो मेरी ग़लती मेरेही ऊपर है और अगर सच्ची राह पर हूं तो इस ईश्वरीय सन्देशे के सबब से जिसे मेरा पालनकर्त्ता मेरी तरफ़ भेजता है वह सुननेवाला नज़दीक है। (४९) और (हे पैग़म्बर) कभी तू देख जब यह घबड़ाये फिर भागकर नहीं बचते और पास के पास से पकड़ जायंगे। (५०) और कहेंगे हम उसपर ईमान लाये और (इतनी) दूर जगह से कैसे इनके हाथ आसक्ता है। (५१) और पहले उससे इन्कार करते और वे देखे भाले दूरही से (अटकल के) तुक्के चलाते रहे। (५२) और इन में और इनकी उम्मेदों में एक अटकाव पड़गया। (५३) जैसा पहले उनके पेशवाओं के साथ किया गया कि वे लोगधोखे में थे। (५४)

सूरे फ़ातिर ॥

—:*:—

मक्के में उतरी इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू है ॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है ।

[रुकू १] हर तरह की तारीफ़ खुदाही को है जिस ने आस्मान और ज़मीन बना निकाले उसी ने फ़िरिश्तों को पैग़म्बर बनाया जिन के दो २ और तीन २ और चार २ पर हैं। पैदायश में जो चाहता है ज़ियादा कर देता है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है। (१) अल्लाह जो लोगों पर कृपा खोले तो कोई उसका बन्द करने वाला नहीं और बन्द करले तो उसके पीछे कोई उसका जारी करने वाला नहीं और वह ज़ोरावर हिकमत वाला है। (२) हे लोगो ! अल्लाह की भलाइयां जो तुम पर हैं उनको याद करो अल्लाह के सिवाय कोई पैदा करने वाला है जो आस्मान ज़मीन से तुम को रोज़ी दे उसके सिवाय कोई पूजित है फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। (३) और (हे पैग़म्बर) अगर तुमको झुठलायें तो तुमसे पहिले भी पैग़म्बर झुठलाये जा चुके हैं और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं। (४) लोगो अल्लाह का वादा (क़यामत का) सच्चा है तो ऐसा न हो कि दुनियां की ज़िन्दगी तुमको धोखे में डाल दे और ऐसा न हो कि (शैतान) दग़ाबाज़ ख़ुदा के बारे में तुमको धोखा दे। (५) शैतान तुम्हारा दुश्मन है सो उसको दुश्मनही समझेरहो वह अपने लोगों को (अपनी ओर) सिर्फ़ इस ग़रज़ से बुलाता है कि वह लोग नरक वासियों में हों। (६) जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनको सख्त सज़ा होनी है। (७) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिये बख़्शिश और बड़ा फल है। (८) [रुकू २] तो क्या वह आदमी जिसको इसका

कुकर्म सुकर्म करके दिखाया गया और वह उसको अच्छा समझता है अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सांधी राह दिखाता है तो इन लोगों पर अफ़सोस करके तुम्हारी जान न जाती रहे जैसे २ कर्म यह लोग कर रहे हैं अल्लाह उन से जानकार है। (६) और अल्लाह है जो हवायें चलाता है फिर हवायें बादल को उभारती हैं फिर बादल को जुर्दा शहर की तरफ़ हांका। फिर हमने मेहके जरियेसे ज़मीनको उसके मरे पीछे ज़िन्दह किया है इसी तरह मुर्दोंका उठाना है। (१०) जो प्रतिष्ठा का चाहने वाला हो सो सब इज्ज़त खुदाकी है अच्छी बातें उसी तक पहुंचती हैं और सुकर्म को ऊंचा करता है और जो लोग बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनको सख्त सज़ा होगी और उनकी तदबीरें वही मटियामेट हो जायगी। (११) और अल्लाह ही ने तुमको मिट्टी से पैदा किया। फिर वीर्य से फिर तुम को जोड़े २ बनाया और जो कोई औरत गर्भ रखती और जनतीहै वह अल्लाह के इल्म से है और जो बड़ी उम्रवाला जो उम्र पाता है और जिसकी उम्र घटती है सब किताबमें है। यह अल्लाह पर आसान है। (१२) और दो समुद्र एक तरह के नहीं हैं एक का पानी मीठा स्वादिष्ट और प्यास बुझाने वाला है और एक का पानी खारी कड़वा है और तुम दोनो में से (मछलियां शिकार करके) ताज़ा गोश्त खाते और जेवर (यानी मोती) निकालते जिनको पहनते हो और तू देखता है कि किश्तियां नदियों में पानीको फाड़-ती चली जाती हैं ताकि तुम खुदा की कृपा ढूंढो और शायद तुम भलाई मानो। (१३) वह रात को दिन में और दिन को रात मे दाखिल कर देता है और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा वस में कर रक्खे हैं कि दोनों बंधे हुए वक्तों में चल रहेहैं। यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्त्ता है उसी का राज्य है और उसके सिवाय जिन (पूजितो) को तुम पुकारा करते हो ज़रा सा भी अधिकार नहीं रखते। (१४)

तुम उनको (कितनाही) बुलाओ वह तुम्हारे बुलाने को नहीं सुनेंगे और सुने भी तो तुम्हारी दुआ क़बूल नही कर सक्ते और क़यामत के दिन तुम्हारे शरीक ठहराने से क़यामत में इन्कार करेंगे और जैसा खबर रखने वाला बतावेगा वैसा और कोई तुझे न बतावेगा। (१५) [रुकू ३] लोगो तुम खुदा के मुहताज हो और अल्लाह बे परवाह खूबियो वाला है। (१६) वह चाहे तुम को ले जाये और नई सृष्टि ला बसावे। (१७) और यह अल्लाह को कठिन नहीं। (१८) और कोई आदमी किसी दूसरे का बोझ नहीं उठावेगा और अगर किसी पर (पापों का बड़ा) भारी बोझ हो और वह अपना बोझ बटाने के लिये (किसी को) बुलावे तो उसका ज़रा सा भी बोझ नही बटाया जायगा अगर्चे वह उसका रिश्तेदार क्यों न हो (हे पैग़म्बर) तुम तो उन्ही लोगों को डरा सक्ते हो जो बे देखे अपने पालनकर्त्ता से डरते और नमाज पढ़ते हैं और जो शख्स सुधरता है सो अपने ही लिये सुधरता है और अल्लाह ही की

देखा कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा फिर उसके ज़रिये से हमने जुदे २ रंगों के फल निकाले और पहाड़ों में जुदे २ रंगतों के कुछ पर्त निकाले। सफ़ेद, लाल और काले भुजंग और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चारपायों की रंगतें भी कई २ तरहों की हैं। खुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो समझ रखते हैं। अल्लाह बलवान बख़शने वाला है। (२५) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रक्खा है उस में से छिपा कर और खुले तौर पर (खुदा की राह में) खर्च करते हैं वह ऐसे ब्योपार की आस लगाये बैठे हैं जिसमें कभी घाटा नहीं होसक्ता। (२६) ताकि खुदा उन को उनका पूरा फल देगा और अपनी कृपा से उनको ज़ियादह भी देगा वह बख्शनेवाला क़दरदान है। (२७) और (हे पैग़म्बर यह) किताब जो हमने ईश्वरी संदेशों से तुम पर उतारी है यह ठीक है (और) जो (किताबें) इस से पहले की हैं (-यह) उनकी सच्चाई साबित करती है अल्लाह अपने सेवकों से खबरदार देख रहा है। (२८) फिर हमने अपने सेवकों में से उन लोगों को (इस) किताब का वारिस ठहराया जिनको हमने चुना फिर उन में से कोई अपनी जानों पर जुल्म कर रहे हैं और कोई उन मे से बीच की चाल चले जाते हैं और कोई उन में से खुदा के हुक्म से नेकियों में आगे बढ़े हुए हैं यही (खुदा की) बड़ी कृपा है। (२९) (और उसका बदला यह है) बहां बसने को बाग़ हैं यह लोग उन में दाखिल होंगे वहां उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जायगा और वहां उनकी पोशाक रेशमी होगी। (३०) और कहेंगे कि खुदा का धन्यवाद है जिसने हमसे दुःख दूर कर दिया। हमारा पालनकर्त्ता बड़ा बख्शा ने वाला क़दर जानने वाला है। (३१) जिसने हमको अपनी कृपा से ठहरने के घर में उतारा। यहां हमको कोई दुःख न पहुंचायगा

और न यहां हमको थकान आवेगी। (३२) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिये नरक की आग है न तो उनको क़ज़ा आती है कि मरजायं और न नरक की सज़ा ही उन से हल्की की जाती है हम हरेक नाशुक्र (कृतघ्नी) को इसी तरह पर सज़ा दिया करते हैं। (३३) और यह लोग नरक में चिल्लाते होंगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता हम को (यहां से) निकाल (कर कि दुनियां में लेचल) कि हम जैसे कर्म करते रहे थे वैसे नहीं (बल्कि) सुकर्म करेंगे क्या हमने तुमको इतनी उम्र नहीं दी थी कि इसमें जो कोई सोचना चाहे सोच ले और तुम्हारे पास डराने वाला आ चुका था। (३४) पस चक्खो ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (३५) [रुकू ५] अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है और जो दिलों के अन्दर है वह जानता है। (३६) वही है जिसने तुम को ज़मीन में क़ायम मुक़ाम बनाया फिर जो इन्कार करता है उस की इन्कारी का वबाल उसी पर और जो लोग इन्कार करते हैं उन को इन्कारी ख़ुदा का ग़ुस्सा ही बढ़ाती है और इन्कार की वजह से काफ़िरों का घाटा ही होता चला जाता है। (३७) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि तुम अपने शरीकों को जिनको तुम ख़ुदा के सिवाय

फिर जब डराने वाला उनके पास आया तो उनकी नफ़रत ही बढ़ी। (४०) देश में सरकशी और बुरी तदबीरें करने लगे और बुरी तदबीर (उलटी) बुरी तदबीर करने वाले ही पर पड़ती है। अब वह अगले लोगों के दस्तूर ही की राह देखते हैं और तू ख़ुदा के दस्तूर में हेर फेर न पायगा। (४१) और अल्लाह के दस्तूर में टलना नहीं पायगा। (४२) क्या (यह लोग) चले फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखें। वह बल में इनसे कहीं बढ़कर थे और अल्लाह इस लायक़ नहीं कि आस्मान ज़मीन में उसको कोई चीज़ थका सके। वह जानने वाला बलवान है। (४३) और अगर ख़ुदा लोगों को उनके कामों के बदले में पकड़े तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़ेगा मगर वह एक मुक़र्रर वक्त तक (यानी क़यामत) तक लोगों को मुहलत दे रहा है। (४४) फिर जब उनका वक्त आयगा तो अल्लाह अपने सेवकों को देख रहा है॥

सूरे यासीन।

मक्के में उतरी इसमें ८३ आयतें ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहर्बान है।

(रुकू १) यासीन पक्के क़ुरान की क़सम। (१) तू पैग़म्बरों में है। (२) सीधी राह पर। (३) (यह कुरान) बलवान मिहर्बान ने उतारा है। (४) ताकि तुम ऐसे लोगों को डराओ जिनके बाप डराये नहीं गये और वह बेख़बर हैं। (५) इनमें से बहुतेरों पर बात (सज़ा) क़ायम हो चुकी है सो यह न मानेंगे। (६) हमने इनकी गर्दनों में ठोडियों तक तौक़ डाल दिये हैं सो वह सिर उभार होकर रह गये हैं। (७) और हमने एक दीवार इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे फिर ऊपर से ढांक दिया सो उनको नहीं सूझता। (८) और (हे पैग़म्बर)

इनके लिये इकसां है कि तुम इनको डराओ या न डराओ यह तो ईमान लाने वाले नहीं हैं। (९) तू तो उसी को डरा सक्ता है जो समझाये पर चले और वे देखे रहमान से डरे तो उस को माफ़ी और इज़्ज़त की खुश ख़बरी सुनादो। (१०) हम मुर्दों को जिलाते हैं और जो आगे भेज चुके हैं उनको निशानी हम लिख रहे हैं और हमने हरचीज़ खुली असल किताब में लिखली है। (११) [रुकू २] और (हे पैग़म्बर) इन से मिसाल के तौर पर एक गांव वालों का हाल बयान करो कि जब उनके पास पैग़म्बर आये। (१२) जब हमने उनकी तरफ़ दो (पैग़म्बर) भेजे तो उन्होंने इन दोनों को झुठलाया। इसपर हमने तीसरे (पैग़म्बर) भेजकर उनकी मददकी तो उन तीनों ने (मिलकर) कहा कि हम तुम्हारे पास (खुदाके) भेजेहुए हैं। (१३) वह कहने लगे कि तुम हमारी तरह के आदमी हो और खुदाने कोई चीज़ नहीं उतारी तुम झूठ बोलते हो। (१४) (पैग़म्बरों ने) कहा हमारा पालन कर्त्ता जानता है कि हम तुम्हारी

तेईसवां पारा ।
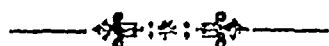
और मुझे क्या है कि जिसने मुझ को पैदा किया है उसकी पूजा न करूं तुम उसी की तरफ़ लौटाये जावगे। (२१) क्या उसके सिवाय दूसरों को पूजित मानलूं अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुचाना चाहे तो उन की शिफ़ारिश मेरे कुछ भी काम न आवे और वह मुझ को न छुड़ा सकें। (२२) (अगर) ऐसा करूं तो मैं प्रत्यक्ष गुमराही में जा पड़ा। (२३) मैं तुम्हारे पालनकर्त्ता पर ईमान लाया हूं सो सुन लो। (२४) हुक्म हुआ कि बैकुण्ठ में चला जा। बोला कि क्या अच्छा होता जो मेरी जाति को मालूम हो जाता। (२५) कि मुझे मेरे पालनकर्त्ता ने क्षमा कर दिया और इज्ज़त दारी में दाखिल किया। (२६) और हमने उसके पीछे उसकी क़ौम पर आस्मानसे (फ़िरिश्तों का) कोई लशकर न उतारा और हम (फ़ौजें) नहीं उतारा करते। (२७) वह तो बस एक आवाज़ थी और उसी दम (आग की तरह) बुझकर रहगई। (२८) बन्दों पर शोक है जब कोई पैग़म्बर उनके पास आया इन्होंने हँसी ही उड़ाई। (२९) क्या इन लोगो ने न देखा कि इन से पहले हम ने कितने गरोहों को मार डाला। (३०) और वे इन की तरफ़ लौटकर कभी न आवेंगे। (३१) और सब में कोई ऐसा नही जो इकट्ठा हमारे पास पकड़ा न आवे। (३२) [रुकू २] और इनके लिये मुर्दा ज़मीन एक निशानी है हमने उस को जिलाया और उससे अनाज निकाला जो उसीमें से खाते हैं। (३३) और ज़मीन में हमने खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाये और उन में चश्मे बहाये। (३४) ताकि बाग के फलों में से खायें और यह (फल) इनके

हाथों के बनाये हुए नही। फिर क्यों धन्यवाद नही देते। (३५) वह पाक है जिस ने सब चीज़ों मे जिन्हें ज़मीन उगाती है और इनकी क़िस्म में से और उस क़िस्म में से जिन्हे तुम नही जानते हो जोड़े पैदा किये। (३६) और इनके लिये एक निशानी रात है कि हम उसमे से दिन को खीचकर निकाल लेते हैं फिर यह लोग अन्धेरे मे रहजाते हैं। (३७) और सूरज अपने एक ठिकाने पर चला जाता है यह ज़ोरावर खबरदार से सधा हुआ है। (३८) और चांद के लिये हमने मजिले ठहरादी यहां तक कि (आखिर माहमें घटते २) फिर (ऐसा टेढ़ा पतला) रह जाताहै जैसे खजूर की पुरानी टहनी। (३६) न तो सूरज ही से बन पड़ता है कि चांद को पकड़े और न रात ही दिनसे आगे आ सक्ती है और हर कोई एक २ घेरे मे फिरते है। (४०) और इनके लिये एक निशानी है कि हमने इन (आदमियो) की औलाद को भरी हुई किश्ती में उठा लिया। (४१) और किश्ती की तरह भी हमने इन के लिये और चीज़ेंपैदा की है जिन पर सवार होते है। (४२) और हम चाहें तो इनको डुबोदें

(४८) यही राह देखते हैं कि यह लोग आपस में लड़ झगड़ रहे हों और एक ज़ोर की आवाज़ इन को आ पकड़े। (४९) फिर न तो वसीयत ही कर सकेंगे और न अपने वाल बच्चों में लौटकर जा सकेंगे। (५०) [रुकू ४] और सूर (नरसिंहा) फूंका जायगा तो एक दम से कब्रों से (निकल २) अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ चल खड़े होंगे। (५१) पूछेंगे कि हाय हमारी अभाग्यता किसने हमारी कब्रों से हम को उठाया यही तो वह क़यामत है जिसका वादा रहमानने कर रक्खा था और पैग़म्बर सच कहते थे। (५२) क़यामत बस एक ज़ोर की आवाज़ होगी तो एक दम से सब लोग हमारे सामने पकड़े आवेंगे। (५३) फिर उस दिन किसी आदमी पर ज़रा सा भी ज़ुलम न होगा और तुम लोगों को उसी का बदला दिया जायगा जो करते रहे। (५४) बैकुण्ठी लोग उस दिन मज़े से जी बहला रहे होंगे। (५५) वह और उन की बीवियां छांहों में तकिया लगाये तख़्तों पर बैठी होंगी। (५६) वहां उनके लिये मेवे होंगे और जो कुछ वे मांगें। (५७) पालनकर्त्ता मिहर्बान से सलाम किया जायगा। (५८) और हे अपराधियो आज तुम अलग होजाओ। (५९) हे आदमी की औलाद क्या हमने तुमपर ताकीद नहीं करदी थी कि शैतान की पूजा न करना कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६०) और यह कि हमारी ही पूजा करना यही सीधी राह है। (६१) और उसने तुममें से अक्सर लोगों को गुमराह करदिया क्या तुम अक्ल नहीं रखते थे। (६२) यह नरक है, जिसका तुमसे वादा किया जाता था। (६३) आज अपनी इन्कारी के बदले इसमें दाखिल हो। (६४) आज हम इनके मुहोंपर मुहर लगा देंगे और जैसे काम यह लोग कर रहे थे इनके हाथ हमको बतादेंगे और इनके पांव गवाही देंगे। ([illegible]) और हम चाहे तो इनकी आंखों को [illegible] फिर यह राह चलने को दौड़ें तो कहां से देख पावें। (६६) और

अगर हम चाहे तो यह जहां हैं वहीं इनकी सूरतें बदलदें फिर न आगे चल सकें न पीछे फिर सके। (६७) [रुकू ४] और हम जिसको उम्र बड़ी करते हैं दुनियां में उसको उल्टा घटाते चले जाते हैं फिर क्या नहीं समझते। (६८) और हमने इन (पैग़म्बर मुहम्मद) को कविता नही सिखाई और कविता इनके योग्य भी नहीं यह (कुरान) तो शिक्षा है और साफ़ है। (६९) ताकि जो जिन्दा (दिल) हो उन को (खुदा की सज़ा से) डरावे और काफ़िरोंपर बात (सज़ा) क़ायम करें। (७०) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हमने अपने हाथों से इनके लिये चौपाये पैदा किये और यह उनके मालिक हैं। (७१) और हमने उनको इनके वश में कर दिया है तो उनमें से (बाज़) इनकी सवारियां हैं और उनमें से (बाज़ को) खाते हैं। (७२) और उनमे इनके लिये फ़ायदे हैं और पीने की चीजें (यानी दूध) तो क्या (यह लोग) धन्यवाद नहीं देते। (७३) और लोगों ने खुदा के सिवाय दूसरे पूजित इस उम्मेद से

आग) सुलगा लेते हो । (८०) क्या जिसने आस्मान और ज़मीन पैदा किये वह इस पर शक्तिमान नहीं कि उन जैसे (आदमियों को दुबारा) पैदा करे । हां ज़रूर शक्तिमान है और वह बड़ा पैदा करने वाला जानने वाला है । (८१) उस का हुक्म यही है कि जब किसी चीज़का इरादा करे तो उसे कहेहो और वह हो जाता है । (८२) वह पाक है जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है और मरे पीछे तुम उसी की तरफ़ लौटाये जावोगे । (८३) ॥

सूरे साफ़ात ।

——:०:——

मक्के में उतरी इस में १८२ आयतें और ५ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू१] लश्करों की क़सम जो पांति पांति खड़े होते हैं ।(१) फिर झिड़क कर डांटने वालों की क़सम । (२) फिर याद कर पढ़ने वालों की क़सम । (३) बेशक तुम्हारा हाकिम एक (खुदा) है । (४) आस्मान जमीन और जो चीज़ें आस्मान और ज़मीन में हैं । सब का पालन कर्त्ता और उन मुक़ामों का पालनकर्त्ता जहां २ से सूरज जुदे २ वक्तों में निकलता है । (५) हमने पहिले आस्मान को सितारों की शाभासे सजाया । (६) और हर शैतान सरकश से बचाव बनाया (७) वह ऊपर के लोगों (यानी फ़िरिश्तों की बातों) की तरफ़ कान नहीं लगाने पाते और उनके लिये हर तरफ़से (उनपर अंगारे फेंके जाते हैं । (८) भगाने के लिये और उनकी हमेशा की मार है । (९) मगर कोई (किसी बात को) जल्दीसे उचक लेजाता है तो दहकता हुआ अंगारा उसके पीछे लगता है । (१०) तो (हे पैगम्बर) इन से पूछ कि क्या इनका पैदा करना ज़ियादह मुश्किल है या जिनको हमने बनाया है । इन आदम के बेटोंको हमने लसदार

मिट्टी से पैदा किया है। (११) (हे पैग़म्बर) तूने अचम्भा किया और यह हँसते हैं । (१२) और जब इनको समझाया जाता है तो नहीं समझते। (१३) और जब कोई निशानी (यानी चमत्कार) देखते हैं (तो उसकी) हँसी उड़ाते हैं। (१४) और कहते हैं यह तो बस प्रत्यक्ष जादू है। (१५) क्या जब हम मरगये और मिट्टी और हड्डियां हो कर रहगये क़यामत में उठा खड़े किये जावेंगे। (१६) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी उठेंगे। (१७) (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि हां और तुम ज़लील होगे। (१८) सो वह तो एक झिड़की है फिर तभी यह देखने लगेंगे । (१९) और बोल उठेंगे कि हाय हमारी अभाग्यता यहतो न्याय का दिन है । (२०) यही वह फ़ैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (२१)] रुकू २] जालिमों को और उनकी जोरुओं को और खुदाके सिवाय जिनको पूजते रहे हैं उनको इकट्ठा करो। (२२) फिर उनको नरककी राह लेचलो। (२३) और उनको खड़ा रक्खो कि उन से सवाल होगा। (२४) तुमं क्यों

सरकश थे। जब इनसे कहा जाता था कि खुदाके सिवाय कोई पूजित नहीं तो यह अकड़ बैठते थे। (३४) और (हे पैग़म्बर इंकारी) कहते थे कि भला हम अपने पूजितों को एक बावल कविके लिये छोड़दें। (३५) बल्कि वह सच्चा दीन लेकर आया है और सब पैग़म्बरों को सच माना है। (३६) तुम ज़रूर दुःखदाई सज़ा चखोगे। (३७) और जैसे २ कर्म करते रहे हो उन्ही का बदला पाओगे। (३८) मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे। (३९) यह ऐसे होंगे कि इनकी रोज़ी मालूम है। (४०) मेवे और इन की इज्ज़त होगी। (४१) नियामत के बाग़ों में। (४२) तख़्तों पर आमने सामने होंगे। (४३) इन में साफ़ शराब का प्याला घुमाया जायगा। (४४) सफ़ेद रंग पीने वालों को मज़ा देगी। (४५) न उस से सिर घूमते हैं और न उस से थकते हैं। (४६) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आंखों की औरतें होंगी उनकी गोरी २ रंगतों में हल्की २ (ज़र्दी ऐसी झलकती होगी) कि गोया वह शुतुर्मुर्ग के अण्डे हैं जो पर्दों में रखे हुए हैं। (४७) फिर यह एक दूसरे की तरफ़ ध्यान देकर आपस में पूछा पाछी करेंगे। (४८)इनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनियां में) एक मेरा साथी था। (४९) (और वह) पूंछा करता था कि क्या तू उन लोगों में है जो (क़यामत) को मानते हैं। (५०) क्या जब हम मर जायंगे और मिट्टी और हड्डियां होकर रह जायंगे हम को बदला मिलेगा। (५१) कहने लगा भला तू झांककर देखेगा। (५२) फिर झांकेगा तो उस को नरक के बीचों बीच देखेगा। (५३) बोल उठेगा कि खुदा की क़सम तू तो मुझे तबाह करने को था। (५४) और अगर मेरे पालनकर्त्ता की कृपा न होती तो मैं पकड़े हुओं में होता। (५५) क्या हमको अब मरना नहीं। (५६) अगर पहिलीबार मरचुके और हमें सज़ा न होगी। (५७) बेशक यही

बड़ी कामयाबी है। (५८) चाहिये कि ऐसी कामयाबी के लिये काम करने वाले काम करें। (५६) भला यह मिहमानी बिहतर है या सेंडड़ का पेढ़। (६०) हमने उसको ज़ालिमों के खराब करने को रक्खा है। (६१) वह एक दरख़्त है जो नरक की जड़में (से) उगता है। (६२) उस के फल जैसे शैतानों के सिर। (६३) सो वह उसी में से खांयगे और उसीसे पेट भरेंगे। (६४) फिर उनको उस पर खौलता हुआ पानी दिया जायगा। (६५) फिर इन को नरक की तरफ़ लौटना होगा। (६६) (हे पैग़म्बर) इन्होंने (यानी मक्के के काफ़िरों) ने अपने बाप दादों को बहका हुआ पाया। (६७) सो वे उन्हीं के पीछे २ चले जा रहे हैं (६८) और इनसे पहिले अक्सर गुमराह हो चुके हैं। (६६) और उन में भी हमने डर सुनाने वाले (पैग़म्बर) भेजे थे। (७०) तो (हे पैग़म्बर) देखो उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो डराये जा चुके हैं।

(८४) फिर तुमने जहान के पालने वाले को क्या समझ रक्खा है। (८५) फिर तारों में एक निगाह की। (८६) फिर कहा मैं बीमार हूं। (८७) तो वह लोग उनको छोड़ कर चले गये। (८८) उन का जाना था कि इब्राहीम चुपके से उनके प्रतिमाओं में जा घुसे और कहा कि तुम खाते नहीं। (८९) तुम्हें क्या हुआ तुम क्यों नहीं बोलते। (९०) फिर (इब्राहीम) दाहिने हाथसे उनके मारने को घुसा। (९१) फिर लोग उस पर घबड़ाते दौड़े आये। (९२) (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम ऐसी चीज़ों को पूजते हो जिन को तुम (आप) तराशते हो। (९३) तुम को और जिन चीज़ों को तुम बनाते हो अल्लाह ही ने पैदा किया है। (९४) (यह सुनकर वह लोग) कहने लगे कि इब्राहीमके लिये एक इमारत बनाओ और उसको दहकती हुई आग में डाल दो। (९५) फिर इब्राहीम के साथ बुरा दाव चाहने लगे फिर हमने उन्ही को नीचे डाला। (९६) और कहा मैं अपने पालनकर्त्ता की ओर जाता हूं वह मुझे ठिकाने लगा देगा। (९७) और (इब्राहीमने दुआ मांगी) हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको नेकों मे से (एक नेक जीव) दे। (९८) फिर हमने उसको एक बड़े हलीम लड़के (इस्माईल) की खुश खबरी दी। (९९) फिर जब लड़का इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा। (१००) तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा मैं स्वप्न में देखता हूं कि मैं तुझको हलाक़ कर रहा हूं फिर देख कि तेरी क्या राय है। (१०१) (बेटे ने) कहा कि हे बाप जो तुझ को हुक्म हुआ है तू कर खुदा ने चाहा तू मुझे संतोषी पायगा। (१०२) फिर जब दोनों (बाप बेटों) ने हुक्म माना और बाप ने (हलाल करने के लिये) बेटे को माथे के बल पछाड़ा। (१०३) और हमने उसे पुकारा कि हे इब्राहीम। (१०४) तू ने स्वप्न को सच कर दिखाया नेकों को हम ऐसाही बदला देते हैं। (१०५) बेशक यह खुली हुई आज़मायश

थी। (१०६) और हमने बड़े बलिदानको इस्माईलके बदलेमें दिया। (१०७) और आनेवाले गिरोहोंमें उनका ज़िक्र बाक़ी रक्खा। (१०८) इब्राहीम पर सलाम। (१०६) हम नेक सेवकों को ऐसाही बदला दिया करते है। (११०) वह (इब्राहीम) हमारे ईमान्दार बन्दो में है। (१११) और हमने इब्राहीम को (दूसरे बेटे) इसहाक़ की खुश खबरीदी जो (यह भी) नेक बक्तोंमें पैग़म्बर होगा। (११२) और हमने इब्राहीम और इसहाक़ को बरकतें दी और इन दोनों की औलाद में कोई नेक और कोई जाहिरा अपने ऊपर आप ज़ुल्म करने वाले भी है। (११३) [रुकू ४] और हमने मूसा और हारूं पर अहसान किये। (११४) और दोनों (भाइयों) को और उनको क़ौम को बड़ी घबराहट (यानी फ़िरऔन के ज़ुल्मो) से छुटकारा दिया। (११५) और (फ़िरऔन के मुक़ाबिले में) उनकी मदद की तो वही लोग जीत में रहे। (११६) और दोनों भाइयों को (तौरात की) किताब दी। (११७) और दोनों को

पर सलाम हो। (१३०) हम नेकों को इसीतरह बदला दिया करते हैं। (१३१) इल्यास हमारे ईमान वाले दासों में से हैं। (१३२) और बेशक लूत पैग़म्बरों में से है। (१३३) हमने लूतको और उनके तमाम कुटुम्ब को बचालिया। (१३४) मगर एक बुढ़िया बाक़ियों में थीं। (१३५) फिर हमने औरों को मारडाला। (१३६) और तुम सुबह को गुज़रते हो। (१३७) और रात को भी (गुज़रते हो) क्या तुम नहीं समझते। (१३८) [रुकू ५] और बेशक यूनिस पैग़म्बरों में से हैं। (१३९) जब भाग कर भरी हुई किश्ती के पास पहुंचे। (१४०) और फिर कुरा डाला (चूंकि कुरे में उनका नाम निकला) तो ढकेले हुओं मे होगया। (१४१) फिर इनको मछली ने निगल लिया और वह उस वक्त अपने आप को मलामत करता था। (१४२) अगर यूनिस (खुदा के) पाकी से याद करने वालों में से न होता। (१४३) तो उस दिन तक जब कि लोग उठा खड़े किये जांयगे मछलीही के पेट में रहता। (१४४) फिर हमने उसको (मछली के पेट में से निकाल कर) खुले मैदान में डाल दिया और वह (मछली के पेट में रहने से) बीमार था। (१४५) फिर हमने उस पर (कद्दू की तरह का) एक बेलदार दरख़्त उगाया। (१४६) और उसको लाख बल्कि लाख से भी जियादह आदमियों की तरफ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा। (१४७) फिर वह ईमान लाये तो हमने उनको एक वक्त तक बर्तने दिया। (१४८) तो (हे पैग़म्बर) इन (मक्काके काफ़िरो) से पूछो कि क्या खुदाके लिये बेटियां और उनके लिये बेटे हैं। (१४९) या हमने फ़िरिश्तोंको औरतें बनाया और वह देखरहे थे। (१५०) सुनो जी यह तो अपने दिलसे बना २ कर कहते हैं। (१५१) कि खुदा औलाद वाला है और कुछ शक नहीं कि यह लोग झूंठे हैं। (१५२) क्या (खुदा ने) बेटों पर बेटियां पसन्द कीं। (१५३) तुमको क्या

हुआ कैसा इन्साफ़ करते हो। (१५४) क्या तुम ध्यान नहीं देते। (१५५) क्या तुम्हारे पास कोई खुली हुई सनद है। (१५६) सच्चे हो तो अपनी किताब लाओ। (१५७) और इन लोगों ने ख़ुदा ने और जिन्नों में नाता ठहराया है हालांकि जिन्नों को अच्छी तरह मालूम है कि वह हाज़िर किये जायंगे। (१५८) जैसी बातें (यह लोग) बनाते हैं ख़ुदा उनसे पाक है। (१५९) मगर अल्लाह के ख़ालिस बन्दे हैं। (१६०) सो तुम और (जिन्नों को) जिनकी तुम पूजा करते हो। (१६१) ख़ुदा से ज़िद बान्ध कर किसी को बहका नहीं सके। (१६२) मगर उसीको जो नरक में जाने वाला है। (१६३) और हममें से हर एक का दर्जा मुक़र्रर है। (१६४) और हम जो हैं हमहीं हैं (ख़ुदा की बन्दगीमें) पांति बांधनेवाले।(१६५) और हम तो उसकी (पाकी की) याद में लगे रहते हैं। (१६६) और यह (मक्का के काफ़िर) कहा ही करते थे। (१६७) कि अगले लोगों की कोई पुस्तक हमारे पास होती। (१६८) तो हम ख़ुदा के चुने हुए बन्दे होते। (१६९) सो उन्होंने इस (क़ुरान)

लोग) बनाते हैं उन से तेरा इज़्ज़त वाला पालनकर्त्ता पाक है। (१८०) और पैग़म्बरों पर सलाम है। (१८१) और सब ख़ूबी अल्लाह को है जो सब संसार का पालनकर्त्ता है। (१८२)॥

——:※:——

सूरेस्वाद।

मक्के में उतरी इसमें ८८ आयतें और ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] स्वाद-कुरान के समझाने वाले की क़सम बल्कि जो लोग इन्कार करने वाले हैं सरकशी और दुशमनी मे है। (१) हमने इन से पहले बहुत से गिरोहों को मारडाला (सज़ा के वक्त) चिल्ला उठे और रिहाई की मुहलत न रही। (२) और इन लोगों ने अचम्भा किया कि इन मे का (एक मनुष्य) डराने वाला इनके पास आगया और काफ़िरों ने कहा यह जादूगर झूठा है। (३) क्या इसने (सब) पूजितो का खोज खोकर एक ही पूजित रक्खा यह बड़ी ही अनोखी बात है। (४) और इन में के चन्द सर्दार लोग यह कहकर चल खड़े हुए कि चलो जी अपने पूजितो पर जमे रहो यह बात (जो यह शख़्श समझाता है) बेशक इस में इसकी कुछ ग़रज़ है। (५) हमने यह बात पिछले मज़हब में नहीं सुनी यह (इसकी) गढ़ंत है। (६) क्या हम में से उसी पर ख़ुदा की बात उतरी है वह मेरे कलाम की बाबत शक में है अभी इन्होने हमारी सज़ा नही चक्खी। (७) (हे पैग़म्बर) क्या तुम्हारे पालनकर्त्ता ज़ोरावर दाता की कृपा के ख़जाने इन्हीं के पास हैं। (८) यह आस्मान या ज़मीन और वह चीजें जो आस्मान ज़मीन में हैं उनका अधिकार इन्हीं को है तो इन को चाहिये कि रस्सियां लगाकर (आस्मान पर) चढ़ें (और ख़ुदा से लड़ें)।

(९) (हे पैगम्बर) तमाम लश्करों में से यह क़ौम भी इस जगह एक शिकस्त खाई हुई फ़ौज है। (१०) इन से पहले नूह की क़ौम और आद और मेखों वाले फ़िरऔन झुठला चुके है। (११) और समूद और लूत की कौम और एका के रहने वालों ने भी। (१२) इन सब ही ने तो पैगम्बरों को झुठलाया फिर हमारी सज़ा आ उतरी। (१३) [रुकू २] और यह (कुरेश) भी एक चिघाड़ की बाट देखते है इन्हें ढील न मिलेगी। (१४) उन्हों ने कहा हे हमारे पालनकर्त्ता हमारे कर्म का लेखा हिसाब लेने के दिन से पहिले हम को जल्दी दे। (१५) (हे पैगम्बर) जैसी २ बातें यह लोग करते हैं उन पर सब्र कर और हमारे सेवक दाऊद को याद कर कि (हर तरह की) ताक़त रखते थे और वह (ख़ुदा की तरफ़) रजू रहते थे। (१६) हमने पहाड़ों को उनके क़ब्ज़े में कर रक्खा था कि सुबह शाम उनके साथ पाकी बोला करें। (१७) और परिन्दे सब जमा होकर उसके सामने रजू रहते। (१८)

एक दूसरे पर ज़ियादती करते रहतेहैं मगर जो लोग ईमान रखते और नेक काम करते हैं और ऐसे लोग वहुतही थोड़े हैं और दाऊद को ख्याल आया कि उरिया की स्त्री के सम्बन्ध में दोष लगाया गया सो हमने उनको आज़माया फिर अपने पालनकर्त्ता से क्षमा मांगी और झुककर गिरा और रुजू हुआ । (२३) और हमने उनका वह अपराध क्षमा कर दिया और हमारे यहां उसका मर्तबा और अच्छा ठिकाना है। (२४) (हे दाऊद) हमने तुझे मुल्क में नायब बनाया तो लोगों मे इन्साफ़ के साथ फैसला किया कर और (अपनी) ख्वाहिश पर न चल (ऐसा करोगे) तो (इन्द्रियोंकी इच्छायों) की पैरवी तुझे खुदा की राह से भटका देगी जो लोग खुदा की राहसे भटकते है उनको सख़्त सज़ा होनी है। इसलिये कि क़यामत के दिन को भूल रहे हैं। (२५) [रू० ३] और हमने आस्मान और ज़मीन को और जो चीज़े आस्मान और ज़मीन मे हैं उनको वृथा नही पैदा किया यह उन लोगो का ख़्याल है जो काफ़िर हैं और नरक के सबब से काफ़िरों के हाल पर अफ़सोस हैं। (२६) क्या हम ईमान्दारों और नेक काम करने वालों को ज़मीन मे फ़िसादियो के बराबर कर देंगे या हम परहेज़गारों को बद्कारों के बराबर करेंगे। (२७) (हे पैग़म्बर यह क़ुरान) बरकत वाली किताब है जो हमने तेरी तरफ़ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों मे ध्यान दें और अक्ल वाले समझें । (२८) हमने दाऊद को सुलेमान (बेटा) दिया वह अच्छा बन्दा रुजू रहने वाला था । (२९) जब शाम के वक्त खासे असील घोड़े उसके साम्हने पेश किये गये (तो वह उनके देखनेमें ऐसे जुटे कि नमाज का वक्त जाता रहा)। (३०) तो कहने लगे कि मैंने अपने पालनकर्त्ता की यादगारी से माल की मुहब्बत ज़ियादह की यहां तक कि सूरज ओट में छिपगया। (३१) (अच्छा तो) इन घोड़ों को मेरे पास लौटा लाओ और अब (मारे

ग़ुस्से के तलवारों से घोड़ों की) पिंडलियां और गर्दनों का सफ़ाया करने लगे। (३२) और हमने सुलेमान को जांचा और उसके तख़्त पर एक मुर्दा जिस्म को डाल दिया फिर सुलेमान रुजू हुआ। (३३) बोला हे मेरे पालनकर्त्ता मेरा अपराध क्षमाकर और मुझे ऐसा राज्य दे कि मेरे पीछे किसीको न चाहे। बेशक तू बड़ा बख़्शने वाला है। (३४) फिर हमने हवा उसके क़ाबू में कर दी थी उसी के हुक्म से हवा आहिस्ता २ जहां वह चाहता था चलती थी। (३५) और शैतान जितने थवई (इमारत बनाने वाले) और डुबकी लगाने वाले थे उनके काबू में कर दिये थे। (३६) कितने और बंधे बेड़ियो में हैं। (३७) यह हमारे बे हिसाब दैन है अब तू भलाई कर या अपने ही पास रक्खे रह। (३८) और बेशक सुलेमान का हमारे यहां मर्तबा और अच्छा ठिकाना है। (३९) (हे पैग़म्बर) हमारे दास अयूब को याद करो जब वह अपने पालनकर्त्ताको पुकारा कि शैतान ने मुझे दुःख और तकलीफ़ पहुँचा रक्खी है। (४०) [रुकू ४] (ख़ुदा ने कहा) अपने पांवसे लात मार (चुनांचि लात मारी तो) एक चश्मा निकला (तो हमने अयूब से फ़र्माया कि) तुम्हारे नहा-ने और पीने के लिये यह ठंढा पानी हाजिर है। (४१) और हमने

क़बूल किये हुए नेक दासों में हैं। (४७) और इस्माईल और इल-इसा और ज़ुलफ़िलको यादकर सब नेक बन्दों में है। (४८) यह ज़िक्र है और वेशक परहेज़गारों का अच्छा ठिकाना है। (४६) रहने के (वैकुंठ के) बाग़ जिनके दरवाज़े उनके लिये खुले होंगे। (५०) उन में तकिया लगाकर बैठेंगे वहां वैकुण्ठ के नौकरों से बहुत से मेवे और शराब मंगावेंगे। (५१) और उनके पास नीची नज़र वाली (बीबियां) होंगी और हम उम्र होंगी। (५२) यह वह (नियामतें) हैं जिनका तुम से क़यामत के दिनके लिये वादा किया जाता है। (५३) वेशक यह हमारी(दीहुई)रोज़ीहै जो कभी निबड़नेकी नहीं। (५४) यह बात है कि सरकशों का बुरा ठिकाना है। (५५) नरक उसमें इनको जाने पड़ेगा और वह बुरी जगह है। (५६) यह खौलता हुआ पानी और पीव इसको चक्खो। (५७) और इसीतरह की और तरह २ की चीज़े है। (५८) यह एक फ़ौज है वही तुम्हारे साथ नरक में धँसती आती है इनको जगह न मिले वह आगमें जाने वाले हैं। (५६) बोले तुम्हो तो हो तुम्हें खुशीभी नसीब न हो तुम्ही तो यह (बला) हमारे आगे लाये हो यह (नरक) बुरी जगह है। (६०) बोले हे हमारे पालनकर्त्ता जो यह (बला) हमारे आगे लाया उसको (हमसे) नरक में दोहरी सजा बढ़ा दे। (६१) और कहेंगे कि जिन लोगों को हम बुरे लोगों में गिना करते थे हम उनको नही देखते। (६२) क्या हमने उनको हंसोरा ठहराया या उनकी तरफ़ से आंखें टेढ़ी होगई थीं। (६३) यह नरक वासियों का आपसमें झगड़ना सच है। (६४) [रुकू ५]

(हे पैग़म्बर इन लोगो से) कहो कि मैं सिर्फ़ डराने वाला हूं और एक खुदा के सिवाय और कोई ज़ोरावर नहीं। (६५) आस्मान और ज़मीन और उन चीज़ों का मालिक है जो आस्मान ज़मीन के बीच में है और (वह) जोरावर बड़ा बख़शने वाला है। (६६)

(हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि कुरान बड़ी खबर है। (६७) क्या तुम इसको ध्यान में नहीं लाते। (६८) मुझको ऊपर वाली किसी आबादीकी कुछ खबर न थी जब वह झगड़तेथे। (६९) मुझ को तो यही हुक्म आता है कि मैं सिर्फ़ एक ज़ाहिरा डर सुनाने वाला हूं। (७०) जब तेरे पालनकर्त्ता ने फ़िरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक आदमी बनाने वाला हूं। (७१) तो जब मैं उसे पूरा करलूं और अपनी रूह उसमें फूंकदूं तो तुम उसके आगे सिजदे में गिर पड़ना। (७२) चुनांचि सबही फिरिश्तों ने उसे सिजदा किया। (७३) मगर इब्लीस ने ग़रूर किया और वह काफ़िरों में था। (७४) खुदा ने (इब्लीस से) पूंछा कि हे इब्लीस जिसको मैंने अपने हाथों बनाया उसको सिजदा करनेसे तुझे किसने रोका। (७५) क्या तूने घमंड किया या तू दर्जे में बड़ा था। (७६) बोला मैं उस से कहीं बिहतर हूं मुझ को तूने आग से बनाया और उसको तूने मिट्टी से बनाया है। (७७) फ़र्माया तू यहां से निकल तू फटकारा हुआ है। (७८) और क़यामत तक तुझ पर हमारी फटकारहै। (७९) बोला हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको उस दिन तककी मुहलतदे जब कि मुर्दे दुबारा उठा खड़े किये जांयगे। (८०) फ़र्माया तुझको उस दिन तक की मुहलत है। (८१) उस वक्त के दिन तक जो मालूम है। (८२) फिर बोला तेरी इज्ज़त की क़सम मैं इन

सूरे जुमुर ।

मक्के में उतरी इसमें ७५ आयतें और ८ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्वान है ।

[रुकू १] ज़ोरावर हिकमतवाले अल्लाहकी तरफ़से इस किताव का उतरना हुआ है । (१) हमने तेरी तरफ़ ठीक किताव उतारी है सो निरे अल्लाह ही की पूजा में लगकर अल्लाह ही की पूजा किये जाओ । (२) सुनो पूजा निरी खुदा ही के लिये है । (३) और जिन लोगों ने खुदा के सिवाय (दूसरे) हिमायती वना रक्खे हैं (और कहते हैं) कि हम इनकी पूजा सिर्फ इसलिये करते हैं कि खुदा से हम को नज़दीक करें जिन २ वातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं खुदा (क़यामत के दिन) उनके वीच उनका फ़ैसला करदेगा । (४) अल्लाह झूठे और सच न माननेवाले को हिदायत नही दिया करता । (५) अगर खुदा किसी को अपना वेटा करना चाहता तो अपनी सृष्टिमेंसे जिसको चाहता पसंदकरता । वह अकेला खुदा पाक और वड़ा वली है । (६) उसी ने आस्मान और ज़मीनको ठीक पैदा किया रातको दिन पर लपेटताहै और दिन को रात पर लपेटता है और उसीने सूरज और चांदको काममें लगा रक्खा है (यह) हरएक मुक़र्रर वक्त तक चलता है सुनो जी वही (खुदा) ज़ोरावर वड़ा वख्शने वाला है । (७) उसी ने तुम लोगों को (आदमके) अकेले शरीर से पैदा किया फिर उसी से उसकी वीवीको पैदा किया और तुम्हारे लिये आठ तरह के चारपाये पैदा किये। वही तुमको तुम्हारी मांओं के पेट में एक तरह के वाद दूसरी तरह तीन अन्धेरों में वनाताहै । यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्त्ता है उसी की हुकूमत है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं फिर किधरको फिरे चले जा रहे हो । (८) अगर तुम इन्कारी होजाओ तो अल्लाह तुम्हारी परवाह नही करता

और अपने बन्दों के लिये इन्कारी को पसंद नहीं करता और अगर तुम शुक्र करो तो वह तुम्हारे फ़ायदे के लिये पसंद करेगा और कोई किसी का बोझ नही उठायगा फिर तुम को अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ लौट कर जाना है। तो जैसे २ कर्म तुम करते रहे हो तुम को बतादेगा। (९) वह दिली बातों को जानता है। (१०) और जब आदमी को कोई दुःख पहुंचता है तो अपने पालनकर्त्ता की तरफ रुजू होकर (उसको) पुकारता है फिर जब (खुदा) अपनी तरफ़ से उसको कोई नियामत देता है तो जिसलिये उसे पहिले पुकारता था भूल जाता है और खुदा के शरीक ठहराता है ताकि खुदा की राह से भटकावे तो कह वर्त ले इन्कार के साथ थोड़ेदिन तू नरकवासियो में होगा। (११) भला जो रात के वक्त में (खुदा की) बन्दगी में लगा है सिज्दा करता है और खड़ा होता आखिरत से डरता है और अपने पालनकर्त्ता की मिहर्बानी का उम्मेदवार है (हे पैग़म्बर इन लोगो से) कहो कि क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर होते हैं वही लोग शिक्षा पकड़ते हैं जो समझ रखते है। (१२) [रुकू २] (हे पैग़म्बर) समझा दो कि ऐ हमारे ईमान्दार बन्दो अपने पालनकर्त्ता से डरो जो लोग इस दुनिया में

कहा कि घाटे में वह लोग हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने को और अपने बालबच्चों को घाटे में डाला। यही तो प्रत्यक्ष घाटाहै। (१७) इनके ऊपर आगका ओढ़ना और इनके नीचे आगही का बिछौना होगा। यह बातहै जिससे खुदा अपने बन्दोको डराताहै तो हे हमारे सेवको हमारा ही डर मानो। (१८) और जो लोग बुतों के पूजने से बचे और खुदाकी तरफ़ ध्यानदिया उनके लिये (बैकुंठ की) खुश खबरीहै सो तू हमारे उन सेवकोको खुश खबरी सुनादे जो (हमारी) बातको कानलगाकर सुनले और उसकी अच्छी बातोंपर चलतेहैं। यही वह लोगहैं जिनको खुदाने राह दी है और यही बुद्धिमानहैं। (१६) भला जिसे सज़ाका हुक्म होचुका सो तू उस नरकवासी को नरकसे निकालसकेगा। (२०) मगर जो अपने पालनकर्त्ता से डरते हैं उनके लिये (बैकुण्ठमे) खिड़कियों पर खिड़कियां बनी है जिनके नीचे नहरें बहरही होगी (यह) खुदाका वादाहै और खुदा वादा खिलाफ़ी नहीं करता। (२१) क्या तूने नही देखा कि अल्लाहने आसमान से पानी उतारा फिर ज़मीन के चश्मो में वह पानी बहा दिया फिर उस से रंग बिरंग की खेती निकलती है फिर वह ज़ोरो पर आती है फिर (पके पीछे) तू उसे पीली पड़ी हुई देखेगा। तो खुदा उसे चूर २ कर डालता है बेशक (खेती के इस शुरू और अंत मे) बुद्धिमानों के लिये शिक्षा है। (२२) [रुकू ३] भला जिसका दिल खुदाने इसलाम के लिये खोल दिया फिर वह अपने पालनकर्त्ता की रोशनी में है अफ़सोस है उन लोगो पर जिनके दिल अल्लाह की याद से सख्त हैं। यही लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं। (२३) अल्लाह ने बहुत ही अच्छी बात (यानी यह) किताब उतारी (जिसकी बातें एक दूसरी से मिलती जुलती है और एकही बात समझाने के लिये) बार बार दुहराई गई है (इस किताब की तासीर यह है कि) जो लोग अपने पालनकर्त्ता से डरते हैं इस (के सुनने) से उनके

बदन कांप उठते हैं फिर उनके जिस्म और दिल अल्लाह की याद से नरम होते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है जिसे चाहे इससे राह दिखाता है और जिसे खुदा भटकावे उसे फिर कोई शिक्षा देने वाला नहीं। (२४) भला कोई है जो क़यामत के दिन बुरी सज़ा से अपना मुंह छिपासके और ज़ालिमों से कहा जायगा जैसा तुमने किया है वैसा भुगतो। (२५) इन से पहिलों ने झुठलाया था तो उनको सज़ा ने ऐसी तरफ से आघेरा कि उन्हें उसकी खबर न थी। (२६) दुनियां की जिन्दगी में अल्लाह ने उन्हे बदनामी चखाई और आखिरत की सज़ा कहीं बढ़कर है अगर यह लोग जानते। (२७) और हमने लोगों के लिये इस कुरान में सभी तरह की मिसालें बयान की हैं शायद यह लोग शिक्षा पकड़ें। (२८) अरबी कुरान में किसीतरह की पेचीदगी नहीं ताकि यह डरें। (२९) अल्लाह ने एक मिसाल बयान की कि एक आदमी (गुलाम) है उसमें कई साझी हैं (जो) आपस में भेद रखते हैं और एक मनुष्य एक शख्स का पूरा (गुलाम है) तो क्या इन दोनों की हालत एक सी हो सक्ती है। सब खूबी अल्लाह को है पर बहुत लोग समझ नहीं रखते। (३०) (हे पैग़म्बर) तुमको मरना है और ये भी मरेंगे। (३१) फिर क़यामत के दिन तुम अपने पालनकर्त्ता के साम्हने झगड़ोगे। (३२) [रुकू ३] ॥

—— .o: ——

चौबीसवां पारा।

—— ·o ——

फिर उस से बढ़कर ज़ालिम कौन जो खुदा पर झूठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुंची उसको झुठलाया। क्या काफ़िरों का नरक में ठिकाना नहीं है। (३३) और जो सच्च बात लेकर

आया और (जिन्हों ने) सच माना यही लोग परहेज़गार हैं। (३४) जो चाहेंगे उनके पालनकर्त्ताके यहां उनके लिये होगा नेकी करनेवालों का यही बदला है। (३५) ताकि खुदा उनके कुकर्म उन से उतार दे और उनके नेक कामों के बदले में उनका फलदेवे। (३६) क्या खुदा अपने बन्देके लिये काफ़ी नहीं और (हे पैग़म्बर यह लोग) तुम को खुदा के सिवाय दूसरे पूजितोंसे डराते हैं और जिसको खुदा गुमराह करे उस को कोई राह बताने वाला नहीं। (३७) और जिसको खुदा शिक्षादे तो कोई उस को गुमराह करने वाला नहीं क्या खुदा ज़बरदस्त बदला देनेवाला नहीं है। (३८) और (हे पैग़म्बर) अगर तू इन से पूछे कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो कहेंगे खुदाने। कहो कि भला देखो तो सही कि खुदा के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो क्या यह (पूजित) उसकी तकलीफ़ को दूर करसक्ते हैं या खुदा मुझपर कृपा करना चाहे तो क्या यह (पूजित) उस की कृपा को रोक सक्ते हैं (हे पैग़म्बर तुम) कहो कि मुझे तो खुदा काफ़ीहै। भरोसा रखनेवाले उसीपर भरोसा रक्खा करते हैं। (३९) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि भाइयो तुम अपनी जगह काम किये जाओ मैं (अपनी जगह) काम कर रहा हूं फिर आगे चलकर तुमको मालूम हो जायगा। (४०) कि किसपर आ-फ़त आती है जो उसकी ख्वारी करे और किसपर हमेशगी की सज़ा उतरेगी। (४१) किताब हमने लोगों के (फ़ायदे के) लिये तुमपर उतारी फिर जो कोई राह पर आया सो अपने भलेको और जो कोई बहका सो अपने बुरे को बहका और तुझपर उन का ज़िम्मा नहीं। (४२) [रुकू ५] लोगों के मरते वक्त अल्लाह उनकी जानों को बुला लेता है और जो लोग मरे नहीं उनकी जाने सोते वक्त (नींदमें बुला लेताहै) फिर जिनकी निस्बत मौत का हुक्म दे चुका है उनको

(तो उसने यहां) रख छोड़ता है और बाकी (सोने वालों) को एक मुक़र्रर वक्त तक (फिर दुनियां में) भेजदेताहै जो लोग ध्यानदें उनके लिये इस मे निशानी है। (४३) क्या इन लोगों ने खुदा के सिवाय दूसरे शिफ़ारिशी ठहराये है (हे पैग़म्बर इन लोगों से) कहो अगर्चि (यह शिफ़ारिशी) कुछ भी अधिकार न रखते हो और न समझ रखते हों तौ भी। (४४) कहो कि शिफ़ारिश तो सारी खुदा के अधिकार में है आस्मानो और जमीन में उसी की हुकूमत है फिर तुम उसी की तरफ को लौटाये जाओगे। (४५) और जब अकेले खुदाका ज़िक्र (आता है) नाम लिया जाता है तो जो लोग आखिरत का यक़ीन नहीं रखते उनके दिल रुक जाते हैं और जब खुदा के सिवाय (दूसरे पूजितो) का ज़िक्र आता है तो यह लोग खुश हो जाते है। (४६) (हे पैग़म्बर) तू कह कि हे खुदा आस्मानो और जमीन के पैदा करनेवाले, छिपे और खुले के जाननेवाले, जिन बातो में तेरे बन्दे आपस में भेद डाल रहे हैं तूही इन के झगड़ों को चुकायेगा। (४७) और अपराधियो के पास जितना कुछ जमीनमें है तमाम हो और उस के साथ उतनाही और हो तो कयामत के दिन दुखदाई सजा के छुड़वाने में सब दे डालें और इनको खुदाकी तरफ से ऐसा (मामला) पेश आवेगा जिसका उन को गुमान भी

कर्मोके बुरे फल उन को पहुंचे और इन (मक्का के इन्कार करने वालो) मे से जो लोग वे हुक्म हैं उन को उनके कर्म का बुराफल मिलेगा और वह हरा न सकेंगे। (५२) क्या इनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसको रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है (और जिस को चाहता है) नपी तुली करदेता है इस में ईमान वालोंके लिये निशानियां हैं। (५३) [रुकू ६] (हे पैग़म्बर इन से) कह दो कि हे हमारे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ियादती की अल्लाह की मिहर्बानी से ना उम्मेद न हो जाओ। अल्लाह तमाम पापोंको क्षमाकर देताहै। वह बख़्शनेवाला मिहर्बानहै। (५४) और तुम अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ ध्यान दो और उस का हुक्म उठाओ। इस से पहले कि तुमपर सज़ाआ उतरे और फिर उसवक्त तुमको मदद न मिलेगी। (५५) और तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से जो अच्छी २ बातें तुमपर उतरी उनपर चलो इससे पहले कि अचानक सज़ा तुमपर आ उतरे और तुमको ख़बरनहो। (५६) कोई शख़्श कहेगा शोकमैने खुदाके सामने पाप किया और मैं तो हँसताही रहा। (५७) या कहने लगा कि अगर खुदा मुझको शिक्षा देता तो मैं परहेज़गारों मे होता। (५८) जब सज़ा देखी तब कहने लगा कि किसी तरह मुझको (दुनियां) में फिर जाना हो तो मैं नेकों में हो जाऊं। (५९) हमारी आज्ञायें तुझको पहुंची तो तूने उन्हें झुठलाया और अकड़ बैठा और तू इन्कार करने वालों में था। (६०) और (हे पैग़म्बर तू) क़यामत के दिन इन्हे देखेगा जो खुदा पर झूंठ बोलते थे उन के मुंह काले होगे क्या घमण्डियों का ठिकाना नरक में नहीं है। (६१) और जो लोग परहेज़गारी करते है उनको खुदा कामयाबी के साथ छुटकारा देगा। उनको सज़ा नहीं छुएगी और न वह उदास होंगे। (६२) अल्लाह हर चीज को पैदा करने वाला है और वही हरचीज़ का ज़िम्मा लेनेवाला है आस्मान और ज़मीन की कुंजियां उसी के

पास हैं और जो लोग खुदा की आयतो को नही मानते वही घाटे में हैं। (६३) [रुकू ७] (हे पैग़म्बर इन लोगो से) कहो कि हे नादानो क्या तुम मुझे खुदा के सिवाय दूसरों की पूजा का हुक्म देते हो। (६४) और तुझको और तुझ से अगलो को हुक्म हो चुका है कि अगर तू ने शरीक ठहराया तो तेरे किये सब अकार्थ जावेंगे और तू घाटे में होगा। (६५) बल्कि अल्लाह ही की पूजा करो और शुक्रगुज़ारी में रहो। (६६) और इन लोगो ने खुदा की जैसी क़दर करनी चाहिये थी वैसी क़दर नहीं की। हालांकि क़यामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुट्ठीमें होगी और सब आस्मान लपटे हुये उसके दाहिने हाथ मे होंगे और वह इनके बनाये हुए शरीकों से ज़ियादा पाक और बहुत ऊपर है। (६७) और सूर (नरसिहा) फूंका जायगा तो जो आस्मानों में और ज़मीन में है बेहोश हो जांयगे मगर जिसको खुदा चाहे (बेहोश न होगा) फिर दुबारा सूर (नरसिहा) फूंका जायगा। फिर वे खड़े हो जांयगे और देखने लगेंगे। (६८) और ज़मीन अपने पालनकर्त्ताके नूर से चमक उठेगी और किताबे रक्खी जांयगी और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किये जांयगे और उन में इंसाफ के साथ फैसला कर दिया जायगा और उन पर ज़ुल्म न होगा। (६९) और जिस ने जैसे काम किये हैं सब को पूरा २ बदला मिलेगा और जो कुछ भी कर रहे हैं खुदा उससे खूब जानकार है। (७०) [रुकू ८] और काफिर नरककी तरफ टोलियां बना २ कर हांके जांयगे यहां तक कि जब नरक के पास पहुंचेंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिये जांयगे और नरक का कार्य कर्त्ता (दरोग़ा) उन से कहेगा कि क्या तुम में से पैग़म्बर तुम्हारे पास नहीं आये थे कि वह तुम्हारे पालनकर्त्ताकी आयतें तुमको पढ़ २ कर सुनाते और इसदिन की मुलाक़ात से तुम्हें डराते थे वह जवाब देंगे कि हां मगर सज़ा का हुक्म काफिरो पर क़ायम हो गया

है। (७१) (फिर इन से) कहा जायगा कि नरक के दरवाज़ों में दाखिल हो हमेशा इसमें रहो ग़रज़ अकड़ने वालोंका बुरा ठिकाना है। (७२) और जो लोग अपने पालनकर्त्ता से डरते थे उनकी टोलियां बना २ कर वैकुंठ की तरफ़ ले जाई जांयगी यहां तक कि जब वैकुंठ के पास पहुंचेंगे और उसके दरवाज़े खुले होंगे और वैकुंठ के कार्यकर्त्ता उनसे सलाम करके कहेंगे कि तुम मज़े में रहे। वैकुंठ में हमेशाके लिये दाखिल हो। (७३) और (यह लोग)कहेंगे कि खुदा का धन्यवाद है जिसने अपना वादा हम को सच कर दिखाया और हम को ज़मीन का मालिक बनाया कि हम वैकुंठ में जहां चाहें रहें तो (नेक) काम करने वालों का अच्छा फल है। (७४) और (हे पैग़म्बर उस दिन) तू देखेगा कि फ़िरिश्ते अपने पालनकर्त्ता की खूबी बयान करते तख़्त को आसपास घेरे हैं और इन में इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जायगा और कहा जायगा कि संसार के पालनकर्त्ता अल्लाह की तारीफ़ हो। (७५) ।

———:*:———

सूरे मोमिन ।

मक्के में उतरी इसमें ८५ आयतें और ९ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे-मीम-ज़ोरावर हिकमतवाले अल्लाहकी तरफ़से इस किताब का उतरना हुआ है। (१) पापों का क्षमा करने वाला और तोबा का कबूल करने वाला सख़्त सज़ा देनेवाला। (२) बड़ी कृपा करने वाला उसके सिवाय कोई पूजित नहीं, उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। (३) खुदाकी आयतों में सिर्फ वही लोग झगड़े निकालते हैं जो इन्कार करने वाले हैं। सो इन लोगों का शहरों में घर ब घर चलना फिरना तुम को धोखे में न डाले। (४) इनसे

पहिले नूहकी क़ौमने और उनके बाद और गिरोहोंने (अपने पैगम्बरों को) झुठलाया और हर गिरोहने अपने पैगम्बर के गिरफ्तार करने का इरादा किया और झूंठी बातोंसे झगड़े ताकि अपनी कट हुज्जतों से सबको डिगादें। फिर मैंने उनको धर पकड़ा तो मैंने उनको कैसी सज़ा दी। (५) और इसीतरह काफ़िरों पर तुम्हारे पालनकर्त्ता की बात साबित हुई कि यह नरक गामीहैं। (६) जो (फ़िरिश्ते) तख़्त को उठाए हुए हैं और जो तख़्त के आस पास हैं अपने पालनकर्त्ता को तारीफ़ और पाकी के साथ याद करते रहते और उस पर ईमान लाते और ईमान वालोंके पास क्षमा कराते हैं। हे हमारे पालनकर्त्ता तेरी कृपा और तेरे ज्ञानमें सब चीजें समाई हुई हैं। जिन्होंने तौबा की और तेरी राह पर चले उनको क्षमा करदे और उन्हें नरक की सज़ा से बचा। (७) और हे हमारे पालनकर्त्ता उनको (वैकुण्ठ के) बसने के बाग़ों में लेजाकर दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप दादों और बीबियों और उनकी औलाद में से जो २ नेक हों उनको भी। बेशक तू ज़ोरावर हिकमत वाला है। (८) और उनको ख़राबियों से बचा और जिसको तूने उस दिन ख़राबियों से बचाया उस पर तूने कृपा की

नहीं मानते थे और अगर उसके साथ शरीक ठहराये जाते थे सो तुम यक़ीन कर लेते थे तो (आज) सब से ऊपर और बड़े अल्लाह ही का हुक्म है। (१२) वही है जो तुम को अपनी निशानियां दिखाता और आस्मान से तुम्हारे लिये रोज़ी उतारता है और वही सोचता है जो (खुदा की तरफ़) ध्यान देता है। (१३) (तो मुसलमानो) ख़ालिस खुदा ही के आज्ञाकारी ख़्याल करके उसी को पुकारो अगर्चि काफ़िरों को भले ही बुरा लगे। (१४) साहिब ऊंचे दर्जे का तख़्त का मालिक अपने दासों में से जिस पर चाहता है अपने अधिकार से भेद की बात उतारता है ताकि (पैग़म्बर) क़यामत के दिन की मुसीबत से डरावे। (१५) जब कि मनुष्य (खुदा के) सामने आ मौजूद होंगे उनकी कोई बात खुदा से छिपी न होगी (खुदा की ओर से आवाज़ होगी) आज किसकी हुकूमत है अकेले अल्लाह दबाव वाले की। (१६) आज हर आदमी अपने किये का बदला पायगा आज (किसीपर) ज़ुल्म न होगा। अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और (हे पैग़म्बर) इन लोगों को आने वाले दिन से डराओ क्योंकि रंज के सबब दिल गले तक आ जावेंगे। (१८) पापियों का न कोई दोस्त होगा और न कोई शिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जावे। (१९) खुदा आंखों की चोरी और जो सीनों (छातियों) में छिपी है जानता है। (२०) और अल्लाह ठीक आज्ञा देता है और उसके सिवाय जिन (पूजितों) को यह लोग पुकारते हैं वह किसी तरह की आज्ञा नहीं दे सक्ते। बेशक अल्लाह सुननेवाला देखनेवाला है। (२१) [रुकू २] और क्या इन लोगों ने मुल्क में चल फिर कर नहीं देखा कि जो उन से पहिले थे उनका परिणाम (अख़ीर) क्या हुआ। वह बलबूते के लिहाज़ से और उन निशानों के लिहाज़ से जो ज़मीन में छोड़ गये हैं इन से कहीं बढ़ चढ़ कर थे। तो खुदा ने उनको उनके अपराधों

की सज़ा में धर पकड़ा और उन को ख़ुदा से कोई बचाने वाला न हुआ। (२२) यह इस सबब से हुआ कि उनके पैग़म्बर चमत्कार लेकर उन के पास आये इस पर उन्होंने न माना तो अल्लाह ने उनको धर पकड़ा। वह बली सख़्त सज़ा देने वाला है। (२३) और हमने मूसा को अपनी निशानियां और खुली २ दलीलें देकर भेजा। (२४) फ़िरऔन और हामां और क़ारूं की तरफ़। तो वह कहने लगे कि (यह) जादूगर झूठा है। (२५) फिर जब मूसा हमारी ओर से सच लेकर उनके पास गया तो उन्होंने हुक्म दिया कि जो लोग मूसा के साथ ईमान लाये हैं उन के बेटों को क़त्ल कर-डालो और बेटियों को जीता रक्खो और काफ़िरों का दावा ग़लती में होता है। (२६) और फ़िरऔन ने (अपने दरबारियों) से कहा कि मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा को क़त्ल करूं और वह अपने पालनकर्त्ता को बुलावे मुझको अन्देशा है कि (कहीं ऐसा न हो कि) तुम्हारे दीन को उलट पलट कर डाले या देश में फ़साद फैलावे। (२७) और मूसा ने कहा मैं अपने पालनकर्त्ता और तुम्हारे पालनकर्त्ता की पनाह लेचुका हूं हर एक घमण्डी से जो क़या-मत को नहीं मानता। (२८) [रुकू ४] और फ़िरऔन के लोगों

कौन हमारी मदद करेगा। फ़िरऔन ने कहा मैं तुम को वही बात समझाता हूं जो मैं समझा हूं और वही राह बताता हूं जिसमें भलाई है। (३०) और ईमान्दार बोला हे भाइयो मुझको तुम्हारी बाबत डर है कि तुम पर अगले गिरोहों कैसा दिन न आजाय। (३१) जैसे नूह, आद और समूद की क़ौम। (३२) और उन लोगोंका हुआ जो उनके बाद हुए और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का जुल्म करना नहीं चाहता। (३३) और हे कौम मुझको तुम्हारी बाबत क़यामत के दिन का डर है। (३४) जब कि तुम पीठ देकर भागोगे। तुम को खुदा से कोई न बचावेगा और खुदा जिसको गुमराह करे तो उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं। (३५) और (इससे) पहिले यूसुफ़ खुले २ हुक्म लेकर तुम्हारे पास आ चुका है। फिर जब वह तुम्हारे पास लेकर आये तुम उन में शकही करते रहे यहां तक कि जब वह मर गया तब तुम कहने लगे कि इसके बाद अल्लाह कोई पैग़म्बर न भेजेगा। इसीतरह अल्लाह उनको जो लोग हद से बढ़े हुए शक में पड़े रहते हैं राह भटकाया करता है। (३६) जो लोग खुदा की आयतों में बिना किसी सनद के झगड़ते हैं अल्लाह के और ईमान वालों के नज़दीक ना पसंद बात है। घमण्डी सरकशो के दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (३७) और फ़िरऔन ने कहा हे हामां मेरे लिये एक महल बनवा कि मैं रास्तों पर पहुंचूं। (३८) रास्तों में आस्मान के कि मैं मूसा के खुदा तक पहुंचूं और मैं तो मूसा को झूठा समझता हूं। (३९) और इसी तरह फ़िरऔन की बदकारी उसको भलाई कर दिखाई गई और वह राह से रोका गया और फ़िरऔन की तदबीरें ग़ारत होने वाली थीं। (४०) [रुकू ५] और वह ईमानदार बोला हे क़ौम मेरे कहे पर चलो मैं तुम को सीधी राह दिखा दूंगा। (४१) भाइयो यह

दुनियां की ज़िन्दगी थोड़ा फ़ायदा है और आखिरत रहनेका घर है। (४२) जो बुरे काम करताहै उसको वैसाही बदला मिलेगा और जो नेकी करता है मर्द हो या औरत मगर हो ईमानदार तो यह लोग बैकुंठ में होंगे वहां उनको बेहिसाब रोज़ी मिलेगी। (४३) और हे क़ौम मुझे क्या हुआ कि मैं तुम को छुटकारे की तरफ़ और तुम मुझे नरक की तरफ बुलाते हो। (४४) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूं और उसके साथ उस चीज़ को शरीक करूं जिसका मुझे इल्म ही नहीं और मैं तुम्हें बख्शे बख़शने वाले की तरफ़ बुलाता हूं। (४५) कुछ शक नहीं कि जिस चीज की तरफ मुझ को बुलाते हो वह न दुनियां में पुकारे जाने के क़ाबिल है और न आखिरत में और कुछ शक नहीं कि हम को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। जो लोग हद से बढ़े हुए हैं वही नरकवासी हैं। (४६) जो मैं तुम से कहता हूं सो आगे याद करोगे और मैं अपना काम खुदा को सौंपता हूं। बेशक अल्लाह की निगाह में सब बन्दे हैं। (४७) चुनांचि मूसा को तो अल्लाह ने फ़िरऔनियों के बुरे दावों से बचा दिया और फ़िरऔनियों को बुरे अज़ाब ने घेर

खुले चमत्कार लेकर नहीं आते रहे वह कहेंगे हां ! फिर तुम्ही पुकारो और काफ़िरों का पुकारना सिर्फ़ भटकना है और कुछ नहीं । (५३) [रुकू ६] हम दुनियां की ज़िन्दगी में अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की मदद करते हैं और उस दिन (भी मदद करेंगे) जब कि गवाह खड़े होंगे । (५४) जिस दिन इन्कारियों का उज्र काम न देगा और उनपर फटकार होगी और उन को बुरा घर मिलेगा । (५५) और हमने मूसा को शिक्षा दी और इसराईल के बेटो को किताब का वारिस बनाया । बुद्धिमानों के लिये शिक्षा और हिदायत है । (५६) सो (हे पैग़म्बर) तू ठहरा रह—ख़ुदा का वादा सच्चा है और अपने पापों की क्षमा मांग और सुबह और शाम अपने पालनकर्त्ता की खूबियों की पाकी बोल । (५७) जो लोग बिना किसी सनदके खुदा की आयतों में झगड़ते हैं उनके दिलोमें अकड़है वह इसको न पहुंचेंगे सो खुदाकी पनाह मांग वह सुनता देखताहै।(५८) आस्मानोको और ज़मीनको पैदा करना आद्मियोंके पैदा करनेके मुक़ाबिलेमें बड़ा काम है मगर बहुधा लोग नही समझते। (५९)और अन्धा और आंखोंवाला बराबर नही और ईमानदार जो भले काम करतेहैं कुकर्मियोके बराबर नही। तुम थोड़ीही नसीहत पकड़ते हो । (६०) वह घड़ी (क़यामत) आनेवाली है इसमें शक नही लेकिन अक्सर लोगईमान नही लाते । (६१) और(लोगो) तुम्हारे पालनकर्त्ता ने मुझ से कहा है कि तुम दुआ करो मैं उसे क़बूल करूंगा जो लोग मेरी पूजा से सिर उठाते है बदनाम होकर नरक में जावेंगे । (६२) [रुकू ७] अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि तुम उस में आराम करो और दिन बनाय ताकि देखो । अल्लाह लोगोंपर बड़ाही मिहर्बान है लेकिन बहुधा लोग धन्यवाद नहीं देते । (६३) यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्त्ता है कुल चीजोंका पैदा करनेवाला उसके सिवाय कोई पूजित नही । फिर तुम

किधर बहके चले जाते हो। (६४) जो लोग खुदा की आयतों से इन्कारी हैं इसी तरह बहकाये जाते हैं। (६५) अल्लाह जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को ठहरने की जगह और आस्मान को छत बनाया और उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं और अच्छी बनाईं और उम्दह २ वस्तुऐं तुम्हें (खाने को) दीं। यही अल्लाह तो तुम्हारा पालनकर्ता है। सो अल्लाह संसार का पालनकर्ता बड़ा बरकत देने वाला है। (६६) वह जिन्दा है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं तो खालिस उसी की आज्ञा का ख़्याल रखकर उसी को पूजाकरो। सब तारीफ़ें खुदाही को हैं जो सब संसार का पोषण करने वाला है। (६७) (हे पैग़म्बर) कहो कि मुझे मना हुआ है कि मैं अल्लाहके सिवाय उन्हें पूजूं जिन्हें तुम पुकारते हो। जब कि मेरे पालनकर्त्तासे मेरे पास खुली आयतें कुरान की आगई और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं संसारके पालनकर्ता पर ईमान लाऊं। (६८) वही है जिसने तुमको मिट्टीसे पैदा किया, फिर वीर्यसे, फिर लोथड़ेसे, फिर तुमको बच्चा निकालता है तुम अपनी जवानी को पहुंचते हो। फिर तुम बूढ़े होजाते हो और तुममें से कोई पहिले मरजातेहैं और (जिनको जवानी या बुढ़ापे तक जिन्दा रक्खा जाता है तो) इस ग़रज़से कि तुम मुक़र्रर

फिर आगमें झोंके जांयगे। (७३) फिर इनसे पूछा जायगा कि खुदाके सिवाय तुम जिन (पूजितों) को शरीक ठहरातेथे वे कहां हैं वे कहेंगे हमसे खोये गये बल्कि हम तो पहिले (अल्लाह के सिवाय) किसी चीज़ की पूजा करते ही न थे। अल्लाह काफ़िरों को इसीतरह भट-काता है। (७४) (उनसे कहा जायगा कि) यह तुम्हारी उन बातों की सज़ा है कि तुम ज़मीन पर बेफ़ायदा खुशियां मनाया करते थे और उसकी सज़ा है कि तुम इतराया करते थे। (७५) (तो अब) नरक के दरवाजों में जा दाखिल हो। हमेशा इसी में रहो गर्ज़ घमंड करने वालों का बुरा ठिकाना है। (७६) (हे पैग़-म्बर) ठहरा रह खुदा का वादा सच्चा है। तो जैसे वादे हम इन लोगों से करते हैं कुछ तुझको दिखायेंगे या तुझे (दुनियां से) उठालेंगे फिर वे हमारी तरफ़ आवेंगे। (७७) और हमने तुम से पहिले कितने पैग़म्बर भेजे उन में से (कोई) ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुम को सुनाये और उन में से (कोई) ऐसे हैं जिन के हालात हमने तुम को नहीं सुनाये और किसी पैग़म्बर की ताक़त न थी कि बेइजाज़त खुदा कोई चमत्कार लादिखावे। फिर जब खुदा का हुक्म यानी सज़ा आई तो इन्साफ़के साथ फ़ैसला करदिया गया और जो लोग ग़लती में थे घाटे में रहे। (७८) [रुकू ६] अल्लाह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते चौपाये बनाये ताकि उनपर सवारी लो और (कोई) उनमें से ऐसा है कि तुम उनको खाते हो। (७९) और तुम्हारे लिये चारपायों में बहुत फ़ायदे हैं और उनपर चढ़कर अपने दिली मतलब को पहुंचो और चारपायों पर और किश्तियों पर तुम (लदे फ़िरते हो) । (८०) और तुमको (खुदा) अपनी निशानियां दिखाता है तो खुदा की (क़ुदरत की) कौन २ सी निशानियों से इन्कार करते हो। (८१) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि अपने अगलों का परिणाम (आखीर)

देखते। वह बल बूते के लिहाज से और जमीन पर छोड़े हुए निशानों के लिहाज़ से इनसे कहीं बढ़ चढ़ कर थे फिर उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई। (८२) और जब उनके पैग़म्बर उन के पास खुली हुई दलीलें लेकर आये तो जो उनके पास खबर थी उस-पर खुश हुए और जिसकी हँसी उड़ाते थे वह इन्हीं पर उलट पड़ी। (८३) फिर जब उन्होंने हमारी सजा (आते) देखी तो कहने लगे कि हम एक खुदापर ईमान लाये और जिन चीज़ों को हम शरीक ठहराते थे (अब) हम उनको नहीं मानते। (८४) मगर जब उन्होंने हमारी सजा (आते) देखली तो ईमान लाना उनको कुछ भी फ़ायदामंद न हुआ (यह) दस्तूर अल्लाह का है जो उसके बन्दों में जारी है और काफिर यहां घाटे में होते हैं। (८५) ।

—:०:—

सूरे हमीम सिजदा।

मक्के में उतरी इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाहके नामसे जो रहमवाला मिहर्बान है।

मांगो और शरीक करने वालों पर अफ़सोस (शोक)। (५) जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के भी इन्कार करने वाले हैं। (६) अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और उन्होने नेक काम किये उनके लिये बड़ा फल है। (७) [रुकू २] (हे पैग़म्बर) कहो क्या तुम उस से इन्कार करते हो जिसने दो दिन मे ज़मीन में पैदा किया और तुम उसका शरीक बनाते हो। यही सारे जहान का पालनकर्ता है। (८) और उसीने ज़मीन में पहाड़ बनाये और उसमें बरकत दी और उसी में मांगने वालों के लिये चार दिनों में खुराकें ठहरा दीं। (९) फिर आस्मान की तरफ़ सीधा होगया और वह धुआं था—ज़मीन और आस्मान दोनों से कहा कि तुम दोनों खुशी से आये या लाचारी से। दोनों ने कहा हम खुशी से आये। (१०) इस के बाद दो दिन में उस (धुयें) के सात आस्मान बनाये और हरेक आस्मान में अपना हुक्म उतारा और पहिले आस्मान को हमने तारों से सजाया और हिफ़ाज़त रक्खी यह ज़ोरावर कुद्रत वाले से सधा है। (११) फिर अगर (मक्का के काफ़िर) सिर फेरें तो कह कि जैसी कड़क आद और समूद पर हुई थी उसी तरह की कड़क से तुम को भी डराता हूं। (१२) तब उनके पास उनके आगे से और उनके पीछे से पैग़म्बर आये कि खुदा के सिवाय किसी की पूजा न करो। वह कहने लगे अगर हमारा पालनकर्त्ता चाहता तो फ़िरिश्ते भेजता फिर जो कुछ तुम लाये हो हम उसको नहीं मानते। (१३) सो आद (के लोगों) ने वृथा घमण्ड किया और बोले बल बूते में हम से बढ़ कर कौन है क्या उनको इतना न सूझा कि जिस अल्लाह ने उन को पैदा किया वह बल बूते में उन से कहीं बढ़ चढ़कर है। ग़रज़ वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे। (१४) तो मनहूस दिनों में उन पर बड़े ज़ोर की आन्धी चलाई ताकि दुनियां की ज़िन्दगी में उन को सज़ा का मज़ा चखायें और

आखिरत की सज़ा में तो पूरी ख़्वारी है और उनको मदद न मिलेगी। (१५) और वह जो समूद था हमने उसे हिदायत की उन्हों ने सीधी राह छोड़कर गुमराही इख्तयार की। परिणाम यह हुआ कि उनके कुकर्मोंकी वजहसे उनको ज़िल्लतकी कड़कने दबालिया। (१६) और जो लोग ईमान लाये और डरते थे उन को हमने बचा लिया। (१७) [रुकू ३] और जिस दिन ख़ुदा के दुश्मन नरक की तरफ़ हांके जांयगे उनके गिरोह २ जुदा होंगे। (१८) यहां तक कि (जब सब) नरक के पास जमां होंगे तो जैसे २ काम यह लोग करते रहे हैं उनके कान और उनकी आंखे और उन के चमड़े उन के मुकाबिले में गवाही देंगे। (१९) और यह लोग अपने (गोश्त) से पूछेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी वह जवाब देंगे कि जिस (ख़ुदा) ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति दी उसी ने हम से बुलवालिया। उसी ने तुम्हे पहिलीबार पैदा किया और अब तुम लोग उसी की तरफ लौटाये जावगे। (२०) और तुम इस बात से पर्दा न करते थे कि तुम्हारे कान आंखें और चमड़ा गवाही न दें

मत सुनो और इस में गुल मचादिया करो। शायद तुम बाज़ी ले जाओ। (२५) सो जो लोग इन्कार करने वाले हैं हम उनको सख़्त सज़ा चखायेंगे। (२६) और उनके कामों का बुरा बदला देवेंगे। (२७) यह नरक खुदा के दुश्मनों (यानी काफ़िरों) का बदला है वह हमारी आयतों से इन्कार किया करते थे उस की सज़ामें उनको हमेशा के लिये नरक में घर मिला। (२८) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं (क़यामत में) कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्त्ता शैतान और आदमी जिन्हों ने हम को गुमराह किया था (एक नज़र) उन को हमें (भी) दिखा कि हम उन को अपने पैरों के तले डालें ताकि वह बहुत ही ज़लील हों। (२९) जिन लोगों ने इक़रार किया कि अल्लाह ही हमारा पालनकर्त्ता है और जमेरहे उनपर फ़िरिश्ते उतरेंगे कि न डरो और न रंजकरो और बैकुण्ठ जिस का तुम्हें वादा मिला अब उससे खुशहो। (३०) हम दुनियां की ज़िन्दगी में और आखि-रत की ज़िन्दगी में तुम्हारे मददगार हैं। जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहे और जो तुम मांगो मौजूद होगी। (३१) वहाँ बख़्शने वाले मिहर्बान की तरफ से मिहर्बानी है। (३२) [रुकू ५] और उससे बिहतर किसकी बात होसक्ती है जो खुदा की तरफ़ बुलाये और नेक काम किये और कहा कि मैं खुदा के आज्ञाकारी सेवकों में हूं। (३३) और (हे पैग़म्बर) नेकी और बदी बराबर नहीं—बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दे तो तुम में और जिस आदमी में दुश्मनी थी उसे तू पक्का दोस्त पावेगा। (३४) और बात उन्हीं लोगों को दीजाती है जो सब्र करते हैं और यह उन्हीं लोगों को दीजाती है जिन के बड़े भाग्य हैं। (३५) और अगर तुम को किस तरह का शैतानी ख़याल बहकाये तो खुदासे पनाह मांग। वही सुनता जानता है। (३६) और खुदा की निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चांद भी है। न सूरज को सिजदा कर और न चांद को

और अगर तुम खुदा के पूजन वाले हो तो अल्लाह ही को सिजदा करना जिसने इन चीज़ो को पैदा किया है। (३७) फिर अगर (यह लोग) घमण्ड करैं फिर जो (फिरिश्ते) तुम्हारे पालनकर्त्ता के पास है वह रात और दिन उस की पाकी से याद करने में लगे रहते हैं और वह नही थकते। (३८) और उसकी निशानियों में से एक यह है कि तू ज़मीन को दबी हुई देखता है फिर जब हम उसपर पानी बरसा देते हैं तो वह लहलहाने लगती और उभर चलती है। जिसने इस (जमीन) को जिलाया वही मुर्दो को भी जिलाने वाला है। वह हर चीज पर शक्तिमान है। (३६) जो लोग हमारी आयतो मे टेढ़ापन पैदा करते है हम पर छिपी नही। भला जो आदमी नरक मे डाला जाय वह बिहतर है या वह आदमी जो कयामत के दिन उस को खटका न हो—लोगो जो चाहे सो करो जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उस को देख रहा है। (४०) जिन लोगों के पास शिक्षा आई और उन्होंने उस को न माना और यह (कुरान) अजीब किताब है। (४१) उस मे भूट का न इसके आगे से और न इसके पोछेसे दखल है हिकमत वाले सर तूबियों सराहे से उतरी

(बड़े २) भेद डाले गये और (हे पैग़म्बर) अगर तुम्हारे पालन कर्त्ता से (फ़ैसला करने की आज्ञा) पहिले उतर न चुकती तो इनमें फैसला कर दिया गया होता और यह लोग कुरान की निस्बत शक-पर शक में पड़े हैं। (४५) (हे पैग़म्बर) जिस ने नेक काम किये उसने अपने लिये और जिसने बुरा किया तो उसी पर है और तेरा पालनकर्त्ता बन्दों पर जुल्म नहीं करता। (४६)।

—:०:—

पच्चीसवां पारा।

उसीकी तरफ़ क़यामतके इल्मका हवाला दियाजाताहै और उसीके इल्मसे फल गाभों से निकलतेहैं। न किसी मादा का पेट रहताहै और वह जनती है और जब खुदा लोगों को पुकारेगा कि तुम्हारे शरीक कहां हैं वह जवाब देंगे कि हमने तुझे सुना दिया कि हम में से कोई गवाही नहीं। (४७) और जिन पूजितों को पहिले यह लोग पुकारते थे अब इनसे खोये गये और यह समझलेंगे कि इनके लिये छुटकारा नहीं मांगते। (४८) आदमी भलाई मांगने से नहीं थकता और जो उसे बुराई पहुंचे तो उदास और निरास हो जाता है। (४६) और अगर उसको कोई दुःख पहुंचे और दुःखके बाद हम उसको अपनी कृपा चखावें तो कहने लगता है कि यह तो मेरे ही लिये है और मैं नहीं समझता कि क़यामत क़ायम हो और अगर मुझ को अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ लौटाया जायगा तो उसके यहां मेरे लिये खूबी होगी। सो हम काफ़िरों को उनके काम बतादेंगे और उनको सख़्त सज़ा का मज़ा चखायेंगे। (५०) और जब हम आदमी पर नियामत भेजते हैं तो मुंह फेर लेता है और अलहिदा होजाता है और जब उसको दुःख पहुंचता है तो चौड़ी दुआयें

करने लगता है। (५१) (हे पैग़म्बर) कहो कि भला देखो तो सही कि अगर (यह क़ुरान) खुदा के यहां से हो और इसपर भी तुम इस से इन्कार करो तो जो दुश्मन होकर दूर चलाजावे तो उस से बढ़कर गुमराह कौन है। (५२) हम इन लोगोंको अपनी निशानियां चौतर्फा दिखलावेंगे और उनकी जानों में भी। यहां तक कि इन पर ज़ाहिर हो जायगा कि यह सच है क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता हर वस्तु का साक्षी है। (५३) सुनो जो यह अपने पालनकर्त्ता को मुलाक़ात से सन्देह में हैं सुनो जो खुदा हर वस्तु को घेरे हुए है। (५४)।

——:०:——

सूरे शोरा।

मक्के में उतरी इसमें ५३ आयतें ५ रुकू हैं॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे-मीम-ऐन-सीन-क़ाफ़। (हे पैग़म्बर) (जिस तरह यह सूरत तुम्हारे ऊपर उतारी जाती है) इसी तरह अल्लाह जो बली हिकमत वाला है तुम्हारी तरफ़ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ़ जो तुम से पहिले हो चुके हैं वही (ईश्वरीय सन्देशा) भेजता

और इसी तरह अर्बी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्केके आस पासहैं उनको डरावे और क़यामत के दिनकी मुसीबतसे डरावे । जिसमें कुछ शक नहीं कुछ लोग बकुराठ में और कुछ लोग नरक में होंगे । (५) और खुदा चाहता तो लोगों का एक ही फ़िर्क़ा बना देता लेकिन वह जिसको चाहे अपनी कृपा में ले और पापियों का कोई हामी और मददगार न होगा । (६) क्या इन लोगों ने अल्लाह के सिवाय (दूसरे) काम संभालने वाले बना रक्खे हैं।सो अल्लाह ही काम बनाने वालाहै और वही मुर्दोंका जिलाता और हर चीज़ पर शक्तिमानहै । (७)[रुकू २] और जिन २ बातोंमें तुम लोग आपसमें भेद रखते हो उनका फ़ैसला खुदा ही के हवाले है (लोगो) यही अल्लाह मेरा पालनकर्त्ता है । मैं उसी पर भरोसा रखता और उसी की तरफ़ ध्यान करता हूं ।(८) आस्मान और ज़मीन का पैदा करने वाला है उसी ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्सके जोड़े बनाये और चारपायों के जोड़े (इसतरह) तुम को ज़मीन पर फैलाता है कोई चीज उस जैसी नहीं और वह सुनता देखता है । (९) आस्मान ज़मीन की कुंजियां उसीके पासहैं जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ादेता है और (जिसकी चाहताहै) नपी तुली करदेता है वह हरचीज़ से जानकार है । (१०) (लोगो) उसने तुम्हारे लिये दीनकी वही रास्ता ठहराई है जिस (पर चलने) का उसने नूह को हुक्म दिया था और (हे पैग़म्बर) तेरी तरफ़ हम ने जो हुक्म भेजा और जो हमने इब्राहीम, मूसा और ईसा को हुक्म दिया था कि (इसी) दीन को क़ायम रक्खो और इसमें फ़र्क न डालो । (हे पैग़म्बर) तुम जिस (दीन) की तरफ़ मुशरिकों को बुलाते हो वह उन पर गिरां गुज़रता है ।(११) अल्लाह जिसे चाहे अपनी तरफ़ चुनले और उसको अपनी तरफ़ राह दिखाता है जो रुजू होता है । (१२) और उन्होंने समझ आये पीछे आपस का

ज़िद् के सबब से भेद डाला (हे पैग़म्बर) अगर तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़से एक वक्त मुक़र्रर तकका वादा पहिलेसे न हुआ होता तो उनमें फैसला कर दिया गया होता और जो लोग अगलों के बाद किताब के वारिस हुए वे उसके धोखे में है जो चैन नहीं देता। (१३) तो (हे पैग़म्बर) तू उसी की तरफ़ बुला और जैसा तुमसे फ़र्माया गया है (उसपर) कायम रह और इन की ख़्वाहिशों पर न चल और कहदो कि हर किताब पर जो ख़ुदा ने उतारी है ईमान लाता है और मुझे हुक्म मिला है कि तुम में इन्साफ़ करूं। अल्लाह हमारा और तुम्हारा पालनकर्त्ता है। हमारा किया हम को और तुम्हारा किया तुम को हम से और तुम में कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हम सबको जमा करेगा और उसीकी तरफ़ जाना है। (१४) और जब ख़ुदा को मान चुके तो जो लोग इस के बाद अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं तो उनके पालनकर्त्ता के नज़दीक उन की हुज्जत झूठी है और उनपर ग़ज़ब है और उनके लिये दुखदाई सज़ा है। (१५) अल्लाह जिस ने किताबें और तराज़ू सच्ची उतारी (हे पैग़म्बर) तुम क्या जान सकते हो शायद क़यामत क़रीब हो। (१६) जिन को कयामत का यक़ीन नहीं वह तो उस के लिये जल्दी मचा रहे हैं और जो

तो इनमें फ़ैसला करदिया गया होता और पापियों को दुखदाई सज़ा है। (२०) (हे पैग़म्बर तू उस दिन) पापियों को देखेगा कि पापी अपनी कमाई से डरते होंगे वह वदला इनपर पड़ने वाला है और जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वह बैकुंठ के वाग़ की क्यारियों में होंगे। जो उन को दरकार होगा उन के पालनकर्त्ता के यहां होगा। यही तो बड़ी कृपा है। (२१) यह वह वदला है जिसकी खुश खबरी खुदा अपने ईमान्दार नेक काम करने वाले सेवकों को देता है (हे पैग़म्बर) कहो कि मैं तुम से इस पर कोई मज़दूरी नहीं चाहता। मगर रिश्ते नाते की मुहब्बत और जो शख़्स नेकी करेगा उस के लिये हम और जियादह खूबी पैदा करदेंगे अल्लाह क्षमा करने वाला क़दरदान है। (२२) (हे पैग़म्बर) क्या यह (लोग) कहते हैं कि इस शख़्स ने (कुरान के सम्बन्ध मे) खुदा पर झूंठ वान्धा सो खुदा अगर चाहे तो तेरे दिलपर मुहर लगाये। मगर अल्लाह अपनी वात से झूठको मिटाता और सच को जमाताहै और वह (लोगोंके) दिलकी वात जानताहै। (२३) और वही है जो अपने वन्दों की तौवा क़बूल करता और बुराइयां माफ़ करता और जैसे २ कर्म तुम करते हो जानता है। (२४) और वह ईमान वालों की जो नेक काम करते हैं दुआ क़बूल करता है और अपनी कृपा से उनको वढ़ती देता है और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिये सख़्त सज़ा है। (२५) और अगर अल्लाह अपने वन्दों के लिये रोज़ी ज़ियादह करदे तो वह मुल्क में सरकशी करने लगें मगर वह अन्दाज़ से जितनी (रोज़ी) चाहता है उतारता है। वह अपने सेवकों का खबरदार देखने वाला है। (२६) वही है जो लोगों के निरास हुए पीछे मेंह वरसाता है और अपनी कृपा को सब पर कर देता है और वह काम वनाने वाला और प्रशंसा के योग्य है। (२७) और उसी की निशानियों में से आस्मानों और ज़मीन का

पैदा करना है और उन जानदारों को जो उसने आस्मान, और ज़मीन में फैला रक्खे हैं। वह जब चाहे उनके जमा कर लेने पर शक्तिमान है। (२८) [रुकू ४] और तुम पर जो दुःख पड़ता है सो तुम्हारे हाथो की कमाई का बदला है और खुदा बहुत अपराधों से बराता है। (२९) तुम ज़मीन मे (खुदा को) हरा नही सक्ते और न खुदा के सिवाय तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न मदद्-गार। (३०) और उसी की निशानियों मे से जहाज़ है जो समुद्रो मे पहाड़ों की तरह है। अगर खुदा चाहे हवा को ठहरा दे तो जहाज़ समुद्र को सतह पर खड़े के खड़े रहजांय इस मे ठहरने वालों और धन्यबाद करनेवालों के लिये निशानियां है। (३१) या जहाज़ वालो के कर्मों के बदले मे जहाज़ो को तबाह करदे—और बहुतेरे अपराधों को क्षमा करता है। (३२) और जो लोग हमारी आयतो मे झगड़ने वाले है जान ले कि उनको भागने की जगह नहीं है। (३३) सो जो कुछ तुम को दिया गया है दुनियां की जिन्दगी का सामान है और जो खुदा के यहां है ईमान्दारो और जो अपने पाल-नकर्त्ता पर भरोसा रखते है उनके लिये बढ़कर और पुख्ता है। (३४) और जो बड़े २ गुनाहो और बेशर्मी की बातो से अलग रहते है और जब उनको गुस्सा आजाता है तब क्षमा कर जाते है।

लोगों पर कोई दोष नहीं। (३९) दोष उन्ही पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते और वृथा मुल्क में ज़ियादती करते हैं उन्हीं को दुखदाई सज़ा है। (४०) और जिसने संतोष किया और (दूसरे की खता को) क्षमा करदिया तो यह बातें हिम्मत की हैं। (४१) [रुकू ५] और जिसे खुदा ने गुमराह किया फिर उसे अल्लाह के सिवाय कोई सहायक नहीं और तू ज़ालिमों को देखेगा। (४२) कि जब सज़ा को देखलेंगे तो कहेंगे कि भला (दुनियां में) फिर लौट चलने की भी कोई राह है। (४३) और तू इनको देखेगा कि नरक के साम्हने बदनामी के मारे हुए झुके हुए छिपी निगाहों से देखते होंगे और (उस वक्त) ईमानवाले कहेंगे कि घाटे में वह हैं जिन्होंने क़यामतके दिन अपने आप को और अपने घर वालोंको तबाह किया। सुनोजी ज़ुल्म करनेवाले हमेशा की सज़ा में रहेंगे। (४४) और खुदा के सिवाय उनका कोई मददगार न होगा जो उन की मदद करे और जिसे खुदा ने गुमराह किया तो उसके लिये कोई राह नहीं। (४५) अपने पालनकर्त्ता का कहा मान लो उस दिन (क़यामत) के आने से पहले जो खुदा की ओर से टलने वाला नहीं। उस दिन तुम्हारे लिये न कोई बचाव की जगह होगी और न इन्कार बन पड़ेगा। (४६) तो (हे पैग़म्बर) अगर यह लोग मुंह मोड़े तो हमने तुम को इनपर निगहबान बनाकर नहीं भेजा। तेरा ज़िम्मा पहुंचाना और जब हम आदमी को अपनी कृपा चखाते हैं तो वह उससे खुश होता है और लोगों को जो उनके कामों के बदले में दुःख पहुँचता है तो इन्सान बड़ाही भलाई भूलनेवाला है। (४७) आसमान और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है जो चाहे पैदा करे जिसे चाहे बेटियां दे और जिसे चाहे बेटे दे। (४८) या बेटे और बेटियां (मिलाकर) उनको दोनों तरह की औलाद दे और जिस को चाहे बांझकरे वह जानकार और शक्तिमान है। (४९) और किसी आदमी की ताक़त

नहीं कि खुदा से बातें करे मगर आकाशवाणी से या पर्दे के पीछे से। (५०) या किसी फ़िरिश्ते को उसके पास भेजदे और वह खुदा के हुक्म से जो मंज़ूर हो पहुंचा देता है। वह सब से ऊपर हिकमत वाला है। (५१) और (हे पैग़म्बर) इसी तरह हमने अपने हुक्म से तेरी तरफ़ एक फ़िरिश्ता भेजा। तू न जानता था कि किताब क्या चीज और ईमान क्या चीज़ है। लेकिन हमने क़ुरानको रोशन बनाया और अपने सेवकों में से जिसे चाहे उसके जरिये से राह दिखावे और (हे पैग़म्बर) तू अलबत्ता सीधी राह दिखाता है। (५२) राह अल्लाह की है जो आस्मानों और जमीन की सब चीज़ों का मालिक है। सुनो जी अल्लाह तक कामों की पहुंच है। (५३)।

सूरे जुखरफ़।

मक्के में उतरी इसमें ८९ आयतें ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहम वाला मिहर्बान है।

(८) वही है जिसने ज़मीन को तुम लोगों के लिये फ़र्श बनाया है और तुम्हारे लिये उस में राह निकाली ताकि तुम राह पाओ। (९) और जिसने अटकल के साथ आस्मान से पानी बरसाया फिर हमने उस (पानी) से मरे हुए शहर को जिला उठाया इसी तरह तुम लोग भी निकाले जावगे। (१०) और जिसने सब चीज़ों के जोड़े बनाये और तुम्हारे लिये किश्तियां और चौपाये बनाये हैं जिनपर तुम सवार होते हो। (११) कि उन की पीठपर बैठजाओ फिर जब उनपर बैठजाओ तो अपने पालनकर्त्ता की भलाई यादकरो और कहो कि वह पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे वशमें किया है और हम उन को अधिकारमें करने की सामर्थ न रखते थे। (१२) और हम को अपने पालनकर्त्ता की ओर लौट जाना है। (१३) और लोगों ने खुदा के लिये उसके बन्दे को एक जुज़ क़रार दिया है। आदमी खुल्लम खुल्ला बड़ाही कृतघ्नी है। (१४) [रुकू २] क्या खुदा ने अपनी सृष्टिमें से (आपतो) बेटियां ली और तुम (लोगों) को बेटे चुनकर दिये। (१५) और जब इन लोगों मेंसे किसी को उस चीज़ के होने की खुश खबरी दी जाय (यानी बेटी की) जो खुदा के लिये कहावत ठहराई है तो अन्दर ही अन्दर ताव खाकर उसका मुंह काला पड़ जाता है। (१६) क्या जो गहनों में पाला जावे और झगड़ते वक्त बात न कह सके। (१७) और इन लोगोंने फ़िरिश्तों को जो रहमान (खुदा) के बन्दे हैं औरतें ठहराया है क्या जिसवक्त खुदाने फिरिश्तों को पैदा किया यह लोग मौजूद थे इन का क़ौल लिखा जायगा और इन से पूंछा जायगा। (१८) और कहते हैं कि अगर रहमान (कृपालु) चाहता तो हम इनकी पूजा न करते। उन्हें इस बात की कुछ खबर नहीं निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (१९) या इनको हमने इसके पहले कोई किताब दी है कि यह उसे पकड़ते हैं। (२०) बल्कि कहते हैं कि हमने अपने बापदादोंको

-क तरीके पर पाया और उन्ही के क़दम व क़दम हम भी ठीक राह चले जा रहे हैं। (२१) और (हे पैग़म्बर) इसी तरह हमने तुम से पहिले जब कभी किसी गांव में कोई (पैग़म्बर) डर सुनाने वाला भेजा वहां के धनी लोगों ने यही कहा कि हमने अपने दादों को एक राह पर पाया और उन्हीके क़दम व क़दम चलते हैं। (२२) वह बोला कि जिस पर तुमने अपने बाप दादों को पाया अगर मैं उनसे बढ़कर राह की सूझ (यानी दीन) लेकर तुम्हारे पास आया हूं तौ भी (तुम उसे न मानोगे) वह बोले जो तुम लाये हो हम उस को नही मानते। (२३) आखिरकार हमने उनसे बदला लिया तो देखो कि (पैग़म्बरों के) झुठलाने वालों का कैसा परिणाम हुआ। (२४) [रुकू ३] और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि जिन की तुम पूजा करते हो मुझ को उनसे कुछ सरोकार नही। (२५) मगर जिसने मुझको पैदा किया सो वही मुझ को राह दिखायेगा। (२६) और यही बात अपनी औलाद मे छोड़ गया शायद वह ध्यान दें। (२७) बल्कि हमने इनको और इनके बाप दादो को (दुनियां में) बर्तने दिया यहां तक कि इनके पास सच्चादीन और खुली सुनाने वाला पैग़म्बर आया। (२८) और जब इनके पास सच दीन आया तो कहने लगे यह तो जादू है और हम इसको नही मानते। (२९) और बोले कि दो बस्तिओ (यानी मक्का और ताया) से किसी बड़े आदमी पर यह क़ुरान क्यो न उतरा। (३०) क्या यह लोग तेरे पालनकर्त्ता की कृपा के बांटने वाले हैं सो इस जिन्दगी मे इनकी रोजी इन में हम बांटते हैं और हमने (दुनियावी) दर्जों के एतबार से इन में एक को एक पर बढ़ा रक्खा है ताकि इनमें एक को एक (अपना) आज्ञा-कारी बनाये रहे और जो (माल असबाब) यह लोग समेटे फिरते हैं तेरे पालनकर्त्ता की कृपा (तो) इस से कहीं बढ़-

फ़र है। (३१) और अगर यह बात न होती कि सब मनुष्य एक ही तरीके के हो जांयगे तो जो ख़ुदा से इन्कारी हैं हम उनके लिये उनके घरों की छत्तें और ज़ीने जिन पर चढ़ते हैं चांदी के बना देते। (३२) और उनके घरों के दरवाज़े और तख़्त भी जिनपर तकिया लगाये बैठे हैं चांदी के करदेते। (३३) और सोना भी देते और यह तमाम इस ज़िन्दगी के फायदे हैं और हे पैग़म्बर आख़िरत तेरे पालनकर्त्ता के यहां परहेज़गारों के लिये है। (३४) [रुकू ४] और जो शख़्स (ख़ुदा) कृपालु की याद से बराता है हम उस पर एक शैतान मुक़र्रर करदिया करते हैं और वह उसके साथ रहता है। (३५) और शैतान पापियों को राह से रोकता है और यह समझते हैं कि हम राह पर हैं। (३६) यहां तक कि जब हमारे सामने आताहै तो कहताहै कि अच्छा होता जो मुझ में और तुझमें पूर्व और पश्चिमकी दूरी का फ़र्क़ हो जावे तू बुरा साथी है। (३७) और जब तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज यह बात भी तुम्हारे कुछ काम न आवेगी जब कि तुम और शैतान एक साथ सज़ा में हो। (३८) तो (हे पैग़म्बर) क्या तुम बहरों को सुना सक्ते हो या अन्धों को और उनको जो प्रत्यक्ष गुमराही में है राह दिखासक्ते हो। (३९) फिर अगर हम तुझे (दुनियां से) उठा लें तो भी हम को इन काफ़िरों से बदला लेना है। (४०) या हमने जो उनसे वादह किया है तुझको दिखादेंगे। हम उन पर सामर्थवान हैं। (४१) तो जो तुझे हुक्म हुआ है उसे तू मज़बूती से पकड़। बेशक तू सीधी राह पर है। (४२) यह तेरे और तेरी कौम के लिये शिक्षा है और आगे चल कर तुझ से पूछ पाछ होनी है। (४३) और (हे पैग़म्बर) तुझ से पहिले जो हमने पैग़म्बर भेजे उनसे पूछ। क्या हमने (ख़ुदा) कृपालु के सिवाय (दूसरे) पूजित ठहराये हैं कि उनकी पूजा की जावे। (४४) [रुकू ५] और हमने मूसा को

अपने चमत्कार देकर फ़िरऔन और उसके दरबारियो की तरफ़ भेजा (मूसा ने) कहा मैं दुनियां के पालनकर्त्ता को भेजा हुआ हूं। (४५) जब मूसा हमारे चमत्कार लेकर उनके पास आया तो वह हँसने लगे। (४६) और हम जो चमत्कार उनको दिखाते थे वह दूसरे चमत्कार से (जो उनको दिखाया जा चुका था) बड़ा था और हमने उनको सज़ा से पकड़ा। शायद यह मान जांवे। (४७) और कहने लगे हे जादूगर हमारे लिये अपने पालनकर्त्ता को पुकार जैसा उसने तुझसे वादा कर रक्खा है। हम बेशक राह पर आवेंगे। (४८) फिर जब हमने उन पर से सज़ा उठाली। वह अपने क़ौल तोड़ने लगे। (४६) और फ़िरऔनने अपने लोगो में इस बात की मनादी करादी कि लोगो क्या मुल्क मिश्र हमारा नहीं और यह नहरें हमारे (शाही महलके) नीचे नहीं बहरही है तो क्या तुम नहीं देखते (५०) भला मैं इस शख्श (मूसा) से जो एक जलील (आदमी) है बढ़कर नहीं हूं। (५१) और वह साफ़ नहीं बोलसक्ता। (५२) (और मूसा हम से बेहतर होता) फिर उसके लिये सोने के कंगन (खुदा के यहां से) क्यों नहीं आये या फिरिश्ते उसके साथ जमा होकर क्यों नहीं उतरे। (५३) फिरऔन ने अपने लोगों को बेसमझ करदिया–फिर उसी का कहा माना। बेशक वह बे हुक्म थे। (५४) फिर जब इन लोगों ने हमको गुस्सा दिलाया हमने इनसे बदला लिया फिर इन सबको डुबो दिया। (५५) फिर इनको गया गुजरा करदिया और आने वाली नस्लों के लिये कहावत बनादिया। (५६) [रुकू ६] और (हे पैगम्बर) जब मरियम के बेटे की मिसाल बयान की गई तो तेरी कौम के लोग इस को सुनकर एक दम से खिल खिला पड़े। (५७) और कहने लगे कि हमारे पूजित अच्छे हैं या ईसा इन लोगोंने ईसा की मिसाल तेरेलिये सिर्फ़ झगड़ने के लिये सुनाई है। यह [illegible] कौम है

(५८) तो ईसा भी हमारे एक बन्दे थे हमने उनपर भलाई की थी और इसराईल के बेटों के लिये एक नमूना बनाया था। (५९) और हम चाहते तो तुम में फ़रिश्ते करदेते कि वह ज़मीनमें तुम्हारी जगह आबाद होते। (६०) और ईसा उस घड़ी (क़यामत) का एक निशान है उस में शक न करो और मेरे कहे पर चलो। यही सीधी राह है। (६१) और ऐसा न हो कि तुम को शैतान रोके कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६२) और जब ईसा चमत्कार लेकर आये तो उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे पास पक्की बातें लेकर आयाहूं और मतलब यह है कि तुम्हारी उन बातों को बयान करूं जिन में भेद डाल रहे हो। अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (६३) अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पालन कर्त्ता है उसी की पूजा करो यही सीधी राह है। (६४) तो उन्हीं में से (बहुत से) लोग भेद डालने लगे तो जो लोग सरकशी करते हैं क़यामत के दिन दुखदाई सज़ा के एतबार से उन पर सख़्त अफ़सोस है। (६५) क्या यह लोग क़यामत हो की राह देख रहे हैं कि इकाएक इनपर आजावे और इनको खबर भी न हो। (६६) जो लोग (आपस में) दोस्तियां रखते हैं उस दिन एक दूसरे के दुश्मन हो जायंगे मगर परहेज़गार। (६७) [रुकू ७] हे हमारे बन्दो आज तुमको न किसीतरह का डर है और न तुम उदास होगे। (६८) जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और आज्ञाकारी रहे। (६९) तुम और तुम्हारी बीबियां बैकुंठ में जा दाख़िल हो ताकि तुम्हारी इज्ज़त की जावे। (७०) उन पर सोने की रकाबियों और प्यालों की दौड़ चलेगी और जिस चीज़ को (उनका) जी चाहे और नज़र में भली मालूम हो बैकुंठ में होगी और तुम हमेशा यहीं रहोगे। (७१) और यह बैकुंठ की वारिसी तुम को उनके बदले में जो तुम करते रहे हो मिली है। (७२) यहां तुम्हारे लिये बहुत मेवे होंगे

जिन में से तुम खाओगे। (७३) अलबत्ता पापी हमेशा नरक की सज़ा में रहेंगे। (७४) उन से सज़ा हल्की न की जायगी और वह उस में निराश रहेंगे। (७५) और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि यही ज़ुल्म करते रहे। (७६) और पुकारेंगे हे मालिक तेरा पालनकर्त्ता हमारा काम तमाम करदे। वह कहेगा कि तुम को इसी में रहना है। (७७) हम तुम्हारे पास सच बात लेकर आये हैं लेकिन तुम में अक्सर सच से चिड़ते हैं। (७८) क्या इन लोगों ने कोई बात ठान रक्खी है तो समझ रक्खें कि हमने भी ठान रक्खी है। (७९) या ख़्याल करते हैं कि हम इनके भेद और मशवरे नहीं जानते और हमारे फ़िरिश्ते इन के पास लिखते हैं। (८०) (हे पैग़म्बर) कहो रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सब से पहिले (उसको) पूजा करने को तैयार हूं। (८१) जैसी २ बातें बनाते हैं उन से आस्मानों और ज़मीन और तख़्त का मालिक पाक है। (८२) तो (हे पैग़म्बर) इन लोगों को बकने और खेल करने दे यहां तक कि जिस रोज़ का इन से

किधर को बहके चले जारहे हैं। (८७) पैग़म्बर के यों कहने की क़सम कि हे पालनकर्त्ता ये लोग ईमान लाने वाले नहीं। (८८) तू इनसे मुंह मोड़ ले और सलाम कह फिर आगे चलकर मालूम करलेंगे। (८९)।

—:*:—

सूरे दुखान।

मक्के में उतरी इस में ५९ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे-मीम—ज़ाहिरा किताब की क़सम। (१) हमने मुबारिक रात (२७ वीं रात रमज़ान की याना शब्बरात) में इस को उतारा—हमें डराना मंज़ूर था। (२) (दुनियां की) हर पुख़्ता बात उसी रात को फ़ैसल हुआ करती है। (३) हमारे खास हुक्म से क्योंकि हम भेजने वाले हैं। (४) (हे पैग़म्बर) तेरे पालनकर्त्ता की मिहर्बानी से वह सुनता और जानता है। (५) आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ आस्मान और ज़मीन में है इनका मालिक है अगर तुम को यक़ीन हो। (६) उसके सिवाय कोई पूजित नहीं वही जिलाता और मारता है (वही) तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादों का पालनकर्त्ता है। (७) कोई नहीं वे धोखे में खेलते हैं। (८) सो उस दिन का इन्तिज़ार कर जिस दिन आस्मान से धुआं ज़ाहिर हो। (९) (और वह) सब लोगों पर छा जायगा यह दुःखदाई सज़ा है। (१०) हे हमारे पालनकर्त्ता हम पर से दुःख को टाल-हम ईमान्दार हैं। (११) वह क्योंकर शिक्षा पकड़ें इनके पास पैग़म्बर खोलकर सुनाने वाला आ चुका। (१२) फिर इन्होंने उस से मुंह मोड़ा और कहा कि यह सिखाया हुआ दीवाना है। (१३) हम सज़ा को थोड़े दिनों के

लिये हटा देंगे मगर तुम फिर वही करोगे। (१४) हम जिस दिन बड़ी पकड़ पकड़ेंगे हम बदला लेलेंगे। (१५) और इनसे पहिले हम फ़िरऔन की क़ौम को आज़मा चुके हैं और उन के पास बड़े दर्जे के पैग़म्बर आये। (१६) (और उन्होंने आकर फ़िरऔन के लोगो से कहा) कि अल्लाह के बन्दो (इसराईल के बेटों) को मेरे हवाले करो मै तुम्हारे लिये (ख़ुदा का) भेजा हुआ हूं। (१७) और यह कि ख़ुदा से सिर न फेरो मैं (अपने पैग़म्बर होने की) साफ़ दलील तुम्हारे सामने लाया हूं। (१८) और इस से कि तुम मुझ को पत्थरो से मारो मैं अपने और तुम्हारे पालनकर्त्ता की पनाह मांगता हूं। (१९) और अगर तुम को मेरी बात का यक़ीन न हो तो मुझ से अलग हो जाओ। (२०) तब मूसा ने अपने पालनकर्त्ता को पुकारा कि यह लोग अपराधी हैं। (२१) मेरे बन्दो (यानी इसराईल के बेटों) को रातो रात लेकर निकल जाओ तुम लोगो का पीछा किया जायगा। (२२) और दरिया को ठहरा हुआ छोड़ (कर पार हो) जाना कि (उसमें) फ़िरऔनियों का सारा लश्कर डुबोदिया जायगा। (२३) यह लोग कितने बाग़ और नहरें छोड़गये। (२४) और खेत और उम्दह मकान।

हमारा पहलेही दफ़ा का मरना है और हम (दुबारा) नहीं उठाये जायगे। (३४) पस अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादे को (जिला कर) लेआओ। (३५) भला (यह लोग) बढ़कर हैं या तुब्बा (शाह यमन की खिताब) का क़ौम। (३६) और इन से पहिले के लोग जिनको हमने मारडाला पापी थे। (३७) और हमने आस्मानों और ज़मीन को और जो चीज़ें आस्मान और ज़मीन में हैं बनाया खेल नहीं। (३८) हमने उनको ठीक काम पर बनाया मगर बहुधा लोग नहीं समझते। (३९) फ़ैसले का दिन (यानी क़यामत का दिन) इन सब का वक्त मुक़र्रर है। (४०) उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के काम न आयेगा और न उन्हें मदद पहुंचेगी। (४१) मगर जिसपर खुदा कृपा करे वह बली दयालु है। (४२) [रुकू ३] सेंउड़ (थूहड़) का पेड़। (४३) पापियों का खाना होगा। (४४) जैसे पिघला तांबा खौलता है पेटों में खौलेगा। (४५) जैसे खौलता पानी। (४६) (हम फ़िरिश्तों को आज्ञा देंगे कि) इसको पकड़ो और घसीटते हुए नरक के बीचो बीच लेजाओ। (४७) फिर सज़ा दो कि इस का सिर पर खौलता हुआ पानी डालो। (४८) मज़ा चक्ख तू बड़ा इज़्ज़त वाला सर्दार है। (४९) यही है जिसकी निसबत तुम शक करते थे। (५०) परहेज़गार चैन की जगह होंगे। (५१) बाग और चश्मों में। (५२) रेशमी महीन और मोटी पोशाकें पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे। (५३) ऐसा ही होगा और बड़ी २ आंखो वाली हूरों से हम उनका व्याह करदेंगे। (५४) वहां मेवे खातिर जमा से मंगवा लेंगे। (५५) पहली मौत के सिवाय वहां उनका मौत चखने न पड़ेगी और खुदाने उन्हें नरक की सज़ा से बचाया। (५६) (हे पैग़म्बर) तेरे पालनकर्त्ता की कृपा से यही बड़ी कामयाबी है। (५७) (हे पैग़म्बर) हमने इस (क़ुरान) को तेरी

बोली में इस मतलब से सहल कर दिया है शायद वे याद रक्खें। (५८) तो राह देख वे भी राह देखते हैं। (५९)

——:*:——

सूरे जासियह।

मक्के में उतरी इसमें ३६ आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे-मीम- (यह) ज़बरदस्त हिकमतवाले अल्लाह की उतारी हुई किताब है। (१) बेशक ईमानवालों के लिये आस्मान और ज़मीन में बहुत निशानियां हैं। (२) और तुम्हारे पैदा करने में और जानवरों मे जिनको (ज़मीन पर) बिखेरता है उन लोगों को जो यक़ीन रखते है निशानियां हैं। (३) और रात दिन के आने जाने में और रोज़ी जिसे ख़ुदा ने आस्मान से उतारी। फिर उसके जरिये से जमीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा कर देता है और हवाओं की तब्दीलियोंमें निशानियां हैं। समझनेवालों के लिये निशानियां हैं। (४) यह ख़ुदा की आयतें हैं जिन्हें हम तुमको ठीक पढ़कर सुनाते हैं फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौनसीबात होगी जिसे सुनकर ईमान लावेंगे। (५) हरेक झूठे पापी के लिये अफ़सोस। (६) ख़ुदा की आयते उसके सामने पढ़ी जाती हैं उनको सुनता है फिर मारे घमण्ड के अड़ा रहता है गोया उन्होंने इन (आयतों) को सुनाही नहीं तो देखो उनको दुखदाई

(६) यह हिदायत है और जो लोग अपने पालनकर्त्ता की आयतों के इन्कार करने वाले हुए उन को बड़ी दुखदाई सज़ा की मार है। (१०) [रुकू २] अल्लाह वह है जिसने नदी को तुम्हारे वश में कर दिया है ताकि खुदा की आज्ञा से उसमें जहाज़ चलें और तुम लोग उस की कृपा से रोज़ी ढढ़ो और शायद तुम शुक्र करो। (११) और जो कुछ आस्मानोंमे हैं और ज़मीनमें है उसी ने अपनी कृपा से इन सब को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है इन में खुदा की कुदरत उन लोगो के लिये जो फ़िकरको काममें लाते है बहुतेरी निशानियां हैं। (१२) (हे पैग़म्बर) मुसलमानों से कहो कि जो लोग खुदाके दिनों की उम्मेद नहीं रखते उन्हे क्षमाकरे ताकि अल्लाह लोगो को इन के किये का बदलादे। (१३) जिसने नेक काम किये अपने लिये और जिसने बुराई की उसपरहै फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ लौटोगे। (१४) हमने इसराईल के बेटों को किताब और हुकूमत और पैग़म्बरी दी और उम्दह २ चीज़े खाने को दी और दुनियां जहान के लोगों पर उन को बड़प्पन दिया। (१५) और दीन की खुली २ बातें इन्हें बतादी फिर इलम आचुके पीछे आपस की ज़िद्दसे जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे है क़यामत के दिन तुम्हारा पालनकर्त्ता उन में फ़ैसला करदेगा। (१६) फिर हमने तुझ को इस कामके एक रास्तेपर रक्खा सो तू उसी पर चल और नादानों की ख्वाहिशपर मतचल। (१७) वह अल्लाहके सामने तेरे कुछ काम न आवेगा और अन्यायी एक दूसरे के दोस्त हैं और परहेज़गारों का अल्लाह साथी है। (१८) यह लागोंके लिये समझ की और राह की बातें है और जो लोग यक़ीन करते हैं उनके लिये हिदायत और कृपा है। (१६) वह जो बदी कमाते हैं क्या यह समझते हैं कि हम उन्हें मरने और जीने में ईमान्दारों और भले काम करने वालों के बराबर करदेंगे। यहबुरे दावे करते हैं। (२०) [रुकू३]

और अल्लाहने आस्मान और ज़मीनको ठीक पैदाकिया और मतलब यह है कि हर मनुष्य को उनके किये का बदला दिया जायगा और लोगोंपर ज़ुल्म नहीं किया जायगा। (२१) (हे पैग़म्बर) भला देखो तो जिसने अपनी ख्वाहिशों को अपना पूजित ठहराया और इल्म होते हुए भी अल्लाहने उसे गुमराह करदिया और उसके कानों पर और उसके दिलपर मुहर लगादी और उसकी आंखो पर पर्दा डालदिया तो खुदा के (गुमराह किये) पीछे उसको कौन हिदायत दे। क्या तुम नहीं सोचते। (२२) और कहते हैं बस हमारी तो यही दुनियां की जिन्दगी है हम मरते और जीते हैं और हमें ज़माना (काल) मारताहै और उनको उसकी कुछ खबर नहीं। निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (२३) और जब इनको हमारी खुली २ आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो बस यही हुज्जत करते हैं और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादों को (जो मर चुके हैं) ले आओ। (२४) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि अल्लाह तुमको जिलाता है फिर तुम्हें मारता है फिर क़यामत के दिन जिसमें कुछ सन्देह नहीं

तुमको हमारी आयतें पढ़ २ कर नहीं सुनाई जाती थीं मगर तुमने घमण्ड किया और तुम लोग पापी हो रहे थे। (३०) और जब कहा जाता था कि ख़ुदा का वादा सच्चा है और क़यामतमें कुछ भी सन्देह नहीं तो कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या चीज़ है। हम को एक ख्याल सा होता है मगर हमको यक़ीन नहीं। (३१) और जैसे २ कर्म यहलोग करते रहे (अब) उनकी खराबियां उन पर ज़ाहिर होजायंगी और जिस सज़ा की हँसी उड़ाते रहे हैं वह उन्हें घेरलेगी। (३२) और कहा जायगा कि जिस तरह तुमने इस दिन के आनेको भुलाय रक्खा था। आज हम भी भुलाजायंगे और तुम्हारा ठिकाना नरक है और कोई मददगार नहीं। (३३) यह उसकी सज़ा है कि तुमने ख़ुदा की आयतों की हँसी उड़ाई और दुनियां की ज़िन्दगी ने तुम को धोखे में डाला। ग़रज आज न तो यह लोग नरक से निकाले जायंगे और न इनको मौक़ा दिया जायगा (तौबा करके ख़ुदा को) राज़ी कर लें। (३४) पस अल्लाह ही की तारीफ़ है (जो) आस्मानों का और ज़मीन का मालिक और दुनियां जहान का मालिक है। (३५) और आस्मानों और ज़मीन में उसी की बड़ाई है और वही ज़ोरावर हिक्मत वाला है। (३६)।

छब्बीसवां पारा।

सूरे अहक़ाफ़।

मक्के में उतरी इसमें ३५ आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे-मीम-ज़बरदस्त हिकमतवाले अल्लाह स

किताब उतरी है। (१) हमने आस्मानों और ज़मीन [को और जो आस्मान और ज़मीन के बीच मे है उनको किसी इरादे से और एक वक्त खास के लिये पैदा किया है और काफ़िरों को जिस (क़यामत) से डरायाजाता है उसकी परवाह नहीं करते। (२) (हे पैग़म्बर इनलोगों से) कहो कि भला देखो तो खुदा के सिवाय जिन (पूजितों) को तुम पुकारते हो मुझको दिखाओ कि उन्होने ज़मीन में क्या पैदा किया या आस्मानो में उनका साझाहै अगर तुम सच्चे हो तो इस से पहिले की कोई किताब या चलेआते इल्म को मेरे सामने पेश करो। (३) और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो खुदा के सिवाय ऐसे (पूजितों) को पुकारे जो क़यामत के दिन तक उसको जवाब न देसके और उनको उनकी दुआ की खबर नहीं। (४) और जब (क़यामतके दिन) लोग इकट्ठे कियेजायंगे तो यह (पूजित उल्टे) उनके वैरी होजांयगे और उनकी पूजा से इन्कार करेंगे। (५) और जब हमारी खुली २ आयतें इनको पढ़-कर सुनाई जाती हैं (तो) जो लोग इन्कार करने वाले हैं सच्च के आये पीछे उसे कहते है कि यह तो प्रत्यक्ष जादू है। (६) क्या यह कहते हैं कि इसको इस ने (अपने दिल से) बनालिया है तू कह कि अगर मैंने इसको अपने दिल से बनाया होगा तो तुम खुदा के मुक़ाबिले में मेरा कुछ भला नहीं करसक्ते। जैसी २ बातें तुमलोग बनाते हो वही उनको खूब जानता है (और वही) मेरे और तुम्हा-रे बीच काफ़ी गवाह है और वही क्षमा करनेवाला कृपालु है। (७) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि मैं पैग़म्बरों में कोई नयानहीं हूं और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और (नहीं जानता) कि तुम्हारे साथ क्या होगा। मेरी तरफ़ जो वही उतरती है मैं उसीपर चलता हूं जो मुझको हुक्म आता है और मेरा काम खोलकर डर सुनाना है। (८) (हे पैग़म्बर इनसे) कहो कि भला देखो तो अगर

यह (कुरान) खुदा की तरफ़ से हो और तुम इससे इन्कार कर बैठे और इसराईलके बेटों मेंसे एक गवाहने इसी तरहकी एक (किताब के उतरने) की गवाही दी और वह ईमान ले आया और तुम अकड़े ही रहे। बेशक अल्लाह अन्यायियों कोहिदायत नहींदिया करता। (९) [रुकू २] और काफ़िर मुसलमानों की बाबत कहते हैं कि अगर (दीन इस्लाम) बिहतर होता तो (यह सब आदमी) हमसे पहिले उस की तरफ़ न दौड़ पड़ते और जब कुरान के जरिये से इन को हिदायत न हुई तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (१०) और इस (कुरान) से पहिले मूसा की किताब राह बताने वाली और दया है और यह किताब अर्बी भाषा में उस को सच्चा करती है ताकि अन्यायी डराये जावें और नेकी वालों को खुश खबरी हो। (११) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनकर्त्ता अल्लाह है फिर जमे रहे तो न तो उनपर डरहोगा और न वह उदास होंगे। (१२) यही बैकुंठ वासी है कि उस में हमेशा रहेंगे यह उन के कर्मों का फल है। (१३) और हमने आदमी को माता पिता के साथ भलाई करने की ताकीद की है कि कष्ट से उस की माता ने उस को पेट में रक्खा और कष्ट से उसको जना और उसको पेटमें रहना और उस के दूध का छूटना (कम से कम कहीं) तीस महीने (में जाके तमाम होता है) यहां तक कि जब (आदमी) अपनी पूरी ताक़त को पहुंचता है यानी ४० बरस की उम्र हुई तो कहने लगा कि हे मेरे पालनकर्त्ता मुझ को शक्ति दे कि तू ने जो मुझपर और मेरे मां बाप पर भलाई की है उनको धन्यवाद दें। और मैं ऐसे भले काम करूं जिन से तू राज़ी हो और मेरी औलाद में नेक बर्त्ती पैदा कर। मैं ने तेरी तरफ़ ध्यान दिया और मैं हुक्म उठाने वालों में हूं। (१४) यही लोग बैकुण्ठयों में हैं हम इनके भले कामों को क़बूल करते और इनके अपराधों से दराजाते हैं। ऐसा ही सच्चावादा

इन से कियागया था । (१५) और जिसने अपने मां बाप से कहा कि मैं तुम से नाख़ुश हूं क्या तुम मुझे वादा देते हो कि मैं क़ब्र से ज़िन्दा निकाला जाऊंगा (हालां कि) मुझ से पहिले कितने गिरोह गुज़र गये और किसी को मरकर जीते न देखा और वे दोनों (माता पिता) ख़ुदा से दुहाई देते हैं कि तेरा नाश जा । ईमान ला बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है फिर कहता है कि यह तो अगलों के निरे ढकोसले हैं । (१६) यही वह लोग हैं जिन पर जिन्नों की और आदमियों की मिली हुई संगतें जो इन से पहिले हो गुजरी हैं उन में यह भी सज़ा के वादे के हक़दार ठहरे । बेशक यह लोग टोटे में हैं । (१७) हर किसी के लिये कर्म के अनुसार दर्जे हैं और उनके कामों का उन्हें पूरा फल मिलेगा और उन पर ज़ुल्म न होगा । (१८) और (क़यामत के दिन) जब काफ़िर नरक के सामने लाये जांयगे (तो उन से कहा जायगा कि) तुम ने अपनी दुनियां की जिन्दगी में अच्छी चीजें बर्बाद कीं और उन से फ़ायदा उठा चुके जमीन में तुम्हारे बेफ़ायदा अकड़ने और बे हुक्मी करने के सबब आज तुम्हें ज़िल्लत (ख्वारी) की सजा बदले में मिलेगी। (१९) [रुकू ३] और तू आद के भाई (हूद) को याद कर जब इन्होंने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ में (जो मुल्क यमन में एक मैदान है) डराया और उन (हूद) के आगे और पीछे बहुत डराने वाले (पैग़म्बर) गुजर चुके (और हूद ने अपनी क़ौम से कहा) कि ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा न करो मुझ को तुम्हारी निस्बत बड़े दिन की सजा से डर है । (२०) वह कहने लगे कि क्या तू हम को हमारे पूजितों से फेरने आया है अगर तू सच्चा है तो जिस (सजा) का वादा हमसे करता है उस को हम पर ले आ । (२१) (इसकी) ख़बर तो अल्लाह ही को है और मुझ को तो जो (पैग़ाम) देकर भेजा गया है वह तुम को पहुंचाये देता हूं

मगर मैं तुम को देखता हूं कि तुम लोग बेवक़ूफ़ी करते हो। (२२) फिर (उन लोगों ने) जब उस सज़ा को देखा कि एक बादल है जो उनके मैदानों की तरफ़ को उमड़ता चला आरहा है तो कहने लगे कि यह तो एक बादल है (और) हम पर बरसेगा बल्कि यह वही (खुदा की सज़ा) है जिसके लिये तुम जल्दी मचा रहे थे (यानी बड़े ज़ोर की) आन्धी है जिसमें दुःखदाई सज़ा है। (२३) यह अपने पालनकर्त्ता के हुक्म से हर चीज़ को नष्ट भ्रष्ट कर देगी चुनांचि यह लोग ऐसे तबाह होगये कि इन के घरों के सिवाय और कोई चीज़ नज़र नहीं आती थी। पापियों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं। (२४) और हमने उनको वह ताक़त दी थी जो तुम (मक्का वाले) को नहीं दी और हमने उन को कान और आंखें और दिल दिये थे लेकिन उनके कान और आंखें और दिल कुछ काम न आये थे इसलिये कि अल्लाह की आयतों से इन्कारी थे और जिसकी हँसी उड़ाते थे उसीने उन्हें घेर लिया। (२५) [रुकू ४] और हमने तुम्हारे पास की कितनी ही बस्तियां नष्ट भ्रष्ट करडालीं और हमने फेर २ कर आयतें सुनाईं शायद वे ध्यान दें। (२६) तो खुदा के सिवाय जिन चीज़ों को उन्होंने नज़दीकी (खुदा हासिल करने) के लिये अपना पूजित बना-रक्खा था उन्होंने (सज़ा उतारते वक़्त) उनकी क्यों न मदद की बल्कि इन की नज़र से छिपगये और यह झूठ था जो बान्धते थे। (२७) और जब हम चन्द जिन्नों को तुम्हारी तरफ़ लेआये कि वह क़ुरान सुनें फिर जब वह हाज़िर हुये तो बोले कि चुप (बैठे सुनते) रहो फिर जब (क़ुरान का पढ़ना) तमाम हुआ तो वह अपने लोगों की तरफ़ लौटगये कि उनको डरायें। (२८) (और उनसे जाकर) कहनेलगे हे हमारी क़ौम हम एक किताब सुन आये हैं जो मूसा के बाद उतरी है अगली किताबों को सही बताती है

और सीधी राह दिखाती है। (२६) हे हमारी क़ौम (यह पैग़म्बर मुहम्मद) जो खुदा की तरफ़ से मनादी करता है इसकी बात मानो और खुदा पर ईमान लाओ ताकि खुदा तुम्हारे पाप क्षमा करे और दुखदाई सज़ा से तुम को बचावे। (३०) और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले को न मानेगा वह ज़मीन में थका न सकेगा और खुदा के सिवाय कोई मददगार न होगा यह लोग प्रत्यक्ष गुमराही मे है। (३१) क्या उन्होंने न देखा कि जिस खुदा ने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने में उसको थकान न हुआ। वह मुर्दों के जिला उठाने में शक्तिमान है वह तो हर चीज पर शक्ति रखता है। (३२) और जिस दिन काफ़िर नरक के सामने लाये जांयगे (उनसे पूंछाजायगा कि) क्या यह ठीक नही।वह कहेंगे हमको अपने पालनकर्त्ता की क़सम सच है तो (खुदा) आज्ञा देगा कि अपने इन्कारी के बदले में सज़ा चक्खो। (३३) तो (हे पैग़म्बर) जिस तरह हिम्मती पैग़म्बरों ने संतोष किया तुम भी संतोष करो और इनके लिये जल्दी न मचा जिसदिन वादा की बात (क़यामत) को देखेंगे। (३४) ऐसे होंगे गोया दिन की एक घड़ी दुनियां में रहे थे (खुदाके हुक्मों का) पहुंचाना है। अब वही जो बेहुक्म है मारे जायेंगे। (३५)

सूरे मुहम्मद।

मदीने में उतरी इसमें ४० आयतें और ४ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] जिन लोगों ने न माना और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोका। खुदा ने उनके काम गये गुज़रे करदिये। (१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और (क़ुरान) जो मुहम्मद पर उतरा

मगर मैं तुम को देखता हूं कि तुम लोग बेवक़ूफ़ी करते हो। (२२) फिर (उन लोगों ने) जब उस सज़ा को देखा कि एक बादल है जो उनके मैदानों की तरफ़ को उमड़ता चला आरहा है तो कहने लगे कि यह तो एक बादल है (और) हम पर बरसेगा बल्कि यह वही (खुदा की सज़ा) है जिसके लिये तुम जल्दी मचा रहे थे (यानी बड़े ज़ोर की) आन्धी है जिसमें दुखःदाई सज़ा है। (२३) यह अपने पालनकर्त्ता के हुक्म से हर चीज़ को नष्ट भ्रष्ट कर देगी चुनांचि यह लोग ऐसे तबाह होगये कि इन के घरों के सिवाय और कोई चीज़ नज़र नहीं आती थी। पापियों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं। (२४) और हमने उनको वह ताक़त दी थी जो तुम (मक्का वाले) को नहीं दी और हमने उन को कान और आखें और दिल दिये थे लेकिन उनके कान और आंखें और दिल कुछ काम न आये थे इसलिये कि अल्लाह की आयतों से इन्कारी थे और जिसकी हँसी उड़ाते थे उसीने उन्हें घेर लिया। (२५) [रुकू ४] और हमने तुम्हारे पास की कितनी ही बस्तियां नष्ट भ्रष्ट करडालीं और हमने फेर २ कर आयतें सुनाईं शायद वे ध्यान दें। (२६) तो खुदा के सिवाय जिन चीज़ों को उन्होंने नज़दीकी (खुदा हासिल करने) के लिये अपना पूजित बना-रक्खा था उन्होंने (सज़ा उतारते वक्त) उनकी क्यों न मदद की बल्कि इन की नज़र से छिपगये और यह झूठ था जो बान्धते थे। (२७) और जब हम चन्द जिन्नो को तुम्हारी तरफ़ लेआये कि वह क़ुरान सुनें फिर जब वह हाज़िर हुये तो बोले कि चुप (बैठे सुनते) रहो फिर जब (क़ुरान का पढ़ना) तमाम हुआ तो वह अपने लोगों की तरफ़ लौटगये कि उनको डरायें। (२८) (और उनसे जाकर) कहनेलगे हे हमारी क़ौम हम एक किताब सुन आये हैं जो मूसा के बाद उतरी है अगली किताबों को सही बताती है

और सीधी राह दिखाती है। (२६) हे हमारी क़ौम (यह पैग़म्बर मुहम्मद) जो ख़ुदा की तरफ़ से मनादी करता है इसकी बात मानों और ख़ुदा पर ईमान लाओ ताकि ख़ुदा तुम्हारे पाप क्षमा करे और दुखदाई सज़ा से तुम को बचावे। (३०) और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले को न मानेगा वह ज़मीन में थका न सकेगा और ख़ुदा के सिवाय कोई मददगार न होगा यह लोग प्रत्यक्ष गुमराही मे है। (३१) क्या उन्होंने न देखा कि जिस ख़ुदा ने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने में उसको थकान न हुआ। वह मुर्दों के जिला उठाने में शक्तिमान है वह तो हर चीज़ पर शक्ति रखता है। (३२) और जिस दिन काफ़िर नरक के सामने लाये जांयगे (उनसे पूंछाजायगा कि) क्या यह ठीक नही।वह कहेंगे हमको अपने पालनकर्त्ता की क़सम सच है तो (ख़ुदा) आज्ञा देगा कि अपने इन्कारी के बदले में सज़ा चक्खो। (३३) तो (हे पैग़म्बर) जिस तरह हिम्मती पैग़म्बरों ने संतोष किया तुम भी संतोष करो और इनके लिये जल्दी न मचा जिस दिन वादा की बात (क़यामत) को देखेंगे। (३४) ऐसे होंगे गोया दिन की एक घड़ी दुनियां में रहे थे (ख़ुदा के हुक्मों का) पहुंचाना है। अब वही जो बेहुक्म हैं मारे जायेंगे। (३५)

———:※:———

सूरे मुहम्मद।

मदीने में उतरी इसमें ४० आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] जिन लोगों ने न माना और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोका। ख़ुदा ने उनके काम गये गुज़रे करदिये। (१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और (क़ुरान) जो मुहम्मद पर उतरा

है। उसे मान लिया और वह सच है उनके पालनकर्त्ता की तरफ़से खुदाने उनके पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत दुरुस्त करदी। (२) यह इसलिये है कि काफ़िर झूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने पालनकर्त्ता के ठीक रास्ते पर चले। यों अल्लाह लोगों के लिये उनके हाल बयान फ़र्माता है। (३) तो जब (लड़ाई में) काफ़िरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गर्दनें काटो यहांतक कि जब खूब अच्छी तरह उनका ज़ोर तोड़ लो तो मुश्कें कसलो। (४) फिर (क़ैद किये) पीछे या तो भलाई रखकर छोड़ दो या बदला लेकर यहां तक कि (दुश्मन) लड़ाई के हथियार रखदें। ऐसाही हुक्म है और खुदा चाहता तो (लड़ने की नौबत न आती) उन से बदला ले लेता लेकिन यह (जहाद का हुक्म) इस लिये हुआ कि तुम में से एक को एक से आज़मायें और जो लोग खुदा की राह में मारे गये उनके कामों को खुदा अकारथ नहीं होने देगा। (५) उन्हें राह देगा और उनका हाल दुरुस्त करेगा। (६) और उन को बैकुण्ठ में दाखिल करेगा जिसका हाल उस ने बनारक्खा है। (७) हे ईमानवालो अगर तुम अल्लाहकी मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे पांव जमाये रक्खेगा। (८) और जो इन्कारी हुये उनके पांव उखड़ जांयगे और उनका सारा करा धरा खुदा अकारथ कर देगा। (९) यह इसलिये कि खुदा ने जो उतारा उसको उन्होंने पसंद न किया फिर खुदाने उनके कर्म वृथा कर दिये। (१०) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखते कि अल्लाह ने उनको नष्ट भ्रष्ट करदिया और काफ़िरों के लिये ऐसाही होता रहता है। (११) यह इस सबब से कि अल्लाह ईमानवालों का मददगार है और काफ़िरों का कोई मददगार नहीं। (१२) [रुकू २] जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक कामकिये अल्लाह (बैकुंठ के) बागों में दाखिल

करेगा जिनके नीचे नहरें बहरही होगी और काफ़िर दुनियां में फ़ायदा उठाते और खाते है जैसे चारपाये खाते है और इनका ठिकाना नरक है। (१३) और (हे पैग़म्बर) तुम्हारी बस्ती (मक्का) जिस (के लोगो) ने तुमको (घरसे) निकाल छोड़ा । कितनी बस्तियां इससे भी बलबूतों में बढ़ी चढ़ी थी हमने उनको हलाक़ कर मारा और कोई भी उन की मदद को खड़ा न हुआ । (१४) तो क्या जो लोग अपने पालनकर्त्ता के खुले रास्ते पर हैं वह उनकी तरह (गये गुज़रे होसक्ते) है जिनके (बुरे कर्म) उनको भले कर दिखाये गये हैं और वह अपनी चाहो पर चलते है। (१५) जिस बैकुण्ठ का वादा परहेज़गारो से किया जाताहै उसकी कैफ़ियत यह है कि उस में ऐसे पानी की नहरे हैं जिसमें बू नहीं और (ऐसे) दूध की नहरें है जिनका स्वाद नही बदला और (ऐसी) शराब की नहरे हैं जो पीने वालो को बहुतही मज़ेदार मालूम होंगी। (१६) और साफ शहद की नहरे हैं और उनके लिये वहां हर तरह के मेवे होंगे और उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से (अपराधों की) क्षमा क्या (ऐसे बैकुण्ठके रहनेवाले) उन जैसे (होसक्ते हैं) जो हमेशा आग में होंगे और उनको खौलता पानी पिलाया जायगा और वह उनकी आंतोके टुकड़े २ कर डालेगा।(१७)(और हे पैग़म्बर बाज) इन में से ऐसे है जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं मगर जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो जिन लोगो को इल्म मिलाहै। उनसे पूछते हैं कि इस (शख़्स) ने अभी यह क्या कहा था कि यहीलोग हैं जिनके दिलोपर अल्लाह ने मुहर करदी और अपनी ख्वाहिशों पर चलते हैं । (१८) और जो लोग सीधी राह पर आये हैं उनने उनकी सूझ बढ़ी है और उस से उनको बचकर चलना मिला है। (१९) तो क्या यह लोग क़यामतही की राह देखते हैं कि एक दमसे इनपर आपड़े उसकी निशानियां तो आही चुकी हैं फिर जब क़या-

मत इनके सामने आ जायगी तो उसवक़्त इन का समझना इनको क्या मुफ़ीद होगा। (२०) तो जान लो कि अल्लाह के सिवाय कोई पुजित नहीं और अपने पापों की क्षमा मांग और ईमान वाले मर्दों और औरतों के लिये (भी मांगते रहो)। और तुम लोगोंका चलना, फिरना, ठहरना अल्लाह को मालूम है। (२१) [रुकू ३] और ईमान्दार कहते थे कि (जहाद की निस्वत) कोई सूरत क्यों न उतरी। फिर जब एक सूरत साफ़ मानी उतरी और उसमें लड़ाई का ज़िक्र आया तो जिनके दिलों में (फूटन का) रोग है तू ने उनको देखा कि वह तेरी तरफ़ ऐसे ताकते रहगये जैसे वह ताकता है जिसे मौत की वेहोशी हो। तो खराबी है उन की हुक्म मानना और भली बात कहना (उनका ऊपरी मनसे है)। (२२) फिर जब काम की ताकीद हो और यह लोग खुदा से सच्चे रहें तो उनका भला है। (२३) और तुमसे कुछ दूर नहीं कि अगर (जहाद करने से) फिर वैठो तो मुल्क में फ़साद करने लगोगे और अपने रिश्ते नातों को तोड़ने लगोगे। (२४) यही मनुष्य हैं जिन पर खुदा ने लानत की है और इन को (सच्चीवात के सुनने से) वहरा और इनकी आखों को अन्धा करदिया। (२५) क्या यह लोग क़ुरानमें ध्यान नहीं करते या दिलोंपर ताले लगे हैं। (२६) जिन लोगों को सीधा रास्ता साफ़ तौरपर मालूम हो और फिर भी वह अपने उल्टे पांव फिरगये तो शैतान ने उनके लिये वात वनाई है और उन्हें मुहलत दी है। (२७) और यह इसलिये कि जो लोग.(क़ुरान को) जो खुदा ने उतारा है ना पसंद करते है। यह कहा करते हैं कि वाज़ वातों में हम तुम्हारी ही सलाह पर चलेंगे और अल्लाह उनकी छिपी वातों को जानता है। (२८) फिर कैसी गति होगी जब फ़िरिश्ते उन की जानें निकालेंगे और उन के कमरों और मुहोंपर मारते जाते होंगे। (२९) यह इसलिये कि जो चीज़ खुदा को (ना पसन्द

बुरी लगती है। यह उसी के रस्ते पर चले और उसकी खुशी न चाही तो खुदाने उनके कर्म मेंट दिये। (३०) [रुकू ४] क्या वह लोग जिनके दिलों में रोग है इस ख्याल में है कि खुदा उनकी दिली अदा-वतों को कभी ज़ाहिर न करेगा। (३१) और (हे पैग़म्बर) हम चाहते तो तुझे उन लोगों को दिखा देते कि तू उनको उनकी सूरत से पहिचान लेता और आगे तू उन की बात के तरीक़ा से उन को पहचान लेगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है। (३२)और तुम को हम आज़मायेंगे ताकि तुम में से जो जहाद करने वाले और बरदाश्त करने वाले हैं उनको हम मालूम करलें और तुम्हारी ख़बरों को आज़मावेंगे। (३३) जिन लोगों ने साफ़राह ज़ाहिर हुये पीछे इन्कार किया और अल्लाह की राहसे (लोगों को) रोका और पैग़-म्बर की दुश्मनी की। यह लोग अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे बल्कि वह उनके लिये अकारथ करदेगा। (३४) हे मुसल्मानो अल्लाहके हुक्म पर चलो और पैगम्बर के हुक्मपर चलो और अपने कर्मों को वृथा न करो। (३५) जो काफ़िर हुए और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोका फिर कुफ़्ही की हालतमें मरगये खुदा उनको कदापि क्षमा न करेगा। (३६) सो तुम बोदे न बनो कि सुलहकी तरफ़ पुकारने लगो और तुम्हारी ही जीति होगी और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे कर्मोंको न मेटेगा। (३७) दुनियांकी जिन्दगी खेल तमाशाहै और अगर (खुदापर) ईमानलाओ और परहेजगारी करते रहो तो वह तुमको तुम्हारे फलदेगा और तुम्हारे माल तुमसे न मांगेगा। (३८) अगर वहतुमसे तुम्हारे माल मांगे और तुमको तंग करे तो तुम कंजूसी करोगे और इससे तुम्हारी दिली अदावतें ज़ाहिर हो जावेंगी। (३९) हे लोगो जब अल्लाहकी राहमें खर्च करनेको बुलाये जाते हो तो तुममेंसे कोई २ कंजूसी करताहै और जो कंजूसी करता है अपनेही लिये करता है। अल्लाह तो दाता है और तुम मुहताज

हो और अगर तुम मुंह मोड़ोगे तो (खुदा) तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को ला विठायेगा और वह तुम जैसे न होंगे। (४०)

——:०:——

सूरे फ़तह।

मदीने में उतरी इस में २९ आयतें और ४ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्वान है।

[रुकू १] हमने तेरेलिये साफ़ ज़ाहिरा फ़ैसला करदिया। (१) ताकि खुदा तेरे अगले पिछले पाप क्षमाकरे और तुझपर अपनी भलाइयां पूरी करे और तुझ को सीधी राह दिखावे। (२) और तुझे भारी मदद दे। (३) उसने मुसल्मानों के दिलोंमें संतुष्टता डाली ताकि उनके (पहले) ईमान के साथ और ईमान ज़ियादह हो और आस्मान और ज़मीन के लशकर अल्लाह के हैं और अल्लाह जाननेवाला हिकमत वाला है। (४) ताकि खुदा ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को (वैकुंठ) के वाग़ोंमें लेजा दाख़िल करे। जिनके नीचे नहरें वहरहीं होंगी। वह हमेशा उनमें रहेंगे और वह उनपर से उनके पापों को उतार देगा और खुदा के पास यह वड़ी कामयावी है। (५) और ताकि मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को सज़ादे जो अल्लाह के वारे में वुरे ख्याल रखते हैं अब यही मुसीवत के चक्कर में आगये और अल्लाह का गुस्सा उनपर हुआ और उसने इनको फटकार दिया और उनके लिये नरक तैयार किया और वह वुरी जगह है। (६) और आस्मानों और ज़मीन के लशकर अल्लाह के हैं और अल्लाह वली और हिकमतवाला है। (७) (हे पैग़म्बर) हमने तुम को हाल वतानेवाला और खुशी और डर सुनाने वाला वना के भेजा है। (८) ताकि तुम अल्लाह और उसके

पैग़म्बर पर ईमान लाओ और खुदा की मदद करो और उसका अदब रक्खो और सुबह शाम उसकी माला फेरते रहो। (६) (हे पैग़म्बर) जो लोग तुझसे हाथ मिलाते हैं उनके हाथो पर खुदाका हाथ है फिर जिसने (क़ौल) तोड़ा उसने अपनेही लिये तोड़ा और जिसने उस (क़ौल) को पूरा किया जिस्का खुदाने वादा किया था वह उसे बड़ा फल देगा। (१०) [रुकू २] (हे पैग़म्बर) देहाती लोग जो पीछे रहगये हैं (और इस हुदैबिया के सफ़र में शरीक नही हुए) तुझ से कहेगे कि हम अपने माल और बाल बच्चो में लगे रहे। तू हमारे अपराध खुदासे क्षमा करा। (यह लोग) अपनी ज़ुबान से ऐसी बातें कहते हैं जो इनके दिलो में नही। (हे पैग़म्बर इनसे)कहो कि अगर खुदा तुमको नुक़सान पहुंचाना चाहे या फ़ायदा पहुंचाना चाहे तो कौन है जो खुदा के सामहने में तुम्हारा कुछ भी करसके बल्कि जो कुछ भी करते हो खुदा उस से जानकार है। (११) बल्कि तुमने ऐसा समझा था कि पैग़म्बर और मुसल्मान अपने घर वापिस आनेही के नहीं और यह तुम्हारे दिलो में चुभगई थी और तुम बुरे ख्याल करने लगे थे और तुम लोग आप बर्बाद हुये। (१२) और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये तो हमने इन्कार करने वालो के लिये दहकती आग तय्यार कर रक्खी है। (१३) और आस्मानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही को है जिसको चाहे माफ़करे और जिसको चाहे सज़ा दे और अल्लाह बड़ा क्षमाकरनेवाला कृपालु है। (१४) जब तुम (खैबर की) लूटो के माल लेनेको जाने लगोगे तो जो लोग (हुदैबिया के सफ़र से) पीछे रहगये थे कहेंगे कि हमको भी अपने साथ चलने दो। इनका मतलब यह है कि खुदा के कहेहुए को बदलदें (यानो न होने दें) (हे पैग़म्बर इन लोगो से) कहदो कि तुम हमारे साथ न चलने पाओगे अल्लाह ने

पहिले ही से ऐसा कहदिया है यह सुनकर कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम हमसे डाह रखते हो बल्कि यह लोग कम समझते हैं। (१५) (हे पैग़म्बर) देहाती जो (हुदैबिया की सफ़र से) पीछे रहे इनसे कहदो कि तुम बड़े लड़ने वालों (यानी फारिस और रूम) के (मुकाबिले के) लिये बुलाये जावोगे। तुम उनसे लड़ो या वे मुसल्मान होजावें। तो अगर खुदाकी आज्ञा मानोगे तो अल्लाह तुम को भला फल देगा और अगर तुमने सिर फेरा जैसे तुम पहले (हुदै बिया के सफ़र में) सिर फेर चुके हो तो तुमको दुखदाई सज़ा देगा। (१६) अन्धे पर सख़्ती नहीं और न लंगड़े पर सख़्ती है और न बीमार पर सख़्ती है और जो अल्लाह और उस के पैग़म्बर का हुक्म मानेगा वह उनको बागों में दाखिल करेगा। जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी और जो सिर फिरेगा वह उसको दुःखदाई सज़ा देगा। (१७) [रूकू ३] (हे पैग़म्बर) जब मुसलमान (बबूल के) दरख़्त के नीचे तुझ से हाथ मिलाने लगे अल्लाह उनसे खुश हुआ और उसने उनके दिली विश्वास को जान लिया और उनको तसल्ली दी और उसके बदले में उनको नज़दीक फ़तह दी। (१८) और बहुत सी लूटें उनके हाथ लगीं और अल्लाह बली हिकमतवाला है। (१९) और अल्लाह ने तुमसे बहुतसी लूटों के देने का वादा किया था कि तुम उसे लोगे फिर यह (खैबर की लूट)तुमको जल्द दी और (हुदैबिया की सुलह की वजह से अरब के) लोगोंके ज़ुल्म करने को तुमसे रोका और मतलब यह था कि यह मुसल्मानों के लियें निशानी हो और वह तुमको सीधी राह पर ले चले। (२०) और दुसरा वादा लूटका है जो तुम्हारे काबू में नहीं आया। वह खुदा के हाथ है और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिवान है। (२१) और अगर काफ़िर तुमसे लड़ते तो ज़रूर भाग जाते फिर कोई हिमायती और मददगार न पाते। (२२) अल्लाह की आदतहै-

जो चलीआती है और तू अल्लाह की आदतों में तब्दीली न पावेगा। (२३) और वही (खुदा) है जिसने (मक्के मे तुमको काफ़िरों पर फ़तहदी पीछे)उनके हाथोंको तुमसे और तुम्हारे हाथो को उनसे रोक दिया और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देखता है। (२४) (यह मक्केवाले) वही हैं जिन्होंने इन्कार किया और तुमको अदबवाली मसजिद से रोका और कुरबानी को बंदरक्खा कि अपनी जगह न पहुंचे और अगर कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरते न होतीं जिन्हे तुम नही जानते अगर तुम उनको कुचल डालते तो अन जाने पाप उनकी तरफ़से तुम्हें पहुंच जाता ताकि खुदा जिसे चाहे अपनी कृपा में दाखिल करे। अगर वे लोग एक तरफ़ हो जाते तो हम काफ़िरोको दुःखदाई सज़ा देते। (२५) जब काफ़िरो ने अपने दिलो में नादानी की ज़िद्द की हट ठान ली तो अल्लाह ने पैग़म्बर और मुसलमानों को तसल्ली दी और उनको परहेजगारी पर जमाये रक्खा और वह उसके योग्य और अधिकारी थे और अल्लाह हरचीज़ से जानकार है। (२६) [रुकू ४] अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को स्वप्न की घटना सच्ची कर दिखाई कि अल्लाह ने चाहा तो तुम अदब वाली मसजिद मे अमन के साथ जरूर दाखिल होगे तुम अपना सिर मुड़वाओगे और बाल कतराओगे तुमको डर न होगा और वह जानता था जो तुम नहीं जानते थे फिर इसके अलावह उसने एक क़रीब की फ़तह दी। (२७) वही है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसे तमाम दीनो पर जीत दे और अल्लाह गवाह काफ़ी है। (२८) मुहम्मद खुदा के भेजे हुए है और जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरो के हक़ में बड़े सख्त हैं आपस में रहमदिल हैं। तू उन्हें रुकू और सिजदा करते देखेगा। खुदा की कृपा और ख़ुशी चाहते हैं उनकी पहचान यह है कि सिजदे के निशान उनके

माथों पर हैं। यही गुण उनको तौरातमें और इंजीलमें लिखे हैं जैसे खेती। उसने अपनी कल्ला निकाली फिर उसे मज़बूत की फिर माटी हुई आखिरकार अपनी नालपर सीधी खड़ी होगई (और अपनी हरयाली से) किसानों को खुश करने लगी ताकि काफ़िरों को उन से ईर्षा हो। जो ईमान लाये और भले काम किये उनसे खुदाने क्षमा का और बड़े फल का वादा किया है। (२९)।

सूरे हुजरात।

मदीने में उतरी इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाहके नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे मुसल्मानो अल्लाह और उसके पैग़म्बर से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो अल्लाह—सुनता जानताहै। (१) मुसल्मानो अपनी आवाज़ों को पैग़म्बर की आवाज से ऊंचा न होने दो और न उनके साथ बहुत ज़ोर से बात करो जैसे तुम आपस में बोला करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारा करा धरा सब (अकार्थ) वृथा होजावे और तुम्हें खबर भी न हो। (२) जो लोग खुदा के पैग़म्बर के साम्हने अपनी आवाज़े नीची करलिया करते हैं यही हैं जिनके दिलों को खुदाने परहेज़गारी के लिये जांच लियाहै। उनके लिये क्षमा और बड़ा फल है। (३) (हे पैग़म्बर) जो लोग तुमको कोठों के बाहर से पुकारते हैं इनमें से अक्सर बे समझ हैं। (४) और अगर यह सब्र करते यहांतक कि तू उनकी तरफ निकल आता उनके लिये बहुत अच्छा होता और अल्लाह बख़्शनेवाला मिहर्बान है। (५) मुसल्मानो अगर कोई पापी तुम्हारे पास कोई खबर लावे तो अच्छीतरह से जांचलिया करो ताकि ऐसा न हो कि तुम नादानी में किसी क़ौमपर जा पड़ो फिर

अपने किये से हैरान हो। (६) और जानेरहो कि तुममें खुदाका पैग़म्बर है अगर वह बहुतसी बातों में तुम्हारा कहना माना करे तो तुम्हींपर मुश्किल जा पड़े। मगर खुदाने तुमकोईमान की मुहब्बत देदी है और उसको तुम्हारे दिलों में अच्छा कर दिखाया है और कुफ़ और घमंड और बे हुक्मी से तुमको नफ़रत दिलादी है। यही मनुष्य है जो नेक चलन हैं। (७) अल्लाह की कृपा और अहसान से और अल्लाह जानकार हिकमत वाला है। (८) और अगर मुसल्मानोंके दो फ़िर्क़े आपस में लड़पड़े तो उनमें मिलाप करादो फिर अगर उनमें का एक (फ़िरक़ा) दूसरे पर ज़ियादती करे तो ज़ियादती करनेवाले से लड़ो यहांतक कि वह खुदाके हुक्म की तरफ़ ध्यानदे फिर जब ध्यानदे तो उनमें बराबरीके साथ मिलाप करादो और न्याय करो। अल्लाह न्याय करनेवालों को पसन्द करता है। (९) मुसल्मान आपस में भाई हैं तुम अपने भाइयों में मेल मिलाप रक्खो और खुदासे डरो। शायद तुमपर दयाकी जावे। (१०) [रुकू २] हे मुसल्मानो मर्द मर्दोंपर न हँसें। अजब नहीं कि (जिनपर हँसतेहैं) वह उनसे भले हैं और न औरतें औरतोंपर (हँसें) अजब नहीं कि वह इनसे भली हों और आपस में एक दूसरे को ताने न दो और न एक दूसरे को नाम धरो। ईमान लाये पीछे बुरी आदत का नाम ही बुरा है और जो न माने तो वही अन्यायी है। (११) हे मुसल्मानो बहुत अटकलें न बान्धा करो क्योंकि कोई २ अटकल पाप है और किसी का भेद न टटोलो और पीठ पीछे कोई किसी को बुरा भला न कहे क्या तुममें से कोई अपने मरेहुए भाईका गोश्त खाना पसन्द करता है बस इससे नफ़रत करो और अल्लाहसे डरते रहो। अल्लाह तौबा कबूल करनेवाला मिहर्बान है। (१२) लोगो हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी जातें और बिरादरियां ठहराईं ताकि एक दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के

नज़दीक तुममें वही ज़ियादह बड़ा है जो तुममें बड़ा परहेज़गार है अल्लाह जानने वाला खबरदार है। (१३) (अरब के) देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाये (हे पैग़म्बर इनसे) कहदो कि तुम ईमान नहीं लाये। हां कहो कि हम मुसल्मान हुए हैं और ईमान का तो अबतक तुम्हारे दिलों में गुज़र भी नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर की आज्ञापर चलोगे तो वह तुम्हारे कामों का बदला कुछ कम न करेगा। अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१४) मुसल्मान वह हैं जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये फिर शक नहीं किया और अल्लाह की राहमें अपनी जानों और मालोंसे कोशिश की यही सच्चे हैं। (१५) (हे पैग़म्बर इन लोगोंसे) कहो कि क्या तुम अल्लाहको अपनी दीनदारी जताते हो हालांकि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह जानताहै और अल्लाह हर चीज़से जानकार है। (१६) (हे पैग़म्बर यह लोग) तुम पर अपने इस्लाम लानेका अहसान रखते हैं। तू कह कि मुझपर अपने इस्लाम का अहसान न रक्खो बल्कि अल्लाह का अहसान तुम्हारे ऊपर है कि उसने तुमको ईमान की राह दिखाई बशर्ते कि तुम सच्चे हो। (१७) अल्लाह आस्मानों और ज़मीनके भेदको जानता है और तुम लोग जैसे २ काम कररहे हो अल्लाह उनको देखरहा है। (१८)

——:०:——

सूरे क़ाफ़।

मक्के में उतरी इसमें ४५ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] क़ाफ़-कुरान बुज़ुर्ग की क़सम। (१) बल्कि इन काफ़िरोंको अचम्भा हुआ कि इन्हींमें का एक डर सुनानेवाला इनके पास (पैग़म्बर बनकर) आया तो काफ़िर कहने लगे कि यह तो

अद्भुत बात है। (२) क्या जब हम मरजावेंगे और मिट्टी हो जायंगे तो यह फिर आना बहुत दूर है। (३) मुर्दों के जिन टुकड़ों को मिट्टी कम करती है हमको मालूम है और हमारे पास याद दिलाने वाली किताब है। (४) बल्कि इन लोगोंने सच्ची बात पहुंचने पर उसको झुठलाया तो वह ऐसी बात में उलझे पड़े हैं। (५) क्या इन लोगोंने अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखा कि हमने उसको कैसे बनाया और उसको सजाया और उसमें कहीं दर्ज़ नहीं। (६) और ज़मीनको हमने फैलाया और उसके अन्दर भारी बोझिल पहाड़ डालदिये और सब तरह की खुशनुमा चीज़ें उसमें उगाईं। (७) हर ध्यान देनेवाले बन्दे के लिये याद दिलाने को और समझानेको है। (८) और हमने आस्मान से बरकत का पानी उतारा और उस (पानी) के ज़रिये से बाग़ और खेती का नाज उगाया। (९) और लम्बी २ खजूरें जिनके गुच्छे खूब गुथे हुए होतेहैं।(१०) और बन्दों को रोज़ी देनेके लिये हमने मेहके जरियेसे मुर्दा बस्तीको जिलाया इसीतरह निकल खड़े होनाहै। (११) इनसे पहले नूह की क़ौमने खन्दक वालोंने और समूदने झुठलाया था। (१२) और आद ने और फिरऔन ने और लूतने, बनवासियों नेतुब्बाके लोगोंने सभीने (अपने) पैग़म्बरोंको झुठलाया था तो हमारा वादा पूराहुआ। (१३) क्या हम पहलीबार पैदा करके थकगये हैं बल्कि उन्हें फिर पैदा होने में शक है। (१४) [रुकू २] और हमने आदमी को पैदा किया और हम उसके दिली खयालों को जानते हैं और हम धडकती रग से उसके ज़ियादह नज़दीक हैं। (१५) जब दो लेनेवाले दाहिने और बांये बैठेहुए लेते जाते हैं। (१६) जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं। (१७) और मौत की बेहोशी ज़रूर आकर रहेगी यही तो वह है जिससे तू भगता था। (१८) और नरसिंहा (सूर) फूंका जायगा यही वह दिन होगा

नज़दीक तुममें वही ज़ियादह बड़ा है जो तुममें बड़ा परहेजगार है अल्लाह जानने वाला खबरदार है। (१३) (अरब के) देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाये (हे पैग़म्बर इनसे) कहदो कि तुम ईमान नहीं लाये। हां कहो कि हम मुसल्मान हुए हैं और ईमान का तो अबतक तुम्हारे दिलो में गुज़र भी नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर को आज्ञापर चलोगे तो वह तुम्हारे कामो का बदला कुछ कम न करेगा। अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१४) मुसल्मान वह है जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये फिर शक नहीं किया और अल्लाह की राहमें अपनी जानों और मालोंसे कोशिश की यही सच्चे है। (१५) (हे पैग़म्बर इन लोगोंसे) कहो कि क्या तुम अल्लाहको अपनी दीनदारी जताते हो हालांकि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह जानताहै और अल्लाह हर चीज़से जानकार है। (१६) (हे पैग़म्बर यह लोग) तुम पर अपने इस्लाम लानेका अहसान रखते हैं। तू कह कि मुझपर अपने इस्लाम का अहसान न रक्खो बल्कि अल्लाह का अहसान तुम्हारे ऊपर है कि उसने तुमको ईमान की राह दिखाई बशर्ते कि तुम सच्चे हो। (१७) अल्लाह आस्मानों और ज़मीनके भेदको जानता है और तुम लोग जैसे २ काम कररहे हो अल्लाह उनको देखरहा है। (१८)

——:o:——

सूरे क़ाफ़।

मक्के में उतरी इसमें ४५ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] क़ाफ़-कुरान बुज़ुर्ग की क़सम। (१) बल्कि इन काफ़िरोंको अचम्भा हुआ कि इन्हींमें का एक डर सुनानेवाला इनके पास (पैग़म्बर बनकर) आया तो काफ़िर कहने लगे कि यह तो

अद्भुत बात है। (२) क्या जब हम मरजावेंगे और मिट्टी हो जांयगे तो यह फिर आना बहुत दूर है। (३) मुर्दों के जिन टुकड़ों को मिट्टी कम करती है हमको मालूम है और हमारे पास याद दिलाने वाली किताब है। (४) बल्कि इन लोगोंने सच्ची बात पहुंचने पर उसको झुठलाया तो वह ऐसी बात मे उलझे पड़े है। (५) क्या इन लोगोने अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखा कि हमने उसका कैसे बनाया और उसको सजाया और उसमे कहीं दर्ज़ नहीं। (६) और ज़मीनको हमने फैलाया और उसकेअन्दर भारी बोझिल पहाड़ डालदिये और सब तरह की खुशनुमा चीज़ें उसमें उगाईं। (७) हर ध्यान देनेवाले बन्दे के लिये याद दिलाने को और समझानेको है। (८) और हमने आस्मान से बरकत का पानी उतारा और उस (पानी) के ज़रिये से बाग़ और खेती का नाज उगाया। (९) और लम्बी २ खजूरें जिनके गुच्छे खूब गुथे हुए होतेहै।(१०) और बन्दो को रोज़ी देनेके लिये हमने मेहके जरियेसे मुर्दा धरतीको जिलाया इसीतरह निकल पड़े होनाहै। (११) इनसे पहले नूह की

जिससे डराया जाता है। (१९) और हर मनुष्य जो आयगा उसके पास एक हाज़िर हांकनेवाला और एक गवाह होगा । (२०) तू इससे ग़ाफ़िल रहा अब हमने तेरे पर्दा को तुझपर से हटा दिया तो आज तेरी निगाह तेज़ है। (२१) और उसका साथी बोला जो कुछ मेरे पास था (कर्म लेखा) यह मौजूद है। (२२) हे दोनों फ़रि-श्तो हर काफ़िर दुश्मन को नरक में डालदो। (२३) नेकीसे रोकने वाले, हद से बढ़नेवाले और शक पैदा करने वाले। (२४) जिसने अल्लाह के साथ दूसरे पूजित ठहराये उन्हें सख़्त सज़ा में डाल दो। (२५) उसका साथी (शैतान) कहेगा कि हे मेरे पालनकर्त्ता मैंने इसको सरकश नहीं बनाया बल्कि यह राहसे दूर भूला हुआ था। (२६) अल्लाह कहेगा मेरे पास झगड़ा न कर मैं तेरे पास पहि-लेही सज़ा का डर पहुंचा चुका था। (२७) मेरे यहां बात नहीं बदलीजाती और मैं बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता। (२८) [रुकू ३] उस दिन हम नरक से पूछेंगे कि तू भरचुका। वह कहैगा क्या कुछ और भी है। (२९) और बैकुंठ परहेज़गारोंके पास लाया जायगा। (३०) दूर नहीं यह है जिसका वादा तुमको हरेक रुजू लानेवाले और याद रखने वाले को मिला था। (३१) जो शख़्स बे देखे रह-मान से डरता रहा और ध्यान देकर हाज़िर हुआ । (३२) क्षेम कुशल के साथ इस (बैकुण्ठ) में दाख़िल हो यही हमेशा रहने का दिन है। (३३) बैकुण्ठ में इन लोगों को जो चाहेंगे मिलेगा और हमारे पास और भी ज़ियादह है । (३४) और इन (मक्का के काफ़िरों) से पहिले हमने कितने गरोह मारडाले कि बल बूते में कहीं बढ़कर थे। उन्होंने तमाम शहरों को छानमारा कि कहीं भागने का ठिगाना भी है । (३५) जो दिलवाला है या कान लगाकर दिल से सुनता है उसके लिये इन बातों में शिक्षा है। (३६) और हमने आस्मानों और जमीन को और जो कुछ उनके बीच में है

इनको ६ दिनमे बनाया और हम नही थके । (३७) तो (हे पग़म्बर)जैसी २ बाते (यह इन्कारी) कहतेहैं उनपर संतोष करो और सूरज के निकलने और डूबने के पहिले अपने पालनकर्त्ता की प्रशंसा के साथ पाकी से याद करो। (३८) और रात में उसकी पाकी से याद करो और नमाज़ों के बाद। (३९) और सुन रक्खो कि जिसदिन पुकारने वाला पास को जगह से आवाज़ देगा (कि उठो ।(४०) जिस दिन चीखनेको (सब लोग) सुन लेंगे वह दिन (क़ब्रों से) निकलने का होगा। (४१) हम ही जिलाते और मारते है और हमारी तरफ़ फिर आना है। (४२) जिस दिन मुर्दों से ज़मीन फट जायगी वे दौड़ेगे। यह जमा करलेना हम को सहल है। (४३) (हे पैग़म्बर) यह लोग जो कहते हैं हम जानते हैं और तू इन पर ज़बरदस्ती करनेवाला नहीं। (४४) सो तू क़ुरान से उसको समझा जो हमारी सज़ा से डरता है। (४५)।

—:*:—

सूरे ज़ारियात।

मक्के में उतरी इस में ६० आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

जाय। (१०) जो गफ़लत में भूले हुये हैं। (११) तुझ से पूछते हैं कि इन्साफ़ का दिन कब होगा। (१२) जब यह लोग आग पर सेंके जांयगे। (१३) (और इनसे कहा जायगा) कि अपनी शरारत के मज़े चखो यही तो है जिसकी जल्दी मचारहे थे। (१४) परहेज़गार (बैकुंठके बागों)और चश्मों में होंगे। (१५) जो खुदाने दिया उसे पाया। यह लोग इससे पहिले भले काम करने वाले थे। (१६) रात को बहुत कम सोते थे। (१७) और सुबह के वक्त क्षमा मांगा करते थे। (१८) और उनके मालों में जो मांगे या न मांगे हिस्सा था। (१९) और यक़ीन लानेवालों के लिये ज़मीन में निशानियां है। (२०) और खुद तुम में (भी) तो क्या तुम्हें नहीं सूझपड़ता। (२१) और तुम्हारी रोज़ी और जो तुमसे वादा किया जाता है आस्मानमें है। (२२) आस्मान और ज़मीनके पालनकर्त्ता की क़सम यह (कुरान) सच है जैसा कि तुम बोलते हो। (२३) [रुकू २] (हे पैगम्बर) इब्राहीम के इज़्ज़तदार मिहमानों की बात तुझ को पहुंचती है या नहीं। (२४) जब उसके पास आये तो सलाम किया। इब्राहीमने भी सलाम किया (और कहा) तुम ऊपरी लोग हो। (२५) फिर अपने घरको दौड़ा-और एक बछेड़ा घी में तला हुआ ले आया। (२६) फिर उनके सामने रक्खा और पूछा क्या तुम नहीं खाते। (२७) फिर (इब्राहीम) उनसे जी में डरा और उन्होने कहा मतडर और उनको एक योग्य पुत्र (इसहाक) की खुश खबरी दी। (२८) यह सुनकर इब्राहीम की बीबी बोलती हुई आगे आ खड़ी हुई और अपना मुंह पीटलिया और कहने लगीकि (अव्वल तो) बुढ़िया और (दूसरे) बांझ जनेगी। (२९) फ़रिश्ते) बोले तेरे पालनकर्त्ता ने ऐसा ही कहा है वह हिकमत वाला खबरदार है। (३०)।

——:*:——

सत्ताईसवां पारा ।
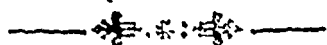
(इब्राहीमने फिरिश्तोंसे) पूछा कि हे भेजे हुओ फिर तुम्हारा मतलब क्या है। (३१) वे बोले कि हम अपराधी मनुष्यों की तरफ़ भेजे गये हैं। (३२) कि उनपर मट्टीके पत्थर बर्सावें। (३३) कि यह (मिट्टीके पत्थर) तेरे पालनकर्त्ता के यहां उन लोगों के लिये नाम पड़गये हैं जो हद्दसे बढ़गये हैं। (३४) फिर हमने जितने ईमानवाले लोग थे उनको निकाल लिया। (३५) फिर हमने वहां (उस बस्ती में) एक ही मुसलमान का घर पाया (लूत का घर)। (३६) और (पत्थर को बरसा किये पीछे) हमने उस (बस्ती) में उन लोगों के लिये जो दुखदाई सज़ा से डरते हैं निशानी बाक़ी रक्खी। (३७) और मूसा के हाल में निशान है जब हमने उसको प्रत्यक्ष निशानी देकर फ़िरऔन की तरफ भेजा। (३८) फिर उसने अपने बलबूते में (आकर) मुंह मोड़ा और (मूसा की बाबत) कहा कि यह जादूगर या दीवाना है। (३९) फिर हमने उसको और उसके लश्करों को (सज़ा में) पकड़ा फिर उनको दरियामें डाल दिया और वह मलामती था। (४०) और क़ौम आदमें भी निशानी है जब हमने उनपर मन्हूस आन्धी चलाई। (४१) जिस चीज परसे गुज़रती वह उसको सीधा हड्डी की तरह (चूरा) किये बग़ैर न छोड़ती। (४२) और क़ौम समूदमें भी निशान है जब उनसे कहा गया कि एक वक्त खासतक (दुनियामें) बर्तलो। (४३) फिर अपने पालन-कर्त्ता के हुक्मसे शरारत करने लगे तो उनको कड़कने पकड़ा और वह देखते रहगये। (४४) फिर उठ न सके और न बदला ले सके। (४५) और (इनसे) पहिले नूहकी क़ौम थी वह बे हुक्म थे। (४६) [रुकू २] और हमने आस्मानों को अपने बाहुबल से

बनाया और हम सामर्थ्य वाले हैं। (४७) और हमने ज़मीन को बिछाया सो हम क्या खूब बिछाने वाले हैं। (४८) और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाये। शायद तुम ध्यान दो। (४९) सो अल्लाह की तरफ़ भागोमैं उसकी तरफ़से तुमको साफ़ तौरपर डर सुनाताहूं। (५०) और खुदाके साथ कोई दूसरा पूजित न ठहराओ मैं उसकी तरफ से तुमको साफ़ तौरपर डराताहूं। (५१) इसीतरह पर अगलों के पास जो कोई पैग़म्बर आया उन्होंने (उसको) जादूगर या दीवाना ही बताया। (५२) क्या यहलोग एक दूसरे को (इस बात की) वसीयत करते आये हैं। नहीं बल्कि यहलोग सरकश हैं। (५३) सो तू उनकी तरफ़ हट आ फिर तुझपर उलाहना न होगा। (५४) और समझाते रहो कि समझाना ईमान वालों को फ़ायदा देता है। (५५) और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें। (५६) मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहताहूं कि मुझे खाना खिलावे। (५७) अल्लाह खुद बड़ा रोज़ी देनेवाला ताक़त देनेवाला बली है। (५८) सो उन पापियों का यही डौल है जैसे डौल पड़ा उनके साथियों का सो चाहिये कि जल्दी न करें। (५९) सो काफ़िरों पर उनके उस रोज़ के पतवार से जिसका उनसे वादाकिया जाता है अफ़-सोस है। (६०)।

सूरे तूर।

——:o:——

मक्के में उतरी इसमें ४९ आयतें २ रुकु हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्वान है।

[रुकु १] तूरकी क़सम। (१) और लिखी किताबकी। (२) चड़े पत्रों में। (३) और वे नूल मामूर की (आबाद घर की)।

(४) और ऊंची छत (आस्मान) की। (५) और चढ़ीहुई नदी की। (६) बेशक तेरे पालनकर्त्ता की सज़ा होने को है। (७) किसीकी ताक़त नही कि उसको टालसके। (८) जिसदिन आस्मान लहरें मारने लगे। (९) और पहाड़ चलने लगेंगे। (१०) उसदिन झुठलाने वालो की ख़राबी है। (११) जो बातें बनाते खेलते हैं। (१२) जिस दिन नरक की आग की तरफ़ धक्के दे दे कर लेजाये जायंगे। (१३) यही वह नरक है जिसे तुम झुटलाते थे। (१४) तो क्या यह नज़र बन्दी है या तुमको सूझ नहीं पड़ता। (१५) इसमें घुसो संतोष करो या न करो तुम्हारे लिये समान है और जैसे कर्म तुम करते थे तुमको उन्हीं का बदला दिया जायगा। (१६) परहेज़गार (बैकुंठ के) बाग़ो और नियामतो मे होंगे। (१७) अपने पालनकर्त्ता की दी हुई (नियामतो) के मज़े उड़ारहे होंगे और उनके पालनकर्त्ता ने उनको नरक की सज़ा से बचा लिया। (१८) खाओ पियो रुचिसे अपने कामो का बदला है। (१९) तख़्तोंपर जो बरा-बर बिछाये गये हैं तकिये लगा लगा कर बैठे हैं और हमने बड़ी २ आंखो वाली गोरियां उनको ब्याह दी हैं। (२०) और जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ईमान मे उनके पीछे चली उनकी औलाद को हम उनसे मिलादेंगे और उनके कर्मों मे कुछ भी न घटायेंगे। हर आदमी अपनी कमाईमें फंसा है। (२१) और जिसमें दे और मांस को उनका जी चाहेगा हम उनको देंगे। (२२) वह आपस मे वहां (शराब के) प्यालो की छीना झपटी करेंगे उस (नशा) से न बकवाद लगेगी और न कोई अपराध होगा। (२३) और लड़के उनके पास आयंगे जायंगे गोया वह दबाव मे रक्खे हुए मोती हैं। (२४) और एक दूसरे की तरफ़ ध्यानदेकर आपसमे बातें करेंगे। (२५) (कोई २) कहेंगे कि हम पहिले अपने घरोंमें डरा करते थे। (२६) सो ख़ुदाने हमपर कृपाकी और हमको लूकी सज़ा

से बचा लिया। (२७) (इससे) पहिले हम उसे पुकारते थे वह भलाई करने वाला और दयालु है (२८) [रुकू २] तो (हे पैग़म्बर) इन लोगो को शिक्षा दो कि तू पालनकर्त्ता की कृपा से जादूगर और दीवाना नहीं है। (२६) क्या कहते है कि कवीश्वर (शायर) है हम उस की बाबत ज़माने की गर्दिश की राह देख रहे है । (३०) तू कह कि तुम राह देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं । (३१) क्या इन की अक्ल इन को ऐसा सिखाती हैं या यह लोग शरीर है। (३२) या कहते है कि इसने क़ुरान अपने आप बना लिया है बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (३३) सो अगर सच्चे है तो इसी-तरह की कोई बात (यह भी बनाकर) ले आवें । (३४) क्या वे आपही आप बन गये है या वही बनाने वाले हैं । (३५) क्या इन्होंने आस्मानो को और ज़मीन को पैदा किया है नहीं बल्कि यक़ीन नही करते। (३६) क्या तेरे पालनकर्त्ता के ख़ज़ाने उनके पास है या वह हाकिम हैं। (३७) या इनके पास कोई सीढ़ी है कि उसपर (चढ़कर आस्मान की बातें) सुन आया करते है सो अगर इन में से कोई सुन आया हो तो वह प्रत्यक्ष सनद पेश करे। (३८) क्या ख़ुदा के लिये बेटियां और तुम लोगों के लिये बेटे हैं। (३६) क्या तू इनसे पहुचाने की कुछ मज़दुरी मांगता है यह बोझ से दबे जाते हैं। (४०) क्या इनके पास गुप्त भेद जानने की विद्या है वे लिख रखते हैं। (४१) या इनका इरादा कुछ धोखा देने का है तो (यह) काफ़िर आपही धोखे में है । (४२) या ख़ुदा के सिवाय इनका कोई और पूजित है तो अल्लाह इन के शिर्क से पाक है। (४३) और अगर कोई आस्मानी टुकड़ा गिरता हुआ देखें। (तब भी ख़ुदा की सज़ासे न डरें बल्कि) कहने लगते हैं कि यह तो जमा हुआ बादल है (४४) तो (हे पैग़म्बर) इन को रहने दो कि वह उसदिन की मुलाक़ात करें जब कि इनको

(बिजली की) कड़क पकड़ेगी। (४५) जिसदिन उनका फ़रेब उनके कुछ काम न आवेगा और न इनको मदद मिलेगी। (४६) और ज़ालिमों को क़यामत की सज़ा के सिवाय (दुनियां में और भी) सज़ा है मगर इनमें से बहुतों को मालूम नहीं। (४७) और तू अपने पालनकर्त्ता के हुक्मके इंतिज़ार मे रह कि तू हमारी आंखों के सामने है। और जिस वक्त (सोकर) उठे अपने पालनकर्त्ता की खूबियों की पाकी बोल। (४८) और कुछ रात गये भी उस की याद कियाकरो और तारों के अस्त हुए पीछे भी। (४९)।

सूरे नज़्म।

—:*:—

मक्के में उतरी इसमें ६२ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] तारे (नक्षत्र) की क़सम जब वह टूटताहै। (१) तुम्हारा मित्र (मुहम्मद) बहका नहीं और न वे राह चला। (२) और वह अपनी चाह से नहीं बातें बनाता। (३) यह तो हुक्म है जो उसे भेजा जाता है। (४) बड़े बलशाली ने उसे सिखलाया है। (५) जो ज़ोरावर है। फिर सीधा बैठा। (६) और वह आस्मान के ऊंचे किनारे पर था। (७) फिर वह नज़दीक हुआ और क़रीब आगया। (८) फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क़ रहगया। (९) उस वक्त ख़ुदाने फिर अपने बन्दे (मुहम्मद) पर हुक्म भेजा। जो भेजा। (१०) झूट नहीं कहा दिल ने जो देखा। (११) अब क्या तुम झगड़ते हो उनसे उसपर जो उसने देखा। (१२) हालांकि उसने उसको दूसरीबार देखा। (१३) अन्तिम हद की बेरी के पास। (१४) उस (बेरी) के पास है बहिश्त रहने की जगह। (१५) जब छा रहा था उस बे

पर जो (नूर) छा रहा था। (१६) निगाह न वहकी न हद्द से बढ़ी। (१७) बेशक उसने अपने पालनकर्त्ता की निशानियों में से बड़ी निशानी देखी। (१८) (मुशरिको) भला तुमने लात[1] और उज्जा[2] (नाम मूर्तों) । (१६) और वह जो तीसरी (देवी) मनात हैं। (२०) क्या तुम लोगों के लिये बेटे और उस (खुदा) के लिये बेटियां। (२१) अगर ऐसा हो तो यह बड़ी बेइन्साफ़ी की बांट है। (२२) यह तो निरे नामही हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने अपनी तरफ़ से रख लिये हैं खुदा ने तो इन (के पूजित होने) की कोई सनद नही उतारी। यह लोग तो अटकल और दिली ख्वाहिशों पर चलते हैं और इनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से इनके पास हिदायत भी आ चुकी है। (२३) कही मनुष्य को मनमानी मुराद भी मिली है। (२४) सो आखिरत और दुनिया अल्लाह ही के क़ाबू में है। (२५) [रुकू ३] और बहुत फ़िरिश्ते आस्मानो में हैं उनकी शिफ़ारिश कुछ भी काम नही आती। (२६) मगर जब खुदा किसी के बारे में शिफ़ारिस कराना चाहे इजाज़त दे और (फ़िरिश्तो की शिफ़ारिश को) पसन्द फ़र्मावे। (२७) जिन लोगो को आखिरत का यक़ीन नही है वही तो फिरिश्तों के नाम औरतें कैसे रखते हैं। (२८) (और उनको इसकी कुछ खबर नही गिरी अटकल पर चलते हैं और ठीक बातमें अटकल कुछ काम नही आती। (२६) तो (हे पैग़म्बर) जो मनुष्य हमारी याद से मुंह फेरे और दुनियां की ज़िन्दगी के सिवाय कुछ न चाहे। सो तू उस पर ध्यान न कर। (३०) यहां तकही उनकी समझ पहुंची है। तेरा पालनकर्त्ता खूब जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और वही खूब जानता है कि कौन सीधी राह परहै। (३१) और अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ जमीन में

(१ और २) उन मूर्तियों का वर्णन क़ुरानकी वृहत्भूमिका में देखो।

है ताकि उन लोगों को जिन्होंने बुरे कर्म किये उनके किये का बदला दे और जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं उनको अच्छे का बदला दे। (३२) जो बड़े पापों और बेशर्मी के कामों से बचते रहते हैं मगर छोटे पाप उनसे होजाते हैं तो तेरा पालनकर्त्ता बड़ा क्षमा करने वाला है। वह तुमको खूब जानता है जब उसने तुमको मिट्टी से बनाया था और जब तुम अपनी मांओं के पेटों में बच्चे थे सो अपनी सफ़ाई न जताओ। परहेज़गारों को वही खूब जानता है। (३३) [रुकू ३] (हे पैग़म्बर) भला तू ने उस मनुष्य को देखा जिसने मुंह फेरा। (३४) और थोड़ामालदेकर सख़्तहोगया। (३५) क्या उसके पास गुप्त बात जानने की विद्या है कि वह देखने लगा है। (३६) क्या उसको खबर नही जो कुछ मूसा के सहीफ़ों में लिखा है। (३७) और इब्राहीम के (सहीफ़ों में) जो वफ़ादार था। (३८) कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नही उठाता। (३९) और यह कि मनुष्य को उतनाही मिलेगा जितना उसने कमाया है। (४०) और यह कि उसकी कमाई आगे चलकर देखी जायगी। (४१) फिर उसको पूरा बदला दिया जायगा। (४२) और यह कि (अन्त में सब को) ख़ुदा तक पहुंचना है। (४३) और यह कि वही हँसाता और रुलाता है। (४४) और यह कि वही मारता और जिलाता है। (४५) और यह कि उसने स्त्री पुरुष का जोड़ा बनाया। (४६) वीर्य से जब टपकाया गया। (४७) और यह कि दोबारह (जिला) उठाना उसके ज़िम्मे है। (४८) और यह कि वही मालदार और धनवान करता है। (४९) और यह कि वही शेरा (एक तारा का नाम) का मालिक है। (५०) और यह कि उसी ने आदि की (जाति) के आदमों को मारडाला था। (५१) और समूद को भी फिर बाकी न छोड़ा। (५२) और (उन से) पहिले नूह को जाति को इस में सन्देह

नहीं कि यह स्वयं ही बड़े अत्याचारी और बड़े उपद्रवी थे (मार डाला) (५३) और उलटी बस्तियों को (जिन में लूत की जाति रहती थी) दे पटका। (५४) फिर उन पर जो तबाही आई सो आई। (५५) (हे आदमी) तू अपने पालनकर्त्ता के कौन २ पदार्थों में सन्देह किया करेगा। (५६) यह अगले डरानेवालों में से एक डराने वाला है। (५७) नज़दीक आने वाली समीप आपहुंची है अल्लाह के सिवाय किसी की सामर्थ्य नहीं कि इसको दूर करसके। (५८) तो क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो। (५९) और (क़यामत की चर्चा सुनकर) हँसते हो और रोते नहीं। (६०) और तुम भूल में हो। (६१) पस ख़ुदा को सिर झुकाओ और पूजो। (६२)।

——:※:——

सूरे क़मर।

मक्के में उतरी इस में ५५ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १/] क़यामत की घड़ी पास आलगी और चांद फटगया। (१) और अगर यह कोई निशानी भी देखें तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह जादू चलाआता है। (२) और इन लोगोंने (पैग़म्बर को) झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले। मगर हर काम नियत काल पर होता है। (३) और उनके पास इतनी ख़बरें आचुकी हैं जिनमें काफ़ी ताड़ना थी। (४) इस में पूरी हिकमत है, मगर डराना कुछ काम नहीं आता। (५) सो तू उनकी तरफ से हटआ। जिसदिन बुलाने वाला ऐसी चीज़ की तरफ़ बुलायगा जिसको यह न पहिचानेंगे। (६) नीची आंखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया फैली हुई टिड्डियां हैं। (७) बुलाने वाले

की तरफ़ भागे जाते होंगे और काफ़िर कहेंगे कि यह सख़्त दिन है। (८) इन लोगोंसे पहिले (नूह) की जातिने झुठलाया हमारे सेवक (नूह) को झुठलाया और कहा कि यह पागल (उन्मत्त) है और उसकी धमकियां दी। (६) फिर उसने अपने पालनकर्त्ताको पुकारा कि मै दब गया हूं तू ही बदला ले। (१०) तो हमने मूसलाधार पानी से आस्मान के पट खोल दिये। (११) और ज़मीन से सोते बहादिये तो पानी एक काम पर जो नियत हो चुका था मिल गया। (१२) और (नूह को) हमने तख़्ते और कीलों से बनाई हुई (किश्ती–नौका) पर सवार करलिया। (१३) (और वह) हमारी निगरानी में पड़ी तैरती रही (यह) उस शख़्स (नूह) का बदला था जिसकी क़द्र नही की गई थी। (१४) और हमने इसकोएक निशानी बनाकर छोड़दिया फिर कोई सोचने वालाहै। (१५) फिर हमारी सज़ा और हमारा डराना कैसा हुआ। (१६) और हमने क़ुरान को समझनेके लिये सुगम करदिया है सो कोई है जोशिक्षा गृहण करे। (१७) आद (की जाति) ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया तो हमारी सज़ा और हमारा डराना कैसा हुआ। (१८) हमने एक अशुभ दिन जिस की अशुभता नहीं टलती थी उनपर एक सख़्त ज़ोर शोर की आन्धी चलाई। (१६) वह लोगोंको (जगहसे ऐसा) उखाड़ फेंकती थी कि गोया वह जड़से उखड़े हुए खजूरों के तने हैं। (२०) तो हमारी सज़ा और हमारा डराना कैसा हुआ। (२१) और हमने क़ुरान को समझने के लिये सुगम करदिया है तो कोई है जो शिक्षा गृहण करे। (२२) [रुकू २] (समूद) समूदने डर सुनाने वालों (पैग़म्बरों) को झुठलाया। (२३) और कहने लगे क्या हमही में के एक शख़्स के कहे पर हम चलेंगे तो हम गुमराह और पागलों में होंगे। (२४) क्या हममें से इसीपर वहा (ईश्वरी सदेशा) है। नही यह झूठा शेख़ी मारने वाला है। (२५)

अब कलको मालूम होजायगा कि कौन झूठा शखी खोरा है। (२६) हम इनके जांचने के लिये एक ऊटनी भेजनेवाले हैं तो तुम इनकी राह देखो और संतोष से बैठे रहो। (२७) और इनको जतादो कि इनमें (और ऊंटनी में) पानी बांट दियागया है तो हर (एक गिरोह अपनी अपनी) बारी पर (पानी पीने के लिये) हाज़िर हो (२८) तो उन्होंने अपने दोस्त (कुदार) को बुलाया तो उसने (ऊटनीपर) हाथ डाला और कूंचें काटदीं। (२९) तो हमारी सजा और डराना कैसा हुआ। (३०) फिर हमने उनपर एक चिघार भेजी। तो वह ऐसी होगई जैसी रोंदी हुई कांटों की बाढ़। (३१) फिर हमने कुरान को समझने के लिये आसान करदिया है तो कोई है कि शिक्षा पकड़े। (३२) लूतकी क़ौमने डर सुनाने वालों को झुठलाया। (३३) तो हमने उनपर पत्थर की वर्षा बरसाई मगर लूतके घरके लोगोंको हम अपनी कृपासे सुबह होले २ निकाल लेगये। (३४) यह हमारी तरफ़ से कृपा थी जो लोग कृतज्ञ होते (शुक्र करते) हैं हम ऐसाही बदला देते हैं। (३५) और लूतने उन्हें हमारी पकड़ से डरा भी दिया था मगर वह डराने में हुज्जते निकालनेलगे। (३६) और वह उसको उसके मिहमानों की बाबत फुसलातेथे फिर हमने उनकी आंखें मेटदीं। अब हमारी सज़ा और हमारे डराने के मज़े चक्खो। (३७) और प्रातःकाल उनको सज़ाने आ घेरा जो टाले से न टल सक्ती थी। (३८) अब हमारी सज़ा और हमारे डराने के मज़े चक्खो। (३९) और हमने क़ुरान को समझने के लिये आसान करदिया है तो कोई है कि शिक्षा गृहणकरे। (४०) [रुकू २] और फ़िरऔन के लोगों के पास डराने वाले आये। (४१) सो उन्हो ने हमारी तमाम निशानियों को झुटलाया तो हमने उनको ऐसा पकड़ा जैसा बली बलवान पकड़ता है। (४२) (हे मक्के वालो) क्या तुम मेंसे इन्कार करने वाले उन लोगों से

बढ़कर है या तुम्हारे लिये क्षमा है। (४३) यह लोग कहते हैं कि हमारा गिरोह अपने आप मदद करसक्ता है। (४४) सो कोई दिन जाता है कि गिरोह हार जायेगा और पीठ फेरकर भागेंगे। (४५) नहीं। बल्कि वादा तो उनके साथ क़यामत का है और क़यामत बड़ी बला और कड़वी है। (४६) बेशक पापी गुमराही में और पागलपन में हैं। (४७) जिस दिन उनको उनके मुंह के बल (नरक की) आगमें घसीटा जायगा (और उनसे कहा जायगा) नरक (की आग) का मज़ा चक्खो। (४८) हमने हर चीज़ को एक अंदाजे के साथ पैदा किया है। (४९) और हमारा हुक्म करना सिर्फ़ एक बात है जैसे आंखकी झपक। (५०) और (मक्का के काफ़िर लोग) हम तुम्हारे साथ वालों को हलाक करचुके हैं तो कोई है कि शिक्षा पकड़े। (५१) और हर काम जो उन्होंने किये हैं किताब में लिखे हैं। (५२) और हरएक छोटा और बड़ा काम सब लिखा हुआ है। (५३) परहेजगार (बैकुण्ठ के) बागों और नहरों में होंगे। (५४) सच्ची बैठक में बादशाह के पास जिसका सब पर कब्ज़ा है बैठेंगे। (५५) ॥

तौलने में कम बेश न करो। (७) और न्याय के साथ सीधी तौल तालो और कम न तौलो। (८) और उसीने दुनियां के लिये ज़मीन बनादी है। (९) कि उसमें मेवे हैं और खजूर के पेढ़ हैं जिनपर गिलाफ़ चढ़े होतेहैं। (१०) और अनाज जिसके साथ भुस है और खुशबूदार फूल हैं। (११) तो तुम दोनों अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतो को झुठलाओगे। (१२) उसीने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया। (१३) और जिन्नों को आगकी लौ से। (१४) तो तुम दोनों अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतो को झुठलाओगे। (१५) सूरज के निकलने की दो जगहों का मालिक। (१६) और सूरज के डूबने की दो जगहों का मालिक। (१७) फिर तुम दोनों अपने पालन-कर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (१८) उसीने दो नदियों को मिला दिया है कि वह मिली है। (१९) इनदोनों के बीच एक आड़ है कि यह उस से बढ़ नही सक्ते। (२०) तो अपने पालनकर्त्ता की किस नियामत को तुम झुठलाओगे। (२१) दोनो में से मोती और मूंगे निकलते है। (२२) तो तुम अपने पालन-कर्त्ता की कौन कौन नियामतो को झुठलाओगे। (२३) और जहाज़ जो समुद्र मे पहाड़ो की तरह ऊंचे खड़े रहते हैं उसी के हैं। (२४) तो तुम अपने पालनकर्त्ता के कौन कौन से पदार्थों को झुठलाओगे। (२५) [रुकू २] (हे पैग़म्बर) जितनी सृष्टि ज़मीन पर है सब मिटने वाली है। (२६) और (सिर्फ़) तुम्हारे पालकनर्त्ता की ज़ात बाक़ी रहजायगी जो बड़प्पन वाली बड़ी है। (२७) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी नियामतो को झुठलाओगे। (२८) जो कोई आस्मानों में और ज़मीनमें है उसी से सवाल करते है। वह हररोज़ एक शान में है। (२९) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी नियामतोंको झुठलाओगे।

(३०) हे जिन्नो और आदमियो हम जल्द तुम्हारी तरफ ध्यान देने वाले हैं। (३१) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन निआमतों को झुठलाओगे। (३२) हे जिन्न और आदमियो के गरोहो अगर तुम से होसके कि आस्मानों और ज़मीन के किनारों से निकल भागो तो निकल देखो। मगर तुम बग़ैर ज़ोर के निकल ही नहीं सक्ते। (३३) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (३४) और तुम पर आग के शोले और धुआं भेजा जावेगा और तुम मदद भी न कर सकोगे। (३५) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (३६) फिर जब आस्मान फटे और नरी की मानिन्द लाल होजाये। (३७) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (३८) तो उसदिन न तो आदमियो से उनके गुनाहो की बाबत पूछा जायगा और न जिन्नो से। (३९) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (४०) पापियों को उनकी सूरत से पहिचान लिया जायगा फिर पट्टे और पैर पकड़े

जारी होंगे। (५०) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निआमतों को झुठलाओगे। (५१) उनमें हर मेवे की दो क़िस्में होवेगी । (५२) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५३) फ़रशोंपर तकिये लगाये (बैठे) होंगे। तापते के उनके अस्तर होंगे और दोनों बाग़ों के फल झुके होंगे। (५४) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निआमतों को झुठलाओगे। (५५) उनमें (पाक हूरें) होंगी जो आंख उठाकर भी नहीं देखेंगी और वैकुण्ठवासियों से पहिले न तो किसी मनुष्यने उनपर हाथ डालाहोगा और न किसी जिन्नने। (५६) तो तुम अपने पालनकर्त्ताकी कौन कौनसी निआमतोंको झुठलाओगे। (५७) वे लाल और मूंगे जैसे हैं। (५८) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन २ सी निआमतों को झुठलाओगे। (५९) भला नेकी का बदला नेकी के सिवाय क्या होसक्ता है। (६०) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६१) और इन दो (बाग़ों) के सिवाय और दो बाग़ हैं। (६२) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतोंको झुठलाओगे। (६३) दोनों (बाग़ खूब) गहरे सब्ज़ हैं। (६४) फिर तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निआमतों को झुठलाओगे। (६५) उनमें दो चश्मे उछल रहे होंगे। (६६) तो तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६७) उन दोनों (बाग़ों) में मेवे और खजूरें और अनार (होंगे) (६८) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निआमतों से झुठलाओगे। (६९) उनमें अच्छी खूब सूरत औरतें होंगी। (७०) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निआमतों को झुठलाओगे। (७१) हूरें जो खीमों में बन्द हैं। (७२) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निआमतों को झुठलाओगे

(७३) वैकुण्ठवासियों से पहिले न तो किसी इंसान ने उन (हूरा) पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने। (७४) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निअ़ामतों को झुठलाओगे। (७५) वैकुण्ठवासी वहां सब्ज़ कालीनो और उमदा उमदा फ़र्शों पर तकिये लगाये होंगे। (७६) फिर तुम अपने पालनकर्त्ता की कौन कौनसी निअ़ामतों को झुठलाओगे । (७७) (हे पैग़म्बर) तुम्हारे पालनकर्त्ता का नाम बड़ा बरकत वाला, बड़प्पन वाला और भलाई करनेवाला है। (७८) ॥

——:०:——

सूरे वाक़िया।

मक्के में उतरी इस में ९६ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] जब होनेवाली होवेगी। (१) उसके आनेमें कुछ भी झूठ नही। (२) किसी को नीचा दिखायगी और किसी के दर्जे ऊंचे करेगी। (३) जब जमीन बड़े ज़ोर से हिलने लगेगी। (४) और पहाड़ के टूकड़े टुकड़े हो जायंगे। (५) फिर उड़ती मिट्टी हो जावेंगे। (६) और तुम्हारी तीन क़िस्मे हो जावेंगी। (७) फिर दाहिने हाथ वाले सो दाहिने हाथ वालो का क्या कहना है। (८) और बायें हाथवाले बायें हाथवालों का क्याही बुरा हाल है। (९) और अगाडी वाले सो आगेही है। (१०) यही लोग पास वाले हैं। (११) निअ़ामत के बागो में। (१२) अगलोंमे से एक जमात है। (१३) और पिछलो मे से थोड़े। (१४) जड़ाऊ तख़्तों के ऊपर। (१५) आमने सामने तकिये लगाये बैठे होंगे। (१६) उनके पास लौंडे फिरते है जो हमेशा लड़केही बने रहेंगे। (१७) उनके पास आबख़ोरे और लोटे और साफ़ शराब के प्याले लाते और लेजाते

होंगे। (१८) जिससे न तो उनके सिरमें दर्द होगा न वकवाद लगेगी। (१९) और जो मेवे उनको अच्छे लगें। (२०) और जिस क़िस्म के पक्षी का मांस उनको अच्छा लगे। (२१) और हूरें वड़ी वड़ी आंखों वाली जैसे छिपेहुए मोती। (२२) वदला उसका जो करतेथे। (२३) वहां वकना और पापकी वात न सुनेंगे। (२४) मगर सलामती सलामती की आवाज़ें आरही होंगी। (२५) और दाहिने तरफ़ वाले सो इन दाहिनी तरफ़ वालों का क्या कहना है। (२६) वे कांटेकी वेरियों। (२७) और लदेहुए केलों में। (२८) और लम्बे सायेमें। (२९) और वहते पानी में। (३०) और वहुत मेवोंमें। (३१) जो न कभी खत्महों और न रोके जायें। (३२) और ऊंचे विछौने। (३३) हमने हूरों की एक खास सृष्टि वनाई है। (३४) फिर इनको कवारी वनाया है। (३५) प्यारी प्यारी समान अवस्थावाली। (३६) यह सव दाहिनी तरफ़वालोंके लिये है। (३७) [रुकू २] एक जमात पहिलों मेंसे है। (३८) और एक जमात पिछलों मेंसे है। (३९) और वाईं तरफ़वाले क्या वुरे वांईं तरफ़वाले होंगे। (४०) कि वह आंच की भाफ में और गरम पानीमें होंगे। (४१) और धुयें की छाओं में। (४२) जो न ठण्डी है और न इज़्ज़त की। (४३) यह लोग इससे पहिले ऐशमें थे। (४४) और वड़े पाप पर हठ करते रहते थे। (४५) और कहते थे। (४६) जव हम मरगये और मिट्टी और हड्डियां होगये क्या फिर हम उठाये जांयगे। (४७) और क्या हमारे अगले वाप दादा भी। (४८) (हे पैग़म्वर) कहो कि अगले और पिछले सव। (४९) एक मालूम वक्त पर जमाकिये जांयगे। (५०) फिर हे झुठलाने वाले गुमराहो। (५१) तुमको (नरक में) सेउड़ का दरख्त खाना होगा। (५२) और उसीसे पेट भरना पड़ेगा। (५३) फिर ऊपर से उवलता हुआ पानी पीना होगा। (५४) फिर ऐसे

पीओगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं। (५५) न्याय के दिन यही उनकी मिहमानी है। (५६) हमने तुमको पैदा किया है फिर भी तुम क्यों नही मानते। (५७) भला देखो तो जो (वीर्य्य स्त्रियों की योनिमें) टपकाते हो। (५८) क्या तुम उससे (आदमी) पैदा करतेहो या हम पैदा करते हैं (५९) हमने तुममे मरना ठहरा दिया और हम हार नही रहे। (६०) कि तुम्हारी मानिन्द और कौम बदल लायें और तुम्हें उस जहानमें उठा खड़ाकरें जिसे तुम नही जानते। (६१) और तुम पहिली पैदायश जान चुके हो फिर क्यो नही सोचते। (६२) भला देखो तो जो बोते हो। (६३) क्या तुम उसको उगाते हो या हम उगाते हैं। (६४) हम चाहे तो उसको (रूंदकर) चूरा चूरा करदे। और तुम बाते बनाते रहि जाओ। (६५) हम टोटेमे आगये बल्कि हमारा भाग्य फूट गया। (६६) भला देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (६७) क्या तुमने इसको बादल से बरसाया या हम बरसाते है। (६८) अगर हम चाहे तो उसको खारी करदें तो तुम क्यों नही धन्यवाद देते। (६९) भला देखो तो आग जो तुम सुलगाते हो। (७०) इस दरख्त को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करते है। (७१) हमने ये याद दिलाने और मुसाफिरों के फायदे के लिये बनाये हैं। (७२) सो अपने पालनकर्त्ता के नाम की माला फेर जो सब से बड़ा है। (७३) [रुकू ३] तारों के टूटने की कसम है। (७४) और समझो तो यह बड़ी कसम है। (७५) यह बड़ी क़दर का क़ुरान है। (७६) छिपी किताब में लिखा हुआ है। (७७) उसको वही छूते हैं जो पाक हैं। (७८) संसार के पालनकर्त्ता से भेजा गया है। (७९) अब क्या तुम इस बात से सुस्ती करते हो। (८०) और अपना हिस्सा यही लेते हो कि झुठलाते हो। (८१) फिर क्यों न हो जब जान गले में पहुंच जावे। (८२) और तुम उस वक्त देखा करो। (८३) और हम

तुम्हारी निस्बत उससे ज्यादातर पास हैं लेकिन तुम नही देखते। (८४) फिर अगर तुम किसी के हुक्म में नहीं हो तो क्यों। (८५) तो तुम उसको फेर लाते अगर तुम सच्चे हो। (८६) सो अगर वह पासवालों में हुआ। (८७) तो आराम रोज़ी और नियामत के बाग़ है। (८८) और अगर वह दाहिनी तरफ वालों में से है। (८९) तो दाहिनी तरफ़ वालों की तरफ़ से तेरे लिये सलाम है। (९०) और अगर वह झुठलाने वाला है। (९१) गुमराहों में से है। (९२) तो उबलते पानी से मिहमानी की जावेगी। (९३) नरक (आग) में ढकेला जावेगा। (९४) बेशक यह बात सच विश्वास के लायक़ है। (९५) सो अपने पालनकर्त्ता के नाम की जो सब से बड़ा है माला फेर। (९६)।

——:*:——

सूरे हदीद।

मदीने में उतरी इसमें २९ आयतें और ४ रुकूहैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह को पाकी से याद करते हैं और वही ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (१) आस्मानों और ज़मीन का राज्य उसी का है। (वही) जिलाता और मारता है और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है। (२) वही आदि है और वही अन्त है और वही प्रत्यक्ष और गुप्त है और वह हर चीज़ से जानकार है। (३) वही है जिसने छः दिन में आस्मानो और ज़मीन को बनाया फिर तख़्त पर जा विराजा। जो चीज़ जमीन में दाख़िल होती और जो चीज़ ज़मीन से बाहर आती है और जो चीज़ आस्मानसे उतरती और जो चीज़ आस्मानकी तरफ़ चढ़ती है वह जानता है और तुम जहां कहीं हो वह तुम्हारे साथ है

और जो कुछ तुम किया करते हो अल्लाह उसको देख रहाहै। (४) आस्मानो और ज़मीन का राज्य उसी का है और सब काम अल्लाह ही तक पहुचते है। (५) (वही) रात को दिनमे दाखिल करता और दिनको रातमे दाखिल करताहै। दिली बातकी उसको खबरहै। (६) अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस मालमें से जिसका उसने अधिकारी बनायाहै खर्च करो। तो जो लोग तुम मे से ईमानलाये और खर्च करते है उनके लिये बड़ा फल है। (७) और तुमको क्या होगया है कि खुदा पर ईमान नहीं लाते हालांकि पैग़म्बर तुमको तुम्हारेही पालनकर्त्ता पर ईमान लाने के लिये बुला रहे है और अगर तुमको यक़ीन आये तो खुदा तुमसे क़ौल करा-चुका है। (८) वही है जो अपने सेवक पर खुली आयतें उतारता है ताकि तुमको अंधियारियोंसे निकाल कर रोशनी में लाये औरबेशक अल्लाह तुम पर बड़ा रहम करनेवाला मिहर्बान है। (९) और तुम को क्या होगया है कि खुदा की राह में खर्च नहीं करते हालांकि आस्मान ज़मीन का वारिस खुदाही है। तुम में से जिन लोगों ने फ़तह (मक्का) से पहिले खर्च किया और लड़ाई की। वह (दूसरे लोगो के) बराबर नही। यह लोग दर्जे में उनसे बढ़कर है जिन्हों ने (मक्काके फ़तह के) पीछे (माल) खर्च किये और लड़े और खुदा ने सभी से अच्छा वादा किया है और जैसे जैसे काम तुम लोग करते हो अल्लाह को उनकी खबर है। (१०) [रुकू २] ऐसा कौन है जो अल्लाह को खुशदिली से उधार दे फिर वह उसको उसके लिये दुना करदे और उसके लिये इज़्ज़त का फल है। (११) जिसदिन तू ईमान वाले मर्द और ईमानवाली औरतों को देखेगा उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ़ दौड़ती है आज तुम लोगो के लिये खुशी है (बैकुण्ठ के) बाग़ है जिनके नीचे नहरे बहरही है इन्हीं में सदा रहोगे यह बड़ी कामयाबी है। (१२)

जिस दिन मुनाफ़िक (कपटी) मनुष्य और मुनाफ़िक औरतें ईमान वालों से कहेंगी कि हमारा इंतिज़ार करो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ लेलें। कहा जायगा अपने पीछे की तरफ़ लौट जाओ और रोशनी तलाश करलो। इसके बाद इन (दोनों फ़रीक़ों) के बीच में एक दीवार खड़ी करदी जायगी उसमें एक दरवाज़ा होगा उसमें भीतरी तरफ़ कृपा होगी और उसकी बाहरी तरफ़ सज़ा होगी। (१३) वह (मुनाफ़िक़) ईमान वालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे वह कहेंगे थे तो सही मगर तुम ने अपने आप को बला में डाला और तुम राह देखते थे और शक करते थे और ख़यालों पर धोखे में रहे यहांतक कि खुदा की आज्ञा आ पहुंची और (शैतान) दग़ाबाज़ ने तुम को अल्लाह के विषय में धोखा दिया। (१४) सो आज न तो तुम से छुड़वाई का बदला क़बूल किया जायगा और न उनलोगों से जो इन्कार करते रहे। तुम सब का ठिकाना नरक है वही तुम्हारा दोस्त है और वही तुम्हारा बुरा ठिकाना है। (१५) क्या ईमानवालों के लिये वक्त नहीं आया कि खुदा का ज़िक्र और कुरान के पढ़ने के लिये जो सच्चे खुदा की तरफ़ से उतरा है उनके दिल पिघलें और यह उन लोगों की तरह न होजावें जिनको पहिले किताब दीगई थी। फिर उनपर एक मुद्दत गुज़रगई और उनके दिल सख़्त होगये और उनमें के बहुत बेहुक्म हैं। (१६) जाने रहो कि अल्लाह ज़मीन को उसके मरे पीछे जिलाता है हम ने तुम्हारे लिये आयतें बयान की हैं ताकि तुम्हें समझ हो। (१७) बेशक खैरात करनेवाले और खैरात करनेवालियां और (जो लोग) खुदा को खुशदिली से उधार देते हैं उन्हें दूना मिलेगा और उनको प्रतिष्ठा का फल मिलेगा। (१८) और जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमानलाये वहीलोग अपने पालनकर्त्ता के नजदीक सच्चे और गवाह हैं उनको उनका

फल और उनकी रोशनी (नूर) मिलैगी और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते हैं यहीलोग नरक बासी हैं। (१६) [रुकू ३] (लोगो) जानेरहो कि इस दुनियां को जिन्दगी खेल और तमाशा और ज़ाहिरी शोभा और आपस में एक दूसरे पर घमण्ड करना और माल और औलाद बढ़ाना है यह मेंह की तरह है कि काश्तकार खेती को देखकर खुशियां करने लगते हैं फिर (पककर) खुश्क होजाती है तो उसको देखता है कि पोली पड़गई है। फिर रूंदनमें आजाती है और पिछले घरमें सख़्त सज़ा है। और अल्लाह से रज़ामन्दी और माफ़ी भी है और दुनियां की ज़िन्दगी तो निरे धोखे की टट्टी है। (२०) (लोगो) अपने पालनकर्त्ता की बखशिश को तरफ लपको और बैकुण्ठ की तरफ़ (लपको) जिसका फैलाव है जैसे आस्मान जमीन का फैलाव (और वह) उन लोगों के लिये तैयार कराई गई है जो खुदा और उसके पैगम्बरों पर ईमान लाते है। यह खुदा को कृपा है जिसको चाहे देवे और अल्लाह की कृपा बहुत बड़ी है। (२१) (लोगो) जितनी मुसीबतें जमीन पर उतरती है और जो तुम पर उतरती हैं (वह सब) उनके पैदा करने से पहिले हमने किताबमें लिख रखी हैं। बेशक यह अल्लाहके पास सहलहै। (२२) (और यह हमने तुमको इसलिये जताया) ताकि कोई वस्तु तुमसे जातीरहे तो उसका रंज न करो और कोई चीज खुदा तुमको देवे तो उसपर इतराओ मत और अल्लाह किसी इतराने वाले शेखीबाज को पसंद नहीं करता। (२३) कि जो लोग कंजूसी करते हैं और (दूसरे) लोगों को कंजूसी सिखाते हैं और जो मनुष्य (इन शिक्षाओं से) मुंह फेरेगा तो कुछ शक नहीं अल्लाह बे नियाज़ तारीफ के लायक है। (२४) हमने अपने पैगम्बरों को खुले खुले चमत्कार देकर भेजा और उनकी मारफत किताबे उतारी और तराज़ू ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम

रहें और लोहा पैदा किया उसमें बड़ा खटका है और (उसमें) लोगों के फ़ायदे हैं और एक मतलब यह भी है कि अल्लाह उन लोगों को मालूम करले जिन्हों ने (अल्लाह) को देखा नहीं फिर भी अल्लाह और उसके पैग़म्बरों की मदद को खड़े होजाते हैं। बेशक अल्लाह बली ज़बरदस्त है। (२५) [रुकू ४] और हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी संतान में पैग़म्बरी और किताब को रक्खा। फिर उनमें से कोई राह पर हैं और बहुतेरे उनमें बेहुक्म हैं। (२६) फिर (उनके) पीछे उन्हीं के क़दम ब क़दम हमने अपने (और) पैग़म्बर भेजे और (उनके) पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इंजील दी और जो लोग उनके मुरीद हुये उनके दिलों में रहम और तरस डाल दिया और दुनियां का छोड़ बैठना जिसको उन्होंने अपने आप पैदा किया था हमने वह उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था। मगर (उन्हों ने) खुदा की प्रसन्नता हासिल करने के लिये लेकिन जैसा उसको निबाहना चाहिये था न निबाह सके तो जो लोग इन में से ईमानलाये हमने उनको उनका फल दिया और इनमें से बहुतेरे तो बेहुक्म हैं। (२७) हे ईमान-वालो अल्लाह से डरते रहो और उसके पैग़म्बर (मुहम्मद) पर ईमान लाओ कि वह अपनी कृपा में से तुम को दुहरा हिस्सा दे और तुम को ऐसा नूर देवे जिसकी रोशनी में चलो और तुम्हें क्षमा करेगा और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२८) (और यह तुमसे इसलिये कहाजाता है) कि किताब वाले जान रक्खें कि वह खुदा की कृपा पर कुछ भी अधिकार नहीं रखते और इसी लिये कि कृपा अल्लाह के हाथ है जिसको चाहे देवे और अल्लाह की कृपा बड़ी है। (२९)।

——:०:——

अट्ठाईसवां पारा।

—:०:—

सूरे मुजादिला।

मदीने में उतरी इसमें २२ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] (हे पैग़म्बर) अल्लाहने उस औरत की बात सुनली जो अपने पतिके विषय में तुमसे झगड़ती और खुदासे शिकायत करती थी और अल्लाह तुम दोनो की बातचीत को सुन रहाथा। बेशक अल्लाह सुननेवाला देखनेवालाहै। (१) जो लोग तुममेसे अपनी बीवियो को मां कह बैठते है वह तो उनकी मां नही हो जाती। उनकी मातायें तो वहीहै जिन्होने उनको जनाहै और उन्होने एक बेहूदा और झूठी बातकही और अल्लाह क्षमाकरनेवाला माफ़ करनेवालाहै। (२) और जो लोग अपनी बीवियो से मां कह बैठते है फिर जो कहा था उससे फिरना चाहते है तो एक दूसरे को हाथलगाने से पहिले एक गुलाम छोड़ना होगा। यह तुमको शिक्षा दीजाती है और खुदा तुम्हारे कामोंकी खबर रखता है। (३) फिर जो यह न करसके तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहिले लगातार दो महीने के रोज़े रक्खे और जो यह न करसके तो साठ ग़रीबो को खाना खिलादे। यह (आज्ञा) इसलिये है कि तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लेआओ। यह अल्लाहकी बान्धीहुई हद्दे हैं और काफ़िरो को दु खदाई सज़ा है। (४) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरके विरुद्ध आचरण करते हैं वह ख़्वार हुए जैसे इनसे पहिले लोग ख़्वार हुये थे और हमने साफ़ आयतें उतारी और काफिरोके लिये ख़्वारी की सज़ा है। (५) जब अल्लाह इन सबको (जिला) उठायेगा फिर जैसे जैसे कर्म यह

लोग करते रहे हैं इनको बतादेगा । अल्लाह तो उनके कर्मोको गिनता गया और यह उनको भूलगये और अल्लाह सब चीजोंका निगरां है। (६) [रुकू २] (हे पैग़म्बर) क्या तूने न देखा कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीनमें है अल्लाह सबसे जानकार है जब तीन (आदमी) का मशवरा होता है तो अवश्य उनका चौथा वह होता है और पांच का (सलाह मशवरा) होता है तो ज़रूर उनका छटा वह होताहै और इससे कम हों या ज़ियादा कहीं भी हों वह अवश्य उनके साथ होताहै फिर जैसे जैसे कर्म यह करते रहे हैं क़यामत के दिन वह उनको जतादेगा अल्लाह हरचीज़को जानताहै। (७) (हे पैग़म्बर) क्या तूने उन लोगों को नही देखा जिनको कानाफूँसी करनेसे मनाकर दियागया था । फिर जिससे उनको मने करदिया गया था लौटकर वही करते हैं । और वह पाप और ज़ियादती करने की और पैग़म्बर से सरकशी करने की कानाफ़ूसी करते हैं और जब यह तेरे पास आते हैं तो ऐसी दुआ देते हैं जैसी अल्लाह ने तुझे दुआ नही दी और यह अपने जीमें कहते हैं कि हमारे कहने पर खुदा हमको सज़ा क्यों नहीं देता। इनके लिये नरक काफ़ी है वह उसीमें दाखिल होंगे और वह बुरी जगह है । (८) हे मुसलमानो ! जब तुम सलाहकरो तो पापकी और ज़ियादती करने की और पैग़म्बर की बेहुक्मी की बातें एक दूसरे के कानमें न कियाकरो। हां नेकी और परहेज़गारीको एक दूसरे के कानमें कहदो और अल्लाहसे डरते रहो जिसके सामने इकट्ठा होनाहै । (९) ऐसी कानाफूंसी तो एक शैतानी हरकतहै ताकि जो ईमानलाये हैं उदास होवें। हालांकि बेहुक्म खुदा उनको कुछ भी नुकसान नहीं पहुँचासक्ते और ईमानवालों को चाहिये कि अल्लाहही पर भरोसा रक्खें । (१०) हे ईमानवालो जब तुमसे कहाजावे कि मजलिस में खुल २ कर बठो तो तुम जगह छोड़ २ कर बैठो । खुदा तुम्हारे लिरे ज़ियादह करदेगा और जब

कहाजाय उठखड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो। जो लोग तुममें से ईमान रखते हैं और इलमदार हैं अल्लाह उनके दर्जे ऊंचे करेगा और जो कुछ तुम करतेहो अल्लाहको उसकी खबरहै। (११) हे ईमानवालो जब तुमको पैग़म्बर के कानमें कोई बात कहनी हो तो अपनी बात कहने से पहिले कुछ खैरात (पुण्य) लाकर आगे रखदियाकरो। यह तुम्हारे लिये भलाई है और ज़ियादह पाक है फिर अगर तुम यह न करसको तो अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है। (१२) क्या तुम (पैग़म्बर के) कानमें बात कहने से पहिले कुछ पुण्य लाकर आगे रखने से डरगये तो जब तुम (ऐसा) न करसको तो खुदाने तुम्हारा यह अपराध क्षमा करदिया तो नमाज़ेंपढ़ो और ज़कातदो और अल्लाह और उस पैग़म्बर का हुक्म मानो और जो कुछ तुम करतेहो अल्लाहको उसकी खबरहै। (१३) [रुकू २] क्या तूने उन्हें नहीं देखा जिन्होंने ऐसे मनुष्यों से दोस्तीकी जिनपर खुदाका क्रोध है यह लोग न तुममें हैं न उन्हींमें और वह जान बूझकर झूठी बातोंपर क़समें खाते हैं। (१४) उनके लिये खुदाने सख्त सज़ा तय्यारकर रक्खी है इसमें शक नहीं कि यह मनुष्य बुरा करते हैं। (१५) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रक्खाहै और यह खुदाकी राहसे लोगोंको रोकते हैं तो उनके लिये ख्वारी की सज़ाहै। (१६) अल्लाहके यहां न इनके माल कुछ इनके काम आवेंगे और न इनकी औलाद यह नरकगामी मनुष्यहैं सो हमेशा नरकही में रहेंगे। (१७) जिसदिन अल्लाह इन सबको (जिला) उठावेगा तो यह उसके आगे क़समें खावेंगे जैसे यह मुसलमानों के आगे क़समें खाया करते हैं और समझते हैं कि खूब कररहे हैं। बेशक यही लोग झूठे हैं। (१८) शैतानने इनपर काबू जमाया है और इसने इन्हें खुदाकी याद भुलादी है यह शैतानी गिरोह है नाश होगें। (१९) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर से विरोध करते हैं वही सबसे

ज़ियादह ज़लील होंगे । (२०) खुदा तो लिखचुकाहै कि हम और हमारे पैग़म्बर जबर रहेंगे। बेशक अल्लाह ज़ोरावर ज़बरदस्तहै ।(२१) (हे पैग़म्बर) जो लोग अल्लाह और अखीर दिनका विश्वास रखते हैं उनको न देखोगे कि खुदा और उसके पैग़म्बर के दुश्मनों के साथ दोस्तीरक्खें जो वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके बंशही के हों । यही हैं जिनके दिलों के अन्दर खुदाने ईमान लिख दियाहै और अपनी गुप्त कृपासे उनकी मददकीहै और वह उनके बागोंमें लेजाकर दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहरहीं होंगी वह हमेशा उन्हींमें रहेंगे । खुदा उनसे खुश और वह खुदासे खुश यह खुदाईगिरोहहै ।बेशक खुदाई गिरोहही की जीत होगी। (२२) ॥

———:o:———

सूरे हशर ।

मदीने में उतरी इसमें २४ आयतें ३ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है ।

[रुकू १] जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ जमीन में है सब अल्लाह की माला फेरते हैं और वह बली हिकमत वाला है। (१) वही है जिसने किताब वालों में से इन्कारियों (बुज़ेर यहूद की संतान) को उनके घरों से (जो मदीने में बसते थे) पहिले हशर के लिये निकाल बाहर किया (मुसलमानो) तुम यह न ख्याल करते थे कि यह निकलेंगे और वह इस ख्याल में थे कि उनके किले उनको खुदा के मुकाबिले में बचालेंगे। तो जिधर से उनका ख्याल भी न था खुदा ने उनको घेर लिया और उनके दिलों में धाक (रोब) बैठादी कि उन्होंने अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों से खराब करडाला तो हे आंखोंवालो शिक्षा पकड़ो । (२) और अगर खुदा ने देश निकाले की सजा न लिखी

होती तो वह उनको दुनियां में सजा देता और अन्तमें उनको नरक की सज़ा है। (३) यह इस सबब से कि इन्होंने खुदा और उसके पैग़म्बर की दुश्मनी की और जो खुदा से दुश्मनी करे तो खुदा की मार सख्त है। (४) (मुसलमानो इनके) खजूरों के दरख्त जो तुमने काट डाले या इनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया (ठूंठ कर दिया) तो यह खुदाही के हुक्म से था और इसलिये कि बदकारों को ज़लील करे। (५) और जो (माल) खुदाने अपने पैग़म्बर को (बे लड़े) मुफ्तमें उनसे दिलवादिया हालांकि तुमने उसके लिये न तो घोड़े दौड़ाये और न ऊंट मगर अल्लाह अपने पैग़म्बरोंमें से जिसको चाहे जतादेता है और अल्लाह हरचीज़पर शक्तिमान है। (६) जो (माल) अल्लाह अपने पैग़म्बर को बस्तियों के लोगोंसे दिलादे सो अल्लाह का और पैग़म्बर का और रिश्तेदारों का और अनाथों का और ग़रीबों का और यात्रियों का है। यह इसलिये कि जो तुममें से धनी हैं यह माल उन्हीं के लेने देने में आता जाता रहे और जो चीज पैग़म्बर तुमको देदिया करे वह लेलियाकरो और जिस चीजसे मना करे उससे रुकेरहो। खुदासे डरो। खुदाकी मार बड़ी सख्त है। (७) यह (लूट का माल) तो ग़रीब देश त्यागियों के लिये है जो अपने घर और माल

मुराद (मन चाहा) पावेगा। (९) और वह माल उनके लिये है जो इन (देश त्यागियों) के बाद आये; कहते हैं कि हमारे पालन-कर्त्ता हमको और हमारे इन भाइयों को भी जो हमसे पहिले ईमान लाये क्षमाकर और हमारे दिलों में ईमानवालों की बुराई न डाल। हे हमारे पालनकर्त्ता तूही मिहर्बान और दया करने वाला है। (१०) [रुकू २] (हे पैग़म्बर) तू ने उन लोगोंको न देखा जो मुनाफ़िक़ (दगाबाज़, कपटी) हैं किताब वालों में से काफ़िरों से कहते हैं कि अगर तुम निकाले जाओगे तो हम भी तुम्हारे साथ निकल आवेंगे और तुम्हारे सम्बन्ध में हम कभी किसी का कहना न मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई होगी तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और अल्लाह गवाही देताहै कि वह झूठेहैं। (११) अगर वह निकाले जावें यह उनके साथ न निकलेंगे और उनसे लड़ाई हुई यह कभी इनकी मदद न करेंगे और जो मदद देंगे तो पीठ देके भागेंगे फिर कहीं मदद न पावेंगे। (१२) इनके दिलों में तुम्हारा डर खुदासे भी बढ़कर है। यह इस सबबसे है कि यह लोग ना समझहैं। (१३) यह सब मिल-कर भी तुमसे नहीं लड़सक्ते मगर क़िलेवाली बस्तियों में या दीवारों की आड़से। आपस में इनकी बड़ी धाक है तू इनको एक समझता है हालांकि इनके दिल फटे हुए हैं यह इसलिये कि यह बेसमझ हैं। (१४) इनकी मिसाल उनकैसी मिसाल है जो थोड़ेही- दिनों पहिले अपने किये का मज़ह चाख चुके और इनको दु:खदाई सज़ा है। (१५) इनकी मिसाल शैतान कैसी मिसाल है जब वह आदमी से कहता है कि इन्कारी हो। फिर जब वह इन्कारी हुआ तो कहता है कि मुझको तुझसे कुछ मतलब नहीं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो संसार का पालनकर्त्ता है। (१६) तो इन दोनों का परिणाम यही होना है कि दोनों नरक में जावेंगे। उसी में हमेशा रहना होगा और सरकशों की यही सज़ा है। (१७)

[रुकू ३] मुसलमानो ! खुदा से डरते रहो और हर आदमी का ख्याल रखना चाहिये कि उसने कलके लिये क्या कर रक्खा है और खुदा से डरो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१८) और उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने खुदा को भुला दिया तो खुदा ने भी वैसा किया कि यह अपने आप को भूलगये। यही लोग बे हुक्म हैं। (१९) नरकवासी और वैकुण्ठवासी बराबर नहीं। वैकुण्ठवासी ही कामयाब हैं। (२०) (हे पैग़म्बर) अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि खुदा के डरके मारे झुक गया और फट पड़ा होता और हम यह मिसाल लोगों के लिये बयान फर्माते हैं ताकि वह सोचें। (२१) वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला बड़ा मिहर्बान रहमवाला है। (२२) वही अल्लाह जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। बादशाहहै, पाकहै, निर्दोष है, शान्तिदाता निरीक्षक है, शक्तिवाला है, बड़ा तेजस्वी है। यह लोग जैसे २ शिर्क (ईश्वर की जाति व गुण में साझा) करते हैं अल्लाह उससे पाक है। (२३) वही अल्लाह पैदा करनेवाला, बनाने वाला, सूरतें देनेवाला है। उसके सब नाम अच्छे हैं जो कुछ ज़मीन आस्मानो में हैं वह उसी की माला फेरा करते हैं और वह ज़ोरावर हिकमतवाला है। (२४)

—:*:—

सूरे मुम्तहना।

मदीने में उतरी इसमें १३ आयतें और २ रुकूहैं।

अल्लाहके नाम पर जो रहमवाला मिहर्बानहै।

[रुकू १] हे ईमानवालो ! अगर तुम हमारी राह में जहाद (जायज़ दीनी कोशिश या लड़ाई) करने और हमारी रज़ामन्दी

ढूंढने के लिये (अपना देश छोड़कर) निकले हो तो हमारे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ। तुम तो उनकी तरफ़ मुहब्बत के पैग़ाम भेजते हो हालांकि तुम्हारे पास जो सच बात आई है वह उससे इन्कार करते हैं। पैग़म्बर को और तुमको इस बातपर निकालते हैं कि तुम खुदा पर जो तुम्हारा पालनकर्त्ता है ईमान लायेहो। तुम छिपाकर उनकी तरफ़ प्रेम (मुहब्बत) के संदेशे भेजते हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो और जो कुछ ज़ाहिरा करते हो हम खूब जानते हैं और जो कोई तुम में से ऐसा करे सो वह सीधीराह से भटक गया। (१) और वह तुम्हें पावें तुम्हारे दुश्मन होजावें और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ चलायँगे और बुराई के साथ अपनी ज़बान भी और चलायँगे कि तुम भी काफ़िर होजाओ। (२) क़यामत के दिन न तुम्हारी रिश्तेदारी तुमको काम आवेगी और न तुम्हारी सन्तान (औलाद) वह तुममें फैसला करदेगा और खुदा तुम्हारे कामोंको देखनेवाला है। (३) इब्राहीम मे और उसके साथियों में तुम्हारे लिये अच्छा नमूना है । जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम तुम से और जिनको तुम अल्लाह के सिवाय पूजते हो उनसे अलग हैं। हम तुमको नहीं मानते और हममें तुममें दुश्मनी और वैर हमेशा के लिये खुल पड़ा जबतक तुम अकेले खुदा पर ईमान न लेआओ मगर इब्राहीम का कहना बाप के लिये यह था कि मैं तेरेलिये क्षमा मांगूंगा हालांकि खुदा के आगे तेरे लिये मेरा कुछ ज़ोर तो चलता नहीं। हे हमारे पालनकर्त्ता हम तुझी पर भरोसा करते हैं और तेरी ही तरफ ध्यान धरते हैं और तेरीही तरफ़ लौटकर जाना है। (४) हे हमारे पालनकर्त्ता हम पर काफ़िरों को न जांच और हे हमारे पालनकर्त्ता हमको क्षमा कर तू बली हिकमतवालाहै। (५) तुमको उनकी भली चाल चलनी है जो अल्लाह पर और आखिरी दिन पर उम्मेद रखते हैं और जो कोई मुंह फेरे तो खुदा बेपरवाह और

तारीफ़ के लायक़ है। (६) [रुकू २] अजब नहीं कि अल्लाह तुम में और काफिरों में जिनके साथ तुम्हारी दुश्मनी है दोस्ती पैदाकरदे और अल्लाह सब करसक्ता है और अल्लाह क्षमाकरने वाला मिहर्बान है। (७) जो लोग तुमसे दीन में नहीं लड़े न उन्होंने तुम को तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ भलाई करने और न्याय का बर्ताव करने से ख़ुदा तुमको मना नही करता। अल्लाह न्याय पर चलनेवालों को चाहता है। (८) अल्लाह तुम्हें उनको दोस्ती से मना करता है जो तुम से दीन के बारे में लड़े और जिन्होंने तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में दूसरों की मदद की और जो कोई ऐसों की दोस्ती रखे तो वही लोग जालिम हैं। (९) हे ईमानवालो जब तुम्हारे पास ईमानवाली औरतें घर छोड़कर आवें तो उनको जांचलो अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है अगर तुम्हें मालूम हो कि वह ईमान वाली है तो उनको काफिरों के पास न फेरो। वह काफ़िरों को हलाल नही और न काफिर उन्हें हलाल है और जो उन काफिरों ने ख़र्च किया है उनको देदो और तुम पर पाप नहीं कि उन औरतों से निकाह (ब्याह) करो जब कि तुम उनको उनके मिहर (पति का क़रार स्त्री के लिये) देदो और तुम काफिर औरतों का निकाह न थाम रक्खो और जो तुम ने ख़र्च किया है मांगलो और उन काफिरों ने जो ख़र्च किया है वे भी मांगले। यह अल्लाह का हुक्म है जो तुम्हारे बीच फैसला करता है। अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से काफिरों की तरफ़ कोई औरत निकलजावे फिर तुम काफिरों को सज़ा मारो (यानी लड़ाई करके लूटो तो लूट के माल में से) उनको जिनकी औरतें जाती रही हैं उतना माल देदो जितना उन्होंने ख़र्च किया था और अल्लाह से डरो जिसपर ईमान लाये हो। (११) हे पैग़म्बर जब तेरे पास

मुसल्मान औरतें आवें और इस पर तेरी चेली बनना चाहें कि किसी चीज़को अल्लाहका साझी नहीं ठहरावेंगी और न चोरी करेंगी और न बद्कारी (व्यभिचार) करेंगी और न लड़कियों को मारडालेंगी और न अपने हाथ पांव के आगे कोई लफट बनाकर खड़ा करेंगी और न अच्छे कामों में तुम्हारी बेहुक्मी करेंगी तो (इन शर्तों पर) तुम उनको चेली बना लिया करो और खुदा के सामने उनके लिये क्षमा की प्रार्थना करो और अल्लाह क्षमा करनेवाला दयालु है। (१२) हे मुसल्मानो ऐसे लोगों से दोस्ती न करो जिनपर खुदा का कोप है। यह तो पिछले दिन से ऐसे आश तोड़ बैठे हैं जैसे काफ़िर क़ब्रवालों (के जी उठने) से निराश हैं। (१३)।

सूरे सफ़।

मदीने में उतरी इसमें १४ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह की पाकी बोलने (माला फेरने) में लगे हैं और वही ज़बरदस्त हिक्मतवाला है। (१) हे ईमानवालो क्यों मुहँ से कहते हो जिसको तुम नहीं करते। (२) अल्लाह को सख्त ना पसंद है कि कहो और करो नही। (३) बेशक खुदा उन लोगों को प्यार करता है जो उसकी राह में क़तार बान्धकर लड़ते हैं। वह गोया एक दीवार है जिसमें शीशा पिला दियागया है। (४) और जब मूसाने अपनी क़ौमसे कहा कि भाइयो मुझे क्यों सतातेहो हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ खुदाका भेजा हुआ हूं तो जब यह टेढ़े होगये, खुदाने उनके दिल टेढ़े करदिये और खुदा बे हुक्म लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (५) और जब मरीयम के

बेटे ईसाने कहा कि हे इसराईल के बेटो मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ आया हूं । तौरात जो मुझसे पहिले है उसकी सच्चाई करता हूं और एक पैग़म्बर की खुशखबरी देताहूं जो मेरे बाद आयगा उसका नाम अहमद होगा । फिर जब वह खुली निशानियां लेकर आया वह बोले कि यह तो साफ़ जादू है । (६) और उससे बढ़कर कौन ज़ालिम है जिसने अल्लाह पर झूठ बान्धा हालांकि वह इस्लाम (मुसलमानीमत) की तरफ़ बुलायाजाये और खुदा ज़ालिम लोगो को हिदायत नही करता । (७) अल्लाह की रोशनी मुहँ से बुझादेना चाहते है और अल्लाह को अपनी रोशनी पूरी करनी है हालांकि काफिरों को यह बुराही लगे । (८) वही है जिसने अपना पैग़म्बर शिक्षा और सच्चा मत (दीन) देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनों पर जयदे और शिर्क करनेवाले को भलेही बुरा लगे । (९) हे ईमानवालो मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊं जो तुमको दुःखदाई सजा से बचादे । (१०) खुदा और उसके पैग़म्बर पर ईमानलाओ और खुदाकी राहमे अपने माल और अपनी जानो से कोशिशकरो यह तुम्हारे लिये भलाहै अगर्चि तुम्हें समझ हो । (११) वह तुमको तुम्हारे पाप क्षमा करदेगा और तुम्हें बागों मे दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहरही होगी। हमेशगी के बागों (बैकुण्ठ) में अच्छे मकान है यही बड़ी कामयाबी है । (१२) एक और चीज़ जिसे तुम पसंद करोगे यानी खुदाकी तरफ से मदद और थोड़ेही दिनो में एक जीत और ईमानवालो को खुशखबरी सुनादे । (१३) और ईमानवालो खुदाकी मदद करनेवाले होजाओ जैसे मरीयम के लड़के ईसाने हव्वारियों से कहाथा कि अल्लाह की तरफ़ मेरा कौन मददगार है फिर इसराईल की सतान मेसे एक गिरोह ईमानलाया और एकने इन्कारी की । तो जो लोग ईमान लायेथे हमने उनको उनके दुश्मनो के मुकाबिले में मदददी और उनकी जीत हुई । (१४)

सूरे जुमा।

मदीने में उतरी इसमें ११ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाहके नाम से जो मिहर्वान रहमवाला है।

[रुकू १] जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह की पाकी बोलनेमें लगेहैं जो बादशाह ज़ोरावर हिक्मतवाला है। (१) वहीहै जिसने मूर्खों में उनमें का एक पैग़म्बर भेजा कि वह उनको उसकी आयतें पढ़ २ कर सुनाये और उनको पाककरे और उनको किताब और हिक्मत (तदबीरें)सिखायें हालांकि इससे पहिले वह ज़ाहिरा गुमराही में थे। (२) और दूसरों में (यानी अजम के लोगों में यानी यह पैग़म्बर अजम के लोगो मेंसे भी है) जो अभी उन अर्बियों में नही मिले और वह बली हिक्मतवाला है । (३) यह खुदाकी कृपाहै जिसे चाहे देवे और अल्लाह की कृपा बड़ी है। (४) जिन लोगों पर तौरात लादीगई। फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया तो उनकी मिसाल किताब लादे हुए गधेकैसी है । जो लोग खुदाकी आयतों को झुठलाते हैं उनकी मिसाल बड़ीबुरी है और खुदा जालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (५) तो कह कि हे यहूद अगर तुमको दावा है कि तमाम आदमियों मेसे तुम्हीं खुदाके दोस्तहो तो अगर तुम सच कहते हो तो मौतको मनाओ। (६) उन कामों के कारण से जो आगे हाथों करचुके है वह कभी मौत को न मनायेंगे और अल्लाह अन्यायियों को जानताहै। (७) तो कह कि मौत जिससे तुम भागते हो वह ज़रूर तुम्हारे सामने आवेगी। फिर तुम गुप्त और प्रत्यक्ष जाननेवाले खुदाकी तरफ लौटाये जाओगे और वह तुमको तुम्हारे काम बतावेगा। (८) [रुकू २] हे ईमानवालो जब तुम (शुक्र) के दिन नमाज़ के लिये अज़ां दीजावे तो अल्लाह की यादको दौड़ो और बेचना छोड़दो अगर तुमको

समझ है तो यह तुम्हारे लिये भलाहै। (९) फिर जब नमाज़ ख़त्म होजावे तो अपनी २ राह लो और ख़ुदा की याद में लग-जाओ और अधिकता से ख़ुदा की याद करते रहो ताकि तुम छुट-कारा पाओ। (१०) और जब यह तिजारत या खेल देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़जाते हैं और तुझको खड़ा छोड़देते हैं तो कह कि जो कुछ ख़ुदा के यहां है वह खेल और तिजारत से भला है और अल्लाह रोज़ी देनेवालों में सबसे अच्छा है। (११)।

—— :o: ——

सूरे मुनाफ़िक़ून।

मदीने में उतरी इसमें ११ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] जब तेरे पास मुनाफ़िक आते हैं तो यह कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि तू बेशक ख़ुदा का पैग़म्बर है और ख़ुदा जानता है कि तू उसका पैग़म्बर है। मगर ख़ुदा गवाही देता है कि मुनाफ़िक बेशक झूठे हैं। (१) यह अपनी क़स्मों को ढाल बनाते हैं और लोगों को ख़ुदा की राह से रोकते हैं। ये लोग बुरे काम करते हैं। (२) यह इसलिये कि अब वह ईमान लाये पीछे फिर काफ़िर होगये हैं तो उनके दिलों पर मुहर करदी गई है और वह नहीं समझते। (३) और जब तू उनको देखता है तो तुझको उनके शरीर अच्छे मालूम होतेहैं और अगर यह बात करते हैं तो तू उनकी बातों को सुनता है। वह गोया लकड़ी के कुन्दे हैं जो दीवार से लगेहुये हैं जानते हैं कि हरएक बला उन्हीं पर आई। यह दुश्मन हैं पस इनसे बच। ख़ुदा उनको मार दे यह किधर को फिरे जारहे हैं। (४) और जब इनसे कहाजाता है कि आओ ख़ुदा के पैग़म्बर तुम्हारे लिये माफ़ी मांगे तो अपने सिर मटकाते

है और तू उनको देखेगा कि रोकते और ग़रूर करते हैं। (५) उनके लिये बराबर है चाहे उनके लिये क्षमा मांग या न मांग ख़ुदा उनको कदापि क्षमा न करेगा बेशक ख़ुदा बेहुक्म लोगों को राह नहीं देता। (६) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग ख़ुदा के रसूल के पास रहते हैं उनपर खर्च न करो यहांतक कि वह उसको छोड़ कर चलदें और आस्मान और ज़मीन के खज़ाने अल्लाह ही के हैं। मगर मुनाफ़िक नहीं समझते। (७) यह कहते हैं अगर हम मदीने फिर गये तो जिनका ज़ोर है वहां से वह ज़लील लोगों को ज़रूर निकाल देंगे और ज़ोर अल्लाह का; पैग़म्बर का और ईमानवालों का है लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं समझते। (८) [रुकू २] हे ईमान वालो तुमको तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करे और जो कोई करेगा तो वही टोटे में रहेगा। (९) और जो कुछ हमने तुम को दिया है उसमें से खर्च करो पहिले इसमे कि तुममें से किसी को मौत आजावे और वह कहे कि हे मेरे पालनकर्त्ता तू ने मुझको थोड़े दिन और क्यों न ढील दिया कि मै खैरात करता और नेक लोगों में से होता। (१०) और जब किसी जीव का काल आजावेगा तो ख़ुदा उसको हरगिज़ न ढीलेगा और खुदा तुम्हारे कामों की खबर रखता है। (११)।

——:•:——

सूरे तग़ाबुन।

मदीने में उतरी इस में १८ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] जो कुछ आस्मानोंमें है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाहकी पाकी बोलने में लगे हैं उसीका राज्य है और वह हर चीज़पर शक्तिमान है। (१) वही है जिसने तुमको पैदा किया। फिर

कोई तुममें इन्कारी है और कोई ईमानदार और जो करतेहो अल्लाह देखता है। (२) आस्मान और ज़मीनको तदबीर से बनाया और उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं। और तुम्हारी अच्छी सूरते खेंची और उसीकी तरफ़ लौटकर जानाहै। (३) वह जानताहै जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमेंहै और वह जानताहै जो तुम छिपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो और खुदा दिलोंकी बातें जानताहै । (४) क्या तुम्हारे पास इन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहिले इन्कार किया था और अपने कामों के बबाल का मज़ह चक्खा और उनको दुःखदाई सज़ा होनी है। (५) यह इसलिये कि उनकेपास उनके पैग़म्बर खुली दलीलें लेकर आये और बोले कि क्या आदमी हमें राह दिखायँगे और उन्होंने (पैग़म्बर को) न माना और मुंह फेरा और अल्लाह ने परवाह न की और खुदा बे परवाह तारीफ़ के लायक़ (योग्य) है। (६) काफ़िरों ने अभिमान किया कि वे उठाये न जावेंगे। तू कह हां! मुझे अपने पालनकर्त्ता की क़सम तुम उठाये जाओगे फिर तुम्हें जताया जावेगा जो तुम करतेथे और यह अल्लाह पर आसान है। (७) तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है और जो तुम करते हो अल्लाहको उसकी ख़बर है । (८) इकट्ठा करने के दिन, जिसदिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा यह दिन हार जीतकाहै और जो कोई खुदापर ईमानलाये और नेक कामकरे तो वह उससे उसकी बुराइयां दूरकरेगा और उसको बैहश्त में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं उसमें वह हमेशा रहेंगे यह बड़ी कामयाबी है। (९) और जो काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया वह नरकवासी हैं। उसमें हमेशा रहेंगे और यह बुरी जगह है। (१०) [रुकू २] अल्लाह के हुक्म बिना कोई आफ़त नहीं आती और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे खुदा उसके दिलको ठिकाने में

लगाये रक्खेगा और अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (११) और अल्लाह की और पैग़म्बर की आज्ञा मानो; फिर अगर तुम मुंह मोड़ो तो पैग़म्बर का काम तो साफ़ २ पहुंचा देना है। (१२) अल्लाह है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं और ईमानवालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (१३) हे ईमानवालो तुम्हारी कोई २ जोरुयें (बीबियां) और संतान तुम्हारे दुश्मन हैं सो उनसे बचते रहो और जो क्षमा करो और दरगुज़र करो और बख्श दो तो खुदा भी बख्शने वाला और रहम करने वाला है। (१४) तुम्हारा धन और संतान तुम्हारी जांच के लिये है और खुदा के यहां बड़ा फल है। (१५) तो अल्लाह से डरो जितना डरसको और सुनो और मानो और अपने भले को खर्च करो और जो कोई अपने जी के लालच से बचा वही लोग मुराद पावेंगे। (१६) अगर तुम अल्लाह को खुशदिली से उधार दो तो वह तुम को उसका दूना करदेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह क़द्र जानने वाला दयालु है। (१७) गुप्त और प्रत्यक्ष का जानने वाला बली हिकमतवाला है। (१८)।

सूरे तलाक़।

मदीने में उतरी इसमें १२ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे पैग़म्बर जब तुम बीबियों को तलाक देना चाहो तो उनको उनकी इद्दत के शुरूमें तलाक़ दो और तलाक के बादही से [1]इद्दत गिनने लगो और खुदासे जो तुम्हारा पालनकर्त्ता है डरतेरहो उन्हें उनके घरोंसे न निकालो और वह खुद न निकलें परन्तु जब वह

---

(१) इद्दत उस मुद्दत को कहते हैं जिसमें तलाक दीहुई औरत या जिसका पति मरगया है ब्याह नहीं करसक्ती ॥

खुल्लमखुल्ला बेशर्मी का काम करबैठें। (तो उनके निकालने में हर्ज नहीं) यह अल्लाह की-बान्धी हद्दे हैं और जिस मनुष्यने अल्लाह की हद्दोंसे कदम बाहर रक्खा तो उसने अपने ऊपर जुल्म किया। कौन जाने शायद अल्लाह तलाक़ के बाद कोई सूरत पैदा करदे। (१) फिर जब वह अपनी इद्दत पूरी करले तो दस्तूर के मुआफिक़ उनको रक्खो या दस्तूर के बमूजिब उनको विदा करदो और अपने में से दो विश्वासनीय आदमियों को गवाह करलो और खुदाके आगे गवाही पर क़ायम रहो। यह उसको शिक्षा की जाती है जो खुदापर और क़यामतपर ईमान रक्खे और जो कोई खुदासे डरे तो वह उसके लिये राह निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देगा जहां से उसको ख्याल भी न हो। (२) और जो मनुष्य खुदापर भरोसा रक्खेगा तो खुदा उसको काफ़ी है। अल्लाह अपना काम पूरा करलेता है। (३) और तुम्हारी औरतोंमें से जिनको रजस्वला (हैज़मे) होनेकी उम्मेद नहो अगर तुमको सन्देह हो तो उनकी इद्दत तीनमहीने हैं और जिन औरतोंको रजस्वला होनेकी नौबत नहीं आई (यहीतीन माह उनकी इद्दत) और गर्भवती स्त्रियां उनकी इद्दत बच्चा जनने तक और जो खुदासे डरता रहेगा खुदाउसके काम आसान करेगा। (४) यह खुदा का हुक्म है जो उसने तुमपर उतारा है और जो कोई खुदासे डरे तो वह उसकी बुराइयों को उससे दूर करदेगा। और उसको बड़ाफल देगा। (५) तलाक दी हुई औरतों को अपनी सामर्थ्य के बमूजिब वहीं रक्खो जहां तुमरहो और उनपर सख्ती करने के लिये दुःख न दो और अगर गर्भवती हो तो बच्चा जननेतक उनका खर्च उठाते रहो और अगर वह तुम्हारे लिये दूध पिलावे तो उनको उनको दूध पिलाई दो और आपस की सलाह से दस्तूर के मुआफिक़ काम करो और अगर आपस में जिद करोगे तो दूसरी औरत उसको दूध पिलावेगी। (६) सामर्थ्य वाला अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च

करे और जिसकी रोज़ी नपी तुलीहो तो जैसा उसको खुदाने दिया है उसीके बमूजिब खर्चकरे और अल्लाह किसीको कष्ट देना नहीं चाहता मगर जितना उसने उसे दिया। अल्लाह तंगीके बाद आसान करदेगा। (७) [रुकू २] और कितनी बस्तियां थी कि उन्होंने अपने पालनकर्त्ता के हुक्म से और उसके पैग़म्बर के हुक्म से सिर उठाया तो हमने उनसे सख्त हिसाब लिया और उनपर अनदेखी आफ़त डाली। (८) तो उन्होंने अपने किये का मज़ा चक्खा और उनको परिणाम (अखीर) में घाटा हुआ । (९) खुदाने उनके लिये बुरी मार तय्यार कररखी है तो बुद्धिमानो! जो ईमान लाचुकेहो खुदासे डरो। (१०) और हे ईमानवालो अल्लाहने तुम्हारी तरफ़ समझौती उतारी है और पैग़म्बर जो अल्लाह की खुली आयतें पढ़ २ कर सुनाता है ताकि जो लोग ईमान रखते और नेक काम करतेहैं उनको अन्धेरोंसे निकाल कर रोशनी में लावे और जो कोई खुदापर ईमान लाये और भलेकाम करे तो वह उसको बैकुण्ठ में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहरहीं होंगी। वह हमेशा हमेशा उन्हीमें रहेंगे। अल्लाहने उसको अच्छी रोज़ी दी है। (११) खुदा वह है जिसने सात आस्मानोंको बनाया और उसीके मानिन्द ज़मीन भी। इन दोनोंके बीच हुक्म उतरते रहते हैं ताकि तुम जानो कि खुदा हरचीज़ करसक्ता है और अल्लाह के इल्म जानकारी में हरचीज़ समाई है। (१२)।

——:o:——

सूरे तहरीम।

मदीने में उतरी इसमें १२ आयतें १ रुकू हैं।

[रुकू १] हे पैग़म्बर अपनी बीबियों को खुश करने के लिये तू अपने ऊपर उस चीजको क्यों हराम करता है जो खुदाने तेरेलिये हलालकी है और खुदा बख्शने वाला मिहर्बान है। (१) तुमलोगोंके

लिये खुदाने तुम्हारी क़स्मोंके तोड़ डालने का भी हुक्म रक्खा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और वह जानकर हिकमतवाला है। (२) और जब पैग़म्बर ने अपनी बीबियों में से किसी से एक बात चुपके से कही और जब उसने उसकी खबर करदी और खुदाने उस पर इस बात को ज़ाहिर करदिया तो पैगम्बर ने कुछ कहा और कुछ टालदिया। फिर जब वह उस बीबी को जतादिया तो वह बोली तुमको यह किसने बताया। वह बोला मुझको उस खबरदार जानने वालेने बताया है। (३) अगर तुम दोनो (हफशा और आयशा) अल्लाह की तरफ तौबा करो क्योंकि तुम दोनोंके दिल टेढ़े होगये हैं और जो तुम दोनों पैग़म्बर पर चढ़ाई करोगी तो अल्लाह और जिब्राईल और नेक ईमानवाले उसके दोस्त हैं और उसके बाद फ़िरिश्ते उसके मददगार हैं। (४) अगर पैग़म्बर तुम सबको तलाक़ (छोड़) दे तो अजब नहीं कि उसका पालनकर्त्ता तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी बीबियां दे। जो ईमानवाली हुक्म उठानेवाली, तौबा करनेवाली, नमाज़ में खड़ी होनेवाली, बन्दगी बजा लानेवाली, रोज़ा रखनेवाली, बियाही हुई (विवाहिता) और क्वारी हों। (५) हे ईमानवालो! अपने को और अपने घरवालोंको उस आगमें बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं जिसपर कठोर हृदय और बलवान फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं कि जो कुछ खुदा उनको हुक्म करता है उससे वे हुक्मी नहीं करते और जो कुछ उनको हुक्म दियाजाता है करते हैं। (६) हे काफ़िरो आजके दिन कुछ उज्र न करो वहां बदला पाओगे जो तुम करते हो। (७) [रुकू २] हे ईमानवालो खुदाके सामने साफ दिलसे तौबा करो शायद तुम्हारा पालनकर्त्ता तुमसे तुम्हारी बुराइयां दूर करदे और तुमको बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहरही हैं। उस दिन खुदा नबी को और जो उसके साथ ईमान लाये उनको लज्जित न करेगा उनका

रोशनी (तेज) उनके आगे और दाहिनी ओर दौड़ती होगी और वह कहेंगे हे हमारे पालनकर्त्ता हमारी रोशनी को हमारे लिये पूरा करदे और हमको बख्शदे । बेशक तू हर चीज़ पर शक्तिमान है। (८) हे पैग़म्बर काफ़िरों से और मुनाफ़िक़ो से जहाद कर और उनपर सख्तीकर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है। (९) ख़ुदाने काफ़िरों के लिये नूह की बीबी और लूत की बीबी की मिसाल बयान की है। दोनों हमारे दो भले सेवकों के अधिकार में थीं। मगर उन दोनों ने उनको दग़ा दिया । पस वह दोनों सेवक (बन्दे) उन औरतों से ख़ुदा की सज़ा न हटा सके और उनसे कहागया कि तुम दोनों दाख़िल होनेवालों के साथ नरक की आग में दाखिल हो। (१०) और ख़ुदाने ईमानवालों के लिये फ़िरऔन की मिसाल बयान की है। जब उस औरत ने कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता मेरे लिये बैकुण्ठ में अपने पास एक घर बना और मुझको फ़िरऔन और उसके काम से बचा निकाल और ज़ालिमों से बचा निकाल। (११) और इमरान की बेटी जिसने अपनी शिहवत (प्रसंग) की जगह रोकी और हमने उसमें अपनी रूह फूंकदी और वह अपने पालनकर्त्ता की बातें और उसकी किताबों को मानती थी और ख़ुदा की आज्ञाकारिणी (हुक्म बरदार) थी। (१२)

—:※:—

उनतीसवां पारा ॥

सूरे मुल्क ।

मक्के में उतरी इसमें ३० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] उसकी बड़ी बरकत है जिसके हाथ में राज्य है।

और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है । (१) जिसने मरना, जीना बनाया ताकि तुमको जांचे कि तुममें कौन अच्छा काम करता है और वह बली क्षमा करनेवाला है। (२) जिसने ऊपर तर ऊपर सात आस्मान बनाये। भला तुझको दयावान की कारीगरी में कोई कसर दिखाई देती है फिर एक निगाह दौड़ा कहीं दरार दिखाईदेती है। (३) फिर दोबारह निगाह दौड़ा तेरी नज़र खिसियानी होकर थकी हारी तेरी तरफ़ उल्टी लौट आवेगी। (४) और हमने पहिले आस्मान को दीपको से सजा रक्खा है और हमने इन (दीपकों) को शैतानो के लिये मार की चीज़ बनाई है और हमने उनके लिये नरक (आग) की सज़ा तय्यार कर रक्खी है। (५) और जो लोग अपने पालनकर्त्ता को नही मानते उनके लिये नरक की सज़ा है और बुरी जगह है। (६) जब (ये) उसमें डाले जावेंगे तो वह उसका दहाड़ना (चिल्लाना) सुनेंगे और वह भड़क रही होगी (७) कोई दम में मारे जोश के फट पड़ेगी । जब २ कोई गिरोह उसमें डाला जायगा तो जो उस पर तैनात हैं उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास डरानेवाला नही आया। (८) वह कहेंगे हां डराने वाला तो हमारे पास आया था मगर हमने झुठलाया और कहा कि खुदाने तो कोई चीज़ नहीं उतारी। तुम बड़ी भटकाना में पड़े हो (९) और कहेंगे अगर हमने सुना और समझा होता तो नरक-वासियों में न होते। (१०) तो उन्होने अपना पाप मानलिया पस नरकवासियो पर लानत है। (११) जो लोग बे देखे अपने पालन-कर्त्ता से डरते हैं उनके लिये बख्शिश और बड़े फल है । (१२) और तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकार कर कहो वह दिलों के भेद को जानता है। (१३) भला वह न जाने जिसने बनाया और वही बारीक बात को देखनेवाला खबरदार है। (१४) [रुकू२] वही है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को नरम (नरम) करदिया।

उसकी चलने की जगहों पर चलो और उसका दिया हुआ खाओ। और जी उठकर उसीकी तरफ़ चलना है। (१५) जो आस्मान में है क्या तुम उससे नहीं डरते कि ज़मीन में तुमको धसादे और वह भकोरे मारा करें। (१६) क्या तुम उससे निडर होगये जो आस्मानमें है कि तुम पर पत्थर बरसावें जो तुमको मालूम होजायगा कि हमारा डराना कैसा हुआ। (१७) और जो लोग इनसे पहिले होगये हैं उन्होंने भी हमारे (पैग़म्बरों) को झुठलायाथा तो हमारी ना खुशी कैसी हुई। (१८) क्या इन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो उनके ऊपर पर खोले और समेटे हुए उड़ते हैं दयावानही उनको थामे रहता है वह हर चीज़ को देखता है। (१९) भला दयावान के सिवाय ऐसा कौन है जो तुम्हारा लश्कर बनकर तुम्हारी मदद करे निरे धोके में हैं। (२०) अगर खुदा अपनी रोज़ी रोक ले तो भला ऐसा कौन है जो तुमको रोज़ी पहुंचा दे मगर काफ़िर तो सरकशी और भागने पर अड़े बैठे हैं। (२१) तो क्या जो मनुष्य अपना मुंह औंधाये हुए चले वह ज़ियादा राह पर है या वह मनुष्य जो सीधी राह पर चलता है। (२२) (हे पैग़म्बर) कहो कि वही है जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आंखें और दिल बनाये। (२३) हे पैग़म्बर कहो कि वही है जिसने तुमको ज़मीन में फैला रक्खा है और उसी के सामने जमा किये जावोगे। (२४) और (काफ़िर मुसल्मानों से) कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब होगा। (२५) (हे पैग़म्बर) जवाब दो कि (इसका) इल्म तो खुदाही को है और मैं तो साफ़ तौर (से) डराने वाला हूं। (२६) फिर जब देखेंगे कि वह वादा (क़यामत) पास आ पहुंचा तो काफ़िरों की शक्लें बिगड़ जांयगी और कहा जायगा यही वह सचा है जो तुम मांगा करते थे। (२७) (हे पैग़म्बर) कहो भला देखो तो अगर अल्लाह

मुझको और जो लोग मेरे साथ हैं उनको मार डालेगा हमारे हाल पर कृपा करे ताहम कोई है जो काफ़िरों को दुःखदाई सज़ा से शरण दे। (२८) (हे पैग़म्बर) कहो कि वही (खुदा)कृपा करनेवाला है हम उसी पर ईमान लाये हैं और उसी पर हमारा भरोसा है तुम को मालूम होजायगा कि कौन प्रत्यक्ष गुमराही में था । (२९) (हे पैग़म्बर) कहो कि भला देखो तो तुम्हारा पानी सूख जावे तो कौन है जो तुम को बहता हुआ पानी लादेगा।

——:*:——

सूरे क़लम।

मक्के में उतरी इसमें ५२ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] नून-(हे पैग़म्बर) क़लम की और जो कुछ वह लिखते हैं उसकी क़सम। (१) तू अपने पालनकर्त्ता की कृपा से पागल नहीं है। (२) और तुझको अटूट फल है। (३) और तू बड़ी प्रकृतिवाला है। (४) सो अब तू देखेगा और वेभी देखलेंगे। (५) कि तुम मेंसे अब कौन विचल रहा है। (६) (हे पैग़म्बर) बेशक तुम्हारा पालनकर्त्ता उन लोगों को खूब जानता है जो उसकी राह से भटके हुए हैं और वही उनको भी खूब जानता है जो सीधी राह पर हैं। (७) सो तू झुठलाने वालों का कहा न मान। (८) वे चाहते हैं किसी तरह तू ढीला हो तो वे भी ढीले हों। (९) और किसी कस्मे खाने वाले नीच के कहे में मत आजाना। (१०) और न किसी चुगलखोर की जो चुग़ली खाता फिरे । (११) और अच्छे कामों से रोकता रहता है ज़ियादती करनेवाला पापी है। (१२) बदखू इसके बाद बदनाम। (१३) इसलिये कि धन संतान रखता है। (१४) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई

जाती हैं तो कहता है कि यह अगलों की कहानियां हैं । (१५) हम उसकी नाक पर दाग़देंगे । (१६) हमने उनको जांचा है जैसा हमने बाग़वालों को जांचा था कि जब उन्होंने क़स्मखाई कि वह ज़रूर सुबह होतेही उसके फल तोड़ेंगे । (१७) और अल्लाहने चाहा (इन्शा अल्लाह) नहीं कहा था । (१८) फिर तेरे पालनकर्त्ता की तरफ़ से एक घूमनेवाला उस बाग़ पर घूमगया और वह सो रहेथे । (१९) और सुबह होते २ वह (बाग़) ऐसा रहगया जैसे कोई सारे फल तोड़कर लेगया है । (२०) फिर सुबह होतेही आपस में बोले । (२१) अगर तुमको तोड़ना है तो सवेरे अपने खेत पर चलो । (२२) तो वह चले और चुपके चुपके बातें करते जाते थे । (२३) कि आजके दिन वहां कोई फ़क़ीर तुम्हारे पास न आयगा । (२४) और सवेरे ज़ोर पर लपकते चले । (२५) मगर जब वहां देखा तो बोले हम सचमुच भटकगये हैं । (२६) नहीं—हमारा भाग्य फूटा । (२७) उनमें से जो भला था कहने लगा । क्या मैं तुमसे नही कहा करता था कि खुदाको पाकी से क्यों नहीं याद करते । (२८) वह बोले कि हमारा पालनकर्त्ता पाक है बेशक हमही अपराधी थे । (२९) तो आपस में से एक दूसरे को दोष देने लगे । (३०) बोले हम पर शोक हम सरकश थे । (३१) कुछ आश्चर्य नहीं कि हमारा पालनकर्त्ता उसके बदले हमको उससे अच्छा दे । हम अपने पालनकर्त्ता से आरज़ू रखते है । (३२) इस प्रकार आफ़त आती है और आख़िरत की आफ़त तो सबसे बड़ी है अगर उनको समझ होती । (३३) [रुकू २] परहेज़गारों के लिये उनके पालनकर्त्ता के यहां नियामतों के बाग़ हैं । (३४) तो क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के बराबर करदेंगे । (३५) तुमको क्या हुआ कैसी बात ठहराते हो । (३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसको तुम पढ़ते हो । (३७) कि वहां तुमको मिलेगा

जो तुमको अच्छा लगेगा। (३८) क्या तुमने हमसे क़समें लेरक्खी हैं जो क़यामत के दिन तक चली जावेगी कि तुम्हारे लिये वही मिलैगा जो तुम ठहराओगे। (३९) उनसे पूछ कि तुममें से कौन इसका ज़िम्मा लेता है। (४०) या इन्होंने शरीक ठहरा रक्खे हैं पस अगर सच्चे हों तो अपने शरीकों को ला हाज़िर करें। (४१) जिस दिन आफ़त इकायक आ पड़ेगी और उनको सिजदे (दण्डवत करने) के लिये बुलाया जायगा वह सिजदा न करसकेंगे। (४२) उनकी आंखें नीची होंगी ज़िल्लत उनके चेहरों पर छागई होगी और जब भले चंगे थे सिजदे के लिये बुलाये जाते थे। (४३) अब मुझे और इस (कुरान) के झुठलानेवाले को छोड़। हम उन्हें दर्जा बदर्जा ऐसे नीचे उतारेंगे कि यह न जानें। (४४) और उनको ढील देता चला जारहा हूं बेशक हमारा दांव पक्का है। (४५) क्या तू उनसे नेक (मज़दूरी) मांगता है वह तो जुरमाने (चट्टी) के बोझसे दबेजाते हैं। (४६) क्या वह ग़ैब की (गुप्त) बात जानते हैं और उसको लिख रखते हैं। (४७) अपने पालनकर्त्ता के हुक्म के लिये ठहरा रह और मछलीवाले (यूनिस) की तरह न हो जिसने गुस्से में दुआ की। (४८) अगर तेरे पालनकर्त्ता की कृपा तुझे न सम्हालती तो तू चटियल मैदान में फेंकदिया गया होता। (४९) फिर उसको उसके पालनकर्त्ता ने आनन्दित किया और नेकों में करदिया। (५०) और क़रीब है कि काफ़िर अपनी निगाहों से (हे मोहम्मद) तुझे डिगादें जबकि वह कुरान सुनते और कहते हैं कि वह तो दीवाना है। (५१) और यह तो संसार के लिये सिर्फ़ शिक्षा है। (५२) ॥

— ❧ —

सूरे हाक़्क़ा ।

मक्के में उतरी इस में ५२ आयतें २ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है ।

[रुकू १] होनहार बात । (१) होनहार बात क्या चीज़ है । (२) और तूने क्या समझा होनेवाली बात क्या चीज़ है। (३) समूद और आदने क़ुयामत को झुठलाया । (४) सो समूद तो कड़कसे मार डाले गये । (५) और आदि रहे सो ठण्डी हवा के सन्नाटे से जो हाथों से निकली जारही थी मार डाले गये । (६) उसने उस (हवा) को सात रात और आठ दिन लगातार उन पर लगा रक्खा था । फिर तू उन लोगों को गिरा हुआ देखता गोया कि वह खजूर के खोखले लकड़ियां है । (७) तो क्या तू इन में से किसी को भी बाक़ी देखता है । (८) और फ़िरऔन और जो लोग उससे पहिले थे । और उलटी हुई बस्तियों के रहने वाले सब पापी थे । (९) फिर पालनकर्त्ता के पैग़म्बर का हुक्म न माना फिर उनको बड़ी पकड़ ने पकड़ा । (१०) जब पानी का तूफान (नूहके वक्त में) आया तो हमही ने तुमको किश्ती पर सवार करलिया था । (११) ताकि हम उसको तुम्हारे लिये एक यादगार बनायें और याद रखने वाले कान उसको याद रक्खें । (१२) तो जब सूर (नरसिंह) एक बार फूंका जायगा । (१३) और ज़मीन और पहाड़ उठाये जांयगे और एक दम तोड़े जांयगे । (१४) तो होनेवाली उस दिन हो जायगी । (१५) और आस्मान फटजायगा और वह उस दिन सुस्त होजायगा । (१६) और फ़िरिस्ते आस्मान के किनारों पर होंयगे और उस दिन तुम्हारे पालनकर्त्ता के तख्त को आठ फ़िरिस्ते अपने ऊपर उठाये होंयगे । (१७) उस दिन तुम सामने लाये जावोगे और तुम्हारी बात छुपी न रहेगी । (१८) सो जिसको

किताब उस के दाहिने हाथ में दीजावेगी वह कहेगा लो मेरा कर्म लेखा पढ़ो। (१६) मुझ को यक़ीन था कि मेरा हिसाब मुझको मिलेगा। (२०) तो वह ख़ुशी की ज़िन्दगी में होगा। (२१) ऊंचे बागों में। (२२) जिसके फल झुके होंयगे। (२३) ख़ुशी से खाओ और पीवो बसबब उसके जो तुमने गुज़रे दिनों में किया है। (२४) और वह शख़्स जिसको उसकी किताब बायें हाथ में दीजावेगी वह कहेगा अफ़सोस मुझको मेरा यह कर्मलेखा न मिला होता। (२५) और न मैं अपने इस हिसाब को जानता। (२६) अफ़सोस यही मेरा खातमा हुआ होता। (२७) मेरा माल मेरे काम न आया। (२८) मेरी बादशाही मुझसे जाती रही। (२६) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक़ (क़ैदी सुतिया) डालो। (३०) फिर इसको नरक में ढकेल दो। (३१) और इस सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से बान्ध दो। (३२) वह अल्लाह पर जो सबसे बड़ा है यक़ीन नहीं लाता था। (३३) और न लोगों को ग़रीबों के खिलाने के लिये जोश दिलाता था। (३४) तो आज के दिन यहां उसका कोई दोस्त नहीं। (३५) और न खाना सिवाय ज़ख़्मों के धोवन के। (३६) ये खाना सिर्फ़ पापी ही खावेंगे। (३७) [रुकू २] जो कुछ तुम देखते हो मैं उसकी क़सम खाता हूं। (३८) और जो तुम नहीं देखते (उसकी भी)। (३६) यह (क़ुरान) एक पैग़म्बर का कहा है। (४०) और यह कवि (शायर) का कहा नहीं तुम बहुत ही कम मानते हो। (४१) और न परियों वाले का कहा हुआ है तुम बहुत ही कम ध्यान करते हो। (४२) यह संसार के पालनकर्त्ता का उतारा हुआ है। (४३) और अगर ये हम पर कोई बात बनालाता। (४४) तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ते। (४५) फिर उसकी गर्दन काट डालते। (४६) फिर तुम में इससे कोई रोकनेवाला नहीं। (४७) और

यह डरने वालों के लिये शिक्षा है। (४८) और हम को मालूमहै कि तुम में कोई २ झुठलाते हैं। (४६) और यह काफ़िरों के लिये पछतावा है। (५०) और यह सच मुच ठीक है। (५१)अब अपने पालनकर्त्ता के नाम की जो सब से बड़ा है माला फेर। (५२)।

—:*:—

सूरे मारिज।

मक्के में उतरी इसमें ४४ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] एक पूंछने वाले ने उस सज़ा के बारे में जो होने वाली है पूंछा। (१) काफ़िरों को सज़ा होने वाली है कोई उस को रोक नहीं सक्ता। (२) खुदा के मुक़ाबिले में जो सीढ़ियों का मालिक है। (३) उनसे फिरिश्ते और रूह उसकी तरफ़ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज़ ५० वर्ष का है। (४) पस तू अच्छीतरह संतोष कर। (५) वह उसे दूर देखते हैं। (६) और हम उसे क़रीब देखते हैं। (७) उस दिन आसमान पिघले तांबे की तरह होजावेगा। (८) और पहाड़ जैसी रँगीहुई ऊन। (६) और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (१०) वह सब उन्हें दिखलाये जावेंगे पापी चाहेंगे उसदिन की सज़ा के बदले में अपने बेटे देदें। (११) और अपने जोरू अपने भाई को। (१२) और अपने कुटुम्ब को जिसमें रहता था। (१३) और जितने जमीन पर हैं सारे (देडालें) फिर आप को बचावें। (१४) हर्गिज नहीं छूटेगा वह तपती आग है। (१५) मुंह की खाल खींचने वाली। (१६) वह आग उस आदमी को जिसने पीठ फेरी और मुह मोड़ा पुकारती है। (१७) और जिसने माल जमा करके बरतन में रक्खा। (१८) आदमी बे सब्र पैदा किया गया है। (१६) जब उसको बुराई

लगती है तो घबड़ाता है (२०) और जब भलाई पहुंचती है तो अपने तईं (अच्छे कामों से) रोक लेता है। (२१) मगर निवाज़ पढ़ने वाले। (२२) जो अपनी निवाज़ पर क़ायम हैं। (२३) और जिनके माल में हिस्सा ठहर रहा है। (२४) मांगने वालों और वे मांगनेवालों के लिये। (२५) और जो इन्साफ़ के दिन का यक़ीन करते हैं। (२६) और जो अपने पालनकर्त्ता की सज़ा से डरते हैं। (२७) उनके पालनकर्त्ता की सज़ा से निडर न होना चाहिये। (२८) और जो अपनी शहवत की जगह (विषयइंद्रियां) थामते हैं। (२९) मगर अपनी जोरूओं और बांदियों से सो उन पर उलाहना नहीं। (३०) मगर जो लोग इसके अलावा और की ख्वाहिश करते हैं तो वह ज़ियादतीकरने वाले हैं। (३१) जो लोग अपनी अमानत और अपने अहद को निबाहते हैं। (३२) और जो लोग अपनी गवाहियों पर क़ायम हैं। (३३) और जो लोग अपनी निवाज़ की ख़बर रखते हैं। (३४) तो यही लोग इज़्ज़त के साथ बैकुण्ठ में होंगे। (३५) [रुकू २] काफ़िरों को क्या होगया जो तेरे सामने दौड़ते आते हैं। (३६) दाहिने और बायें से गरोह २ होकर। (३७) क्या हरशख्स इन में से चाहता है कि नियामत के बाग़ में दाखिल हो। (३८) हर्गिज़ नहीं हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया जो वह जानते हैं। (३९) तो मैं पूरब और पच्छिम के पालनकर्त्ता की क़सम खाता हूं कि हम इस पर सामर्थ रखते हैं। (४०) इस बातपर कि उनसे बिहतर उनके बदले औरों को लेआवें और हम आजिज़ नहीं होनेके। (४१) सो तू उन्हें छोड़ कि बातेंबनावें और खेलें यहांतक कि उसदिनसे मिलें जिसका वादा दिया गयाहै। (४२) जिस दिन क़ब्रोंसे दौड़ते निकलेंगे जैसे किसी निशानोंपर दौड़ेजाते हैं। (४३) ज़िल्लतके मारे निगाह नीची किये होवेंगे ये वह दिन है जिसका उनसे वादा है। (४४)

सूरे नूह।

मक्के में उतरी इस में २८ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हमने नूहको उसकी जातिको तरफ़ भेजा कि दुःखदाई सज़ा आने से पहिले अपनी जाति को डरावे (१) (उनसे) कहा भाइयो मैं उसको डर सुनाने आया हूं। (२) कि खुदा की पूजा करो और उससे डरते रहो और मेरा कहा मानो। (३) तो वह तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा और नियत समय तक तुमको मुहलत देगा। जब खुदाका नियत किया हुआ वक्त आवेगा तो वह टल नहीं सक्ता। शोक तुम समझते होते। (४) कहा है पालनकर्त्ता मैंने अपनी जातिको रातदिन पुकारा फिर मेरे बुलानेसे और ज़्यादा भागते ही रहे। (५) और जब मैंने उनको पुकारा कि तू उन्हें क्षमाकरे उन्होंने अपने कानों में उंगलियां डालीं और अपने कपड़े लपेटे और ज़िद की और अकड़ बैठे। (६) फिर मैंने उनको पुकार कर बुलाया। (७) फिर मैंने उनको ज़ाहिरा समझाया और गुप्त भी समझाया। (८) फिर मैंने कहा कि अपने पालनकर्त्ता से पापों की क्षमा मांगो। वह बख्शने वाला है। (९) आस्मान से तुम पर झड़ी लगाकर बरसायेगा। (१०) और धन और सन्तान से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिये बाग़ उगायेगा और नहरें जारी करेगा। (११) तुम्हें क्या होगया है कि तुम अल्लाह से बुज़ुर्गी की उम्मेद नहीं रखते। (१२) उसने तुमको तरह २ का बनाया। (१३) क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने कैसे तरा ऊपर सात आस्मान बनाये। (१४) और उन आस्मानों में चन्द्रमा को उजेले के लिये और सूर्य को चिराग़ बनाया। (१५) और खुदाने तुम्हें ज़मीन से एक क़िस्म का उगना उगाया। (१६) फिर तुम्हें

ज़मीन में लेजायगा और फिर तुमको निकाल खड़ा करेगा। (१७) और अल्लाह ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना बनाया है। (१८) कि उसमे खुले रास्तोसे चलो। (१९) [रुकू २] नूहने कहा कि हे मेरे पालनकर्त्ता यह मुझसे नाफ़र्मानी करते है और उनके कहेपर चलते हैं जिनको उनके धन और उनकी सन्तानने टोटेमें डाल रक्खा है। (२०) और उन्होंने बड़े २ फ़रेब किये। (२१) और बोले कि अपने पूजतों को न छोड़ो वद्दको[1] और सोवा[1] को। (२२) और यागूस[1] और यायू[1] और नसरको[1] (ये अरब) की मूर्तियों के नाम है जो नूहके ज़माने में पूजी जाती थी (मत छोड़) (२३) और ये बहुतेरो को गुमराह करचुकीहै और ऐसा हो कि ज़ालिमों में गुमराही ही बढ़ती जावे। (२४) तो यह अपने ही पापों के कारण से डुबायेगये फिर नरककी आगमें डाल दियेगये और उन्होनेखुदाके मुक़ाबिले में किसी को मददगार न पाया। (२५) और नूहनेकहा हे मेरे पालनकर्त्ता दुनियां मे काफ़िरों का कोई घर न छोड़ा। (२६) अगर तू उन्हे रहने देगा तो ये तेरे बन्दो को गुमराह करेंगे और इनसे जो सन्तान चलेगी वह भी कुकर्मी काफ़िर ही होंगे। (२७) हे मेरे पालनकर्त्ता मुझको और मेरे मां बापको औरजो मनुष्यईमान लाकर मेरे घरमें आये उसको और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों को क्षमाकर और ऐसाकर कि ज़ालिमों (अन्याचारियों) की नष्टता बढ़ती चलीजावे। (२८)

सूरे जिन्न।

मक्के में उतरी इसमें २८ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] तू कहदे कि मुझ को हुक्म आया है कि जिन्नोंके

(१) ये नाम मूर्तियोंके हैं इनका हाल क़ुरान आदर्श में देखो।

कई लोग (कुरान) सुन गये हैं और (उन्होंने) कहा हमने अजीब कुरान सुना। (१) जो ठीक बात की शिक्षा देता है और हम उस-पर ईमान लाये और हम किसी को भी अपने पालनकर्त्ता का शरीक न ठहरावेंगे। (२) और हमारे पालनकर्त्ता की इज़्ज़त बहुत बड़ी है उसने न किसी को जोरू और न किसी को संतान बनाया। (३) और हममें कुछ मूर्ख हैं जो खुदापर बढ़ बढ़कर बातें बनाते हैं। (४) और हम खयाल करते थे कि आदमी और जिन्न कोई भी खुदापर झूंठ नही बोल सक्ता। (५) और आदमियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो जिन्नों में से कुछ लोगों की शरण लेते हैं और उन्होंने जिन्नों के घमण्ड को और भी बढ़ादिया है। (६) और वह खयाल करते थे जैसा तुम खयाल करते थे कि खुदा कभी किसीको पैग़म्बर बनाकर नहीं भेजता। (७) और हमने आसमान को टटोला तो उसको सख्त चौकीदारों और अंगारों से भरा पाया। (८) और हम वहां बैठने की जगहों में बैठकर सुना करते थे फिर अब जो कोई सुनना चाहे अपने लिये आगका अंगारा पायगा। (९) और हम नहीं जानते कि ज़मीन के रहनेवालों को कुछ नुक़सान पहुँचाना मंज़ूर है या उनके पालनकर्त्ताने उनके हकमें भलाई करना विचारा है। (१०) और हममें कोई २ नेक हैं और कोई २ और तरहके हैं। हमारे जुदे२ फिर्क़े होते आये हैं। (११) और हमने समझ लिया कि न तो ज़-मीन में खुदाको हरासक्ते हैं और न भाग कर उसको हरासक्ते हैं। (१२) और हमने जब राहकी बात सुनी तो हम उसको मानगये पस जो मनुष्य अपने पालनकर्त्ता पर ईमान लायेगा उसका न किसी नुक़सान का भय होगा न अत्याचार (ज़ुल्म) का। (१३) और हममें कोई आज्ञाकारी हैं और कोई अत्याचारी हैं सो जो कोई हुक्म में आये उन्होंने सीधीराह ढूंढ़ निकाली। (१४) और जिन्होंने मुंह मोड़ा वह नरक के लट्ठे बनगये। (१५) और यह कि अगर

लोग सीधीराह पर रहते तो हम उन्हें पानी पिलाते। (१६) ताकि उनको उसमें जांचे और जो कोई अपने पालनकर्त्ता की यादसे फिर गया तो वह उसको सख़्त सज़ा में दाखिल करेगा। (१७) और मसजिदें सब ख़ुदाकी हैं तो ख़ुदाके साथ किसीको न पुकारो। (१८) और जब ख़ुदा का बन्दा (मुहम्मद) खड़ाहोकर उसको पुकारता है तो पास आकर ये उसको घेरलेते हैं। (१९) [रुकू २] तू कहदे कि मैं तो अपने पालनकर्त्ता को पुकारता हूं और किसी को उसका शरीक नहीं करता। (२०) (हे पैग़म्बर) कहो कि तुम्हारा नुकसान वा फ़ायदा मेरे अधिकार में नहीं। (२१) (हे पैग़म्बर) कहो मुझे अल्लाहके हाथसे कोई न बचावेगा। (२२) और मैं उस के सिवाय कोई रहने की जगह नहीं पाता। (२३) मगर (मेराकाम) ख़ुदा के समाचारों का पहुंचा देना है और जो कोई अल्लाह का और उसके पैग़म्बर का हुक्म न माने सो उसके लिये नरक की आग है जिसमें वह हमेशा रहेंगे। (२४) जब तक उसको न देख लें जिनका उनसे वादा कियाजाता है तो उस वक़्त जानलेंगे कि किसके मददगार कमजोर और गिन्ती में थोड़े हैं। (२५) (हे पैग़म्बर) कहो कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा हुआ वह नज़दीक है या मेरा पालनकर्त्ता उसको देर में लायेगा वह भेद का जानने वाला है और अपने भेद की ख़बर किसी को नहीं देता। (२६) मगर जिस पैग़म्बर को पसंद करलिया उसके आगे और पीछे चौकीदार चला आता है। (२७) ताकि वह जाने उसने उसके समाचार पहुंचा दिये और जो उनके पास है क़ाबू में रक्खा है। (२८)।

—:*:—

सूरे मुज़म्मिल।

मक्के में उतरी इसमें २० आयतें २ रुकू हैं ॥

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे चादर ओढ़े हुए (मुहम्मद) (१) रात को (निवाज के लिये) खड़ा रहाकर मगर थोड़ीदेर । (२) आधी रात या उसमें से थोड़ी कम कर। (३) या आधी से कुछ बढ़ा दिया कर। और कुरान को ठहर २ कर पढ़ाकर । (४) अब हम तेरे ऊपर भारी बात डालेंगे। (५) रात का उठना (इन्द्रियों) के रोकने में बहुत अच्छा होता है और ठीक २ दुआ मांगने में भी। (६) दिन को तुझे बहुत काम रहता है। (७) और अपने पालनकर्त्ता का नाम यादकर और सबको छोड़कर उसी की तरफ लग जा। (८) वही पूरब और पश्चिम का मालिक है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं पस उसी को काम संभालने वाला बना। (९) और ये लोग जो कुछ कहते हैं उसका सतोष कर और खूब सूरती के साथ उन्हें छोड़दे। (१०) और मुझको और झुठलाने वालाको जो आराम में रहे हैं छोड़दे और उन्हें थोड़ी मुहलतदे । (११) हमारे पास बेड़ियां और आग का ढेर है। (१२) और खाना जो गले से न उतरे और दुःखदाई सज़ा है। (१३) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपने लगेंगे और पहाड़ भुरभुरे टीले होजावेंगे। (१४) हमने तुम्हारी तरफ़ पैग़म्बर भेजा है वह तुम पर गवाही देगा जैसा कि हमने फिरऔन के पास पैग़म्बर भेजा था। (१५) मगर फिरऔन ने पैग़म्बरसे नटखटी की तो हमने उसका सख्त सजामें पकड़ा। (१६) फिर अगर उसदिन से इन्कारी रहे जो लड़कों को बूढ़ा कर देता है तुम क्योंकर बचोगे। (१७) उससे आस्मान फट जायगा और उस (खुदा) का वादा होजायगा। (१८) ये तो

एक समझौती है—तो जो चाहे अपने पालनकर्त्ता की राहले। (१६) [रुकू २] तेरा पालनकर्त्ता जानता है कि तू दो तिहाई रात और आधीरात और तिहाई रात (निवाज़ में) उठता है और उनमें से जो तेरे साथ हैं एक गरोह उठता है और अल्लाह रात और दिनका अन्दाज़ा कर्ता है वह जानता है कि तुम इसको निबाह न सकोगे। पस तुमपर मिहर्बान हुआ। अब कुरानमें से जिस क़दर आसान हो पढ़ो। खुदा जानता है कि तुममें कुछ बीमार होंगे और कुछ ऐसे जो दुनियां में खुदा की कृपा ढूढ़ते फिरेंगे और कुछ ऐसे भी जो खुदा की राह में लड़ाई करेंगे तो जो उसमें से आसान हो पढ़ो और निवाज़ पर कायम रहो और ज़क़ात दो और अल्लाह को खुश दिली से कर्ज़ देदिया करो और जो नेकी अपने लिये पहिले से भेज दोगे उसको अल्लाह के यहां पाओगे। वह बहुत बढ़कर है और उसका फल भी बहुत बड़ा है और अल्लाह से अपने पापों की क्षमा मांगते रहो—अल्लाह बड़ा क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२०)।

सूरे मुद्दसिर ॥

मक्के में उतरी इसमें ५६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहनवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] हे चादर ओढ़ेहुए। (१) उठ और डरा। (२) और अपने पालनकर्त्ता की बड़ाई कर। (३) और अपने कपड़ों। को पाक रख। (४) और नापाकी से अलग रह। (५) और ज़्यादा करने के लिये किसी पर अहसान न कर। (६) और अपने पालनकर्त्ता की राह देख। (७) जब सूर (नरसिंहा) फूंका जा-एगा। (८) तो वह दिन काफिरों के लिये ऐसा कठिन होगा। (६) कि उसमें आसानी न होगी। (१०) मुझे और उस शख्स

को जिसे मैंने अकेला पैदा किया छोड़दो। (११) और मैंने उस को बहुत माल दिया। (१२) और लड़के जो उसके सामने हाज़िर रहते हैं। (१३) और हर तरह का सामान उसके लिये इकट्ठा कर दिया है। (१४) इसपर भी वह उम्मेद लगाये बैठा है कि हमें और भी कुछ दें। (१५) हर्गिज़ नहीं वह हमारी आयतों का दुश्मन था। (१६) हम जल्द उसे सख्त सज़ा में फसावेंगे। (१७) वह तदबीर में लगा है और तदबीर कर रहा है। (१८) नाश हो-वह कैसी तदबीरें कर रहा है। (१९) फिर भी वह नाश हो—फिर कैसी तदबीरें कर रहा है। (२०) फिर उसने देखा। (२१) फिर-नाक चढ़ाई और मुंह बंद करलिया। (२२) फिर पीठ फेरली और घमण्ड किया। (२३) और कहने लगा कि ये जादू है जो चला आता है। (२४) ये तो बस किसी आदमी का कहा हुआ है। (२५) हम उसको जल्दी नरक में झोंक देंगे। (२६) और तू क्या जाने कि नरक (आग) क्या चीज़ है। (२७) वह न बाक़ी रखती है और न छोड़ती है। (२८) चिहरे को झुलसा देती है। (२९) उस पर १९ फिरिश्ते हैं। (३०) और हमने फिरिश्तोंहीं को आग का चौकीदार बनाया है और इनकी गिन्ती हमने काफ़िरों की जांच के लिये ठहराई है ताकि किताब वाले यक़ीन करलें और ईमानवालों का और भी ईमान हो और किताबवाले और ईमानवाले शक न करें और जिन लोगों के दिलों में रोग है और जो काफ़िर हैं बोल उठें कि ऐसी बातों के कहने से खुदा का क्या प्रयोजन है। इसीतरह खुदा जिसको चाहता है भटकाता है और जिसको चाहता है राह दिखाता है और तुम्हारे पालनकर्ता के लश्करों का हाल उसके सिवाय कोई नहीं जानता और ये लोगों के वास्ते शिक्षा है। (३१) [रुकू २] नहीं २ चांद की क़सम। (३२) और रातकी जब वह गुज़रनेलगे। (३३) और सुबह की जब वह रोशन हो। (३४)

यह नरक एक बड़ी बात है। (३५) ये लोगों को डराना है। (३६) तुम मेंसे उस शख्स को जो आगे बढ़ना चाहे और पीछे रहना चाहे। (३७) हरएक जी अपने किये में फँसा है। (३८) मगर दाहिनी तरफ़ वाले । (३९) कि वह बैकुण्ठ में पूंछते होंगे । (४०) अपराधियों से। (४१) कौन चीज़ तुमको नरक मे लेआई। (४२) वह कहेंगे हम निवाज़ न पढ़तेथे। (४३) और न हम ग़रीबों को खाना खिलाते थे । (४४) और हम हुज्जत करनेवालों के साथ हुज्जत किया करते थे। (४५) और हम न्याय के दिन को झुठ-लाते थे (४६) यहांतक कि हमको विश्वास आया। (४७) फिर किसी शिफ़ारिसी की शिफ़ारिस उनके काम नहीं आयगी। (४८) और इनको क्या होगया है कि यह इस शिक्षा से मुंह फेरते हैं। (४९) गोया कि ये गधे है कि भागे जाते हैं। (५०) शेरके आगे से भागे जाते है। (५१) बल्कि इनमें का हरएक आदमी चाहता है कि उसको खुली किताबें मिलजावें। (५२) हर्गिज़ नहीं ये आ-खिरत (क़यामत) से नहीं डरते। (५३) हर्गिज़ नही यह तो एक शिक्षा है। (५४) तो जो कोई चाहे इसको याद रक्खे । (५५) और जब तक खुदा न चाहे वह हर्गिज़ याद न करेंगे वह डरके लायक़ और बख्शने के लायक़ है। (५६) ॥

सूरे क़यामत।

मक्के में उतरी इसमें ४० आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नामसे जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] मैं क़यामत के दिन की क़स्म खाताहूं । (१) और मैं जीकी क़सम खाताहूं जो (बुरे कामों पर) अपने आप मलामत करता है। (२) क्या आदमी खयाल करता है कि हम उसकी हड्डियां जमा न करेंगे। (३) और हम इस बात पर शक्ति

मान ह कि उसके पौर २ ठिकाने से वैठा दें। (४) वल्कि आदमी चाहता है कि उसके साम्हने ढिटाई करे। (५) वह पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा। (६) तो जब आँखें पथरा जायगी। (७) और चन्द्रमा में ग्रहण लगजावेगा। (८) और सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जावेंगे। (९) तो उसदिन आदमी कहैगा कि भागने की जगह कहां। (१०) हरगिज़ नहीं शरण की जगह नहीं है। (११) उसदिन तेरे पालनकर्त्ता की तरफ़ जाकर ठहरना होगा। (१२) उसदिन आदमी को बतादिया जायगा कि उसने पहिले कैसे काम किये है और पीछे क्या छोड़ा है। (१३) वल्कि आदमी तो अपने आप पर खुद दलील होगा। (१४) और अगर्चि वह अपने बहुत उज़् लावे। (१५) अपनी ज़वान न हिला कि उसके लिये जल्दी करने लगे। (१६) उसका जमा करना और पढ़ना हमारे ज़िम्मे है। (१७) जब हम उसको पढ़ालिया करें तो तू भी उसके पीछे २ पढ़। (१८) फिर उसका बयान करना हमारे ज़िम्मे है। (१९) मगर तुम कुछ जल्दवाज़ही हो। (२०) दुनिया को छोड़ बैठे और आखिरत को पसंद करते हो। (२१) उसदिन कितने मुंह ताज़े है। (२२) अपने पालनकर्त्ता को देख रहे होंगे। (२३) और कितने मुंह उसदिन उदास होंगे। (२४) समझ रहे होंगे कि उनके साथ ऐसी सख़्ती होने को है जो कमर तोड़ देगी। (२५) नहीं–जब जान हसली तक आ पहुंचेगी। (२६) और कहा जायगा कौन झाड़ फूंक करेगा। (२७) और उसको विश्वास होजायगा कि यह जुदाई है। (२८) और पिण्डली २ से लिपट जायगी। (२९) उसदिन तेरे पालनकर्त्ता की तरफ चलना होगा। (३०) [रुकू २] तो उसने न यक़ीन किया और न नमाज़ पढ़ी। (३१) वल्कि उसने उनको झुठलाया और पीठ फेरली (३२) फिर अपने घरको अकड़ता गया। (३३) खराबी तेरे

फिर खराबी तेरी। (३४) फिर खराबी तेरी–खराबी पर खराबी तेरी। (३५) क्या आदमी खयाल करता है कि वह बेकार छोड़ दिया जायगा। (३६) क्या वह वीर्य की एक बूंद न था जो टपके। (३७) फिर लोथड़ा हुआ फिर बनाया और ठीक किया। (३८) फिर उस वीर्य से स्त्री और पुरुष का जोड़ा बनाया। (३९) क्या ऐसा शख्स मुर्दे को नहीं जिलासक्ता। (४०) ॥

सूरे दहर।

मक्के में उतरी इसमें ३१ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] क्या आदमी के ऊपर से ज़माने में एक ऐसा समय नहीं बीता जब वह कुछ भी चर्चा के योग्य न था। (१) हमने आदमी को मिले हुए वीर्य से पैदा किया कि उसको जांचे इसलिये उसको सुननेवाला और देखने वाला बनाया। (२) हमने उसे राह दिखाई है अब वह शुक्रगुज़ार हो या नाशुक्र। (३) हमने इन्कारियों के वास्ते जन्जीरें और तौक़ और दहकती हुई आग तय्यार कररक्खी है। (४) निस्सन्देह नेकी वाले पीवेंगे ऐसे

विपदासे बचा लिया और उनको ताज़गीऔर खुशहाली उन्हें पहुंची। (११) और जैसा उन्होंने संतोष किया था उसके बदले में वैकुंठ और रेशमी वस्त्र उन्हें दिये। (१२) वैकुंठ में तख्तों पर तकिये लगाये बैठे होंगे न वह वहां धूपही देखेंगे न ठगढ। (१३) और उनपर वहां के वृक्षोंकी छाया होगी और उनके फल भी नज़दीक झुके होंगे। (१४) और उनपर चांदीके बासनों और गिलासों का दौड़ चलता होगा कि वह शीशे की तरह होंगे। (१५) शीशे भी चांदी के वह उन्ही के लिये बनेहोंगे। (१६) और वहां उनको प्याले पिलाये जायँगे जिस्में सोंठ मिली होगी। (१७) एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसबील होगा। (१८) और उनके गिर्द हमेशा नोजवान लड़के फिरते हैं। जब तू उन्हें देखे बिखरे हुए मोती समझे गा। (१९) जब तू देखे यहां पदार्थ और बड़ा राज्य तुझको दि· खाई देगा। (२०) उनके ऊपर बारीक हरे रेशम और गाढ़े रेशम के कपड़े हैं और चांदी के कड़े पहिने है और उनका पालनकर्त्ता उन्हें पाक शराब पिलावेगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कमाई नेग लगी। (२२) [रुकू २] हमने तुझपर धीरे२ कुरान उतारा। (२३) तू अपने पालनकर्त्ता की राह देख और उन में से किसी पापी नाशुक्र की न मान। (२४) और अपने पालन- कर्त्ता का नाम सुबह और शाम यादकर। (२५) और कुछ रात में उसको सिजदा (दण्डवत) कर और बड़ी रात तक उसकी पाकी बोल। (२६) यह लोग तो बस जल्दी होनेवाली बात पसंद करते हैं और इस भारी दिनको छोड़ देते हैं। (२७) हमने उनको पैदा किया और उनकी गिरहबन्दी मज़बूत बान्धी और जब हम चाहेंगे उनके बदले उनही जैसे लोग ला बसायेंगे। (२८) यह शिक्षा है फिर जो कोई चाहे अपने पालनकर्त्ताकी तरफ पहुंचनेका रास्ता ले। (२९) और तुम न चाहोगे जब तक अल्लाह न चाहे। बेशक

अल्लाह जाननेवाला हिकमतवाला है। (३०) जिसको चाहे अपनी कृपा में ले लेता है और सरकश लोगों के लिये उसने दुःखदाई सज़ा तय्यार कररक्खी है। (३१)॥

सूरे मुरसिलात।

मक्के में उतरी इस में ५० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] उन हवाओं की क़सम जो मामूली चाल से चलाई जाती है। (१) फिर ज़ोर पकड़ कर तेज होजाती हैं। (२) फिर बादलों को फैला देती है। (३) फिर जुदा कर देती है। (४) और दिलों में याद दिलाती हैं। (५) ताकि दलीलें समाप्त हों और डराया जाय। (६) तुम से जो वादा किया गया है वह ज़रूर होकर रहेगा। (७) यानी जब नक्षत्र (सितारे) धीमें पड़जांय। (८) और जब आसमान फटजावे। (९) और जब पहाड़ उड़ादे जांय। (१०) और जब पैग़म्बर नियत समय पर हाज़िर किये जावें। (११) कौनसा दिन इनके लिये नियत था! (१२) न्याय का दिन। (१३) और तू क्या जाने न्याय का दिन क्या चीज है। (१४) उसदिन झुठलाने वालों की ख़राबी है।

क्या हमने ज़मीन को। (२५) समिट जाने वाली नहीं बनाया। (२६) ज़िन्दों और मुर्दों के लिये। (२७) और उस में ऊंचे २ बोझिल पहाड़ पिलादिये और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया। (२८) (सो) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (२९) जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे उसकी तरफ चलो। (३०) उसमें ठण्डक नहीं और न गर्मी से बचाव है। (३१) वह महलों के बराबर चिंगारियां फैंकती होगी। (३२) गोया वह ज़र्द (पीले) ऊंट है। (३३) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (३४) यही वह दिन है कि वह बात न करसकेंगे। (३५) और न उनको आज्ञा दी जावेगी कि उज्र करें। (३६) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (३७) यही तो न्याय का दिन है। हमने तुम को और अगलों को जमा किया है। (३८) तो अगर तुम्हारी कोई तदबीर चलसके तो चलालो (३९) उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (४०) [रुकू २] परहेज़गार तो ज़रूर छाओं में और चश्मों में होंगे। (४१) और मेवों में जो उनको भाते हों होंगे। (४२) अपने किये के फल शौक़ से खाओ पियो। (४३) नेक लोगों को हम इसतरह बदला देते हैं। (४४) उसदिन झुठलाने वालों पर बर्बादी है। (४५) (दुनियां में) खाओ और कुछ फायदा उठाओ बेशक तुम अपराधी हो। (४६) उसदिन झुठलाने वालों की खराबी है। (४७) जब उन्हें (नमाज़ के वक़्त) कहाजाय झुको तो नहीं झुकते। (४८) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (४९) अब इस के बाद कौनसी बात पर यह ईमान लावेंगे। (५०)॥

——:o:——

तीसवां पारा ।

सूरे नबा ।
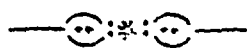
मक्के में उतरी इसमें ४० आयतें और २ रुकूहैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है ।

[रुकू १] यह लोग आपस मे क्या बात पूंछ रहे है । (१) बड़ी खबर की बाबत । (२) जिसके बारे में यह जुदी २ रायें रखते है । (३) नहीं जल्दी इनको मालूम होजायगा । (४) फिर जल्दी इनको मालूम होजायगा । (५) क्या हमने ज़मीन को फर्श । (६) और पहाड़ो को मेखें नही बनाया । (७) और हमने तुम को जोड़ा २ पैदा किया । (८) और हमहीने तुम्हारी नींद को आराम बनाया । (९) और हमनेही रातको परदा बनाया । (१०) और हमहीने दिनको रोज़ी के लिये बनाया । (११) और हमहीने तुम्हारे ऊपर सात पुरता (आस्मान) बनाये । (१२) और हमने चमकता दीपक (सूर्य को) बनाया । (१३) और हमने बादलों से जोर का पानी बरसाया । (१४) ताकि उससे अनाज और बूटियां निकालें । (१५) और घने २ बाग (ज़मीन से) निकालें । (१६) बेशक फैसले के दिन का एक वक्त नियत है । (१७) उस

(२४) मगर गर्म पानी और पीव के सिवाय उनको कुछ पीने को नहीं मिलेगा। (२५) (यह उनके कर्म का) पूरा बदला है। (२६) यह लोग हिसाब की उम्मेद न रखते थे। (२७) और हमारी आयतों को झुठलाया थे। (२८) और हमने हरचीज़ को लिख रक्खा है। (२९) तो (अपने किये का) मज़ा चक्खो और हमतो तुम्हारे लिये सज़ाही बढ़ाते जायँगे। (३०) [रुकू २] परहेज़गार जरूर कामयाब होंगे। (३१) (यानी रहने को) बाग़ और (खाने को) अंगूर (३२) और (दिल बहलाने को) नौजवान स्त्रियाँ हम उम्र। (३३) और (पीने को) छलकते हुये प्याले (३४) वहां यह लोग नतो बेहूदाबात सुनेंगे और न हुज्जत। (३५) यह तेरे पालनकर्त्ता का हिसाब से दिया उनके कर्मों का बदला है। (३६) आस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ पैदाइश इन दोनों के बीच है सबका मालिक बड़ा कृपालु है। क़यामत के दिन उससे बात नहीं करसकेंगे। (३७) जब कि जिब्रील और फिरिश्ते पांतिकी पांति खड़े होंगे किसी के मुंह से बात तो निकलनेही को नहीं। मगर जिसको (खुदा या) कृपालु आज्ञा दे और वह बात भी ठीक कहे। (३८) यही दिन सच्चा है तो जो चाहे अपने पालनकर्त्ता के साथ ठिकाना बना रक्खे। (३९) हमने तुमको नज़दीक आनेवाली सज़ासे डरा दिया है कि उस दिन आदमी उन (कर्मों) को देखेगा जो उसने अपने हाथों भेजे हैं और काफ़िर चिल्ला उठेगा कि हा शोक मैं मिट्टी होता। (४०) ॥

सूरे नाज़ियात।

मक्के में उतरी इसमें ४६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] उनकी क़सम जो खिंसकर रूह निकालते हैं। (१)

और उन (फ़िरिश्तों) की जो आसानी से जान निकाल लेते हैं। (२) और उन फ़िरिश्तो की जो आस्मान और ज़मीन के बीच तैरते फिरते हैं। (३) फिर दौड़कर आगे बढ़ते हैं। (४) फिर जैसा हुक्म होता है बंदोबस्त करते हैं। (५) जिस दिन कांपनेवाली ज़मीन कांप उठैगी। (६) और भूकम्पकेबाद (दूसरा) भूकम्प आवे। (७) उसदिन (लोगोंके) दिल धड़क रहेहोंगे। (८) उनकी आंखें झुकी होंगी। (९) कहते हैं क्या हम उलटे पांव लौटाये जायँगे (१०) क्या जब (गल सड़कर) हम खोखली हड्डियां हो जावेंगे। (११) कहते हैं कि ऐसा हुआ यह तो लौटना नुक़सान की बात है। (१२) वह तो एक झिड़की है। (१३) और एक दम से लोग मैदान में आ मौजूद हुए। (१४) (हे पैग़म्बर) मूसा का क़िस्सा भी तुमको पहुंचा है। (१५) जब कि उनको तो आको पाक मैदान में उनके पालनकर्त्ता ने पुकारा था। (१६) कि फिर

रात को अंधेरा बनाया और उसकी धूप निकाली (२९) और इसके अलावे ज़मीन को बिछाया। (३०) उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला। (३१) और पहाड़ों को (उसमें) गाढ़ दिया। (३२) यह सब तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के फ़ायदे के लिये किये। (३३) तो जब बड़ी आफ़त आ पड़ेगी। (३४) जो कुछ आदमी ने किया है उसदिन उसको याद आयेगा। (३५) और नरक सब देखने वालों के सामने ज़ाहिर किया जायगा। (३६) तो जिसने मुँह फेरा। (३७) और दुनिया की ज़िन्दगी को (आखिरत पर) मुक़द्दम रक्खा (३८) तो (उसका) ठिकाना नरक है। (३९) और जो अपने पालनकर्त्ता के सामने खड़े होने से डरा और इन्द्रियों को इच्छाओं से रोकता रहा। (४०) तो (उसका) ठिकाना वैकुण्ठ है। (४१) तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि उसका वक्त कब है। (४२) (सो हे पैग़म्बर) तुम उसका वक्त बताने की ओरसे कहां के बखेड़े में पड़े हो। (४३) इसबात की थाह तेरे पालनकर्त्ता को है। (४४)तू तोबस उसको डरा सक्ता है जो खुदा से डरे। (४५) लोग जिसदिन क़यामत को देखेंगे तो (उनको ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह (दुनिया में) बस दिनके अखीर पहर ठहरे या अव्वल पहर। (४६) ❘

सूरे अबस।

मक्के में उतरी इसमें ४२ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाहके नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] (मुहम्मद) इतनी बातपर गुस्से में हुए और मुंह मोड़ बैठे। (१) जब अन्धा उसके पास आया। (२) और तू क्या जाने शायद वह पाक होजाय। (३) या शिक्षा सुने या उसको शिक्षा लाभदायक हो। (४) तो जो मनुष्य बेपरवाही

करता है।(५) उसकी तरफ तू ख़ूब ध्यान देता है। (६) हालांकि (अगर) वह पाक न हो तो तुझ पर कुछ लफ़ंट नहीं। (७) और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आये (८) और जो (ख़ुदा से) डर-कर आवे। (९) तो तू उससे बे परवाही करता है। (१०) हरगिज ऐसा न कर यह तो शिक्षा है। (११) जो चाहे इसे याद करे। (१२) और अदब के वर्कों मे लिखा हुआ है। (१३) जो ऊंचे पर रक्खे और पाक है। (१४) ऐसे लिखनेवालों के हाथों में। (१५) जो बड़े और भले हैं। (१६) आदमी पर मार। वह कैसा कृतघ्नी है। (१७) (ख़ुदाने) उसको किस चीज से पैदा किया। (१८) वीर्य से उसको बनाया फिर उसका एक अन्दाजा बान्ध दिया। (१९) फिर उसके लिये राह आसानकी।(२०) फिर उसको मार दिया। फिर उसको कब्रमें दाखिल किया। (२१) फिर जब चाहेगा उसको जिला उठायगा। (२२) नहीं ख़ुदाने जो कुछ आदमी को आज्ञा दी उसने उसकी तामील नहीं की। (२३) तो

रात का अंधेरा बनाया और उसकी धूप निकाली (२६) और इसके अलावे ज़मीन को बिछाया। (३०) उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला। (३१) और पहाड़ों को (उसमें) गाढ़ दिया। (३२) यह सब तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के फ़ायदे के लिये किये। (३३) तो जब बड़ी आफ़त आ पड़ेगी। (३४) जो कुछ आदमी ने किया है उसदिन उसको याद आवेगा। (३५) और नरक सब देखने वालों के सामने ज़ाहिर किया जा-यगा। (३६) तो जिसने मुँह फेरा। (३७) और दुनिया की ज़िन्दगी को (आख़िरत पर) मुक़द्दम रक्खा (३८) तो (उसका) ठिकाना नरक है। (३६) और जो अपने पालनकर्ता के सामने खड़े होने से डरा और इन्द्रियों को इच्छाओं से रोकता रहा। (४०) तो (उसका) ठिकाना बैकुण्ठ है। (४१) तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि उसका वक्त कब है। (४२) (सो हे पैग-म्बर) तुम उसका वक्त बताने की ओरसे कहां के बखेड़े में पड़े हो। (४३) इसबात की थाह तेरे पालनकर्ता को है। (४४)तू तोबस उसको डरा सक्ता है जो खुदा से डरे। (४५) लोग जिसदिन क़यामत को देखेंगे तो (उनको ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह (दुनिया में) बस दिनके अख़ीर पहर ठहरे या अव्वल पहर। (४६) ॥

सूरे अबस।

मक्के में उतरी इसमें ४२ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाहके नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

[रुकू १] (मुहम्मद) इतनी बातपर गुस्से में हुए और मुंह मोड़ बैठे। (१) जब अन्धा उसके पास आया। (२) और तू क्या जाने शायद वह पाक होजाय। (३) या शिक्षा सुने या उसको शिक्षा लाभदायक हो। (४) तो जो मनुष्य बेपरवाही

करता है।(५) उसकी तरफ़ तू ख़ूब ध्यान देता है। (६) हालांकि (अगर) वह पाक न हो तो तुझ पर कुछ लफ़ंट नहीं। (७) और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आये (८) और जो (खुदा से) डर-कर आवे। (६) तो तू उससे बे परवाही करता है। (१०) हरगिज़ ऐसा न कर यह तो शिक्षा है। (११) जो चाहे इसे यादकरे। (१२) और अदद के वर्कों मे लिखा हुआ है। (१३) जो ऊंचे पर रक्खे और पाक हैं। (१४) ऐसे लिखनेवालों के हाथों में। (१५) जो बड़े और भले हैं। (१६) आदमी पर मार। वह कैसा कृतघ्नी है। (१७) (खुदाने) उसको किस चीज़ से पैदा किया । (१८) वीर्य से उसको बनाया फिर उसका एक अन्दाज़ा बान्ध दिया। (१६) फिर उसके लिये राह आसानकी।(२०) फिर उसको मार दिया। फिर उसको कब्रमें दाख़िल किया । (२१) फिर जब चाहेगा उसको जिला उठावेगा । (२२) नहीं खुदाने जो कुछ आदमी को आज्ञा दी उसने उसकी तामील नहीं की। (२३) तो आदमी को चाहिये कि अपने खाने को देखे। (२४) कि हमने पानी बरसाया। (२५) फिर हमने ज़मीन को फाड़ा।(२६) फिर हमने ज़मीन में (अनाज) उगाया। (२७) और अंगूर और तरकारियां। (२८) और ज़ैतून और खजूरें। (२६) और घने २ बाग़। (३०) और मेवे और चारे । (३१) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायो के लिये। (३२) तोजिसवक्त शोर (प्रलय का प्रगट) होगा जिसके सुनने से कान बहरे होजांय। (३३) जिस दिन आदमी अपने भाई। (३४) और अपनी मा और अपने बाप। (३५) और अपनी जोरू और अपने बेटों से भागेगा। (३६) इनमेंसे हर मनुष्यको उस दिन अपने २ छुटकारे की फ़िक्र लगी होगी कि वस वही उसके लिये काफ़ी है। (३७) कितने मुंह उसदिन चमकते होंगे। (३८) हँसते खुशियां करते । (३६) और कितने मुँह

उसदिन (ऐसे) होंगे कि उनपर गर्द पड़ी होगी । (४०) उनपर कारौंच छाई होगी । (४१) यही काफ़िर कुकर्मी हैं । (४२) ॥

सूरे तकवीर ।

मक्के में उतरी इसमें २६ आयतें और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है ।

[रुकू १] जिस वक्त सूरज लपेट लियाजाय । (१) और जिसवक्त तारे झड़ पड़ें । (२) और जिसवक्त पहाड़ चलने लगें । (३) और जिसवक्त दसमहीने की ग्याभन ऊंटनियाँ छुटी २ फिरें-गी । (४) और जिसवक्त जंगली जानवर आभरे। (५) और जिस वक्त दरिया पाट दिये जावें । (६) और जिसवक्त रूहों (जीवों) को मिलाया जावे । (७) और जिसवक्त लड़की से जो ज़िन्दा क़ब्र में रखदी गई थी पूछा जायगा । (८) कि किस अपराध के बदले में मारीगई । (९) और जिसवक्त कर्मों का लेखा खोला जायगा । (१०) और जिसवक्त आस्मान की खाल खींची जायगी (११) और जिसवक्त नरक की आग दहकाई जावेगी । (१२) और जिसवक्त बैकुण्ठ नज़दीक लगाया जावेगा । (१३) (उसवक्त) हर शख्स जान लेगा जो कुछ वह लाया होगा । (१४) तो मैं उन (सितारों) की क़सम खाता हूं जो चलते २ पीछे हटने लगते हैं। (१५) और जो सीधे चलते और थमे रहते हैं । (१६) और रात की क़सम जब उसका उठान हो । (१७) और सुबह की (क़सम) जिस वक्त उसकी पौ फटती है । (१८) निःसन्देह यह एक इज्ज़तवाले संदेशिया का कहा हुआ है । (१९) अर्श (ताज) के मालिक के नज़दीक उसका बड़ा रुतबा है । (२०) उसकाकहा माना जाता है और वह अमानतदार है । (२१) और (हे मक्का वालो) तुम्हारे दोस्त (मुहम्मद कुछ) बावले नहीं । (२२) और

बेशक उन्होंने उस (जिब्रील) को साफ़ आस्मान में देखा। (२३) और यह गुप्त बातें छिपानेवाला नहीं है। (२४) और यह (कुरान) फटकारे हुए शैतान का कहा हुआ नहीं है। (२५) फिर तुम किधर (बहके) चले जारहे हो। (२६) यह कुरान तो दुनिया जहान के लिये शिक्षा है। (२७) उस शख़्स के लिये जो तुममें से सीधी राह पर चले। (२८) और तुम नहीं चाहोगे मगर यह कि अल्लाह जो तमाम संसार का पालनकर्त्ता है चाहे। (२९) ॥

सूरे इन्फितार।

मक्के में उतरी इसमें १९ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

जब कि आस्मान फटजाये। (१) और जब सितारे झड़ पड़ें। (२) और जब नदियां बहचलें। (३) और जब क़ब्रें उखाड़ दी जांय। (४) हर मनुष्य जान लेगा जो (कर्म) आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा। (५) हे आदमी किस चीज ने तेरे पालनकर्त्ता बुज़ुर्ग के बारे में तुझको धोखा दिया है। (६) जिसने तुझ को बनाया और दुरस्त बनाया और तेरे जोड़बन्द मुनासब रक्खे। (७) जिस सूरत से चाहा तेरा पैवन्द (जोड़) मिला दिया। (८) मगर बात यह है कि तुम क़यामत को नहीं मानते। (९) हालांकि तुमपर चौकीदार हैं। (१०) सर्दार लिखने वाले। (११) जो कुछ भी तुम करते हो उनको मालूम रहता है। (१२) बेशक सुकर्मी मजे में होंगे। (१३) और कुकर्मी निस्सन्देह नरक में होंगे। (१४) और क़यामत के दिन उसमें दाखिल होंगे। (१५) और वह उससे भाग नहीं सकेंगे। (१६) और (हे पैग़म्बर) तू क्या जाने क़यामत का दिन क्या चीज़ है। (१७) फिर भी तू क्याजाने क़यामत का दिन क्या चीज है। (१८) जिस दिन कोई शख़्स

किसी शख़्स को कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुंचा सकेगा और हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी। (१९)॥

सूरे ततफ़ीफ़।

मक्के में उतरी इसमें ३६ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

कमदेने (तौलने) वालों की तबाही है। (१) जब मनुष्योंसे नापलें तो पूरा २ लें। (२) और जब उनको नापकर या तौलकर देवें तो कमदेवें। (३) क्या इनको इस बात का ख्याल नहीं कि यह उठा खड़े किये जांयगे। (४) बड़े दिन को। (५) जिसदिन लोग दुनिया के पालनकर्त्ता के सामने खड़े होंगे। (६) सुनो जी कुकर्मी लोगों के कर्म रोज़नामचा और क़ैदियों के रजिस्टर में है। (७) और (हे पैग़म्बर) तू क्या समझे कि कैदियों का रजिस्टर क्या चीज़ है। (८) वह लिखी हुई किताब है। (९) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (१०) जो क़यामत के दिनको झुठलाते हैं। (११) और उस दिनको वही झुठलाता है जो पापी हद्दसे बढ़ जाता है। (१२) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जांय तो कहे कि अगले लोगों के ढकोसले है। (१३) बल्कि इनके दिलों पर इनके कर्मके जंग बैठगये है। (१४) सुनोजी यही अपने पालनकर्त्ता के सामने नहीं आने पावेंगे। (१५) फिर यह लोग अवश्य नरक में दाखिल होंगे। (१६) फिर कहा जायगा कि यही तो वह है जिसको तुम झुठलाते थे। (१७) सुनोजी अच्छे मनुष्यों का कर्मलेखा बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में है। (१८) और (हे पैग़म्बर) तुम क्या समझे कि बड़े रुतबे वाले लोगों का रजिस्टर क्या चीज़ है। (१९) एक लिखी हुई किताब है। (२०) फिरिश्ते जो नज़दीक हैं उसपर तैनात हैं। (२१) बेशक अच्छे (मनुष्य)

आराम में होंगे। (२२) तख्तों पर बैठे देखरहे होंगे। (२३) तू उनके चेहरों पर नियामतकी ताज़गी देखेगा। (२४) उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जावेगी। (२५) जिस (बोतल) की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिये कि उसीपर इच्छाकरें। (२६) और उस (शराब) में तसनीम (के पानी) की मिलौनी होगी। (२७) (तसनीम बैकुण्ठ का एक) चश्मा है जिसमें से नज़दीक (मनुष्य) पियेंगे। (२८) अपराधी ईमानवालों के साथ हंसी किया करते थे। (२९) और जब उनके पास से गुज़रते इशारा करते थे। (३०) और जब लौटकर अपने घरजाते तो बातें बनाते थे। (३१) और जब इनको देखते तो बोल उठते कि यही गुमराह हैं। (३२) हालांकि ईमानवालों पर निगहबान बनाकर तो नहीं भेजा गया। (३३) तो आज (क़यामत में) ईमान वाले काफिरों पर हंसेंगे। (३४ तख्तोंपर बैठे देख रहे होंगे। (३५) अब तो काफिरों ने अपने किये का बदला पाया। (३६

और वह खुश २ अपने बाल बच्चों में वापिस जायगा। (६) और जिसको उसका कर्म लेखा उसकी पीठ पीछे से दिया जायगा। (१०) वह मौत मनावेगा। (११) और नर्क में जायगा। (१२) अपने बाल बच्चों के साथ मग्न था। (१३) वह समझता था कि फिर न आयगा। (१४) हां उसका पालनकर्त्ता उसे देख रहा था। (१५) सो मैं शाम की सुर्खी की क़सम खाता हूं। (१६) और रात की और जिन चीज़ों पर वह अन्धेरा करती थी। (१७) और चन्द्रमा की क़सम जब पूरा हो। (१८) तुम दर्जा बदर्जा उसी को तै करोगे। (१६) तो इन (काफ़िरों) को क्या है कि ईमान नहीं लाते। (२०) और जब इनके सामने कुरान पढ़ाजाय तो सिज्दा (दण्डवत) नहीं करते। (२१) बल्कि काफ़िर झुठलाते हैं। (२२) और खुदा खूब जानता है जो कुछ दिल में रखते हैं। (२३) तो (हे पैग़म्बर) इनको दुःखदाई सज़ा की खुशखबरी सुना दो। (२४) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिये अत्यंत फल है। (२५) ॥

सूरे बरूज।

मक्के में उतरी इस में २२ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

आस्मान की क़सम जिसमें बुर्ज हैं। (१) और उसदिन की जिसका वादा है। (२) और साक्षी की और जिसके सामने साक्षी देता है उसकी क़सम। (३) और खाड़ियां खोदने वाले मारे गये। (४) आग भरे ईन्धन से। (५) जब वह उस पर बैठे हुए थे। (६) और ईन्धन वालों के साथ अपने किये के गवाह थे। (७) और वह ईमानवालों को इसी बात से चिढ़े कि वह अल्लाह पर ईमान लायें जो जबरदस्त प्रशंसा के योग्य है। (८)

आस्मानों और ज़मीन का राज्य उसी का है और अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (९) जो लोग ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली स्त्रियों को दुःख देते हैं और तौबा नहीं करते तो उनको नरक की सजा है और उनको जलने की सज़ा। (१०) जो लोग ईमान लाये और उन्होने सुकर्म किये उनके लिये (बैकुण्ठ के) बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहरही होंगी यही बड़ी कामयाबी है। (११) तेरे पालनकर्त्ता का पकड़ना बहुत कठिन होगा। (१२) वही पहिलीबार पैदा करता और दुबारा भी करेगा। (१३) और वह बख्शनेवाला और पुकारने वाला है। (१४) अर्श (तख्त) का मालिक बड़ा है। (१५) जो चाहता है करता है। (१६) क्या तेरे पास लशकरों की ख़बर पहुंची है। (१७) फिरऔन को और समूद को। (१८) मगर काफ़िर झुठलाने में लगे हैं। (१९) और अल्लाह उनको उनके पीछे से घेरे हुए है। (२०) बल्कि यह क़ुरान बड़ी शान का है। (२१) संरक्षित पुस्तक में लिखा हुआ है। (२२)

पर शक्तिमान है। (८) जिसदिन भेद जांचे जाएँगे। (९) (उस दिन) न तो आदमी का कुछ बल चलेगा और न कोई सहायक होगा। (१०) पानी (बरसाने) वाले आस्मान की क़सम। (११) और फटजाने वाली ज़मीन की क़सम। (१२) ज़रूर यह बात दो टूक है। (१३) और यह कुछ हँसी की बात नहीं। (१४) यह (काफ़िर) दाँव कररहे हैं। (१५) और मैं दाँव कररहा हूं। (१६) तो (हे पैग़म्बर इन) काफ़िरों को मुहलत दे इनको थोड़े दिनों के लिये छोड़ दे। (१७) ॥

सूरे आला।

मक्के में उतरी इसमें १९ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

(हे पैग़म्बर) अपने ऊंचे पालनकर्त्ता के नाम की माला फेर। (१) जिसने (सृष्टि को) बनाया और दुरुस्त किया। (२) और जिसने अन्दाज़ा किया और राह लगादी। (३) और जिसने चारा निकाला। (४) फिर उसको काला २ कूड़ा करदिया। (५) (हे पैग़म्बर) हम तुमको पढ़ालेंगे तुम भूलने न पाओगे। (६) मगर जो खुदा चाहे निस्सन्देह खुदा पुकारकर पढ़ने को भी जानता है और आहिस्ता पढ़ने को भी। (७) और हम तेरे लिये और भी आसानी करदेंगे। (८) याद दिलाये जा शायद याद दिलाना लाभदायक हो। (९) जो डरता है वह समझ जावेगा। (१०) मगर भाग्यहीन तो उससे भागताही रहेगा। (११) जो बड़ी आग में पड़ेगा। (१२) फिर न तो उसमें मरेहीगा और न जिन्दह ही रहेगा। (१३) जो पाक रहा वही कामयाब हुआ। (१४) और अपने पालनकर्त्ता का नाम लेता और नमाज़ पढ़तारहा। (१५) मगर तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हो। (१६) हा-

लांकि क़यामत कहीं बढ़कर और ज़ियादह पुख़्ता है। (१७) यही बात तो अगली किताबों में है। (१८) यानी इब्राहीम और मूसा की किताबों में है। (१९) ॥

सूरे ग़ाशिया (पहुँचना) ।

मक्के में उतरी इसमें २६ आयतें १ रुकू है ॥

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

तुझको उस छिपालेने वाले की कुछ बात पहुँची है। (१) कितने मुंह उस रोज़ उतरे हुए होंगे। (२) मिहनत उठारहे होंगे थकरहे होंगे। (३) दहकती हुई आगमें दाखिल होंगे। (४) इनको खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायगा। (५) कांटों के सिवाय और कोई खाना इनको मुयस्सर नहीं । (६) जिनसे न तो मोटा हो और न भूक़ही जावे। (७) कितने मुंह उस रोज खुश होंगे। (८) अपनी कोशिश से खुश। (९) ऊपर वाले स्वर्ग में

सूरे फ़जर ।

मक्के में उतरी इस में ३० आयतें १ रुकू है ।

अल्लाह के नामपर जो रहमवाला मिहर्बान है ।

सुबहकी क़सम । (१) और दस रातों की क़सम । (२) पूरे ऊनेकी क़सम । (३) और रातकी जब गुज़रने लगे । (४) बुद्धिमानों के लिये तो इसमें बड़ी भारी क़सम है । (५) क्या तूने न देखा कि तेरे पालनकर्त्ता ने आद के साथ कैसा किया । (६) इरम के साथ कैसा किया । (७) जो ऐसे बड़े डीलडौलके थे कि शहरों में कोई उन ऐसे पैदा नहीं हुए । (८) और समूद जिन्होंने घाटी में पत्थरों को तराशाथा । (९) और फ़िरऔन तो लेख रखता था । (१०) जो शहरों में सरकश हुए । (११) और उनमें बहुत फ़िसाद किया । (१२) तो तेरे पालनकर्त्ता ने इनपर सज़ाका कोड़ा फटकारा । (१३) तेरा पालनकर्त्ता जरूर तेरी घातमें है । (१४) लेकिन मनुष्य है जब उसका पालनकर्त्ता उसको जांचता है और इजाज़त देता है और नियामत देताहै तो कहताहै कि मेरे पालनकर्त्ता ने मुझे प्रतिष्ठा दी है । (१५) और जब वह उसको जांचताहै और उसकी रोज़ी उसपर तंग करदेता है तो वह कहता है कि मेरा पालन कर्त्ता मुझे तंग करता है । (१६) हरगिज़ नहीं बल्कि तुम अनाथकी खातिर नहीं करते । (१७) और न एक दूसरे को गरीबों को खाना खिलाने का बढ़ावा देते हो । (१८) और मुर्दों का छोड़ा हुआ हुआ माल समेट २ कर खाते हो । (१९) और मालको बहुत ही प्यारा समझते हो । (२०) हर्गिज़ नहीं जब ज़मीन मारे धक्के के चकनाचूर होजाय । (२१) और तेरा पालनकर्त्ता आयगा और फ़िरिश्ते पांति की पांति और उस दिन नरक नज़दीक लाया जायगा । (२२) उस दिन आदमी याद करैगा मगर उसके याद करने से क्या होगा ।

(२३) वह कहेगा हा शोक ! मैंने अपनी इस ज़िन्दगी के लिये पहिले से कुछ किया होता । (२४) तो उसदिन उस कैसी कोई सज़ा न करेगा । (२५) और न कोई उस कैसा क़ैदहो करेगा । (२६) हे इतमीनान करनेवाली रूह (आत्मा) । (२७) अपने पालनकर्त्ता की ओर चल तू उससे राज़ी और वह तुझसे राज़ी । (२८) फिर मेरे सेवकों में शामिल । (२९) और मेरे स्वर्ग में जा दाखिल हो । (३०) ॥

सूरे बलद ।

मक्के में उतरी इसमें २० आयतें और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम से जो रहमदाता मिहर्बान है ।

मैं इस शहर की कसम खाता हूँ । (१) तू इसी शहर में उतरा हुआ है । (२) और कसम है पैदा करने वाले की और जिस को पैदा किया । (३) हमने आदमीको मिहनतके लिये बनाया ४)

सूरे शम्स (सूर्य)।

मक्के में उतरी इसमें १५ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्वान है।

सूरज की और उसकी धूप की क़सम। (१) जब चांद उदय होता है उसकी क़सम। (२) और दिनकी क़सम जब कि वह सूरज को उदय करे। (३) और रात की क़सम जब वह सूरज को छिपाले। (४) और आसमान की और जिसने उसको बनाया। (५) और जमीन की क़सम और जिसने उसे बिछाया। (६) और जान की कसम और जिसने उसे दुरुस्त बनाया। (७) और उसके दिलमें उसकी बदी और नेकी डालदी। (८) जिसने अपने जीव को पाक किया वह मुराद को पहुंचा। (९) और जिसने उसको दबा दिया वह घाटे में रहा। (१०) समूद ने अपनी नटखटी की वजह से (पैग़म्बर को) झुटलाया। (११) जब कि उन में से बड़ा कुकर्मी उठा। (१२) तो खुदा के पैग़म्बर ने उनसे कहा कि यह खुदा की ऊटनी है इसे पानी पीने दो। (१३) इसपर भी उन लोगों ने स्वालिहा को झुटलाया और ऊटनी के पांव काट डाले तो उनके पालनकर्त्ता ने उनके पाप के बदले उन्हें मारडाला और सबों को बराबर कर दिया। (१४) और वह नहीं डरता कि पीछा करेंगे। (१५) ॥

सूरे लैल।

मक्के में उतरी इसमें २१ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्वान है।

रातकी क़सम जब कि वह ढांकले। (१) और दिनकी क़सम जब वह खूब रोशन हो। (२) और उसकी कसम जिसने मनुष्य स्त्री को बनाया। (३) तुम लोगों की कोशिश बेशक जुदी २ है।

(४) तो जिसने दिया और भलाई की। (५) और अच्छी बात को सच समझा। (६) तो हम आसानी की जगह उसे आसानी कर देंगे। (७) और जो कजूसी करे और बेपरवाही करे। (८) और अच्छी बात को झुठलाये। (९) तो हम उसके लिये सख्ती को आसान करेंगे। (१०) और जब गिरेगा तो उसका माल उसके कुछ भी काम न आयगा। (११) हमारा काम तो राह दिखादेना है। (१२) और क़यामत और दुनिया हमारेही अधिकार में है। (१३) और हमने तो तुमको भड़कती हुई आग से डरा दिया है। (१४) इसमें वही भाग्यहीन दाखिल होगा। (१५) जो झुठलाता और मुंह फेरता रहा। (१६) और परहेज़गार उससे दूर रक्खा जावेगा। (१७) जिसने अपने पाक करने के लिये अपना माल दिया। (१८) और उसपर किसीका अहसान नहीं जिसका बदला दे। (१९) मगर ऊंचे पालनकर्त्ता की प्रसन्नता चाहता है। (२०) और वह अवश्य प्रसन्न होगा। (२१) ॥

सूरे जुहा।

मक्के में उतरी इसमें ११ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

दिन चढ़े की क़सम। (१) और रात की क़सम जब ढांकले। (२) तेरे पालनकर्त्ताने तुझको छोड़ा नहीं और न वह नाखुश हुआ। (३) और तेरा इसजिन्दगीसे आखिरत अच्छी होगी। (४) और

सूरे इन्सराह ।

मक्के में उतरी इसमें ८ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

क्या हमने तेरा दिल नहीं खोल दिया। (१) और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया। (२) जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रक्खी थी। (३) और तेरे लिये तेरा ज़िक्र ऊंचा किया। (४) सख्ती के साथ आसानी भी है (५) निस्सन्देह मुश्किल के साथ आसानी है। (६) तो अब तू फ़ारिग़ हुआ तो मिहनत कर। (७) और अपने पालनकर्त्ता की तरफ ध्यान दे। (८) ॥

सूरे तीन (अंजीर)।

मक्के में उतरी इसमें ८ आयतें १ रुकु है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

अंजीर और ज़ैतूनकी क़सम। (१) और तूरसीना (पहाड़) की। (२) और इस शहर (मक्का) की क़सम जिसमें चैन है। (३) हमने मनुष्य को अच्छी बनावट का पैदा किया। (४) फिर हमने नीचों से नीचे फेंक दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिये अत्यंत फल है। (६) तो इसके बाद कौन चीज़ है जिससे तू न्यायके दिनको झुठलाता है। (७) क्या खुदा सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है। (८) ॥

सूरे अलक़।

मक्के में उतरी इसमें १९ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

अपने पालनकर्त्ता का नाम लेकर पढ़ चलो जिसने पैदा किया। (१) आदमी को जमेहुए लोहू से बनाया। (२)

पढ़ तेरा पालनकर्त्ता बड़ा बुज़ुर्ग है। (३) जिसने कलम के द्वारा से विद्या सिखाई। (४) मनुष्य को वह बातें सिखाईं जो उसे मालूम न थीं। (५) हरगिज़ नहीं आदमी तो बड़ा सरकश है। (६) इसलिये कि अपने लिये बेपरवाह देखता है। (७) तेरे पालनकर्त्ता की तरफ़ लौटकर जाना है। (८) क्या तूने उस शख़्स को देखा जो मना करता है। (९) जब सेवक नमाज पढ़ने खड़ा होता है। (१०) भला देख तो अगर सच्ची राह पर हो। (११) या परहेज़गारी सिखाता है। (१२) क्या तूने देखा कि अगर वह झुठलाये और पीठ फेरदे। (१३) क्या वह नहीं जानता कि खुदा देखरहा है। (१४) नहीं अगर वह बाज़ न आया तो हम उसको उसकी चोटी पकड़कर ज़रूर घसीटेंगे। (१५) झूठी गुनहगार चोटी। (१६) तो उसको चाहिये कि अपने साथ बैठनेवालों को बुलाले। (१७) हम भी नरक के फ़िरिश्तों को बुलायेंगे। (१८) हरगिज़ नहीं। तू उसकी कही न मान सिजदा कर और क़रीब हो। (१९)॥

सूरे क़द्र।

मक्के में उतरी इसमें ५ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

हमने यह क़द्र की रात में उतारा है। (१) और तू क्या जाने क़द्र की रात क्या है। (२) क़द्र की रात हजार महीनों से बढ़कर है। (३) उसमें हर काम के लिये फ़िरिश्ते और रूह अपने पालनकर्त्ता की आज्ञा से उतरते हैं। (४) वह रात अमन की है वह प्रातःकाल तक है। (५)॥

सूरे बईअना। (दलील)

मदीने में उतरी इसमें ८ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

जो लोग किताबवाले और शिर्क करनेवाले हैं वे इन्कारी

हुए वे माननेवाले न थे जबतक उनके पास कोई खुली हुई दलील न पहुंचे। (१) (और वह दलील यह थी कि) खुदा की ओर से कोई पैग़म्बर आये और पवित्र किताब पढ़कर सुनाये। (२) उनमें पक्की बातें लिखी हैं। (३) और किताब वालोंने दलील आये पीछे भेद डाला है। (४) हालांकि उनको (पैग़म्बर के द्वारा से) यही आज्ञा दी गई कि पवित्र अल्लाह ही की बन्दगी की नियत से एक तरफ होकर उसकी पूजा करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कातदें और यही ठीक दीन है। (५) किताबवालों और शिर्कवालों में से जो लोग इन्कार करते रहे नरक की आग में होंगे हमेशा उसी में रहेंगे। यही लोग सबसे बुरे हैं। (६) जो लोग ईमानलाये और नेक काम किये यही लोग सबसे अच्छे हैं। (७) इनका बदला इनके पालन-कर्त्ता के यहां रहने के बाग़ (बैकुण्ठ) हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे खुश और ये अल्लाह से खुश। यह उनके लिये है जो अपने पालनकर्त्ता से डरें (८)।

सूरे ज़लज़ाल।

मदीने में उतरी इसमें ८ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

जब ज़मीन अपने भूचाल से हिलाई जावे। (१) और ज़मीन अपना बोझ निकाल डाले। (२) और मनुष्य बोल उठे कि उसे क्या होगया। (३) उसीदिन ज़मीन अपना खबरें सुनायगी (४) इसलिये कि तेरा पालनकर्त्ता उसकी तरफ़ ईश्वरीय संदेशा भेजेगा। (५) उसदिन लोग जुदी २ हालतों में लौटेंगे ताकि उनको उनके कर्म दिखाये जावें। (६) तो जिसने थोड़ी भी नेकी की वह उसको देखेगा। (७) और जिसने थोड़ी भी बुराई की वह उसको देखेगा। (८) ॥

सूरे आदियात (घोड़ा)

मक्के में उतरी इसमें ११ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

हांपकर दौड़नेवाले घोड़े का क़सम। (१) जो फिर टाप मार-मार आग निकालते हैं। (२) सुबह के वक्त छापा जा मारते हैं। (३) फिर वह उसवक्त (दौड़ धूप से) गुब्बार उड़ाते हैं। (४) फिर उसीवक्त फौजमें जा घुसते है। (५) मनुष्य अपने पालनकर्त्ता का बड़ा कृतघ्नी है। (६) और वह इसको खूब जानता है। (७) और वह मालके प्रेममें मजबूत है। (८) तो क्या इसको मालूम नहीं जब वह मनुष्य जो कबों में है उठा खड़ाकिया जायगा। (९) और दिलों में जो बातें है वह जाहिर करदी जायेंगी। (१०) उसदिन उनका पालनकर्त्ता उनसे बखूबी जानकार होगा। (११) ॥

सूरे तकासुर (कसरत)

मक्के में उतरी इसमें ८ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

तुम्हारी बहुतायत की ख्वाहिशों ने भूल में डाल रक्खा है। (१) यहांतक कि तुम कब्रमें पहुंचो। (२) नहीं–नहीं–तुमको मालूम होजायगा। (३) फिर नहीं–नहीं–तुमको मालूम होजायगा। (४) बात यह है अगर तुम यक़ीन कर जानना जानो। (५) तुम अवश्य नरक को देखलोगे। (६) फिर ज़रूर उसे तुम यकीनी आंखों से देखोगे। (७) फिर उसदिन नियामतों के विषय में तुम से पूंछ पांछ अवश्य होगी। (८) ॥

सूरे असर (समय)

मक्के में उतरी इसमें ३ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

ढलते दिनकी क़सम। (१) आदमी हानि में है। (२) मगरजो ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये और एक दूसरेके हक़ कीशिक्षा करते रहे एक दूसरेको संतोषित करनेकी शिक्षा करते रहे। (३)॥

सूरे हुमज़ा (ऐब चुनना)

मक्के में उतरी इसमें ९ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

हर ताना देनेवाले और ऐब चुननेवाले की खराबी है। (१) जो माल जमा करता और गिन गिन कर रखता रहा। (२) वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा। (३) नहीं वह तो जरूर जलती हुई आग में डाला जायगा। (४) और तू क्या जाने जलती हुई आग क्या चीज़है। (५) वह खुदाकी सुल-

गाई हुई आग है। (६) दिलों तककी खबर लेगी। (७) वह उनके ऊपर चारों तरफ़ से बन्द होगी। (८) बड़े २ खम्बों की तरह पर। (९) ॥

सूरे फील (हाथी)

मक्के में उतरी इसमें ५ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

(हे पैग़म्बर) क्या तूने नही देखा कि तेरे पालनकर्त्ता ने हाथी वाले के साथ कैसा बर्ताव किया। (१) क्या उसने उनके दॉव बेकार नही करदिये। (२) और उनपर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे। (३) जो उनपर कंकण की पत्थरियां फेंकते थे। (४) फिर उनको खाये हुए भूसे की तरह करदिया। (५) ॥

सूरे-कुरेश (जातिका नाम)

मक्के में उतरी इसमें ४ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

इसवास्ते कि कुरेश को मिला रक्खा। (१) जाड़े और गर्मी के सफ़र (पर्यटन) से उन्हें मिला रक्खा। (२) तो उनको चाहिये इस घर (काबा) के पालनकर्त्ता की पूजा करें। (३) जिसने उनको भूख में खिलाया और उनको डरसे बचाया। (४) ॥

और दीन के खिलाने का बढ़ावा नही देता । (३) तो उन नमाज़ियों की खराबी है । (४) जो अपनी नमाज़ की तरफ से सुस्ती करते है । (५) जो लोगों को दिखलाते है । (६) और रोज़ मर्रह की बर्तने की चीज़ों की भी इन्कार करते है । (७) ॥

सूरे कौसर ।

मक्के में उतरी इसमें ३ आयतें १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्वान है ।

हमने तुझे कौसर (यानी बहुतायतसे सब चीज़ें) दीं । (१) पस अपने पालनकर्त्ता को नमाज पढ़ और बलि (कुर्बानी) दे । (२) तेरे दुश्मन का नाम लेवा न रहेगा । (३) ॥

सूरे काफ़िरून ।

मक्के में उतरी इसमें ६ आयतें १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्वान है ।

तू कह दे काफ़िरो । (१) मैं उस चीज़ की नहीं पूजा करता जिसकी तुम पूजा करते हो । (२) और जिसकी मैं पूजा करताहूं तुम भी उसकी पूजा नहीं करते । (३) और न मैं उनकी पूजा करूंगा जिनकी तुम पूजा करते हो । (४) और न तुम उसकी पूजा करोगे जिसकी मैं पूजा करता हूं । (५) तुमको तुम्हारा दीन और मुझको मेरा दीन । (६) ॥

सूरे नस्र (मदद)

मदीने में उतरी इसमें ३ आयतें १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्वान है ।

जबकि खुदा की मदद फतह आई । (१)और तूने लोगों को

देखा कि खुदा के दीन में गिरोह २ दाखिल हो रहे हैं। (२) तो अपने पालनकर्ता की प्रशंसा के साथ पाकी से याद करने में लगजा और उससे पापों की क्षमा मांग निश्संदेह वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है। (३) ॥

सूरे लहब (नाम)

मक्के में उतरी इसमें ५ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।

अबूलहब के दोनो हाथ टूटगये और वह टूटगया। (१) न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न उसकी कमाई। (२) वह लौ उठती हुई आग में दाखिल होगा। (३) और उसकी बीबी भी जो ईंधन ढोती है। (४) उसकी गर्दन में खजूर की रस्सी है। (५) ॥

सूरे इखलास (पवित्र)

मक्के में उतरी इसमें ४ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

(हे पैग़म्बर) कहो कि वह अल्लाह एक है। (१) अल्लाह बे परवाह है। (२) न वह उससे पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ। (३) और न कोई उसकी समता का है। (४) ॥

सूरे फलक।

मदीने में उतरी इसमें ५ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

(हे पैग़म्बर) कहो कि सुबहके मालिक से शरण मांगता हूं। (१)

तमाम सृष्टि की बुराइयों से। (२) और अंधेरी रात की बुराई से जब अन्धियारी छाजाये। (३) और गंडोंपर फूंकनेवाला की बुराई से। (४) और ईर्षा करने वालों की बुराई से जब वह ईर्षा करने लगें। (५) ॥

सूरे नास।

मदीने में उतरी इसमें ६ आयतें १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है।

(हे पैग़म्बर) कह कि मैं आदमियों के पालनकर्त्ता की शरण मांगता हूं। (१) लोगोंके मालिक की। (२) लोगोंके पूजित की। (३) उसकी बदी से जो लल्कारे और छिपजावे। (४) वह जो लोगोंके दिलोंमें ख्याल डालताहै।(५)जिन्नों या आदमियोंमेंसे।(६)

॥ इति ॥

पहिले अशुद्धियों को शुद्ध करलीजिये तब पढ़िये ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२०	उतरी	उतरी	३७	२७	परित्याग	परित्याग
२	७	उनको	उनको	४१	११	रोका	रोको
३	२७	करनवाली	करनेवाली	४१	१६	चाहे	चाहे तो उस
४	१७	खुदा में	खुदाने	४५	५	। तो	हो तो
११	२	जातती	जीतती	४५	१५	का आज	को आज
१३	१६	अपने	अपनी	४७	७	५७	२५७
१५	२७	तम	तुम	४६	१६	वोहो औरा	को हों और
१७	१२	जाद	जादु	५०	११	खरा	खुरा
१८	११	ओर	और	५२	१०	औरत कि	औरतको कि
१६	१	.	१६	५३	७	उनको	उसको
१६	२२	खदा	खुदा	५५	१२	जिनका	जिनको
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८	२४	खराबी म	खराबी में
६८	२६	म ह वह बढ़कर ह	में है वह बढ़कर है
६८	२७	तुमका	तुमको
६९	१५	दना	देना
७०	२७	न हा	न हो
७१	५	खदा	खुदा
७१	६	खदा	खुदा
७१	१७	खदा	खुदा
७१	१८	दगा	देगा
७१	२३	उनका अल्लाहक रास्त	उनको अल्लाह के रास्ते
७१	२६	दास्तरखताह	दोस्तरखता है
७२	१६	खदा	खुदा
७२	२७	मुसूबीत	मुसीबत
७४	२०		है
७८	१०	ह मका	हमको
७८	१२	काई	कोई
७८	१५	इमान	ईमान
७९	७	इमान	ईमान
७९	११	ईमान वाला	ईमानवालो
७९	१३	निशा	निसा
८४	१३	तम	तुम
९३	२१	जा	जो
९३	२५	शत्र	शत्रु
९९	२	ता	तो
९९	३	क़रान	कुरान
९९	९	जा	जो
९९	१४	ता	तो
९९	१६	भक	भुक
९९	१९	दसरी	दूसरी
९९	२०	गुंजारस	गुंजाइश
९९	२६	सम्भालने-वाली	सम्भालने-वाला
९९	२७	दसरों का	दूसरों का
१००	५	हे ईमानवालो	हे ईमान वालो
१०२	२०	विजर्ती	बिजली
११४	२१	लागो	लोगों
११७	१२	बेचावेगा	बचावेगा
११९	१७	पाओगा	पाओगे
१२०	२१	ह	है
१२०	२	मुम्लमानो	मुसलमानो
१२२	८	बुद्धिमाना	बुद्धिमानो
१२२	९	मुसलमाना	मुसलमानो
१२४	७	रोका	रोको
१२४	२५	दुंगा	देंगे
१२६	६	सब	सच
१२८	२३	कहते है	कहते हैं
१३०	४	जमाते ख-तोहा	जमाते न-खता हो
१३१	२५	है	हैं
१३३	२७	छाड़	छोड़
१३४	२	दा	दो
१३४	९	सक्ते हे	सक्ते हैं
१३४	१७	पालने वाल	पालने वाले
१३८	[illegible]	खन	खून
१३८	२०	वभ्के	वूझे
१३८	२७	पजा	पूजा
१४१	१८	जा	जो
१४३	२४	पाठ	पीठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२७	८	भाइया	भाइयो	२६८	५	सलामलेके	सलामलेक
२२७	२१	म	मैं	२६८	४	हाता है	होता है
२२८	६	लाग	लोग	२६९	६	देग	देगे
२३०	१	०३०	२३०	२७१	१४	लिये	लिये
२३०	५	गिगह	गिरोह	२७१	१९	तुमका	तुमको
२३०	११	लिये	लिये	२७१	३	तुमका	तुमको
२३१	२७	प्यारे	प्यारे	२७१	५	सके	सके
२३३	३	स्वन	खून	२७४	८	हमार	हमारे
२३३	६	हा	हो	२७४	२५	का	को
२३४	१७	सच्चा	सच्ची	२७७	१३	ता	तो
२३५	१	२३	२३७	२७७	१५	जा	जो
२३५	६	का	को	२७७	२०	जा	जो
२३५	६	मुझका	मुझको	२८२	१८	विश्वास	विश्वास
२३५	२६	निवाड़	निचोड़	३०६	२७	जा	जो
२३६	४	जा	जो	३०८	२०	पालनकर्त्ता	पालनकर्त्ता
२३६	७	मेर	मेरे	३१०	२७	उत	उतारा
२३६	१५	दोस्त	दोस्तो	३१३	२७	लिये	लिये
२३६	१७	के	के	३१३	२७	विछोन	बिछौना
२४२	१०	ह	है	३१४	८	का	को
२४४	२७	का	को	३२७	६	का	को
२५०	२१	नाचाज	नाचीज	३२९	२०	उसका	उसको
२५४	१८	जा	जो	३३०	२१	सकेंगे	सकेंगे
२५४	१९	का	को	३३२	२७	लोगां	लोगो
२५४	२३	हा	हो	३३८	२७	उनप	उनपर
२५४	२५	रोवदा	रोवदो	३४२	१७	गम्बर	पैगम्बर
२५७	१९	का	को	३४३	२२	दकर	देकर
२६०	४	करे	करते	३४४	९	ता	तो
२६२	२७	ह	है	३४४	१८	याहा	यहां
२६६	१५	ढूढ़ो	ढूंढ़ो	३४६	२	दावारा	दोबारा
२६६	२७	लागों	लोगों	३४६	२७	है	भली है